DAKSHINI BHARTI

1953 G.K.L.
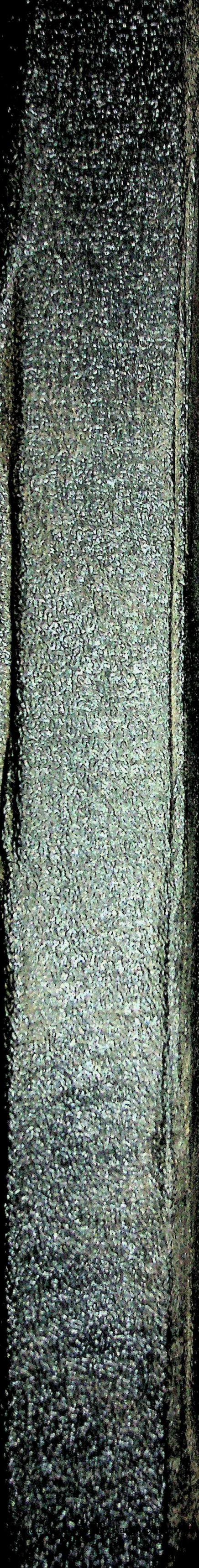
दक्षिण भारती
कांग्रेस अधिवेशन विशेषांक
★
१७ जनवरी
१९५३
COMPILED
113440

पण्डित जवाहरलाल नेहरू—भारत के प्रधान मंत्री का जन्म १४ नवम्बर १८८९ ई. में हुआ था। इन का लालन-पालन बड़े राजसी ठाटबाट से हुआ। इन के पिता स्वर्गीय पं. मोतीलाल नेहरूजी ने इन की शिक्षा दीक्षा में यथेष्ट सतर्कता से काम लिया। इन्हें इंग्लैण्ड भेजकर उच्चकोटि की शिक्षा दिलवाई,

प्रधान मंत्री

श्री जवाहरलालजी नेहरू

बैरिस्टर बनाया [illegible] जवाहरलाल ने बैरिस्ट्री करना पसन्द न किया [illegible]नका हृदय देश की दरिद्रता और गुलामी से द्रवित होगया। वह कांग्रेस में शामिल हो गए। गान्धीजी के साथ कांग्रेस की आत्मा बन गए। कई वर्षों तक कांग्रेस के 'जनरल सेक्रेटरी' के पद को शोभित किया। सन् १९२९ में कांग्रेस के अध्यक्ष हुए। पण्डितजी ने अपनी अध्यक्षता में २६ जनवरी १९३० ई. कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में भारत की पूर्ण स्वतन्त्रता का प्रस्ताव पास कराया और अंग्रेजी सरकार को चुनौती दी। १९३० के स्वतन्त्र आन्दोलन में अंग्रेजों के शासन की नींव खोखली कर दी। कई बार जेल गए। १९४२ के अगस्त आन्दोलन के कर्णधार बने और अन्त में १९४६ में भारत की 'इनटेरिम-मिनिस्ट्री' के प्रधान मन्त्री नियुक्त किए गए। १९४७ की स्वतन्त्रता प्राप्ति का श्रेय गान्धीजी के बाद श्री नेहरूजी को ही प्राप्त है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद आप स्थायी रूप से भारत के प्रधान मन्त्री चुने गए। आप आज भारत के जीवन और प्राण हैं। देश का गौरव और संसार की महान विभुतियों में एक हैं। आप के हाथों में भारत का भाग्य पूर्ण रूपेण सुरक्षित है।

हैदराबाद सरकार द्वारा स्कूलों, कालिजों तथा वाचनालयों के लिए स्वीकृत

दक्षिण भारती

सचित्र हिन्दी मासिक पत्रिका

सम्पादक मण्डल

रामानुजदास भूतड़ा (प्रधान संपादक)

वे. आंजनेय शर्मा, सिद्धय्या पुराणिक

बालकृष्ण लाहोटी (संचालक)

श्रीनिवास सोनी (प्रबन्ध संपादक)

जन. फर. १९५३ } ८६, अफ़ज़लगंज, हैदराबाद { वार्षिक ६) इस अंकका ।।।) -भारती

नववर्षांक में

चित्र सूची

नववर्ष के उपलक्ष में:—

हम अपने ग्राहकों का अभिनन्दन करते हैं।

किसान और यन्त्र

आज भारत में कितने ही किसान बन्धु खेती के कार्य में इंजन, पम्प, ट्रेक्टर का उपयोग कर रहे हैं। इनमें से कुछ भाई, तेल के भाव अत्याधिक बढ जाने से और कुछ इंजनों के पुर्जे खराब होने और उनके स्पेयर पुर्जों के भाव सामर्थ्य से ज्यादा होने से हतोत्साह होगये हैं। जहां तक तेल के भाव का प्रश्न है, वह तो राज्य के अधिकार का विषय है किन्तु इंजन को खराब होने से रोकने में किसान अपनी मदद स्वयं कर सकता है। प्रायः इंजन खेत और जंगल में काम करते हैं। इस लिए वहां मिट्टी, धूल का गिरना स्वाभाविक हैं, और मिट्टी इंजन के पुर्जों को घिसने, जल्दी टूटने और खराब होने में भरसक मदद करती है। अर्थात् यह समझिये कि मिट्टी इंजन का सबसे बडा दुश्मन है। इस लिये इंजन घर को अपने रसोई घर के जितना साफ रखना आवश्यक हैं। और इंजन को अपने शरीर के समान स्वच्छ रखना भी आवश्यक है।

इंजन घर के चारों तरफ मेहन्दी या अन्य किस्म की झाडियां लगा देने से मिट्टी, आंधी वगैरा के साथ इंजन घर में नहीं आयेगी और इंजन की सफाई के लिए तो सिर्फ १०—१५ मिनट हर रोज शारीरिक परिश्रम की आवश्यकता है, जो कि किसान के लिये मुश्किल काम नहीं।

बाकी स्पेयर पुर्जों, औजार और मशीनरी के सामान के लिए आप हमारी दुकान से हर समय पत्र व्यवहार कर सकते हैं या आकर मिल सकते हैं। हर किस्म के इंजन के स्पेयर पार्ट और चीजें तैयार मिल सकती हैं।

जैराम दास एण्ड सन्स

* १६४, नारायण ध्रुव स्ट्रीट, बम्बई.
* ७९४०, रानीगंज, सिकंदराबाद.
* चावडीबाजार, देहली.

हार्डवेयर मिल्स एण्ड इंजनीरींग स्टोर

॥ श्री जगद्गुरु पंचाचार्य महाराज प्रसन्न ॥

आयुर्वेदिक औषधालय, हलबर्गा

मालिक:—रामय्या सिद्धय्या स्वामी हलबर्गा

:—इस औषधालय में:—

भस्म, मात्रा, गुटिका, आवलेह, चूर्ण, वाटिका, आसवें, रसायनें, ताजी वनस्पती आदि औषधियाँ मिलती हैं।

पता:—रामय्या सिद्धय्या स्वामी

मुकाम पोष्ट स्टेशन हलबर्गा, जि. बीदर (सेन्ट्रल रेल्वे)

औषधि विक्रय स्थान

(१) नीळकंठप्पा व्यंकोबा अप्पा वाकळे मु. माजलगांव जि. बीड.
(२) वैद्य हरिकृष्ण शर्मा, बेगम बाजार नगारखाना दाळमंडी हैदराबाद.
(३) प्रफुल्लित किराणा स्टोर मु. बीड.
(४) नामदेव सीताराम पेन्सलवार मु. उदगीर.
(५) शेखलाल मास्तर साहेब मु. खेली जागीर जि. परभणी
(६) लिंगप्पा नीळकंठप्पा वैद्य मु. आष्टी ता. तुळजापुर.
(७) किशनराव व्यंकोबा मोतेवार मु. सरसंवा बुजरुग जि. नांदेड.
(८) बन्शीलालजी शेठ जाली मकान बसमत गेट, नांदेड.
(९) गोविंदराव मंदरवाडकर मॅनेजर साहेब सरस्वती बँक मु. सेडम, जिल्हा गुलबर्गा.
(१०) गुरुबसप्पा स्वामी मठदेव मु. अहमदपूर.
(११) धोंडु न सिंगा अंबाडेवार मु. दुधड ता. हदगाव जि. नांदेड
(१२) शिवरुद्रप्पा एकनाथप्पा कोरके मु. अचलीर.
(१३) रामकृष्ण गोविंद क्लाथ मर्चंट दु. पुराना बाजार निजामाबाद.
(१४) बाबूराव मारुतीराव जैन किराणा दु. कांकम्बा ता. सोलापुर
(१५) सिद्रामप्पा जट्टे ता. लोहारा.

दक्षिण भारती

वर्ष ३] हैदराबाद, जन. फर. १९५३ [अंक १-२

सम्पादकीय

कांग्रेस का ५८ वां अधिवेशन

कांग्रेस की स्थापना से अबतक कांग्रेस के सामने एक लक्ष्य था— स्वतन्त्रता प्राप्ति और इसी लक्ष्य को लेकर कांग्रेस कार्य करती रही। उसने लोगों के दिलों में उत्साह पैदा किया, उन्हें स्वतंत्रता का मंत्र सुनाया, इस मन्त्र की सिद्धि के मार्ग बताये, समय-समय पर अधिवेशनों का आयोजन कर उन्हें संगठित करने का प्रयत्न किया और किया स्वतन्त्रता संग्राम में साहस के साथ लड़ने वाले अहिंसक सैनिकों का निर्माण। इसका फल १९४७ में स्वतन्त्रता की विजय श्री के रूप में मिला, पर यह थी खण्डित भारत के रूप में जिसके दायें बायें दोनों लहलहाते हरे अंग पाकिस्तान के रूप में अलग हो गये। फिर भी किसी अंग-भंग को इस आशा से स्वीकृत किया कि विदेशी सरकार की सत्ता से मुक्ति मिलने पर हम स्वतन्त्र बन कर आगे बढ़ सकेंगे, हमारी दीन-हीन स्थिति को हम सुधार सकेंगे—भारत में रामराज्य की स्थापना कर सकेंगे, परन्तु यह आशा भी निराशा में परिवर्तित हुई। अंग-भंग की पीड़ा ने नस-नस में और रोम-रोम में जलन पैदा की जो असह्य हो गई। कांग्रेस ने राज्य की बागडोर संभाल कर अंग-भंग से पैदा होने वाली जलन और पीड़ा की मरहम पट्टी करनी प्रारम्भ की। इसी में ५ साल का काल बीत गया। सुदृढ़ता और सुसंपन्नता का स्वप्न साकार रूप धारण न कर सका। इसे साकार बनाने का कांग्रेस को अवसर ही न मिला। पांच वर्ष के बाद अब यह उस दिशा में दृष्टि डाल रही है। इसने तय किया है कि पंच वर्षीय योजना का आयोजन कर देश की जीर्ण शीर्ण स्थिति को सुधार कर उसमें फिर से रक्त का संचार किया जाय। दुबले पतले अस्थिपंजर में मास पेशियों का निर्माण कर इसे सशक्त बनाया जाय। ऐसा करने के लिए उसने यह पहला कदम उठाया है वह भी पंच वर्षीय योजना की आयोजना बना कर। इसी आयोजना को सफल बनाने की रीति नीति पर विचार करने के लिए हैदराबाद में होने वाले कांग्रेस के ५८ वें अधिवेशन में प्रस्ताव पेश किये जाने वाले हैं। यहां यह सोचने की बात है कि इस राष्ट्र निर्माण के पहले कदम की बात सोचने के लिए हैदराबाद को ही क्यों चुना गया और अन्य किसी स्थान को क्यों नहीं?

हैदराबाद एक त्रिवेणी संगम स्थान है। यहां भाषा संगम और संस्कृति संगम हुआ है, विभिन्न धर्मों, जातियों और लोगों के दिलों का संगम। इस त्रिवेणी संगम पर विचारों का मंथन करने से उसमें से निश्चित मार्ग रत्न निकल सकता है। इसकी पूर्ण संभावना और आशा है और इस आशा का आधार है वह ऐतिहासिक प्रसिद्ध दुर्ग जहां जग प्रसिद्ध कोहनूर हीरा मिला था। इसी आशा को लेकर कांग्रेस के इस अधिवेशन का आयोजन हैदराबाद के प्रसिद्ध दुर्ग गोलकोंडे में किया है।

हैदराबाद भारत का पांचवा बड़ा शहर है; फिर भी देश की राष्ट्रीय संस्था कांग्रेस के ५७ अधिवेशनों में में से एक भी अधिवेशन यहां नहीं बुलाया। इसका कारण यहां की पिछली निजामी राज्य की शासन नीति है। अब समय परिवर्तन हुआ है। दक्षिण में भाषावार प्रांत रचना को लेकर कोलाहल मचा हुआ है। जिस दक्षिण ने कांग्रेस को बलवान बनाने में लोगों में देश प्रेम की भावना को जागृत करने में तथा हंसते-हंसते मातृभूमि के लिए प्राणों का बलिदान करने वाले वीर योद्धाओं का निर्माण करने में कांग्रेस को सर्वाधिक योग दिया, वही दक्षिण आज कांग्रेस की रीति नीति से असंतुष्ट होकर इसके विरुद्ध अपनी आवाज़ बुलन्द कर रहा है। इसका आभास हमें पिछले चुनाव में मिल चुका है और आज जो भाषावार प्रांत रचना की राग अलापी जारही है। उसमें इसकी ध्वनि, सुनाई देरही है। यह ध्वनि कांग्रेस के विरुद्ध ललकार न बन जाय, छोटी सी चिनगारी धधकती ज्वाला का रूप धारण न करलें! इस लिए अभी से इसके रोकने के प्रयत्न जारी है। दक्षिण के कांग्रेसी कार्यकर्त्ताओं का संगठन और इसके प्रति लोगों के दिलों में सद्भावना का संचार इसका हल है। इसी बात को ध्यान में लाकर कांग्रेस का यह अधिवेशन दक्षिण में करना निश्चित किया गया, परन्तु दक्षिण में हैदराबाद से अधिक उपयुक्त स्थान इस कार्य के लिए दूसरा नहीं था। आंध्र प्रांत की मांगने सारे दक्षिण को सचेत कर दिया है। इधर साम्यवादी प्रवृत्तियां भी इसी भाग में अधिक मात्रा में हो रही है। हैदराबाद त्रिभाषी क्षेत्र होने के कारण यहां इन बातों का असर उतना उग्र नहीं हुआ जितना अन्य जगहों में और यह राज्य है सबसे निकट दक्षिण के मध्य हृदय भाग में। यहां की जनता में कांग्रेसाधिवेशन के प्रति लालसा और उत्सुकता भी एक कारण है क्योंकि अबतक यहां कांग्रेस अधिवेशन नहीं हुआ। अर्थ, खाद्य स्थान और व्यवस्था की दृष्टिसे भी हैदराबाद ही दक्षिण में सबसे अधिक इस काम के लिए उपयुक्त है। इन सभी बातों का विचार करते हुए कांग्रेस अधिवेशन का आयोजन हैदराबाद ही में निश्चित किया गया।

इससे हैदराबादवासियों को लाभ भी होगा और कुछ हानि की भी संभावना है। पर लाभ अधिक है, जिसके सामने हानि गौण मानी जा सकती है! लाभ यह कि अबतक इस प्रकार के राष्ट्रीय भावनाओंको जागृत करनेवाले कार्य हैदराबाद में नहीं हुए और इस कारण यहां की जनता पिछड़ी हुई रही, अब यह अवसर आया है। इससे लोगों में राष्ट्रीय भावना जागृत होगी। इस प्रकार के आयोजनों से संगठनों का अनुभव होगा। इस आयोजन से हैदराबाद के श्रम का उपयोग होगा, उसे पारिश्रमिक मिलेगा और लोग रोजी, रोटी से लगेंगे। बाहर के लाखों प्रतिनिधि हैदराबाद पधार रहे हैं उनका स्वागत हैदराबाद के लिए हितार्थ होगा। उनके द्वारा किये जानेवाले खर्च का लाभ हैदराबादवासियों को अधिक होगा। हैदराबाद के बारे में बाहर वालों के दिलों में एक विशिष्ट बात घर की हुई है। हर एक की इच्छा हैदराबाद को देखने की है। जबतक हैदराबाद में निजाम का शासन चलता रहा लोगोंकी इच्छा पूर्ति का मार्ग बन्द रहा। अब वह खुला है लोगोंका प्रवाह इधर बढ रहा है। जो कांग्रेसाधिवेशन में जाते-जाते ऊब-से गये हैं वे भी इस बहाने हैदराबाद में होनेवाले इस अधिवेशन में अवश्य ही भाग लेंगे। इस तरह हैदराबाद में लोगोंकी— अतिथियोंकी संख्या अधिक रहेगी और इसका लाभ हैदराबददवासियों को होगा। हैदराबाद में अखिल भारतीय औद्योगिक प्रदर्शनी इसी अवसर पर होरही है।

मानव को आकृष्ट करनेवाली मनोहर वस्तुएं, औद्योगिक प्रतिनिधि वस्तुएं इस में विक्रयार्थ रखी गई हैं। इसका भी प्रभाव आए हुए कांग्रेसी प्रतिनिधियोंपर होगा और यह प्रभाव प्रत्यक्ष या परोक्ष रूपमें हैदराबादवासियों के लिए लाभप्रद है ही।

कांग्रेस अधिवेशन से हमें कुछ हानिका भी आभास होरहा है। वह यह कि इस आयोजनमें जो लाखोंका खर्च हो रहा है वह हैदराबादवासियों की जेबों से ही अधिक निकल रहा है। रजाकार कालसे अबतक हैदराबादवासियोंकी जेबोंसे ही अधिक निकल रहा है। रजाकार कालसे अबतक हैदराबाद की आर्थिक स्थिति निरन्तर क्षीण होती जारही है। लोगोंकी क्रय शक्ति घटती जारही है। हैदराबाद नवाबोंकी बस्ती थी। नवाबोंपर ही यहां के अधिकांश परिवार पलते थे। इन में से कुछ तो पाकिस्तान की राह चले गये और कुछ की जागीरें चली गई। इस लिए वे कंजूसों का अनुकरण करने लगे। इसका प्रभाव यहां के व्यापार, उद्योग, श्रम, मजदूर तथा रहन-सहन पर हुआ। लोगोंकी स्थिति गिरती गई, और लोग बेकारी का शिकार होते गये। कांग्रेसाधिवेशनमें जो पैसा हैदराबादवासियों द्वारा खर्च होगा या होगया उसका असर मन्दीके रूपमें आये बिना नहीं रह सकता। अप्रेल से हैदराबाद में हाली सिक्के का चलन बन्द हो रहा है और कल्दार सिक्के के चलन में पहले-पहल हैदराबादवासियों को बरकत नहीं दीख सकती। इसका बुरा प्रभाव पडे बिना नहीं रह सकता। लोगोंकी परेशानी एकबार के लिए बढे बिना नहीं रहेगी।

राजनैतिक दृष्टि से जो मतभेद हैदराबाद में पैदा होता जा रहा है उसे सदा के लिए यदि इस अधिवेशन में न समाप्त कर दिया जाय तो संभव है यह बार-बार सर उठाने वाली हरकत आगे चलकर हानिप्रद सिद्ध हो। परन्तु हम देख रहे ह कि यह बात यहां की ही नहीं है, भारत के सभी राज्यों में और केन्द्रों में भी ऐसी बातें हो रही हैं। ये हमें हमारे कमजोर संगठन की सूचना देती है। कांग्रेस का संगठन कुछ कमजोर-सा हो गया है। विभिन्न दल इसका लाभ उठा रहे हैं। जनता की कांग्रेस के प्रति उदासीनता का ये दल उचित अनुचित उपयोग करते जारहे हैं जिस से कि जनता की शक्ति बिखरती जा रही है कहीं-कहीं तो कांग्रेस के नाम पर लोग अत्याचार और लूट मार भी कर रहे हैं। इधर भारत का अंग भंग, काश्मीर का अलग संविधान और सदरेरियासत का अस्तित्व, पाकिस्तान को विरोधी नीति पर भी उस के साथ मित्रता स्थापित करने का व्यर्थ प्रयत्न, विदेशी पूंजी तथा खाद्य का अवांछनीय आयात आदि बातें जनता के दिलों में कांग्रेस सरकार के विरुद्ध अलग ही भावनाओं को भर रही है इस वजह से कांग्रेस का संगठन कमजोर होता जा रहा है। यदि यह अधिवेशन इस पर विचार कर कांग्रेस को संगठित करने का प्रयत्न करे तो ठीक होगा।

दूसरी बात संगठन के लिए नीति की भी है। सरकार राष्ट्रपिता बापू के आदेशों पर चलने का दम भरती है, परन्तु वास्तव में जो कार्य सरकार द्वारा होते जारहे हैं उन में बापूजी की अहिंसक नीति का विरोध होता दीख रहा है। स्पष्ट रीति से कहा जाय तो सरकार आज बापू के मार्ग पर न चल कर अधिक प्रमाण पर जो अंग्रेजी शासन यहां चलता आया है उसी का अनुकरण कर रही है। आखिर पांच वर्ष का काल तो बीत गया अब भी वहीं अनुभव हीनता की बात कही जाय तो कहां तक उचित होगा? चीन आज हम देख रहे हैं कि वह राष्ट्र उन्नति के मार्ग पर दिन दूनी रात चौगुनी गति से आगे बढ रहा है। रूस को भी वही स्थिति हुई। २८ फरवरी १९१७ को रूस में क्रांति हुई उस के बाद तीन चार वर्ष वहां भी भारत की-सी ही गडबड रही, परंतु फिर 'निव इकनामिक प्लानिंग' के बाद से वह राष्ट्र आगे बढने लगा और केवल ३५ वर्षों में ही जो राष्ट्र संसार

(शेष पृष्ठ २३ पर)

बापू के प्रति

(श्रद्धांजलि)

अमर कहें या मानव तुम को, हे अमर महा मानव गांधी !
रहे कवच नित मानवता-हित, दानवता-हित, बनकर आन्धी ॥
सदियों के सोये कुम्भकरण, सुनं हुँकार तुम्हारी जागे ।
टूटे अन्यायी शासन के, वे सदियों के अटूट धागे ॥ १ ॥

रंग-भेद गोरे-काले का, या अन्तर शासक-शासित का ।
था वह द्वेष असुर-सुरता का, था झगडा शोषक शोषित का ॥
जो भी हो, दानव पशु-बल से, था मानवता को रहा कुचल ।
तुम ही तो उसकी रक्षा-हित, तब निशंक, निरस्त्र, सबल ॥ २ ॥

साम्राज्यवाद-रावण ने जब, हरली भारत-गौरव-सीता ।
बन्दिनी समुद्र पार रहकर, धुनती थी नित शीश पुनीता ॥
तब जन बल-रघुकर के बनकर सेनापति तुम मारुति धाये ।
जला लङ्क घमंड की उन के, स्वतन्त्रता की सुधि ले आये ॥ ३ ॥

हना गया रावण भी, पाई-खोई स्वाधीनता-पुनीता !
औ' गणराज्य-सु-अभिषेक हुआ, हे देव ! तुम्हारा मनचीता ॥
छाया आनन्द भारत भर में, जन-जन का था नाच उठा मन !
उत्सुक थे सब तव आशा पर, रामराज्य वह पाने पावन ॥ ४ ॥

पर वह तो मानो स्वप्न हुआ, जन-जन उस-हित अब भी उन्मन ।
हे राम-राज्य-स्थापन-इच्छुक ! जाने कब हो उसके दर्शन !
मिला स्वराज्य भले ही हो पर, 'रामराज्य' न अभी है आया ।
सौख्य-शान्ति है दूर अभी तो, अन्त न पीडा का हो पाया ॥ ५ ॥

तब स्मृति के इस पावन दिन पर, याद करे फिर भारत निज प्रण ।
वह स्वप्न रहे न अधूरा तब, व्रत यदि हम यह करलें धारण ॥
तो वह होगी श्रद्धा-पूजा—सच्ची तव, हे युग-निर्माता !
राष्ट्रपिता ! लो प्रणाम शतशः, दो बल ज्ञान-ज्योति के दाता ॥ ६ ॥

— चांदमल अग्रवाल "चन्द्र"
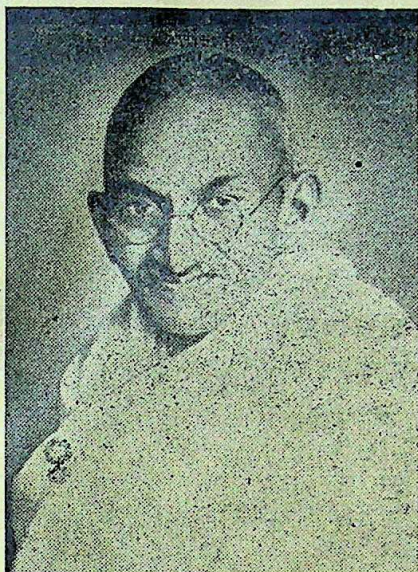
हे धरा के अमर सुत, तुमको अशेष प्रणाम !
जीवन के अजस्त्र प्रणाम।
मानव के अनन्त प्रणाम ॥
दो नयन तेरे धरा, के अखिल स्वप्नों के चितेरे।
तरल तारक की अमा में बन रहे शत शत सवेरे।
पलक के युग शुक्ति सम्पुट, मुक्ति मुक्ता से भरे थे।
सजल चितवन में अजर आदर्श के अंकुर हरे थे
विश्व जीवन के मुकुर दो तिल हुए अभिराम।।
चलक्षण के विराम प्रणाम ॥
वह प्रलय उद्दाम के हित अमिट वेला एक वाणी,
वर्ण माला मनुज के अधिकार की, मूकी कहानी;
साधना अक्षर, अचल विश्वास ध्वनि संचार जिसका;
जागरण का शंख स्वप्न, वह स्नेह वंशी ग्राम।
स्वर छान्दस विशेष प्रणाम।

— महादेवी वर्मा

हे विशुद्ध, हे पूर्ण शुद्ध, सुनिरुद्ध तृष्ण हे सन्यासी !
हे ज्वलन्त, हे सन्त, शान्त हे, हे अनन्त के अभ्यासी।
मानवता की तुम प्रहेलिका, जगती के तुम अचरज हे।
हे विकास की विकट समस्या, श्रेष्ठज हे, जय अन्त्यज हे !
योग युक्त हे, शोक मुक्त हे, यज्ञ मुक्त हे बलिदानी।
हे अपमानित, हे सम्मानित, श्री गुरुदेव परमज्ञानी।
हे प्रलयंकर, हे शंकर, हे किंकर, हे निष्ठुर स्वामी।
परम सेव्य, हे तुम चिर सेवक, ओ कर्मठ, ओ निष्कामी।
हे दुरत्य धारा पथगामी, हे जगमोहन, जय जय हे।
युद्धवीर हे रुद्धपीर, हे नीति विदोहन जय जय हे ।

— बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

चल पड़े जिधर दो डग मग, में चल पड़े कोटि पग उसी ओर;
पड़ गई जिधर भी एक दृष्टि, गढ गए कोटि दृग उसी ओर।
जिसके सिर पर निज धरा हाथ, उसके सिर रक्षक कोटि हाथ;
जिस पर निज मस्तक झुका दिया, झुक गये उसी पर कोटि माथ।
हे कोटि चरण हे कोटि बाहु, हे कोटि रूप, हे कोटि नाम।
तुम एक मूर्ति प्रति कोटि, हे कोटि, मूर्ति तुमको प्रणाम।
युग बढा तुम्हारी हंसी देख, युग हटा तुम्हारी भृकुटि देख,।
तुम अचल मेखला वन भू की, खींचते काल पर अमिट रेख।
तुम बोल उठे, युग बोल उठा, तुम मौन बने, युग मौन बना,
कुछ कर्म तुम्हारे संचित कर, युग कर्म जगा, युग धर्म तना।
युग परिवर्तक, युग संस्थापक, युग संचालक, हे युगाधार।
युग निर्माता, युगमूर्ति तुम्हें, युग युग तक युग का नमस्कार

— सोहनलाल द्विवेदी

तुम मांस हीन, तुम रक्त हीन, हे अस्थिशेष, तुम अस्थिहीन
तुम शुद्ध बुद्ध आत्मा केवल, हे चिर, पुराण हे चिर नवीन
तुम पूर्ण इकाई जीवन की, जिसमें असार भव शून्य लीन।
आधार अमर होगी जिस पर भावी की संस्कृति समासीन।
तुम मांस, तुम्हीं हो रक्त-अस्थी, निर्मित जिसमें नवयुग का तन।
तुम धन्य, तुम्हारा विश्व त्याग, है विश्व भोग का वर साधन।
इस भस्म काय तन की रजसे, जगपूर्ण काम, नव जग जीवन।
बीनेगा सत्य अहिंसा के ताने बानों से मानवपन।

— सुमित्रा नन्दन पन्त

जय-जय सद्गुन सदन, अखिल भारत के प्यारे।
जय जगमधि अनवधि कीरिति कल विमल उज्यारे।
जयति भुवन विख्यात सहन प्रतिरोध सु मूरति।
सज्जन सम भ्रातृत्व शान्ति की सुखमय सूरति।
जय कर्म वीर त्यागी परम, आतप त्यागी विकास कर।
जय जस-सुगंधि वितरन करन, गांधी मोहनदास वर॥
जय पर काज निवाहन कृत बन्दीगृह पावन।
किन्तु मुदित वही भाव मंजुल मन भावन।
मातृ भक्त जातीय भाव रक्षण के नेमी।
हिन्दी, हिन्दू, हिन्द देश के सच्चे प्रेमी।
निज रिपहू को अपराध नित, छमत, न कछु संका करत।
नव नवनीत समान अस, मृदुल भाव जगहित हरत॥

— सत्यनारायण कविरत्न

युग के नायक देव हमारे—

सत्य अहिंसा शान्ति प्रेम के मंजुल उज्ज्वल हे ध्रुवतारे,

कोटि कोटि कण्ठों से जय-जय, गूंजे मंगल गान तुम्हारे ॥ युग के नायक।

मातृभूमि के वरदपुत्र तुम, सत्य ज्ञान के अग्रदूत तुम,

निखिल जगत के जन नायक हे, भारत मांके प्राणदुलारे ॥ युग के नायक।

कौन बली तुम-सा इस जगमें, कौन तपी तुम-सा इस जगमें?

तुमने सत्य अहिंसा बल से, कितने प्रभु के प्राणी तारे ॥ युग के नायक।

तुमने हरिजन में हरि पाया, मानव कुल का भाग्य जगाया

तुमने तारे छुए गगन के इस धरती पर रहकर प्यारे ॥ युग के नायक।

मानवता को धन्य किया है तुमने लेकर मानव का तन,

देश देश में गूंज रहे हैं, बन्धुभाव के मंत्र तुम्हारे ॥ युग के नायक।

कवि, वक्ता क्या लिखें, कहें, जब सरस्वती भी हार गई है,

दिन में सूरज, रात चन्द्रमा लिखते हैं इतिहास तुम्हारे ॥ युग के नायक।

— कमल साहित्यालंकार

वह कौन एक मुट्ठी भरका अधनगां-सा बूढ़ा फकीर?

जिसके माथेपर सत्य-तेज, जिसकी आंखों में विश्व-पीर।

जिसकी वाणी में शक्ति, भेद जो कुलिश कपाटों को जाती;

जिसके अन्तर का प्रेम देख, असिधारा कुंठित हो जाती!

वह गांधी, हम सब को बापू, वह अखिल विश्व का प्यारा है।

वह उन में ही से एक जिन्हों ने आकर विश्व उबारा है।

— सुभद्राकुमारी चौहान

भारत के लिए प्रयोगात्मक शिक्षा योजना

—आचार्य श्री नारायण प्रसाद सिन्हा, "जहानाबादी"

भारत की ८० प्रतिशत जनता ग्रामीण है। उसकी शिक्षा संबन्धी आवश्यकताओं पर विचार करते हुए समस्या के दो पहलू दृष्टिगत होते हैं। पहली बात तो यह है कि उसके पास इतना धन नहीं है कि वह आज की हू-ब-हू व्यय साध्य शिक्षा प्रणाली को अपना सके। दूसरी बात यह है कि आज की शिक्षा पद्धति शिक्षार्थियों को जो कोरा किताबी ज्ञान देती है वह उसके किसी काम नहीं आ सकता। गांधीजी ने दोनों ही बातों पर विचार किया और दोनों का समाधान आविष्कार किया। चूं कि बुनियादी शिक्षा पद्धति में शिक्षार्थी स्वयं आत्मनिर्भर रहता है, इसलिए राष्ट्र अथवा परिवार की सहायता की आवश्यकता ही नहीं रहती। दूसरी ओर उसे जो शिक्षा प्रदान की जाती है वह मात्र सैद्धांतिक न होकर व्यावहारिक भी होती है जो आगे चलकर उसके जीवन में अत्यंत उपयोगी प्रमाणित हो सकती है।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली शुष्क किताबी ज्ञान देने वाली है वह शिक्षार्थियों की आत्मा का हनन कर देती है। उसमें कहीं आनन्द की भावना के दर्शन नहीं होते। सारी शिक्षा-दीक्षा का मूल मंत्र परीक्षा में येन केन प्रकारेण उत्तीर्ण हो जाना ही होता है। नामों, संवतों और घटनाओं जिनके साथ विद्यार्थी कोई व्यक्तिगत संबन्ध नहीं देख पाता, उसे रट-रटा कर अपने गले के लिए उतार लेना पड़ता है। किस लिए? केवल परीक्षा के समय उसे उगल देने के लिए और तत्पश्चात् उसे सर्वथा भूल जाने के लिए। इस शिक्षा-प्रणाली का एक मात्र उद्देश्य उपाधि प्राप्त कर लेना ही होता है। वह भी इसलिए नहीं कि इससे किसी प्रकार का आत्म सन्तोष प्राप्त होता है बल्कि इसलिए कि वह नौकरी प्राप्त करने में सहायक होता है। ऐसी प्राण हीन शिक्षा को लक्ष्य कर कविने कहा था—" क्या अहबाब, क्या कारेनुमांया कर गये। बी. ए. हुए, नौकर हुए, पेंशन मिली फिर मर गये।"

गांधीजी की बुनियादी शिक्षा प्रणाली इस प्रणाली से सर्वथा भिन्न है। वह संपूर्ण शिक्षा को आनन्दमयी, स्वतंत्र और रोचक बनाती है और व्यर्थ किताबी ज्ञान से शिक्षार्थी को मुक्त रखती है। वर्तमान शिक्षा-प्रणाली जीवन की वास्तविक परिस्थितियों को दृष्टिगोचर नहीं कराती।

गांधीजी ने बुनियादी शिक्षा प्रणाली का आविष्कार करते समय समस्या के हर पहलू को दृष्टिगत किया था। उनकी मार्मिक दृष्टि बहुत दूर तक गई थी। उन्होंने देखा कि ग्रामीण अंचलों में भी यदि कोई थोड़ी बहुत अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त कर ले तो उसकी दृष्टि तुरंत सुदूर नगरों पर केन्द्रित हो जाती थी और वह गाँव में रहना पसंद न करता था। उन्होंने तुरंत इसे पकड़ लिया और एक ऐसी शिक्षा पद्धति का निर्माण करने की आवश्यकता का अनुभव किया जो ग्रामीण जनता को शिक्षित बना कर भी अपने ग्राम में हीं सुखी और सन्तुष्ट रक्खे और उसे शहरों की ओर भागने के लिए बाध्य न करे।

एक बात उन्होंने और भी देखी थी। आज की पश्चिमी शिक्षा पद्धति का सबसे बड़ा दोष यह है कि वह शिक्षार्थी के दृष्टिकोण को केवल बौद्धिक ही बनाती है, आध्यात्मिक नहीं। फलतः उसका मस्तिष्क एक प्रकार के जड़ प्राणहीन भौतिकवाद से आक्रांत हो जाता है, जो आगे चल कर नास्तिक मनोवृत्ति में परिणत हो जाता है। उन्होंने अपनी शिक्षा पद्धति में इस दोष को दूर करने के लिए प्रार्थना, भजन, कीर्तन आदि का समावेश किया और आज की ईश्वर-विहीन शिक्षा को आनन्दमयी बनाने का स्तुत्य प्रयास किया। उनकी शिक्षा पद्धति का मंगलमय स्वरूप ही कदाचित् सबसे अधिक आकर्षक है।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली की आलोचना करते हुए एक बार सिद्ध अंग्रेज कवि कालरिज ने कहा था कि "तीन" "आर" पर आधारित यह शिक्षा पद्धति एक चौथे "आर" को ही जन्म देती है और वह 'आर' है "रैस्कलडम" का!! विश्व-विद्यालयोंमें प्रति वर्ष लाखों की संख्या में निकलने वाले

प्राणहीन, अकर्मण्य, गतिहीन स्नातकों पर एक दृष्टि डालते ही यह बात स्पष्ट हो जाती है।

बुनियादी शिक्षा पद्धति की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह बालक के मनोवैज्ञानिक पहलुओं पर आधारित है। प्रत्येक बालक स्वभाव से ही खेल-कूद पसन्द करते हैं और प्रत्येक औसत बालक कोरे किताबी ज्ञानसे घृणा करता है। बुनियादी शिक्षा पद्धति में खेल और आमोद-प्रमोद की इस मनोवृत्ति से पूरा-पूरा लाभ उठाया जाता है; किन्तु स्मरण रहे कहीं पर भी बालक से उसके इच्छा के विरुद्ध श्रम कराने की भावना इसमें नहीं रहती। जिस किसीने किसी बुनियादी शिक्षा केन्द्र का निरीक्षण किया होगा वह इस बात से पूर्णतया सहमत होगा कि वहाँ बालकों के श्रम के फल स्वरूप जो उत्पादन होता है वह एक प्रकार से अनजाने ही आमोद-प्रमोद के प्रसंग में ही होता है। इसके अतिरिक्त यह नगण्य बात है कि बालक क्या उत्पादित करता है। महत्व की बात तो यह है कि उसकी मनोवृत्ति रचनात्मक बन रही है या नहीं। बालक इस रचनात्मक वातावरण में जिस आनन्द का अनुभव करता है वह स्वयं एक बहुत बड़ी बात होती है। उसकी तुलना शुष्क किताबी शिक्षा पर आधारित पाठशालाओं के वातावरण के साथ कीजियेगा तो आकाश पाताल का अन्तर ही दीख पडेगा।

जैसा कि हम कह चुके हैं गांधीजी की इस योजना का मूल मंत्र है आत्म निर्भरता। भारत एक दरिद्र देश है। करोड़ों निरक्षर प्राणियों को वर्तमान शिक्षा प्रणाली पर शिक्षित बनाने का काम एक प्रकार से असंभव है। यह बात उनकी सहज स्वाभाविक बुद्धिने अच्छी तरह देख ली थी। इसलिये उन्होंने इस शिक्षा पद्धति का आविष्कार किया था; जिसके अपनाने पर न सरकार पर किसी प्रकार का आर्थिक भार आता है न शिक्षार्थी के परिवार पर किन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि बुनियादी शिक्षा-पद्धति सरकार को हर प्रकार के उत्तर दायित्व से मुक्त कर देती है। उदाहरण के लिये बुनियादी शिक्षा केन्द्रों में शिक्षार्थियों द्वारा उत्पादित होने वाले माल के विक्रय का प्रश्न बडे गम्भीर रूप में खड़ा हुआ है। पिछले कुछ दिनों के अन्दर इस बात की चर्चा काफी जोर शोर पर चली है कि राज्यों की सरकारें ६ वर्ष से ११ वर्ष तक के बालकों के सम्बन्ध में बुनियादी शिक्षा अनिवार्य घोषित कर दे और उनके द्वारा उत्पादित माल स्वंय खरीदकर उसकी खपत की व्यवस्था करे। इस योजना के कार्यान्वित होने से एक बहुत बड़ी समस्या हल ही जायगी।

यह तो हुआ योजना का व्यावहारिक पक्ष। अब इसके बौद्धिक पक्ष पर भी विचार कर लेना चाहिये। बुनियादी शिक्षा पद्धति के सम्बन्ध में जनता में एक बड़ा भ्रामक मत यह देखा जा रहा है कि यह कोरी शिल्प-शिक्षा ही है और शिक्षार्थी को किसी प्रकार का बौद्धिक ज्ञान प्रदान नहीं करती। किन्तु यह कोरी कल्पना ही है। गांन्धीजी ज्ञान के विरोधी न थे किन्तु गांधी जी ने अपनी इस पद्धति के दोनों पहलुओं को सन्तुलित अवश्य कर दिया है।

उन्होंने स्पष्ट रूप कहा था कि जो बात शिक्षार्थी कला द्वारा नहीं सीख सकता उसे सर्वथा छोड़ देना उचित नहीं। उसे अन्य माध्यम द्वारा सिखाया जाना उचित है। किन्तु वे नीरस उपयोगिता शून्य ज्ञान को बालकों पर लादने के विरोधी थे। इस सम्बन्ध में भी उनके विचार बडे मौलिक थे। वे प्रायः कहा करते थे कि जिन नामों और स्थानों एवं घटनाओं का विद्यार्थी के जीवन से कोई संबन्ध नहीं और भविष्य में भी किसी प्रकार के सम्बन्ध के स्थापित होने की संभावना नहीं उन्हें उसे रटा कर उसके समय और शक्ति को नष्ट करने से क्या लाभ है?

आचार्य विनोबा भावे ने तो स्पष्ट रूप में यह घोषणा की है कि जिस ज्ञान का शिल्प और जीवन के साथ कोई सम्बन्ध नहीं वह बुनियादी शिक्षा पद्धति से पूर्णतया बहिष्कृत कर दिया जाय। बालकों के लिए यह आवश्यक नहीं कि वे सारे संसार का ज्ञान प्राप्त करें। उनके अन्दर केवल वह क्षमता उत्पादन कर देना ही आवश्यक है जिसके द्वारा वे अपनी बौद्धिक प्रवृत्तियों को उचित दिशा में विनियोजित कर सकें।

संक्षेप में गांधीजी का उद्देश्य था इस शिक्षा पद्धति द्वारा एक सन्तुलित व्यक्तित्व का निर्माण। वे शिक्षार्थी का व्यक्तित्व का बौद्धिक विकास देखना चाहते थे। आध्यात्मिक, सामाजिक, बौद्धिक और कलात्मक। वे उस असंतुलन के विरोधी थे जो आज की शिक्षा पद्धति शिक्षार्थियों के अन्दर उत्पन्न कर देती है।

इस प्रसंग में एक मनोरंजक घटना का स्मरण हो आया। एक बार की बात है कि दर्शन शास्त्र के एक प्रोफेसर सन्ध्या के समय टहलने के लिये निकले। रास्ते में किसी व्यक्ति ने उनसे स्टेशन की ओर जाने वाले रास्ते को बता देने के लिए कहा। तो आपने तुरन्त उत्तर दिया कि भूगोल मेरा विषय नहीं है। यह बात अपवाद नहीं बल्कि वर्तमान एकांगी शिक्षा पर प्रकाश डालने वाली घटना ही है। आज विश्व-विद्यालय से प्रति वर्ष लाखों की संख्या में निकलने वाले स्नातक इस एकांगी शिक्षा के दोषों के जीते जागते नमूने हैं। दफ्तर की नौकरी के अतिरिक्त ये बेचारे अन्य कोई भी काम कर ही नहीं सकते और नौकरियां तो गूलर के फूल ही हैं; हर किसी को प्राप्त होने से रहीं। परिणाम यह होता है कि विद्यार्थी विश्व-विद्यालय के प्रांगण के बाहर आते ही अपने सामने अन्धकार ही अन्धकार देखता है। वर्षों तक रात-रात भर जागकर रटा हुआ व्याकरण और भूगोल किसी काम नहीं आता। बी. ए. बेकार और बी. काम. बेकार बन जाता है।

आखिर शिक्षा का उद्देश्य क्या है? यदि हम संसार में होने वाले सभी राजाओं की जन्म तिथि और मरण तिथि या उन के द्वारा लडे गये तमाम युद्धोंका वर्णन रट डालते हैं, तो इस से हमारी शिक्षा तो पूरी नहीं होती! शिक्षा का उद्देश्य केवल इतना ही नहीं कि हम संसार के संचित ज्ञान को कण्ठस्थ कर लें।

शिक्षा का उद्देश्य समझने के लिये यह आवश्यक हो जाता है कि हम मनुष्य के जीवन के उद्देश्य को निश्चित रूपसे निर्धारित कर लें। मनुष्य के जीवन का उद्देश्य क्या है? स्पष्ट है कि प्रत्येक का प्रथम और सहज स्वाभाविक उद्देश्य जीवित रहना है। जीवित रहने के लिये जीविका का प्रश्न उपस्थित होता है। बुनियादी शिक्षा पद्धति इसका समाधान उपस्थित करती है। इनके बाद मनुष्य का उद्देश्य है अपने व्यक्तित्व का विकास। विकास का अर्थ व्यापक है। इस में बौद्धिक, शारीरिक, सामाजिक, कलात्मक एवं आध्यात्मिक हर प्रकार का विकास सम्मिलित है। बौद्धिक विकास तो शिक्षा का एक पक्ष मात्र है। इस के लिये दूसरे पक्षों की अवहेलना नहीं की जा सकती। चरित्र का गठन, सुरुचि का विकास, लोक मंगल की भावना को प्रोत्साहन आदि भी शिक्षा के अंग हैं और ये कदाचित उस के बौद्धिक पक्ष से अधिक महत्व पूर्ण हैं। जो शिक्षा इनकी अवहेलना करती है, वह अधूरी है, शिक्षा वही है जो व्यक्तित्व के के चतुर्दिक विकास को दृष्टिगत करती है।

समाज का जीवन व्यक्तियों के जीवन का एक संगठित रूप ही है। व्यक्ति और समाज का पारस्परिक सम्बन्ध अधिक से अधिक सुन्दर तभी बन सकता है, जब एक पर दूसरे का भार न हो। व्यक्ति समाज पर भार बनता है जब वह आत्मा निर्भर न हो कर अपने अस्तित्व के लिए समाज पर अवलंबित होता है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली प्रति वर्ष लाखों की संख्या में जिन स्नातकों को निकाल रही है वह समाज की अनुपादक इकाइयों के रूप में उसका भार ही बढ़ाते हैं। गांधीजी की आध्यात्मिकता भी इस व्यावहारिक पक्ष से शून्य न थी। उन की दृष्टि में आत्मा भी "बलहीन लभ्य" न थी। यही कारण था कि जीवन के अन्य क्षेत्रों की कि भांति उन्होंने शिक्षा की क्षेत्र में भी व्यावहारिक पक्ष को प्रधानता दी थी।

"विभिन्न अवस्थाओं में मन को अटल रखने वाली, हृदय को आजीवन आनन्द और प्रफुल्लता देने वाली और भाग्यदेवता की कुटिल भ्रूभंगिमा को व्यर्थ करके घोर विपत्ति से हम लोगों की रक्षा करने में समर्थ कोई भी प्रवृति अगर भगवान से मांगनी हो, तो मैं पुस्तक पढ़ने की लगन ही मांगूंगा। अगर तुम किसी के मन में पुस्तक पढ़ने की लगन पैदा कर सको तो वह व्यक्ति जीवन में सुखी हुए बिना नहीं रह सकता।"

— सर जान हार्सेल

हैदराबाद राज्य का
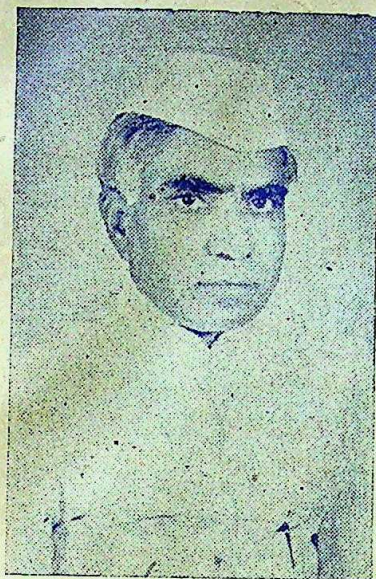
कांग्रेसी मंत्रिमंडल

वी. रामकृष्णराव मुख्य मन्त्री
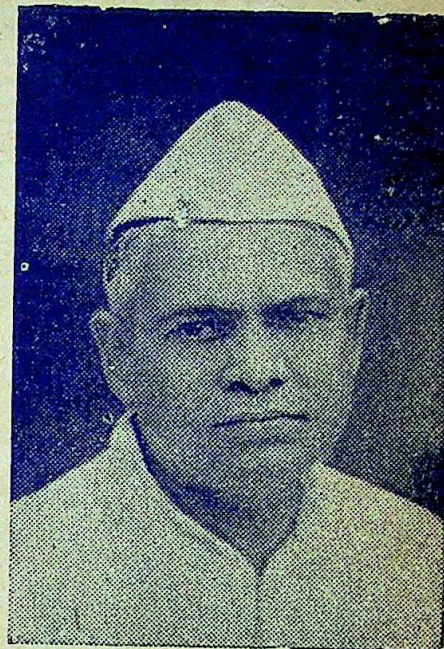
फूलचन्द गान्धी स्वास्थ्यमन्त्री

विनायकराव विद्यालंकार उद्योगमन्त्री
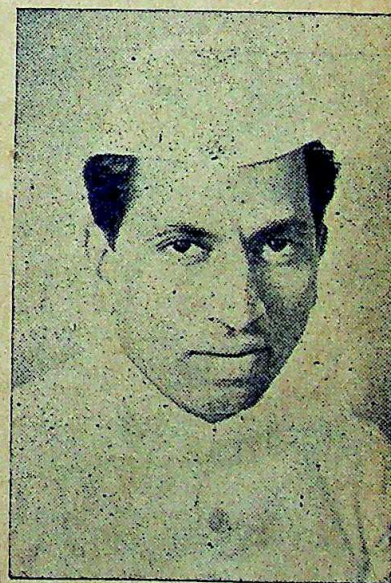
वी. बी. राजू श्रममन्त्री

हैदराबाद राज्य का कांग्रेसी मंत्रिमंडल
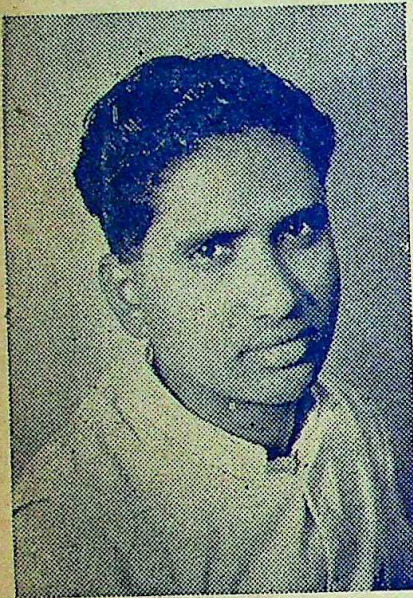
डा. चन्नारेड्डी खाद्यमंत्री

जगन्नाथराव चन्द्रकी कानून मंत्री

मेंहदी नवाजजंग मंत्री पी. डब्ल्यू. डी.
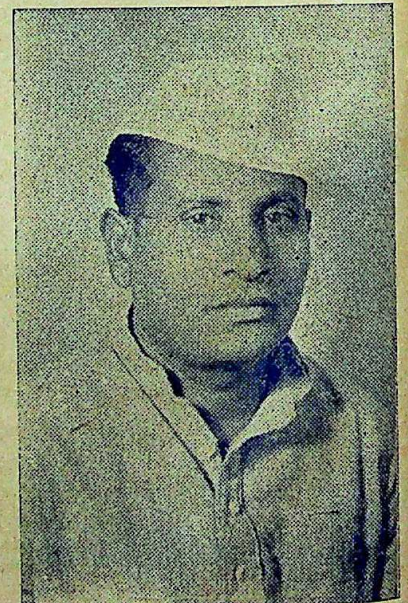
अन्नाराव गणमुखी स्वायत्त मंत्री

हैदराबाद राज्य का कांग्रेसी मंत्रिमंडल
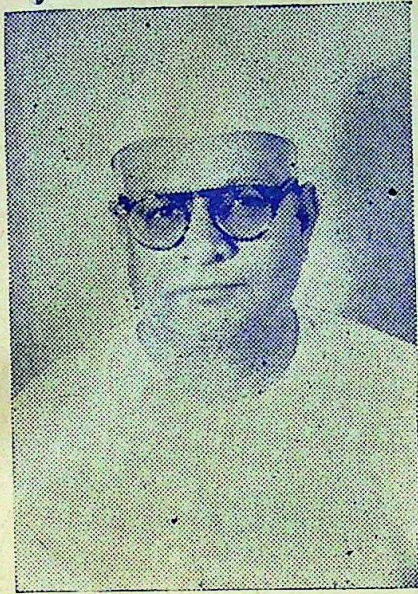
डा॰ मेलकोटे वित्त मंत्री
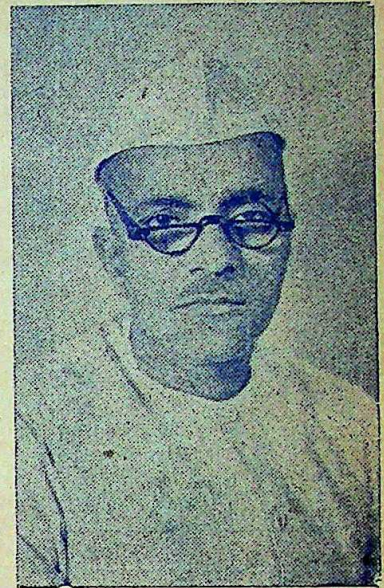
के. वी. रंगारेड्डी मंत्री वन्य विभाग

देवीसिंह चौहान ग्राम पुनर्गठन मंत्री

शंकररावदेव मंत्री समाज सेवा विभाग

एच. इ. एच. मीरउस्मान अलीखाँ
राजप्रमुख
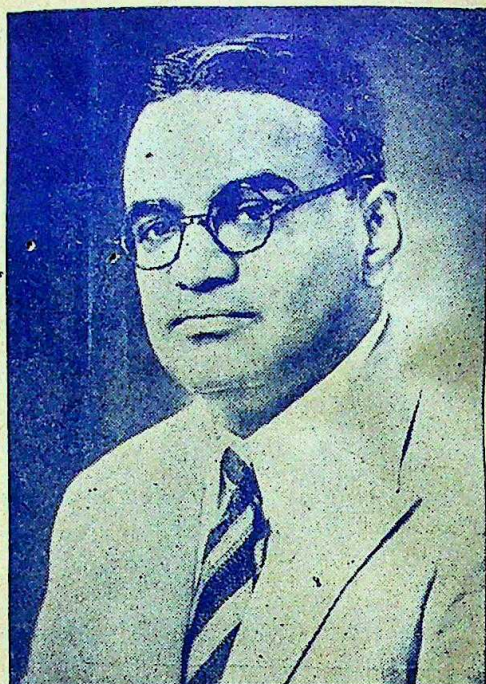
एम. के. वेलोडी सलाहकार

दिगम्बरराव बिन्दु गृहमंत्री

काशीनाथराव वैद्य स्पीकर

के. मुन्शी

गोविन्द वल्लभ पन्त
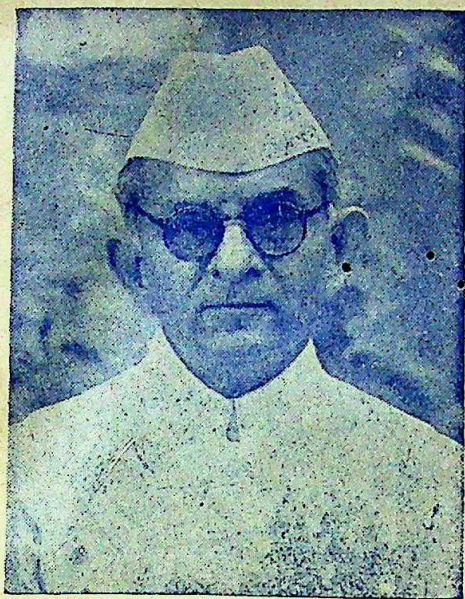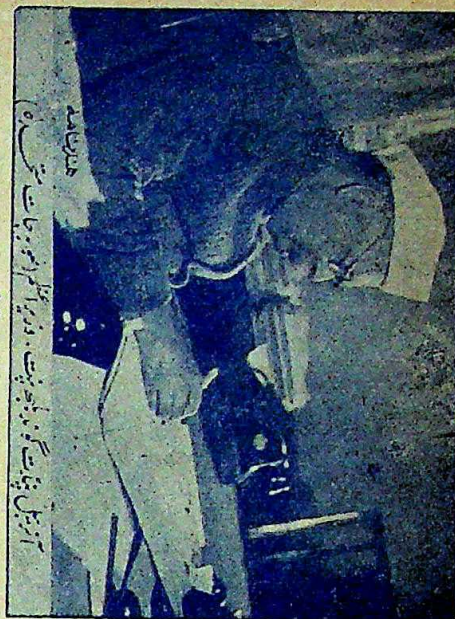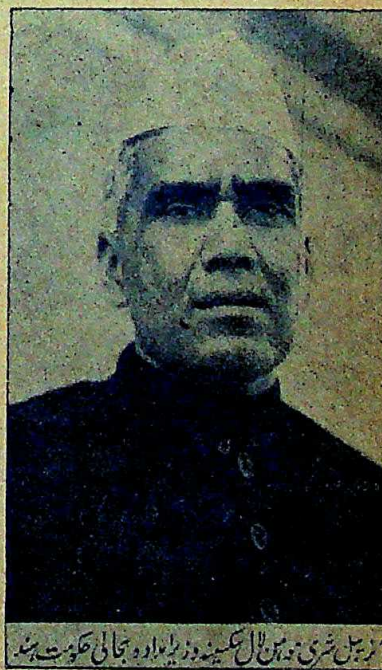
शेख अहमद

मोहनलालसक्सेना

हरि कृष्ण मेहता
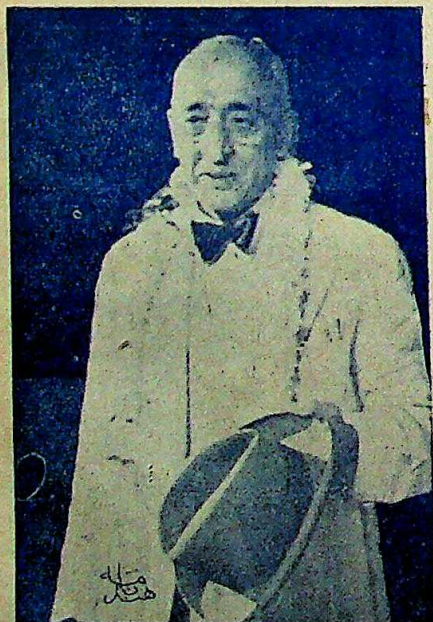
गोपालस्वामी अयंगार

पी. मोदी
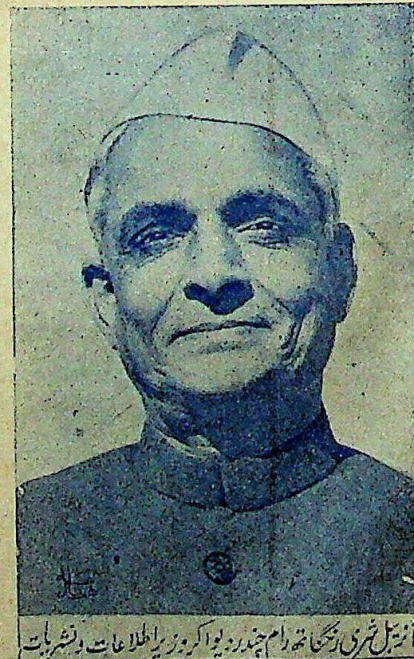
आर. आर. दिवाकर
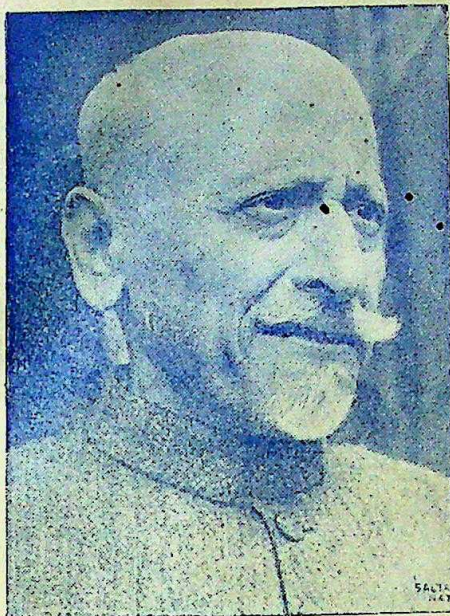
मौ. अब्दुलकलाम आजाद
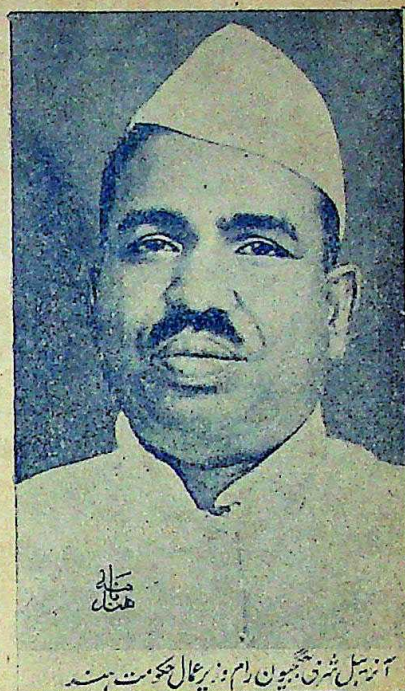
जगजीवन राम

जैन

राजकुमारी अमृतकौर

उस्मानिया हस्पताल

सिटी कॉलेज

सुप्रसिद्ध चारमीनार

हायकोर्ट
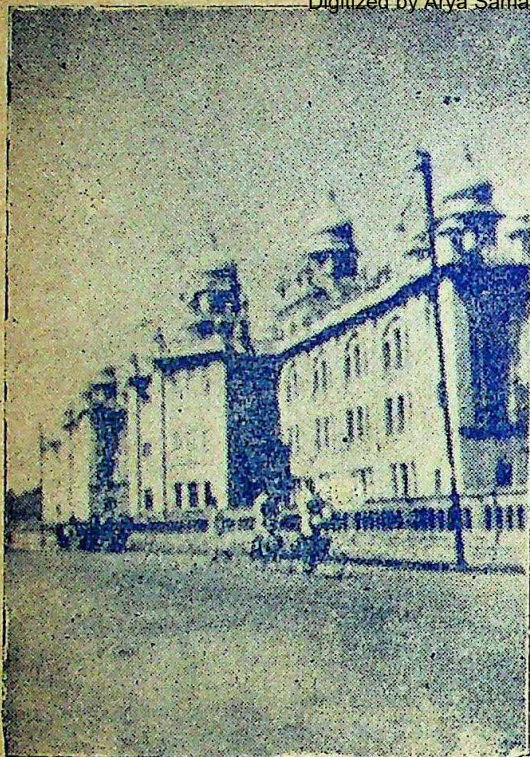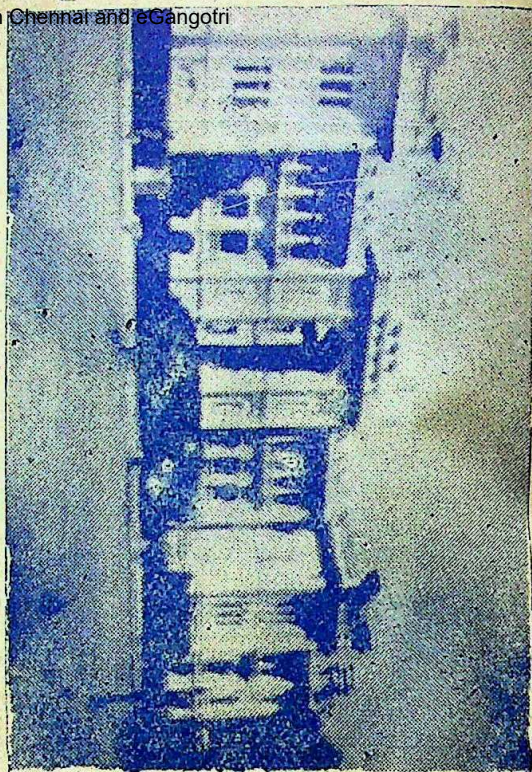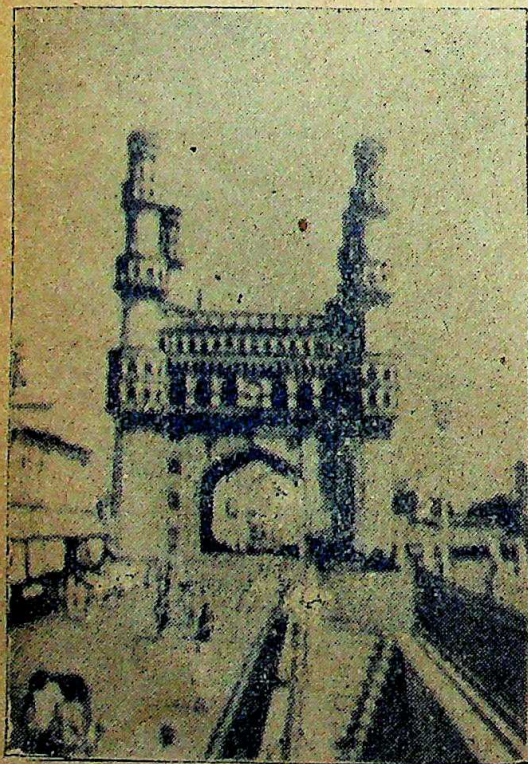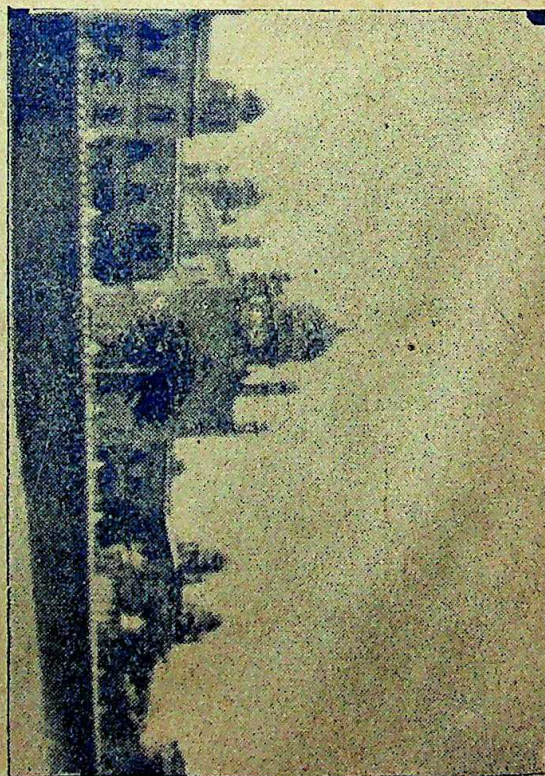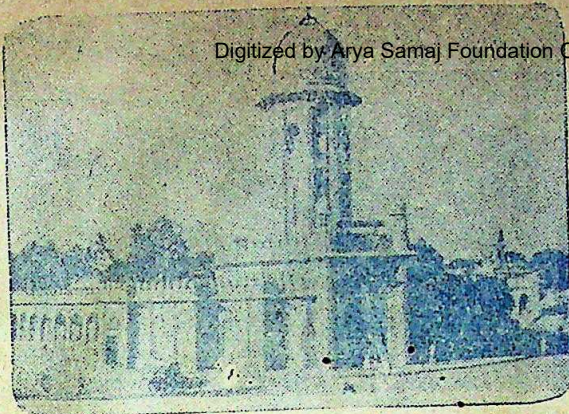
मोजमजाही मार्केट
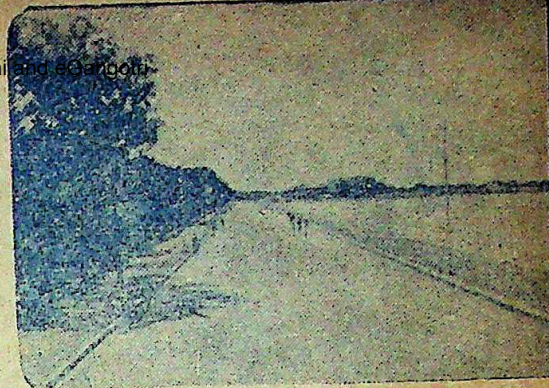
हैदराबाद सिकंद्राबाद के बीच का तालाब और सड़क

स्टेट वाटिका (बागेआम)
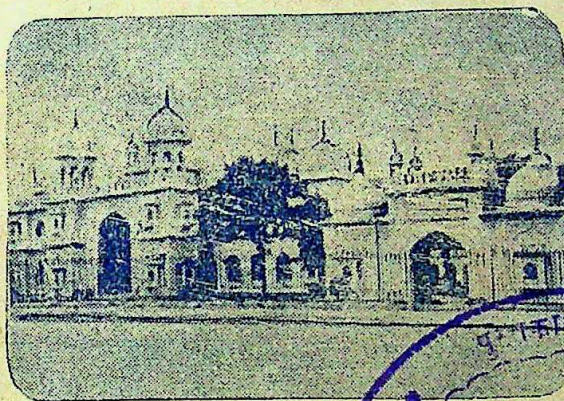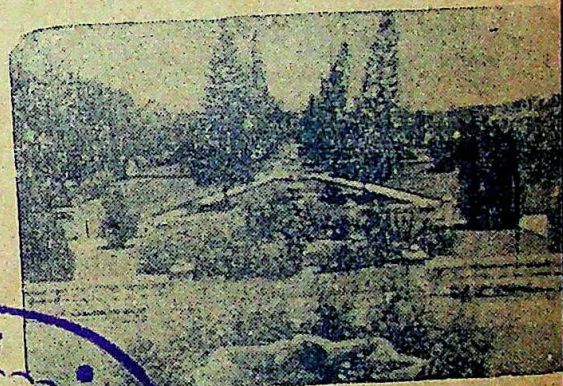
नयापुल चमन
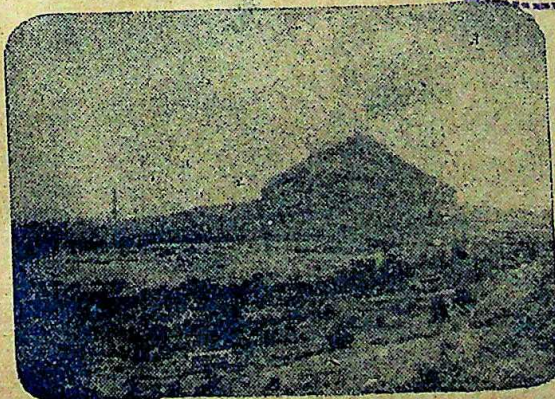
दूर से गोलकुन्डे का एक दृश्य
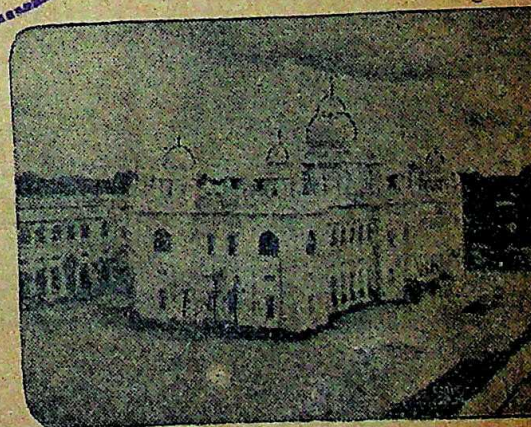
आयुर्वेदिक दवाखाना
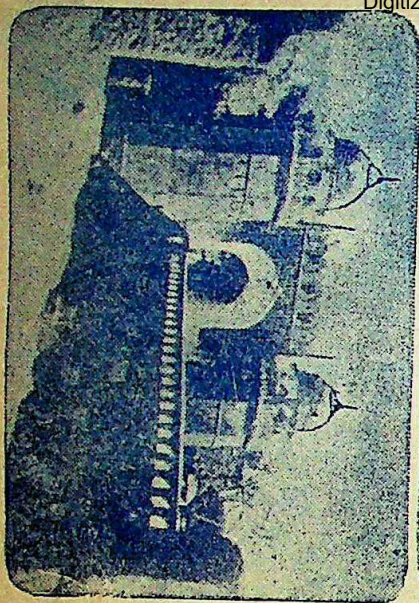
१
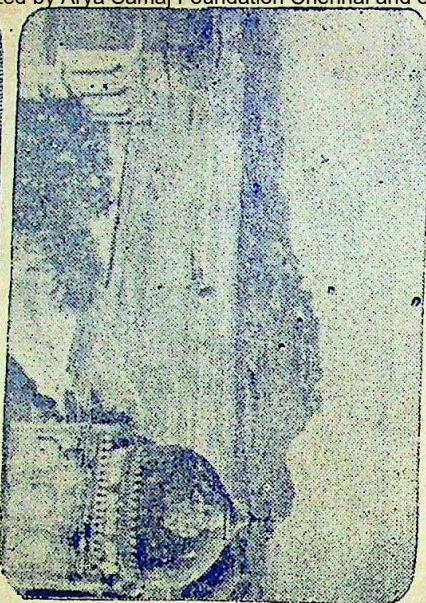
२

३

४

५

६
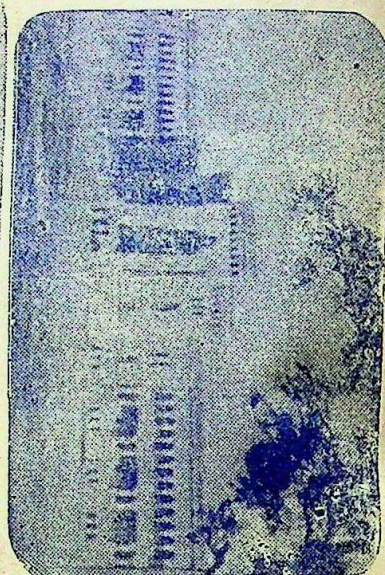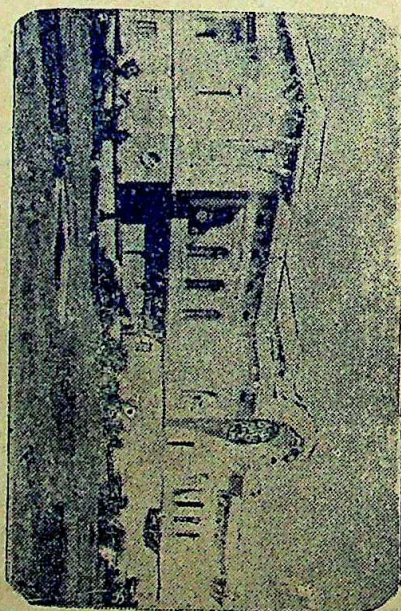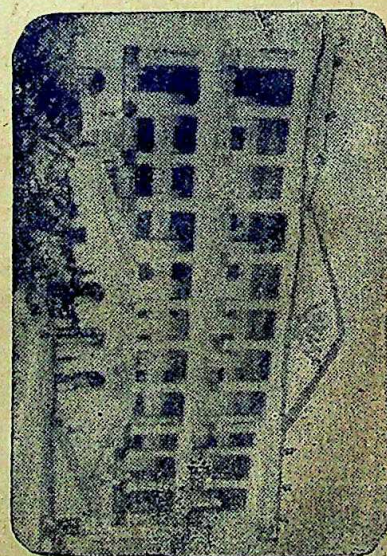
१ गोलकोंडा किले का द्वार
२ जगत् प्रसिद्ध गोलकुण्डा किला जिस में कोहेनूर हीरा निकला था
३ उस्मानिया विश्व विद्यालय
४ टौन हाल
५ सार्वजनिक वाचनालय स्टेट लायब्रेरी
६ फलकनुमा का बाहरी रूप

(शेष पृष्ठ ५ से)

भर में पिछड़ा हुआ था, जार शाही से दब गया था, संसार के शक्ति शाली राष्ट्रों में आ खडा हो गया। आज संसार के शक्ति शाली राष्ट्र भी उस की शक्ति से सशंकित हैं तब क्या हम, जो पहले से ही नैसर्गिक शक्ति, सैनिक शक्ति तथा मानव शक्ति से अग्रणी हैं, अपने सुदृढ साधनों को और सुदृढ बनाकर आगे नहीं बढ़ सकते ? अवश्य बढ़ सकते हैं केवल शुद्ध नीति और ठोस संगठन की आवश्यकता है।

तीसरी बात शुद्ध साधनों की है। हमारा उद्देश्य कितना भी पवित्र क्यों न हो अगर साधन खराब हों तो सारा पवित्र अपवित्र बन सकता है। हमें अपने साधनों को शुद्ध करना है। राष्ट्र की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए जो साधन इधर उधर से बटोरे जा रहे हैं, लोगों से, अन्य देशों से उधार लिये जा रहे हैं, उससे राष्ट्र सबल नहीं बन सकता। गांधीवादी अर्थशास्त्रज्ञ कई बार यह बता चुके हैं कि भारत को विदेशी अर्थशास्त्र नहीं चाहिए, अपना भारतीय अर्थशास्त्र अपनाने से ही इसकी नाव पार लग सकती है, पर इस बात पर किसी का ध्यान अभी आकृष्ट नहीं हो रहा है। जिनके हाथ में सत्ता है वे उसी पुराने लकीर के फकीर बने जा रहे हैं। यह बात हम आलोचना के लिए नहीं लिख रहे हैं पर इसका स्पष्टीकरण जरूरी है, इस लिए इसको यहां अंकित कर रहे हैं। हम आशा करते हैं कि भारत की प्रतिनिधि जन संस्था कांग्रेस इस बात पर विचार कर अपनी सरकार का संगठन, नीति, शुद्ध साधन आदि की दिशा में उचित मार्ग दर्शन करेगी।

एक बात हमें और कहनी है वह यह कि बापू बार-बार राष्ट्रभाषा के महत्व को समझाते रहे हैं और उसके विकास पर जोर देते आये हैं पर हमारी सरकार का ध्यान इस ओर जैसे होना चाहिए वैसा नहीं है, ऐसा लगता है। संविधान ने १५ वर्ष का समय राष्ट्रभाषा को समृद्ध बना कर उसे सर्वांगीण रीति से परिपूर्ण बनाने के लिए नियत किया है। हमारे उहदेदार यह कहते हैं कि १५ वर्ष तक तो हम अंग्रेजी का उपयोग कर सकते हैं, उसके बाद देखा जायगा। इस विचार हीनता को हम क्या कहें ? हम नम्रता पूर्वक इन भाइयों से निवेदन करना चाहते हैं कि बात जैसी वे सोचते हैं नहीं है। १५ वर्ष में हमें पूर्ण रूप से हिन्दी को अंग्रेजी की भांति समृद्ध बनाना है, राष्ट्रभाषा की दृष्टि से। इधर दक्षिण में जो हिन्दी का विरोध हो रहा है वह भी ठीक नहीं है, परन्तु इस के लिए हम केवल दक्षिणी भाइयों को ही दोष नहीं दे सकते। हमें उन पर हिन्दी को थोपना नहीं है। यदि हम राष्ट्रभाषा को शक्तिशाली बनादें तो वे स्वयं ही उधर को आकृष्ट हो जायेंगे। जो भाई आसानी से विदेशी भाषा को अपना गये—उस के राष्ट्रभाषा बनने पर—वह भी अपनी मातृ भाषा से कहीं अधिक प्रमाण पर, वे ही हिन्दी को नहीं अपनायेंगे ऐसा हम नहीं कह सकते परन्तु हमें उन के दिमागों को इधर को खींचना है, आकृष्ट करना है उसी तरह जिस प्रकार कि अंग्रेजों ने किया था या उस से भी कहीं अधिक सूक्ष्मता से। इस के लिए यदि कांग्रेस महा समिति सरकार को निश्चित नीति दे तो सुविधा होगी। पंच-वर्षीय योजना में इस दिशा में ध्यान दिया गया है पर वह नाकाफी है। इसे महत्व पूर्ण समस्या समझना और इस कार्य को अन्य बातों की तरह यों ही जोड़ देना काफी नहीं है। हिन्दी प्रसार के लिए निश्चित योजना बनानी चाहिए जो कम समय में पूरी होने वाली हों यानी One Year Planing या Two Year Planing हो और उस काल में निश्चित कार्य पूरा हो जाय, फिर इसी प्रकार की योजना को और आगे के कार्य के लिए बार-बार दुहराया जाय। इससे काम कितना होता है और कितना हुआ है इसका आसानी से अंदाजा लग सकता है। Project तथा बांध योजना या अन्य इसी तरह के निर्माण कार्य के लिए समय अधिक लगता है इस लिए इन को पूरा करने में दीर्घ कालीन योजनाएं बनानी पड़ती हैं। भाषा की बात ऐसी नहीं है। एक एक-कदम हम आगे बढ़ सकते हैं। यदि इस पर कांग्रेस अपनी योजना बनाकर दे और कार्य करे तो उद्देश्य की पूर्ति हो सकती है।

तार का पता:—फेंसी पेपर

फोन नं. 7332

गोली ईश्वरय्या

चित्रा टाकीज लाईन सिकन्दराबाद-द.

कागज, कार्ड और मुद्रण साहित्य वगैरा के थोक व्यापारी

सूचना :—हमारे यहां हर एक तरह का कागज, देशी तथा विदेशी मिलों का और प्रिंटिंग इंक व स्टेशनरी, जैसे पेन्सिल, कार्बन आदि २ व्यापारियोंके लिए थोक तथा चिल्लर सदैव मिलता है। छापाखाने संबन्धी अन्यान्य सामान तथा रूलर कम्पोजिशन स्टिचिंग वायर, किताबें सीने के धागे, नम्बरींग मशीन आदि भी मिलते हैं।

हर प्रकार के फोटुओं के काम के लिए कृपया मिलिए !

व्यास एण्ड कंपनी

सुलतान बाजार, हैदराबाद दक्षिण

डेवलोपिंग, प्रिंटिंग व एन्लार्जिंग, कलरिंग का काम निपुण कलाकारों के द्वारा किया जाता है।

बच्चों के लिए उपयुक्त तथा स्वादिष्ट बिस्कीट केवल—

प्रे म बि स्की ट

ही हो सकता है।

एकबार अवश्य ही आजमाइश कीजिए।

प्रेम बिस्कीट फैक्टरी, रामशीर गंज,

हैदराबाद (दक्षिण)

पंच-वर्षीय योजना के आधार

— जवाहरलाल नेहरू

हाल ही में भारत के सबसे दक्षिणी राज्य त्रावण-कोर कोचीन में, भारतके कुछ सुन्दरतम प्राकृतिक दृश्योंके बीच था इस राज्य में गुणवान लोग निवास करते हैं, जिनकी शिक्षा का स्तर देश के दूसरे सभी भागों से ऊंचा है। यह एक प्रगतिशील राज्य है, और मुझे वहीं के दो बडे उत्सवोंमें शामिल होकर खुशी हुई। इनमें से एक उत्सव राज्यके उत्तरी भाग को उसके दक्षिणी भागसे मिलाने वाली एक नयी रेलवेलाइनके निर्माण के आरम्भ और दूसरा मोनाजाइट की सफाई का एक कारखाना खोलने के सम्बन्ध में था। मैं ने दो अजीब दिन, एकांत में, पशु विहार में बिताये, जहां जंगली जानवर सभ्य मनुष्य से सुरक्षित रहते हैं।

भारत के उस दक्खिनी कोने से, मेरे दिमागने इस महान् देश की इस तस्वीर पर निगाह डाली जो उत्तर में हिमालय पर्वत तक फैली हुई है, और उसकी लम्बी व बहुरंगी कहानी के बारेमें भी मैंने सोचा। हमारी विरासत कितनी बडी है, और किस प्रकार हम इसे कायम रखेंगे? अपने इस देश की सेवा हम कैसे करेंगे, जिस ने हमें इतना कुछ दिया है, और किस तरह इसे संस्कृति और संसारी चीजों में भी बड़ा और ताखतवर बना सकेंगे तथा इसके लोगों को खुश और सम्पन्न बना सकेंगे?

हम अपनी आस-पास की दुनिया पर नजर डालते हैं, तो हमें आशा बन्धाने के लिए काफी कुछ मिलता है। लेकिन साथ ही हमें डरा देने वाली बहुत सी चीजें भी दीखती हैं, क्यों कि एक ऐसे समय में भी जब दुनिया उस चीज के बिल्कुल करीब पहुंच गयी हो, जिसकी इच्छा वह एक काल से कर रही थी—भय, द्वेष, हिंसा और लडाई की बात चीत मौजूद है। हम खुद अपने ही देश को देखते हैं, तो उस में भली और बुरी दोनों ही चीजें मिलती हैं; एक ओर वे बडी शक्तियां दीखती हैं जो देश निर्माण के काम में लगी हैं और दूसरी ओर वे तोड-फोड़ वाली शक्तियां भी हैं, जो देश को तोड़-फोड कर उसे खंडित कर दें। हम सारी दुनिया के भाग्य को बदलने के लिए तो अधिक नहीं कर सकते, लेकिन यकीनन, हम अपने ३६ करोड़ लोगों के भाग्य का फैसला करने के लिए तो बहादुरी के साथ कोशिश कर ही सकते हैं।

तब हमें करना क्या है? हमारा लक्ष्य क्या होना चाहिए और हमें किस रास्ते से होकर सफर करना चाहिए? यह लाजमी है कि क्षण भर के जोश और द्वेष में हम अपनी समझ न गंवा बैठें। यदि हमें अपना लक्ष्य ऊंचा रखना है, तो हमें अडिग रहकर उन ऊंचे उसूलों पर टिके रहना चाहिए जो महात्मा बुद्ध के काल से हमारे अपने दिनों तक, जब कि गांधीजी ने हमें सही रास्ता दिखाया था, भारतीय विचार-धारा की परंपरा में मौजूद हैं। महानता–ऊंची नजर, सहनशीलता, भाईचारे की भावना हमें ऐसे स्वभाव से प्राप्त होती है जो न तो बुरे भाग्य से विचलित हो और न अच्छे भाग्य से फूल उठे। द्वेष और हिंसा या भीतरी फूटके रास्ते से हम सच्चे अर्थों में तरक्की नहीं कर सकते। जो बात दुनिया के लिए लागू होती है, वही हमारे देश पर भी लागू होती है; वह यह है कि बल-प्रयोग के तरीके से कोई लाभ नहीं हो सकता और हमारी तरक्की की बुनियाद शान्तिपूर्ण सहयोग तथा एक दूसरे के प्रति सहनशीलता की ही होनी चाहिए।

पहली आवश्यकता-एकता

भारत में सब से बड़ी जरूरत देश की एकता को कायम रखनी है। यह अकेली राजनैतिक एकता ही नहीं, बल्कि दिमाग और दिल की वह एकता है, जो विलग और एकता-भंग करने वाले ओछे विचारों को पास नहीं फटकने देती, जो उन बंधनों को तोड़ डालती है जो धर्म के नाम पर या राज्य-राज्य के बीच या दूसरे किसी भी रूप में पैदा किये जाते हैं। हमारी अर्थ-व्यवस्था और सामाजिक ढांचा अब उपयोगी नहीं रहा और अब इस बात की सख्त जरूरत है कि हम उन्हें नये ढांचों में ढालें ताकि उनसे हमारे सारे

लोगों की माली हालत के सुधारने और संस्कृति व आत्मा के क्षेत्र में भी उनकी उन्नति करने में मदद मिले। हमें सोच-समझ कर ऐसी सामाजिक विचारधारा को अपने सामने रखना है, जो इस ढांचे को जड़ से बदल सके और एक ऐसे समाज की बुनियाद डाले, जिस पर निजी लाभ के लोभ और व्यक्तिगत लालच का भूत न सवार हो और जिसमें राजनीनैतिक तथा आर्थिक शक्ति का उचित बाँट हो। हमारा लक्ष्य वर्गहीन समाज का होना चाहिए, जो सहकारितापूर्ण यत्न पर आधारित हो और जिसमें सब के लिए बराबर अवसर मिल सके। और यह सब प्राप्त करने के लिए, हमें शांतिपूर्ण उपायों से लोकतंत्र के तरीके से काम लेना है।

हम एक विज्ञान के युग में रह रहे हैं। हम क्रांतियों के बारे में सुनते और पढ़ते हैं, लेकिन पिछले १५० वर्षों की सब से अधिक क्रांतिकारी शक्ति विज्ञान ही है, जिसने मानव जीवन का स्वरूप बदल दिया है और राजनैतिक, सामाजिक तथा आर्थिक संगठनों में भी परिवर्तन ला दिया है। परिवर्तन की यह क्रिया पहले से और भी अधिक तेजी के साथ जारी है और हमें इसे समझना अपने को इसके मुआफिक बना लेना है।

पंच वर्षीय योजना

अब मैं आप से पांच वर्षीय योजना का कुछ जिक्र करता हूं, जिसे हमारे प्लानिंग-कमीशन ने, ढाई साल की मेहनत और काफी सोच-विचार के बाद तय्यार किया है। पार्लमेंट ने भी इसे मंजूर कर लिया है और अब हमें इसे अपनी पूरी ताकत से देश भर में अमल में लाने का समय आ गया है। इस योजना में वही सामाजिक फिलासफी रखने की कोशिश की गयी है, जिसका जिक्र मैं पहले कर चुका हूं। लोकतन्त्रात्मक योजना बनाने का अर्थ है हमारे सभी प्राप्त साधनों का, खासकर श्रमका, अधिक-से-अधिक उपयोग—ऐसा श्रम जो हंसी-खुशी से मिले और जन-समुदाय तथा व्यक्ति की भलाई के लिए ठीक तरह से जुटाया जा सके।

मैं इस थोड़ी-सी योजना की बाबत ज्यादा नहीं बता सकता लेकिन मैं यह चाहता हूं कि आप इसको या कम-से-कम इसके संक्षिप्त संस्करणों को जरूर पढ़ें, क्यों कि यह योजना आप में से हर एक से ताल्लुक रखती है। एक लोकतन्त्रात्मक समाज में हर एक को आगे के कामों को समझना चाहिए और उन को पूरा करने में मदद देनी चाहिए। यह योजना सारे देश के संबन्ध में है और इस में देश के हर हिस्से, क्या बडे राज्य और क्या छोटे स्थानीय क्षेत्र, सब के लिए अलग-अलग व्यवस्था की गयी है। इससे, राष्ट्रीय विकास के बढ़ते हुए काम के लिए स्वयं-सेवक, जमातों और कार्यकर्ताओं को भी काम करने के मौके मिलेंगे। इस योजना का एक सरकारी क्षेत्र है और एक गैर-सरकारी। अगरचे गैर-सरकारी क्षेत्रको योजनामें खपने के लिए एक नियंत्रण में रहना होगा, इस में खेती बाडी, उद्योग और सामाजिक सेवाओं के कार्यों के एकीकरण की कोशिश की गयी है। निश्चय ही खेती बाड़ी का काम हमारा मुख्य काम बना रहेगा। इसलिए, सबसे ज्यादा जोर इसी पर दिया गया है, क्यों कि खेती की उन्नति करके ही हम उद्योगों में तरक्की कर सकते हैं। लेकिन खेती के काम को देश की बडी अर्थ-व्यवस्था में खपाना है। आज-कल किसी भी राष्ट्र के लिये बडे और छोटे, दोनों तरह के, उद्योगों की तरक्की करना जरूरी है। औद्योगिक तरक्की के बिना न हमारे लोगोंका रहन-सहन ऊंचा हो सकता है, न राष्ट्र ताकत पकड़ सकता है और शायद न हम अपनी आजादी को कायम रख सकते हैं।

खेती–बाड़ी की तरक्की के लिये ही नहीं वरन् किसी भी तरह की राष्ट्रीय तरक्की के लिये ठीक भूमि-व्यवस्था का होना एक बुनियादी प्रश्न है। कई राज्यों में जमींदारी और जागीरदारी खत्म करके हमने इस तरफ कुछ कदम बढ़ाये हैं। हमें यह काम जरूर ही पूरा करना चाहिए और जमीन के मामले में बीच के लोगों को हटा देना चाहिए और जमीन की मिल्कीयत की एक हद कायम कर देनी चाहिए। हमें उम्मीद है कि अगला कदम होगा– मिल जुल कर खेती बाड़ी करना। जिससे खेती के नये तरीकों का फायदा उठाया जा सकेगा। अगर हमें, गरीबी से लड़ाई लड़नी है और लोगों का स्तर ऊंचा करना है, जैसा कि हमें जरूर ही करना चाहिए, तो खेती बाड़ी और उद्योग से उत्पादन बढ़ाना निहायत जरूरी है।

हमारा राष्ट्र एक अमन पसंद राष्ट्र है और हमारी नीति और अर्थ-व्यवस्था की बुनियाद होगी— शांति और शोषण से मुक्ति। इसलिये जहां तक मुमकिन हो सकता है, हम अपने देश को आत्म-भरित बनाना चाहते है और इसके हिस्सों के लिये संतुलित अर्थ-व्यवस्था कायम करना चाहते हैं। हम खास तौर पर देश में ही माल की खपत बढ़ाने पर जोर देना चाहते हैं ताकि स्तर ऊंचा हो सके। देश को आत्म-भरित बनाने और लोगों को काम व नौकरियां देने के लिये घरेलू उद्योगों की बहुत ज्यादा अहमियत है।

मैं कुछ उन लक्ष्यों की बावत कहना चाहता हूं, जो हमने योजना में निर्धारित किये हैं। सबसे पहली और सबसे ज्यादा अहमियत की चीज खुराक है। हमें जरूर ही खुराक के मामले में आत्म-भरित हो जाना चाहिए ताकि अपनी सबसे बड़ी आवश्यकता के लिये हमें दूसरे देशों का मुंह न ताकना पड़े। योजना के मुताबिक खुराक की उपज करीबन ८० लाख टन बढ़ जाएगी। सिंचाई के नये बड़े कामों से ८० लाख एकड़ से ज्यादा जमीन की और छोटे-छोटे कामों से ११० लाख एकड़ जमीन की सिंचाई करने का इरादा है। इसके अलावा, ७० लाख एकड़ से भी ज्यादा जमीन का सुधार और विकास किया जायगा। आप हमारी बड़ी-बड़ी नदी घाटी योजनाओं की बावत जानते हैं, जिससे सिंचाई के अलावा, उद्योग के लिये १० लाख किलोवाट से ज्यादा बिजली मिल सकेगी। सब तरह के विकास के लिये आज कल बिजली एक बुनियादी चीज है। हमने सिंचाई के छोटे-छोटे कामों को ज्यादा अहमियत दी है क्योंकि उनसे फायदा जल्दी होने लगता है और उनका असर बड़े पैमाने पर होता है।

कपास की उपज में १२ लाख गांठ से ज्यादा और जूट की उपज में २० लाख गांठ की बढ़ती की जायगी। हथ-करघे के कपड़े का उत्पादन ८० करोड़ गज से बढ़कर १७० करोड़ हो जायगा। इस्पात और सीमेंट के उत्पादन में भी काफी बढ़ती होगी। पहले ही हमारे यहां सिंदरी में फर्टिला-इजर का एक कारखाना और चित्तरंजन में इंजन बनाने का कारखाना है। हम इस्पात का एक नया कारखाना, मशीनों के औजार बनाने का एक कारखाना और बिजली का भारी सामान तैयार करने का एक कारखाना खोल रहे हैं। हवाई यातायात का राष्ट्रीयकरण और एक आधुनिक जहाज बनाने के कारखाने का विकास किया जा रहा है।

आप उन बहुत से सामूहिक केन्द्रों के बावत जानते हैं जो देश भर में शुरू किये गये हैं। हम इनको बहुत महत्व देते हैं क्योंकि यहां पर आदमियों और औरतों को गांवों में सामूहिक फायदे के लिये मिल-जुल कर काम करने की ट्रेनिंग देने की कोशिश की जाती है। यहां अपनी मर्जी से काम करने की, बाकी सब जगहों की बनिस्वत, ज्यादा गुंजाइश है!

तरक्की की बुनियाद

हमारे आदर्श बहुत ऊंचे हैं, उद्देश्य महान हैं और उनको देखते हुए पंच-वर्षीय योजना ठीक शुरूआत मालूम पड़ती है। लेकिन हमें यह याद रखना चाहिए कि ये अपनी तरह की पहली बड़ी कोशिश है और यह हमारी इच्छाओं पर नहीं वल्कि आज की असलियत पर कायम है। हमें इसको अपने मौजूदा साधनों के मुताबिक ही रखना होगा नहीं तो यह असलियत से दूर हो जायगी। भविष्य में इससे भी ज्यादा बड़े पैमाने पर और अच्छे ढंग के आयोजन और तरक्की की यह बुनियाद है। हमें यह बुनियाद मजबूती से रखनी चाहिए और इससे निश्चय ही भविष्य उज्ज्वल होगा। इस योजना के बनाने में किसी विशेष वाद, सिद्धांत या कट्टर-पंथी विचार का ध्यान नहीं रखा गया है। न इसमें ऐसी कड़ाई रखी गयी है कि कोई रद्दोबदल ही न किया जा सके। इसमें किसी भी मामले में सुधार करने और जहां जरूरत हो वहां रद्दोबदल करने की गुंजाइश है। ज्यों-ज्यों अनुभव से हमारा ज्ञान बढ़ता जायगा, उसी तरह हम इसमें सुधार करते जाएंगे। यह एक शक्तिशाली राष्ट्र की एक शक्तिशाली योजना है, जिसमें आगे बढ़ने, अपने पैरों पर खड़े होने और शोषण, गरीबी, बेकारी और सामाजिक अन्याय से मुक्त एक नयी सामाजिक व्यवस्था कायम करने का दृढ़ निश्चय है। यह एक ऐसा समाज बनाने की ओर कदम है जहां व्यक्ति के हितों की रक्षा हो सकेगी, सब के लिए रोजगार मिल सकेगा और लोगों को रचनात्मक कामों के लिये गुंजायश और प्रोत्साहन मिल सकेगा यदि इसको ठीक तरह से समझा जाय और इसका पालन किया जाय तो राष्ट्र की शक्तियों को युक्त करने के लिये यह योजना एक महान ताकत साबित होगी। *

* ३१ दिसम्बर ५२ को दिल्ली में दिया हुआ भाषण

(भारत सरकार के पत्र-सूचना विभाग से)

महारानी झांसी

सन् १८५७ के क्रांति की ही नहीं भारत के संपूर्ण स्वातंत्र्य संग्राम में महारानी लक्ष्मीबाई जैसी प्रेरणाशील और स्फूर्तिदायक महिला दूसरी नहीं। वह उस महान् उत्सर्ग की जीवित प्रतिमा थी जो भारतीय ललनाओं, विशेषकर राजपूत रमणियों का सबसे बहुमूल्य अलंकार होता है। इनका जन्म १९ नवम्बर, १८३५ को काशी में हुआ था। महारानी के मातृकुल के पूर्वज महाराष्ट्र प्रांत के सातारा जिले में स्थित वाई नामक ग्राम के रहने वाले थे। इसके दादा बलवंतराव तांबपेशवा के सेनानायकों में से एक थे। बलवन्तराव के पुत्र और महारानी के पिता श्री मोरोपंत तांबबाजीराव पेशवा के भाई श्री चिमणाजी अप्पा के आश्रय में रहते थे। पेशवाई समाप्त होने पर बाजीराव तो बिठुर में जाकर रहने लगे पर चिमणाजी ने काशी में रहना निश्चित किया। इनके साथ मोरोपन्त भी काशी में आकर रहने लगे। यहीं महारानी का जन्म हुआ। कुछ दिन पश्चात् चिमणाजी की मृत्यु होने पर मोरोपन्त बाजीराव पेशवा के आश्रय में आकर बिठुर में रहने लगे अतः महारानी का बाल्यकाल यहीं बीता।

महारानी का बचपन का नाम मनूबाई था। अपनी सुन्दरता के कारण आप 'छबीली' भी कहलाई। तीन वर्ष की उम्र में माता का देहान्त हो जाने के कारण बाजीराव पेशवाने इन्हें अपने यहां रख लिया और इनका लालन-पालन किया। पेशवा परिवार में रहने से राजकुमारों के साथ खेलने में ही दिन बीतते गये। पचास रुपये पाने वाले साधारण कर्मचारी की बालिका होने के कारण आपने कभी अपने आपको दीन-हीन नहीं माना। न बालिका होने के कारण पुरुषों की अपेक्षा अपने आपको अबला महसूस किया। घोडे की सवारी, निशानाबाजी, तलवार चलाना तथा भाला फेंकना आदि में सदा राजकुमारों से आगे रहतीं। यही गुण धीरे-धीरे विकसित होकर महानता के भूमिका का काम कर गये।

१८४२ में जब वह केवल सात वर्ष की थी उसका विवाह झांसी के तत्कालीन महाराजा गंगाधरराव के साथ हो गया। छबीली रानी तो बन गई पर गंगाधर महाराज की द्वितीय वधू और आयु में सबसे छोटी। यह विवाह सर्वथा अनमेल विवाह था, पर पेशवा बाजीराव चाहते थे कि उस की यह स्नेहमयी बालिका राजकुल में ही ब्याही जाय। इस लिए इन के असीम प्रयत्नों से यह संस्कार पूरा हो गया। उस काल में बाल-विवाह का प्रचलन अधिक था।

१८५१ में महारानी को एक पुत्ररत्न प्राप्त हुआ किन्तु घर का प्रकाश बनने के पहले ही केवल तीन मास की आयु में ही स्वर्ग को सिधार गया। इसका दुःख परिवार भर में अनन्त दुःख का कारण बना। गंगाधर महाराज के मन पर तो इसका इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि इस शोक के कारण उनका दबा हुआ क्षयरोग फिर उमड़ आया और अन्त में १८५३ में वे भी स्वर्ग सिधार गये।

इधर महाराजा गंगाधरराव का स्वर्गवास हुआ और उधर अंग्रेज गवर्नर जनरल लार्ड डलहौजी की कली खिली। उसने इस मौके को हाथ से जाने न दिया। गंगाधर महाराज की सारी सम्पत्ति को खजाने में जमा करने का आदेश दे, महारानी को किले से बाहर शहर में भिजवाने का प्रबन्ध किया। ७ मार्च १८५४ के अपने आदेश के अनुसार झांसी राज्य को कम्पनी सरकार की सम्पत्ति घोषित की गई। यह अनुचित व्यवहार महारानी को संतुष्ट न कर सका। वह स्वाभिमानी महिला सगर्व आगे बढ़ी और स्वाधीनता संग्राम में कूद पड़ी। महारानी अपने अहंकार हीन स्वभाव के कारण लोकप्रिय थीं ही। साधारण प्रजाजनों से भी वह सदा प्रेम व स्नेह से ही बर्ताव करती। इस लिए इस स्वाधीनता संग्राम में सभी ने उसका साथ दिया। पौराणिक रीति नीति को मानने वाली होने तथा नित्यप्रति पूजा पाठ करती रहने पर भी यह कभी छुआ-छूत और धर्म भेद को नहीं मानती थी। इस लिए इसकी सेना में सभी तरह के सेनानी प्रविष्ट थे। स्त्री सेना का भी संगठन था ही। इस में सभी जाति, सभी वेष भूषा वाली महिलाएं सम्मिलित थीं। धर्मभेद व जाति भेद का यह स्पष्ट उदाहरण है कि अन्त तक लक्ष्मी

बाई की सेना का संचालन एक मुसलमान सेनापति के हाथ रहा; जिसने महारानी के लिए न केवल अपनी ही जान दी अपितु सैकड़ों मुसलमानों को सहर्ष बलिदान करने के लिए प्रेरित किया। स्वयं सेनानी होने तथा हाथ में तलवार धारण किए रहने के कारण सैनिकों को और भी बल पहुंचता और वे सगर्व आगे बढ़ते। यही वजह है कि इस प्रथम संग्राम में अंग्रेजों की एक न चली। जो लोग महारानी को हिन्दुओं का ही हीरो मानते हैं या ऐसा प्रचार करते हैं, वे इस कथा वस्तु के कारण महारानी का अपमान करते हैं। महारानी न केवल हिन्दुओं की ही हीरो थी अपितु समस्त भारतवासियों की सेना नायिका और स्वतन्त्रता की प्रतिमा थी।

ब्रिटिशों के साथ यह संग्राम समाप्त होते न होते टीकमगढ़ के दीवान नत्थेखां ने एक भारी सेना लेकर झांसी पर चढ़ाई की और महारानी के पास झांसी उसके सुपुर्द करने की बात भेजी। इस समय कुछ मंत्रियों ने महारानी को अपनी दुर्बलता का परिचय करते हुए नत्थूखां की बात मान लेने को कहा पर महारानी की महानता इसके लिए तैयार न हो सकी। उसने महारानी को प्रेरित किया और महारानी ने अपनी मुट्ठी भर सेना को लेकर, जिस में स्त्रियां भी पर्याप्त मात्रा में थीं, नत्थूखां की सेना से जा भिड़ीं।

महारानी के कुशल सेना संचालन ने नत्थूखां की सेना को खदेड़ दिया। महारानी के कुशल सेनापतित्व और युद्ध विशारदा होने का यह एक अकेला ही प्रमाण नहीं है।

२३ मार्च १८५७ को अंग्रेजों की फौजों ने फिर झांसी पर आक्रमण किया। पूरे ११ दिन तक महारानी अपने इने-गिने सैनिकों को लेकर उनका मुकाबला करती रही, पर सुसंगठित विशाल अंग्रेजी सेना के सामने अपनी मुट्ठी भर सेना को उसने सुरक्षित न पाया। झांसी को सुरक्षित न पाकर उसने अपने बारूद के खजाने में आग लगाकर धमाके के साथ अपना अन्त करने का विचार किया, पर यह विचार क्षणिक काल के लिए उत्पन्न हुआ और काफूर की तरह दूसरे ही पल पलट गया। विचार परिवर्तित होते ही उसने सोचा कि लड़ते-लड़ते किले से बाहर निकल आएं। साहस और वीरता की मूर्ति महारानी को इन विचारों की पुष्टि मिलते ही वह उठ खड़ी हुई और अपने दो तीन दासियों और सैनिकों को लेकर आगे बढ़ी। गंगाधर महाराज के काल में अपने प्रिय पुत्र की मृत्यु होने पर दामोदर को महारानी ने गोद में लिया था। इस विपत्ति काल में इस बालक के प्राण बचाने भी जरूरी थे। महारानी ने इसे अपने पीठ पर बांध लिया मुंह में घोडे की लगाम लिए दोनों हाथों में दो तलवारें लेकर अंग्रेजी सैनिकों को चीरती हुई अपने साथियों के साथ अंग्रेजों के घेरे से बाहर निकल आई। झांसी से कालपी १०२ मील है। अंग्रेजों के घेरे से बाहर आते ही महारानी ने तात्या टोपे की सहायता लेने कालपी की राह ली। अंग्रेज अब भी उसका पीछा कर रहे थे वायु गति से आगे बढ़ने वाली महारानी का वे पीछा नहीं कर सके। पीछा करने वाले पीछे ही रह गये।

कालपी पहुंच कर तात्या टोपे से महारानी ने परामर्श किया और आगे का मोर्चा तय किया। ग्वालियर का किला अपने अधीन लेकर वहां दूसरा मोर्चा स्थापित करने की राय होते ही महारानी ने सब से आगे बढ़ उस स्वप्न को भी पूरा कर दिखाया पर दुर्भाग्य की बात यह हुई कि इस बार महारानी के हाथ में नेतृत्व की बागडोर न होकर यह बागडोर थी रावसाहब के हाथ में। इसका कारण था आपसी फूट और ऊंच नीच की भावना। महारानी स्त्री होने के कारण नेतृत्व न सम्भाल सकी और तात्या टोपे राजकुल के नहीं थे, इस लिए सरदार नहीं बन सके पर वास्तव में ये दो ही प्राण इस युद्ध संग्राम के महाप्राण थे। पर साहब के बुद्धिहीनता ने पद-पद पर रोड़ा अटकाया और अन्त में न केवल स्वाधीनता संग्राम को ही बल हीन बना डाला बल्कि भारत भर को गुलामीकी डाह में झोंक दिया। यदि इस स्वतंत्रता संग्राम की बागडोर महारानी के हाथों में होती तो आज भारत के मानचित्र की सीमा कुछ और दी होती पर ऊंच नीच और भेदभाव की भावनाओं ने इस सारे चक्र को बदल दिया। यह विनाशकारी भावना आज भी भारत को ऊपर उठने नहीं दे रही है।

अपने अंतिम दिन भी महारानी ने जिस वीरता के साथ सर ह्यू रोज की सेना से युद्ध किया है वह कभी भूला नहीं जा सकता। अंग्रेजों की शक्ति अपार थी और महारानी के पास केवल ३०० ही लालकुर्ती की एक सबल टुकड़ी। अन्य सारी सेना केवल भीड़-भाड़ ही थी। इस पर

(शेष पृष्ठ ३२ पर)

नई तालीम

— श्री प्यारेलाल

चार साल से अधिक समय हुआ, हिन्दुस्तान के पिता हमें छोड़ कर चले गये इस बीच हमने बहुत सी कठिनाइयों को झेला है और बहुत से दुःखों का अनुभव किया है। लोग पूछते हैं कि जिस हिन्दुस्तान का स्वप्न राष्ट्रपिता ने देखा था, क्या आज का हिन्दुस्तान उस स्वप्न जैसा है? हम उसकी तरफ जा रहे हैं, या पीछे हट रहे हैं?

हमारे एक पुराने अमेरिकन दोस्त हैं। उन्होंने दिल्ली में मुझ से पूछा—बापू के स्वप्नों का हिन्दुस्तान कहां है? मैं उसे देखना चाहता हूं।

मैंने कहा—बापू जो कुछ चाहते थे, उसका बीजारोपण हो गया है। उसके अंकुर भीतर ही भीतर फूट रहे हैं, वे ऊपर दिखाई नहीं देते। समय आने पर यही अंकुर ऊपर निकलेंगे और उन में से पत्तियां फूटेंगी। यदि आप बापू के स्वप्नों का रूप देखना चाहें, तो सेवाग्राम में, तथा सेवाग्राम के आदर्श पर चलाई जाने वाली दूसरी संस्थाओं में उसका रूप देख सकते हैं।

यह बत मैंने कह तो दी, लेकिन मेरे मन में आया कि मैं उसकी जांच तो करूं कि मैंने कोई हवाई बात तो नहीं कह दी? और इसलिए मैं देहली की कैद से छूट कर बाहर आया। यहां आकर मुझे विश्वास हो गया कि मैंने कोई हवाई बात नहीं कही।

लेकिन आज तमाम हिन्दुस्तान की हालत ठीक नहीं है। लोगों के दिलों में असन्तोष है। हिन्दुस्तान को आजादी मिली किन्तु उसका जो फल मिलना चाहिए था, वह नहीं मिला। सरकार की गति वही है। सरकारी महकमे अपने नियम में बन्धे हैं। जिस व्यवहार की जनता आशा करती थी, यह उसे नहीं मिल रही है। करोडों रुपया खर्च हो रहा है मगर उसका नतीजा दिखाई नहीं दे रहा है। इसलिए कुछ बातें होती हैं कि सरकार को हटा दो। दूसरी पार्टी के लोग कहते हैं कि हमें सरकार बनाने दो, हम परिस्थिति को बदल देंगे। लेकिन यह समझने की बात है कि अगर इन लोगों को उन कुर्सियों पर बैठा दें तो उन्हें भी उसी लाइन पर चलना पडेगा। क्यों कि ढंग पुराना है, पुरानी शराब नई बोतलों में भरनेका प्रयास है। लेकिन जब तक नया साधन, नयी रीति न होगी, कोयी बुनियादी परिवर्तन न होगा।

आर्य लोग बुनियादी तालीम के हामी हैं आप यह सोच सकते हैं कि बुनियादी तालीम की समस्याओं का हल कैसे हो? और तालीम की ही नहीं, दुनिया की बाकी समस्याओं का भी हल हो।

बुनियादी तालीम का अर्थ है—जड़मूल से क्रांति; देश के साथ लाख गावों की प्रजा के लिए जीवन सरल बनाना ताकि जिस प्रकार आज लोग गावों से भाग कर शहरों में जाते हैं, वैसा न हो। बेइन्साफी को दूर करें। इस प्रकार, देहात की समस्याओं को हल कर सकना बुनियादी तालीम का पहला आवश्यक गुण है। बुनियादी तालीम की दूसरी जांच मैं यह समझता हूं कि जहां बुनियादी स्कूल हो, उस गांव में कोयी भी चर्म रोग न फैले, सफायी का तत्व रहे। कोयी बिना कपडे के न रहे। शिक्षक में ऐसे गुण हों कि मामूली चीजों से भी जीवन के लिये बनालें और गांव में ही अपनी सब आवश्यकताएं की पूर्ति करलें। लोग कहते हैं, खेती करने के लिए स्कूलों की जमीन कहां से मिले? सीधा जवाब है—जहां स्कूल को भूमि न हो, वहां गांव के लोगों के खेतों पर बच्चों को ले जाएं। वहां जाकर काम करें, प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करें, किसानों को खेती सुधार का तरीका बताएं। इसी प्रकार यदि मकान नहीं है, तो दरख्त के नीचे बैठ जाइये—वहीं अपने विद्यार्थियों को भी बैठा लीजिए। मैंने देखा है कि यह सब हो सकता है। नोआखली में जब हमें छोड़कर बापू इधर आ गये थे, हमने इसी प्रकार अपने आसपास के वातावरण को बनाया था;

उसपर विजय पाई थी। नई तालीम के शिक्षक के लिए यह एक कसौटी है कि वह किस तरह अपना निर्वाह करता है?

एक जरूरी बात याद रखने की है। जब हम गावों में तालीम दें तो बच्चों और बडों को एक साथ देनी चाहिए। बच्चा अपने माता-पिता से ऐसे काम करावेगा जो दूसरे तरीकों से मुमकिन नहीं होते। इस लिए बच्चों को दी गई उचित शिक्षा प्रौढ-शिक्षा में भी सहायक होती है।

फिर बुनियादी शिक्षा का भी एक अच्छा संगठन होना चाहिए। जहां भी बीस बुनियादी स्कूल हों, वे अपना बोर्ड बना लें। उसका काम हो, इनकी समस्याओं को समझना, उन्हें दूर करने का प्रयत्न करना, उसके तरीके ढूंढना। एक तरह से यह एक प्रयोगशाला हो, जहां नई बातों को ढूंढा जाय, समस्याओं के लिए हल निकाला जाय। आज हमारे देहातियों के मन में पढे लिखे लोगों के बारे में कुछ सन्देह रहते हैं और इसलिए उनका पूरा सहयोग हमें नहीं मिलता है। यह सन्देह बिल्कुल गलत भी नहीं है—अनेक वर्षों से शहरों के पढे लिखे इन लोगों ने गांव के लोगों का अनेक प्रकार से शोषण किया है, उन्हें ठगा है। और इसीलिए गांव के लोग यह समझते हैं कि इनसे हमारा कुछ फायदा तो होने वाला नहीं है। जब आप उन्हें कुछ अच्छे नतीजे दिखा सकेंगे, जब आप उन्हें कुछ दे सकेंगे, तभी वे आप पर विश्वास करेंगे, आपकी बात मानेंगे और आपको सहयोग देंगे।

(शेष पृष्ठ ३० का)

भी यदि महारानी का घोडा अडियल न होता तो महारानी अपने जोहर दिखा जाती पर घोडे के अड़ जाने के कारण महारानी अंग्रेजों से घिर गई और बुरी तरह आहत होकर गिर पड़ी। लाल कुर्ती दल के सैनिकों ने उसे उठाकर बाबा गंगादास की कुटिया में ला छोड़ा पर थोड़ी ही देर बाद तेज में तेज मिल गया। महारानी की महान् आत्मा शरीर बन्धन से मुक्त होकर स्वतंत्रतापूर्वक स्वर्ग लोक में विचरने चली गई।

महारानी ने वीर गति पाई, पर उसकी आत्माने अंग्रेजों का पीछा नहीं छोड़ा। स्वाधीनता के विचार रूप में बराबर वह आगे बढती गई। अन्त में १९४७ की १५ अगस्त को उसका स्वप्न साकार हुआ और भारत के स्वतंत्रता संग्राम का युद्ध, जिस की रणभेरी १८५७ में ७ मार्च को बजाई गई थी, साकार बनकर सफलता से समाप्त हुआ। देश स्वतंत्र हुआ, देशवासियों ने स्वातंत्र्य का अनुभव किया, फिर भी देश के दो टुकडे हुए जो आज भी उसी आपसी फूट का सबूत दे रहे हैं, जिसके कारण महारानी लक्ष्मीबाई को हताहत होना पड़ा था और देश को अंग्रेजों की पराधीन बेड़ियों में जकड़ना पड़ा था। जब तक यह भेद भावना रहेगी, हम चैन से नहीं रह सकते। अशान्ति का जो आज ताण्डव नृत्य हो रहा है इसी ऊंच नीच और भेद भाव की भावना के कारण। न जाने कब इसका अन्त होगा और महारानी की कल्पना साकार बन जन हित में परिणत होगी।

याद रखने का सर्वश्रेष्ठ तरीका है भुलाना क्योंकि 'वह' मुझे याद न आजाय, ऐसी बार-बार याद करने से तो वह, याद रहता ही है आस्तिक भूल जाय पर एक नास्तिक ईश्वर को कभी नहीं भूलता।

— महात्मा

चांदनी रात में गली के मुंह पर बालकों को खेलता देख मेरा मन भी खेलने को चाहा। परन्तु बालकों ने मुझे अपने बीच पाकर खेल बन्ध कर दिया। अब, इस बडी हुई उम्र को कहां ले जा रखूं और बचपन कहां पाऊं?

—शामू संन्यासी

स्वदेशी राज्य हुआ, स्वराज्य नहीं

— भगवानदास केला, इलाहाबाद

अंग्रेजों से छुटकारा हुआ — १५ अगस्त १९४७ हमारी स्वाधीनता का दिन है। कई कारणों से, जिनमें हमारे प्रयत्नों का भी यथेष्ट भाग है, अंग्रेजी शासक यहां से चले गये। उनकी अधीनता से छुटकारा पाने के लिए हम बहुत समय से आन्दोलन कर रहे थे। पहले की बात छोड़ दें तो सन् १८५७ का संग्राम उनकी हुकूमत को यहां से हटाने के लिए ही लड़ा गया था। आतंकवादियों ने हंसते-हंसते अपने प्राण न्योछावर किये थे। इसी के लिए सन् १८८५ से कांग्रेस लगातार कोशिश कर रही थी। इसी के लिए राष्ट्रपिता म० गांधी के नेतृत्व में सत्याग्रह और असहयोग, अहिंसा और शान्ति के अनूठे उपायों का प्रयोग किया गया था। इसी के लिए गया था। इसी के लिए सन् १९४२ में 'करो या मरो, का मंत्र लेकर जन-क्रान्ति हुई थी। इसी के लिए नेता जी सुभाष बोस और आजाद हिन्द फौज ने ब्रिटिश सेनाओं से गजब का मोर्चा लिया था और अन्त में नौसैनिकों ने अपने आश्चर्य जनक साहस का परिचय दिया था। इन बातों का खुलासा वर्णन 'भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन' पुस्तक में किया गया है।

हमारी अधूरी सफलता, अंगरेजी शासनपद्धति की नकल—भारत स्वतंत्र होने के साथ ही खंडित भी हो गया। १५ अगस्त हमारी स्वतंत्रता का दिन है, परन्तु साथ ही विभाजन का भी। इस दिन से दो स्वतंत्र सरकारों की स्थापना हो गयी —एक भारत सरकार देहली में, और दूसरी पाकिस्तान सरकार कराची में। एक भारतवर्ष के दो टुकडे होगए, इस प्रकार हमें यथेष्ट सफलता न मिली, यह साफ जाहिर है। पर हम यहां दूसरी बात कहना चाहते है।

अंगरेजों के जाने पर हमारे नेता उनकी गद्दी पर बैठ गये जिस ढंग से अंग्रेज राज करते थे उसी तरीके से हमारे आदमी हुकूमत करने लगे। यह कहा जा सकता है कि बड़े देश की शासनपद्धति एक दिन में नहीं बदली जा सकती। पर अब तो दिनों की बात नहीं, पांच वर्ष बीत गये। भारत का नया संविधान बन कर अमल में आने लगा, आम चुनाव भी हो गये और केन्द्रीय सरकार तथा विविध राज्यों की सरकारों का नया संगठन भी हो गया। इस प्रकार यदि पहले कुछ आशा भी थी कि नया संविधान भारतीय परिस्थितियों के अनुसार यहां सच्चे स्वराज्य की स्थापना करेगा, वह अब पूरे तौर से समाप्त हो गयी। संविधान बनाने में जनता का काफी रुपया खर्च किया गया, जिन लोगों पर जनता की बड़ी श्रद्धा थी, उन्हें यह काम सौंपा गया। समय भी काफी लगा तो भी जो शासन-पद्धति निश्चित की गयी, वह अंग्रेजी शासनपद्धति की नकल है, उसमें कोई बुनियादी अन्तर नहीं। शायद अंग्रेजी शिक्षा और संस्कारों में दीक्षित हमारे नेता कुछ और बात सोच ही नहीं सकते थे।

स्वदेशी राज्य की स्थापना—अस्तु, विदेशी राज्य की जगह स्वदेशी राज हो गया। अब राष्ट्रपति स्वदेशीय हैं; प्रधान मन्त्री स्वदेशीय, कमांडर इनचीफ या जंगीलाट स्वदेशीय है। इसी प्रकार विविध राज्यों में राज्यपाल (या राजप्रमुख) और मुख्य मंत्री से लेकर सभी महत्वपूर्ण पदों पर स्वदेशीय व्यक्ति नियुक्त हैं, और इन सब की नियुक्ति, अधिकार और कार्य-क्षेत्र आदि के नियम बनानेवाली संसद (पार्लिमेंट) और विधान सभाओं में भी सब स्वदेशीय ही हैं। विदेशी अधिकारी हमें सहन नहीं। उन्हें रखना भी होता है तो हम अपने बनाये नियम कायदों के अनुसार रखते हैं। इस प्रकार हमने विदेशी राज को हटाकर यथा-समय पूरा स्वदेशी राज्य स्थापित कर लिया है।

स्वदेशी नौकरशाही—यह कहा जा सकता है कि विदेशी नौकरशाही को हटाकर हमने स्वदेशी नौकरशाही की स्थापना कर दी है। ऐसा कहने में हम 'स्वदेशी' शब्द के महत्व को कम करना नहीं चाहते हमारे वर्तमान शासकों में जनता के लिए सहानुभूति है, दर्द है, तड़प है। वे

समय-समय पर देश के उत्थान के लिए बड़ी-बड़ी योजनाएं बनाते हैं, कुछ लोग दिन-रात इतने काम में लगे रहते हैं कि उन्हें सोने या आराम करने को भी काफी समय नहीं मिलता। कुछ अधिकारी साधारण गरीब किसान मजदूर आदि से मिलने में संकोच नहीं करते। कोई-कोई तो अपने निजी वेतन से शहीदों के परिवारों या दूसरे जरूरतमन्दों की सहायता करते हैं; हमारे कलाकारों और साहित्यकारों का मान करते हैं। इन बातों की प्रशंसा कौन नहीं करेगा! परन्तु इससे वस्तु-स्थिति में विशेष अन्तर नहीं आता। शासकों की व्यक्तिगत उदारता का परिणाम कुल मिलाकर समुद्र में बूंद के ही बराबर समझना चाहिए। हमें किसी खास पदाधिकारी के सम्बन्ध में नहीं कहना है। हमारा आक्षेप तो उस ढाँचे या पद्धति से ही, है जिसके ये पदाधिकारी अंक बने हुए, हैं और जिसके कारण देश, कोल्हू के बैल की तरह कोई असली प्रगति नहीं कर पाता; हाँ, दिखाने के लिए तो कुछ न कुछ काम हर समय होता ही रहता है, कुछ हलचल, कुछ उधेड़-बुन, कुछ निर्माण या परिवर्तन आदि होकर पाठकों के पास उसकी बढ़िया-बढ़िया रंग-बिरंगी रिपोर्टें प्रकाशित होती रहती हैं।

वास्तव में केन्द्रीकरण की पद्धति में नौकरशाही का विशाल जाल फैलना स्वाभाविक ही है। दोनों का अनिवार्य सम्बन्ध है। केन्द्रित व्यवस्था का आधार या जीवन-प्राण ही नौकरशाही है, क्योंकि जब व्यवस्था केन्द्र की ओर से होगी, चाहे केंद्र संचालक कितना ही योग्य, सहृदय, उदार विचारों वाला जन-प्रतिनिधि क्यों न हो, वह स्वयं क्या-क्या कर सकता है? उसे तो सब इन्तजाम अपने सहायकों द्वारा ही कराना होगा। वह उन्हें विविध विभागों का काम सौंप देगा; और विविध विभागों के अध्यक्ष काम लेंगे, अपने कर्मचारियों और उपकर्मचारियों द्वारा। ये कर्मचारी तो कानूनी तौर से भी प्रायः जनता के प्रतिनिधि नहीं होते, फिर इनका जनता से प्रत्यक्ष संपर्क रहना तो निरी कोरी कल्पना है। ये बहुधा जड़ यन्त्र की तरह अपने अफसरों की आज्ञा पालन करने में ही अपने कर्तव्य की इतिश्री समझते हैं। इस प्रकार स्वदेशी राज में, जब तक स्वराज्य न हो, पार्लिमेंटरी पद्धति या जनतंत्र का ढोंग चाहे जितना हो; वह अपने नग्न रूप में है केवल नौकरशाही पद्धति ही।

स्वराज्य का अर्थ—स्पष्ट है कि स्वदेशी राज होना और बात है, और स्वराज्य दूसरी बात। स्वराज्य का अर्थ है देश का उत्पादन और व्यवस्था की जिम्मेदारी कुछ थोड़े से लोगों के हाथ में न होकर जनता के हाथ में आ जाए। इस प्रकार हमारी सब संस्थाओं का उद्देश्य आर्थिक व्यवस्था विकेंद्रित करना तथा अहिंसक प्रजातंत्रीय समाज स्थापित करना होना चाहिए, जिससे शक्ति का स्रोत कुछ खास औद्योगिक या व्यापारिक नगरों तथा दिल्ली और अन्य राजधानियों में सीमित न होकर गाँव-गाँव में और घर-घर में फैला हुआ हो; प्रत्येक किसान और मजदूर का, ईमानदारी से कुछ करने वाले प्रत्येक भारतीय संतान का उसमें भाग हो। वह स्वराज्य ही क्या, जिसमें लोगों को अपनी रोजमर्रा की जरूरत के लिए दिल्ली की ओर निगाह लगाए बैठना हो, या अपने राज्य की राजधानी से प्रकाशित होने वाली विज्ञप्तियों का इंतजार करना पड़े। स्वराज तो देश के सब आदमियों में बराबर बटा हुआ होना चाहिए। भारत का अर्थ केवल देहली और दूसरी राजधानियाँ नहीं, वह तो थोड़े से नगरों के साथ लाखों गाँव का देश है; भारत में स्वराज्य का अर्थ है, छत्तीस करोड़ आदमियों का राज!

क्या हमारे प्रतिनिधि शासन कर रहे हैं?—यह कहा जा सकता है कि 'भारत में यहाँ के ही नागरिकों का राज है; उनके ही चुने हुए प्रतिनिधि शासन-कार्य कर रहे हैं, और क्योंकि प्रत्येक बालिग आदमी को मताधिकार है, इसलिए स्वराज्य गाँव-गाँव तक पहुंच गया है कोई व्यक्ति जो विधान सभा का सदस्य या मंत्री आदि होना चाहता है, वह गांवों की अपेक्षा नहीं कर सकता। कोई गांव वाला—किसान हो या मजदूर आदि—किसी भी सरकारी पद से वंचित नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति राष्ट्रपति तक बन सकता है।' ये बातें बड़ी जोरदार मालूम होतीं हैं। पर गम्भीरता से विचार से करें तो इनमें कोई दम नहीं। चुनाव पद्धति कैसी है, इसमें कैसे चतुर चालाक, धनवान और विशेष चलते हुए आदमी को ही सफलता मिलती है, साधारण आदमियों के लिए इसका दरवाजा कानून से खुला होने पर व्यवहार में बन्द ही है। इन बातों का खुलासा विचार आगे किया जायगा।

कल्पना करो कि कोई आदमी चुनाव के लिए मत मांगने के वास्ते एक बार मेरी झोपड़ी तक आ गया, (अनेक बार तो एजंट ही यह काम कर देते हैं) पर चुनाव से पहले मेरा उसका कोई सम्पर्क नहीं था। वह अपने आपको बड़ा आदमी मानता था, और अब चुनाव में सफल हो जाने पर भी उसका रहनसहन और ठाठ-बाट ऐसा रहेगा कि मेरी उसके सामने कोई गिनती नहीं है। तो मुझे इस बात से क्या संतोष हो सकता है कि वह मेरे मत से विजयी हुआ है! कानूनी या राजनीतिक बात छोड़ दें तो सीधा प्रश्न यह है कि कि क्या एक भूखे नंगे आदमी का सच्चा प्रतिनिधि कोई लखपति, कोई मील मालिक या ऐसा आदमी हो सकता है, जिसे चुनाव में सफल हो जाने पर सम्भव है हजारों रुपये मासिक का वेतन और भत्ता मिलने लगेगा।

हमारा सच्चा प्रतिनिधि कैसा आदमी हो सकता है?—भारतवर्ष में म० गांधी को राष्ट्रपिता कहा जाता है। विदेशी राज को हटाने के लिए हमने उनका बताया रास्ता अपनाया था, पर स्वाधीन हो जाने पर राज-काज चलाने लिए हम उनके तरीकों को नहीं अपना रहे हैं। वर्तमान सरकार अपने आप को म० गांधी की अनुयायी मानती है। पर गरीब भारत के प्रतिनिधि होने की जैसे क्षमता उनमें थी, वह आज के शासकों में कहां है? कहां हमारे उच्च पदाधिकारियों के ठाट-बाट, शान-शौकत और आडम्बर-युक्त रहन-सहन और कहाँ म. गांधी की सादगी और संयम? म. गांधी ब्रिटिश सम्राट के प्रतिनिधि वायसराय के ही नहीं, स्वयं सम्राट के महल में ऊंची धोती पहने, 'अर्द्ध नग्न' अवस्था में गये थे, कारण, वे अपने आपको गरीब भारत का प्रतिनिधि मानते थे। उनके विचार से भारत के राष्ट्रपति और प्रधान मन्त्री को भारत के साधारण नागरिक से अधिक ऐश्वर्य का जीवन नहीं बिताना चाहिए। अफसोस! हमारे अधिकांश शासकों को ये बातें अव्यावहारिक प्रतीत होती हैं। इस से स्पष्ट है कानून के अनुसार हमारे प्रतिनिधि माने जाने पर भी, वे हमारे जीवन या हमारी स्थिति का प्रतिनिधित्व नहीं करते, भले ही वे गोरे न होकर काले हों, अंग्रेज न होकर हिन्दुस्तानी हों। यह काम सादगी और संयम का जीवन बिताने वाले लोकसेवी सज्जन ही कर सकते हैं।

स्वराज के लिए पार्लिमेंटरी पद्धति का मोह छोड़ना होगा—आदमी समय-समय पर आलोचना करते हैं, कि प्रधान मन्त्री ऐसा होना चाहिए, राष्ट्रपति को ऐसा व्यवहार करना चाहिए, राज्यपालों या मंत्रियों के अधिकारों में यह कमी और यह वृद्धि होनी चाहिए। ये बातें सब ऊपरी हैं। इनसे समस्याका का हल नहीं होगा। बात किसी एक या अधिक अधिकारियों को बदलने की, या उनके अधिकार घटाने-बढ़ाने की नहीं है। शासन का ढांचा ही बदलना होगा। शासन पद्धति संबन्धी वर्तमान दृष्टिकोण को छोड़ना होगा। खासकर पार्लिमेंटरी पद्धति का मोह छोड़ना होगा। हर्ष की बात है कि लोगों का ध्यान इस ओर है। हाल में भारतीय लोक सभा के स्पीकर जी. एस. मावलनकर ने कहा है कि 'संसार में कहीं भी पार्लिमेंटरी शासन पद्धति का भविष्य उज्ज्वल नहीं है। वर्तमान समाज और अर्थ-व्यवस्था इतनी जटिल हो गई है कि इस के पीछे जो भावना और वास्तविकता थी, उसकी अब रक्षा करना सम्भव नहीं है।' याद रहे कि श्री मावलनकर का लोकसभा, संविधान सभा, बम्बई की विधान सभा और अहमदाबाद की निर्वाचित म्युनिसिपैल्टी आदि से जो लम्बे समय तक संबन्ध रहा है; उसके कारण उनका पार्लिमेंटरी पद्धति सम्बन्धी उक्त मत अपना विशेष महत्व रखता है।

श्री मावलनकर का मत है कि दुनिया को वर्तमान संकट से बचाने के लिए जीवन के हर एक क्षेत्र में विकेन्द्रीकरण होना बहुत जरूरी है। इसी बात पर तो म. गांधी जन्म भर जोर देते रहे। पर, अफसोस! उनके निकट सम्पर्क में रहने वाले सर्वश्री मावलनकर, राजेंद्रबाबू और नेहरू आदि भी इस शिक्षा को ग्रहण न कर पाए। आखिर, भारत का नया संविधान बनाने की बहुत-कुछ जिम्मेवारी इन्हीं पर है। अंग्रेजी शिक्षा पद्धति का कैसा चमत्कार है कि इन लोगों पर अपने नये गुरु, राष्ट्रपिता गांधी का रंग बहुत ही कम चढ़ा। इसी का यह नतीजा है कि जो स्वदेशी राज हुआ है, उसकी रग रग में इंग्लैंड की पार्लिमेंटरी पद्धति की छाप है।

विशेष वक्तव्य—क्या हम अब भी शासन की इस पार्लिमेंटरी पद्धति की जीर्ण-शीर्ण और कष्टदायक पोशाक से चिपटे रहेंगे? यह इतनी तंग और फटी पुरानी है कि इसे जहां तहां से सी देने और कहीं-कहीं पर पेबन्द या थेगली

(शेष पृष्ठ ३७ पर)

कांग्रेस और बुनियादी शिक्षा

— डा. पट्टाभि सीतारामैया, राज्यपाल मध्यप्रदेश

युद्ध की विभीषिका को पार कर शांति प्राप्त करने वाले देश को अपने सामाजिक और आर्थिक ढांचे को नये रूप से सुव्यवस्थित और सुसंगठित करना पड़ता है। ऐसे ही शांति से युद्ध की ओर जाने के काल में (संक्रमण काल में) भी देश को अपनी यौद्धिक व्यवस्था को पुनर्संगठित करना पड़ता है। हिन्दुस्थान एक ऐसे महायुद्ध में खींचा गया था जो उसका अपना नहीं था, जो उसकी शक्ति के बाहर था, (जिसमें वह बराबर का भागीदार नहीं था) तथा जिसमें वह भाग लेना ही नहीं चाहता था। फिर भी एक महायुद्ध से देश को जो जबरदस्त धक्के लगते हैं, वे सब भारतवर्ष को सहने पड़े, यद्यपि इसकी लूट में उसे कुछ न मिला —जो कि वह चाहता भी नहीं था।

इसके अतिरिक्त एक बात और भी है। युद्धोत्तर विकास की समस्या तो सभी स्वतंत्र राष्ट्रों में है ही परन्तु हिन्दुस्थान को एक दूसरे दृष्टिकोण से भी पुनर्व्यवस्था करनी थी। उसे एक साम्राज्य के चंगुल से निकलकर प्रजातंत्रीय सरकार की स्थापना करनी थी, गुलामी से आजादी का निर्माण करना था। युद्ध में भारत ने जो बलिदान किये थे, वह स्वेच्छा से नहीं किये थे, वह तो विदेशी सत्ता की हिमायत करने वाले स्वार्थी और गैर देशभक्त लोगों के द्वारा भारतीय जनता से जबरन लिये गये थे। इसलिये युद्धकालीन कृत्रिम सामाजिक-अर्थिक व्यवस्था को छोड़ कर नई व्यवस्था खड़ी करते समय इन लोगों की जमात ने, जिन लोगों ने अंग्रेजी शासन का साथ दिया था, पुनर्संगठन के प्रति विरोधी या कम से कम असहकारी रूख धारण किया और इस लिए युद्धोत्तर विकास का काम और भी मुश्किल हो गया।

इस तरह से देखा जाता है कि हिन्दुस्थान को पुनर्गठन के लिये जनता के अज्ञान और सारी जमातों के प्रतिक्रियावाद के विरुद्ध संघर्ष करना पड़ रहा है। देश के राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं को पहले की अकर्मण्यता, अपरिवर्तनशीलता तथा भाग्यवाद और विदेशी शासन में रहने के कारण आये हुए दब्बूपन और निष्क्रियता के विरुद्ध भी संघर्ष करना पड़ रहा है। इस तरह की कठिन समस्याओं में से एक समस्या शिक्षा के विषय में भी है, जिसको पूरी तरह से समझने के लिये हमें सवा सौ वर्ष पहले से लेकर आज तक के भारतीय शिक्षा के इतिहास को देखना पडेगा। सन् १८१७ में आखिरी पेशवा गिर गया और देश के बहुत बड़े हिस्से की की हुकूमत ईस्ट इण्डिया कम्पनी के हाथ में आ गई। केवल लाहौर का सिंह स्वतंत्र बच गया था लेकिन वह भी कुछ वर्षों के बाद दबा दिया गया।

इस तरह ईस्ट इण्डिया कम्पनी सर्वेसर्वा बनी। उसके डायरेक्टर अच्छे लोग थे। उन्होंने आदेश भेजे कि हिन्दुस्थान से ज्यादा से ज्यादा पैसा भेजो लेकिन हुकूमत को अच्छा बनाओ। उनके ख्याल अच्छे थे। वे चाहते थे कि हिन्दुस्थान में तालीम उसी के अपने तरीके से चले और हिन्दुस्थान की संस्कृति का भी खयाल रक्खा जाय। लेकिन हिन्दुस्थान में काम करने वाले कम्पनी के अधिकारियों ने देखा कि अच्छा शासन करना और ज्यादा से ज्यादा पैसे भेजना— ये दोनों बातें एक दूसरे के विरुद्ध हैं और इसलिए ये दोनों बातें एक साथ नहीं चल सकती। यह विरोधाभास शिक्षा के क्षेत्र में खास तौर पर था।

हिन्दुस्थान की प्राचीन संस्कृति, दर्शन, भारतीय साहित्य और विज्ञान के बारे में बोर्ड आफ डायरेक्टर्स के ख्याल अच्छे थे। लेकिन हिन्दुस्थान में तो मेकाले और ट्रैविलियन की तरह के लोग थे जिन्होंने समझा कि समृद्धि और संस्कृति का प्रेम, जिसने इंग्लेंड के गौरव को इतने उच्च शिखर पर खड़ा किया है, हिन्दुस्थान के लिए जरूरी नहीं। यहां तो मेहनत करने वाले किसान, होशियार गुमास्ते और मुन्शी (क्लर्क) चाहिए। बिना विचारे बड़ी सरलता से यह कहा गया कि पूर्वी देशों का सारा साहित्य मिलकर किसी अच्छे यूरोपियन पुस्तकालय की एक आलमारी के बराबर भी नहीं होगा।

लार्ड विलियम बैंटिंक और लार्ड ऐमहर्स्ट के समय शिक्षा के सम्बन्ध में इन दोनों विचारधाराओं का झगड़ा चल रहा था। एक विचारधारा पूर्वी प्रणाली व दूसरी विचारधारा पाश्चात्य प्रणाली को अपनाने के बारे में थी, और अन्त में दूसरी विचारधारा की विजय हुई जिसके एक समर्थक स्वर्गीय राजा राममोहनराय भी थे। यह केवल पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली की ठीक नकल नहीं भी बल्कि विज्ञान, कारीगरी या हस्तकला से अलग केवल किताबी शिक्षा थी। इसने देश पर प्रभाव डाला और सन् १८५८ और उसके बाद में खोले गये विश्व-विद्यालयों में चलती रही।

शिक्षा का यह सिलसिला बड़े जोर शोर से वंग भंग आंदोलन तक चला लेकिन इसके बाद राष्ट्रीय शिक्षा के लिये आवाज उठाई गई, जिसका सम्बन्ध सरकार या विश्व-विद्यालयों से न हों। सन १९०६ में कांग्रेस के राजनैतिक कार्यक्रम में यह भी एक मुद्दा रक्खा गया कि राष्ट्रीयता के निर्माण के लिए शिक्षा राष्ट्रीय भावना के साथ और राष्ट्रीय लोगों के द्वारा होनी चाहिए। यद्यपि इस नये दृष्टिकोण की सृष्टि राजनैतिक कारणों से हुई लेकिन शीघ्र ही शुद्ध शैक्षणिक पहलू से इसे देखा जाने लगा। देश और विदेश में शिक्षा की नई प्रणालियों के जो आधुनिक प्रयोग हुए, उन सबका इसपर प्रभाव पड़ा। फिर भी कांग्रेस का यह शिक्षा आंदोलन, चूंकि इसकी शुरुआत विरोध से हुई और इसके साथ राजनीति का पुट था, सरकार को आंखों में खटकता रहा और उसने इसे कभी स्वीकार नहीं किया। महात्मा गांधी पर राष्ट्रीय नेताओं ने जोर दिया कि राष्ट्रीय शिक्षा की योजना बनाकर उसे अमल में लाया जाय— जैसे कि उन्होंने खादी, अस्पृश्यता निवारण, हिन्दु-मुस्लिम एकता आदि के लिये राष्ट्रीय योजना बनाई थी। इस प्रकार अखिल भारतीय चरखा संघ, अखिल भारतीय हरिजन सेवक संघ और अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संघ के बाद हरिपुरा कांग्रेस के सन् १९३८ के प्रस्ताव के अनुसार हिन्दुस्थानी तालीमी संघ की स्थापना हुई। बुनियादी शिक्षा आज विश्व के शिक्षा सुधार की कुंजी बनी हुई है। देश के सर्वांगीण विकास का जो काम अब हो रहा है, वह एक प्रकार से विचित्र-सा है क्योंकि हम उस नींव और ढाँचे पर राष्ट्रनिर्माण की दीवालें बना रहे हैं, जो एक साम्राज्यवादी देश द्वारा अपने हितों के अनुकूल बनाया गया था। इस ढांचे को अच्छी तरह समझने के लिये हमें देश में शिक्षा के विकास के इतिहास को समझना होगा।

हमारी शिक्षा का इतिहास

सन १८५७ के गदर के बाद, जिसमें सिपाहियों और राजकुमारों ने काफी जागृति का सबूत दिया था और जिसे दबा दिया गया, सन् १८५८ में पहले पहल विश्व-विद्यालयों की स्थापना हुई। इसके बाद ही क्रमशः १८६० और १८६१ में कौंसिल और कोर्ट की स्थापना हुई। इस तरह उन्होंने तीन साल के भीतर तीन किले खड़े किये, जो उनके शासन की रक्षा करें। भारतवर्ष में विदेशी लोग व्यापार करने के लिये आये थे, उन्होंने कारखानों के रूप में पहले ही किले खड़े कर रक्खे थे। उनके चौकीदार फौजी योद्धा का और उनके पास के हथियार फौजी हथियारों का काम देते और वे व्यापार करने वाले ही शासक बन गये

(शेष पृष्ठ ३५ से)

लगा देने से काम नहीं चलेगा। मानव के लिए नये वस्त्र का निर्माण करना है, जिससे उनके अंगों को ताजी हवा और रोशनी काफी मिले, और हर घड़ी उनका दम न घुटता रहे। भारत को ग्राम-प्रधान संस्कृति, और पंचायती विकेन्द्रित व्यवस्था के आधार पर ही वास्तविक स्वराज मिल सकता है। पश्चिम के अन्धानुकरण में हमारा हित नहीं—पार्लिमेंटरी पद्धति स्वयं पश्चिम के लिए भी अच्छी नहीं। [वहां केवल स्वदेशी राज है, स्वराज नहीं।] क्या हम इस दृष्टि को अपना सकेंगे ?

—

अंग्रेजों के चले जाने से भारत को स्वराज नहीं मिल जाता है। हमें निरन्तर स्वराज के लिए कोशीश करनी होगी।.......मेरे सपनों का स्वराज गरीबों का स्वराज है। धनिकों को जो जीवन की साधारण सुविधाएं प्राप्त हैं, ये सब को मिलनी ही चाहिए। इस में कोई भी सन्देह नहीं कि वह स्वराज्य पूर्ण स्वराज्य नहीं, जिस में आपको ये सुविधाएं न मिल सकें।

—गांधीजी

थे। कम्पनी ने बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दिवानी प्राप्त करके जो शासन आरंभ किया था, उसके विरुद्ध लोगों में बहुत असंतोष था। इससे ईस्ट इंडिया कम्पनी को प्रतीत हुआ कि जब तक बुद्धिवादी वर्ग का और नैतिकता का आधार उन्हें न मिलेगा, उनका शासन खतरे में रहेगा। नैतिकता का आधार तो उन्हें मिल नहीं सकता था, परंतु बुद्धिजीवी वर्ग का आधार प्राप्त करने के लिये उन्होंने कालेज, कौंसिल और न्यायालय (कोर्टस)—ये तीन चीजें खड़ी की। इन तीनों का जो गहरा प्रभाव भारतीय जीवन पर पड़ा, उसका परिचय हमें सन १९२१ के असहयोग आंदोलन का अध्ययन करते हुए मिल सकता है। इस तरह हम देखते हैं कि सन १८५८ में ईस्ट इंडिया कम्पनी से भारत का शासन अपने हाथ में लेने के बाद ब्रिटिश शासन ने नीचे लिखे प्रकार से अपनी बुनियादें पक्की कीं।

१ ईंट-चूने के नये किले बनाने की बजाय उसने मद्रास, बम्बई और कलकत्ता के विश्व-विद्यालयों के रूप में एक नये प्रकार के किले बनाने शुरू किये।

२ युद्ध क्षेत्र में लड़ने वाले योद्धाओं की संख्या बढ़ाने की बजाय उन्होंने इन विश्व-विद्यालयों के स्नातकों (ग्रेजुएट्स) के रूप में एक नई फौज खड़ी की।

३ बम, हाथ-बम, बारूद, बंदूक या अन्य युद्ध सामग्री बढ़ाने के बजाय उन्होंने अंग्रेजी साहित्य पढ़ाना शुरू किया।

इन सबका परिणाम अजीब हुआ। इसी देश के बुद्धिमान लोगों में से उनकी रक्षा के लिए दल तैयार हो गया, जिसने अपने स्वामी की सेवा बड़ी ईमानदारी के साथ की यह अच्छी तरह समझते हुए कि क्या करने है उनका हित है। यूनिवर्सिटी के स्नातक (ग्रेजुएट) समय आने पर विभिन्न अदालतों में वकील बन गये, वकील ही नहीं एक साम्राज्य के बुद्धिमान, योग्य उन्नतिशील और महत्वाकांक्षी नागरिक भी बने। उनकी महत्वाकांक्षा क्या थी और उसे किस तरह और कहां पूरी कर सकते थे? कौंसिलों में। सन् १८६० में जो धारासभायें बनाई गई, उनके पीछे बड़ी दूरदर्शिता थी। इस तरह विश्वविद्यालय, हाईकोर्ट और धारासभा यह उन्नति की ऐसी सीढ़ियाँ बन गई, जिनपर चढ़कर ब्रिटिश शासकों की सेवा करने के लिए बुद्धि वाले लोग प्रयत्न करने लगे।

आपको मालूम होगा, जेलों में वार्डन लोग कैदियों को नहीं मारते। इस काम के लिये वह लोग कैदियों में से ही कुछ को वार्डर (जमादार) बना देते हैं। यह जमादार प्रायः हत्या के अभियुक्त होते हैं, जो कलंक रहित स्वच्छ कपड़े पहने, हाथ में चमड़े की चाबुक लिये और चमकती हुई पगड़ियां और पालिश किये हुए बूट पहने घूमते रहते हैं। तथा अपने अधिकारियों की आज्ञा से कुछ भी करने को तैयार रहते हैं। अंग्रेजों ने जो कुछ भी जेलों में किया, वही इस एक बड़ी जेल रूपी भारतवर्ष में भी किया। हिन्दुस्थानियों में से कुछ लोगों को मेजिस्ट्रेट आदि बना दिया जो ब्रिटिश राज्य के प्रतिनिधि अंग्रजों के हुक्म के अनुसार सब काम करते थे। सारी ट्रेनिंग, अनुशासन और महत्वाकांक्षा का उद्देश्य साम्राज्य को कुछ खास ढांचों के अन्तर्गत चलाना ही था। इन ढांचों को रूप में पूर्व निर्णीत क़ायदे और कानून थे, जैसे कि लगान कर आयकर, जंगलों, स्थानीय, शासन, सेना, पुलिस शिक्षा, जेल, सत्याग्रह और लाठी चार्ज के कानून कायदे।

सचमुच में अंग्रेजी विश्व-विद्यालयों के ग्रेजुएटों को और इंग्लिश स्कूलों के राजनीति पटु स्नातकों को ऐसी ही ट्रेनिंग दी जाती थी, कि जो कुछ कानून कायदे बने हुए हैं, उन्हीं के आधार पर इस बड़ी व्यवस्था को वह चलायें, उसमें अपना स्वतंत्र दिमाग न लड़ायें तथा जो व्यवस्था चल रही है, उसमें कुछ दखल न दें। उनका काम सोचना नहीं बल्कि करना था। करीब पांच साल पहले इंग्लेंड में एक सरकारी आयोग (रायल कमीशन) नियुक्त हुआ था, ताकि वह सुझाये कि अब किस प्रकार की शिक्षा आक्सफोर्ड और कैम्ब्रिज विश्व-विद्यालयों में दी जाय और उस आयोग ने सुझाया कि अब इन विश्व-विद्यालयों को अपने विद्यार्थियों को सिर्फ कायदे के अनुसार चलना ही न सिखाकर कुछ सोचना भी सिखाना चाहिये।

हिन्दुस्तान की शिक्षा का यही इतिहास है। हमें भी अपने विद्यार्थियों को सोचना, अपने मस्तिष्क और स्मरण शक्ति के साथ अपने ज्ञानेन्द्रियों और प्रवृत्तियों का, और अपनी प्रवृत्तियों के साथ अपनी अंगुलियों का प्रयोग करना सिखाना होगा। और इसीलिए इस बुनियादी शिक्षा का आविर्भाव हुआ ताकि एक नये प्रकार के विद्यार्थियों को,

जिन्होंने नई नागरिकता का पूरा-पूरा प्रत्यक्ष ज्ञान हासिल किया है, तैयार किया जाय जो देश की नई आवश्यकताओं की पूर्ति करें। इसका एक उद्देश्य यह है कि अपने लडके लड़कियों के हाथों और आंखों को प्रत्यक्ष काम के द्वारा ट्रेनिंग दी जाय; वे गल्तियां भी करें और सुधारें भी, तथा इसी प्रकार सीखते जायं।

जिसकी धैर्य और आशा के साथ हम प्रतिक्षा कर रहे थे, आखिर उसका फल हरिपुरा कांग्रेस के प्रस्ताव में मिला। कांग्रेस ने सन् १९०६ और फिर १९१७ तथा अंत में १९२०-२१ में राष्ट्रीय शिक्षा की जिस योजना को अपनाया था, वह कुछ हद तक लोकप्रिय तो रही परन्तु विरोधाभास और कटुता के वातावरण में जो स्कूल खोले गये थे, उन्हें एक अखिल भारतीय संस्था के हाथ में नहीं दिया जा सका जैसा कि खादी, हरिजन-सेवा तथा ग्रामोद्योगों के सम्बन्ध में हुआ। इन स्कूलों का काम अस्त व्यस्त रूप से चलता था, और जब त्रिमुखी बहिष्कार का आंदोलन उठा लिया गया, इस राष्ट्रीय शिक्षा का आंदोलन भी कमजोर पड़ गया। और जब भी महात्माजी को इस बारे में कहा जाता था, वे यही कहते थे कि अभी वह समय नहीं आया है कि राष्ट्र इस विषय को अपने हाथ में लें। यह तो जाहिर ही है कि महात्माजी हमेशा अपनी अन्तरात्मा की आवाज पर काम करते थे न कि तर्क और विवेक के आधार पर। हरिपुरा में उन्हें महसूस हुआ कि अब समय आ गया है। अपनी मिनिस्ट्री के द्वारा कांग्रेस देश की शिक्षा का प्रबन्ध कर सकेगी; इसलिए मार्च, १९३८, में हरिपुरा में कांग्रेस ने एक प्रस्ताव स्वीकार करके बुनियादी सिद्धांतों का विवेचन किया, जिन के अनुसार राष्ट्रीय शिक्षा का काम चले। यह भी स्पष्ट था कि बुनियादी शिक्षा सात वर्षों की हो, मुफ्त और अनिवार्य हो, मातृभाषा के माध्यम से दी जाय और किसी उत्पादक हस्त उद्योग के जरिये ही जाय। जो अन्य कार्य हो, जो ट्रेनिंग दी जाय, इन सब का सीधा संबन्ध उन्हीं केन्द्रीय सिद्धांतों से हो, और इन सब में बालक के आसपास के वातावरण का ध्यान रक्खा जाय। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये एक अखिल भारतीय तालीमी संघ स्थापित किया गया, जिसे अधिकार दिया गया कि वह स्वयं अपना विधान बनाये, निधि एकत्रित करे (चन्दा जमा करे) और अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिये सब आवश्यक कार्य करे। इस कठिन कार्य में महात्माजी को श्री आर्यनायकम् और श्रीमती आशादेवी आर्यनायकम् यह दो शिक्षाशास्त्री जैसे मिल गये, जिन्होंने पूरी लगन और तत्परता से इस कार्य में सहयोग दिया।

* * *

बुनियादी शिक्षा-इसका उद्देश्य और स्वरूप।

इस सम्मेलन के प्रतिनिधि बुनियादी शिक्षा के विज्ञान और कला को अच्छी तरह समझते हैं। इस संक्रांति युग में हमें अनेक महत्वपूर्ण और बडे-बडे परिवर्तन करने हैं। देश के भौतिक दृष्टिकोण का बौद्धिक, आध्यात्मिक और भौतिक दृष्टिकोणों से समन्वय करना है। इस तरह शिक्षा को न केवल जीवन की कला से जोड़ना है, वरन् जीवन के सिद्धांतों से भी जोड़ना है। इन सिद्धांतों को फिर से दोहराना है और उन्हें पाने के तरीकों का फिर से गठन करना है। जिस तरह हम जीवन की शिक्षा को बुनियादी शिक्षा मानते हैं जिसके द्वारा भावी नागरिकों का छुटपन से ही, जबकि उनका निर्माण काल होता है, इस तरह की ट्रेनिंग देते हैं कि वे एक सहकारी समाज का निर्माण कर सकें— सहकारी जीवन जी सके। सहकार में संपूर्ण मानव का समावेश होता है— मनुष्य की सिर्फ शारीरिक योग्यतायें और बौद्धिक विकास ही नहीं परंतु उसकी आध्यात्मिक आकांक्षाओं का भी। जब आप इस तरह से एक पूर्ण मानव का निर्माण करते हैं, आप एक समन्वित कौम की—एक सुव्यवस्थित समाज की नींव डालते हैं। किस तरह हम इस तरह के जागृत, बुद्धिमान, विचारवान और मानवी व्यक्तित्व का निर्माण करें? यह सिर्फ सिद्धांत को रटने से नहीं वरन् रचनात्मक प्रयत्न, सृजनात्मक कार्यों और सार्थक श्रम द्वारा ही हो सकता है और इस तरह युगों से प्रचलित यह कहावत चरितार्थ होगी कि "काम ही ईश्वर की आराधना है।" काम ही एक ऐसी चीज है जो मनुष्यों और राष्ट्रों को जोड़ती है। काम ही वह धुरी है जिसपर बुनियादी शिक्षा की सारी योजना घूमती है। प्राचीन काल के लोग एक पूरा चित्र तैयार करते थे, एक पूरा कपड़ा, एक पूरी मूर्ति या एक पूरा मंदिर बनाते थे। इसके लिये अलग अलग लोग योजना

नहीं बनाते थे और अलग-अलग कारीगर अलग-अलग विभागों का ठेका नहीं लेते थे बल्कि एक ही कलाकार, एक ही मस्तिष्क, एक ही कुशलता और एक ही समन्वय से सारा काम होता था। हिन्दुस्थान के इस बाल मस्तिष्क को भी ऐसी ही एक समग्र समन्वित ट्रेनिंग की आवश्यकता है। उदाहरणार्थ जब आप थोड़ी सी कपास लेकर उसका बिनौला निकालते हैं, उसे साफ करते हैं, धुनते हैं, पूनी बनाते हैं, कातते हैं और कपड़ा बुनते हैं— तब इन सब क्रियाओं के आस-पास आप कृषि शास्त्र, उद्योग, इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र और राजनीति का एक काफी बड़ा क्रम सिखा सकते हैं। लगभग १३ वीं शताब्दी तक कपास के बारे में पाश्चात्य देश वाले जानते ही न थे। वे तो इसे एक सुन्दर तन्तु वाला फूल समझते थे।

कपास ने किस तरह साम्राज्य निर्माताओं को आकर्षित किया और इतिहास को बनाया? आपको शायद मालूम होगा कि सूती कपड़े की पहली मिल का निर्माण सन् १८५१ में आरंभ हुआ और सन् १८५३ में पूरा हुआ। यह बात ईस्ट इंडिया कम्पनी को बहुत खली। जहां वे सन् १८०३ के पहले हिन्दुस्थान से बहुत सा कपड़ा निर्यात करते थे, वहां सन १८०३ में तीन लाख रुपया का कपड़ा हिन्दुस्थान में आया; सन १८२९ में २९ लाख रुपये का कपड़ा आया जब कि सन १९२९ में ६६ करोड़ रुपयों का कपड़ा और ६ करोड़ रु० का सूत—कुल मिलाकर ७२ करोड़ रुपयों का कपड़ा और सूत अंग्रेज़ों ने निर्यात किया।

यह सब सत्य होगा, परंतु इससे बुनियादी शिक्षा का क्या संबन्ध? सन १८५३ के नवम्बर माह में एक दिलचस्प घटना हुई। ईस्ट इंडिया कम्पनी का एजेन्ट निजाम से मिला और सन १८०५ में वेल्सले में हुई संधि के अन्तर्गत फौज रखने खर्च—९७ लाख रुपयों की मांग की या इसके बदले में बरार मांगा। निजाम ने निश्चयपूर्वक कहा कि भाई, अब तक तो हम स्वयं ही सारी फौज का खर्च संभालते रहे हैं और कहीं ऐसा नहीं लिखा है कि हमें रुपया देना होगा। लेकिन कम्पनी ने जिद्द की। निजाम ने अपने दरावर को बरखास्त किया और गिड़गिड़ाकर, सर झुकाकर कहा— 'देखिये दो चीजें ऐसी हैं जिन्हें हिन्दुस्थान के राजा छोड़ना नहीं चाहेंगे—वे हैं उनकी उपाधियां और उनका राज्य। बाहर देश से आये हुए सज्जनो, आप जो कभी हिन्दुस्थान में हैं, कभी इंग्लैंड में; कभी नाविक हैं, कभी फौजी; कभी अफसर हैं, कभी व्यापारी, इस बात को नहीं समझ सकते।'

लेकिन कम्पनी कहां मानने वाली थी? निजाम ने इसके लिये समय की याचना की और तीन किश्तों में यह रकम देना तय हुआ। इनमें से दो किश्तें तो पूरी पूरी चुका दी गई और तीसरी किश्त में से भी निजाम ने दस लाख रुपये दे दिये। लेकिन कम्पनी ने फिर बरार मांगा और ले भी लिया।

इसके बाद गम्भीर प्रश्न खड़ा हुआ। लार्ड डलहौजी ने डायरेक्टरों को लिखा कि बरार तो नागपुर के कपास क्षेत्र का केवल द्वार है, हमें तो नागपुर भी लेना चाहिये। फरवरी, सन १८५४ में भोंसले की मृत्यु हुई। उसका कोई पुत्र न था और उसे किसी को गोद लेने की अनुमति नहीं दी गई थी। अंग्रेजों ने एकदम किले को घेर लिया, रानियों को निकाल दिया, हजारों की कीमत के हाथियों को कुछ सौ रुपयों में और सैंकड़ों की कीमत के घोड़ों को दस पचास रुपयों में तथा गायों को एक एक आने पर बेच डाला। जितने रत्न-जवाहिरात थे, सब ले लिये। भोंसले का एक मित्र मेजर आउस्ले था; जो नागपुर में होने वाली इन कारगुजारियों की खबर पाकर तेजी से उधर आ रहा था। उसे पकड़ लिया गया और इंग्लैण्ड भेज दिया गया। इस तरह नागपुर का कपास क्षेत्र भी कम्पनी के हाथों में आ गया।

भारतवर्ष में अंग्रेजी साम्राज्य के सारे इतिहास का केन्द्र कपड़ा है। यह पहले कहा जा चुका है कि अंग्रेजों के अधिकार से पूर्व हिन्दुस्तान से कपड़ा बाहर जाता था, बाद में बाहर से कपड़ा भारत में मंगाया जाने लगा। ग्रामोद्योगों का—जिस में कपड़ा उद्योग भी शामिल है—जो नाश हुआ, वह तो इंजिनों व मशीनों के उपयोग से होना ही था। जिन उद्योगों से किसान खेती की अपनी आमदनी के साथ-साथ कुछ कमा लेता था, जब ये नष्ट हो गये तो गांव खाली होने लगे। पहले यह था कि किसान किसान होने के साथ-साथ कारीगर था और कारीगर भी किसान था। परन्तु शीघ्र ही यह हुआ कि बढ़ई को जब आरी या पटास की जरूरत होती, वह विदेश की बनी हुई खरीदता। लोहा

को जूते की जरूरत होती तो शहर से खरीदता और इस तरह गांव के मोची को मारता। मोची को बरतन खरीदना होता तो शहर से अल्मूनियम के बरतन खरीदता और इस प्रकार कुम्हार के धन्धे को मारता। कुम्हार मैंचेस्टर के मिल के कपड़े खरीदता और जुलाहे को कमजोर बनाता। इस तरह जब उद्योग नष्ट हो गये, जमीन पर लोगों का भार बहुत ज्यादा हो गया। छोटे-छोटे खेतों वालों ने अपने खेत बेच दिये और ठेके से लेकर दूसरों की खेती करने लगे। फिर वह किसान न रहा—खेती में काम करने वाला मजदूर बन गया। फिर उसे गांव भी छोडना पड़ा। परिवार को छोड़कर वह शहर में गया—वहां नौकरी की, कुछ भी खाया पिया, बीमार हुआ और मर गया। यह क्रम अगस्त १९४७ तक चलता रहा और शायद अभी चल रहा है। हमारी सभ्यता और संस्कृति का ढांचा, कारीगरी और कला की प्रतिभा, गांव का संतोषी जीवन, खेती और उद्योगों का सन्तुलन—यह सब मिट गया और इसकी जगह घनी आबादी, तंग गलियां, बीमारियों और मृत्यु से भरे हुए शहर बढ़ने लगे।

ग्रामीण अर्थ व्यवस्था टूट गई। अंग्रेजों के आने के पहले तक हमारी यह ग्रामीण व्यवस्था अपने आप में समृद्ध थी। यहीं नहीं, हाथ से कते और हाथ से बुने कपड़ों को विदेशों में निर्यात किया जाता और इस तरह विदेशों से शहरों में और शहरों से गांवों में धन का प्रवाह बहता था। अंग्रेजी सत्ता स्थापित होने के बाद यह प्रवाह उलट गया। सन् १८७३ में भाप के इंजिन का आविष्कार हुआ और इंग्लैंड में इसे उस उद्योग में लगाया गया जिसका परिणाम यह हुआ कि कपड़ा इंग्लैंड से हिन्दुस्तान में आने लगा और इस तरह हाथ कपड़े से संबंधित कारीगरों और कलाकारों का रोजगार छिन गया। उनका धन्धा और उनकी कला मारी गई। पैसा गांवों से शहरों में और शहरों से विदेशों में जाने लगा। पहले गांव का शिल्पक बढ़ई की बनी हुई चीजों, बढ़ई मोची की बनी चीजों, मोची लोहार की, लोहार जुलाहे के हाथ को बनी चीजों को खरीद कर एक दूसरे के सहायक बनते थे। किसान धोबी और नाई भी इन्हीं के हाथों बनी हुई चीजें खरीदते थे और परस्पर सहकार से काम चलाते थे। अब सब लोग अपना अपना पैसा विलायत को भेजने लगे। इसे गांव में बनाये रखने की फिक्र किसीने न की। आज आवश्यकता इस बात की है कि इसी स्वयं-पूर्ण ग्रामीण अर्थ व्यवस्था को सुधरे हुए रूप में हम फिर से स्थापित करें। यह सब प्राचीन इतिहास और साम्राज्यवाद की कहानी आप कपास के एक पौधे के आधार पर पढ़ा सकते हैं। इसी के आधार पर सन् १९२१ के बहिष्कार के आंदोलन के बारे में बता सकते हैं, जिस में कचहरी, कालेज और कौंसिलों का बहिष्कार किया गया था। खादी और ग्रामोद्योग आंदोलन, असहयोग, स्वदेशी सत्याग्रह, सिविल नाफरमानी, स्वराज्य और कम्युनिटी प्रोजेक्ट के बारे में बता सकते हैं। क्या तारीफ है बुनियादी शिक्षा की। महात्मा गांधी सिर्फ एक दर्शन शास्त्री और नीतिशास्त्री ही नहीं थे, वे एक शिक्षाशास्त्री, समाज सुधारक, सैनिक, राष्ट्रनिर्माता और मानवता के हितैषी भी थे।

अनुवादकः—रामकिशोर "पाषाण"

गान्धीवाद और साम्यवाद

— आचार्य नारायण प्रसाद सिन्हा 'जहानाबादी' झरिया, (बिहार)

आज गण तन्त्र और साम्यवाद के बीच विवाद पूर्वापेक्षा अधिक प्रखर हो गया है। और देशों की भांति हिंदुस्तान में भी इन दो आदर्शों का पारस्परिक द्वन्द्व अति घनीभूत हो गया है हमें दो में से एक को पसन्द करना है। गणतंत्र प्रणाली और साम्यवाद दोनों के उद्देश्य एक ही हैं, अर्थात् समाज में अधिकाधिक सुख-शांति की व्यवस्था करना। किंतु दोनों के मार्ग में भयानक अंतर है। यह एक अति प्रचलित भ्रम है कि इन दोनों आदर्शों के आधारभूत उद्देश्यों में मौलिक अंतर है। हम आगे चलकर विचार करेंगे। इससे पूर्व कि हम इन दोनों पर विचार करें, हमें एक बात पर प्रकाश डाल लेना चाहिए। महात्मा गांधीजी ने इन दोनों सीमान्तों के बीच एक मध्यम पथ भी दिखाया है। इसे गांधीवाद की संज्ञा दी गई है। गांधीवाद और साम्यवाद में कौन अधिक कल्याण कारी है?

जहां तक उद्देश्यों का संबन्ध है गांधीवाद एवं साम्यवाद में कोई खास अन्तर नहीं है। गांधीवाद एक ऐसे समाज का निर्माण करने का इच्छुक है जिस में शोषण का अभिशाप न हो और मनुष्य मात्र सुख शांतिमय जीवन व्यतीत कर सके। साम्यवाद का भी मूल उद्देश्य यही है। किन्तु उद्देश्यों में यह समानता होने के अतिरिक्त दोनों के मार्गों में आधारभूत अन्तर है। कहा जाता है कि मार्क्स का साम्यवाद क्रांतिपर ही अत्यधिक विश्वास करता है, सुधार पर कतई नहीं। किन्तु वास्तविकता तो यह है कि गांधीवाद प्रत्येक दृष्टिकोण से मार्क्स के दर्शन की तुलना में कहीं अधिक क्रांतिकारी है। आज गांधीवाद के सामने मार्क्स का साम्यवाद एक पुराना एवं जीर्ण-शीर्ण सिद्धांत प्रतीत होता है। उदाहरण के लिए साधनों पर विचार करना आवश्यक है। मार्क्सवाद का कहना है कि घृणा, हिंसा और प्रतिशोध की भावनाएं वर्ग युद्ध को क्रमशः अधिक से अधिक प्रखर करती रहेगी और क्रमशः एक ऐसी परिस्थिति आ जायगी कि दोनों में खुले आम शक्ति प्रदर्शन होगा। तदनन्तर अनिवार्यतः एक वर्गहीन समाज की स्थापना होगी। मार्क्स के दर्शन में यह बात एक ध्रुव सत्य के रूप में स्थापित की गई है कि दलित वर्ग बल प्रयोग द्वारा सत्ता छीन सकता है और वह अनिवार्य रूप में यही करेगा। दूसरी ओर गांधीवाद का यह मत है कि मनुष्य किसी भी समस्या का समाधान बल के प्रयोग द्वारा नहीं करता, बल्कि वह हर समस्या का समाधान करने के लिए एक मात्र उपाय अहिंसात्मक कार्यक्रम ही प्रस्तुत करता है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखने पर कौन सा विचार अधिक न्याय संगत प्रतीत होता है? मार्क्स और एंजेल्स को कन्युनिस्ट मेनिफेस्टो लिखे हुए सौ वर्ष से अधिक बीत चुके। उस समय अणुबम की कौन कहे मशीनगन तक का आविष्कार न हुआ था। उस समय सेनाएं तलवारों और बन्दूकों से लड़ा करती थीं और इन्हीं अस्त्र-शस्त्रों से क्रांतियां भी हुआ करती थीं। किन्तु आज स्थितिका रूप सर्वथा भिन्न है। आज तो ऐसे अस्त्र शस्त्रों का आविष्कार हो चुका है कि एक क्षण मात्र में नगर के नगर साफ किये जा सकते हैं। ऐसी स्थिति में मार्क्स द्वारा बताए गये उपाय का प्रयोग एक ही परिणाम ला सकता है—सभ्यता और उनके साथ-साथ मानव मात्र का पूर्ण विध्वंस। स्पष्ट है कि जिस समय मार्क्स और एंजेल्स ने अपना मेनीफेस्टो लिखा था उस समय उन्होंने इस स्थिति की कल्पना तक न की थी। गांधीवाद अपने अहिंसा के सिद्धांत के साथ आज के युग में मार्क्सवाद की अपेक्षा अधिक वैज्ञानिक प्रतीत होता है।

साम्यवाद का केन्द्र बिंदु वर्ग द्वन्द्व की भावना है। घृणा एवं प्रतिशोध की भावना से पुष्ट होते हुए भी यह वर्ग युद्ध निरन्तर जारी रहेगा—तब तक जारी रहेगा जब तक कि सारे संसार में वर्ग हीन समाज की स्थापना नहीं हो जाती, ऐसी साम्यवाद की मान्यता है।

गांधीवाद आधारभूत रूप में अहिंसावादी होने के कारण इस प्रकार की स्थिति की कल्पना तक नहीं कर सकता।

किन्तु वह साम्यवाद के पोषकों के सम्मुख एक अति विचारणीय प्रश्न उपस्थित करता है। वह यह कि जिस दर्शन की बुनियाद ही घृणा और प्रतिशोध की भावना है वह समाज के लिये स्थायी रूप में स्वीकार कैसे किया जा सकता है और उसके द्वारा लोक मंगल की स्थायी व्यवस्था कैसे हो सकती है? इस दृष्टिकोण से देखने पर भी साम्यवाद की तुलना में गांधीवाद अत्यधिक वैज्ञानिक एवं व्यवहारिक प्रतीत होता है।

गांधीवाद और साम्यवाद पर एक अन्य दृष्टिसे भी विचार करना उचित प्रतीत होता है। साम्यवाद जिस श्रमिक एकतंत्र की स्थापना करना चाहता है। उसकी मूल भावना क्या है? यही कि किसी भी समाज में सबसे ऊंचा स्थान श्रमिक वर्ग को मिलना चाहिये क्यों कि यही उसकी आधार शिला है। गांधीवाद भी इस बात को स्वीकार करता है। वह भी कहता है कि वही सामाजिक व्यवस्था न्यायसंगत कही जा सकती है, जिसमें श्रमकी सर्वोपरि प्रतिष्ठा है। इस बात में गांधीवाद और साम्यवाद दोनों ही एक मत हैं। कम्युनिस्टों की भांति गांधी जी भी कहा करते थे कि समाज में श्रम करने वाले वर्ग को ही सबसे अधिक गौरव प्राप्त होना चाहिये। 'शरीर श्रम' के वे इतने अधिक कायल थे कि शिक्षा और अध्यात्म के क्षेत्र में भी इसे प्रथम महत्व देते थे।

साम्यवाद की भांति ही गांधीवाद एक ऐसे समाज की स्थापना करना चाहता है, जिसमें शोषण का अभिशाप न हो। किन्तु दोनों के मार्गों में मौलिक अन्तर एवं मतभेद है। साम्यवाद का कहना है कि पूंजीवादी अर्थ व्यवस्था के नाश के बीज स्वयं उसी में निहित है। उसकी विशाल काय मशीनों द्वारा जो बहुल उत्पादन होता है उसके लिये खपत के नये-नये बाजार आवश्यक होते हैं। एक ओर उत्पादन क्रमशः बढ़ता रहता है; दूसरी ओर खपत के क्षेत्रों में ह्रास होते रहता है। ऐसी अवस्था में इसके विनाश की प्रतिक्रिया भी छिपे-छिपे किन्तु अनिवार्य रूप में साथ-साथ सर्वथा उचित है। सभी अर्थशास्त्री इस बात से सहमत हैं कि पूंजीवादी अर्थ व्यवस्था उत्पादन बढ़ाने में तो निस्सीम रूप से सक्षम है किन्तु खपत के बाजारों पर उसका कोई नियंत्रण नहीं है। इसलिये पूंजीवाद आगे चल कर साम्राज्यवाद का रूप ले लेता है और बाजारों तथा कच्चे माल की छीना झपटी महायुद्धों को जन्म देती है। जब खपत के क्षेत्र नहीं प्राप्त होते तो 'आर्थिक मन्दियां' आती हैं, जो लाखों मनुष्यों को बेकार बना देती हैं और जनता के जीवन-यापन का मार्ग अधिक कठिन कर देती है। सन् १९३७ ई. में संसार एक इसी प्रकार की आर्थिक मंदी का अनुभव कर चुका है। यहां तक तो ठीक है। किन्तु साम्यवाद समस्या के समाधान का कोई सुदृढ़ मार्ग प्रस्तुत नहीं कर पाता। यह कहना कि उत्पादन के साधनों पर राज्य का अधिकार हो जाने से जो योजनाबद्ध उत्पादन किया जायगा अर्थात् उतना ही माल पैदा किया जायगा जितने की आवश्यकता होगी तो समस्याओं का समाधान स्वतः ही हो जायगा— हमें ठीक नहीं प्रतीत होती। साम्यवाद उत्पादन पर नियंत्रण करके समस्या का समाधान करने का मार्ग बताता है किन्तु यह स्पष्ट है कि इस स्थिति में भी एक दूसरे को दूसरे देश के साथ व्यापार करना ही पड़ेगा क्योंकि हर देश में उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति करने लायक माल पैदा नहीं होता। उदाहरण के लिये ब्रिटेन किसी भी समय इतना गल्ला पैदा नहीं कर सकता कि उसे दूसरे देशों का मुंह न ताकना पड़े। उसी प्रकार भारत में इतना पेट्रोल पैदा नहीं हो सकता कि उसे दूसरे देश से खरीदना आवश्यक न हो। ऐसी अवस्था में सारा संसार भी साम्यवादी अर्थ व्यवस्था को अपनाले तो भी अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार रहेगा और इसके साथ साम्राज्यवादी व्यवस्था की छीना झपटी भी। स्पष्ट है कि इसी दृष्टिकोण से देखने पर साम्यवाद का तर्क युक्तिसंगत प्रतीत नहीं होता।

अब गांधीवाद द्वारा प्रस्तुत समाधान पर विचार कीजिये। गांधीवाद का तर्क है कि मशीनों की सहायता से उत्पादन को केन्द्रीभूत करना ही समस्त अनर्थों का मूल है। बहुल उत्पादन के साथ-साथ बहुल खपत का प्रश्न भी उपस्थित होता है और यह नई-नई समस्याओं की सृष्टि करता है। ऐसी अवस्था में उत्पादन का विकेन्द्रीकरण ही समस्या का एक मात्र समाधान है। इसीलिये वह कुटीर उद्योगों के माध्यम से एक-एक गाँव को एक स्वतंत्र इकाई के रूप में परिवर्तित कर देना चाहता है।

स्मरण रखने की बात है कि पूंजीवाद के विकास के लिये सबसे बड़ी सहायता विज्ञान से मिली थी। वही इसके नाश का कारण भी बन रहा है। नित्य नये-नये आविष्कारों के कारण नयी-नयी उत्पादन प्रणालियां प्रकाश में आने लगीं। परिणाम यह हुआ कि मानवी श्रम घटता गया। और मशीनों का आधिपत्य बढ़ता गया। धीरे-धीरे स्थिति का यह स्वरूप हो गया है कि जन शक्ति एक बहुमूल्य पूंजी होने के स्थानपर एक गंभीर समस्या बन गई है। जो यह कहते हैं कि ऐसी स्थिति केवल पूंजीवाद अर्थ व्यवस्था पर चलने वाले देशों में है। वे भारी भ्रम में हैं। आज यदि रूस में सामरिक उत्पादन की इतनी धूम न होती तो केवल नागरिक उपभोग की वस्तुएं बनाने के काम में उसकी सारी उत्पादन व्यवस्था को भर पेट काम न मिल सकता था। बेकारी प्रत्यक्ष रूप में सामने न आती। परोक्ष रूप में तो आती ही। पूंजीवाद एवं साम्यवाद दोनों ही केन्द्रीभूत उत्पादन के कायल हैं। फर्क केवल इतना ही है कि प्रथम व्यवस्था व्यक्तिगत नियंत्रण में रहती है और दूसरी राज्य के। किन्तु इस के बहुल उत्पादन के परिणाम स्वरूप उत्पन्न होने वाली समस्याओं में कोई अन्तर नहीं आता। यदि मनुष्य का मशीन पर आधिपत्य इसी गति से बढ़ते रहने दिया गया तो १०० वर्ष बाद किस प्रकार की स्थिति की सृष्टि होगी उसकी कल्पना तक भयानक है। इन सब बातों को दृष्टिगत करते हुए ही गांधीवाद ने उत्पादन के विकेन्द्रीकरण की समस्या का एक मात्र समाधान बताया है! इससे स्पष्ट है कि मार्क्सवाद की तुलना में गांधीवाद एक अर्वाचीन और युक्तिसंगत प्रतीत होता है। जहां मार्क्स समस्या की ऊपरी सतह तक ही रह गये वहां गांधी उसकी तह तक पहुँच गये।

स्मरणीय है कि उत्पादन के साधनों पर राज्य के नियंत्रण का पक्ष इस लिये लिया जाता है कि 'लाभ' के रूप में जनता का शोषण न हो। गांधीवादी अर्थ व्यवस्था में शोषण का प्रश्न ही नहीं उठता, क्यों कि उस में बहुल उत्पादन होता ही नहीं।

समाज के अन्दर मंगल भावना और लोक कल्याण की प्रवृत्तियों की स्थापना में भी गांधीवाद जितना अधिक वैज्ञानिक है उतना साम्यवाद नहीं। समाज के अन्दर लोक मंगल की भावना स्थापित करने के लिए साम्यवाद का "ईश्वर विहीन" दर्शन अनुपयुक्त है। जैसा कि ऊपर हम कह चुके हैं कि जिस दर्शन की आधार शिला ही घृणा और प्रतिहिंसा है। वह समाज के अन्दर किसी प्रकार की मंगल भावना का सृजन कर ही नहीं सकता। गांधीवाद का आध्यात्मिक पक्ष इस दृष्टिकोण से अत्यन्त प्रभावशाली है। प्रसिद्ध दार्शनिक हर्बर्ट स्पेंसर ने एक बार कहा था कि—'यदि ईश्वर नहीं है तो हमें एक अन्वेषण द्वारा ईश्वर का आविष्कार करना होगा क्यों कि ईश्वर विहीन समाज की कल्पना तक नहीं की जा सकती।' साम्यवाद की नास्तिकता और भौतिकवाद के अभिशाप ने मानव सभ्यता को यों ही इतने निम्न स्तर पर रख दिया है कि उसे देख कर प्रत्येक विचारशील मनुष्य को भविष्य के प्रति भांति-भांति के सन्देह होने लगते हैं।

साम्यवाद का भौतिक दृष्टिकोण किसी समाज में ऐसे सुन्दर आदर्शों की सृष्टि करने में पूर्णतया असमर्थ है। जिन के अनुकरण के लिए प्रत्येक व्यक्ति का हृदय सहज स्वाभाविक रूप में लालायित हो उठे। कारण स्पष्ट है। उसके अन्दर लोक कल्याण की वह भावना नहीं है जो गांधीवाद के अन्दर आधारभूत रूप में निहित है। साम्यवाद द्वारा प्रस्थापित "श्रमिक एक तंत्र" सब समय अपनी सत्ता की रक्षा के लिए बल और शक्ति पर निर्भर करता है, लोक मंगल की भावना पर नहीं। दूसरी ओर गांधीवाद समाज की आर्थिक समस्याओं का समाधान करने के साथ-साथ उस में एक लोकोत्तर आनंद भावना की सृष्टि भी करता है।

——

— *साहस मनुष्य का सबसे महान् गुण है क्योंकि यही गुण सब गुणों का आधार है।*

— विन्सटन चर्चिल

— *कुंए का पानी समाप्त होने पर ही पानी की कीमत मालूम होती है।*

कांग्रेस शासन में यन्त्रों की मर्यादा

— यादव शर्मा, नागपुर

आधुनिक युग यन्त्रों का युग है। कठिन-से-कठिन और बड़े-से-बड़े काम भी यन्त्रों के कारण आसान और सरल हो गए हैं। पहले जिस काम को पूरा करने के लिए महीनों और वर्षों का समय लगता था आज यन्त्रों के सहयोग से वही काम दिनों या घंटों में पूरे होते दिखाई दे रहे हैं। हवाई जहाज की गति १५०० मील प्रति घंटे तक बढ़ गई है तो रेल का इंजन हजारों मन का वजन खींचने में अकेला ही सफल सिद्ध हुआ है। इसी काम को प्राचीन काल में अश्व शक्ति या पशु शक्ति की मदद से पूरा करने में महीनों का समय और हजारों पशुओं का बल लगता था। प्रसिद्ध अंग्रेज लेखक श्री लूकस ने लिखा है—'यदि किसी मनुष्य के पास यातायात के संपूर्ण साधन उपलब्ध हों और तब भी वह उनका उपयोग न कर अपना सामान कन्धे या पीठ पर ढोते हुए पैदल यात्रा करे तो उसके जैसा मूर्ख संसार में और कौन होगा ? अपने स्वास्थ्य को बनाये रखने या शौक के कारण दस पांच मील पैदल चल लेना एक, दूसरी बात है पर केवल खर्च को बचाने या अपने पुरानी रीति को बनाए रखने के उद्देश्य से रेल, मोटर, यान का उपयोग न कर पीठ पर बोझ लाद कर पैदल जाना बुद्धिमानी नहीं है।' लूकस के इस कथन पर हम विचार करें तो हमें वास्तविकता का अनुभव होता है। इस वास्तविकता के प्रकाश में हमें यह देखना है कि भारत की कांग्रेस सरकार क्या करने जा रही है। यन्त्रों का महत्व उसके पास क्या है और उसका वह कहां तक उपयोग करती है। जो यंत्र उसके पास उपलब्ध हैं उन्हीं का वह उपयोग करना चाहती है या उनमें संवृद्धि और प्रगति का संचार कर आगे बढ़ना चाहती है।

इस दृष्टि से हमें कांग्रेस के पिछले इतिहास, कांग्रेसी कार्यकर्ताओं की विचार धारा, तथा आधुनिक सरकार की रीति, नीति और पद्धति पर विचार करना होगा। जहांतक कांग्रेस के पिछले इतिहास का संबन्ध है हम यह कह सकते हैं कि वह काल संघर्ष में ही बीता है। यदा कदा कांग्रेस ने जो रचनात्मक कार्य किए हैं उससे इस के कार्यकी प्रणाली का अवलोकन करना उचित नहीं। हां, उससे हम उसकी निर्माण योजनाओं का अनुमान लगा सकते हैं, जिससे हमें उसकी आगामी नीति की प्रतिच्छाया का पता लग सकता है।

१९४७ के पहले कांग्रेस के जो कार्य थे उनका आधार गांधीजी के बताये हुए रचनात्मक कार्य के सिद्धांतों पर था। इन सिद्धांतों में यंत्रों की मर्यादा उसी हदतक रखी गई थी, जहां मानवी शक्ति को वह निकम्मी नहीं बना देती। मनुष्य की शक्ति पर्याप्त हो और यन्त्रों का कार्य मनुष्य करने में समर्थ हो तो वहां यंत्रों की आवश्यकता निरर्थक बताई गई है। उदाहरण के लिए चरखे द्वारा सूत कात कर भारतवासी कपड़ा बुन सकते हैं और अपनी कपड़े की जरूरत पूरी कर सकते हैं। ऐसी स्थिति में मिलों तथा कारखानों से सूत कातने तथा कपड़ा बुनने का काम लेना व्यर्थ का माना गया है। जहांतक सिद्धान्तों का प्रश्न है यह बात उचित ही जान पड़ती है। यन्त्रों के द्वारा कपड़ा तैयार करने का काम ले और मनुष्य जो उस काम के लिए समृद्ध हैं उन्हें बेकार बना दें यह अनुचित ही है। यन्त्रों के द्वारा एक घंटे या एक दिन में उतना काम सफलतापूर्वक हो जाता है जितना कि हजारों ही नहीं बल्कि लाखों व्यक्ति एक घंटे या दिन में कर नहीं पाते। ऐसी अवस्था में इस काम से जो मजदूरी श्रमिकों को मिलनी थी वह सब मिल मालिकों और कुछ इन गिने मजदूरों की जेब में ही जायेगी-कुछ तो जरूरत से ज्यादा पायेंगे पर अधिकांश बेकार हो जायेंगे। बेकारी बढ़ने पर देश में अशान्ति लूट मार डकैती चोरी आदि का तांडव नृत्य शुरू हो जाना संभव है। ऐसी अवस्थामें शासन की सारी व्यवस्था ठप्प जायगी। इससे तो यही अच्छा है कि मिलों को बन्द कर दिया जाय और लाखों श्रमिकों को मजदूरी का मौका दिया जाय।

जहां तक प्रारंभिक सिद्धांतों का प्रश्न है। यह उचित ही है पर जब हम प्राचीन एवं आधुनिक युग के अर्थशास्त्रज्ञों और

व्यापार विषयक अर्थ विशारदों के तर्कों का अध्ययन करते हैं तो लगता है कि यह गति धीमी और हानिप्रद है। इन विद्वानों का कहना है कि 'जहां हजारों और लाखों मनुष्यों का काम एक यंत्र के द्वारा हो सकता है वहां मानव मात्र को व्यर्थ का कष्ट देना कहां की बुद्धिमानी है।' मनुष्य जो काम करते हैं उस में सामंजस्य और सौंदर्य नहीं होता। यंत्रों से बनने वाला हर पुर्जा सुन्दर और समान अनुपात का निकलता है। स्विटजरलैंड में बनी सूक्ष्म घडी के पुर्जे खराब हो जाने पर हम यहां खरीद कर उसे ठीक कर सकते हैं। यदि हाथ की बनी घडी हो तो कभी यह बात संभव नहीं है। जो माल यंत्रों से बनता है वह प्रमाण में अधिक होता है और फलतः बाजारों पर अधिकार जमाने में सफल सिद्ध होता है, तथा बढती हुई मांग के कारण जो महंगाई का सामना करना पडता है उस की नौबत नहीं आ पाती; बाजार संतुलित रहता है। यंत्रों पर काम करने से मजदूरों की कार्यकुशलता बढती है और वह अपने काम में निपुण हो जाते हैं। इस निपुणता के गर्भ में अन्य अधिक कुशल व सरल यंत्रों का आविष्कार छुपा होता है। जब काम करते-करते यंत्र की पूर्ण जानकारी श्रमिकों को हो जाती है तो वह अन्य अन्वेषणों द्वारा उस में और निपुणता की बात भी सोचता है। अन्त में वह नई कल का आविष्कार कर लेता है। आज तक का संसार का इतिहास इस बात का साक्षी है। संसार में जितनी भी मशीनों का आविष्कार हुआ है उसका बडा भाग मजदूरों की बुद्धि से ही आविष्कृत है। यह भी एक लाभ यंत्रों के प्रचलन का है कि यंत्रों के कारण मनुष्य को परिश्रम कम होता है, थोडे समय के लिए काम करना पडता है। जो समय शेष बच रहता है उस का सदुपयोग मजदूर आमोद-प्रमोद शिक्षा आदि में या अपनी आय अन्य रीति से बढाने में कर सकता है। आज रशिया, जापान, चीन, अमेरिका आदि उन्नत देशों का इस तरह का अनुभव प्रत्यक्ष उपस्थित है।

एक बात जो यंत्रों के चलाये जाने में खटकती है वह यह कि यंत्रों का नियंत्रण करने वाले पूंजीपति श्रमिकों का शोषण करते हैं। साथ ही कारखानों में काम करने वाले श्रमिकों का जमघट एक जगह अधिक प्रमाण पर हो जाने से उनका स्वास्थ्य भी गिर जाता है। जहां तक पहली बात का संबन्ध है इस का हल यह है कि यंत्रों का संचालन पूंजीपतियों के हाथ में न होकर यदि सरकार के हाथ में हो तो शोषण की बात समाप्त हो जाती है। स्वराज्य आदि का प्रश्न तो तो गौण-सा है, कारण आजकल कानून कायदे ऐसे बन हैं कि जिससे मिल मालिकों या संचालकों को, श्रमिकों की सुविधा का उचित मात्रा में इन्तजाम करना ही पडता है। आज जो रिश्वतखोरी और सिफारिश के कारण इन कानूनों को निर्बल होते हुए देख रहे हैं उसका हल तो इन कानून को कड़ा बनाने तथा इस प्रकार की अनुचित हरकत करने वालों को कड़ी सजा या दण्ड देने से हो सकता है। यह गौण-सी बात है। जहां समाज का नैतिक स्तर बढ जाता है ऊंचा हो जाता है वहां यह बातें स्वतः समाप्त हो जाती हैं। इस लिए इन बातों का महत्व मूल सिद्धांतों में उग्र गुप्त रूप धारण कर रुकावट के लिए नहीं हो सकता।

अर्थशास्त्रज्ञों, उद्योगपतियों और यंत्रकला के विद्वानों के इस तर्क पूर्ण दलील के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि यंत्रों का उपयोग सर्वथा उचित ही है।

अब देखना यह है कि भारत के लिए यह बात कहां तक लाभप्रद हो सकती है और आज की सरकार क्या करने जा रही है।

भारत एक कृषि प्रधान देश है। कल कारखानों का यहां उतना प्रमुत्व नहीं है जितना कि अन्य औद्योगिक देशों में। इस लिए हमें यह देखना है कि भारत के कृषकों की तथा जो १५ प्रतिशत औद्योगिक श्रमिकों की दृष्टि से यंत्रों का उपयोग कहां तक उपयुक्त है।

(शेष पृष्ठ ५० पर)

जीवन का उद्देश यह है कि मनुष्य अपने आप से परिचय प्राप्त करे।

— एमर्सन

प्रेम खसरे की बीमारी जैसा होता है। यह जब जीवन में देर से आता है तो बडा भयंकर होता है।

— लार्ड बायरन

औद्योगीकरण और कांग्रेस

— *"श्रीराम"*, हैदराबाद

भारत की ८० प्रतिशत जनता गांवों में रहने वाली तथा कृषि पर अपना उदरनिर्वाह करने वाली है। यह स्थिति अर्वाचीन काल से चली आरही है। पौराणिक कथाओं और गाथाओं से आगे बढकर प्रत्यक्ष प्रमाणोंपर आधारित इतिहास के पृष्ठों का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि भारतवासियों का मुख्य व्यवसाय कृषि ही रहा है। चन्द्रगुप्त मौर्य के काल से या यूनानियों से सम्पर्क बढने के बाद से विदेशी व्यापार भारत में जारी हुआ और देशवासियों की मांग की पूर्ति के साथ विदेशवासियों की मांग को ध्यान में रखकर उसकी पूर्ति के लिए भारतवासियों ने प्रयत्न प्रारंभ किये। कृषि के साथ–साथ लोगों का ध्यान उद्योग व्यवसाय की ओर भी बढा। जैसे-जैसे विदेशी व्यापार बढता गया देशवासियों को लाभ बढता गया। बढते हुए लाभ ने भारतीय वैश्य जाति का ध्यान उद्योग धन्धों की ओर और अधिक आकृष्ट हुआ और वे उसमें रत रहने लगे। इसका फल यह हुआ कि विदेशों में हमारे उद्योग धन्धों के लिए बाजार का निर्माण हुआ और देशी मजदूर इस मांग की पूर्ति में जुट गये। स्थिति सुधरी, लोगों को लाभ होने लगा। विदेशी पूंजी का लाभ के रूप में देश में आयात होने लगा। देश के श्रमिकों की बेकारी दूर हुई, इनकी कार्य शक्ति बढती गई। कुशलता व निपुणता में भी वृद्धि हुई। धीरे-धीरे सारे एशिया और यूरोप के देशों में भारतीय व्यवसाय की धाक जम गयी।

मुगलों तथा मुसलमानों के आगमन से देशों में युद्ध के बादल मण्डराने लगे लोगों को सैनिक शक्ति का संचय करना पड़ा। व्यवसाय के साथ ही साथ कला की श्री वृद्धि भी हुई। देश में मुसलमानी राज्य की नींव जमती गई और उन्होंने इस देश को अपना देश मानकर इसकी उन्नति में कार्यारंभ किया। सारे देश पर अपनी हुकूमत जमाना उनका ध्येय रहा पर कला साहित्य व व्यवसाय को हानि पहुंचाने का उन्होंने कभी प्रयत्न नहीं किया। तलवार के बलपर राज्य की स्थापना की; कांटे और तराजू के बल पर नहीं। यही कारण था जो इनके काल में व्यापार की वृद्धि ही हुई।

मुसलमानों के बाद मुगलों के काल से भारत में अंग्रेजों का प्रभुत्व बढता गया। अंग्रेजोंने भारत में विजेता बनकर प्रवेश नहीं किया था वे तो व्यापारी बनकर आये थे। उनका उद्देश तो व्यापार को बढाकर अपने देश को मालामाल करना था। व्यापार के लिए जितने भी साधन एकत्रित करने चाहिए उन्होंने उसका प्रयत्न किया। व्यापार की वृद्धि के लिए राज नीति के क्षेत्र में बढने की उन्हें जरूरत महसूस हुई। उन्होंने वह भी किया और धीरे-धीरे कूटनीति से सारे भारत पर शासक के रूप में जमकर यहां के व्यापार क्षेत्र या बाजार पर अपना अधिकार जमा लिया। धीरे-धीरे भारत की आत्मा का स्वर्णावरण उनके हाथ में आ गया जिसे उन्होंने अपने देश को पहुंचा दिया और भारत में केवल मिट्टी की मूतमत्री नंगी आत्मा ही रह गई। जब यह स्थिति अपनी चरम सीमा को पहुंच गई तो यहां के लोगों की आखें खुलीं। परिणाम यह हुआ कि इन्होंने संघर्ष प्रारंभ किया। धीरे-धीरे यह संघर्ष बढता गया और १९४७ की १५ अगस्त को इसका फल स्वतंत्रता के रूप में मिला। देश में कांग्रेस का मंत्रि-मण्डल शासनारूढ हुआ। इस ने अपनी खोई हुई उद्योग शक्ति को फिर से प्राप्त करने के संकल्प किया। देश के प्राचीन उद्योग धन्धों को बढाने के निश्चय की घोषणा की परन्तु केवल निश्चय से क्या होना था? काल चक्र की गति आदिकाल की–सी नहीं है। वह तो तीव्र गति से आगे बढ रही है। प्रत्येक देश इस होड़ में बाजी मारने का प्रयत्न कर रहा है। हर किसी की यही इच्छा है कि संसार के बाजार पर अपना अधिकार हो जाय और उनके देश के उद्योग धन्धों को सफलता मिले। आज जो संसार के नभमण्डल पर युद्ध के बादल छाये हुए हैं उसके जड़ में भी यही बात काम कर रही है कि किसी न तरह अपनी आधिपत्य संसार के देशों पर कायम हो और वहां का बाजार अपनी उद्योग — वस्तुओं के लिए खुल जाय।

(शेष पृष्ठ ४८ पर)

पंच वर्षीय योजना द्वारा राष्ट्रीय विकासमें जन-सहयोग

किसी भी योजना की सफलता के लिए जन-सहयोग और जनमत मुख्य बल है। लोगों में यह विश्वास उत्पन्न होना चाहिए कि राष्ट्रीय योजना का उद्देश्य एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था स्थापित करना है, जिस में आर्थिक असमानता बहुत कम रह जायगी और सब लोगों को उन्नति का समान अवसर प्राप्त होगा।

साथ ही यह कि आवश्यक है कि लोगों को यह योजना अच्छी प्रकार समझाई जाय। समाचार पत्रों, रचनात्मक लेखकों, कलाकारों, रेडियो, फिल्म नाटक आदि से इस में पूरी सहायता मिल सकती है। सरल भाषा में लोगों को यह समझाना आवश्यक होगा कि इस योजना से उनकी आवश्यकताओं की किस प्रकार पूर्ति होगी और उनकी समस्याएं कैसे हल होंगी।

जन-सहयोग प्राप्त करने में प्रशासन अधिकारी बहुत कुछ कार्य कर सकते हैं। उन्हें यह प्रयत्न करना चाहिए कि योजना के प्रत्येक कार्यक्रम को जन साधारण के अधिक से अधिक निकट लाया जाया।

स्वयंसेवक संगठन

जनताका सहयोग प्राप्त करने में स्वयंसेवक संगठन बहुत सहायता कर सकता है। विशेषकर, यह संगठन महिलाओं, युवकों तथा स्कूलों के शिक्षकों के लिए रचनात्मक कार्यका क्षेत्र तैयार कर सकता है। योजना के अन्तर्गत केन्द्रीय सरकार ने स्वयसेवक संगठन के लिए ४ करोड़ रुपया तथा युवक केम्पों तथा विद्यार्थियों को श्रमसेवाओं के लिए १ करोड़ रुपये की सहायता की व्यवस्था की है।

जन सहयोग के लिए राष्ट्रीय समिति

राष्ट्रव्यापी आधार पर जनता का सहयोग संगठित करने के लिए, हालके महिनों में दो संगठन स्थापित हुए हैं, अर्थात जन-सहयोग के लिए समिति तथा भारत सेवक समाज।

राष्ट्रीय मन्त्रणा समिति निम्न कार्य करेगी:—

(१) राष्ट्रीय विकास के सम्बन्ध में जन-सहयोग के कार्यक्रमोंकी समीक्षा और मूल्यांकन।

(२) राष्ट्रीय योजना को कार्यान्वित करने के सम्बन्ध में समय-समय पर, जन सहयोग के विषय में आयोजन कमीशन को मंत्रणा देना।

(३) भारत सेवक समाज के केन्द्रीय बोर्ड की रिपोर्टोंपर विचार करना तथा आवश्यक विषयों के सम्बन्ध में केन्द्रीय बोर्ड को मन्त्रणा देना।

(४) जन-सहयोग के सम्बन्ध में नीति और कार्यक्रम विषयक मामलों पर भारत सेवक समाज के केन्द्रीय बोर्ड को सुझाव देना और सिफारिश करना।

भारत सेवक-समाज

भारत सेवक समाज एक अराजनैतिक संगठन है और इस के उद्देश्य ये हैं।

(१) राष्ट्रीय कुशलता को प्रोत्साहन देने तथा देशकी आर्थिक व्यवस्था का निर्माण करने तथा सामाजिक कल्याण को प्रोत्साहन देने तथा जनता के कष्ट निवारण के उद्देश्य से ऐच्छिक सेवा के क्षेत्र ढूंढना और उन्हें विकसित करना। और

(२) लोगों के खाली समय, बेकार पड़ी शक्ति, तथा अन्य साधनों का सामाजिक तथा आर्थिक क्षेत्रों में उपयोग करना।

राष्ट्रीय योजना के संबंध में, जो लोग जनता के प्रयत्नों को नियोजित करने के लिए अपना समय और शक्ति देना चाहते हैं, उनके लिए भारत सेवक समाज सुअवसर उपस्थित करता है। साथ ही यह समाज वर्तमान स्वयंसेवक संगठन के विकास में भी सहायता करेगा।

(भारत सरकार के पत्र सूचना विभाग से)

(शेष पृष्ठ ४७ से)

भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद जो घरेलू तथा वैदेशिक कठिनाइयां कांग्रेस के सामने आई उन्हें सुलझाने में ही उसके स्वतंत्रता के ५ वर्ष बीत गये पर अब भी पूर्ण रूप से सुलझ नहीं पाई हैं। नित नई बात इन कठिनाइयों को और भी पेचीदा बना रही हैं फिर भी भारत की स्वतंत्र सरकार ने उद्योग धन्धों को आयोजित और उन्नत बनाने का प्रयत्न किया है। गत पांच वर्षों में देश में अनेक कारखाने तथा कत्री मिलें खुल भी गई हैं जो देश को स्वावलंबी बनाने में पूर्णरूपेण तल्लीन है। देश को समुत और समृद्ध बनाने के लिए सरकारने एक पंचवर्षीय योजना भी बनाई है। इस योजना के अनुसार हम भारत के उद्योग-धन्धों को दो भागों में बांट सकते हैं। एक तो यंत्रों द्वारा बड़े प्रमाण पर चलाये जाने वाले उद्योग तथा दूसरे छोटे प्रमाण पर घरेलू उद्योग धन्धों के रूप में चलाने वाले।

इस योजना का कार्य काल १९५२ से १९५६ तक है और इस पर २० अरब से अधिक रुपये व्यय का अनुमान लगाया गया है इससे स्पष्ट है कि कांग्रेस भरसक देश की औद्योगिकरण में प्रयत्न शील हैं।

क्या पंच वर्षीय योजना गांधीवादी है ?

—श्रीमन्नारायण अग्रवाल

योजना आयोजन ने एक पंच-वर्षीय योजना की रूप-रेखा प्रकाशित की है। इस योजना के अनुसार पांच वर्ष में भारत के आर्थिक विकास के लिए १७ अरब ९३ करोड़ रुपये खर्च किये जाएंगे। योजना में कृषि को अधिक महत्व दिया गया है। साथ-ही-साथ सिंचाई तथा विद्युत विकास पर लगभग ४ अरब ५० करोड़ का खर्च बतलाया गया है। यातायात के साधनों के लिए ३ अरब ८८ करोड़ का खर्च आंका गया है। किन्तु शिक्षा, आरोग्य इत्यादि के लिए ५ वर्ष में कुल २ अरब ५४ करोड़ रुपये के खर्च की कल्पना की गई है। पंच-वर्षीय योजना के कुछ अंश तो स्वागत करने योग्य हैं। उदाहरणार्थ आर्थिक तथा राजनैतिक विकेन्द्रीकरण पर जोर दिया गया है और ग्रामोद्योग का महत्व दर्शाया गया है। क्या हम इस योजना को गांधीवादी कह सकते हैं ?

इस प्रश्न का उत्तर नकारात्मक ही हो सकता है। इसका कारण स्पष्ट है। यद्यपि योजना में कृषि और ग्रामोद्योगों पर बड़े उद्योगों की अपेक्षा अधिक जोर दिया गया है तथापि योजना की पार्श्व भूमि गांधीवादी नहीं है। जैसा कि योजना में कहा गया है, उसका मूल भूत सिद्धांत "मिश्रित अर्थशास्त्र" है। मिश्रित का अर्थ यही कि न तो वह तीतर है न बटेर। न पूंजीवाद को चाहती न समाजवाद को। वह दोनों को खुश करना चाहती है जो कि असम्भव है इस तरह की मिश्रित योजना पूंजीवाद तथा समाजवाद के दुर्गुणों को दूर नहीं कर सकती, और उन के गुणों को भी नहीं अपना सकती। इस लिए यह जरूरी है कि हमारी पंच-वर्षीय योजना का ध्येय बिलकुल स्पष्ट हो जाए।

सारी दुनिया में आज दो प्रकार की मुख्य आर्थिक विचारधाराएं हैं। एक तो पूंजीवादी और दूसरी समाजवादी या साम्यवादी। इन दोनों विचारधाराओं के गुण दोष जाहिर है। पूंजीवाद द्वारा मानवता का शोषण हुआ है और साम्यवाद द्वारा मानवता की स्वतन्त्रता का अपहरण। मेरी दृष्टि में तीसरी विचारधारा जो कि इन दोनों वादों के अवगुणों का त्याग करती है और गुणों का संवर्धन करती है वह गांधीवादी विचारधारा ही है। इस विचारधारा का निचोड यही है कि बुनियादी उद्योगों का राष्ट्रीयकरण किया जाय और शेष उद्योगों का सहकारी पद्धति से विकेन्द्रीकरण किया जाए। इसका अर्थ यह होता है कि कपड़ा, तेल, शक्कर आदि कारखाने धीरे-धीरे गृह या ग्राम उद्योगों के रूप में ही चलें, वर्तमान रूप में नहीं। ऐसा किये बिना देश की बेकारी और अर्द्ध बेकारी की समस्याएं कदापि हल नहीं हो सकती। पंच-वर्षीय योजना में इस ओर ध्यान नहीं दिया गया है। योजना में देश की बेकारी को पूर्ण रूप से हल करने की कोशिश नहीं की गई है। बेकारी की समस्या को इस देश में तभी हल किया जा सकता है जब कि हम गांधीवादी आर्थिक विचारधारा का अनुसरण करें। इस प्रकार का अनुसरण इस योजना में नहीं किया गया है, यह स्पष्ट है। जैसा कि ऊपर कहा है। योजना में ग्रामोद्योगों का जिक्र तो किया गया है। सभी योजनाओं में ऐसा होता है क्योंकि ऐसा करना एक फैशन बन गया है। लेकिन असलियत यह है कि योजना में ग्राम उद्योगों का केवल नाम है, उनके असली अर्थ का समावेश नहीं है।

योजना में बड़ी-बड़ी मदों पर सैकड़ों करोड़ रुपयों का खर्च दिखाया गया है। बड़े-बड़े बिजली के कारखाने, बड़े-बड़े नदियों के आयोजन, रेल, सड़क, जहाजों पर खर्च आदि आदि। लेकिन इस तरह की शानदार योजनाओं से इस देश का काम कसे चलेगा ? विदेशों से रुपये मिलने की आशा रखी गई है यह रुपया मिलेगा या नहीं, कर्जदारी के साथ-साथ राजनैतिक गुलामी का प्रवेश धीरे-धीरे हो

(शेष पृष्ठ ५१ पर)

(पृष्ठ ४६ से आगे)

प्राचीन काल से भारत की खेती हल व बैल से ही होती आई है। अब यहविचार किया जारहा है कि हल और बैल की जगह ट्रैक्टर का उपयोग कर कृषि उपयोग को बढाया जाय। सरकार तथा विदेशी रंग में रंगे सभी विद्वानों का यही मत है। परन्तु गांधीवादी विद्वानों का कहना है कि नहीं, भारत को भूमि हल और बैल के जरिये ही जोती जा सकती है यहां ट्रैक्टर और कृषि प्रधान यंत्रों को सफलता असम्भव है।

संसार में चीन को छोड़कर सभी देशों से भारत की जन संख्या अधिक रही है, और है। आजतक हल और बैल के जरिये ही इस विशाल जन संख्या का भरण पोषण हुआ है। कभी अन्न की कमी महसूस नहीं हुई। इतना ही नहीं बल्कि भारत ने इस दिशा में अपनी जरूरत को पूरा करने के साथ-साथ अन्य देशों की भी सहायता की है। इस से यह सिद्ध होता है कि अब भी हम इस दिशा में स्वावलंबी बन सकते हैं। जो आज हमें अपने देश में अनाज की कमी दीख रही है उसका कारण पुरानी पद्धति का दोष न होकर हमारी व्यवस्था का दोष है। आज भारत के दो अरब पशुओं की स्थिति खराब हो गई है। पहले यहां के पशु सशक्त और सबल थे। भारी-से-भारी हल को खींचने की शक्ति उन में थी पर अब वह बात नहीं रही। बैलों की अच्छी नसलों को काट कर मांसहारियों के पेट की आग बुझाने का प्रयत्न हो रहा है। इस से कृषि के लिए जरूरी सबल बैलों की कमी हो रही है। अच्छे बैलों को जन्म देने वाली सुन्दर सुडौल गौओं का भी यही हाल है। भारत के घर-घर में गौ की रक्षा गोमाता के रूप में होती थी, पर इधर कुछ दिनों से वह प्रथा जाती रही है। इस से गोधन की भारी कमी हुई है। गोधन ही भारत के कृषि का आधार है। पर वही आधार इन दिनों टूटता जा रहा है। गांधीवादियों का कहना यही है कि हमारी इस शक्ति को हम यदि फिर से लाने का प्रयत्न करें तो हमें विदेशी साधनों की ओर देखने की जरूरत नहीं पडेगी। भारत में भूमि की कमी नहीं है। साधन भी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। लोग कृषि कला के ज्ञाता हैं, फिर नई व्यवस्था को [illegible] क्यों पैदा करें। ट्रैक्टर का प्रयो[ग] भारत के लिए नया है। भारतीय किसान इस दिशा [में] अभी अनभिज्ञ है। इस के हाथ में नये साधन-जिनक[ा] प्रयोग उसे मालूम नहीं—देने से व्यवस्था सुधरेगी नहीं और खराब हो जायेगी। इस के अलावा एक बात और है वह वह कि भारत की कृषि व्यवस्था ट्रैक्टरों के उपयोग के लिए अनुपयुक्त है। खेत छोटे-छोटे टुकडों में बंटे हुए हैं। उस पर ट्रैक्टर का उपयोग लाभप्रद नहीं हानिप्रद हो जाता है। जहां ट्रैक्टरों का उपयोग होता है वहां जल की सिंचाई का सुन्दर प्रबन्ध होना जरूरी है। भारत में ऐसा प्रबन्ध नहीं है। यहां की खेती नैसर्गिक वर्षा पर ही निर्भर है। कहीं-कहीं कुंएं तथा तालाब बने हुए हैं, पर वे भी व्यवस्थित नहीं हैं। जो हैं उनका उपयोग यन्त्रों के जरिये लेने की अपेक्षा बैलों से लेने में ही लाभ होता है। ऐसी अवस्था में भारत में नये साधन लाभप्रद सिद्ध नहीं हो सकते वे तो प्रयोगात्मक रूप में ही बरते जा सकते हैं।

पाश्चात्य विचारधाराओं का यह तर्क है कि भारत में भूमि की कमी नहीं है। जो व्यवस्था कृषि योग्य भूमि की हुई है वह बदल देने से उत्पादन बढ़ सकता है। छोटे-छोटे खेतों को तोड़कर बडे खेतों का निर्माण किया जाय। लोग इस पक्ष में न हों तो कानून के जरिये ऐसा करवा लिया जाय और भारत की भूमि से ट्रैक्टरों तथा कृषि के आधुनिक साधनों की मदद से अधिक खाद्यान्न का उत्पादन किया जाय। पहले जो व्यवस्था चली आई है, वह उस काल के लिए अच्छी थी जब कि भारत की जनसंख्या कम थी। इधर इस शताब्दी में भारत की जनसंख्या में दूनी वृद्धि हो गई है। जो बैलों और हलों से अन्न की उपज होती थी वह उस काल के लिए काफी हो जाती थी। वर्षा का पानी उतनी उपज के लिए काफी था पर अब स्थिति बदल गई है। जनसंख्या बढ़ गई है। उपजाऊ भाग भारत से अलग हो गये हैं। ब्रह्म देश और पाकिस्तान का उपजाऊ पंजाब भारत से अलग हो गया है। इस लिए अब हमारे लिए जरूरी हो गया है कि पुराना राग अलापने की अपेक्षा आगे की ओर देखें और आधुनिक वैज्ञानिक साधनों का सहारा लेकर कृषि उत्पादन को बढा दें। इस में एक कठिनाई यह है कि कृषि के आधुनिक साधन भी हमारे

यहां उपलब्ध नहीं हैं। उन के लिए हमें विदेशों का सहयोग लेना पड़ता है। यह एक खतरेकी बात है। स्वतन्त्र होकर भी परतन्त्र बनना ठीक नहीं है, परन्तु हम देख रहे हैं कि प्रति वर्ष जो खाद्यान्न सामग्री विदेशों से आरही है वही पैसा इन साधनों के खरीदने में लगा दिया जाय तो इसका लाभ हो सकता है।

जो भी हो, पर इस तरह का विचार करने वाले व्यक्ति ही अधिक हैं। सरकारी कार्यों का संचालन भी इन्हीं के हाथों में है इस लिए इसी विचारधारा को अमल में लाने का प्रयत्न किया जा रहा है। भारत की पंच वर्षीय योजना इन्हीं विचारों से ओत प्रोत है।

कृषि के बाद श्रमिकों और उद्योगों का प्रश्न आता है। भारत कृषि प्रधान देश तो है ही, पर इधर दो सदियों से भारत में उद्योगों की भी वृद्धि हो रही है। पहले भारत के सभी उद्योग, ग्रामोद्योग थे। अब धीरे-धीरे इन उद्योगों का भी यंत्रीकरण हो रहा है। अब तक जिन उद्योगों का विशेष यंत्रीकरण हुआ है उनमें कपड़ा, शक्कर, जूट, चर्मोद्योग आदि विशेष हैं। भारत सरकार इस दिशा में और आगे बढ़ना चाहती है। पंच वर्षीय योजना में इसी के आसार हमें नजर आते हैं।

अन्त में यही कहा जा सकता है कि भारत में यंत्रों का उपयोग पहले बहुत ही कम था वह भी घरेलू उद्योग धन्धों तक ही सीमित था। पर अब उसकी मर्यादा बढ़ रही है, हर बात में यंत्र ही हस्तकला का स्थान ले रहे हैं। भारत की जनतंत्र सरकार का झुकाव भी इसी दिशा में है। इस लिए हम कह सकते हैं कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में यंत्रों की मर्यादा का क्षेत्र विस्तृत हो गया है यंत्रों की मर्यादा बड़े-बड़े उद्योगों तक ही सीमित न रह कर कृषि में तथा छोटे-छोटे घरेलू उद्योग धन्धों में भी समावेश होता जा रहा है और सरकार की नीति भी इसकी पोषक है।

(पृष्ठ ४९ का शेष)

हो सकता है। ऐसा होना सर्वथा अनुचित होगा। इसलिए पंचवर्षीय योजना न केवल गांधीवादी आदर्शों के विरुद्ध है बल्कि इसमें किसी भी प्रकार या आदर्श साफ तौर पर दर्शाया नहीं गया है। क्या आशा की जाए कि योजना को अंतिम रूप देते समय भावी भारत के चित्र को अधिक स्पष्ट करने की चेष्टा की जायगी।

(साप्ताहिक हिन्दुस्तान से)

भारतीय राष्ट्रीयता के मौलिक तत्व

— गोपाल कृष्ण "लाल"

सरसरी निगाहसे देखने वाला कोई भी विदेशी यात्री यह समझेगा कि हिन्दुस्तानियों को इस समय किसी चीज से इतनी दिलचस्पी नहीं जितनी कि राज नीति से। जो अधिक गंभीर विषय युगोंसे हमारा ध्यान अपनी ओर आकर्षित करते आये हैं उन्हें हम इस समय लग भग भूल चुके हैं। लोगों में यह आम धारणा दिखाई देती है कि दीर्घ पुरातन काल में हम जीवन को जिस सांस्कृतिक दृष्टि से देखते थे वास्तव में वह वैसा नहीं है बल्कि वह कहीं कठोर और निर्दय है। मैं इससे इनकार नहीं करता कि राज नीति के प्रति इस दिलचस्पी के लिए काफी वजह है। मात्र शारीरिक आवश्यकताओं के लिए संघर्ष पर जो जोर इस समय दिया जा रहा है, वह इससे पहले भारत में कभी नहीं किया था। बर्नार्ड शा कहते हैं कि 'गुलामी से मुल्क की वही कैफियत हो जाती है जो किसी मनुष्यकी एक भयानक फोडे से।' गुलामी मनुष्य को दूसरी बात सोचने ही नहीं देती। वह हर हकीम को चाहे वह नीमहकीम ही क्यों न हो, अपनी नब्ज दिखाने के लिए तैयार रहता है। पश्चिम से जो हमें शिक्षा मिली है वही इस राजनैतिक उथल पुथल के लिए जिम्मेवार है। इस शिक्षाने हमारे अन्दर एक सामाजिक धड़ाके का-सा काम किया है। उसने शक्ति पर मानो एक चिनगारी रख दी है। यूनान के प्राचीन नगर और गणतंत्रों की राजनैतिक विचारधारा ने हमें स्वाधीन नागरिकता और न्याय सामाजिक व्यवस्था की शिक्षा दी है। हमने यह सीखा है कि ऐसा हर शासन जो शासितों की इच्छा के विना शासन चलता है, गुलामी का ही दूसरा नाम है। ठीक ठीक शासन चलाना राज्य का उतना लक्ष्य नहीं जितना कि लोगोंको शिक्षित करना। राज का उद्देश्य स्वशासन या जनशासन के लिए लोगों को शिक्षा और अवसर देना, होना चाहिए। यदि इस्तेमाल में न आये तो मांस पेशियाँ भी गल जाती हैं। फैलाये न जाए तो स्नायुतन्त सख्त हो जाते हैं। नये विचारों की नब्री झांकी पाकर मानव के हृदय में उत्सुकता और उत्तेजना जाग उठती है। वह हर रुकावट पर दांत काटने लगता है। भारत की इस विद्रोह भावना को देखकर अंग्रेजों का हृदय गर्व से भर जाना चाहिए। वह उनके लिए खुश होने और प्रशंसा की वस्तु है, निन्दा की नहीं। हम अपने आप को कायम रखने के लिए आजादी चाहते हैं, ताकि संसार की भावी उन्नति में हम अपना अलग और खास हिस्सा ले सकें। अगर हम अपना व्यक्तित्व खो बैठें तो हमारे लिए यह सब करना असंभव होगा। अपनी आत्मा को अंग्रेजी आत्मा या रूसी आत्मा बनाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। हम केवल उसी चीज से फायदा उठा सकते हैं जिसे हम अपने रंग में रंग कर अपने व्यक्तित्व का अंश बना सके।

हमारे बहुत से नेताओं के दिमाग में भी अंग्रेजी हुकूमत का विरोध और अंग्रेजी संस्थाओं से प्रेम ये दोनों चिजें एक बडे अजीब तरीके से मिली हुई हैं। उन्हें अपने देश को पश्चिमी सांचे में ढालने की इच्छा ज्यादा मालूम होती है। ये इसे एक दूसरा यूरोप बना देना चाहते हैं। पर जब कभी वे पश्चिमी संस्थाओं की टिका-टिप्पणी करते हैं तो उसमें कार्लमार्क्स और टालसटाय, रोम्या रोला और बरट्रेण्ड रसल जैसे पश्चिमीय विचारकों के विचारों की ही ध्वनि आती है। हम कभी-कभी बड़े जोरों के साथ पश्चिम का दम भरने लगते हैं, कभी उतने ही जोरों के साथ हिन्दुस्तानियत की आवाज बुलन्द करते हैं। हमारी तबीयतें बदलती रहती हैं। हम एक परिवर्तन के युग में पैदा हुए हैं और उसी रह में रह रहे हैं। हमारे दिलों पर भविष्य के लिए अनिश्चितता का बोझ है। हमारे दिमागों में गड़बड़ और अव्यवस्था है। जो संग्राम चुपचाप मनुष्यों की आत्माओं के अन्दर होते रहते हैं वे उन दिखावटी संग्राम के मुकाबले जो राजनैतिक रंगभूमि पर होते रहते हैं, ज्यादा महत्व के होते हैं। हमारे विश्व विद्यालयों का काम यह होना चाहिए था कि वे इन बुनियादी समस्याओं पर लोगों के विचारों को ठीक और संगठित करते, लेकिन दुर्भाग्य वश हमारे देश के

विश्वविद्यालय उदासीनता और अकर्मण्यता के रोग में फंसे हैं।

सामाजिक और सांस्कृतिक मामलों में भी हालत इससे ज्यादा अच्छी नहीं है। मालूम होता है कि हम परस्पर विरोधी हालतों के बीच में भूलते रहते हैं। कभी हम गर्व से भर जाते हैं और कभी हम अपने आप को तुच्छ समझने लगते हैं। हम बराबर मुड़-मुड़ कर यह देखते रहते हैं कि दूसरे क्या कर रहे हैं। हमें यह चिन्ता सताती रहती है कि दूसरे हमें देख कर हंसने न लगें। एक तरफ तो हम अपने राष्ट्रीय शरीर के नासूरों पर शरमाते रहते हैं और दूसरी तरफ हमें यह सूझ ही नहीं पाता कि इन नासूरों को कैसे दूर किया जाय। वह सनातन मर्यादा जो हमारी रक्षा कर सकती थी, चीथड़े हो चुकी है। उस में सैकड़ों पेवन्द लग गये हैं। वह क्रांतिकारी जो चारों तरफ की ठोस परिस्थिति को नजरअन्दाज करके केवल बुद्धि से अपना रास्ता तय करना चाहता हो हमारे सारे भूतकाल को एकदम मिटा देना चाहता है। प्राचीनता का पुजारी भी उसी दर्जे तक सच्चे इतिहास और जीवित घटनाओं को नजरअन्दाज करके वर्तमान काल को साफ मिटा देना चाहता है। हमारे अन्दर की एकता टुकड़े टुकड़े हो रही है। हमारी सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक शक्तियों की एकाग्रता टूट गई है। विश्व-विद्यालय की उस तालीम से हमें क्या फायदा जो हमारी उस एकता और एकाग्रता को फिर से कायम न कर सके। नये और पुराने का सामंजस्य न करा सके।

पुराने जमाने का राग बढ़-बढ़ कर अलापना आसान है। लेकिन अगर हम उन विचारों के सनातन जाल में सन्तुष्ट पड़े रहे जो निर्जीव रूढ़ियां बन कर रह गये हैं, तो ये हमारे वतन की एक असंदिग्ध पहचान होगी। जीवन के बहाव में भूतकाल वर्तमान नहीं है और न हो सकता है। उन्नति की पहचान ही नवीनता और साहस है। पतन की पहचान रूढ़ियों से चिपटे रहना है। पुराने जमाने के लोगों की बुद्धि चाहे कितनी भी पूर्ण रही हो जिन नाम, रूपों और रूढ़ियों के अन्दर इस बुद्धि ने अपने को प्रकट किया वे अन्तिम नहीं हो सकतीं। इन्हें तोड़कर नये सिरे से गढ़ने की जरूरत है। हम अपने जीवन की आत्मा को, उसकी आंतरिक भावना को, फिर से जगाना चाहिए और उसे नये उद्देश्यों को पूरा करने में लगाना चाहिए। किसी भी कौम की आत्मा का पता इससे नहीं चलता कि वह कौम पुराने जमाने में क्या थी और न इस से चलता है कि वह इस समय क्या है। जब हम किसी भी कौम के इतिहास को ध्यान से पढ़ते हैं तो हमें कोई न कोई चीज गहरी और बुनियादी उस इतिहास में मिलती है, वही चीज है जो नई-नई शक्लें और नये-नये नाम व रूप धारण करती है, यद्यपि वह आत्मा किसी नाम रूप में भी अपने पूर्ण विकास को प्राप्त नहीं हो, अपने को पूरी तरह प्रकट नहीं कर पाती। कौम की आत्मा को केवल इस निरंतर बढ़ते हुए आदर्श के शब्दों में ही बयान किया जा सकता है। यही कौम के दिलों और दिमागों में काम करने वाला वह असल उसूल, वह तत्व है जो उस कौम की किसी भी समय की अवस्था विशेष में बहुत अधूरा समझा जा सकता है। लेकिन अगर हम उस कौम के मुख्तलिफ जमानों की हालतों का तरतीबवार एक दूसरे के बाद रख कर अध्ययन करें तो उस तत्व को साफ-साफ देख सकते हैं। जीवन का रहस्य उत्तरोत्तर उन्नति और परिवर्तन में है। भारत में खास जोर इसी बात पर दिया गया है कि मनुष्य और विश्व, पिण्ड और ब्रह्मांड दोनों के अन्दर जो एक आत्मा काम कर रही है, वही जीवन है सत्य है और हमें जहां कहीं भी मिल सके उसी सत्य की खोज करनी चाहिए! भारत ने अपने हाथ हमेशा इसी जीवन के उन्नत करने, और विकसित करने की तरफ बढ़ाये हैं। अनावश्यक नाम रूपों और रूढ़ियों के जिस गोरखधन्धे ने हमें जकड़ रखा है वह तभी टूट सकता है जब हम अपनी स्थायी आत्मा को फिर से साक्षात करलें। जितना कूड़ा कर्कट सदियों में हमारे पास जमा हो गया है और पीढ़ी दर पीढ़ी चला आरहा है उसे जला डालना होगा। केवल उसे जलाकर ही हम अपनी स्थायी और अटल संपत्ति को कायम रख सकते हैं। इन्हीं मौलिक तत्वों की बिना पर हम राष्ट्रीयता को वास्तविक भारतीय रूप दे सकते हैं।

———

कांग्रेस के इतिहास की झलक

— बालकृष्ण लाहोटी, 'कृष्ण' हैदराबाद

भारत में अंग्रेजों के पैर जमा लेने से भारतीयों के दिल में खलबली मचनी शुरू हुई। अंग्रेज अपने शासन को सुदृढ़ बनाने के प्रयत्न में थे और भारतीय उन से मुक्ति पाने के। भारतीयों की मनोवृत्तियों को बदलने के लिए अंग्रेज कूटनीतिज्ञों ने अंग्रेजी शिक्षा की नींव भारत में डाली और उनके हृदयों में संस्कृत आदि भाषाओं के प्रति उदासीनता उत्पन्न की। हर प्रकार से अर्थ संग्रह को प्रधानता दी गई। इसके लिए अन्याय, असत्यता, क्रूरता, एवं बर्बरता का प्रयोग किया। विदेशों के इन बर्बर व्यवहारों और अत्याचारों से देश में असन्तोष व अशांति की लहर फैल गई। जहां-तहां भारतीयों का अपमान भी किया गया।

इस अशांत काल में लोगों में जाग्रति उत्पन्न करने तथा धीर बन्धाने के लिए स्वामी रामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द आदि महापुरुषों ने जन्म लिया। उन्होंने नैतिक और राजनैतिक, जागरण और उत्थान के विभिन्न प्रकार से लोगों में भावनाएं उत्पन्न कीं, फलतः विविध प्रकार के आंदोलन भारत को विदेशियों के प्रभुत्व से मुक्त करने के लिए चलाए गए। शासक और शासित में संघर्ष चला।

स्वातन्त्र्य संग्राम को सुसंगठित बनाने के लिए सन् १८८५ ई. में राष्ट्रीयता के उपासकों ने कांग्रेस को जन्म दिया। कांग्रेस के तत्कालिन संगठन में न्याय और सत्य में प्रेम और विश्वास रखने वाले लार्ड डफरन ने अपना समुचित सहयोग दिया। इसका पहला अधिवेशन स्व. श्री. उमेशचन्द्र बनर्जी के अध्यक्षता में हुआ, और भारतीयों के हित सम्बन्धी कई प्रस्ताव पास हुए। उस समय के कांग्रेस के अग्रणी सर्वश्री दादा भाईनौरोजी, फिरोजशाह मेहता, आपटे, सेन, आनन्द चार्लू, गोपाल गणेश आदि महानुभाव थे। कांग्रेस को सभी प्रांतों से खुलकर सहयोग मिला। बड़े-बड़े विद्वानों, धनवानों और व्यापारियों ने कांग्रेस के आन्दोलन को सफल बनाने में पूर्णरूपेण दिलचस्पी ली।

सन् १८८५ से १९१५ तक यानी तीस वर्ष में कांग्रेस ने अनेक प्रस्ताव पास किए और तत्कालिन सरकार से उन पर अमल करने का अनुरोध किया किंतु सरकारने इन प्रस्तावों पर कोई विशेष ध्यान न दिया बल्कि उपेक्षा ही की। तदनन्तर स्व. तिलक ने कांग्रेस का पुनर्संगठन किया और उस में एक नई स्फूर्ति पैदा की। उन्होंने देशवासियों को मंत्र पढाया कि—"स्वतन्त्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है।" इस महामन्त्र ने जादू का काम किया और सारे देश में राष्ट्रीय चेतना का संचार होने लगा। अब अंग्रेजों की आंखें खुलीं। उन्होंने तिलक को देश सेवा से विमुख करने के लिए बडे प्रयत्न किए, प्रलोभन भी दिए किन्तु वाहरे! लोकमान्य तिलक! और इसे हम देशका सौभाग्य ही कहेंगे कि अंग्रेजों के प्रलोभनों व प्रयत्नों का कोई प्रभाव न हुआ। उल्टे आन्दोलन में दृढता और संगठन बढा।

लोकमान्य तिलक की मृत्यु के पश्चात् सन् १९२० में कांग्रेस का नेतृत्व महात्मा गांधी के हाथ में आया। महात्माजी ने 'अस्पृश्यता निवारण' और 'हिन्दू मुस्लिम एकता' को कांग्रेस का प्रधान ध्येय बनाया, मुसलमानों ने बडी संख्या में कांग्रेस संगठन में भाग लेना प्रारंभ किया। १९२०-२१ के "खिलाफत आन्दोलन" में मुसलमानोंने सक्रिय सहयोग दिया। बढती हुई हिन्दू-मुस्लिम एकता को अंग्रेजों ने अपने शासन को खोखला करने वाला घुन समझ कर हिन्दू-मुस्लिमों में विषाद उत्पन्न करने का ढंग सोंचा। नाना प्रकार से हिन्दू और मुसलमानों में द्वेष और वैमनस्यता उत्पन्न कराई। स्थान-स्थान पर हिन्दु मुस्लिमों के कौमी दंगे हुए। जातीयता का जोर बढा और राष्ट्रीयता का अब तक जो बोलबाला था वह मंदा पड़ गया। मुस्लिम लीग और हिन्दू महासभा जैसी जातीय संस्थाओं ने आन्दोलन की प्रगति पर ठेस मारी।

साम्प्रदायिकता के बढते हुए प्रभाव को दबाने के लिए महात्माजी ने जनसाधारण का ध्यान देश की बढ़ती हुई दरिद्रता और देश के आर्थिक शोषण की ओर खींचना

प्रारंभ किया। "स्वदेशी" आंदोलन चलाया। विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करने की प्रेरणा लोगों में फूंकी। अब मोडरेट और लिबरल पार्टी के नेताओं ने भी कांग्रेस की नीति को समझा और सहयोग दिया। स्व. श्री मोतीलाल नेहरू तथा विट्ठल भाई पटेल जैसे नरपुंगवों ने कांग्रेस को अपनाया और उसकी तन मन धन जन से सेवा करना शुरू की।

देश में छूताछूत का बोलबाला था। लगभग छः करोड़ व्यक्ति अछूत जाति कहलाती थी। राष्ट्र की बढ़ती हुई स्वातंत्र्य भावना और राष्ट्रीय एकता ने जोर पकड़ा कांग्रेस का बल दिन प्रति दिन बढ़ता गया। अंग्रेज सरकार ने अपनी जड़े खोखली होती देखीं। कांग्रेस को निर्बल बनाने और राष्ट्रीयता की भावना को कमजोर करने के अभिप्राय से मुस्लिम-लीग जैसी सांप्रदायिक संस्थाओं को कांग्रेस के विरोध में उकसाया और खड़ा किया। मिथ्या प्रचार एवं धर्माडम्बरों से अधिकांश अछूत मुसलमान होने को उद्यत हो गए। गांधीजी ने खतरे का अन्दाज़ा लगाया। अछूतों के उद्धार का बीड़ा उठाया उनको नई संज्ञा दी। हरि का जन 'हरिजन' बनाया। अछूतों के प्रसिद्ध नेता डाक्टर अंबेडकर से हरिजनों के हितों के लिए पूना में एक संधिपर हस्ताक्षर किए। जो पूना पैक्ट के नाम से प्रसिद्ध है। इस तरह गांधीजी ने लाखों ही नहीं वरन् करोड़ों अछूतों को म्लेच्छ होने से बचा कर राष्ट्रीय शक्ति को ह्रास होने से बचा लिया।

गांधीजी ने जनान्दोलन को सुदृढ़, सुसंगठित, सुव्यवस्थित और सुशक्तिवान बनाने के लिए नवयोजनाएं बनाई। तकली, चर्खा, खादी आदि के प्रचार और प्रसार की ओर कांग्रेस को लगाना शुरू किया। फल अच्छा निकला। देशवासियों ने तकली और चर्खा को अपनाया। सूत काता, खादी बुनी और पहिनी। खादी के बाने ने लोगों में एक अजीब स्फूर्ति पैदा की। महत्वाकांक्षा और पूर्ण स्वातंत्र्य की भावना भर दी।

१९३० का आन्दोलन छिड़ा। गांधीजी ने दो अप्रेल को डाण्डी मार्च किया। फिर क्या था सारे देश में नमक बनाने की धूम मच गई। नमक बनाने वाले गिरफ्तार किए गए। हजारों की संख्या में लोग जेल गए। भारत की प्रायः सभी जेलें आन्दोलनकारियों से खचाखच भर गईं। आन्दोलन जितना ही दबाया गया उतना ही प्रबल हुआ। सरकार के दानवी दमनचक्र और अमानुषिक अत्याचारों ने स्वतंत्रता की भावना को और भी प्रभावित किया; प्रावल्य दिया। अन्त में सरकार को झुकना ही पड़ा। सन् १९३१ में 'गांधी इरविन' पैक्ट हुआ। देशवासियों को अनेकों सुविधायें दी गईं और निकट भविष्य में स्वराज्य देने का आश्वासन दिया गया।

सन् १९३५ में भारत का नया विधान पास हुआ। सारे देश में नए चुनाव किए गए। चुनाव १९३७ के पूर्वार्द्ध में हुए। जनता ने काँग्रेस में अपनी श्रद्धा और दृढ़ता का खुलकर परिचय दिया। परिणाम औसतन् ८० प्रतिशत 'सीटें'– स्थान कांग्रेस को मिले। जुलाई १९३७ में कांग्रेस ने पदासीन होना स्वीकार किया और भारत के नौ प्रांतों में कांग्रेसी मन्त्रि-मंडल बन गए। पदारूढ़ होते ही कांग्रेस ने देश की दरिद्रता को दूर करने और देशवासियों के जीवन स्तर को उन्नत करने की योजनाएं बनाना आरंभ कर दिया। कच्ची योजनाओं को कार्यान्वित भी किया।

सन् १९३९ में संसार व्यापी प्रलयंकरी युद्ध यूरोप में छिड़ गया। बेचारे पोलैण्ड को बलि का बकरा बनाया गया। भारत को भी उसकी इच्छा के विरुद्ध युद्ध में खींचा गया। प्रतिकार स्वरूप कांग्रेस मन्त्रिमण्डलों ने राजीनामा दे दिया। प्रांतों में गवर्नरी शासन चलने लगा। सरकार की अन्धा-धुन्धी फिर शुरू हुई। अब तक भारतीयों में राजनैतिक जागृति बखूबी आ चुकी थी। वह अपने आपको समझ और पहिचान चुके थे। फिर स्वराज्य सीढ़ी पर चढ़ने का संयोग भी पा चुके थे। वे अब इस अन्धा-धुन्धी और एकतंत्रीय शासन को कैसे बरदास्त करते! जब आपसी ढंग से कोई समाधान न हुआ तो कांग्रेस ने पुनरान्दोलन का प्रस्ताव पास किया। ९ अगस्त १९४२ को 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव पास कर अंग्रेजी सरकार को चुनौती दी।

संसार व्यापी युद्ध भीषण से भीषणतर होता जा रहा था। ध्वंसका अट्टहास उग्रतर होता जा रहा था। जर्मनी सेनाएं आगे बढ़ रही थीं। इसी समय भारत के नौ निहालों ने भारत छोड़ो का नारा बुलन्द किया। नेताजी सुभासचंद्रबोस

ने आई. एन ए. का निर्माण किया। जापानी सेनायें भारत की सीमापर मंडराने लगीं। अंग्रेजों के सामने भीषण संकट था। विषम परिस्थितियाँ थीं। समय की विभीषिका को देखकर वे कांग्रेस से एक बार फिर समझौता करने को झुके — बड़े नेताओं को बुलाया गया और समझौते की चर्चायें की गईं। कांग्रेसने अपने 'पूर्ण स्वतंत्रता' और 'भारत छोड़ो' के निश्चय पर दृढ़ रह कर किसी भी समझौते पर हस्ताक्षर करने से इन्कार कर दिया।

अन्त में सर स्टिफर्ड क्रीप्स का मिशन भारत आया। फल वही ढाक के तीन पात— इससे सारे देश में फिर से असंतोष और अशांति की लहर दौड़ गई। अब तक 'विश्वव्यापी' युद्ध की इतिश्री हो चुकी थी। मित्रराष्ट्र विजयी थे। युद्धोत्तर समस्यायें मित्र राष्ट्रों के सम्मुख भीषण रूप धारण किए खड़ी थीं। आर्थिक कठिनाइयां बढ़ रही थीं। लोग त्रस्त और संकटस्थ थे। अंग्रेजों को विजय का मद था। भारतीयों की मनो भावनाओं और महत्वाकांक्षाओं को पुनः कुचलने का प्रयत्न किया यह अब सह्य न हो सका। नौ सेना के नाविकों ने विद्रोह का झंडा खडा किया; पुलिस ने असहयोग किया; फौजियों ने अपनी अशान्ति और असंतोष का परिचय दिया; सरकार के पैर लड़खड़ा गए। शासन का सूत्र ढीला पड़ गया।

लार्ड माउन्टबेटन जो उस समय भारत के गवर्नर जनरल थे। बड़े दूरदर्शी, कूटनीतिज्ञ और उदारवृत्ति के थे। नहीं चाहते थे कि जन साधारण की अशांति एक उग्र क्रांति का रूप ले ले। स्थिति को और गम्भीर न होने देना ही उन्होंने हितकर समझा। अपनी चतुरता और कूट नीति से ब्रिटेन और भारत में १९४७ में सम्मानपूर्ण समझौता करा दिया। १५ अगस्त १९४७ को भारत एक स्वतंत्र देश घोषित कर दिया गया। समझौता तो हुआ किन्तु भारत का विभाजन भी हो गया। एक राष्ट्र के दो राष्ट्र बन गए— हिन्दुस्थान और पाकिस्तान। समझौते के अन्तर्गत भारतीयों की अस्थायी मंत्रि मंडल केन्द्रीय सरकार में बना और 'कान्स्टीटुएंट एसेम्बली' का निर्माण किया गया। इस एसेम्बली ने भारत का नया विधान बनाया, जो २६ जनवरी १९५० से लागू हुआ। विधानानुसार भारत एक 'जनतंत्र राष्ट्र' बन गया और आज भारत के सभी प्रदेशों में कांग्रेसीय मंत्रि मंडल काम कर रहा है।

कांग्रेस और जनता

— जवाहरलाल नेहरू

स्पष्ट है कि हमें मध्यम वर्गीय नेतृत्व चाहिए, किन्तु इस नेतृत्व को भी जन साधारण का अधिकाधिक ध्यान रखना होगा और उसीसे शक्ति और प्रेरणा प्राप्त करनी होगी। कांग्रेस जैसा की उसका दावा है, केवल जनता के लिए ही नहीं बल्कि जनता की भी होनी चाहिए तभी वह सच्चे अर्थ में जनता के लिए बन सकती है। मुझे प्रतीत होता है कि हमारी वर्तमान दुर्बलता का कारण मध्यम वर्ग की कमजोरी और सर्व साधारण से हमारी दूरी है। हमारी राजनीति और हमारे सिद्धांत मध्यम वर्ग के दृष्टिकोण द्वारा अधिक नियन्त्रित होते हैं, जनता के बहुमत की आवश्यकताओं द्वारा कम। जो समस्याएं हमें दुःख देती हैं वे भी मध्यम वर्गीय समस्याएं हैं। उदाहरणार्थ सांप्रदायिक समस्या, जिसका आम जनता के लिए कोई अर्थ नहीं है।

मेरी सम्मति में इस के तीन कारण हैं। पहला यह कि पिछले १५ वर्षों के ऐतिहासिक विकास के अनुकूल हम अपने आप को नहीं बना सके। दूसरे जनता को प्रभावित करने वाली आर्थिक समस्याएं तीव्र होती जा रही हैं और तीसरे बढ़ती हुई जन जागृति कांग्रेस के माध्यम से पर्याप्त मात्रा में प्रकट नहीं हो रही है। १९२० और उस के बाद में ऐसा नहीं था, तब कांग्रेस और साधारण जनता के बीच घनिष्ट संबन्ध था और जनता की आवश्यकताएं एवं आकांक्षाएं कांग्रेस द्वारा प्रकट होती थीं। अब ये ही आवश्यकताएं और आकांक्षाएं अधिक ठोस रूप में सामने आगई हैं। उनका कांग्रेस के अन्य वर्गों ने स्वागत नहीं किया और जनता तथा कांग्रेस का संबन्ध शिथिल हो गया। यद्यपि यह बात खेद जनक है तथापि यह विकास की ही द्योतक है और उसपर विलाप करने के बजाय हमें ऐसे तौर तरीके ढूंढने चाहिए जिन से कांग्रेस में जन भावना जागृत हो सके। जन साधारण का प्रतिनिधित्व करने का मध्यम वर्ग का दावा १९२० में भले ही कुछ सार्थक रहा हो, किन्तु आज वह सर्वथा सत्य नहीं, यद्यपि मध्यम वर्ग और सामान्य जनता के बीच अनेक समानताएं हैं।

(लखनऊ में दिए भाषण से)

कांग्रेस सरकार की भूमि सम्बन्धी नीति

सम्भवतः भू-स्वामित्व और खेती, राष्ट्रीय विकास के लिए आधारभूत प्रश्न है। भूमि-समस्याके समाधानपर ही आर्थिक और सामाजिक संगठनका ढंग निर्भर रहेगा।

एक ओर जहां यह आवश्यक है कि पंच-वर्षीय योजना के अंतर्गत कृषि सम्बन्धी लक्ष्यों की पूर्ति हो वहां दूसरी ओर यह भी वांछनीय है कि भूमि सम्बन्धी नीति से सम्पत्ति और आयकी असमानतायें कम हों, शोषण समाप्त हो, काश्तकार और मजूरों के हितों की रक्षा हो और ग्राम्य जनता को विभिन्न श्रेणियों के लिए स्थितियों और अवसरों में समानता हो। योजना का उद्देश इन लक्ष्यों की पूर्ति करना है।

योजना में भूमि सुधार के सुझावोंमें (१) बीच के लोगों, (२) बडे मालिकों, (३) छोटे और मध्य श्रेणी के मालिकों, (४) गैर- मोरूसी काश्तकारों और (५) भूमि-हीन मजदूरों का ध्यान रखा गया है। बीच के लोगों के अधिकार समाप्त कर दिये गये हैं या किये जा रहे हैं। जो क्षेत्र पहले जमींदारी व्यवस्था में थे उन के प्रशासन की ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यक्ता है।

इस समय भू-स्वामित्व और खेती सम्बन्धी उपलब्ध आंकडे बिल्कुल अपूर्ण और दोषपूर्ण हैं इसलिए १९५३ में भारत के सब राज्यों में एक विशेष गणना किये जाने का सुझाव दिया गया है।

भू-स्वामित्व

भू-स्वामित्व के विषय में कमीशनने मुख्यतः (१) भू-स्वामी की उच्चतम सीमा, निर्धारित करने, (२) खुदकाश्त करने वालों के लिए सुविधाएं देने, (३) कुशलता के एक निश्चित स्तर तक खेती कायम रखने के सम्बन्ध में कानून बनाने और (४) छोटे और मध्य वित्त के भू स्वामियों द्वारा सहकारिता के आधार पर खेती किये जाने को, प्रोत्साहन देने की सिफारिशें की हैं।

उच्चतम सीमा-निर्धारण

कमीशन ने यह भी शिफारिश की है कि मालगुजारी की रकम, भूमि की कूल उपज अथवा भूमि के पट्टे के मूल्य को ध्यान में रखते हुए भू-स्वामित्व की उच्चतम सीमा निर्धारित कर दी जानी चाहिए। भूमिके मालिक के परिवार के सदस्यों की संख्या का भी ध्यान रखना चाहिए। यह सीमा प्रत्येक राज्यों को अपनी स्थितियों के आधार पर ही निर्धारित करनी होगी।

बडे भूस्वामी

बडे भू स्वामियों की भूमिके सम्बन्ध में कमीशन की शिफारिश है कि जहां उन की भूमि गैर मौरूसी काश्तकारों द्वारा जोती जाती है; वहां साधारण नीति यह होना चाहिये कि निर्धारित सीमा से अधिक भूमि का स्वामी काश्तकार ही हो जाय।

जहां भूमि स्वयं बडे स्वामियों के प्रबन्ध में है वहां इन सिद्धांतों का पालन किया जाना चाहिए:—

(१) भू स्वामित्व की सीमा निर्धारित होनी चाहिये। यह सीमा प्रत्येक राज्य द्वारा निर्धारित की जानी चाहिए। १९५३ में भूस्वामित्व और खेती संबन्धी जो गणना होगी उस से यह निर्माण करने के लिये आवश्यक आंकडे मिल जाएंगे।

(२) किसी भू-स्वामी द्वारा की जाने वाली खेती और प्रबन्ध व्यवस्था का मान कानून द्वारा निर्धारित कुशलता के मान के अनुरूप होना चाहिए।

इस सम्बन्ध में प्रत्येक राज्य को आवश्यक कानून बनाने चाहिए।

जहां एक व्यक्ति के अधिकार में बड़ी भूमि है वहां उस को दो भागों में बांट दिया जाना चाहिए—एक वह, जिस के टुकडे करने से उपज में कमी हो और दूसरा वह, जिस में ऐसा न हो। दूसरे प्रकार की भूमि को प्रबन्ध-व्यवस्था कानून के अनुसार किसी उचित अधिकारी द्वारा अपने हाथ में ले ली जानी चाहिए और मुख्यतः सहकारिता के आधार पर उस की खेती की व्यवस्था की जानी चाहिए।

छोटे तथा मध्य श्रेणी के भू-स्वामी

छोटे और मध्य श्रेणी के भूस्वामियों की यथासंभव सहकारिता-समितियों के रूप में संगठित होकर उपज बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

प्रत्येक राज्य को अपने यहां छोटे किसानों के खेतों की चकबन्दी का कार्यक्रम बनाना चाहिए और ऐसी सीमा निर्धारित करनी चाहिए जिस के बाद फिर खेतों की और छोटे टुकड़ों में न बांटा जा सके।

काश्तकार

स्वयं खेती के लिए भूमि लेने का अधिकार केवल उन्हीं स्वामियों को दिया जाना चाहिए, जो खुद या अपने परिवा-वार के लोगों की सहायता से खेती करना चाहते हों। इस सम्बन्ध में एक अवधी निश्चित कर दी जानी चाहिए, उदाहरणार्थ ५ साल की इस अवधि में स्वामी स्वयं खेती के लिए भूमि ले सकता है। ऐसा न करने पर, काश्तकार को वह भूमि खरीद करने का अधिकार मिलना चाहिए, जिसे वह जोतता है।

भूमि संबंधी व्यवस्था, सहकारिताकी ऐसी प्रणालीपर करना आवश्यक है, ताकि गांवों के भूमि संबन्धी तथा अन्य साधनों से उत्पादन विविध रूप में बढाया जा सके और उन सभी लोगों को काम मिल सके जो काम करने के योग्य हैं और काम करना चाहते हैं।

सहकारी ग्राम-प्रबन्ध

सहकारी खेती और अन्य साधारण सहकारी कार्रवाइयों के विस्तार से गांव के सामाजिक तथा आर्थिक जीवन के विकास में काफी सहायता मिलेगी और छोटे तथा मध्यम श्रेणी के किसानों को लाभ पहुंचेगा।... ग्राम-पंचायतों का भाग महत्वपूर्ण है, क्योंकि कई समस्याएं हैं जो पंचायतों के सिवा और कोई कर नहीं सकता। उदाहरणार्थ, काश्तकारी कानून को अमल में लाना, बिना-भूमि के काश्तकारों के हितों की रक्षा, छोटे स्वामियों के लिए कम-से-कम खेती की व्यवस्था, बडे भूस्वामियों से ली गयी भूमि के वितरण के लिए लोगों का चुनाव और गांवोंकी परती भूमि को हल के नीचे लाना आदि ऐसी ही चीजें हैं।...

सरकारी ग्राम-प्रबन्ध का मुख्य उद्देश्य यह है कि गांव की भूमि तथा अन्य साधनों का संघटन तथा विकास गांवों के सारे लोगों के हित की दृष्टि से किया जा सके।

योजना में केन्द्रीय सरकार द्वारा एक "भूमि-सुधार संघटना" की स्थापना करने की भी सिफारिश की गयी है। यह संघटन भूमि-सुधार कार्यक्रमों के मूल्यांकन, भूमि संबंधी समस्याओं की जांच, सहकारी खेती के क्षेत्र में अर्जित अनुभवों के अध्ययन आदि, अनेक बातों से संबन्धित होगा।

सिंचाई और बिजली

कमीशन की सिंचाई और बिजली सम्बन्धी शिफारिशों में जमीन के ऊपर के तथा जमीन के नीचे से पानी का उपयोग शामिल है। उस विषय के कार्यक्रम में बहु-उद्देश्यीय सिंचाई योजनाओं, सिंचाई की छोटी-मोटी योजनाओं, नल-कूपों (ट्यूब वेल) के निर्माण की व्यवस्था की गयी है; और पन-बिजली के विषय में, जल साधनों से बिजली पैदा करने की योजनाएं बनायी गयी हैं।

सिंचाई व बिजली की जो नयी योजनाएं निर्माण अथवा जांच-पड़ताल की अवस्था में हैं या केवल विचाराधीन ही हैं, उन के परीक्षण से विदित होता है कि देश भर की इन सारी योजनाओं के निर्माण में लगभग २००० करोड़ रुपया खर्च होगा, और इन से ४०० से ४५० लाख एकड़ अधिक भूमि की सिंचाई हो सकेगी और लगभग ७० लाख किलोवाट बिजली अतिरिक्त रूप से पैदा की जा सकेगी। कमीशन ने कहा है—"हमें पूरा विश्वास है कि इतने विशाल कार्यक्रम को अमल में लाकर ही और खेती-बाड़ी के तरीकों को सुधार ने और बडे-बडे उद्योगों के अतिरिक्त गांवों के तथा छोटे मोटे उद्योग-धन्धों की उन्नति के भरपुर उपायों द्वारा ही देश में जीवन-यापन का स्तर सही अर्थों में ऊंचा उठाया जा सकता है।

यद्यपि इन सिलसिले में हमें अपनी अधिकतम आवश्यकताओं का स्पष्ट ज्ञान रखना चाहिए, किन्तु उपलब्ध साधनों का ख्याल करते हुए हमारे लिए न्यूनतम कार्यक्रम बनाना ही जरूरी है। सिंचाई की बहुतसी योजनाएं पहले से ही हाथ में ली जा चुकी हैं। इसलिए, प्रथम पंच-वर्षीय योजना में मुख्यतः उन्हीं योजनाओं को पूरा करने की

व्यवस्था की गयी है, जिन के निर्माण का कार्य १९५१ में चालू था। ३१ मार्च, १९५१ तक; इन योजनाओं पर १५३ करोड़ रुपये की रकम पहले ही खर्च को जा चुकी है।

नयी योजनाएं

जहां तक नयी योजनाओं का सम्बन्ध है, कमीशन का कहना है कि योजनाकाल के पहले तीन वर्षों में इन में से किसी का भी काम हाथ में लेना सम्भव नहीं है। किन्तु योजना-काल के अंतिम वर्षों में इन में से कुछ का काम हाथ में लेना आवश्यक है, क्यों कि इस काम के छेडे बिना उन टेक्निकल तथा अन्य साधनों का पूरी तरह से उपयोग * * कर सकना सम्भव न हो सकेगा, जो कभी वर्षों के प्रयास से जुटाये जा सकेंगे। इस लिए, योजना काल में जो नयी योजनाएं अब सम्मिलित की गयी हैं, उन पर यद्यपि कुल ४० करोड़ रुपया ही खर्च होगा, इस प्रथम पंच-वर्षीय योजना में उन्हें सम्मिलित कर लेने से विकास का कार्य पहली योजना की समाप्ति के बाद द्वितीय पंच-वर्षीय योजना में भी जारी रखा जा सकेगा।

यह नयी योजनाएं कोसी, कोयना, कृष्णा, चम्बल और रिहंद है। जिन अध्यायों को हाथ में लिया जाएगा उनका तथा अन्य बातों का ब्योरा इस प्रकार है—

योजना का नाम	सेवित क्षेत्र	कुल अनुमानित खर्च (लाख रु. में)	अंतिम लाभ, सिंचाई हजार एकड़ों में	बिजली प्रतिष्ठापित किलोवाट में
कोसी (अध्याय-१)	बिहार तथा नेपाल	६६,००	२,६२०	४० बाढ़ों की रोकथाम भी
कोयना (अध्याय-१)	बम्बई	३३,००	—	२४०
कृष्णा	मद्रास तथा हैदराबाद	प्राप्त नहीं	—	प्राप्त नहीं
चंबल (अध्याय-१)	मध्य भारत तथा राजस्थान	३३,७५	१,२००	८०
रिहन्द	उत्तर प्रदेश	३५,००	—	२४०

इन योजनाओं का कुल खर्च २०० करोड़ रुपये से ऊपर बैठेगा, जिस में से ४० करोड़ रुपया प्रथम पंच-वर्षीय योजना-काल में व्यय करना संभव हो सकता है।

मौजूदा योजनाएं

पंच-वर्षीय योजना की रूप-रेखा के प्रारूप में, मौजूदा योजनाओं पर ४५० करोड़ रु. खर्च करने का विचार था। किन्तु रिपोर्ट में बताया गया है कि कुछेक योजनाओं में निर्माण का खर्च बढ़ जाने तथा अन्य कारणों से योजना-काल में ५० करोड़ रुपया और खर्च करने की जरूरत होगी।

फल

हिसाब लगा कर देखा गया है कि योजना काल के अंतिम वर्ष में विचाराधीन बहु-उद्देशीय योजनाओं के फल-स्वरूप ८५ लाख एकड़ और भूमि की सिंचाई की जा सकेगी तथा १०.८ लाख किलोवाट बिजली अधिक तैयार होगी। इन योजनाओं के पूरी हो जाने तथा पूर्ण विकास के बाद उनसे कुल १६९ लाख एकड़ अधिक भूमि सींची जा सकेगी तथा १४.६ लाख किलोवाट बिजली अधिक तैयार होगी।

छोटी-मोटी योजनाएं

कमीशन ने छोटी-मोटी योजनाओं के क्षेत्र को काफी बढ़ाने की सिफारिश की है। रूप-रेखा के प्रारूप में कृषि के विकास के लिए सिंचाई की छोटी योजनाओं पर ४७ करोड़ रु. खर्च का अनुमान लगाया गया था और १९५५-५६ तक उनसे ७९ लाख एकड़ भूमि की सिंचाई का ख्याल

किया गया था। कमीशन ने अब सिफारिश की है कि छोटी तथा मध्यम श्रेणी की योजनाओं पर ३० करोड़ रुपया और खर्च किया जाना चाहिए।

राष्ट्रीय नीति

सिंचाई और बिजली के मामलों में कमीशन ने अखिल-भारतीय आधार पर एक राष्ट्रीय नीति का अनुसरण करने की आवश्यकता पर जोर दिया है।

पानी की दरों के सम्बन्ध में कमीशन का सुझाव है कि जहां सिंचाओं के लिये पानी की मांग साल-ब साल घटा-बढ़ा करती है और उपलब्ध जल-राशि का पूरा-पूरा सदुपयोग सदैव नहीं हो पाता, वहां सिंचाओं कर [सेस] लगाना न्यायोचित होगा। जहां पानी की दरें बहुत साल पहले निश्चित की गयी थीं और तब की अपेक्षा अब वहां पैदा होने वाली फसलों का मूल्य काफी बढ़ा गया है, वहां के पानी की दरों को बढ़ा देना उचित है। वास्तव में सिंचित फसलों की पैदावार के मूल्य के आधार पर पानी की दरों को एक विसर्प अनुमाप [स्लाइडिंग स्केल] के आधार पर निश्चित करने की प्रथा अच्छी साबित हो सकती है।

सिंचाई कोश

कमीशन का यह भी सुझाव है कि हर राज्य सरकार को एक "सिंचाओं विकास [उपाय व साधन] कोश" खोलना चाहिए। इस कोश में हर साल साधारण राजस्व में से या ऋणों से या बचाओं गयी रकमों से एक निश्चित राशि डालते रहना चाहिए और साथ ही, यदि केन्द्रीय सरकार से कोओ ऋण या अनुदान प्राप्त हो तो उसे और स्थिति सुधार कर से या पानी की बढ़ाओं गयी दरों आदि से वसूल रकमें भी इसमें डालनी चाहिए। यह कोश कभी समाप्त न होना चाहिए और सिंचाओं व बिजली योजनाओं का सारा खर्च इसीसे चलाया जाना चाहिए। इस प्रकार से पूरी जांच पड़ताल के बाद अन्य योजनाएं भी हाथमें ली जा सकेंगी और एक निश्चित कार्यक्रम के अनुसार उन्हें क्रियान्वित किया जा सकेगा।

सिंचाओं या बिजली की नयी योजनाओं के लिए कमीशन ने एक विशेष कार्य प्रणाली का सुझाव दिया है। इसके अनुसार इन नवीन योजनाओं को दी जाने वाली प्राथमिकताएं अखिल भारतीय आधार पर एक विशेष समिति द्वारा प्रदान की जानी चाहिए। समिति के लोगों का उल्लेख भी रिपोर्ट में किया गया है।

स्थिति सुधार कर

कमीशन का सुझाव है कि उन सभी क्षेत्रों में जहां सिंचाओं की व्यवस्था उपलब्ध की जाय, एक स्थिति सुधार कर लगाया जाना चाहिए। सिंचाओं की सुविधाओं से बाजारू मूल्य में जो वृद्धि हो, उसका एक भाग इस कर के रूप में लिया जाना चाहिए। कमीशन का मत है, कि इस अनर्जित वृद्धि में सरकार का हिस्सा बंटाना उचित ही है।

——

ज्ञातव्य बातें

१. १९५१ में भारतीय विमानोंने ५,००,००० से अधिक यात्रियों को स्थानांतरित किया और कुल २ करोड़ ६० लाख मील की उड़ान की।

२. पशुओं की निर्यात से, जिस में घोड़े, गोजातीय पशु, बकरियां और भेड़ें सम्मिलित हैं, भारत को १९५१—५२ में ४९.८९ लाख रु. की आमदनी हुओ।

३. पंच-वर्षीय योजना के कुल खर्च के २० प्रतिशत से भी अधिक के बराबर रकम सामाजिक सेवाओं पर व्यय की जायगी। इस मद के लिये ४२४.८१ करोड़ रुपया निर्धारित है।

४. ३१ मार्च, १९५२ को भारत में कुल ६,२६३ लिये स्टेशन थे।

५. इस साल जिन छः किसानों को "कृषि पण्डित" के प्रमाण-पत्र मिलेंगे, उन में से दो बम्बओ के; दो पंजाब के लुधियाना जिले के और एक-एक उत्तर प्रदेश और कुर्ग का है।

६. भारत में औसतन प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष १४ किलोवाट बिजली का खर्च है।

(भारत सरकार के पत्र सूचना विभाग से)

कांग्रेस सरकार की नौ सैनिक शक्ति

— लेफ्टिनेंट-कमांडर

नया वर्ष भारतीय नौ सैना के लिए ऐतिहासिक महत्व का होगा क्यों कि इसमें नौ सैनिक उड्डयन के विकास की योजनाएं कार्य रूप में परिणत की जाएंगी। कोचीन में पहले ही एक नौ सैनिक विमान संचालन के लिए आवश्यक स्थलीय व्यवस्था वहां पुरी हो गई है। उड्डयन के लिए कर्मचारियों को ट्रेनिंग दी गयी है और कुछ सप्ताहों में ही नौ सैनिक अफसरों द्वारा चालित और नौ सैनिक कर्मचारियों द्वारा प्रबन्धित नौ सैनिक विमान जल और स्थल पर उड़ने लगेंगे।

नौ सैनिक उड्डयन व्यवस्था का कार्य हमारे नौ सैनिक जहाजों से जाने आने का रास्ता खुला रखकर और शत्रु का आने जाने का मार्ग अवरूद्ध करके नौ सेना के एक अविच्छिन्न अंग के रूप में अतिरिक्त शक्ति पहुंचाना है। तट के निकट के समुद्री क्षेत्रों में युद्ध के समय नौ सैनिक विमान और विमान सेना के विमान मिल कर नौ सैना को सहायता पहुंचाते हैं, किन्तु तट से दूर उन समुद्री क्षेत्रों में जहां तटों पर स्थित विमान नहीं पहुंच पाते, वहां विमान वाहक जहाजों पर स्थित केवल नौ सैनिक विमान ही सहायता पहुंचाते हैं।

नौ सेनिक-विमानों का उद्देश्य

विमान वाहक जहाजों पर ले जाये गये विमानों का असली उद्देश्य शत्रु के विमानों, जहाजों और पनडुब्बियों आदि का निशाना बना कर उसकी शक्ति को छिन्न-भिन्न करना और अपनी नौ सैनिक प्रभुता स्थापित करना है। कभी-कभी नौ सेनिक विमानों को ऐसे कार्यों में भी लगाया जाता है जिनको सम्पन्न करने का उन पर विशेष दायित्व रहता है, उदाहरण के तौर पर किसी दूरस्थ विदेशी तट पर आक्रमण करती हुई अपनी सैना को तब तक वैमानिक सहायता पहुंचाना जब तक वहां शत्रु के हवाई अड्डे अपने कब्जे में आकर अपनी विमान सेना के विमानों के उपयोग में न आने लगें या विमान से शत्रु के ऐसे स्थानों के चित्र लेना जो समुद्री या स्थलीय युद्ध के लिए लाभपूर्ण सिद्ध हों।

वास्तव में शत्रु के नौ सेनिक बेड़े की तहस नहस करना ही नौ सैनाका मुख्य लक्ष्य होता है किन्तु उसके लिए यह आवश्यक है कि शत्रु की पनडुब्बियां और विमान भी रोके जा सकें और उनका प्रभाव नष्ट कर दिया जाए। इतना सब कर देने पर भी यह याद रखना चाहिए कि जब तक शत्रु का नौ सैनिक बेड़ा ठीक हालत में बचा रहेगा, चाहे वह बंदरगाह में कहीं छिपा हो या समुद्र में कहीं हो, तब तक समुद्र मार्ग से आना जाना खतरे से खाली नहीं हो सकता।

भारतीय नौसैना इन्हीं सब दायित्वों की पूरी तरह निभाने के लिए अपने को समर्थ बना रही है। लेकिन नौसैनिक शक्ति में आत्म-भरीत होने के लिये अपने को समर्थ बना रही है। लेकिन नौसैनिक शक्ति में आत्म-भरित होने के विषय में यह आशा करना भूल होगी कि यह सब शीघ्रता-से सम्मान किया जा सकता है। यह ध्यान में रखना चाहिये कि केवल अनथक परिश्रम और भारी खर्च से ही यह प्रगति की जा सकती है।

उज्ज्वल भविष्य

नौ सैनिक उड्डयन व्यवस्था की स्थापना भविष्य में नौ सैनिक शक्ति में आत्म-भरित होने के दृढ़ निश्चय का प्रतीक है। नये वर्ष में नौ सैना के पास पहला नौ सैनिक विमान यूनिट होगा। नौ सैनिक हवाई शक्ति के विकास के लिए कार्य आरंभ हो चुका है। निस्संदेह आगामी वर्षों में और अधिक यूनिटों का निर्माण होगा और अंततोगत्वा विमान वाहक जहाज भी उपलब्ध कियें जाएंगे और इस प्रकार हमारी नौ सैनिक शक्ति और प्रतिष्ठा में प्रर्याप्त वृद्धि हो सकेगी।

ट्रेनिंग

प्रत्येक देश की आर्थिक स्थिति के अनुसार भयंकर विनाशकारी शस्त्रास्त्रों का निर्माण करना तो आसान है,

किन्तु उन के संचालन के लिए लोगों को आवश्यक ट्रेनिंग देकर तैयार करने में पर्याप्त समय और धैर्य की आवश्यकता है। इसलिए, आगामी वर्षों में भारतीय नौसेना कर्मचारियों की आवश्यक ट्रेनिंग देने की ओर विशेष ध्यान देगी। अनुभव से ज्ञात होता है कि साधारणतया उड्डयन सम्बन्धी कार्यों के लिए और विशेष रूप से विमान चलाने के लिए प्रत्येक कर्मचारी में कुछ विशेष व्यक्तिगत योग्यता की आवश्यकता है। विमान चालक का मस्तिष्क और शरीर संतुलित होना चाहिए, उसे वैज्ञानिक शिक्षा प्राप्त होना चाहिए और उसका मस्तिष्क और शरीर स्वस्थ होनी चाहिए; उसे विशेष रूपसे साहसी होना चाहिए किन्तु दुस्साहसी नहीं और कर्तव्य के प्रति निष्ठावान होना चाहिए। स्थलीय-कार्य संचालन के लिए कर्मचारियों पर विशेष दायित्व है क्योंकि उन्हीं की कार्य कुशलता पर विमान चालकों का जीवन और हवाई युद्ध की सफलता निर्भर है। इसलिए नौ सेना का कर्तव्य है कि वह देश के युवकों में से उचित योग्यता वालों का चुनाव करें और उन्हें आवश्यक ट्रेनिंग दे कर कार्य के योग्य बनायें। भारतदेने की सुविधाएं उपलब्ध हैं और आवश्यकता पड़ने पर विदेशी साधनों का भी उपयोग किया जायगा।

अगर तुम्हारे कुछ विश्वास है तो उनका लाभ मुझे भी उठाने दो; अपने संदेह अपने तक ही सीमित रखो, क्योंकि मुझे भी अपने संदेह कम नहीं हैं।

— गेटे

किसी आदमी को अपनी गलतियां मान लेने में शरम नहीं आनी चाहिए, क्योंकि गलती मान लेना एक तरह से यह कहने के समान है कि वह कल से आज अधिक बुद्धिमान हो गया है।

— पोप

चींटी से अच्छा उपदेश और कोई नहीं देता, लेकिन चींटी कुछ बोलती नहीं।

— फ्रेंकिलन

श्री सम्पादकजी,

'दक्षिण भारती' हमारे प्रकाशन द्वारा संचालित 'भक्त भारत वाचनालय' में प्रारंभ से ही रुचि से ही पढ़ी जाती है। पत्रिका से दक्षिण भारत के अनेक ज्ञातव्य विषयों का पता चलता है और 'एक साथ पांच भाषाएं सीखिए' तथा 'संसार समाचार' आदि स्तंभों से भी पर्याप्त ज्ञान मिलता है। पत्रिका में हम एक सुरुचि पूर्ण स्वस्थ धार्मिक स्तम्भ की कल्पना अवश्य करते हैं, संपादक गण ध्यान देंगे।

— सम्पादक "भक्त भारत", वृन्दावन

श्री सम्पादकजी,

'दक्षिण भारती' का प्रयास समस्त बातों को छू सके ऐसा दीख पड़ता है। साहित्यिक सामग्री एवं जीवन की व्यावहारिक बातों से यह लबालब ही नजर आती है। सामग्री का चयन बड़ी सतर्कता, कुशलता तथा कलात्मक ढंग से होता है, प्रत्येक हिन्दी जानने वाले के लिए उपयोगी पत्र है।

— "निर्मम", इन्दौर

श्री सम्पादकजी,

'दक्षिण भारती' का दिसंबर अंक प्राप्त हुआ। अहिंदी प्रांत के वातावरण में भी आप इतनी उत्तम साहित्यिक उपयोगी पत्रिका निकाल रहे हैं, यह प्रशंसनीय और श्लाघ्य है। इस में भविष्यादि लेख देने का प्रयत्न करें।

— काशीनाथ शर्मा, शास्त्री खिरकिया, (म. प्र.)

श्री संपादकजी,

'दक्षिण भारती' पढ़कर बड़ा आनन्द हुआ। सर्व दृष्टियों से दक्षिण भारती परिपूर्ण है और विशेषकर 'पांच भाषाएं' का प्रयत्न बहुत उपयुक्त और सुन्दर है। आपसे प्रार्थना है कि इसे पुस्तक रूप में छपा हो तो एक प्रति अन्यथा आज तक के अंक भेज दें।

— मोहनलाल शर्मा, जालना

भारत की प्राचीन एवं अर्वाचीन संस्कृति में स्त्रियों का एक विशिष्ट स्थान था वे केवल गृहणी ही न थी, वे थी भरणी और तरणी भी। पुरुषों के लिए वे सहचरी सहधर्मिणी सुहृत और मन्त्रणी भी थी। देश और समाज में पुरुषों की यशस्वी, अन्नत और आदर्शवान बनाने का श्रेय अधिकांशतः स्त्रियों को ही रहा है कवि ने ठीक ही कहा है—

नारी से नर होते हैं नारी नर की खान
नारी से उत्पन भए ध्रुव प्रह्लाद समान

किन्तु भारत में विदेशियों के आक्रमण और प्रवेश ने स्थिति बदल दी। स्त्रियों को श्रेष्ठता, महानता, गौरव गरिमा आदि का शनैः! शनैः! ह्रास होने लगा-- समय और परिस्थितियों ने नारी को सहचरी के बदले गृहचरी बना दिया। रानी दासी बन गई! स्त्री का क्षेत्र केवल गृहस्थी और चूल्हे चक्की तक ही रह गया। सन्तानोत्पत्ति उसका लालन पालन और पति के आमोद प्रमोद किंवा उसकी वासनाओं की पूर्ति करना ही उसका एक मात्र कर्तव्य हो गया— जैसे किसी भी गाडी के दो चक्के होते हैं और उन्हीं चक्कों पर गाड़ी चलती है वैसे ही किसी भी देश और समाज को बनाने चलाने उन्नत उठाने में स्त्री और पुरुष दो चक्कों का काम करते हैं इस प्रकार एक चक्के के टूट जाने या निकल जाने पर गाडी का चलना बन्द हो जाता है उसी प्रकार स्त्री या पुरुष रूपी एक चक्के के निकल जाने से देश की दशा हो जाती। देश पतन के गर्त में पड़ने लगता है गुलामी की जंजीरें उसको जकड़ने लगती हैं।

भारत की भी यही दशा हुई पहले म्लेच्छों का राज हुआ यवन सभ्यता का असर हुआ और बाद में अंग्रेजों का राज्य और अंग्रेजी का प्रचार और प्रसार! मुसलमानों के अनैतिक व्यवहार और अत्याचार ने स्त्रियों को पर्दे की बीबी बना दिया वह कहीं की भी न रही। शिक्षा दीक्षा आदि से वंचित-सी हो गई उनकी भावी सन्तान भी वैसी ही हुई, लोग दब्बू और गुलाम बन गए।

अंग्रेजों के बढ़ते हुए अत्याचार, अनाचार शोषण और

कांग्रेस और महिलाएं

चन्द्रकला देवी

विभाजन की नातिसे तंग आकर भारतीयोंने गुलामी के जूए को अपने कन्धे से उतार फेंकने की ठानी, आन्दोलन शुरू किए—कांग्रेस ने राष्ट्रीयता की भावना जागृत की—देशमें स्वतंत्रतांकी लड़ाई छिड़ गई - कई संघर्ष हुए। हरबार ही संघर्ष कारियों को परास्त होना पडा।

लोकमान्य तिलक की मृत्यु के पश्चात् कांग्रेस की बाग-डोर महात्मा गान्धी के हाथ में आई - वे युग के निर्माता थे, बुद्धि, विवेक और दूर दर्शिता के साक्षात अवतार। वे अंग्रेजों से दक्षिण अफ्रीका में मोर्चा ले चुके थे। अंग्रेजों की कूटनीति और शासन पद्धति से चिर परिचित हो चुके थे। देश की सामयिक परिस्थितियों का भी उन्हें सूक्ष्म ज्ञान था। संत्रस्त, सुसुप्त और परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़े हुए देशवासियों को उबार ने और उभार ने के लिए उनने योजनाएं बनाई।

गान्धीजी ने अपनी योजनाओं में स्त्रियों को सर्व प्रथम स्थान दिया। उनका कहना था कि स्त्री ही पुरुष को जगा सकती है उसकी खोई हुई शक्ति को फिर से दिला सकती। वही शक्ति है। वही देवी है! गान्धीजी ने स्त्रियों को उनके प्राचीन स्तर पर उठाने और पहुंचाने का प्रयास किया सन् १९२८ के कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में स्त्रियों के लिए निम्न प्रस्ताव पास कराया।

'स्त्रियों की अयोग्यताओं को दूर करने के लिए प्रयत्न किया जायगा और उन्हें राष्ट्र निर्माण के कार्य में उचित भाग लेने के लिए प्रोत्साहित और आमन्त्रित किया जायगा।'

इस प्रस्ताव के बाद से कांग्रेस ने स्त्रियों में नव चेतना और नव स्फूर्ति फूंकना प्रारंभ किया। स्त्रियों ने भी कांग्रेस में सक्रिय भाग लेना शुरू किया। सन् १९३० व १९४२ के आन्दोलनों में स्त्रियों ने प्रचुर प्रमाण में स्वतन्त्रता के संग्राम में पुरुषों को सहयोग दिया हजारों की संख्या में जेल गईं— लाठी और डंडों के प्रहार सहे। बलिदान देकर अपनी दृढ़ता और कर्मठता का अद्भुत परिचय दिया— भारत की स्वतंत्रता में स्त्रियों ने जो किया वह सचमुच बड़े गर्व और गौरव की बात है। आज स्वतंत्र भारत में भारत के विधानानुसार, स्त्रियां भी पुरुषों की भांति स्वतन्त्र हैं। उन्हें समानाधिकार प्राप्त हैं।

संवाद

कांग्रेस क्या है ?

— बालकृष्ण लाहोटी "कृष्ण"

गालय्या— ग्रामीण
शंकरलाल— ,,
रामप्पा— ग्रामीण
मोहन— नागरिक

गालैया—यह कांग्रेस क्या है भाई ?

रामप्पा—गोलकुंडे के पास बड़ी तैयारियां हो रही है।

शंकर—सुनते हैं वहां सारे भारत से लोग आएँगे।

गालैया—हां भाई, मैं ने भी सुना है कि बड़ा भारी जलसा होगा मेला लगेगा।

रामप्पा—इस मेले में क्या क्या होगा ?

शंकर— तुम्हें मालूम नहीं ?

गालैया—मालूम क्या होना है। हम तो इतना जानते हैं कि बड़ी २ दुकानें लगेंगी। बहुत हुआ तो घोडे बैल आदि बिकने के लिए आएंगे।

शंकर—भाई यह मेला ऐसा वैसा, हमारे देहातों जैसा नहीं होगा। यहां तो शहरों का ठाट बाट होगा। बिजली, टप्पा और तार घर सभी होंगे। ५ ६ दिन के लिए नया शहर ही बस जायगा।

गालैया—इस शहर का नाम क्या होगा ?

शंकर—नानल नगर होगा। इस में कई पंडाल होंगे। कैम्प होंगे प्रदर्शनी होगी। होटलें होंगी, मिठाइयों की दुकानें लगेंगी, बढ़िया पान के स्टाल खुलेंगे।

रामप्पा—यह सर्वोदय प्रदर्शिनी क्या है ?

शंकर—कहते हैं कि गान्धीजी के रचनात्मक कार्य प्रणाली के साधनों को बतलाने वाली प्रदर्शिनी, सर्वोदय प्रदर्शिनी कहलाती है।

गालैया—हमारे दक्षिण भारत में पहले भी कभी ऐसा मेला हुआ था ?

मोहन—हां क्यों नहीं। मद्रास में कई बार हुआ और १९२३ में कोकोनाडा में और १९२४ में बेलगाँव में कांग्रेस की महाधिवेशन हुआ था। तुम अगर कांग्रेस का इतिहास संक्षिप्त में ही सुन लो तो समज जावोगे।

गालैया—तो कहो न भाई, हम बिना लिखे पढ़ों के लिए इससे बढ़कर कौनसा सौभाग्य होगा। हाँ तो यह भी बतलाइये कि कांग्रेस कहाँ कैसे और कब पैदा हुई और क्यों पैदा हुई ?

मोहन—अच्छा तो शांतता से सुनो।

रामप्पा शंकरराव गालैया—तीनों मिलकर एक साथ हां हां कहो भाई !

मोहन—कांग्रेस का जन्म बम्बई शहर में देशकी गुलामी दूर करने या कहो कि अंग्रेजों को देश के बाहर निकाल भेजने के लिए हुआ था।

गालैया—कब हुआ था।

मोहन—सन् १८८५ ई. में।

रामप्पा— यह भी तो बताओ कि क्यों हुआ था।

मोहन— अंग्रेजों को लालच ने घेर रक्खा था। वे अपने देश इंग्लेंड में भारतवासियों को लूट-लूट कर धन भेजते थे। अपने आपको ऊंचा और भारतीयों को काला, नीच समझने लगे थे। देश में दरिद्रता फैलने लगी थी देशवासी दुखी और बेचैन हो रहे थे।

गालैया—और क्या क्या कारण थे ?

मोहन—और भी सैकडों कारण थे।

रामप्पा— अच्छा भाई। हमारा स्वराज होगया अंग्रेज चले गए परन्तु अंग्रेजी भाषा क्यों नहीं गई ?

मोहन—यही तो कूट नीति थी। संसार में अंग्रेजों की कूट नीति प्रसिद्ध है। भारत का दुर्भाग्य था जो मेकालेने अंग्रेजी पढ़ाने की नींव डाली। यदि उस समय स्थानीय भाषा रख दी जाती तो आज राज भाषा का और ही रूप होता। फिर भी हमारी कांग्रेस के प्रयत्नों से अब १० वर्ष से अंग्रेजी का स्थान हिन्दी ले लेगी। बड़े२ पंडित इस कार्य में कर रहे हैं।

गालैया—पहले हमारे देश में संस्कृत जानने वाले विद्वान कहलाते थे परंतु अब तो हर एक पंडित कहलाने लगा।

मोहन—ऐसा नहीं है जिस में योग्यता हो, चाहे किसी भाषा का विद्वान क्यों न हो, पण्डित कहला सकता है। पण्डित के माने ही विद्वान है।

गालैया—तो कांग्रेस को बने ६७ वर्ष हो गए फिर इस का अधिवेशन ५८ वां ही कैसे हो रहा है?

मोहन—सन् १८८५ से १९२९ तक बराबर अधिवेशन होते रहे—१९३० में आन्दोलन छिड़ गया इस लिए अधिवेशन न हुआ बाद में १९४२ के आन्दोलन की गिरफ्तारियां और अंग्रेजी सरकार की कड़ी कार्रवाइयों के कारण कभी अधिवेशन नहीं हो सके।

रामप्पा—अच्छा इस में कौन २ आएंगे?

मोहन—भारतवर्ष के सभी प्रान्तों के मन्त्री, प्रधान मंत्री, कांग्रेसी नेता व कार्यकर्ता आदि सब लोग आयेंगे।

रामप्पा—और यह सब क्या करेंगे?

मोहन—भाओ यार तुम तो बड़े भोंदू मालूम होते हो। क्या करेंगे। हमारे देश की समस्याओं के बारे में सोचेंगे और नयी २ योजनाओं पर विचार करेंगे अपना निर्णय देंगे।

गालैया—वाह, खूब आज सबसे बड़ी समस्या अन्न की है क्या अनाज सस्ता कर देंगे? और महंगाओ को मिटा देंगे।

मोहन—बस तुम तो जब सोचते हो अपने मतलब की सोचते हो।

रामप्पा—सब अपने २ मतलब की ही सोचते हैं।

शंकर—(बीच ही में) हम तो सुनते थे स्वराज होते ही गोवध बन्द हो जायगा सभी उपयोगी पशुओं की रक्षा की जायगी। परन्तु ....

मोहन—होगी, होगी।

शंकर—अच्छाजी कचहरियों में जो सरकारी वेतन खाकर भी चट्टे-बट्टे चलते हैं वह भी कम होंगे या नहीं?

गालैया—और कर (टैक्स) भी जो दिन दिन बढ़ रहे हैं कम होंगे क्या?

मोहन—अरे भाई कर नहीं बढ़ेंगे तो गरीबों की वेतन कैसे बढ़ेगी (जो १०) २०) का वेतन पाने वाले आज ५०) ६०) पा रहे हैं यह सब कहां से आयेगा?

रामप्पा—अरे भई तनख्वाह वापिस घटा दो परन्तु अनाज सस्ता हो जाना चाहिए — हजारों लाखों भूखों को दाना मिलेगा खाना पड़ेगा।

मोहन—यह हाथ की बात नहीं है।

रामप्पा—और कर बढ़ाना हाथ की बात है। वाह साहब वाह यह खूब रही।

रामप्पा—अच्छा हां तो स्वराज्य में तो सब को खुश रहना चाहिए किन्तु अधिकांश लोग बेचैन रहते हैं। भूखे है, नंगे है — घर दार के लिए मुहताज है। क्या यही सुराज्य है।

मोहन—यह सिर्फ समझने की बात है।

रामप्पा—हमारे देश में हिन्दू महासभा, जन संघ, राष्ट्रीय संघ, समाजवाद, कम्युनिस्ट आदि २ पचासों संस्थाएं हैं। यह सभी कांग्रेस को कोसती है उसके नाम को रोती हैं भला ऐसा क्यों करती हैं?

मोहन—हर देश में कई पार्टियां होती हैं। हर पार्टी के अपने अपने विचार और कार्य प्रणाली होती है। सभी पार्टियां शक्ति संग्रह करने का प्रयास करती हैं और अपनी योजनाओं को अच्छा बताने, तथा जनता में अपनी धाक जमाने के लिए शासनारूढ़ पार्टी को सदा छिद्रान्वित करती रहती हैं।

गालैया—आखिर इससे लाभ?

मोहन—लाभ क्या! केवल शासन सत्ता की छीना झपटी है परन्तु कांग्रेस की शक्ति इतनी बढ़ी चढ़ी है कि यदि सभी संस्थाएं एक तरफ भी हो जायं तो भी कांग्रेस को हरा नहीं सकतीं।

गालैया—यह खूब कही—अच्छा चलो जाने दो अब इस वार्तालाप को। कांग्रेस का अधिवेशन दिखाने की और बात करो—

रामप्पा—हमको वहां क्या मिलने वाला है?

शंकर—व्यर्थ की टांग तोड़ी होगी।

मोहन—अरे भाओ कुछ मिले या न मिले लेकिन अपने देश के बड़े-बड़े नेताओं और भाग्य विधाताओं के दर्शन तो अवश्य ही हो जायंगे।

गालैया—हां भाओ! यह बिल्कुल ठीक कही — चलो (चलें तीनों ही जाते हैं।)

बाल जगत

कांग्रेस अधिवेशन

— बी. कृष्ण

प्यारे बच्चो ! तुमने खेल तमाशे बहुत से देखे होंगे। नाटक, सिनेमा भी जरूर देखे होंगे— हाकी और फुटबाल मैच की तो बात ही क्या। लेकिन क्या तुमने कभी कांग्रेस के अधिवेशन का जलसा भी देखा है ? शायद नहीं। आओ हम आज तुम्हें कांग्रेस के जलसे की झांकी करायें— बड़ा मजा रहेगा।

हां तो देखो यही है कांग्रेस नगर। इसका नाम है मानल नगर यहीं ! यर कांग्रेस का सालाना जलसा हो रहा है। वह जो बड़ा-सा पण्डाल है उसी में जलसा होगा। वह इधर देखो यह सर्वोदय प्रदर्शिनी है। यहां पर महात्मा जी के बताए हुए रचनात्मक कार्यक्रम के साधनों और प्रणालियों का बृहत प्रदर्शन है। पास में सुन्दर १ स्टालें, होटल आदि हैं।

बच्चो ! यह जगह आज से कुछ ही दिन पहिले निर्जन और उजाड़ थी। आज यहां कितना सुन्दर नगर बस गया है। चारों और चहल पहल है। देश के कोने-कोने से कांग्रेस के प्रतिनिधि आ गये हैं। उन के ठहरने आदि का अत्युत्तम प्रबन्ध किया गया है। कांग्रेस के प्रेसिडेण्ट देश प्राण श्री पंडित जवाहरलाल जी नेहरू अधिवेशन की अध्यक्षता करेंगे।

कांग्रेस के अधिवेशन में पहिले कार्यकारिणी समिति की बैठक होगी। फिर कांग्रेस कमिटी की बैठक होगी और अनन्तर खुला अधिवेशन कार्य कारिणी समिति कांग्रेस कमिटी की बैठक के लिए 'एजेण्डा' बनाती है और कार्यक्रम निश्चित करती है। इसी कार्यक्रमानुसार कांग्रेस कमिटी की बैठक होती है और प्रस्ताव सर्व सम्मति या बहु मत से पास किए जाते हैं। यही प्रस्ताव खुले अधिवेशन में रक्खे जाते हैं। खुले अधिवेशन में सभी कांग्रेसी शामिल हो सकते हैं। हां वाद-विवाद में अथवा वोट देने और निर्णय करने में केवल मेम्बर्स, डेली गेटस या अन्य अधिकार प्राप्त व्यक्ति ही भाग ले सकता है।

इस वर्ष का अधिवेशन कांग्रेस का ५८ वां अधिवेशन है। कुछ विकट और अयोग्य राजनैतिक स्थितियों के कारण कभी वर्ष जलसा न हो सका। कांग्रेस ने बालकों की शिक्षा दीक्षा की ओर विशेष ध्यान दिया है। बाल शिक्षा अनिवार्य मानी हैं, और निरक्षरता दूर करने का बीडा उठाया है। कांग्रेस का मत है और यह मत ठीक भी है कि बच्चे देश की भावी उन्नति के सूत्रधार एवं कर्णधार हैं। नन्हें मुन्ने बच्चों को समुचित शिक्षा देकर उन्हें देश का सच्चा लाल बनाया जाना चाहिए।

कांग्रेस ने बच्चों को सभी प्रकार की शिक्षा देने की योजनाएं बनाई हैं। जल, थल और नौ सेना में उन्हें नाना प्रकार की ट्रेनिंग देकर स्थायी रूप से ले लेने की भी योजनाएं हैं। किसी भी देश का भविष्य उसके होनहार बालकों पर ही निर्भर होता है। भारत का भविष्य भी तुम जैसे होनहार नौनिहालों पर निर्भर हैं। तुम्हें कांग्रेस की शैक्षणिक योजनाएं पढ़नी और समझनी चाहिए और उनसे लाभ लेना चाहिए विदेश के शासन की बागडोर कांग्रेस के हाथ में है। शासन की अनेकानेक समस्याएं कांग्रेस के सामने हैं उनमें से एक है— राज प्रमुख रक्खे जांय या नहीं। जनमत राजप्रमुख को हटाने के पक्ष में जोर पकड़ रहा है। राज प्रमुख से क्या मतलब है ? बच्चो ! तुम जानते हो होंगे। अगर न मालूम हो तो सुनो। जो देशी राज्य विलीन होकर प्रदेशों के रूपमें बने हैं उनके जो शासक अथवा राज्यपाल हैं वे ही राज्य प्रमुख कहलाते हैं। तुम भी सोचना और लिखना कि तुम्हारा क्या मत है ?

कांग्रेस के सामने दूसरा महत्त्व का प्रश्न है भाषावार प्रान्तों का निर्माण और अति निकट भविष्य में आन्ध्र प्रान्त का निर्माण-आन्ध्र प्रान्त के निर्माण के लिए जस्टिस वांचूका नियुक्ति किया गया है। वह अपनी रिपोर्ट ३१ जनवरी १९५३ है, तक पेश कर देंगे प्यारे बच्चो ! तुमने अखबारोंमें पढ़ा होगा और रेडिओ पर भी सुना होगा पंच वर्षीय योजना के बारे में यह योजना भारत के उद्योग धन्धोंको बढ़ाने, कृषि प्रसार और सामाजिक सुधार की भावनाओं से ओतप्रोत है। यह योजना भी इस अधिवेशन में चर्चाका विषय होगी। योजना अपना रंग मजेका दिखायेगी। उस दिन फिर आना बहार देखना।

आदर्श-स्मारक (अछूत की जीवात्मा)

लेखक डा. ओमप्रकाश गुप्त

प्रकाशक—रमेश कुमार, प्रधान हरिजन सेवक संघ, कुमार कुंज, मुरादाबाद

पृष्ठ संख्या ५७, मूल्य—?

लेखक महोदय ने इस छोटी-सी नाटिका में, गांधीजी के उस महान तत्त्व का प्रदर्शन किया है जिससे 'हरि' के जनों का उद्धार हुआ। गांधीजीने स्वयं दरिद्र नारायण बनकर पीडित और शोषित वर्गों का उत्थान किया। इसी दिशा में लेखकने नाटिका के रूप में जनता के सम्मुख 'हरि' के जनों का महत्त्व प्रदर्शित किया है।

हमारी जाति में हरिजन कितने पीडित हैं, उनका कुछ एक धर्मान्ध व्यक्तियों द्वारा शोषण और दलन होता है इस का यथार्थ चित्र आपने खींचा है। 'हरि' के लालों को हम 'अछूत' कह हम अपनी जाति और राष्ट्र की हानि कर रहे हैं। जब हमने हरिजनों को ऊपर नहीं उठने दिया तब हरिजन अपनी जाति छोड ईसाई या मुसलमान बनने लगे। यह राष्ट्र और समाज को धक्का पहुंचानेवाली बात है। इन सब समस्याओं को ध्यान में रख कर लेखक ने अपने नाटक को सफल बनाया है।

अपने आत्मीय की मृत्यु के पश्चात् हम स्मारक बनाते हैं—पत्थर के! इनके स्थानपर हरिजनों के उद्धार के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण स्मारक बनादें, तो वास्तव से वह स्मारक रहेगी। हमारे हृदय में स्मारक की याद ताजी रहेगी। यही स्मारक वास्तव में आदर्श स्मारक है।

नाटिका की भाषा शैली बहुत ही सुन्दर है। हरिजनोंका वास्तविक चित्र खींचने में आपकी भाषा शैली समर्थ सिद्ध हुई है।

हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि पुस्तक अपने कर्तव्य में उतरेगी। जनता इसे अपना कर देश सेवा में हाथ बटाएगी। छपाई सफाई सुन्दर है।

—श्रीनिवास सोनी

राष्ट्र भारती

प्रकाशक—श्री मोहनलाल भट्ट

राष्ट्र भाषा प्रचार समिति वर्धा।

राष्ट्र भारती जनवरी अंकसे तृतीय वर्ष में प्रविष्ट होती है। विगत दो वर्षों में इस पत्रिकाने राष्ट्रभाषा की प्रगति में यथेष्ट सहयोग दिया है। पत्रिका का प्रकाशन सराहनीय है।

पाठ्य सामग्री सरल और रुचिकर है —

वार्षिक चन्दा केवल ६) है।

कल्पना

प्रकाशकजी— मधुसूदन चतुर्वेदी एम. ए.

८३१, बेगमबाजार, हैदराबाद दक्षिण।

'कल्पना' एक उच्च कोटिकी साहित्यिक पत्रिका है इसे हिन्दी के प्रकाण्ड पंडितों विद्वानों और लेखकों का सराहनीय सहयोग प्राप्त है। जनवरी अंक से पत्रिका अपने चतुर्थ वर्ष में पदार्पण करती है। गत तीन वर्षों में पत्रिका ने अहिन्दी प्रदेश में होते हुए भी जो प्रगति की है वह अवश्य सराहनीय है। पाठ्य सामग्री आदि सभी दृष्टियों से पत्रिका श्रेष्ठ और रुचिकर है —

वार्षिक मूल्य केवल १२) है।

प्रवाह

प्रकाशक श्री शिवलाल अग्रवाल,

राजस्थान प्रेस, अकोला (मध्यप्रदेश)

मध्यप्रदेश से निकलनेवाले हिन्दी मासिकों में प्रवाह का उच्चतम स्थान प्राप्त है। मध्यप्रदेश के प्रखर राजनीतिज्ञ हिन्दी के पुढारी और मध्यप्रान्तीय सरकार के वित्तमन्त्री माननीय श्री बृजलालजी बियाणी की छत्रछायामें इस पत्रिका ने निरन्तर प्रगति की है। साहित्यिक दृष्टि से पत्रिका उत्तम और आकर्षक है—

वार्षिक मूल्य केवल ६)

हलचल

प्रकाशक लाजवन्ती प्रकाशन, अमरोहा उत्तर प्रदेश

हलचल पहेली जगतका मार्गदर्शक है। इसमें विभिन्न वर्ग पहेलियों पर सुन्दर विवेचना की जाती है। वर्ग पहेली प्रेमियोंके लिए यह पत्र अत्यन्त उपयोगी है। मूल्य भी विशेष नहीं है। जनवरीका पहेली अंक प्रशंसनीय है —

वार्षिक मूल्य ५)

सुमित्रा

प्रकाशक—सुमित्रा प्रकाशन

पोस्ट बाक्स नं. १ कानपुर

सुमित्रा संस्कृतिक प्रेरणा की एक उच्चतम पत्रिका है। यह सांस्कृतिक अभ्युत्थानके लिए प्रयत्नशील है। इसके उद्देश्य और प्रयास सराहनीय है। देशके राष्ट्रीय एवं साहित्यिक अभ्युत्थान के लिए सुमित्रा जैसी पत्रिकाओंकी बड़ी आवश्यकता है—

वार्षिक मूल्य ६)

हैदराबाद राज्य कांग्रेस की एक झलक

भारत की राजनैतिक दृष्टि से हैदराबाद का महत्व अजोड़ है यह भारत की सबसे बड़ी देशी रियासत थी। इसका क्षेत्र फल ८२६९८ वर्ग मील है और जन संख्या सन् १९५१ की जनगणनानुसार १,८८,५५,१०८ है। यह भारत की सबसे अधिक समृद्धिशाली और उपजाऊ रियासत थी। यहां के निजाम संसार के सबसे बडे धनी माने जाते थे। निजाम साहब के शासन काल में हैदराबाद ने सभी दिशाओं में उत्तरोत्तर प्रगति की।

इस विशाल देशी राज्य में जहां अपनी विशेषतायें आर्थिक एवं राजनैतिक दृष्टि से थीं वहां इसकी सबसे बड़ी कमज़ोरी थी साम्प्रदायिकता। हैदराबाद राज्य की अधिकांश जनता अथवा यों कहे कि ८७ प्रतिशत जनता हिन्दू है अत्युक्ति न होगी। निजामी शासन के कारण यहां पर भेद भाव प्रचुर प्रमाण में था। लोग सदा त्रस्त और भयभीत रहने लगे थे। अधिकारियों के निरंकुश अत्याचार, अनाचार और बर्बर व्यौहार से बेचारी जनता ऊब गई थी। सभी ओर क्षोभ, असन्तोष झलक रहा था। लोग उद्धार का मार्ग खोज रहे थे।

ठीक ऐसे ही समय में भारत की एक मात्र राष्ट्रीय संस्था कांग्रेस ने देशी राज्यों की जनता में संघटन करने का कदम उठाया। हैदराबाद राज्य में भी कांग्रेस का संघटन किया गया। किन्तु संघटन बनने के पूर्व ही तत्कालीन सरकार ने अपनी ७ सितम्बर १९३८ की विज्ञप्ति द्वारा कांग्रेस संगठन पर प्रतिरोध लगा दिया। जनता भी अब ज्यादा सहन करने को तैयार न थी। इस प्रतिरोध का खुलकर प्रतिकार किया। स्टेट कॉंग्रेस की समिति जिसके पहिले अध्यक्ष श्री. गोविन्दराव नानल थे जिनके नाम से आज नानल नगर बनाया गया है और जहां कॉंग्रेस का अधिवेशन हो रहा है प्रधान मंत्री थे। श्री. रामकृष्णजी धूत और सदस्य थे श्री. जनार्दनराव देसाई, श्री आर. नारायण रेड्डी और श्री. श्रीनिवासराव बोरीकर।

इस समितिने २४ आक्टोबर १९३८ को प्रतिरोधके प्रतिकार में सत्याग्रह आरम्भ किया। सत्याग्रह जत्थे के पहिले लीडर थे श्री स्वामी रामतीर्थ। सरकारने गिरफ्तारियाँ शुरू कीं। एक के बाद एक जत्था गिरफ्तार हुआ। कोई दो सौ व्यक्ति इस प्रकार सत्याग्रह में गिरफ्तार किए गए। किन्तु सामयिक परिस्थितियोंके कारण इस सत्याग्रह को स्थगित कर देना पडा। सत्याग्रह के स्थगन की घोषणा श्री काशीनाथराव वैद्य ने की जो अन्तिम जत्थेके जत्थेदार थे। सत्याग्रह महात्मा गान्धी के परामर्श से स्थगित किया गया। राज्य कॉंग्रेस की यह करारी हार थी। राज्य सरकारने सभी सत्याग्रहियोंको मुक्त कर दिया किन्तु प्रतिबन्ध न उठाया।

जनताके बढ़ते हुए क्षोभ और असन्तोष को देखकर स्टेट कॉंग्रेस को कार्यशील बनाने की योजनायें बनाई गई। श्री स्वामी रामानन्दतीर्थ ने स्टेट कॉंग्रेसके संचालन और संगठन का दायित्व उठाया जिसे उन्होंने इस कठिन समयमें भी प्राण पण से पूर्णरूपेण निभाया। प्रतिबन्धके बावजूद भी जनता में जागृति पैदा की। कॉंग्रेस के प्रति श्रद्धा और विश्वास उत्पन्न करवाया।

अब संसार व्यापी महायुद्ध चल रहा था। भारत के नौ प्रान्तों में कॉंग्रेसी मन्त्रिमण्डल शासनारूढ था। देशवासियों की इच्छा के विरुद्ध भी देशको इस युद्ध में झोंका गया। कॉंग्रेस के लिए यह असह्य था। यह युद्ध उसके मौलिक सिद्धान्तों का गला घोटनेवाला था। अतः कॉंग्रेस ने प्रतिकार किया और प्रतिकार की भावना से सभी प्रान्तोंसे कॉंग्रेस मन्त्रिमण्डलने राजीनामा दे दिया। अंग्रेजी सरकार पर मानो इसका कोई प्रभाव ही न पडा। सभी प्रान्तों में गवर्नरी शासन शुरू होगया।

ऐसी दशामें कॉंग्रेस कब चुप बैठनेवाली थी। सन १९४२ की ९ अगस्त को 'भारत छोडो' प्रस्ताव पासकर फिरसे सत्याग्रह आन्दोलन शुरू किया। इस आन्दोलन ने भारत व्यापी रूप धारण किया। देशी राज्य भी प्रतिवाद न थे। हैदराबाद में भी आन्दोलन की चिनगारियाँ चमक उठीं। जनताके दिलोंके दबे हुए गुबार उभर आये। बडे जोरशोर व रोषके साथ लोग आन्दोलन में सम्मिलित हुए। राज्य के शासकों ने पुनः दमन चक्र चलाया। आन्दोलनके अगुआ थे वीरप्रवर श्री स्वामी रामानंद तीर्थ। उन्हें तथा उनके सभी अनुयायियों को गिरफ्तार कर लिया गया। जब तत्कालीन ब्रिटिश भारत में आन्दोलन सफल हुआ और सरकारने अपनी रीति-नीति बदली उस समय हैदराबाद सरकारने भी सभी आन्दोलनकारियोंको जेल से मुक्त कर दिया।

स्वामी रामानंदतीर्थने जेल से मुक्त होते ही कॉंग्रेस की बिखरी हुई शक्तिको पुनः संगठित करना शुरू कर दिया।

आल इण्डिया स्टेट्स पीपुल्स कान्फ्रेन्स की गवर्निंग काउन्सिल के अनुरोध से अस्थायी कार्यकारिणी समिति बनायी और प्रतिरोधके प्रतिकार का प्रस्ताव पास किया। अन्त में १९ जुलाई १९४६ को राज्य सरकारने राज्य कॉंग्रेस पर से प्रतिबन्ध उठा लिये। राज्य कॉंग्रेस में एक नया जीवन आगया नई स्फूर्ति भर गई। कॉंग्रेस का पुर्नसंगठन लोकशाही की बुनियादोंपर किया गया। और इसका प्रथम अधिवेशन श्री स्वामी रामानन्द तीर्थ की अध्यक्षता में १६ जून १९४७ को सम्पन्न हुआ। इस अधिवेशन में प्रस्तावों-द्वारा यह निश्चित किया गया कि जनता निजाम के स्वतन्त्र बनने और भारतीय संघ से अलग रहने के विरोध में आन्दोलन करेगी और भरसक प्रतिकार करेगी। एक प्रस्ताव द्वारा जुम्मेदाराना हुकूमतकी माँग को दुहराया गया।

ठीक इसी समय अंग्रेज भारत छोड़ने की तैयारी कर रहे थे। भारतके विभाजन और पाकिस्तान के निर्माण की घोषणा होचुकी थी। पंजाब और बिहार में रक्त की धारायें बह रही थी। हैदराबाद राज्य में भी साम्प्रदायिकता का साम्राज्य था। इस्लामी साम्राज्य के सुनहले स्वप्न देखे जारहे थे। निजाम अपने को स्वतंत्र घोषित करने की योजनायें बना रहा था।

ता. २९ जून १९३७ को कांग्रेस कार्यकारिणी की बैठक शोलापुर में हुई इस में 'कृतिसमिति' (कमिटी आव एक्शन) की नियुक्ति की गई। इसके अध्यक्ष श्री दिगंबरराव बिन्दु और सदस्य श्री माडपती रामचन्द्रराव, श्री वैशम्पायन श्री गोविन्ददास श्राफ, डा० जी. एस. मेलकोटे और श्री जे. के. प्राणेशाचारी चुने गए इस समिति को समय और परिस्थितियों के अनुसार कार्य करने की पूर्ण सत्ता और स्वतंत्रता दी गई।

हैदराबाद सरकार ने आजाद हैदराबाद का नारा बुलन्द किया। रजाकार सैनिक संगठन शुरू किया जिसका एक मात्र उद्देश्य एवं प्रयोजन था जनता की स्वतंत्रता की भावना को क्रूरता और निर्दयता से कुचलना। १५ अगस्त १९४७ को भारत स्वतंत्र होगया। हैदराबाद भारतीय संघ में सम्मिलित न हुआ। स्वामी रामानन्द तीर्थ के आदेशानुसार सारे हैदराबाद राज्य में ७ अगस्त १९४७ को 'हिन्दी संघ राज्य में सम्मिलित हो जाओ' दिन बड़ी धूम धाम से मनाया गया। स्वामी रामानन्द तीर्थ और कार्यकारिणी के सदस्य श्री कृष्णाचारी ने कानूनी बन्धनों को तोड सत्याग्रह किया। उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया।

हैदराबाद में भी १५ अगस्त १९४७ को भारत की स्वाधीनता का समारोह मनाया गया। तिरंगे झण्डे की वन्दना की गई। हैदराबाद की सरकार इसे सहन न कर सकी। उसने सख्ती करना शुरू किया और भारतीय झण्डे को विदेशी झण्डा घोषित कर दिया। २८ अगस्त १९४७ को राज्य के लग भग सभी कॉंग्रेसी नेताओं को गिरफ्तार कर लिया। निजामी सरकार अपनी शक्ति संचय के इरादे से दोहरी चाल चल रही थी भारत सरकार से सन्धि वार्ता भी चालू थी और जनता का दमन भी। भारत सरकार से 'स्टैण्ड-स्टिल' समझौता होगया और फलत: कॉंग्रेस के गिरफ्तार नेता फिर मुक्त कर दिए गए।

मुक्त होते ही स्वामी रामानन्द तीर्थ ने जनता की माँगों को फिर से सरकार के सामने रक्खा और माँगों के ठुकराये जाने पर पुन: आन्दोलन शुरू किया। फिर गिरफ्तारी हुई। २६ जनवरी १९४८ ई. को स्वामीजी गिरफ्तार किए गये। स्वामी जी के गिरफ्तार होते ही आन्दोलन ने जोर पकड़ा विद्यार्थियों ने प्रतिकार में स्कूल और कालेजों का बहिष्कार किया तथा अन्य रूप से अपना रोष प्रदर्शित किया। व्यापारियों किसानों मजदूरों और नौकर पेशालोगों ने भी साथ दिया। बस सरकार को मौका मिला। रजाकार गुण्डों का हंगामा शुरू हुआ चारों ओर लूट पाट, मार काट और अत्याचार, अनाचार फैल गया। बढ़ती हुई नृशंसता, निरंकुशता और रक्तपात तथा अराजकता को रोकने के लिए भारत सरकार ने बाध्य होकर पुलिस कार्यवाही की और हैदराबाद की जनता को ही नहीं वरन हैदराबाद के निजाम को भी रजाकारों की पाशविकता और दानवता से निजात दिलाई।

'पुलिस एक्शन' के बाद निजामको आत्म समर्पण कर देना पड़ा। शासन की बागडोर जनता के प्रतिनिधियों को सौंप देनी पड़ी। जनता की हितेच्छु और जन सेवक कॉंग्रेस के शासन सूत्र अपने हाथ में पकड़ा और आज राज काज कॉंग्रेसी मंत्रिमण्डल के हाथ में है। जो पहिले शासित, दंडित थे, वेही आज शासक हैं, सम्मानित है।

---

१ मित्र—चीन और भारत भी तो सबसे पुराने देश हैं।

२ मित्र—उन में मित्रता उतनी ही पुरानी है।

१ मित्र—परन्तु परसों भारत का प्रस्ताव कुछ रंग लाया। हमारी मित्रता में खटास आया।

२ अरे यह तो अमरीका और अंग्रेजी चालका गोलमोल है।

३ मित्र—कहीं वह कमाल न दिखाये और आपस में लड़ा न दे।

४ मित्र—अरे भई खूब कही! चीनी और हम से लड़े वह तो हमारे गुरुभाई हैं।

१ मित्र—तो चीनी फौजे तिब्बत पर आगई थीं।

२ मित्र—अरे वह तो उनका ही है इसको तो हमी क्या सभी मान चुके हैं।

३ मित्र—हमारे पडोसी देश नेपाल पर भी दृष्टि लगाई थी।

४ मित्र—यही तो गुरु मंत्र की बढाई है। गुरुभाई का नाता बताते ही पीठ दिखाई, फिर कहो भारत और चीन में कैसी लडाई? अहिंसा के अवतार भगवान बुद्ध की दुहाई।

विदेशी और स्वदेशी

१ मित्र—मित्र विदेशी चीजें खरीदना विधान से निषेध क्यों नहीं कर दिया जाता?

२ मित्र—यह भी कोई मजाक है क्या—आज कल फैशन का जमाना है! विदेशी माल का आयात कानून से रोकना फैशन नहीं। फिर रोक देने पर फैशन की चीजें मिलना बन्द हो जायगा और फैशन का दिवाला पिट जायगा।

पाकिस्तानी युद्ध

१ मित्र—अरे भाई! यह लोग अलग होकर भी कराची में लड़ रहे हैं। लूटमार कर रहे हैं।

२ मित्र—यह तो होते ही रहता है। सरकार भी धोंस जमाती रहती है। सरहदों पर उस के सिपाही भारतीय इलाकों पर घूमते ही रहते हैं।

३ मित्र—अब तो सुनते हैं कि फौजी भरती भी जोरों पर चालू है।

४ मित्र—पाकिस्तान ने कहा था न कि काश्मीर ऐसे नहीं दिया जायगा तो दूसरे तरीके से अर्थात लड़कर लिया जायगा।

५ मित्र—अब तो पाकिस्तान सन्तों को भी कैद कर रहा है, पहले भी किए हैं।

१ मित्र—यह सब होता होगा जी, परन्तु ता. ९-१० जनवरी को वहां गोलियां झाडी जा रही थीं?

२ मित्र—ऐसा तो होता ही है परन्तु भारत को बद-अमन मुल्क बताने वाला खुद क्यों गढे में पड रहा है।

४ मित्र—हम समझते थे कि देश की उपजाऊ जमीन का अच्छे से अच्छा भाग पाकिस्तान में चला गया है, परन्तु वहां भी अन्न का घोटाला निकला।

५ मित्र—सुनते हैं कई पाकिस्तानी हिन्दुस्तानी बनने के पक्ष में हैं।

२ मित्र—परन्तु पाकिस्तानी युद्ध उन्हें ऐसा करने नहीं देता।

आंध्र प्रांत

१ मित्र—आंध्र प्रान्त बनाने के लिए प्रयत्न रात दिन हो रहे हैं। बडे अच्छे शकुन है, पर कहीं सरकार गलती तो नहीं कर रही है?

२ मित्र—आन्ध्र प्रान्त बनाने की बात सुनते ही दूसरे प्रांत कान फडफडाने लगे हैं।

१ मित्र—तो सरकार एक बार ही कर डाले तो अच्छा है।

२ मित्र—क्या मतलब?

१ मित्र—मतलब सीधा और साफ है? समस्त भारत को भाषावार बांट दिया जाय और यह एक साथ ही हो जाय।

१ मित्र—ऐसी बात क्यों करेगी भला?

२ मित्र—जिस से अधिकांश आंध्र भाई नाराज न हो जाय।

१ मित्र—न्याय की बात से कोई नाराज नहीं होता।

२ मित्र—भाषावार राज बनाने की नींव डालने वाले आन्ध्र को कोई नहीं भूला सकेगा।

१ किसी मनचले ने कहा— कांग्रेस-अधिवेशन करके जनता का कई लाख रुपया मिट्टी में मिला रही है। कैसी फिजूल खर्चा है। और यह भी सिर्फ दो दिन के लिए। अरे भाई यह फिजूल खर्चा नहीं है। हजारों मजदूरों का पेट भरा गया। बांस, जूट और कपड़े वालों का भला हुआ और लोगों को मिला तमाशा देखने को। कांग्रेसियों की चटपटी चोंचें भला ऐसे ही सुनने को मिला करती हैं क्या?

० ० ०

२ हैदराबाद शहर में जावजा कमाने वना कर भी फिजूल खर्ची का नमूना बताया गया है। वाहरे पब्लिक के पैसे बलिहारि है तेरी! भला ये कमाने यातायात में बाधा डालने और ट्रैफिक जमा करने के सिवा और क्या काम करती है। अरे भाई करती क्यों नहीं कानून का खोखलापन बताती हैं। तुम ट्रैफिक जमा करो सरकारी मेहमान खाने (लाक अप) में भेज दीजिए और कमाने करे तो नेताओं का 'सुस्वागतम' होता है। नेताओं की प्रसन्नता से ही पेट मोटा और सिर छोटा होता है।

० ० ०

३ राष्ट्रपति और श्री नेहरूजी ने कई कृषकों को कृषि। पंडित की उपाधि दी और पुरस्कार बांटे। समस्त देश में प्रख्याती दिलाई पर अपने राम की समझ में न आया कि यह सब उपाधियां क्यों दीं। अगर देश के सभी कृषक कृषि-पंडित हो जायेंगे और बड़े प्रमाण में अनाज पैदा करने लगेंगे तो बेचारे मोटे पेट वाले काले बाजारुओं का क्या होगा। खाद्य व्यवस्था में लगे हुए बेचारे मुलाजिमों का भगवान ही मालिक।

४ प्रान्त रचना अच्छी है। किन्तु कब हों यह नहीं सोचा जहां है। प्रान्त रचना ऐसी होनी चाहिए कि फिर किसी की मांग न रह जाय। भाषावार प्रान्त भारतीय विधान में मानी हुई भाषाओं के अनुसार कितने प्रांत बनते है। देखना है - पर भई एक बात अपने को खटकती है। सीमा के गावों में भी विभिन्न भाषाएं हैं उनका क्या होगा? क्या देशकी धज्जियां उड़ाने में ही नेतागिरी निहित है।

० ० ०

५. गोलकुण्डे का किला अपना सानी नहीं रखता। इधर बहुत दिनों से इसका नाम भूला जारहा था; मगर बाहरे कॉंग्रेस मुर्दों को भी जिलाती है। गोलकुण्डेका नाम एक बार फिर बच्चे २ की जुबान पर लादिया। जंगल में मंगल मना दिया। इसको कहते हैं कमाल। बोली भाई कॉंग्रेस की जय।

० ० ०

६. कहते हैं कि कॉंग्रेसके प्रधान सौन्दर्य के पुजारी और प्रकृति प्रेमी हैं। यही कारण है कि गोलकुण्डे को अधिवेशन का स्थान चुना। अरे भाई हैदराबाद जैसा सुरम्यनगर भारत में और है कहां? इसीसे तो सबकी आँखें हैदराबाद पर लगी हैं। भैया असली जानकारी कितनों को है। अपने राम तो यों कहेंगे— हैदराबाद पर आँख रखने वालों को तीन रुपये खर्च करके हैदराबाद हिन्दी डायरेक्टरी पढ लेनी चाहिए। हैदराबाद की पूरी जानकारी हो जायगी और आँख रखने के बदले हैदराबाद पर हाथ रखने का विचार वन जायेगा।

७. कहते हैं कराची की स्थिति बिगड़ गई है। लूट पाट हो रही है। हो क्यों न ? कराची पाकिस्तान का पाये-तख्त है। वहाँ गुण्डेशाही न होगी तो और होगी कहाँ ?

0 0 0

८. आगामी १७-१८ जनवरी को काँग्रेसका खुला अधिवेशन है। दर्शकों, प्रेक्षकों और रिपोर्टरोंकी अपार भीड़ होगी। देशके सभी कोनों के लोग वहाँ पर देखने को मिलेंगे। अधिवेशन में हिन्दी झडेगी या अंग्रेजी रंग दिखायेगी। यह देखने के लिए बहुत से लोग आकुल हैं। अपने राम तो, यही कहेंगे कि अभी तो केवल पांच ही वर्ष हुए है। हिन्दी को पन्द्रहवर्षीया तो होने दो। बालिग होने पर ही तो अधिकार दिया जाता है। अभी तो बिन्दी लगाने और चिन्दी उड़ाने वाली बात है।

0 0 0

९. काश्मीर में ग्राहम की चर्चाएं आरही हैं। विश्व संघके सदस्य भारत और पाकिस्तान को खिला रहे हैं या यों कहो कि दोनोंकी दो दो चोंचें करवा रहे हैं। अन्त में होगा क्या ? यही न कि काश्मीर हिन्दू और मुसलनान दोनोंका ही है और रहेगा। फिर यह तमाशा क्यों ?

0 0 0

१० शराब के विरोधी कहते हैं कि स्वराज्य हुए पांच वर्ष हो गए किन्तु शराब पूर्ण तया बन्द नहीं हो पाई है। जनाब हो भी कैसे ? भारत की आजादी ने शराब बनाने वालों को भी तो आजाद कर दिया है।

0 0 0

११ वेश्या वृत्ति बुरी है। सरकार ने इसे भी अभी तक बन्द नहीं करवाया है। जनाब आप कहते तो ठीक हैं, किन्तु सरकार की समझ आप से ज्यादा है। जरा सोचिए। वेश्या वृत्ति बन्द करने से वेश्याएं और वैश्यागामी नाराज़ हो जायेंगेफिर भला कामदेव क्यों मानने लगे, समाज को दूषित करेंगे। फिर किसी की स्वतंत्रता क्यों छीनी जाय। आप जानते नहीं कि अपनी सरकार नैतिक है और नैतिकता में विश्वास रखती है। जब हर इन्सान में नैतिकता आ जायगी वेश्यावृत्ति का मुंह काला हो जायगा।

१२ कितने ही शिक्षा प्रेमी यह समझे बैठे थे कि स्वराज्य होते ही सारे देश में अनिवार्य शिक्षा का प्रचलन हो जायगा और सभी शिक्षित हो जायेंगे, पर ऐसा हो क्यों ? क्या आप को मालूम नहीं पढ़े लिखे लोग सरकार का छिद्रान्वेषण शुरू कर देते हैं जो कोई भी ताना-शाही सरकार पसन्द नहीं करती।

0 0 0

१३ जनता को विश्वास था कि स्वराज्य होते ही सुख, शान्ति और समृद्धि का बोलबाला होगा। घी, दूध और शहद की नदियां बहने लगेंगी। भ्रष्टाचार, अनाचार और दुर्व्यवहार का नामोनिशान भी बाकी न रहेगा, परन्तु यह क्या हुआ एकदम विपरीत। महंगाई बढी, कष्ट और कठिनाइयां बढ़ गई। धोकेबाजी, जालसाजी और रिश्वत-खोरी का बाजार दिनों दिन गर्म होता जाता है। यह दोष अथवा कमजोरी किस की है ? क्या कांग्रेस का अधिवेशन इस पर प्रकाश डालेगा ?

0 0 0

१४ पाकिस्तान पश्चिमी गुट में शरीक होगया। अब भारत को बडा खतरा है। अखबारवालों ने चीख पुकार शुरू कर दी है। न जाने यह लोग तटस्थता की नीति पर भरोसा क्यों नहीं रखते और शांति और अहिंसा का जप क्यों नहीं करते। बरसने दो बम गोले और मरने दो एक दो करोड़ आदमियों को कम से कम अनाज की खिल्लत तो कम होगी।

0 0 0

१५. श्री जवाहरलालजी नेहरू पधारे हैं। देखें हमारे मंत्रीगण क्या-क्या करते हैं ! काँग्रेस अधिवेशन के इस स्वर्ण सुयोग से हैदराबादियोंको अवश्य कुछ न कुछ लाभ लेना चाहिए और मालूम करना चाहिए कि ये सदाके लिए हैदराबादी ही रहेंगे किंवा उनको निकट भविष्य में नई संज्ञा दी जायगी।

0 0 0

१६. लंका, पाकिस्तान और हिन्दुस्तान आपस में पड़ोसी देश हैं इस लिए आपस में गहरी छनती है। कहीं एक दूसरे का बहिष्कार करते हैं तो कहीं क्रिकेट मैच खेलते हैं। क्या खूब समझाना भी मुहाल है।

गोलकुण्डे का किला राजा किशनदासने बनवाया था। यह किला इतना मजबूत बना था कि तोपें भी इसका कुछ न बिगाड़ सकती थीं औरंगजेब महिनों इसका घेरा डाले रहा, निरन्तर हमले किए पर किला अभेध रहा। इतना दुर्गम और मजबूत होने पर यह बना है केवल ईंट और मिट्टी का। यह है उस समय की शिल्पकला। गोलकुण्डे का किला आज भी उसी प्रकार दुर्भेद्य और अचल खड़ा है।

सन् ७६५ हिजरी में वरंगल के राजा ने इस किले को मोहमद शाह बहमनी को भेंट में दिया और बाद में यह किला कुतुबशाही राज्य की राजधानी बना, बादशाह इब्राहीमने किले में पत्थर के महल व दीगर इमारतें बनवाईं और आठ हजार गज की लंबाई की चहारदीवार बनवाई। इस चहारदीवार में आठ दरवाजे और चार सौ बुर्ज हैं। किले की हिफाजत के लिए किले के चारों ओर गहरी खाई खुदी हुई है।

गोलकुण्डे का किला हैदराबाद से लग-भग पाँच मील दूर है। किला पहाड़ी पर बना हुआ है, और समुद्र सतह से करीब दो हजार फीट ऊंचा है। किले के बुर्ज दूर २ तक के सुरम्य दृश्य दिखाई पड़ते हैं। करीब २२ मील चौरस भूमि आँख के परदे के नीचे उतर जाती है।

ऐतिहासिक दृष्टि से भी गोलकुण्डे के किले का अपना अजोड़ महत्व है। कुतुबशाही बादशाहों की कबरें जहां इस किले में हैं वहां श्री रामचन्द्रजी और हनुमानजी की मूर्तियों का स्थान भी इस किले में मौजूद है। भद्राचलम के प्रसिद्ध भक्त साधु रामदासजी इसी किले में बरसों सड़ाए गए थे। भक्त रामदासने बंदी जीवन में यहां पर भी भगवान की पूजा अर्चना में अपना जीवन बिताया, श्रीराम और हनुमान की मूर्तियां बनाई जो आज भी दर्शनीय हैं।

गोलकुण्डे किले के अन्दर की इमारतें और विशालकाय तोपें देखने योग्य हैं। किले की फसील, तारामती और बारामती की मसजिदें लोगों का ध्यान अपनी ओर स्वयं ही खींच लेती हैं।

जगत प्रसिद्ध कोहनूर हीरा भी यहीं से मिला था।

की पूजा
ुमान की
विशाल-
ती और
स्वयं ही
।

१२०० रु. भारती

९ फरवरी एक बजे दोपहर दफ्तर पर दस्त बदस्त अ
पोस्ट से हल और फीस जमा करने की आखरी तारीख

फानूस पहेली नं. (३)

५ फरवरी जिलों और स्टेट के बाहर के कलक्टर्स के पास हल और फीस जमा करने की आखरी तारीख है।

फानूस पहेली नं. (३

फानूस मुअम्मा फरहतनगर हैदराबाद नं. २। टोकन की शरत नहीं है (॥ कलदार फीस एक हल की एक से चार हलों की फीस १॥) इस हिसाब से और हल दाखिल कीजिए। सही हल जी. रघुनाथमल बैंक पत्थ हैदराबाद में महफूज है — ९ फरवरी को २ बजे दोपहर जनता के सामने खोला जायगा—

	नं.	इशारात फानूस मुअम्मा नं. (३)	दो शब्द		सही
७५०) पहला इनाम सही हल पर	१	फानूस मुअम्मा अब——जबानों में निकलता है।	एक	दो	
	२	खेती करने वालों को —— से काम पडता है।	लोहार	चमार	
२००) दूसरा इनाम १ गलती पर	३	वह व्योपारी पैसे वाले होते हैं जो —— मुनाफा लेते हैं।	ज्यादा	कम	
	४	सरकारी नौकरों को जनता के —— समझना ठीक नहीं।	नौकर	हाकिम	
१३०) तीसरा इनाम २ गलती पर	५	भारत को —— भाषा से फायदा होगा।	हिन्दी	अंग्रेजी	
	६	मास्टर बच्चे की होश्यारी का पता उसके——से लगाता है।	सवाल	जवाब	
१००) चौथा इनाम ३ गलती पर	७	कपडा अगर अच्छा —— होतो अच्छा मालूम होता है।	सिला	धुला	
	८	जो एक्टर्स अच्छा —— हो वह खूब पैसे कमाती है।	नाचती	गाती	
२०) पांचवाँ सबसे ज्यादा हल भेजने वाले को।	९	मुल्क की खुशहाली के वास्ते——को तरक्की देना अच्छा है।	खेती	व्योपार	
	१०	कोर्ट के कामों में अच्छे —— से फायदा होता है।	वकीलों	गवाहों	
	११	सख्ती करने से बच्चों के चाल-चलन —— होते हैं।	अच्छे	खराब	
	१२	पढे लिखे लोग —— की जिन्दगी पसन्द करते हैं।	देहात	शहर	

जुरूरत है जिलों तालुकों और स्टेट के बाहर फानूस मुअम्मा के लिये कलक्टर्स चाहिये

मुमताज कम्पनी
मोजमजाही मार्केट रूबरू नाका पोलीस, हैदराबाद दक्षिण
डेरे, शमियाने, फर्नीचर, बर्तन आदि किराये पर मिलते हैं।
ممتاز کمپنی معظم جاہی مارکیٹ روبرو ناکہ پولس حیدرآباد-دکن
ڈیرے شامیانے فرنیچر برتن کرائے پر ملتے ہیں
MUMTAZ COMPANY
OPPOSITE POLICE STATION
MOAZAMJAHI MARKET, HYDERABAD-DN.
TENTS, FURNITURE, POTS, FLOOR, CLOTH, Etc. ARE AVAILABLE ON HIRE
Tele: Add: "BUPTACO"
Post Box No. 3530
बालासिनोर पेपर ट्रेडिंग कार्पोरेशन
पेपर एण्ड स्ट्रॉ बोर्ड मर्चेंट ९-११, काऊलेन, कांदेवाडी, बंबई -४.
प्रत्येक प्रकार का देशी तथा विदेशी पेपर ग्राहकों को उचित मूल्य में थोक भाव से सप्लाई किया जाता है।
जरूरतमन्द निम्न पते पर पत्र व्यवहार करें।
Balasinor Paper Trading Corporation
PAPER & STRAW BOARD MERCHANTS,
9-11, Cow Lane, Kandewadi, BOMBAY—4.
अपने ढंग का अनोखा पारिवारिक सचित्र
हिन्दी मासिक पत्र
वार्षिक मूल्य ३)
"राही"
एक प्रति का।)
प्रति वर्ष एक कहानी विशेषांक, एक गद्यांक, एक पद्यांक, और प्रति मास महिला-मण्डल, दीवाने की मस्ती, स्वास्थ्य और चिकित्सा, व्यापार-जगत्, सिनेपथ, आखिर क्यों?, विज्ञापन रहस्य, समाज की झांकी, मासिक भाग्य जनता से अपील, प्रश्नोत्तर, विविध वार्ता आदि स्तम्भ प्रकाशित होते हैं आज ही ३) रुपये भेज कर वार्षिक ग्राहक बनिये।
२५) रु. में आजीवन ग्राहक बन सकते हैं एवं जमा रकम अपनी इच्छानुसार वापस भी ले सकते हैं। नमूने के लिए चार आने के स्टॉम्पस भेजना जरूरी है।
'राही' कार्यालय,
३६, कोलूपाड़ा लेन, सलकिया (हवड़ा)
काश्मीरी टोपियों के लिए हमारे यहां पधारें!
प्रभात क्याप स्टोअर्स
प्रो:—पी. एल. पंचार्य
सुलतान बाजार, हैदराबाद द.

स्त्रियों के आभूषण का एक मात्र केन्द्र ! सूरजभान एण्ड कम्पनी
गुलजार हौज, हैदराबाद द. — हमारे यहां सोने चान्दी का सामान तैयार मिलता है और आर्डर देने पर भी बनया जाता है ।
SURAJ BHAN & CO.,
SILVER & GOLD MERCHANT
GULZAR HOUZ, HYDERABAD-DN.
Ask Anything and Every Thing in
TYPEWRITING
THE GENERAL TYPEWRITING Co.
SULTAN BAZAR, HYDERABAD-Dn.
BRANCH:—KINGS WAY, SECUNDERABAD
DEALERS:—In all kinds of Portable and Stanpard Typewriters, Duplicators and Stationers
ALSO
Decent
ARRANGEMENT FOR LEARNING SHORTHAND & TYPEWRITING IN ENGLISH, HINDI & URDU ON NEW TYPEWRITERS.
दी जनरल टाईप राइटींग ईन्स्टीट्यूट
सुलतान बाजार
हैदराबाद दक्षिण.

संतोष-सोप
बार तथा चूरा
★ इसके इस्तेमाल से ★
दाम, श्रम तथा समय की बचत होती है।
कपड़ों की सफ़ाई के साथ उनकी जिन्दगी भी बढ़ती है।
-: कारखाना :-
इंडस्ट्रियल येरिया
आजमाबाद, हैदराबाद द.
-:बनानेवाले:-
जे. पी. एण्ड कम्पनी
-: कार्यालय :-
जोशी बिल्डिंग, सुलतानबाजार
हैदराबाद द.
—: व्यापारी भाइयों से निवेदन :—
यदि आप के पास हमारे प्रतिनिधि अबतक न आये हों तो कृपया एक कार्ड लिख कर सूचित करें।
व्यंकटेश प्रेस
गौलीगुडा हैदराबाद दक्षिण
यदि आप को रंगीन ब्लाकों का काम सुन्दर ढंग से कराना हो तो पधारिए। हमारे यहां प्रत्येक प्रकार के दवाओं तथा तेलों आदि के डिब्बे बनाकर और तैयार छाप कर दिया जाता है एक बार परीक्षा करें और आकर सैंपल देखिए।
मैनेजर
व्यंकटेश प्रेस गौलीगुडा हैदराबाद दक्षिण
दक्षिण भारती मुफ्त पढ़िए
५१) रु. डिपाजिट जमा कराने पर दक्षिण भारती मुफ्त भेजी जायगी। डिपाजिट जब चाहे वापिस दिया जायगा।

हैदराबाद

हैदराबाद सम्बन्धी सम्पूर्ण ज्ञातव्य

प्रसिद्ध साहित्यिक, एडव्होकेटस् तथा डाक्टरर्स का संक्षिप्त परिचय

हैदराबाद हिन्दी डायरेक्टरी

डायरेक्टरी

राज्य विधान सभा तथा हैदराबाद राज्य से निर्वाचित सदस्यों का परिचय

कौन क्या है? स्तम्भान्तर्गत जीवनियां प्रकाशित होगी।

व्यापारियों के लिए व्यापार की उन्नति करने का शुभावसर।

विज्ञापन आदि विस्तृत जानकारी के लिए लिखिए या कार्यालय में आकर मिलिए।

दी मारवाडी प्रेस लि.

२७०, अफजलगंज, हैदराबाद द०

तारीखवार
दिसम्बर मास
के समाचार

विश्व

ता. १ दक्षिण अफ्रीका का तटीय शहर समुद्री आँधी की चपेट में। कई घायल।

ता. २ हिन्द चीन के नसम किले पर वीतमिन्ह सैनिकों का आक्रमण।

ता. ३ अमरीकी प्रतिनिधि ने भारत और पाक को चेतावनी देते हुए कहा कि काश्मीर का प्रश्न हल न हुआ तो खतरनाक परिणाम की अशंका है।

ता. ४ राष्ट्रमण्डलीय प्रधान मंत्रियों द्वारा कोरिया के प्रश्न पर विचार। जिसमें श्री चिन्तामणि देशमुख ब्रिटिश मंत्रिमंडल की बैठक में भाग लेंगे।

ता. ४ सीलोन के व्यापारियों द्वारा सीलोनके भारतीय व्यापारियों की जड खोदने का प्रयास।

ता. ५ अरब के राष्ट्रवादी नेता फेहरात हैन्ड की निर्मम हत्या।

ता. ७ ब्रिटेन के साप्ताहिक न्यूस्टेटस मैन एण्ड नेशन' ने कल एक टिप्पणी में कहा कि पाक सरकार को अब्दुलगफ्फार खाँ पर खुला मुकदमा चलाना चाहिए।

ता. ९ दक्षिण अफ्रीका के आन्दोलन में श्री मणिलाल गांधी गिरफ्तार।

मोरक्को में फ्रान्सियों के विरुद्ध जन क्रान्ति की ज्वाला भभक उठी। जनता और पुलिस में जमकर संघर्ष।

भारत

ता. १ परिगणित तथा पिछड़ी हुई जातियों के विकास के लिए गृह-मंत्रालय द्वारा सम्मेलन बुलाने की सम्भावना।

ता. २ औद्योगिक वित्त कारपोरेशन पर पक्षपात का आरोप। संसद द्वारा ऋण लेने वालों के नाम प्रकट करने की मांग।

ता. ३ आज तीसरे पहर कलकत्ता कारपोरेशन के दो लाख रुपये आश्चर्य जनक रूप से गायब हो गए।

राष्ट्रपति की ६८वीं वर्ष गांठ सम्पन्न।

ता. ४ काश्मीर तथा जम्मू राज्य में प्रजा परिषद के सत्याग्रह विषय पर आज लोक सभा में प्रधान मंत्री श्री नेहरू तथा डा. मुकर्जी के बीच झड़प।

ता. ५ श्रीरामलू के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करने के लिए आज नगर की दुकानें बन्द रहीं।

ता. ६ बम्बई सरकार ने बताया कि भूत पूर्व सैनिकों को अधिक सहायता प्रदान की जांय।

ता. ७ श्री नेहरू ने बडोदा में शारीरिक श्रमकी महत्ता पर जोर देते हुए कहा कीं भारत के युवक 'बाबू' के बजाय कारीगर बनने का प्रयत्न करें।

ता. ८ काश्मीर सम्बन्धी आंग्ल अमेरिकी प्रस्ताव भारत सरकार ने अस्वीकृत कर दिए।

घर

ता. १ हैदराबाद में कांग्रेस अधिवेशन के अवसरपर सांस्कृतिक मनोरंजन द्वारा एकत्रित धन दक्षिण अफ्रीका भेजा जायेगा।

ता. २ सप्लाई मंत्री श्री डा. चन्नारेड्डी ने बताया कि बाहर से आयात अन्न से सप्लाई विभाग को १९५०-५१ में लाखों रुपये की क्षति उठानी पडी।

ता. ३ गृहमंत्री श्री दिगम्बर राव बिन्दुने बताया कि हैदराबाद के जागीरदारों को २ करोड २८ लाख का मुआविजा दिया गया।

ता. ४ हैदराबाद सरकार ने घोषणा की कि अप्रेल ५२ से सरकारी कर्मचारियों को भारतीय मुद्रा में वेतन दिया जायगा। ३०० से अधिक पाने वाले को अनुपातिक दृष्टि से दिया जायगा।

ता. ५ हैदराबाद सरकार ने अधिवेशन के लिए नगरपालिका को नानल नगर जाने वाली सडक की मरम्मत के लिए तीन लाख रुपये प्रदान किए।

ता. ६ निजाम के द्वितीय पुत्र श्री प्रिंसमुअज्जमजाह बहादुर का आज द्वितीय विवाह सम्पन्न।

ता. ७ अब्दुलकरीम खान ने आज प्रेस सम्मेलन में कहा कि पाकिस्तान की जेलों में बारह हजार पख्तून देशभक्त नजरबन्द हैं और उन की करोडों की सम्पत्ति जप्त की गई है।

विश्व भारत घर

— पाकिस्तानी विमानों द्वारा पख्तूनोंपर अंधाधुन्ध बमबारी व गोली बार।

ता. १० श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडित ने चेतावनी दी कि ट्यूनिशिया की स्थति, विश्वशांति के लिए भीषण खतरा है।

ता. ११ मोरक्को की राष्ट्रवादी पार्टी के समस्त नेता गिरफ्तार।

ता. १३ ज्ञात हुआ है कि पाक में कोई भी ऐसी विदेशी फर्म व्यवसाय नहीं कर सकती जिसके उच्च कर्मचारी ५० प्रतिशत पाकिस्तानी न हों।

ता. १४ कोरिया के मध्य तथा पश्चिमी मोर्चों पर घमसान युद्ध, जिसके फलस्वरूप २ हजार चीनी हताहत।

ता. १५ कोरिया में कम्युनिस्ट युद्ध बन्दी शिविर में पुनः उपद्रव, फलस्वरूप २०२ व्यक्ति हताहत।

ता. १६ ईरानकी समस्याओंका तत्काल हल करना आवश्यक। देर होनेसे तुदेह पार्टीके सत्तारूढ हो जाने की आशंका।

ता. १७ ब्रिटिश की लोकसभा द्वारा केन्या सम्बन्धी नीतिका समर्थन।

ता. १८ भारतने पोलैण्डके प्रस्तावका समर्थन करते हुए कहा कि संयुक्त राष्ट्रसंघ में १४ राष्ट्रोंको मान्यता देने का प्रश्न।

ता. १९ अन्तर्राष्ट्रीय कोशने निश्चय किया कि भारत को इस्पात और लोहे के उत्पादन के लिए ३ करोड डालरका ऋण दे।

ता. ९ प्रधान मंत्री श्री नेहरू ने घोषणा की कि भारत सरकार पृथक आन्ध्र राज्य के निर्माण के लिए तैयार।

ता. १० बिजली कम्पनी के साथ दर में समझौता न होने कारण अहमदनगर की आटे की पचहत्तर हजार चक्कियों का काम ठप्प।

ता. ११. लोकसभा में गृहमंत्री श्री. डा. काटजू ने घोषणा की कि मणिपुर, त्रिपुरा आदि त्रिपुर राज्यों के निर्वाचन मंडल पूर्ववत् रहेंगे।

ता. १३. दलित जातियों की स्थिति की जांच के लिये अगले सप्ताह कमीशन नियुक्त

ता. १४. भारत सरकार से सर्व दलीय महाराष्ट्र दुर्भिक्ष सम्मेलन ने मांग की कि खाद्यान्न विनियंत्रण लागू न किया जाय।

ता. १५ आन्ध्र राज्य के अविलम्ब निर्माण का व्रत लेने वाले श्री पोट्टी श्री रामलू का ५८ दिन के अनशन के बाद आज देहान्त।

ता. १६. विजयवाड़ा स्टेशन पर दो करोड़ की लूट मार।

मद्रास के ११ जिले में भीषण उपद्रव।

ता. १७. उत्तरी तेलुगु प्रान्त में में उपद्रव जारी। गुंटूर विशाखा पट्टम तथा अनाकापल्ली में भयपूर्ण वातावरण।

ता. १८. आचार्य विनोबा भावे की स्थिति अत्यन्त चिन्ताजनक है।

ता. १९. खाद्य मंत्री श्री किदवाई ने आश्वासन दिया कि महाराष्ट्र के दुर्भिक्षग्रस्त जिलों के लिए केन्द्रीय सहायता देगी।

२१ मोटर यातायात चालकों ने बम्बई सरकार को चेतावनी दी कि जांच

ता. ८ यल्लंदू के कांग्रेसी कार्यकर्ता श्री वेंकट रामलू ने सरकार से मांग की कि यल्लंदू की दुर्भिक्ष स्थिति की सहायता कार्य-आरंभ कर दें।

ता. ९ दत्त जयन्ती यात्रा के अवसर पर माहूर में हजारों संख्या में यात्रियोंकी भीड।

ता. १० सेन्ट्रल रेल्वे तथा वैस्टर्न रेल्वे के हाकी टूर्नामेंट में सेन्ट्रल रेल्वे की विजय।

ता. ११. वित्त मंत्री श्री मेलकोटे ने बताया कि विक्रेता पशुओं की बिक्री के बाद-ही सेलटेक्स दें।

भोंडा लक्ष्मण का अपमान किए गए उर्दू पत्र 'ताजियाना' के विरुद्ध विधानसभा में चर्चा।

ता. १२. हैदराबाद सरकार ने घोषणा की कि सर्राफा पर बिक्री कर में पर्याप्त कमी होगी।

ता. १३. उपराष्ट्रपति श्री राधाकृष्णन् १० जनवरी को हैदराबाद आएंगे। और उस्मानिया विश्व-विद्यालय के दीक्षान्त समारोह में भाग लेंगे।

ता. १४. राज्य आबकारी विभाग द्वारा गैर कानूनी मादक द्रव्य के निर्माण को रोकने के लिए योजना बद्ध आन्दोलन प्रारम्भ।

ता. १५. ज्ञात हुआ है कि केन्द्रीय कानून हैदराबाद राज्य में संशोधन समेत क्रियान्वित किए जायंगे।

ता. १६. आंध्र शहीद श्री रामलू को विधान सभा द्वारा श्रद्धांजलि।

आदेशानुसार उबले चावल नहीं बेचे जायंगे।

ता. १७. निजाम शुगर फैक्टरी का विवाद सुलझाने में सरकारी प्रयत्न असफल।

विश्व

ता. २० काहरा में अरब एशयाई देशों का सम्मेलन का आयोजन।

ता. २१ जापान में एक रासायनिक कारखाने में विस्फोट के कारण ३० मरे ५५० घायल।

ता. २३ सुरक्षा परिषद में श्रीमती पंडित ने घोषणा की कि भारत को संयुक्त आंग्ल अमरीकी प्रस्ताव अस्वीकृत।

ता. २४ भारत द्वारा काश्मीर के सम्बन्ध में ब्रिटिश अमरीकी प्रस्ताव स्वीकृत।

ता. २५ कोईराला बन्धुओं से समझौते की आशा पुनः क्षीण।

ता. २६ पश्चिमोत्तर तिब्बत से नेपाल शांति मिशन वापस।

ता. २७ श्री चर्चिल आइसन आवर से मिलकर कोरिया पर विचार विमर्श करेंगे।

ता. २८. कराची में भीषण भूकम्प।

ता. २९ पश्चिमी राष्ट्रों द्वारा अरब देशों और विशेषतया मिश्रको शस्त्रास्त्र देनेके समाचारोंसे उनकी सरकार चिन्तित है।

ता. ३० जर्मनीको दी जाने वाली अमरीकी सहायता बन्द।

ता. ३१ केन्या के एक भारतीय ने घोषणा की कि वे ५ जनवरी से चर्चिल के घर पर सत्याग्रह करेंगे।

ह्निवत करने के विषय पर विचार करेगी।

ता. २९ निजाम शुगर फैक्टरी के अधिकारियों की लापरवाही की, गन्ना उगाने वालों के द्वारा शिकायत।

भारत

कमीशन नियुक्त न हुआ तो १ जनवरी से हड़ताल करेंगे।

ता. २२. इलाहाबाद के समीप ट्रेन दुर्घटना। फलस्वरूप व्यक्ति मरे और ५ घायल।

ता. २२. बम्बई के यूनेस्को-सम्मेलन ने अपील की कि दक्षिण एशिया में निशुल्क शिक्षा की प्रगति के लिए तुरन्त कार्यवाही हो।

ता. २४. बहुसूत्री विक्री कर लागू करने के लिए दूसरा अध्यादेश जारी।

ता. १५. आन्ध्र राज्य के निर्माण के सम्बन्ध में प्रारम्भिक विचार विमर्श

ता. २६. बम्बई सरकार के कृषि मंत्री ने आश्वासन दिया कि बम्बई सरकार किसी भी व्यक्ति को भूका न मरने देगी।

ता. २७. राजकोट में विक्री कर आन्दोलन का हिंसात्मक रूप।

ता. २८ सुरक्षा परिषद द्वारा काश्मीर की मौलिक समस्या की निरन्तर उपेक्षा।

ता. २९. जम्मू में पुलिस द्वारा भीड़ पर गोलीबार।

श्री एन. बी गाडगिल कांग्रेस समिति की बैठक में जाते समय दूसरी बार ट्रेन में लूटे गए।

ता. ३०. गृह मंत्री ने घोषणा की कि मद्रास नगर को आन्ध्र में नहीं शामिल किया जायेगा।

ता. ३१. महाराष्ट्र की खाद्य स्थिति के सम्बन्ध में बम्बई का उच्चस्तरीय सम्मेलन।

---

* लिए। इन में एक महिला भी है।

ता. २९. कांग्रेस कार्यकारिणी कांग्रेस के संविधान में संशोधन कार्या-**

घर

ता. १८. कालगी में डेढ़ लाख रुपये की लागत की तीन सौ एकड़ भूमि भूदान आंदोलन को प्रदान की गयी।

ता. १९. विधानसभा में अविश्वास का प्रस्ताव नामंजूर १८ वोटों से कांग्रेस को सफलता।

ता. २०. हैदराबाद के ऐतिहासिक चारमिनार से ४०० मिल की सायकिल रेस का मार्च।

ता. २१. बन्दी-दिवस के उपलक्ष्य में भाषण देते हुए मुख्य मंत्री श्री रामकृष्णराव ने कहा कि बन्दियों के सुधारने का ढंग बदलो।

ता. २२. छात्र संघ के अधिवेशन में सांस्कृतिक तथा साहित्यिक कार्यक्रम का आयोजन।

ता. २३. जमैयत के अध्यक्ष श्री सैयदशाह नुरूल्ला हुसेनी ने कहा कि हम सम्प्रदायवादी नहीं है।

ता. २४. एक सरकारी प्रवक्ता ने बताया कि रजाकार नेता रजवी पिछले कुछ दिनों से अस्वस्थ है।

ता. २५. श्री बी. रामकृष्णराव ने अन्न संकट के बारे में आश्वासन देते हुए कहा कि दुर्भिक्षग्रस्त क्षेत्रों में लगान आदि वसूल नहीं किया जायगा।

ता. २६. कंट्रोल कमाडटीज कमिटी की बैठक जनवरी २६ को होगी जिस में राज्य के व्यापारियों के प्रतिनिधियों से महत्व पूर्ण चर्चा होने की सम्भावना।

स्वामी रामानन्द तीर्थ पुनः कांग्रेसाध्यक्ष निर्वाचित। श्री जनार्दनराव से १५ मत अधिक प्राप्त।

ता. २७. हैदर[illegible] प्रदेश कांग्रेस ने अधिवेशन के लिए [illegible] डेलिगेट चुने *

सत्य सुगम वर्ग पहेली नं. १० का सर्व शुद्ध हल

१. सचाई २. दान ३. नारी ४. राज ५. कार ६. नग ७. हसरत ८. रस्ते ९. जलता १०. तीर

शुद्ध हलपर— ८७५), १ गल्तीपर ९४), २ गल्तीपर २), ३ गल्तीपर १=), ४ गल्तीपर ।≡)

दी मारवाड़ी प्रेस लिमिटेड का वार्षिक प्रकाशन

जनवरी सेल सन् १९६३ ई.

की दर सूची

१. डायरी वकालत उर्दू साधारण जिल्द ३।।) पाकीट ४) कोना पुस्ता चर्मी ४।।) सालिम चर्मी ५।।) बटनदार चर्मी ६) जायद कागज चर्मी ७) जायद कागज चर्मी-बटनदार ७।।) खुली २।।।)

२. डायरी वकालत अंग्रेजी साधारण जिल्द २) पाकीट २।।) चर्मी ४) बटनदार चर्मी ४।।) खुली १।।।)

३. हिन्दी तेलगु औसत डायरी प्रति १।) दर्जन १३।।) सैकडा १००) पाकीट १।।=) कोना पुस्ता चर्मी २।) सालिम चर्मी ३।।) बटनदार चर्मी ४) खुली १)

४. उर्दू औसत डायरी सेम चार्जेस.

५. उर्दू जेबी डायरी प्रति ।।।=) दर्जन ९) सैकडा ७०) पाकीट १।) चर्मी १।।।=) बटनदार चर्मी २।) खुली ।।=)

६. पाकीट डायरी डबल डेट अंग्रेजी ।।=) सैकडा ५०) भारी बैंडिंग १)

७. टेबल क्यालेंडर २।।) खुला २)

८. दैनिक राष्ट्रीय क्यालेंडर १) खुला ।।।) दर्जन ७।।) सैकडा ६०)

९. „ „ „ छोटा ।।।) „ ।।) „ ५।) „ ३५)

१०. एंगेजमेन्ट प्याड़ मूल्य ।।।=) दर्जन ९।।।) सैकडा ७५)

११. वॉल क्यालेंडर हिन्दी ।।=) „ ६) „ ४५)

१२. „ उर्दू ।) „ २।।=) „ २०)

१३. „ अंग्रेजी ।) „ २।।=) „ २०)

१४. हिन्दी जेबी जन्त्री -) सैकडा ३।।) हजार ३२।।)

१५. तेलुगु „ „ -) „ २।।) „ २५)

१६. उर्दू दफ्तरी „ ।) दर्जन २।।=) सैकडा २०)

नोट:—इसके अलावा इच्छानुसार नाम के क्यालेंडर आर्डर देने पर सप्लाई करते हैं। आर्डर के साथ २५) रु. प्रतिशत एडवांस भेजने की कृपा करें।

मैनेजर विक्री विभाग

टेलीफोन नं. ४३४३ :— दी मारवाडी प्रेस लिमिटेड अफ़ज़लगंज हैदराबाद (द.)

मुद्रक व प्रकाशक:—बालकृष्ण लाहोटी, मैनेजिंग डायरेक्टर, दी मारवाड़ी प्रेस लि. हैदराबाद द.
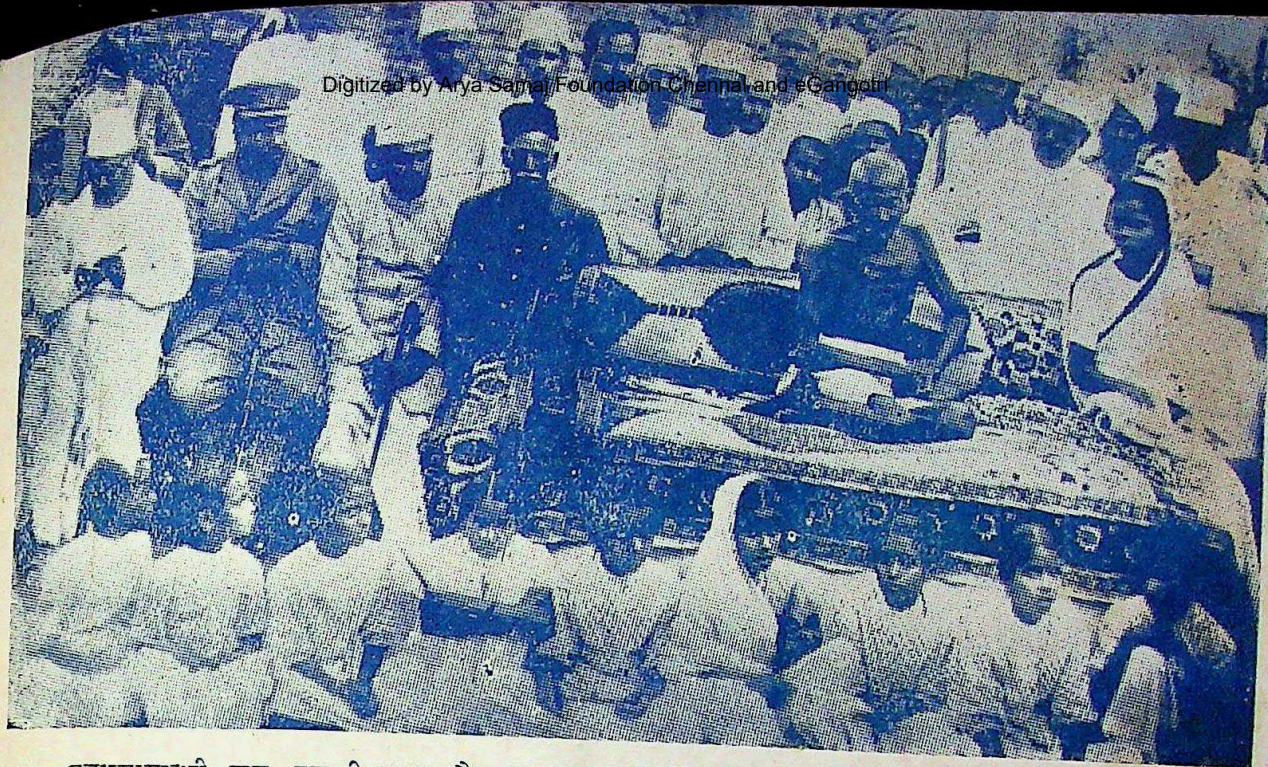
महात्मागान्धी जब पहली बार हैदराबाद पधारे थे उस समय लिया हुआ चित्र। साथ में श्री रामकृष्णजी धूत तथा श्री वंकटलालजी बद्रुका आदि हैं।

स्वा. श्री गोविन्दरावजी नानल हैदराबाद कांग्रेस के प्रथम अध्यक्ष। इन्ही के नाम से नानल नगर बसाया गया जहां कांग्रेस महासमिति का ५८ वां अधिवेशन हो रहा है।

DAKSHIN BHARATI'S Regd. No. H. 428

दक्षिण भारती

मार्च १९५३

अस्तित्व की अपेक्षा कर आपने

मंत्रि-मंडल को त्याग दिया।

श्री फूलचन्दजी गांधी, शिक्षामंत्री

श्री. वी. वी. राजू, श्रम मंत्री

श्री. जगन्नाथरावजी चन्द्रकी, कानून मंत्री

हैदराबाद सरकार द्वारा स्कूलों, कालिजों तथा वाचनालयों के लिए स्वीकृत

दक्षिण भारती

सचित्र हिन्दी मासिक पत्रिका

सम्पादक मण्डल

रामानुजदास मूतड़ा (प्रधान संपादक)

वे. आंजनेय शर्मा, सिद्धय्या पुराणिक

बालकृष्ण लाहोटी (संचालक)

श्रीनिवास सोनी (प्रबन्ध संपादक)

मार्च १९५३ } ८६, अफ़ज़लगंज, हैदराबाद { वार्षिक ६) अंकका ॥) -भारती

विषय-सूची

वर्ष ३] हैदराबाद, मार्च १९५३ [अंक ३

सम्पादकीय

हमारा बजट हमारी दृष्टि में

२७ फरवरी की शाम को भारत के वित्त मंत्री श्री चिंतामण देशमुखने १९५३-५४ का बजट लोक सभा में प्रस्तुत किया है। इस बजट में ४३७७६ लाख की आय तथा ४३८८१ लाख का व्यय आंका गया है। यानी यह बजट १०५ लाख के घाटे का प्रस्तुत हुआ है। इस घाटे की पूर्ति के लिए आज की कर प्रणाली में तथा इसकी दर में परिवर्तन लाया गया है। इससे घाटे की पूर्ति होगी या नहीं यह हम नहीं कह सकते पर भारत की जनता का दैनिक जीवन अवश्य ही प्रभावित होगा।

रोटी, कपड़ा, मकान और शिक्षा आज के भारत की मुख्य समस्याएं हैं। इन समस्याओं के साथ-साथ राजनीति की उथल-पुथल को भी साथ लेकर हम इस बजट को देखना चाहते हैं।

जहांतक रोटी का सवाल है भारत इस दिशा में स्वावलम्बी नहीं है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार भारत में १० % अनाज की प्रतिवर्ष कमी होती है। इसकी पूर्ति के लिए भारत सरकार को बाहर से अनाज मंगाना पड़ता है। ३० करोड़ जनता का उदर भरण तो भारत भूमि की उपज से होता है और शेष भूखी जनता के लिए विदेशी अनाज मंगाया जाता है। यह अनाज बाहर से महंगा आता है और यहां भारी नुकसान उठाकर सरकार को जनता में इसका सस्ते दामों वितरण करना पड़ता है। दरिद्र जनता को सरकार की इस सहायता से अनाज सस्ता मिल जाता है। परन्तु नये बजट के अनुसार आजतक रोटी के सवाल को हल करने में सरकार की ओर से मिलने वाली यह सहायता आगामी वर्ष नहीं मिलेगी। इसका अर्थ यही कि अनाज की महंगाई को रोकने के लिए सरकार जो २१११ लाख रुपयों का योग देती थी वह अब नहीं रहेगा और अनाज महंगे दामों जनता को खरीदना पड़ेगा। इससे जनता का दैनिक जीवन प्रभावित होना निःसंदेह है।

आज की दूसरी समस्या कपड़े की है। एक ओर तो कपड़े की खपत कम है, दूसरी ओर लोगों को अर्धनग्न रहना पड़ता है। यानी माल अधिक तयार होता है परन्तु पहनने-वालों के हाथ में खरीदने की शक्ति नहीं है।

नये बजट के अनुसार मोटे माल के दामों में हेर फेर नहीं किया गया है उसे अपने हालपर छोड़ा गया है। बारीक और बहुत बारीक कपड़े पर एक आना तीन पाई और तीन आने तीन पाई प्रति गज की दर से कर लगाया गया है। इसका अर्थ यह कि कपड़ा और महंगा कर दिया गया है। कारण मोटे और बारीक कपड़ों के दाम एक दूसरे पर आधारित होते हैं। इसका प्रमाण देने की जरूरत नहीं जान पड़ती कारण जिस दिन से बजट की बातें झरने लगी हैं, कपड़ा बाजार तेज होता जा रहा है। जहां मिलों के गोदाम ग्राहकों के अभाव में भरे पड़े थे नये बजट का आभास होते ही पहले ही दिन ३५० लाख रुपयों का कपड़ा मिलों से व्यापारियों के गोदामों में पहुंच गया। इसमें मोटा बारीक सभी तरह का कपड़ा रहा है। इससे स्पष्ट होता है कि कपड़े की समस्या को इस नये बजट ने और जटिल बना दिया है।

जहां तक मकान की समस्या का प्रश्न है इसमें कोई विशेष परिवर्तन नहीं दिखाया गया है। जो परंपरा गत चाल बनी आ रही है उसी चाल से आगे बढ़ने का निश्चय हुआ है। इस वर्ष मकान, पुल आदि बनाने में १४८१ लाख रुपये खर्च हुए आले साल १५०५ लाख रुपये खर्च होंगे न जाने इस रकम का कितना भाग मकान बनाने वाले गुत्तेदारों व कंट्राक्टरों के मकानों को बनाने में खर्च होगा।

राष्ट्र की जो बुनियाद होती है वह है उसकी शिक्षित जनता। जहां इसका अनुपात अधिक होता है देश सुदृढ़ बनता है और जहां यह गिरा होता है देश दरिद्र बनता जाता है। भारत में साक्षर लोगों की संख्या १५ प्रतिशत से अधिक नहीं है ऐसी स्थिति में इसका स्तर क्या हो सकता है, यह स्पष्ट है। चीन, जापान और रूस ने औद्योगिक क्रान्ति के साथ साथ शैक्षणिक क्रान्ति भी की। कम अधिक प्रमाण पर इन देशो ने क्रान्ति के बाद पहला कदम उठाया देश की जनता को शिक्षित बनाने में। क्रान्ति के बाद जो बजट इन देशों के बने उनमें शिक्षा को प्रधानता दी जाती रही है। इसके विपरित हमारा बजट आज पांच वर्षों से स्वतंत्र देश की हैसियत से बन रहा है पर उसमें कभी पूरे बजट का 1⅓ या दो प्रतिशित रुपया शिक्षा पर खर्च नहीं हुआ। हमेशा इससे कम ही खर्च हुआ। इस वर्ष भी नये बजट की यही स्थिति है। इसके अनुसार शिक्षा पर केवल १⅓ % बजटांश ही खर्च हो रहा है। इससे स्पष्ट है कि इस दिशा में भी नया बजट हमारे लिए विशेष सुविधा लाने वाला नहीं है।

दैनिक जीवन की इन प्रधान बातों के बाद की अन्य आवश्यक बातों को लें तो डाक, तार, रेल मोटर, पान-सुपारी घरेलू उद्योग, व्यापार आदि हैं। सब को लेकर अलग अलग दर्शाना स्थानाभाव के कारण संभव नहीं है फिर भी कुछ को देखिये—

१०५ लाख की जो कमी बजट में आई है उसे पूरा करने के लिए डाक की दरों में और वृद्धि की गई है। डाक, तार की दरें पहले ही काफी बढ़ी हुआी हैं। जनता इनके कम होने का स्वप्न देखती है सरकार इन्हें बढ़ाना चाहती है। इस वर्ष नये बजट में डाक की दरें और बढ़ा दी गई है। रजिस्ट्रेशन के लिए साढें चार आने लगते थे अब पूरे छः आने लगेंगे यानी लिफाफा दो आने का और रजिस्ट्री खर्च ६ आने कुल आठ आने होगा जवाब तलब हो तो एक आना और अधिक यानी नौ आना कल्दार जिसका हाली होता है १०॥ आना। अब हाली की बात करना व्यर्थ है क्यों कि अगले महीने से यह सिक्का तो इतिहास का ही बन कर रहने वाला है फिर भी जहां हैदराबाद की जनता कुछ वर्षों पहले तीन आने हाली में रजिस्ट्री करके काम निकाल लेती थी उसे आज तीन गुना से अधिक देना अखरता ही है। बीमे की दरों में भी ५० % की वृद्धि ही हुआी है।

यही हाल रेल्वे पार्सल, बुक पोष्ट, नमूना पैकेट आदि का है। सब में वृद्धि हो गआी। महंगाआी में यह महंगाआी और जनता को सतायेगी ही। सरकार का अनुमान है कि इससे १९० लाख का अधिक लाभ होगा।

हमारी दृष्टि में यह संभव नहीं है। मंहगाई के कारण इस व्यवहार में भारी कमी होगी। लोग जहांतक हो सके अति आवश्यक कामों के लिए ही इन डाक तार सुविधाओं को काम में लायेंगे जिससे सरकार को लाभ तो दूर हानि ही न हो तो भी काफी है।

विलास वस्तुओं के नाम पर आज के युग की आवश्यक वस्तुओं पर कर बढा दिया गया है। गरीबों की दृष्टि से यह वस्तुएं विलासिता की हो सकती हैं पर सभी गरीब नहीं हैं। हैं तो भी अपने को वैसा बताना नहीं चाहते। गरीब होकर भी मध्यम वर्ग और उससे भी बढकर बताना चाहते हैं। ऐसी अवस्था में इन के लिए विलासिता की चीजें आवश्यक ही तो हो जाती हैं। आखिर आवश्यक चीजों की कोई भूमध्य रेखा या कर्क रेखा की तरह सीमागत रेखा थोड़े ही खिंची गई है। वह तो रहन-सहन के दर्जे और दैनिक जीवन स्तर के परिवर्तन के साथ साथ बदलती जाती है। इससे नया बजट मध्यम वर्ग के लिए तो और भी कर भार बढ़ाने वाला ही सिद्ध होता है।

सर्व साधारण जनता के जीवन में जहांतक खर्च का सवाल है हमने नये बजट का संबन्ध इससे बताया है। इससे स्पष्ट है कि जीवन स्तर बढाने की जगह जो बना है उसे बनाये रखने में ही कठिनाई होगी। जीवन महंगा बनता जायगा। परन्तु केवल खर्च की बात करने से ही नहीं चलता। खर्च तभी हो सकता है जबकि आमदनी भी साथ ही साथ होती रहे। सरकार के खर्च का बजट पहले बनता है और फिर उसके अनुसार आमदनी की मेंद ढूंढी जाती हैं। बस न चलने पर कर भार को बढाकर खर्च की पूर्ति की जाती है। जनता का बजट ऐसे नहीं बनता। आमदनी को देखकर वह खर्च सोचती है। यही मूल भेद सरकार और जनना में है। सरकार का अपने ही चश्में से जनता को देखना कहां तक उचित है?

आमदनी की दृष्टिसे देखा जाय तो भारत की कृषि प्रधान जनता, इस पर निर्भर व्यापारी वर्ग, औद्योगिक मजदूर तथा सरकारी, अर्धसरकारी व खानगी नौकर इनमें से किसी की भी आमदनी में इस बजट के कारण वृद्धि होनेवाली नहीं है। कृषकों से सरकार लेवी, खुश खरीदी आदि के रूप में कृषि उत्पादन सस्ते दामों खरीदेगी, इस से अनाज तथा अन्य कृषि उत्पादन के महंगे होने से कृषकों को लाभ नहीं होगा। व्यापारियों पर तो सरकार की पहले से ही विशेष कृपा है। कर भार और व्यापार का लेखा बताने में ही उनका समय नष्ट हो जाता है। कमाई के लिए उनके पास समय ही कहां? औद्योगिक मजदूरों की दशा तो चिंताग्रस्त है ही। श्री चिंतामणि देशमुख ने बता ही दिया है कि इस वर्ष औद्योगिक उत्पादन बढा है, पर उसके निकासी का मार्ग अभी नहीं खुला है। इसके साथ-साथ मालिक और मजदूर का द्वन्द्व तो उन्हें परेशान करने के लिए सरपर सवार है ही।

रही सरकारी व गैर सरकारी नौकरों की स्थिति; सो जहां गिने पैसे मासांत में हाथ में आते हैं वहां महंगाई के काल में बरकत ही कहां?

अब हम सरकार की सुविधा को ध्यान में रखकर बजट का विश्लेषण करेंगे। यह देखेंगे कि सरकार की हक में भी यह बजट कहांतक लाभप्रद सिद्ध हो सकता है।

गत वर्ष का बजट और वर्षांत में इसीका संशोधित रूप देखें तो साफ जाहिर होता है कि बजट केवल लोक सभा के सामने कागजी योजना ही सिद्ध हुआ। जहां बजट में ३७३ लाखकी बचत होनी थी वहां ४२९ लाख का घाटा हुआ है। सरकार जब पहले खर्च का सोचकर फिर आमदनी का रास्ता निकालती है वहां अगर पहले लाभ बताकर अंत में घाटा बताया जाय तो इसे जनता को अंधकार में रखना ही नहीं बल्कि सब्जबाग दिखा कर दूसरी मंजिलपर-दूसरेवर्ष में — उनकी जेब काटना ही है। इससे जनता को लाभ का बजट देखकर

जो क्षणिक शान्ति मिलती है उससे कभी गुना अधिक कठिनाईग्रस्त अशांति से क्षीण बनना पड़ता है। पिछले साल की यही स्थिति रही है। इस वर्ष भी इसीका आभास हो रहा है। कारण बजट का ४६ % भाग यानी १,९९,८३ लाख रुपया तो रक्षा और सेना पर ही खर्च होगा। सिविल प्रशासन के रूप में ७१२७ लाख रुपये फिर पुलिस पर खर्च होने ही वाले हैं। यानी २७११० लाख रुपये जो कुल व्यय के ६६ % होते हैं पुलिस व सेना पर खर्च होंगे। इससे निर्माण कार्य में योग मिलने वाला नहीं है। शेष मदों में से आय एकत्र करने में ३२४९ लाख, ब्याज से ३७१७ लाख, मुद्रा निर्माण में २५७ लाख, प्रान्तों और केन्द्र में लेन देन में २६३६ लाख यानी ६८५९ लाख रुपये भी व्यवस्था और सरकारी कर्मचारियों के वेतन में ही खर्च होगा। इससे भी उत्पादनवृद्धि और निर्माण में योग मिलनेवाला नहीं है। इस तरह जब कुल ३६९६९ लाख रुपये निर्माण रहित कार्यों ही में खर्च होजाते हैं, तो शेषसे क्या निर्माण होगा और क्या उसका प्रबन्ध ? केवल पंचवर्षीय योजना और वित्तकमीशन की सिफारिश की आड़ लेकर भोली जनताको समझाने से क्या लाभ ? हम तो देशका उचित निर्माण चाहते हैं। बजट में जो कर परिवर्तन हुआ है उससे क्या होने वाला है यह भी देख लीजिए।

कर परिवर्तन में पहली मुख्य बात है इन्कम टैक्स से छूट की सीमा में वृद्धि। जहां व्यक्तिगत रुपये ३६०० की आय पर और हिन्दू संयुक्त परिवार को ७२०० की आय पर कर लिया जाता था, वहां इनमें ६०० और १२०० रुपयों तक की सीमा और बढ़ा दी गई है। इससे सत्तर हजार मामलों से आयकर अधिकारियों को राहत मिली। पर इसका असर यह हुआ कि सरकार को ८२ लाख का घाटा सहन करना पड़ा। जिनके लिए ३६०० व ७२०० पर कर बोझ बन रहा था वहां ४२०० और ८४०० पर भी बोझ ही रहेगा। अधिकारियों के लिए ८ लाख मामलों में ७० हजार कम हो जांय तो क्या यह संभव है कि वे पहले की अपेक्षा कुछ अधिक भलाई करेंगे ? फिर यह सुविधा उस सरकार ने दी है जो गांधीवाद का दम भरती है। जहां समानता लाने की राग अलापी जाती हैं, वहाँ ३६०० और ७२०० पर आय कर भार बता कर सुविधा देना और १००-५० मासिक की आय कर उदर भरण करने वालों पर सुपारी, पान, चाय और पोस्ट व पार्सल आदि पर का कर भार बढाकर और अधिक भार डालना कहांतक उचित है, देख लें।

अंतर्राष्ट्रीय मामलों में भी यही पोल हुई है। जूट का माल संसार में केवल भारत भूमि में ही बनता है। इसका कृत्रिम बदल निकला है पर वह इससे कई गुना महंगा है। ऐसी अवस्था में इस पर से १७५ रुपये प्रति टन के बजाय केवल ८० रुपये प्रतिटन चूंगी रख कर ३ करोड़ ५० लाख की हानि कर लेना कहांतक उचित है ? संसार के व्यापार क्षेत्र में अपने उत्पादन के लिए स्थान बनाये रखने में क्या जूट ही वित्त मंत्री को दिखाई दिया ? जापान कपडे की प्रतिस्पर्धा के लिए डंके की चोट आवाज लगा रहा है वह शायद वित्त मंत्री ने नहीं सुनी। अन्यथा कपड़ा, चाय, शक्कर, आदि जैसे महत्वपूर्ण उत्पादन की रक्षा करने की जगह जूट की रक्षा वित्त मंत्री शायद न करते। इस नीतिसे जिन उद्योगों के पैर लड़खड़ा रहे हैं उन्हें सहयोग न मिलकर केवल स्वावलंबी बने हुए एकाधिकार प्राप्त उद्योग कों और उन के मालिकों को और मोटा बनाने की चेष्टा की गई है।

नियोजन स्थिति भुगतान तुला और पूंजीगत खर्च की बात में भी जो दलीलें दी गई हैं वे इसी तरह की गोल मोल-सी हैं। स्थानाभाव के कारण इस पर हम अधिक प्रकाश नहीं डाल सकते।

देश को सुदृढ़ बनाने में बापूजी ने घरेलू उद्योग, राष्ट्रभाषा का उत्थान, बुनियादी शिक्षा, अनिवार्य प्रारंभिक शिक्षा आदि का मार्ग बताया था। परन्तु उनकी अनुयायी सरकार ने जहां ६५ 0/0 सेना और पुलिस पर खर्च करना निश्चित किया है, वहां इन मदों में से किसी पर भी १ 0/0 से अधिक की गुंजाइश नहीं निकली है। ऐसी

अवस्था में बापूजी का रामराज्य कैसे आ सकता है, यह एक विचारणीय बात ही है। भाषावार प्रांत रचना के कारण या राजनीति की बल-दुर्बलता के कारण केन्द्रीय सरकार और प्रांतीय सरकार में मत भेद होकर देश की एकता में क्षणिक बाधाएं उपस्थित हो सकती हैं। ऐसी अवस्था में राष्ट्रभाषा की सबल डोर सारे मणियों को एक माला के रूप में संगठित रखने में सहयोगी सिद्ध होती है। संसार की बात छोड़ दें तब भी प्राचीन भारत के इतिहास में संस्कृत भाषा ने इसका उदाहरण रख छोड़ा है। परन्तु यह देश का दुर्भाग्य है कि राष्ट्रभाषा की ओर देश के कर्णधारों का ध्यान उतना नहीं है, जितना होना चाहिए था।

तब भी बजट, बजट ही तो है। इसमें परिवर्तन अब भी संभव है। इस लिए हम कुछ सुझाव सरकार के सामने रखना चाहते हैं।

डाक, रेल, यातायात, पार्सल, जीवनोपयोगी चीजें आदि में जो कर वृद्धि की गई है, वह न हो। इन्कम टैक्स की सीमागत दर यथा पूर्व ही रख कर उस विभाग की व्यवस्था में और सरकार की आय में परिवर्तन न होने दें। अंतर्राष्ट्रीय उलझने बढ़ रही हैं इस लिए हम रक्षा खर्च के विषय में कुछ नहीं कहना चाहते। घरेलू उद्योग धन्धों को जो नाम मात्र का प्रोत्साहन दिया जा रहा है उसमें वास्तविक वृद्धि हो। राष्ट्रभाषा के कार्य को तीव्र गति से आगे बढ़ाने को सोचे ही नहीं अपितु कुछ करे भी। 'सुपारी' देश के गरीब अमीर सब की जरूरत पूरी करने वाली वस्तु है, इस पर कर भार न डाले। कपड़े पर कर लगा कर इसे महंगा न होने दे। खाद्यान्नों के मूल्यों को संतुलित रखने में दी जाने वाली सहायता को न बंद करें। जूट के माल पर चूंगी की दर को कमी कर राष्ट्रीय आय को न घटा ले। इसकी जगह देश के प्रमुख उद्योगों जैसे कपड़ा, चाय, शक्कर इस्पात आदि को प्रोत्साहन दें। कृषि उत्पादन के लिए अधिक से अधिक प्रयत्न करें। पंचवर्षीय योजना के आड़ विकास योजनाओं में जो धन खर्च होता है उसका उचित उपयोग हो, इसका ध्यान रखे। बुनियादी शिक्षा और प्रारंभिक शिक्षा को बढावा दें। ऐसा करने में सरकार के सामने खर्च का सवाल उपस्थित हो सकता है और बजट की दुर्बलता की बात दर्शाई जा सकती है। परन्तु जिन व्यर्थ की सुविधाओं या हेर फेर से हानि हो रही है उसे बचाने से तथा कर लगाना ही हो तो उसका उपयोग इसमें किया जाय तो यह सब काम बन सकता है, इसमें सफलता प्राप्त की जा सकती है और यह संभव भी है।

पाठकों तथा लेखकों से—

दक्षिण भारती को अधिकाधिक उपयोगी बनाने के लिए पाठकों तथा लेखकों क सुझावों का हम सदा स्वागत करेंगे। उपयोगी पत्रों को यथा संभव प्रकाशित करने का प्रयत्न किया जायगा।

—संपादक

गीत

जीवन की अस्थिर लहरों में;
बिखर गये वे स्वप्न हमारे ॥

आशाओं के दीप संजोये; सुन्दर सी होगी उजियारी
किन्तु पवन के प्रबल झकोरों से, छाई भीषण अन्धियारी
निबिड कालिमा में कम्पित हैं---
दुर्बल जर्जर प्राण हमारे।
बिखर गये वे स्वप्न हमारे ॥ १ ॥

अवनी के शुचि रंगमंच पर; खींची थीं इक स्वर्णिम रेखा।
किन्तु सभी छलना था वह तो!
नग्न रूप जग का; अब देखा।
जो अपने थे हुए पराये।
प्रेमी कपट वेश थे धारे
बिखर गये वे स्वप्न हमारे ॥ २ ॥

प्रबल तरंगों बीच काल की
जल कण सम मानव उतराता।
जटिल कर्म बन्धन में जकडा
घोर भंवर में गोते खाता
निर्बल; निरअलम्ब; तरंगों में
उतराता हाथ पसारे।
बिखर गये वे स्वप्न हमारे ॥ ३ ॥

झूठी है जग की प्रवञ्चना;
यहां न कोई गीत किसी का।
भग्न हृदय वीणा कम्पित स्वर---
क्या गाऊं मैं गीत किसीका।
धुन्धला-सा; सपने-सा जीवन;
केवल क्षण भंगुरता धारे
बिखर गये वे स्वप्न हमारे ॥ ४ ॥

--- *रामसिया 'रमेश', हिंगोली*

गीत

किसी की प्रेरणा से विकम्पित बात है, साथी!

समीरण का पुलक जीवन निरन्तर साधना का बल,
अपरिचित पंथ पर प्रतिक्षण प्रगति की गति चरण चंचल,
अहर्निशि की चिताओं पर निरन्तर सृष्टि अवलम्बित
नई अभिव्यक्तियाँ केवल पुरानी बात हैं, साथी!

सनेही की तृषा से ही सदा यह सिक्त है बाती,
कि जिसकी भेंट को प्रस्तुत युगों से प्राण की थाती,
निराशा के तिमिर में ज्योति आशा की रही जलती
जताने को सितारों की अंधेरी रात है, साथी!

किया कुछ तत्व का संचय लुटा कर स्वत्व मैंने भी
विरह की तिक्तता में प्राप्तकर अपनत्व मैंने भी
मदिर की प्यालियों की रिक्तता मदहोशियां भरतीं
लगा यह सान्ध्य-चिन्तण में किरण का प्रात है, साथी!

— योगेन्द्रनाथ शर्मा, बाराचकिया, बिहार

मैं भूलों को पंथ दिखाऊं!

अंधियारे के बीच अकेला राह दिखाता रहूँ जगत को!

*

जगत मुझे कहता दीवाना
दिल न कभी जिसने पहचाना
मेरा ध्येय जगत हित-चिन्तन, कहता—जग उठ स्वयं प्रणत हो।

* *

मेरे साथ अटल दृढ़ बाती
घोर आंधियां भी झुक जातीं
नर है यदि नर की ही छाती, उन्नत मस्तक कभी न नत हो!

* * *

मैं भूलों को पंथ दिखाऊं
जलूं जगत के हित मिट जाऊं
मैं झंझा के बीच डिगूं ना, तन मन मेरा कर्म-निरत हो!
घोर तिमिर के बीच अकेला पंथ दिखाता रहूँ जगत को!

— आशाकान्त बी. आचार्य, अमरावती

विकास लीला !

— दि. ना. पळशीकर, हैदराबाद

वर्षा काळीं बीज रुजविलें
अंकुर त्याचें वरती झालें
पल्लवीतहिं वाढून झालें
जोमानें तें फार ॥
वृक्ष तयांचें पुढें जाहलें
गच्च फुलांनीं बहरून गेलें
मधुर फळांनीं आणि नटलें
शोभा देतीं फार ॥
पळापळाला विकास झाला
उसंत नाहीं तिळभर त्याला
धन्य होय ही अगाध लीला
साऱ्या जगतीं फार ॥

मराठी कविता का हिन्दी गद्यानुवाद

वर्षाऋतु में बीज बोया गया। कुछ दिन के पश्चात उसका अंकुर ऊपर निकला और साथ ही वह पत्तों से लदकर तेजीसे बढने लगा।

आगे चलकर पौधें वृक्ष के रूप में परिणत हुए और फूलों से भर गए। फूलों के फल हुए और वृक्ष अतीव सुन्दर दृष्टि गोचर होने लगे।

इनका पल-पल में विकास हुआ, क्यों कि उसने पल भर भी शान्ति नहीं ली, उन्नति करते ही गए, करते ही गए। धन्य है यह प्रकृति की अगाध लीला जो जग में प्रसिद्ध है।

कन्नड कविता

देह वीणा

एन्न कायव दण्डिगेय माडय्या
एन्न शिरव सोरेय माडय्या
एन्न नरव तंतिया माडय्या
एन्न बेरळ कड्डिय माडय्या
बत्तीस रागव हाडय्या, कूडल संगम
देवा उरदलोत्ति बिरिसय्या ॥

कन्नड कविता का हिन्दी गद्यानुवाद

मेरे शरीर का दण्ड बना, मेरे मस्तिष्क का 'भोपळा' (सितार के नीचे का गोलाकार) बना, मेरे शरीर की नसों को तार बना और मेरी उंगलियों को मिजराब बना कर बत्तीस रागों को गा।

हे संगमेश्वर ! मेरे उरस्थल को दबाकर इस बीन को बजा।

— महात्मा बसवेश्वर

कांग्रेस के ५८ वें अधिवेशन ने हिंदी के लिए क्या किया ?

अधिकतर कहा जाता है कि दक्षिण भारत में हैदराबाद एक ऐसा स्थान है, जहां से दक्षिण भारत भर में हिन्दी का प्रचार या प्रसार बड़ी ही सरलता से हो सकता है। और वास्तविक स्थिति भी ऐसी ही है। दक्षिण की कठिनाइयों को हल करने और सब बातों को ध्यान में रखते हुए कांग्रेस ने हैदराबाद में अधिवेशन का आयोजन किया। ५-६ लाख रुपया खर्च कर कांग्रेस ने जिस प्रकार पंचवर्षीय योजना, भाषावार प्रान्त रचना आदि के विषय में निर्णय किया गया, उसी प्रकार हिन्दी के लिए क्या किया ? जो दक्षिण भारत की एक महत्वपूर्ण समस्या है। इसके प्रसार व प्रचार के लिए किन-किन आयोजना का प्रस्ताव पास हुआ ? उत्तर, नहीं के बराबर ही है। दक्षिण की इस महत्वपूर्ण समस्या पर विचार विनिमय तक न हुआ, आश्चर्य है। यह स्मरण रहे कि दक्षिण में हिन्दी की बहुत ही अवहेलना हो रही है। कारण स्पष्ट है कि सरकार ही यहां की डुलमुल रही है। यदि मातृ-भाषा पहले और राष्ट्रभाषा बाद के स्थान पर राष्ट्रभाषा पहले और मातृ-भाषा बाद रखी जाती तो आज हिन्दी की दशा कुछ और ही होती।

हैदराबाद में हिन्दी के हितैषी या हिन्दी प्रेमियों की पहले से ही कमी रही और जो हैं वे दिन-पर दिन कम होते जा रहे हैं और राष्ट्रभाषा के स्थान पर मातृभाषा को प्रोत्साहन दे रहे हैं; जो स्वभावतः ठीक है, परन्तु यह दोष केवल उनका ही नहीं है अपितु केन्द्र की नीति का ही दोष है। बहुत से ऐसे सज्जन भी देखे गये हैं कि ऊपर से हिन्दी प्रचार का स्वांग रचते हैं और भीतर हिन्दी की खिल्ली उड़ाने से खुश होते हैं।

पहले हिन्दी और हिन्दुस्तानी का युद्ध हो रहा था, तब प्रदेश में कहीं हिंदी और कहीं हिन्दुस्तानी चलने लगी। २-४ वर्ष तक दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास का नाम हिन्दुस्तानी प्रचार सभा हो गया था और जब केन्द्र में हिन्दुस्तानी को हिन्दी ने पछाड़ दिया तो वापिस सभा ने हिन्दी प्रचार सभा कर दिया।

हैदराबाद में पुलिस एक्शन के बाद हिन्दी पढ़ने की ऐसी हवा चली कि प्रत्येक सभ्य आदमी हिन्दी पढ़ने में दिलचस्पी लेने लगा था, हिन्दी राष्ट्रभाषा जो हो चुकी थी। कुछ ही दिनों के पश्चात् हिन्दुस्तानी के प्रेमियों ने नागरी और फारसी लिपियों में हिन्दुस्तानी चलाने का निर्णय किया पर यह योजना विफल रही। इधर केन्द्र में बहुमत से हिन्दी को राष्ट्रभाषा मान लिया गया और हिन्दी उर्दू अलग हो गई।

इधर त्रिभाषी प्रांत अपनी-अपनी भाषा की उन्नति में लग गए। जनता हिन्दी पढ़े या न पढ़े उनकी मर्जी पर छोड़ दिया गया। जिसका फल उल्टा ही निकला। ऐसा न होता तो शायद सरकारी कर्मचारी जिनको उर्दू से कार्य करना पड़ता था या करते थे, वे अधिकांश हिन्दी सीख ही जाते।

उस्मानिया विश्वविद्यालय को केन्द्राधीन लेने की घोषणा की गई परन्तु अभी इसका कुछ न हुआ और न होता दिखाई दे रहा है। कोई अंग्रेजी माध्यम की मांग करता है, कोई उर्दू माध्यम का नारा बुलंद कर रहा है। यह देखकर प्रान्तीय भाषाओं का भी अपना माध्यम बनाने की मांग करना भी स्वाभाविक है।

महान् आश्चर्य है कि हम हिन्दी रात-दिन बोलते हैं परन्तु केवल देवनागरी लिपि न जानने के कारण वे हिन्दी को कुछ और कठिन समझते हैं। सारांश यह कि हैदराबाद निवासी केवल लिपि ज्ञान से अपना हिन्दी ज्ञान काफी हद तक बढ़ा सकते हैं।

कुछ दिन पहले सरकार द्वारा सूचित किया गया कि सरकारी उच्च कर्मचारियों को मातृभाषा के अतिरिक्त एक और प्रान्तीय भाषा सीखना अनिवार्य है अन्यथा उनका 'ग्रेट' बन्द कर दिया जायगा। उन्हें कुछ मुद्दत भी दी गई। इसी प्रकार सरकारी कर्मचारियों को यह आर्डर दिया जाय कि वे निश्चित समय तक हिन्दी सीख लें। हो सकता है प्रान्तीय भाषा की तरह यह प्रयत्न भी सफल हो जाता।

(शेष पृष्ठ ४८ पर)

झंकार

— अनवर आगेवान, शिवराजगढ़, सौराष्ट्र

प्रेम

प्रेम एक ऐसा खेल है, जिसमें दो ही खिलाडी खेल सकते हैं और दोनों ही हारते हैं ।

आनंद

जगत को आनंदित हृदय से ही देखो । प्रत्येक स्थान पर दुःखित हृदय रो रहे हैं । तुम्हारे आनंद से किसी के भी हृदय का बोझ कम हो सकता है और उसे आनंद मिलेगा ।

उन्नति

उन्नति का मार्ग हम मानते हैं इतना सरल नहीं है । वह हमेशा स्थूल भावों का त्याग करता है ।

स्वभाव

आप जीवन को उज्ज्वल और उन्नत बनाने चाहते हैं तो सबसे पहले स्वभाव के रहस्य को ही पहचानो !

दान

यदि तुम दान करते हो तो समृद्धि के भंडार से नहीं परन्तु जीवन में से ही दान करो, वही सच्चा दान है ।

दुष्ट वृत्ति

यदि तुम्हारे हृदय में किसीका भी बुरा करने की इच्छा पैदा हो तो उसे उसी समय नष्ट करदोगे तो तुम्हारा शत्रु भी मित्र बन जायगा ।

सच्चा जीवन

दुःख के सागर में डूब जाओगे, तब ही तुम सच्चा जीवन जी सकोगे ।

सुख-दुःख

जो चीज तुम्हें दुःख कर मालूम होती है वह दूसरे के लिए सुखकर होती है, क्योंकि सुख-दुःख मन का भ्रम ही तो है ।

मैं

'मैं' का वास्तविक अर्थ है अनंत; आत्म स्वरूप सागर का एक बिन्दु । 'मैं' की स्मृति यानी बन्धन और विस्मृति यानी मुक्ति ।

साधना

बिना साधना जगत की कोई चीज साध्य नहीं है । जो बिना साधना साध्य है वह शाश्वत नहीं है । ऐसी नश्वर वस्तु की प्राप्ति के लिए यह जीवन है ? यह हमें समझ लेना चाहिए ।

सौंदर्य

सौंदर्य का सम्बन्ध आत्मा से है, शरीर से नहीं । आत्मा का सौंदर्य ही हमें सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् की ओर ले जाता है ।

स्त्री

स्त्री जिन्दगी की साज है और प्रेम उसका संगीत ?

नम्रता

प्रत्येक के साथ नम्रता और आदर पूर्वक व्यवहार करोगे तो इस दुनिया में तुम्हारा कठिन मार्ग सरल बन जायगा ।

चीन में भारतीय आचार्य (१)

— नारायण प्रसाद सिन्हा "जहानाबादी"

बोध रुचि ५७१ ई. में दक्षिण भारत में पैदा हुये। बारह वर्ष की आयु में ही उन्होंने घर छोड़ दिया और भ्रमण के साथ-साथ अपनी पढ़ाई भी चलाते रहे। ब्राह्मण-कुल में पैदा होने के कारण ब्राह्मण-दर्शन, ज्योतिष, गणित और आयुर्वेद का गंभीर अध्ययन किया था। उन दिनों पाण्डित्य की परीक्षा शास्त्रार्थ द्वारा ही होती थी। एक बार यश घोष नामके एक बौद्ध-भिक्षु से बोधरुचि का शास्त्रार्थ हुआ। यश घोष से ये अत्यन्त प्रभावित हुये और बौद्ध धर्म स्वीकार कर बौद्ध साहित्य का अध्ययन करने लगे। थोडे ही समय में इनकी गणना बौद्ध पंडितों में होने लगी।

बोध रुचि अभी दक्षिण भारत ही में थे कि उसी समय (५९२ ई.) चालुक्य दरबार में चीन का एक दूत-मण्डल आया। बोध रुचि के पाण्डित्य से प्रभावित हो दूत ने उन से चीन चलने की प्रार्थना की। दूत की प्रार्थना को स्वीकार कर वे समुद्र मार्ग से चीन के लिए रवाना हुये।

बोध रुचि ने चीन पहुँच कर अपने पूर्व प्रवासी पण्डितों की तरह ही संस्कृत ग्रन्थों का चीनी भाषा में अनुवाद करना प्रारम्भ कर दिया। उनकी सहायता के लिये एक अनुवाद-समिति भी बनी, जिसमें अनेक चीनी भाषा जानने वाले भारतीय पण्डित भी शामिल थे। लगभग ३४ वर्षों तक ये चीन में रहे और इस अवधि में कुल ५३ संस्कृत ग्रन्थों का चीनी अनुवाद प्रस्तुत किया। इनमें से आज सिर्फ ४१ ग्रन्थ ही चीनी त्रिपिटक में मौजूद हैं।

बोध रुचि द्वारा अनूदित ग्रन्थों में सब से महत्वपूर्ण ग्रन्थ है, रत्न कूट। इस में ४९ सूत्र हैं। वास्तव में उनका एक-एक सूत्र एक-एक ग्रन्थ है। चीनी, जापानी और कोरियाई जीवन पर इस ग्रन्थ ने बहुत प्रभाव डाला। इस ग्रन्थ समूह में सब से अधिक पढ़ा जाने वाला सूत्र है 'सुखावती व्यूह'। जापान के 'जोदो' सम्प्रदायका आधार यही ग्रन्थ है। बृहत् सुखावती व्यूह का २५२ ई. में संघ वर्मन ने और लघु सुखावती व्यूह का ४०५ ई. में कुमार जीव ने चीनी भाषा में अनुवाद प्रस्तुत किया था। इस ग्रन्थ की लोक प्रियता का अनुमान उससे भी लगाया जा सकता है कि उसके १२ बार चीनी-भाषा में विभिन्न विद्वानों द्वारा अनुवाद किया गया था। अनेक चीनी और जापानी विद्वानों ने इसकी टीका प्रस्तुत की, व्याखा की और उसके आधार पर अनगिनत पुस्तकें तैयार कीं।

बौद्ध धर्म में भक्ति के लिये कम स्थान है किन्तु इस सफल ग्रन्थ में मानव हृदय की इस प्यास को मिटाने का प्रयास किया गया है। कुछ विद्वानों की सम्मति है कि बौद्ध धर्म में भक्ति पद्धति ईसाइयों की देन है, लेकिन इसके लिये जेरूसलम तक सफर करने की आवश्यकता नहीं। भारत स्वयं भक्तों का देश है। समाज कितना ही बुद्धि जीवी क्यों न हो, भक्ति का स्थान उस में रहेगा ही। बौद्ध रुचि ने ७०६ ई. में रत्न कूट ग्रन्थ समूह का अनुवाद प्रारम्भ किया और ७१३ ई. में वह समाप्त हुआ। इस ग्रन्थ का अनुवाद कार्य जिस दिन समाप्त हुआ उस दिन एक बृहत् समारोह का आयोजन किया गया और उस में चीन के सम्राट एवं साम्राज्ञी भी शामिल हुए।

अपने दीर्घ जीवन का अन्तिम क्षण समीप जान एक दिन बोधरुचि ने अपने शिष्यों से कहा, "जैसे-जैसे पानी का बून्द धीरे-धीरे नष्ट हो जाता है, वैसे ही मेरा शरीर दुर्बल होता जा रहा है। यद्यपि मैं अत्यन्त दिनों तक जीवित रहा, पर अब अनुभव करता हूं कि मेरा अन्त निकट आ रहा है। अब तक अपनी दुर्बलता दूर करने के लिये भोजन करता रहा हूं। पर अब मैं अन्त के निकट आ गया हूं, फिर इसे और लम्बा करने से क्या लाभ!" और फिर से उन्होंने अन्न ग्रहण करना छोड़ दिया। ५५ दिनों तक निराहार रहे। इस प्रकार अपने शिष्यों, मित्रों और प्रशंसकों के बीच ७२७ ई. में १५६ वर्ष की आयु में निर्वाण प्राप्त किया।

ग्रामोद्योगों की सफलता के लिए एक क्रांतिकारी सुझाव

ग्राम और ग्रामोद्योग

— रामकिशोर, "पाषाण", वर्धा

यह तो मानी हुई बात है कि ग्राम-विकास के लिए ग्रामोद्योग एक बहुत जरूरी चीज है। ग्रामोद्योग हमारे खेती काम में सहायक, फुरसत के समय किसान को काम देने के और गांवों को स्वावलम्बी और सुखी बनाने के साधन हैं। गांवों का जिस तरह शोषण आज शहरों द्वारा हो रहा है, उसे रोकने का एक-मात्र प्रमुख उपाय है "ग्रामोद्योग"। ये सब बातें आज के भारत के अर्थशास्त्री मानते हैं और कई संस्थाएं और सरकारें भी इस प्रयत्न में हैं कि गांवों में भिन्न-भिन्न प्रकार के ग्रामोद्योग चलाये जांय, उन्हें प्रोत्साहन दिया जाय।

महान् समस्या

लेकिन इस सिलसिले में सबसे बड़ी समस्या यह है कि गांव में ग्रामोद्योग टिकें कैसे? बड़े उत्साह से कुछ कार्यकर्ता या संस्थाएं गांवों में करघे, बैल-चक्की और घानी लगाती हैं। उसमें अपना समय, धन और शक्ति खर्च करती हैं, लेकिन कुछ ही दिनों के बाद वे देखती हैं कि गांव की जनता उनमें कोई दिलचस्पी नहीं लेती है—समझाने, मनाने पर भी वह शहर से मिल का तेल, मिल का आटा और मिल का बना कपड़ा खरीदती रहती है। बेचारा ग्रामोद्योगी कार्यकर्ता हैरान हो जाता है—नुकसान सहकर भी अपना ग्रामोद्योग चलाना चाहता है, लेकिन गांव की जनता मिल की सस्ती चीजों की ओर ही आकर्षित होती है।

तो फिर प्रश्न उठता है कि आखिर गलती कहां है? क्या बात है कि ग्रामोद्योग जनता को आकर्षित नहीं करते? क्यों ग्रामीण जनता अपनी चीज समझ कर भले ही वह कुछ महंगी क्यों न हो—ग्रामोद्योगी चीजों को नहीं अपनाता?

हमारा उत्तर

हां, इसका उत्तर भी है। ग्रामोद्योगी चीजें महंगी क्यों होती हैं? जनता उनकी ओर क्यों आकर्षित नहीं होती? इस सिलसिले में हम उपरोक्त तीन ग्रामोद्योगों हाथ-करघे, बैल-चक्की और घानी का उदाहरण ही लेकर देखेंगे कि हमारी कार्य-प्रणाली में दोष कहां है? क्योंकि ये तीन उद्योग ही भोजन की प्राथमिक आवश्यकता की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं।

गलत प्रणाली

अभी प्रणाली क्या है? हमारे कार्य-कर्त्ता गांव में ग्रामोद्योग लेकर जाते हैं। अपने साथ बैल चक्की, घानी, करघे, और इनमें लगने वाले बैल और बुनकर लेकर जाते हैं। उन्हें उद्योग के द्वारा अपने बैलों को खिलाना पड़ता है, स्वयं अपना और अपने बुनकरों का पेट पालना पड़ता है। और यह आवश्यक भी हो जाता है।

लेकिन यह तो सरलता से समझा जा सकता है कि इन सब का खर्च ग्रामोद्योग से निकलने वाली चीजों की कीमत से ही निकलेगा। जिसका अर्थ यह हुआ कि हमारे बैल, हमारे बुनकर और स्वयं हम इन ग्रामोद्योगों पर एक बोझ बनकर बैठ जाते हैं—और लोगों से कहते हैं कि ज्यादा कीमत देकर हमारे इन बोझों को संभालें।

हमारी नई योजना

इस लिए हम कुछ साथियों ने एक नई योजना बनाई है, वह यह है कि हम गांवों में ग्रामोद्योगों को अवश्य ले जांय—बैल-चक्की ले जांय, घानी ले जांय, करघे ले जांय। लेकिन बैल न ले जांय, कपड़ा बुनकर अपनी मजदूरी निकालने वाले बुनकर न ले जांय, और स्वयं भी इन ग्रामोद्योगों पर जीने वाले बन कर न जांय।

तो फिर हम क्या करें, ये चक्कियाँ, घानियाँ कैसे चलें? सरल तरीका है। सब मानते हैं कि गाँवों में किसान और उसके बैल साल के एक तिहाई समय खाली रहते हैं। तो क्यों न हम इन्हें कहें कि भाई हमने यह चक्की ला दी है,

जिसे आटा चाहिये, स्वयं अपने बैल ले आयें, नाज ले आयें और स्वयं चलाकर अपना आटा पीस लें। अपना तिलहन ले आयें, बैल ले आयें, और अपने लिए तेल निकाल लें। अपना सूत ले आये, और कपड़ा बुन ले।

हम मानते हैं कि शुरू-शुरू में उन्हें कुछ बातों की ट्रेनिंग देनी होगी, कुछ मार्गदर्शन कराना होगा; हमारे ट्रेनिंग-प्राप्त ग्रामोद्योगी कार्यकर्त्ताओं को वहाँ अपना कुछ समय देना होगा।

यह भी जरूर है कि बैल का खर्च निकाल देने पर भी कुछ खर्च (घिसावट आदि के लिए भी) हमें इन उद्योगों पर करना होगा। जहाँ तक हमारा स्वयं का प्रश्न है, हम वहां खेती भी करें—आदर्श रूप से खेती करें, जिससे कम मेहनत और कम खर्च में भी अच्छी फसल पैदा करके गाँव के सामने आदर्श रखें। इस तरह हमारी और हमारे ग्रामोद्योगी कार्यकर्त्ताओं की जीविका खेतों के सहारे चले। और ग्रामोद्योगी सामानों की घिसावट या निरीक्षण-व्यय के रूप में हम गाँववालों से नाम-मात्र को कुछ किराया (सामान के रूप में हो तो अच्छा) वसूल करें। वह किराया इतना कम होगा कि गाँव वाले खुशी से उसे दें और इस प्रकार गाँव में ही उन्हें मिल से भी सस्ता तेल, कपड़ा और आटा उन्हें दे सकें।

यदि शहर में आटा पिसाई दस आने मन हो, तो एक मन का आधा सेर आटा (या २-३ आने) ही है क्योंकि हमें उस में कुछ खर्च तो करना ही नहीं पड़ता।

अपना-पन

यदि ऐसा हुआ, तो जरूर किसान यही सोचेंगे कि घानियाँ, चक्कियाँ सब अपनी ही हैं। फिर तो कुछ दिनों में यह भी हो सकता है कि गाँव वाले आपस में चंदा करके सम्मिलित रूप से ऐसे ही घानियां और चक्कियाँ रखना चाहेंगे। और तब मिलों को आप ही आप बन्द हो जाना पड़ेगा। शहर गाँव का शोषण नहीं कर सकेंगे।

हमने ऊपर विशेष रूप से इन तीन ही उद्योगों के बारे में चर्चा की है। किन्तु यही सिद्धांत दूसरे ग्रामोद्योगों के विषय में भी लागू हो सकता है। छोटे-छोटे साधनों वाले उद्योग, छोटी-छोटी मशीनें (बैलों से या हाथ से चलने वाली) हम गाँव में ले जाकर रख दें, और गाँव वाले स्वयं उन्हें चलाकर अपना काम चला लें। यही वह तरीका है, जो ग्रामोद्योगों को सफल ही नहीं, अमर भी बना देगा।

ज्ञातव्य बातें

१. भारत में १९५१ में ३४३ लाख टन कोयले के उत्पादन के मुकाबले १९५२ में कुल ३६२ लाख टन कोयले का उत्पादन हुआ, जो पिछले सब वर्षों से अधिक है।

२. चालू आर्थिक वर्ष की पहली छः माही में रेलवे के अतिरिक्त केन्द्रीय सरकार के अन्य नागरिक कार्यालयों के कर्मचारियों को महंगाई भत्ते के रूप में अधिक ९.४२ करोड़ रु. दिया गया।

३. १९५१-५२ में भारतीय डाकखानों ने ७६५ करोड़ रु. से अधिक रकम के मनी-आर्डर, नैशनल, सेविंग्स सर्टिफिकेट आदि रुपये पैसे से संबंध रखने वाले कामों को निपटाया।

एकनाथ-क्षेपक

— जगमोहनलाल चतुर्वेदी, औरंगाबाद

'क्षेपक' का अर्थ हिन्दी कोश में यह बताया गया है कि यह ऐसे वाक्य व कथानक हैं जिनको ग्रंथ में पीछे से मिला दिया गया है। महाराष्ट्र कोश में इसकी परिभाषा यों की गई है--"किसी ग्रंथ में दूसरों द्वारा मिलाए हुए श्लोक वाक्य इत्यादि।" अस्तु, स्पष्ट है कि क्षेपक का संबन्ध मूल ग्रंथकार से नहीं होता और जो क्षेपक पं. ज्वाला प्रसाद मिश्र व पं. रामेश्वर भट्ट द्वारा संकलित तुलसी रामायण में मिलते हैं वे तुलसी की संपत्ति नहीं है।

पं रामेश्वर भट्ट ने अपनी रामायण में निम्न लिखित क्षेपकों का वर्णन किया है :—

१ **बालकाण्ड**—राजा बलि और बाली से रावणका मान मर्दन होना, सहस्त्र बाहुसे रावण का हारना, नल कूबर का रावण को शाप देना, रावण का ब्राह्मणों से दंड लेना, फिर ब्राह्मणों का उसको शाप देना, सीताजी की उत्पत्ति, पृथ्वी का गोरूप धारण करके ब्रह्मा के पास जाना, भगवान का अभयदान देना, राजा दिलीप का रावण से वैर होना और कौशल्या की कथा।

२ **अयोध्याकांड**—नारदजीका आकर रामजी से स्तुति करना।

३ **किष्किन्धाकाण्ड** — वाली सुग्रीव के जन्म की कथा, तालवृक्ष की उत्पत्ति और सर्प का बाली को शाप देना, सुग्रीव का हनुमान को वानर बुलाने के लिए भेजना, सुग्रीव का सीताजी को ढूंढने के लिए वानरों को भेजना, सम्पाती का सीता की सुध बताना, हनुमानजी के जन्म का वर्णन।

४ **सुन्दरकाण्ड**—हनुमानजी का लङ्का दहन करना।

५ **लंका काण्ड**—रावण के आगे शुक सारन का वानरों की संख्या का वर्णन करना, देवताओं का रामजी की स्तुति करना और वानरों द्वारा मेघनाद का सिर रामजी के सम्मुख रखना, सुलोचना की कथा, अहिरावण की कथा, शिवजी का आगमन।

भावार्थ रामायण में भी इसी प्रकार के स्थलों का विस्तृत वर्णन किया गया है।

१ **बालकाण्ड**—अहिल्या आख्यान, सीता की जन्म कथा, रेणुका पुराण, परशुराम कार्तवीर्य युद्ध।

२ **किष्किन्धाकाण्ड**— हनुमान जी की जन्म कथा व बाल चरित्र।

३ **सुन्दर काण्ड** —मन्दोदरी की जन्म कथा, गजेन्द्र व गरुड आख्यान, अहिरावण महिरावण आख्यान।

श्री एकनाथ की भावार्थ रामायण का अध्ययन करने से पता चलता है कि ऐसे कथानक जिनको तुलसी की रामायण में प्रक्षिप्त बतलाया जाता है, मूलग्रंथ से संबंधित हैं। इस संबन्ध में यहां केवल एक उदाहरण दिया जाता है, जिस से तुलसी रामायण में क्षेपकों और भावार्थ रामायण के मूल्य कथानकों के सादृश्य पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है।

भावार्थ रामायण में सीता उत्पत्ति की कथा का वर्णन यों किया गया है :—पद्माक्ष नामक राजा को बड़ी इच्छा थी कि लक्ष्मी मेरे घर में पुत्री की भांति जन्म ले। इस अभिलाषा से उसने लक्ष्मी की तपस्या की। तपस्या से प्रसन्न होकर लक्ष्मी ने पद्माक्ष से वर मांगने के लिए कहा। पद्माक्ष ने यह वरदान मांगा कि मेरे घर में लक्ष्मी क्रीडा करें। लक्ष्मी ने इसके लिए एक शर्त लगाई कि यदि विष्णु आज्ञा दें तो मैं आ सकूंगी। यह सुनकर पद्माक्ष ने विष्णु की तपस्या की, जिसके फलस्वरूप विष्णुने प्रसन्न होकर उसे एक फल दिया। जब फल खोला गया तो उसमें एक सुन्दर कन्या उत्पन्न हुई। इस परम सुन्दरी कन्या को देख कर देव और दानव दोनों में युद्ध आरम्भ हुआ। इस युद्ध में बहुत से योद्धा मारे गए। कन्या को यह मालूम हुआ कि उसकी रक्षा के लिए अब कोई नहीं है क्यों कि पद्माक्ष और उसकी स्त्री भी इस युद्ध में मारे गए। सुन्दरी कन्या यज्ञ कुण्ड में प्रवेश कर गई। इस युद्ध में जो बचे वे भी इस परम रूपवती कन्या रत्न को प्राप्त न कर सके। इस अवसर पर एकनाथने लक्ष्मी का जो व्यंग चित्र खींचा है, वह इस प्रकार है—वे कहते हैं कि जिन्होंने लक्ष्मी का पालन किया उनके प्राण गए, जिन्होंने उसे पाने की इच्छा की, वे युद्ध में मारे गए

और बचे हुए रोते घर गए। लक्ष्मी उनके हाथ न लगी। यह है लक्ष्मी की करतूत!

प्रतिपाळते प्राणा मुकले। अभिलाषते रणीं पडले।
उरले रडत गेले। लक्ष्मीचें केले असें आहे।

एक समय यह परम रूपवती कन्या यज्ञ कुण्ड पर बैठी हुई थी कि उसी मार्ग से विमान में रावण निकला। वह इसके सौंदर्य पर मुग्ध होकर उसे प्राप्त करने के लिए दौड़ा तो यह कन्या फिर यज्ञ कुण्ड में प्रवेश कर गयी। रावण ने अग्नि बुझाकर यज्ञ कुण्ड में उसे ढूंढा परन्तु इसका कोई पता न लगा। यज्ञ कुण्ड में उसे पांच रत्न मिले। जिन्हें पेटी में बन्द करके रावण अपने घर ले गया। रत्नों को मन्दोदरी को दिखाने के लिए रावण पेटी उठाने के लिए गया परन्तु पेटी किसी प्रकार न हिल सकी। तदनन्तर बहुत से लोगों ने जोर लगाकर पेटी खोली उसके भीतर रत्नों के बदले एक कन्या दिखाई दी। उस के जन्म का वृत्तान्त सुनते ही मन्दोदरी ने कहा कि इस कुलघातनी लड़की को कहीं देश के बाहर छोड़ आओ। रावण ने उसी क्षण लड़की को पेटी में बन्द कर दूतों के जरिये अपने राज्य के बाहर भेज दिया और दूतों को आज्ञा दी कि पेटी को जमीन में गाड़ देना। उन्होंने इस पेटी को राजा जनक के राज्य में गाड़ दिया। यह जमीन राजा ने एक ब्राह्मण को इनाम में दी थी। शुभ मुहूर्त में ब्राह्मण ने इस जमीन पर हल चलवाया। जब हल पेटी में लगा तो पेटी को निकालकर ब्राह्मण राजा के पास ले गया। गुप्त धन पर राजा का अधिकार होता है। राजा ने कहा कि इस भूमि का दान मैं तुम्हें कर चुका हूं, इस लिए इस की उत्पत्ति का अधिकार मेरा नहीं है। दोनों के इस विवाद का निर्णय करने के लिए पंचों ने यह मत दिया कि पहले यह देखा जाय कि पेटी में क्या है? पेटी खोली गई तो उस में दिव्य रूप की एक कन्या दिखाई दी। जनक ने उस कन्या को उठा लिया और उसे अपनी कन्या बनाने की घोषणा कर दी।

तुलसीदास ने किसी कथानक को कुछ हेर फेर से कहा है। नलकूबर का शाप अंगीकार कर रावण क्रोधित हुआ और उसने ऋषियों के पास चार दूत भेजे कि उनसे दण्ड लाओ। यदि वे दण्ड न दें तो उन्हें पहाड़ों की कन्दराओं में भाग जाने का आदेश सुनाओ। दूतों का आदेश सुनकर ऋषियोंने अपने रक्त से भरकर एक घड़ा दूतों को दिया। दूतों ने वापिस आकर घड़ा रावण के सामने रख दिया और ऋषियों का यह वचन सुनाया कि इस घड़े से रावण का नाश होगा। तब रावण ने दूतों से कहा कि इस घड़े को उत्तर दिशा में रख आओ। दूतों ने इस घड़े को जनक के राज्य में गाड़ दिया। दैवयोग से जनक के राज्य में अकाल पड़ा और बिना वृष्टि के प्रजा दुःखी हुई। तब राजा जनक ने यज्ञ आरम्भ किया और सुवर्ण के हल से पृथ्वी जोती तो इस घड़े से कन्या उत्पन्न हुई। पार्वती के समान सुन्दर कन्या को देखकर राजा ने पुत्री मानकर उसे घर ले आया और जानकी नाम रखा। फिर नारदजीने आकर सीता कहा।

इस स्थल को तुलसी की रामायण में क्षेपक सिद्ध करने के लिए यह बताया जाता है कि गोसाईजी स्वयं बड़े भारी विद्वान थे और जो ऐसे विद्वान होते हैं वे ऐसी पुराणान्तरों की कथाओं को जिनका संसार में बहुधा प्रचार होता है लिखकर अपने ग्रन्थ को वृथा नहीं बढ़ाते, क्योंकि बीच-बीच में अन्य कथाओंके लिखने से उनके लेख्यप्रसंग में विक्षेप पड़ता है।

यदि उपरोक्त सिद्धान्त को मान लिया जाय तो भावार्थ रामायण में भी इन को क्षेपक ही मानना चाहिए। क्योंकि एकनाथ भी एक प्रकांड विद्वान थे। परन्तु भावार्थ रामायण में ऐसे अनेक आख्यान हैं जिनका सम्बन्ध मूल ग्रन्थ से है। किष्किंधाकाण्ड में वानर गण सीता की खोज में निकले तो रास्ता भूलकर उन्होंने एक विवर में प्रवेश किया। वहां उन्हें भूके रहना पड़ा। एक तपस्वीने उन्हें इच्छा भोजन दिया। इस स्थल का विस्तार पूर्वक वर्णन करते हुए नाथ को शंका हुई। वे कहते हैं 'विधिनोपहस्तदा' इस श्लोक के पद को आधार मान कर मैंने वानर भोजन का विस्तार युक्त वर्णन किया है। श्रोता ऐसा न कहें कि मैंने व्यर्थ ही ग्रन्थ को बढ़ाया है। वाल्मीक के पदों के अर्थों के आधार-पर मैंने अपने ग्रन्थ में कथा की रचना की है।

'विधिनोपहस्तदा'। याचि धरोनी श्लोकाच्या पदा ॥
वानर भोजन संपदा। ग्रन्थानुवादा मी वदलों ॥
व्यर्थ वाढविले ग्रन्था। ऐसें न म्हणावें श्रोतां ॥
मुनीच्या धरोनी पदार्था। ग्रन्थीं ग्रथता रामत्रदवी ॥

किष्किंधा काण्ड ही में हनुमान की जन्म कथा का वर्णन किया गया है जहां बताया गया है कि कैकई के हाथ से एक चील पायस ले गई। यह पायस अंजनी के हाथ में गिरा। यह लिखते हुए नाथ को शंका हुई। वे लिखते हैं पिंड भाग की जो व्यवस्था हुई वह शिवरामायण की कथा है। श्रोता इसे वृथा रचना न कहें क्योंकि इस कथानक का आधार शिवनारायण में देखने से मिलेगा।

पिंड भाग व्यवस्था। हे शिवरामायणाची कथा ॥
वृथानुवाद न म्हणिजे श्रोतां। पहावें त्या ग्रथा विचारोनीं ॥

यहां पर स्पष्ट उल्लेख है कि यह कथा शिवरामायण से ली गई है। ऐसी स्थिति में तुलसी के लिए इन आख्यानों को क्षेपक मानना और एकनाथ के लिए मूल ग्रन्थ के भाग मानने में असामंजस्य प्रतीत होता है। कवि अपने ग्रन्थ के साथ-साथ ऐसे प्रसंगोस्थित इतिहास का वर्णन कर सकता है, जिससे मूल कथा समझने में सुभीता हो। एकनाथ ने वाल्मीकि रामायण को आधार मानकर ऐसे आख्यानों को भी स्पष्ट कर दिया है जो वाल्मीकि रामायण में नहीं हैं। तुलसी के सम्बन्ध में विद्वानों का यही मत है कि ये आख्यान क्षेपक हैं। यह अनुमान कहां तक उचित हो सकता है कि तुलसीने भी इन आख्यानों को रामायण कथा कहते हुए रखा हो, परंतु मूल ग्रन्थ में समावेश किया हो ? परन्तु पीछे से उनकी रचित कविता को वैसा ही अथवा कुछ हेरफेर से तुलसी रामायण में सम्मिलित कर दिया हो।

भावार्थ रामायण की ४४ वें अध्याय तक रचना होने के पश्चात् नाथ को अपने देहावसान का समय निकट आया ऐसा मालूम हुआ, परंतु ४४ वें अथवा इस के पश्चात् के भी अध्याय को पढ़ने से इस घटना का उल्लेख कहीं नहीं मिलता तथापि ४५ वें अध्याय से आगे की कृति नाथ की रचना नहीं है, इसका प्रमाण ग्रन्थ में मिलता है। भावार्थ रामायण के ५१ से ५४ अध्याय तक अहिरावण और महिरावण की कथा है जिसके संबन्ध में कहा जाता है कि जयराम सुतने इस की रचना करके ग्रन्थ में बाद में जोड़ दिया है।

मग साद्येँ जयरामसुतें। करोनि घातलें अध्यायांतें।
हृदयीं रिघोनि एकनाथें। हे मज हातें करविले ॥

इसी प्रकार ४५ वें अध्याय को निम्न आशय की ओवियों से यह अनुमान किया जा सकता है कि ४४ वें अध्याय से आगे की कृति नाथ महाराज की रचना नहीं है।

मैं वंश परंपरा से मूर्ख हूं। मुझे कवित्व रचना और न अर्थ ज्ञान ही है। श्री जनार्दन स्वामी ने मेरे मस्तक पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिया और मुझसे रामायण कहलवाई। सद्गुरु की कृपा से पंगु भी पर्वत पर चढ़ जाते हैं। श्री एकनाथ ने मुझ से रामायण को पूर्ण कराया।

माझी मिरासी मूर्खपण। तेणें दबन्ध व्याख्यान।
माथां हात ठेवोनी जनार्दन। वदवी रामायण निजसत्ता ॥
जनार्दनाची कृपा ऐसी। मूर्खा हाती रामायणासी।
वदविले राम कथेसी। कथा ऐसे संताची ॥
सद्गुरुची कृपा घडे। तैं पांगुळ पर्वत चढे।
एकनाथें तेणें पाड़े। केले मज सरते ॥

कै. भावे, कै. पांगारकर, श्री अजगांवकर इत्यादि विद्वानों ने गावबा द्वारा ग्रन्थ की पूर्ति को सत्य माना है, परन्तु कै. गोविन्द गोपाळ टिपणीस ने इस को दंतकथा बनाया है। वे संपूर्ण ग्रन्थ को एकनाथ की ही रचना मानते हैं वे कहते हैं कि जयरामसुत ने कहा है कि एकनाथ ने रामायण के सातों कांड रचे हैं—

एकनाथी रामायण। केलें सप्तकांड कथन ॥

आश्चर्य तो इस बात का है कि जिन प्रमाणों के आधार पर हिन्दी के विद्वान पंडित तुलसी रामायण में सीता की जन्म कथा, हनुमानजी की जन्म कथा, अहिरावण महिरावण इत्यादि आख्यानों को क्षेपक बतलाते हैं उन्हीं प्रमाणों के आधार पर जयरामसुत उन आख्यानों को क्षेपक न मानने के पक्ष में है। वे कहते हैं कि यह नवल कथा वाल्मीकि रामायण में नहीं है फिर भावार्थ रामायण में कैसे आई ? इस शंका का स्थान नहीं है क्यों कि वह आख्यान अग्नि पुराण, सेतुबंधन महात्म्य में विस्तार पूर्वक मौजूद हैं। एकनाथी रामायण सप्त कांड कथन होते हुए इस आख्यान को एकनाथ भूल गए ऐसा आक्षेप भी करना ठीक नहीं। कारण कि वे महाचतुर ग्रन्थकर्ता थे। प्रत्यक्ष विष्णुभगवान के अवतार ही थे। स्वप्न में भी वे कोई बात भूल नहीं सकते थे, परंतु बहुत दिनों तक इस ग्रन्थ को कण्ठस्थ रखते हुए यह अध्याय ध्यान से उतर गया, फिर जयरामसुत के हृदय

(शेष पृष्ठ २२ पर)

सीमा का बंधन

— रामरत्न बडोला, इलाहाबाद

भोजनोपरांत नवल ज्यों ही पलंग पर लेटा किसी ने दरवाजे पर दस्तक दी। उत्सुकता में नवल ने किवाड़ खोले। तार वाले ने नवल के नाम का तार छांट कर दिया। तार पढ़कर हर्षातिरेक में नवल नाचने लगा। चपरासी को आज्ञा दी कि तांगा बुलाये, वह अभी जंक्शन जायगा। रात्रि के ग्यारह बजे वाली गाड़ी से उसका सहपाठी वीरेन्द्र आयेगा आज कितने बडे अरसे के बाद मिलेंगे वे दोनों, विद्यार्थी जीवन की संध्या के बिछुडे हुये साथी।

साढे ग्यारह बजे के लगभग एक तांगा नवल के घर के आगे रूका। नौकर से सामान भीतर रखवा कर दोनों मित्र कमरे में प्रविष्ट हुये। मित्र को बिठाते हुये नवल बोला, 'बैठो वीरेन्द्र तुम्हारी भाभी से कह दूँ भोजन तैयार करें।'

'पागल हुये हो रात्रि के इस समय खाना बनवाने की क्या तुक माई? भाभी को तकलीफ मत दो। रेस्तरां कार में न जाने सुबह से शाम तक कितने केक बिस्कुट खाये हैं और चाय का तो मानों दिवाला ही खिसका दिया।' हंस कर उत्तर दिया बीरेन्द्र ने।

'तकल्लुफ़ सीख गये अथवा अपनी भाभी को कष्ट नहीं देना चाहते? पूछा नवल ने-जो समझो परन्तु इस समय मैं अपने पेट के साथ बेरहमी नहीं कर सकता।' कहा वीरेन्द्र ने।

'हां! सुना आजकल तुम मद्रास में नौकरी पर हो, इसलिये काफी तो पियोगे ही।' कहता हुआ तेजी से नवल भीतर चला गया और वीरेन्द्र को इतना भी समय न मिला कि इस मेहमान वाजी को रोक सके।

नवल ने आने पर वीरेन्द्र से कहा—"तुम्हारी भाभी काफी बनाने में दक्ष हैं और मद्रासी पापड़ की बहुत शौकीना!"

'अच्छा!'

'तुम मेरे व्याह के निमंत्रण पर न आये, शादी का सब मजा ही किरकिरा हो गया।'

'मुझे छुट्टी न मिल सकी। क्या करता?' अन्यमनस्क होकर उत्तर दिया वीरेन्द्र ने।

'परिचय होने पर तुम अपनी भाभी को एक आदर्श भारतीय नारी पावोगे।'

इतने में काफी आ गई। नवल ने वीरेन्द्र से पत्नी का परिचय कराया। टेबुल लैम्प के खूब सूरत रंगीन कांच से झलकती हुई विद्युत किरण पुष्पा के मुख पर पड रही है। मानों नाटक की नायिका पर कलर (रंग) देने के लिये रंगीन प्रकाश डाला जा रहा हो। नवल की कुर्सी के पीछले भाग को पकड़कर पुष्पा वीरेन्द्र को नमस्कार करके चुपचाप खड़ी हो गई। उसके तन की परिचित लज्जा मानों धरती में कहीं छिप जाने का उचित स्थान ढूंढ़ रही हो। वीरेन्द्र आश्चर्य पूर्वक निरतर पुष्पा को देख रहा था और काफी का प्याला टेबुल पर अस्तित्व समेट सौंधी बास वाला महीन धुंआ छोड़कर जैसे इस गहरी खामोशी का तोडने के लिये मचल रहा हो।

नवल ने स्थिति समझी। वीरेन्द्र को संबोधित करके कहा, वीरेन्द्र! काफी ठंढी हो रही है।'

जम्हाई लेकर वीरेन्द्र ने काफी पीना आरंभ किया। उसकी मुखाकृति में अचानक गंभीरता भर गई थी।

उधर पुष्पा से अपनी स्थिति संभालने की कोशिश ही की। अन्त में नमस्कार करके वह भीतर चली गई। रात्रि में जब वह पलंग पर लेटी तो लाख प्रयत्न करने पर भी उसे नींद न आसकी। अतीत लोचनों में साकार होकर नृत्य करने लगा। वह बचपन याद आया जब वीरेन्द्र और वह साथ-साथ खेलते थे और एक ही स्कूल में पढ़ते थे। परन्तु प्रत्येक वस्तु की अपनी २ सीमायें हैं। अतः जब दोनों बडे होने लगे, उन्हें अलग २ स्कूलों में भेज दिया गया। क्यों? उस समय तेरह वर्ष की अवस्था में वह इस बात को न समझ सकी थी और न उसमें समझने की कोशिश ही की थी। हां! दुःख अवश्य हुआ था, उसे वीरेन्द्र के अन्य स्कूल में भरती हो जाने पर। लेकिन फिर भी वे आपस में मिलने का समय निकाल ही लेते थे। अधिक तर सन्ध्या

समय जब वह साथ खेल खेलने के लिए अपने घरों से निकल कर बगीचों में जाते थे। अवस्था के साथ सीमा का बन्धन कठोरतम होने लगा। यहां तक कि उनके मां बाप ने यह आज्ञा दे दी कि ये एक दूसरे के साथ खेल न खेलें। क्यों कि वे अब बच्चे नहीं हैं। सीमायें खिंच गईं केवल मां बाप की ओर से ही नहीं वरन प्रकृति की ओर से भी। वीरेन्द्र अब पुरुष जाति में गिना जाने लगा और पुष्पा नारी जाति में। नारी पुरुष का आकर्षण उन दोनों के बीच बन्धन बन कर आ गया था। प्रेम जैसी किसी वस्तु से वे दोनों तिलमिलाने लगे थे। उन के नेत्र एक दूसरे को देख कर न जाने क्यों चुम्बक की भांति खिंच जाते थे। पर बचपन में ऐसा कभी नहीं हुआ था। इतना बड़ा परिवर्तन समय की ढलुआ चाल ने उत्पन्न कर दिया था, उन दोनों में बन्धन इतनी अधिक दृढ बन्धता चला गया कि दोनों ने सर्वदा जीवन साथी होने का प्रण किया। परन्तु कहां गया उनका वह परम और अटूट बन्धन! घरौंदा उजाड दिया मां बाप ने। नरेन्द्र के पिता ने अपनी तब्दीली करा ली। वह नहीं चाहते थे कि वीरेन्द्र के कारण समाज में बदनामी लें। पुष्पा के पिता ने भी उनका कलकत्ता जाना ठीक समझा वीरेन्द्र और पुष्पा अलग हो गये तभी से। कितना बड़ा षड्यन्त्र रचा गया उन मूक प्रेमियों के प्रतिकूल जिसने दोनों के बंधनों तोड़ कर छिन्न भिन्न कर दिया। दोनों ने यह अनुभव किया कि उनका इस जीवन में मिलना तो असम्भव ही है दूसरे जन्म की ईश्वर ही जाने। ऐसी डर की बात क्या थी जो उन के माता पिता ने इस प्रकार निर्दयता की। बन्धन टूट चुके थे, परन्तु हृदय के महीन तागे अब भी पुष्पा को जुड़े लगे, फैले हुए लगे एक मकड़ी के जाले की भांति। यह सब सोचते हुए पुष्पा जल-विहीन मीन की भांति चारपाई पर करवटें बदलने लगी। कभी वह सोचती बेकार, है इन पुरानी बातों को सोचना। किस्मत की रेखा अमिट है वह एक विवाहित पत्नी है। और वीरेन्द्र उसका कोई नहीं। अतीत स्वप्न हो सकता है क्योंकि स्वप्न में हम सब कुछ देखते हैं परन्तु अन्त में सब कुछ और अनुभव करते हैं, भूल जाते हैं। तर्क ठीक था परन्तु उससे उसे तनिक भी सन्तोष न प्राप्त हुआ। क्योंकि उसका स्वप्न उसे पुनः कचोटता हुआ उपस्थित हुआ है। वीरेन्द्र इसके घर में है और संयोग ने उसको उस के पति का मित्र बनाया है। अतीत को वह स्वप्न न मान कर सत्य ही क्यों न समझे? परंतु जैसे किसी ने इसे समझाया कि जीवन की एक परिधि है और उस के कार्यों का एक क्षेत्र। वह क्षेत्र अनंत और अपार नहीं। परंतु सीमाएं बनाने से बनती हैं और फैलाने से फैल सकती हैं। किसने बनाई है वह सीमा? इनसान ही ने तो! तो क्या वह उन सीमाओं को नहीं तोड सकती और तोडकर उन्हें जोड नहीं सकती! क्या उन्हें विस्तार पूर्वक फैलाने तथा समेट कर संकुचित करने की उसमें सामर्थ्य नहीं! हृदय में जैसे एक ध्वनि निकली; क्यों नहीं, वह सब कुछ कर सकती है क्योंकि वह इन्सान है और मानव निर्मित यह दीवालें हैं, समाज की जीर्ण चहार-दीवारियां तथा समाज-भीरु मानवों के डरपोक खेमे।

इस तर्क के साथ वह बल समेट कर चारपाई से उठी और बलशाली पुरुष की भाँति सीमा तोड ने पर उद्धत हो गई। उसके नथुने फड़क रहे थे। जाडे की इस रात में कपोलों पर पसीने की बून्दें चमक रही थीं और आंखें प्यासी होकर कुछ ढूण्ढ़ रही थीं। हृदय कह रहा था कि वह अपने इच्छानुसार सीमा निर्माण करेगी। दूसरों को उसके लिये सीमाओं के खींच देने का अधिकार ही क्या? नवल को देखा। वह खर्राटे भर कर सो रहा था। चुपके से किवाड़ खोल कर वह वीरेन्द्र के कमरे की ओर चल पड़ी। वीरेन्द्र को भी बिल्कुल नींद नहीं आरही थी। अतीत सजग हो चला था। भावना ने कल्पना के पंख फैलाकर ऊंची उड़ान लेना प्रारंभ की। विचार भंवर की तरह मस्तिष्क में चक्कर काटने लगे। पुष्पा जो स्मृति पट पर धूमिल होकर मिटने लगी थी एक उल्कापात की भांति अचानक प्रकट होकर एक तूफान ले आई। तूफान से जूझता वीरेन्द्र बेचैन है। वह पुष्पा को किस दृष्टि से देखे; बचपन साथी पुष्पा के रूप में अथवा मित्र-पत्नी रूप में। इन गुत्थियों को सुलझाने में जब वीरेन्द्र उलझा हुआ था एक छाया किवाड़ की ओट में चलती हुई दृष्टि गोचर हुई। 'कौन?' सहसा उसके मुख से निकल पड़ा। तभी किवाडों को ढकेल कर छाया कमरे में प्रविष्ट हुई। वीरेन्द्र आश्चर्य में अवाक हो गया। पुष्पा उसके सामने उपस्थित थी, सहमी सी। उसके होठ कुछ कह देने के लिये कम्पित हो रहे थे, परंतु वाणी पानी की तरह जमकर

जैसे बर्फ बन गई हो। होठ खुलते थे परंतु शब्द नहीं निकलते थे। उसकी इस अवस्था का अनुभव करके अचकचा कर पूछा वीरेन्द्र ने, 'क्या बात है पुष्पा?' प्रश्न सुनकर पुष्पा को तीव्र कम्पन का अनुभव हुआ। पसीने से उसका सारा ब्लाउज तर बतर हो गया। वीरेन्द्र के समीप आगे बढ़कर पहुँच जाने की हिम्मत टूट गई। तर्क द्वारा समेटा हुआ बल नष्ट हो गया और मशीन की तरह अनायास ही वीरेन्द्र के पांवों से लिपट कर फूट फूट कर रोने लगी। वीरेन्द्र को कुछ न सूझ पडा कि क्या करे? केवल उसने साहस कर पुष्पा को उठाते हुये कहा— "सम्हलो पुष्पा।"

तभी खाँसा किसी ने। वीरेन्द्र ने देखा नवल द्वार पर खडा है। उसके नेत्र अंगार वर्षण कर रहे हैं और क्रोध में मुख तमतमाया हुआ है। वीरेन्द्र ने हंस कर स्वागत किया 'आवो नवल।' लेकिन चुपचाप नवल वहां से चला गया। संशय ने पनप कर हृदय-भूमि में अंकुर ले लिया। पुष्पा भीगी बिल्ली सी अपने शयनागार की ओर चली गई। सीमा का बन्धन कितना कठोर और सुदृढ़ है उसे अनुभव हुआ और भविष्य के अनेक पहलुओं का सोचती हुई वह नवल के संशयांकुर को दूर करने की तरकीबें सोचने लगी। पति की हंसती हुई आंखों में जो क्रोध ज्वाला भभकती हुई देखी थी, वह संशय का प्रत्यक्ष प्रमाण थी।

केवल एक सप्ताह वीरेन्द्र नवल के यहां ठहर सका, जब कि वह पूरे महीने की छुट्टी बिताने के लिये आया था। मित्र के साथ वह इन छुट्टियों को हंसी खुशी से बिताने के लिए आया था परंतु वह यहां से लौटा असंतोष, अभिशाप और अशांति लेकर। वास्तव में पुष्पा को वह भी चाहता था और यदि पुष्पा उसकी होती तो नवल से अधिक सुखी वह उसे रखता परंतु अमिट सीमाएं खींच गई थीं जिनको तोड़ने का हिमायती होते हुये भी वीरेन्द्र तोडने का साहस न कर सका। सीमोल्लंघन करने पर विश्वासघाती, नीच और पापी समझा जाता, ज[...] समाज में उसका नाम सदा भले और भोलों की श्रेणी [...] रहा है। वह यह भली प्रकार जानता था कि समय [...] प्रगति और मांग के अनुकूल सीमाएं टूटेंगी अवश्य प[...] प्रगति के अगुवा बनने की हिम्मत वीरेन्द्र को अपने में [...] दिखाई दी। जाते समय कागज के एक परचे पर वह पु[ष्पा] के लिये एक संदेश छोड़ गया। 'सीमा का बन्धन आधुनि[क] समाज में अत्यन्त दृढ़ है। ख्याल रखना कि कहीं उस[में] उलझ कर तुम मुंह के बल मत गिरना।'

वीरेन्द्र गया परंतु नवल और पुष्पा के बीच खाई खो[द] कर। संशयांकुर पनप कर कोपलें लेकर उगा। गृहस्थ[ी] का सुख, आनन्द और मधुर हास्य उसकी छाया में न[ष्ट] हो गये। अधिकतर पति पत्नी में बोल चाल बन्द रहने लगी। कभी कभी यहां तक होता कि तनिक-सी बात पर नवल पु[ष्पा] को पीटने लगता। कुछ माह के भीतर ही पुष्पा का चेह[रा] पीला पड गया। आंखें गढहों से झांकने लगीं। उभरे गो[ल] गालों पर रेखाएं खिंच गईं और वह टी. बी. की म[रीज़] लगने लगी। यौवन का निखार नष्ट हो गया। इसी त[रह] दिन बीतने लगे और एक दिन पडोस वालों ने सुना [कि] नवल घर छोड कर भाग गया है और पुष्पा ने जहर खा[कर] आत्महत्या करली है। कहते हैं पुष्पा की लाश दो दिन [घर] के भीतर ही पड़ी रही और जब बदबू फैली तो पड़ोसि[यों] को इस बात का पता चला। बहुतों का अनुमान है [कि] नवल ने पुष्पा को जहर खिला कर मारा है और कुछ[का] ख्याल है कि उसने स्वयं जहर पिया और नवल ने डर [से] घर छोड़ा परंतु बात को ठीक प्रकार से कोई जान न सका। केवल लोगों ने यही जाना कि जो घर हंसी से गुलजार र[हता] था, आज वीरान पड़ा है। यहां तक कि भूत के डर से [कोई] किरायेदार तक उस मकान में आने को तैयार नहीं हो[ता।]

शेष पृष्ठ १९ का

में प्रवेश होकर एकनाथ ने इस अध्याय की पूर्ति कराई। न. र. फाटक ने यह मत भी प्रकट किया है कि जयरामसुत को भावार्थ रामायण कंठस्थ थी परन्तु बहुत दिनों तक ग्रन्थ को स्मरण रखने के कारण यह अध्याय ध्यान उतर गया, और बाद में उसने इस अध्याय की पूर्ति की। "परतु झाले बहुत दिवस मुखी पाळितां ग्रन्थास। गाहाळिलेया अध्यायास।" ऐसा प्रतीत होता है कि जयरामसुत एकनाथ के निकट संपर्क में रहा होगा। इसी लिए उसने यह वर्णन किया है कि [...] भूल सकते। "महा चतुर ग्रन्थ कर्ते, स्वप्नीही विसर न पडणा[...] महाचतुर ग्रन्थकर्ता हैं और स्वप्न में भी कोई बात [...]

इस ऊहापोह से स्पष्ट होता है कि हमें अपने सं[...] इतनी श्रद्धा हो चुकी है कि हम इन क्षेपकों को भी [...] रचना में समाविष्ट कर लेते हैं। भावार्थ रामायण में कौ[न] कौन से स्थल क्षेपक हैं उनका विवेचन तो कोई प्रा[...] समीक्षक अथवा संशोधक ही कर सकता है।

कहानी

' तूफान की आहट '

— श्री " निर्मम "

"तुम्हारी बीन तो...टूट गई है न ?"

"हां !"

"क्या वह अब कभी नहीं बोलेगी ?"

"नहीं, नहीं, ऐसा न कहो, वह जरूर बोलेगी, जरूर बोलेगी !"

"क्या, टूटी बीन भी कभी बोल सकती है ?"

"हां, अवश्य ! उसका अन्तर्नाद सजीव है, अन्तरंग स्वर में बोलेगी !"

"किस तरह ?"

"छेड़ कर देखो, अपने हृदयोद्गार के मधुर आघात से !"

* * *

रात्रि का मध्यम प्रहर था, विश्व की पातक आत्माएं व्याभिचार के तिमिर में स्वांसे भर रही थी व विलास, वासना, जागृति के सीने पर ताण्डव-नृत्य कर रही थीं । और विशाल, वैभवशाली प्रासाद उन्हें अपने उर में छिपाने का गर्व अनुभव कर रहे थे । सप्तमीका चाँद निकल आया था, भूरी-भूरी शुद्ध शीतल चाँदनी व वृक्ष मालिकाओं के झुरमुट की छांव में वह बैठा-बैठा अपनी सितार के तार कस रहा था । क्यों कि हर साधारण व्यक्ति किसी भी बेसुरे राग को पसंद नहीं करता !

दिन भर 'स्टुडियो' में काम करता और सितार के मधुर स्वर में उसकी थकान रात्रि में मिटा लिया करता । 'स्टुडियों' का नाम सुनकर शायद आप चौंक गये होंगे ! और आपने उसे कोई छैल-छबीला अभिनेता समझ लिया हो, इस में आश्चर्य नहीं । लेकिन जब मैं अपनी मूरत शीशे में देखता हूं, तो मुझे अपनी बदसूरती व बेढंगे-रूप पर तरस आता है । बड़ी-बड़ी आंखें, लंबी पेशानी, मोटे-मोटे होंठ, किलों व फुन्सियों से भरा काला शाम चेहरा, बे तरतीब पीले-नीले दाँत इन सब पर मुझे तरस आता है परन्तु मैं अपने आप को अत्यधिक सुन्दर समझता हूं, क्यों ? यह तो कोई तत्वज्ञानी ही बता सकता है । गरीबी की चेचक ने मेरे समस्त शरीर को जीर्ण-विकीर्ण व बेढंगा बना दिया था ।

स्टूडियो में अभिनेताओं, अभिनेत्रियों की ड्रेसिंग, मेकअप, बूटपालिश आदि करता था । मैं सितार वादन यहीं से सिख पाया । वातावरण के कारण मेरा स्वयं का जीवन ही एकमात्र अभिनय रह गया था । एक दिन शूटिंग रात को होने वाली थी । मैं एक अभिनेत्री का मेकअप कर दीर्घ स्वांस छोड़कर कुर्सी पर बैठ गया । सहसा उसने हल्की मुसकान के साथ शीशे में देखते हुए पूछा, "दादू तुम हमेशा उदास क्यों नजर आते हो ?"

"नहीं तो !"

"तुम्हारी सूरत तो बता रही है कि तुम ...."

"हां, यह सूरत...लेकिन जन्म से ही लाया हूं इसे ! और आप...आप जैसोंने तो मेरा दिल भी छलनी बना दिया !" मैं अपने मस्तिष्क संतुलन को खो-सा चुका था, दिल के शोले उद्‌गार बनकर निकल ही पड़े, आँसू भी छलक आए थे । मैं संभल भी न पाया था कि एक महाशय ने उठकर तड़ाक से एक तमाचा जड़ दिया । मुझ में शक्ति थी मैं उस के एक चमाते के बदले में उसे धराशायी कर देता...परंतु सहसा मैंने सुना, "यह...यह तुमने क्या किया ?" इस में एक दर्द था, अतीत की स्मृति थी, याद नहीं किसकी स्मृति ! और मुझे उस अभिनेत्री में किसी की धूंधली छाया नजर आई मैं बेहोश-सा दरवाजे के बाहर आकर बिजली के खंभे के सहारे खड़ा होगया और न जाने कब धरती पर गिर पड़ा मालूम नहीं ।

* * *

मुझे इन्दौर आए दस दिन हो चुके थे । पलासिया नगर का सुन्दर हिस्सा है । बड़े-बडे प्रासाद, भव्य वैभव शाली भवन, सुन्दर शाही कोठियां—इंद्रभवन, मालवा कोठी, कैलाश कोठी, रैनबसेरा, लेनटनहोटेल, बड़वानी कोठी

आदि हैं। मैं नौकरी की तलाश में भटकता फिरा। एक जगह नौकरी मिल गई। मेरे मालिक के बंगले के आसपास सुन्दरता बिखरी है, सारा अहाता फूलों, क्यारियों, लताद्रुमों से सुसज्जित है। जगह-जगह नग्न, अर्धनग्न संगमरमर की कलात्मक नारियों व पुरुषों की प्रतिमायें खड़ी हैं। जो नारित्व पुरुषत्व की पाशविक वृत्ति का मूर्तरूप लिये खड़ी थी। मेरे लिए यह कोई विशेष या नया पन नहीं था। मैंने तो इससे भी अधिक विलासिता, पशुवृत्तियों को उत्तेजित करने वाले दृश्य देख चुका था। मैंने एक बार, दो बार, तीन बार इस तरह न जाने कितनी बार उस के चक्कर लगाकर सारी चीजों की छान-बीन की।

मेरे मालिक की दो पुत्रियां थीं, दोनों ही यौवन के बोझ से लदी जारही थीं, फिर भी वे अविवाहिता थीं। इकहरा बदन, सौंदर्ययुक्त मुखमंडल व गौरवर्ण था। बड़ी का नाम सरिता व छोटी का नाम सलीला था। नाम व लक्षणों का समन्वय था। आधुनिक ढंग का रहन-सहन था, फ्राक उनका प्रिय वस्त्र था। उन के पास एक नहीं, तीन मोटरकारें थीं। मैं उनके स्वभाव, रहन-सहन से परिचित हो गया था। उनकी साईकिलें साफ करना, किताबें जमाना, उन्हें कालेज छोड़ आना व कालेज से घर ले आना, मेरा काम था।

मैं एक माह बाद अपनी सितार संभाले बैठा था, "जमाने का दस्तूर है ये पुराना, मिटाकर बनाया, बनाकर मिटाया" के स्वर छेड़ रहा था। मैं संगीत लहरी में अपने आप को खो चुका था। एकाएक मैंने सुना, "दादू !" दबी हुई आवाज में।

मेरा विचार प्रवाह व स्वर लहरी टूट गई। "कौन" मैंने पूछा!

"सरिता !"

"कहिये बडी बी !" मैंने कहा

"ऊपर आओ !"

मैं पहुंचा। उसने धीमे स्वर में पूछा, "क्या कोई आया था !"

"जी, नहीं तो !" वह बिना कुछ कहे निराशात्मक स्वांस छोड़कर, माथे पर हाथ रख शयन कक्ष में चली गई।

* * *

चार घंटे इन्तजार के बाद दोनों बहनें भोजन-गृह पहुँचीं। रात्रि के ग्यारह बज चुके थे। सरिता ने भोजन के बाद मुझे बुलाकर कहा, "यह चिट्ठी लो यदि कोई आये तो उसे दे देना! क्या तुम्हे पढ़ना आता है?"

"जी···जी··· नहीं···नहीं!"

"हाँ जो भी मेरा नाम पूछे इसे दे देना!" मैं साधारण हिन्दी पढ़ना जानता था! अंग्रेजी भी टूटी-फूटी जानता था।

मैं प्रति दिन इधर की चिट्ठी उधर और उधर की चिट्ठी इधर करता रहता। इस कार्य में मैं पूरी वफादारी की। उन चिट्ठियोंके साथ रुपयों की भी आदान प्रदान शुरु हो गया था। चिट्ठियों का रहस्य क्या था, यह भी मैं आपको नहीं बताऊंगा। इनका सम्बंध हरीश बाबू से था। साधारणतया पढ़ी-लिखी, अमीर घराने की बेटियाँ शराफत व आधुनिक फैशन के बुर्के में प्रगति के स्वांग में 'रोमान्स' लड़ाती है यह रहस्य उससे परे था।

प्रातः मैं हमेशा की भाँति कमरे में झाड़ू लगाने गया; देखा सरिता वस्त्रहीन पड़ी है, सारा कमरा शराब की दुर्गंध से भरा हुआ था, पास ही सिगरेट की जले हुए टुकड़े बिखरे पड़े थे। मैं स्तब्ध-सा एक क्षण देखता रहा, मेरा हृदय काँप गया। मैंने तत्काल ही ताला बंद कर दिया। यह पहली घटना मैंने यहाँ देखी थी। बार-बार कमरे के पास जाकर भीतर जाने की इच्छा करता परन्तु हिम्मत मैं हार चुका था। समझ में नहीं आया क्या राज है? क्यों हुआ! कैसे हुआ? किसने किया?

* * *

एक दिन रात्रि को सलीला ने नशे में चूर होकर मुझे अमानुषिक नृत्य करने पर मजबूर किया। मैं भी मनुष्य था, मुझ में भी कमजोरी थी मैं भी गलती कर बैठा, इस में मैं अपना दोष नहीं मानता। शर्म, ग्लानि, आत्मशक्ति व पश्चाताप के कारण उसी दिन मैंने हरीश बाबू के चरणों में जाकर शरण ली। लेकिन उन्हें भी इस बात का पता न था, न मैंने ही उन्हें कभी कहने की चेष्टा की मेरा स्वयं का जीवन इन बंगलों, महलों, कोठियों तथा पाश्चत्य सभ्यता के रंगों में मदहोश होकर रहने, घूमने वालों की रहस्यमयी कहानियों से भर पड़ा है। लेकिन मैं उन सबसे मौन हूं।

मैं हरीश बाबू के यहाँ रहा, उन्होंने मुझे एक दोस्त की तरह रखा। वे अमीर थे, परन्तु उनका हृदय गरीबों की झोपड़ी के तुल्य था, जिसमें बड़ी-से-बड़ी चीज भी समा लेने

का सामर्थ्य था, क्या सुख व क्या दुःख! मैं हमेशा ही अमीरों के बंगलों में चाहे जिस हैसियत से, रहना चाहता हूं। यह मेरे जीवन की रहस्यमयी भावना है। जब मुझे अपना अतीत याद हो आता है, मेरे पिता एक किसान थे, जमींदारी के गुलामी में पीस रहे थे; मैं बचपन से ही माँ के वात्सल्य से अछूता रहा; मेरी सुन्दर यौवना भगिनी ने जब अपनी इज्जत खानदान की परम्परा रखने के लिए, समाज भेद भाव, बाल विवाह के रोग की यातना से पीडित हो आत्महत्या की; केवल पूंजीपतियों की कोप दृष्टि के कारण। जमींदारी जिस तरह शोषण स्वभाव वाली है, त्यों ही जमींदार स्वभावतया अत्याचारी होते हैं; मेरा विश्वास बन्ध चुका था। बडे-बडे जल्से होते सेठ, साहूकार, सेवक, नेता, अधिकारी सब-के-सब लम्बे-लम्बे भाषणों में सहयोग, प्रेम, सद्भावना, सेवा त्याग की व्याख्या करते व उपदेश देते। परंतु मुझे याद है जिन दिनों मेरे भाभी व माँ मरण शैया पर थे उनके कफन के लिए जब मैं पांच रुपये के लिए सेठ राधेश्याम, जमींदार अकबर अली, सरदार वीरेन्द्रसिंह के पास पहुंचा था तब मुझे वहां से भिखारी, चोर, आवारा, झूठा कहकर निकाल दिया गया। मैंने सब कुछ सहा और करता भी क्या मजबूर, कमजोर, गरीब जो था और इससे बढ़कर था बुझदिल! मैं भूखों रहा, रात-रात ठण्ड गर्मी में सड़कों पर सोया, अर्ध नग्न घूमा, रात-रात, आठ आठ आंसू रोया! परंतु कौन जाने मेरी इस स्थिति को भगवान ने स्वयं भी देखा या नहीं—मैं नहीं जानता!

मेरे मन में प्रतिहिंसा की भावना जागृत हुई। मेरी आत्मा कोस रही थी उन सब पाखंडियों को, जो मनुष्यता का रूप लिए दानवता का नृत्य कर रहे थे। लेकिन मैंने जब निगाह उठाई तो मेरे जैसे ही लाखों परिवार बेघर बार, सताए हुए कुत्ते की जिन्दगी जी रहे हैं। मैं तो भी सहारा पा गया, परंतु कितने ही ऐसे हैं जिनका मकान होटल, बिस्तर फुटपाथ, और जिन्दगी बेकारी, कंगाली और भिकमंगी है!" तब मैं सहम जाता हूं।

मैं किताब पढ रहा था कि यकायक एक मैले कुचैले कपड़ों लिपटी में मेहतरानी आकर एक रुपया मांगने लगी। मैंने रुपया दिया, घूंघट हटते ही मैं चौंक-सा गया! उसका सौंदर्य, उसका यौवन, उसकी मादकता ने मानों मेरा विवेक हरा दिया! विश्वास न हुआ कि यह मेहतरानी है!

रात्रि में मैं सितार के स्वर समाप्त कर अपनी जीवन की गुत्थियों को सुलझाता हुआ सडक पर घूम रहा था कि अचानक पीछे से एक कार की टक्कर से मैं गिर पडा। कार से एक युवती उतरी व एक सेठजी! युवती की ओर तनिक देखा वह पाश्चात्य वस्त्राभूषणों व शृंगार से सुसज्जित थी। मुझे ऐसा लगा मैं पहिचानता हूं, परन्तु ठीक-ठीक नहीं बता सकता कि यह कौन है?

मैं अस्पताल में रहा; मैंने स्वास्थ्य पाया। मुझे चक्कर से आये, मैंने एक ख्वाब-सा देखा। मेरे आसपास नर्क की तरह गंदगी, खून, हाड मांस के टुकडे बिखरे पडे हैं। पिशाच व भूत तांडव नृत्य कर रहे हैं। उनके मुंह, हाथ बदन खून से सने हैं। वे मेरी ही तरह बद सूरत, लम्बी लम्बी बांहें, लंबी नाक, बड़े-बड़े पैर, कालाशाह रंग, हाथी जैसे दांत फौलाद की तरह मजबूत उनकी पेशियां··· और उनका उपहासात्मक अट्टहास, शायद वे मेरी मजबूरी पर हंस रहे थे। महलों के स्थान पर कब्रें नजर आ रही थीं। एक लम्बा हाथ मेरे करीब आया, मेरा हाथ पकड़ कर मुझे भी उस नृत्य में शामिल करने का प्रयत्न किया जा रहा था; मेरी कलाई मानों उस फौलादी हथेली में चूर होगई हो, मैं चीख पड़ा।·······मुझे होश आया, मुझे अपनी हथेली में इंजेक्शन दिया जा रहा था।····· मैंने हरीश बाबू से पूछा···· अभी तुमने कुछ देखा। "नहीं तो!" मैं चुप हो गया। इसी बीच मेहतरानी ने घुंघट खोल कर मेरी सितार के टुकडे रख दिये। मैं चौंक-सा गया। यह वही स्त्री थी जो रात्रि में कार में बैठी थी! लेकिन उसकी आंखों में दया की याचना व मजबूरी की प्रतिछाया थी।

"मुझे मेरी सितार दो बाबू··· तूफान आ रहा है; मैं अपने गांव जाऊंगा!"

"तुम्हारी सितार तो टूट गई है दादू, अब क्या होगा, तूफान कैसे रुकेगा?"

"मेरी सितार टूटी है; तार नहीं, वह प्यार संजोयेगी।"

लेकिन मैं देख रहा हूं वह तूफान की आहट दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही है, मैं देख रहा हूं एक दुबला पतला, एक पंचा लगाये हाथ में लकड़ी थामें कोई महामानव आत्मबल से उसे टकरा रहा है व तूफान को रोकने का प्रयास कर रहा है।

सूरज ढल रहा है, रात्रि आने वाली है; न जाने तूफान कब उठ खड़ा हो!

उस तूफान की आहट शायद आप भी सुन रहे होंगे?

अमरकंटक को

— रामकिशोर 'पाषाण', वर्धा

यों तो यात्रा के लिए हजारों यात्री देश व तीर्थ स्थानों में घूमते रहते हैं किन्तु हम जिस निश्चय से अमरकंटक को चले थे, वह कुछ विचित्र ही था। हमारा निश्चय था कि हम लौटेंगे ही नहीं। उस समय हमारा बाल्य-काल था। हम नववीं कक्षा पास हुए थे। जाने क्यों हमें जीवन से निराशा-सी हो गई थी। शायद इसलिए कि हम जीवन की विभत्सता, मनुष्य का पाशविक स्वरूप देख चुके थे। इसके अतिरिक्त हमें अपने कुटुम्ब में भी सुख प्राप्त न हुआ था। हमने अमरकंटक को इसलिए चुना था क्योंकि हमने सुना था कि वह अत्यन्त रम्य, एकांत और भव्य स्थान है (और सचमुच वह है)। कपिल मुनि ने दर्शनशास्त्र की रचना यहीं पर की थी। ऐसे एकांत स्थान में ही तप करने का हमने निश्चय किया था। हम जीवन में शांति और फिर मुक्ति पाने के लिए ईश्वरोपासना अत्यन्तावश्यक समझते थे कि वहां किसी मुनि के शिष्य बनकर अपने जीवन को सार्थक बनाने की चेष्टा करें।

यह कह देना आवश्यक-सा है कि हम बिना अनुमति लिए ही घर से चल पड़े थे। यह भी एक लम्बी कहानी होगी कि कैसे हम प्रथम बार भागने में असफल रहे और दूसरी बार सफल हो सके। केवल एक थैली में समा सकें इतने वस्त्र लेकर हम—मैं और साधूराम—आमगांव-लोकल पर रवाना हुए। बम्बई की पैसेंजर १॥ बजे रात को गोंदिया पहुंचती थी और उस समय भाग सकना असंभव था। अतः हमने शाम की 'लोकल' से आमगांव जाकर वहां ठहरना उचित समझा। पर जब हम भयत्रस्त से सवार हो गए और गाड़ी चल पड़ी, हमने गोंदिया को अंतिम नमस्कार किया। हम सर्वदा के लिए जो उसे छोड़ रहे थे! डब्बे में केवल हम दोनों ही थे। अतएव हमें अपने उद्‌गारों को प्रकट करने का अच्छा मौका मिला।

अपने माता-पिता का हमें विशेष मोह न था क्योंकि हम जानते थे कि एक न एक दिन बिछड़ना ही पड़ेगा। जबतक गोंदिया के बिजली के बल्ब दिखाई देते रहे, हम अपनी उस सहवासिनी को श्रद्धा और आग्रह-पूर्वक देखते रहे। हम बहुत प्रसन्न थे क्योंकि हमने वह मार्ग पकड़ा था जिसे पकड़ने का कोई साहस नहीं कर सकते थे और जो हमारी आत्मा को उच्च बनाता हुआ परमात्मा में मिला देता।

आध घंटे के भीतर हम आमगांव पहुंच गए। छोटा-सा स्टेशन था और इसलिए हमारे छिपने के लिए उपयुक्त था। प्रश्न यह था कि वेटिंग-रूम में ही ठहरा जाय या सामने की 'होटल' कहलाने वाली दुकान पर कुछ खाया जाय और इसी बहाने वहीं लेटा भी जाय। हमारे साथी वहां पहले भी जा चुके थे। उन्होंने बताया कि उसी होटल में सोया भी जा सकता है। हम वहीं गए और बेफिक्र होकर हमने भोजन किया। हम वहीं लेटे भी।

आखिर डेढ़ बजे गाड़ी आई। हमें मुश्किल से इंटर क्लास का एक ऐसा डब्बा मिला जिसमें हम दोनों बैठ-भर सकते थे। यात्रीगण बर्थ पर और बर्थ के नीचे भी सो गये थे—रईस थे न! हमारे एक मित्र एक सुसुप्त स्त्री के पैर के पास एक फूट खाली जगह देख उस पर बैठ गये। किन्तु एक महाशय जो उस स्त्री के 'कोई' थे, यह सहन न कर सके कि एक लड़का उनकी 'किसी' के समीप बैठे। उन्होंने हमारे मित्र को वहाँ से उठा दिया। हम उन महाशय से क्षमा माँगते हुए किसी भांति सिमिट-सिमिट कर बैठ गए।

हम रात भर जागते रहे। मेरे जीवन में यह प्रथम रात्रि है जब कि मैं अन्त तक जागता रहा और विशेषता यह कि प्रातःकाल मुझे रात्रि के जागरण की कुछ भी थकावट प्रतीत नहीं हुई। प्रातः जब अन्य यात्रीगण जाग उठे, हमें वहाँ ज्ञात हुआ कि कटनी के लिए गाड़ी तैयार है। मैं एक दिन बिलासपुर ठहर कर पुराने मित्रों के अंतिम बार दर्शन करना चाहता था, किन्तु हमारे साथी न माने।

आखिर हम पेन्ड्रारोड की दो टिकिटें खरीद लाए और उक्त कटनी-गाड़ी पर जा बैठे। हमें काफी स्थान मिल

गया, जहाँ पडे-पडे हम अमरकंटक के कल्पित दृश्य को बार-बार मानस चक्षुओं के सम्मुख खींच लाते थे। 'किस प्रकार हम एकान्त और रम्य स्थान में, जहां से जल-प्रपात निकट ही होगा, अपना तंबू तानेंगे।... नहीं, इस प्रकार का नहीं। ऐसे तंबू से तो वर्षा ऋतु में कठिनाई होगी। यदि कोई उपयुक्त गुफा मिली तो गुफा में ही रह जाएंगे। और शीत लगेगी तो... ? तो दोनों चिपट कर सो जावेंगे। वरन् पेन्ड्रारोड में ही एक ब्लैंकेट खरीद लेना उपयुक्त होगा। एक लोटा खरीद लेंगे, और कोपीन, गेरुए वस्त्रादि भी। क्यों जंगल में यदि शेर के हाथ लगे तो ? अजी ऋषियों के आश्रम में शेर और हिरण साथ ही रहते हैं ? हम तो पुण्यात्मा रहेंगे, हमारा क्या करेगा शेर ? जब हम ही उसे त्रास न देंगे तो वह हमें दुःख पहुंचावेगा ही क्यों ! और यदि हमें मार भी खाया तो क्या हानि होगी... हम तो अहिंसक रहेंगे।' इत्यादि।

किसी स्टेशन पर एक खोंचेवाला पूरी बेच रहा था। मैं पाँच पैसे की पूरी ले आया। न जाने क्यों साधूराम (जो स्वयं क्षत्रिय थे) मुझे ब्राह्मण समझते थे। जब मैं द्रोण में साग और पूरी ले आया, उसने कहा— "अरे यार अब जात-पात का झगड़ा छोड़ो, दोनों एक ही द्रोण में खा लेंगे।" हम दोनों एक ही द्रोण में, बड़े प्रेम से निपट गए। बहुत तृप्ति हुई हमें और आनन्दपूर्वक समय कटा।

हम जब पेन्ड्रारोड़ पहुँचे शायद साढ़े-दस बज चुके थे। स्टेशन से कुछ दूर चलने पर हमें कपड़ों की दुकानें मिलीं। हमने कोपीन के लिए कुछ वस्त्र, एक चादर, और एक दरी तथा एक दुशाला खरीदा। पीतल का एक बड़ा लोटा भी खरीद लिया।

तांगे वाले ने अमरकंटक चलने के पांच रुपये प्रति सवारी मांगे। हमारी हैसियत इतने रुपये देने की नहीं थी। हमने एक दिन वहीं ठहरने का निश्चय किया ताकि कुछ जानकारी प्राप्त हो जावे और आराम भी। एक हलवाई की दुकान पर करीब १२-१३ वर्ष का एक लड़का बैठा था।

"क्यों जी, पूरी तैयार है ?" हमने उससे पूछा।

"अभी तो नहीं है।... कितनी होना आपको अभी बना देता हूं।"

हम एक खटिया पर बैठे और जब तक पूरी बने हमने जलेबियों पर हाथ साफ किया। इस बीच एक स्त्री द्वार की देहलीज पर आकर बैठ गई। उसने पूछताछ आरंभ किया और कुछ अपना हाल भी बताया। हमने उसे अपना परिचय दिया किन्तु बहुत कुछ सुरक्षित रखते हुए। 'अगर अमरकंटक के तीरथ को जाना ई था भैया तो किसी बुजुर्ग को साथ ले आते। परदेश का मामला है— न जाने कैसा, क्या हो जावे।' उसका रिमार्क था।

हमने उस लड़के का नाम पूछा। 'किशोरी' था। बड़ी फुर्ती से उसने पूरी बना ली और साग भी चंद मिनटों में तैयार कर लिया। वृद्धा इस समय भीतर चली गई थी। हमने पूरी के साथ ही किशोरी की बातों का भी मजा लेना आरंभ किया। उसने बताया कि उक्त स्त्री ने पाल-पोस कर उसे बड़ा किया है। वह स्त्री उसकी माता नहीं है और न पिता ही जीवित है। कुछ थोड़ी-सी खेती है। वह ऊसर-सी ही है। फिर भी कुछ उपज हो जाती है यदि वृद्धा वहां चल दी तो। वर्ना ठेके पर ही दे देते हैं।... इत्यादि।

खाते-पीते तीन-चार बज गए थे। हमने किशोरी पर इच्छा प्रकट की कि हम रात्रि को भी यहीं खा लेंगे और यहीं पड़े भी रहेंगे। उस स्त्री ने और किशोरी ने भी अनुमति दे दी। हमने उसे एक कुली ठीक कर देने को कहा जो हमें दूसरे दिन सवेरे ही अमरकंटक पहुंचा दे। अमरकंटक वहां से १४ मील की दूरी पर है। हमें सामान (बिस्तर का एक बंडल) ले चलने तथा मार्ग निर्दशन के लिए एक सहायक की आवश्यकता थी। किशोरी ने अपने पहचान के एक सीधे-साधे, मनहूस नाई को खड़ा किया जो दो एक बार अमरकंटक हो आया था। हम उस नाई से, जिसका नाम शायद कालू था, बात कर ही रहे थे कि किशोरी एक टूटी-सी कुर्सी को खींचकर उस के पास बैठ गया और अपना पैर उसकी गोद में देकर हुक्म दिया "ले दाब रे।" कालू ने बात-चीत के साथ-ही-साथ उसका पैर दाबना भी प्रारंभ कर दिया। किशोरी के मुख पर गर्व और गुस्ताख़ी से भरी मुस्कान थी और कालू की मूर्खता उसके मुख और बातों पर से स्पष्ट छलकती थी।

तो १२ आने में कालू राजी हुआ और दूसरे दिन बिलकुल सुबह आने का वादा कर चल दिया।

हमने आमगांव से चलते समय ही अपने नाम बदल दिये थे और निश्चय कर चुके थे कि उन्हीं नामों से एक

दूसरे को पुकारेंगे। किशोरी ने जब हमारा नाम, ग्राम पूछा, ग्राम तो हमने झूठा ही बता दिया किन्तु नाम के बारे में उससे कुछ भी न कहना हमने उचित समझा। हम दोनों एक दूसरे की ओर देखकर मुस्करा भर दिए। साधू कई बार याद न रहने से, मुझे असली नाम से ही संबोधित करते थे। मैं अंग्रेजी में उससे कहता—नकली नाम से पुकारो जी। आखिर हुआ कि किशोरी ने मुझे दो नामों से संबोधित होते हुए सुना और हमारी बातों में उसे कुछ रहस्य प्रतीत होने लगा तो उसे संशय आया कि यह लोग शायद भागे हुए मुजरिम हैं!

फिर उसने बताया कि इसी तरह एक स्त्री उसके यहाँ ठहरी हुई थी। तब नाम-ग्राम उसने जो बताए थे, उसे इन लोगों ने सच समझा और उसे अपने यहां आश्रय दिया था। दूसरे ही दिन पुलिस तलाश करती हुई उसके यहां आ पहुँची। मालूम हुआ कि वह स्त्री भागी हुई है। इस तरह उस स्त्री के साथ इन्हें भी छः माह तक अदालत की खाक छाननी पड़ी थी। "इस जमाने में परोपकार ही पाप हो गया है भाई!" हमने उसे आश्वासन दिया।

अन्धकार छा रहा था। कुछ नाश्ता करके हम लेट गए। किशोरी खा-पीकर अपने पड़ोसियों के यहां घूम आया। "देखो", उसने कहा, "हमारे पड़ोसी सेठ लोग कहते हैं कि उन्हें अपने यहाँ मत ठहराओ।" "ऐसा!" हमें आश्चर्य हुआ।

"हाँ। और बुजुर्गों की बात भी माननी चाहिए।" वह बोला। मुझे क्रोध आया कि महाशय को, अब, जबकि हमें नीन्द आरही है, भगाने की सूझ रही है। शाम को ही बता दिया होता तो हम दूसरी जगह इन्तजाम करते। किंतु साधु ने कहा, "अरे भाई दूध का जला छांछ को भी फूंक-फूंक कर पीता है।"

किशोरी हमें धर्मशाला तक पहुंचाने के लिए राजी हो गया। बिस्तर का बंडल ले, धर्मशाले में जाकर तलाश किया कि कोई कमरा मिल सकता है क्या। सौभाग्य से एक खाली कमरा हमें मिल गया। हम बिस्तर फैलाकर सो रहे।

उस समय न जाने क्यों मेरा हृदय क्षुब्ध हो गया था। ग्राम-वासी बहुत जल्द हृदय मिला लेते हैं। शाम को ही किशोरी ने हम से इस भांति दिल्लगी-मजाक करना आरंभ कर दिया था मानों वर्षों से जान पहचान हो। उसकी दिल्लगी कभी बार हद के बाहर भी पहुंच जाती थी और वह ऐसी बात कर बैठता कि मेरे हृदय को ठेस पहुंचती। और अब, रात्रि के भीषण अन्धकार में, इस अनजाने देश में, इज्जत के साथ जब उसने हमें निकाल दिया, मेरा हृदय रो पड़ा और मुझे यह अखरा कि मैं परदेश में इस दीनावस्था में हूं।

* * *

दूसरे दिन सुबह हम फिर किशोरी के यहाँ आए। वह हमें कालू के घर ले गया। हमने देखा एक लोहार की दुकान पर 'चुरई' पीता हुआ वह बैठा था। किशोरी ने जब याद दिलाई तो बोला 'मैं आवत ही तो रहयों बाबू' दूकान के बाहर निकलने के पूर्व उसने एक-दो दम और लगा ही लिए। उसके पास सामान देकर हम रवाना हुए।

हम सुबह पांच बजे ही निकलने की सलाह कर चुके थे; किन्तु निकले आठ के लगभग। डर था कि रास्ते में ही धूप कड़ी न हो जाय। कालू से जल्दी-जल्दी चलने को कहा। किन्तु जल्दी जल्दी चलने पर भी वह इस वेग से चल रहा था मानों छः माह का रोगी हो। हमने जब डांट लगाई तो बोला 'मैं पाछे-पाछे आवत हूं बाबू।' 'नहीं, हमारे साथ चल नहीं तो पैसे नहीं मिलेंगे।' साधू ने डर बताया। हमारा बिस्तर हमें वापस करता वह बोला 'मैं ना आवत बाबू' और वापस चला। 'अरे', मैंने कहा, 'चलता क्यों नहीं, क्या हुआ?'

'बाबू तुम उहां पहुँच कै हमका पैसे ना दै हौ, हम जानत हैं।' और उसने जिद पकड़ ली। हमने कहा 'अच्छा बाबा, पैसे पहले ले ले; लेकिन हमारे साथ-साथ तो चल।' हमें यह डर हो गया कि बेइमान हमें रास्ते में ही छोड़कर न लौट आवे।

'हम तो ऐसे ही चल हैं।' वह बोला। 'अच्छा जा।' हमने कहा। हमने विचार किया कि मार्ग तो कोई बता देगा। वर्ना जिस परमेश्वर के दर्शन को जा रहे हैं, वही राह लगा देगा। सामान को दोनों बारी-बारी से पकड़ लिया करेंगे।

अब हम उस सड़क पर आ गए थे जो रेलवे लाइन को काट कर अमरकंटक की ओर जाती है। कुछ पलाश के वृक्षों को छोड़ बाकी मैदान ही है। आगे जाने पर पानी का एक डबरासा मिला जहां दातौन आदि करके हम अपनी राह चले। दो-तीन मील पर एक ग्राम में हमें प्यास-सी प्रतीत हुई। एक कुंआ देख हम बालटी की खोज में निकट के मकान पर पहुँचे। एक लड़के ने बताया कि उस कुंए में एक गाय गिरकर मर गई थी इसलिए वहां का पानी कोई नहीं पीता। आगे करीब छः फर्लांग पर एक नाला है, उसने बताया। हम सुबह से कुछ भी खाये पीये न थे। दस का समय हो रहा था। अतएव नाले पर पहुँचते ही हमें पेट-पूजा की सूझी। नाले में केवल दो-तीन इंच पानी था, किन्तु वह स्वच्छ बहता हुआ था। वहीं एक ग्वाले से पूछने पर पता चला कि अब करीब १॥ मील बाद कुआ मिलेगा। इसलिए हमने वहीं पर नाश्ता करना उचित समझा (साथ में पूरी हमने रखली थी)। उसी रूखे-सूखे भोजन में हमें अपूर्व आनन्द प्राप्त हुआ। हमने करीब १० मिनट में नाले में एक जगह एक फूट गड्ढा खोदा। जब वहां का पानी साफ हो गया, हमने उससे अपनी क्षुधा शान्त की।

पखुरिया पेन्ड्रा से छः मील दूर है। हमने वहीं विश्राम करने की ठानी थी। कुछ ही दूर जाने पर, प्रथमतः थकान से, दूसरे धूप की तेजी के कारण और तीसरे सूखा भोजन करने के कारण हमें प्यास प्रतीत हुई और कोई उपाय न देख हमने आँवले तोडकर खाना आरम्भ किया। इससे कुछ आनन्द भी हुआ, खेल भी हुआ और क्षुधा को भी कुछ सांत्वना हुई। आगे चलकर एक कुंआ मिला जहां हमने पानी पिया।

अब, इस पुण्य-भूमि में आकर हम जाति-पांति का छूत छोड़ चुके थे। इसी लिए पखुरिया में भी जब हमने पानी पिया, हमने इस पर ध्यान न दिया कि यह कुंआ अछूत का तो नहीं है। इस पांच मील की यात्रा में थक जाने का मुख्य कारण हमारा बिस्तर का बंडल था, जिसे बारी-बारी से रख वह भी हम एक बला-सी समझने लगे थे।

हम मुसाफिर-खाने के पास आये, जो वहां का डाक-बंगला कहलाता है। सौभाग्य से वह खाली था। पास ही तालाब था —पानी की अड़चन न थी। अतएव हमने उस दिन वहीं पर मुकाम करने की सोची। भीतरी कमरे को हमने झाड़कर साफ किया और वहीं बिस्तर बिछाकर लेट गए। किन्तु तुरंत ही, रात्रि की चिन्ता ने हमें सम्मुख की दुकान पर जाकर यह पूछने को बाध्य किया कि वहाँ क्या-क्या मिल सकता है। हम पूछ-ताछ कर ही रहे थे, जब एक व्यापारी घोड़े पर कुछ सामान लादे पेन्ड्रा से आया। वह अमरकंटक जा रहा था। उसके पास सामान अधिक न था। इस लिए उसने हमारा बिस्तर ले जाना स्वीकार किया। हमने उसी समय अमरकंटक को प्रस्थान करने की तैयारी की। दुकान से कुछ सत्तू, शक्कर और थोड़ा-सा नमक आदि खरीद कर हम उस युवक के पीछे-पीछे चले। अब रास्ता भूलने का डर न था। फिर उसने हमसे यह भी कहा कि वह हमें अमरकंटक में 'रानी के मुसाफिर खाने' तक पहुंचा देगा।

पहले तोडे हुए आँवलों का स्वाद (नमक के साथ) लेते हुए अब हम जिस राह पर चले वह अधिक ऊंची-नीची थी। कई बार टेकडियां और कई बार गढों को पार करना हमें कष्ट-प्रायः लग रहा था। किन्तु वह वन का वातावरण हमें बहुत अच्छा प्रतीत हो रहा था। कभी-कभी पानी की बून्दें भी टपका करती थी। बादलों के झुण्ड के झुण्ड आकाश पर मंडरा रहे थे। दोनों ओर पलाश तथा अन्य जंगली वृक्ष एक दूसरे से अधिक ऊंचे होने का गर्व कर रहे थे। बीच-बीच में छोटे-छोटे नाले भी मिले। हमने अन्दाज किया कि इन्हीं नालियों में से किसी का उस नाले में रूपान्तर हुआ होगा जिसका जल हमने सुबह पिया था। एक दो बार हमें एक नवीन-सी आवाज सुनाई दी। पूछने पर ज्ञात हुआ कि वह मोर की आवाज थी। "यहाँ मोर कभी-कभी दिखाई देते हैं।" उस युवक-व्यापारी ने हमें सूचित किया। "बस यहां ठहरेंगे!" हमारा दिल उछल गया। किन्तु वह उछल कर ही रह गया। हमारा गन्तव्य बहुत आगे था। अतएव किसी तरह दिल को समझाते हुए हम बढ चले। एक पेड पर हमें कपड़ों की धज्जियां दिखाई दी। प्रत्येक शाखा पर चिथडे टंगे थे। कुछ पेड़ की जड़ के पास भी रखे हुए थे। हमनें तो अनुमान किया कि यह जादू की सामग्री होगी। किन्तु उस

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

रामटेक—एक पुण्य तीर्थ

— उमाशंकर शुक्ल, वर्धा

मध्यप्रदेश में रामटेक एक पवित्र तीर्थ स्थान है जहां हजारों स्त्री पुरुष हमेशा जाते हैं आप भगवान राम के दर्शन कर अपने को धन्य समझते हैं। राम के मंदिर के अलावा वहां पर लक्ष्मण, हनुमान, लवकुश आदि अनेकों छोटे बड़े मन्दिर हैं। राममन्दिर बहुत ही प्राचीन है और नागपुर के अप्पा साहेब भोसले राजा ने राममन्दिर के चारों ओर किला बनवाया था। रामटेक के आसपास अनेकों तालाब हैं और कई दर्शनीय प्राकृतिक स्थल हैं जो यात्रियों को अपनी ओर आकर्षित करते रहते हैं।

नागपुर के कुछ पुरातत्ववेत्ताओं ने इस बात का शोध लगाया है कि महाकवि कालिदास ने अपना मेघदूत काव्य यहीं रचा था। रामटेक में कालिदास स्तम्भ भी स्थापित किये जाने की कोशिश हो रही है और स्तंभ के लिए रामटेक में स्थान की भी खोज कर ली गई है। यहां पर रामचंद्र जी आकर रहे थे और इसलिए ही महाकवि कालिदास ने लिखा है।

आपृच्छस्व प्रियसखममुं तुंगमालिंग्य शैलं वन्द्यैः पुंसां रघुपतिपदैरंकितं मेखलासु। काले काले भवति भवतो यस्य संयोगमेत्य स्नेहव्यक्तिश्चिरविरहजं मुंचतो वाष्पमुष्णम्।

मेघदूत १२

अर्थात् 'हे मेघ! जिस पहाड़ से तुम लिपटे हुए हो, इसकी ढालों पर भगवान रामचंद्रजी के उन पैरों की छाप जहां तहां पड़ी है, जिन्हें सारा संसार पूजता है। और जब तुम इनसे मिलने आते हो, तब तब यह भी बहुत दिनों पर मिलने के कारण तुम्हारे साथ अपने गरम-गरम आंसू बहा कर अपना प्रेम प्रगट करता है। इसलिए अपने इस प्यारे मित्र पहाड़ की चोटी से जी भर गले मिलकर इससे बिदा ले लो।'

जिस पर्वत पर राम मंदिर है उस पर्वत का नाम सिंदुरागिरि है। पद्मपुराण में पर्वत के संबन्ध में लिखा है कि यह पर्वत विंध्य पर्वत के दक्षिण दिशा में है। उसके दर्शन से गौहत्या, बालहत्या और ब्रह्महत्यादि पापों का नाश होता है। उसी तरह अवंती, गोमती, कांची, काशी व मथुरा आदि तीर्थों को जाने का जो फल मिलता है सो इस पर्वत के दर्शन से प्राप्त होता है। जो एकादशी के दिन रहकर श्रीराम दर्शन लेवें उनको मोक्ष प्राप्त होता है।

इस पर्वत को तपगिरि भी कहते हैं कि जब नरहरि ने हिरण्यकश्यप का वध करके शरीर को छिन्न-भिन्न किया तब उसके खून से यह पर्वत सिंदूर के रंग का बन गया, इसलिए इस पर्वत का सिंदुरागिरि नाम पड़ा। और तपगिरि नाम होने का कारण यह है कि इस पर्व के चारों ओर दरवाजे हैं। पूर्व दिशा में सूर्य नदी है। वर्तमानकाल में उसे सुर-नदी कहते है और सुरदेवी व घंटेश्वर के मन्दिर हैं। इस नदी में स्नान करने से और घंटेश्वर जी का दर्शन करने से सब तरह की व्याधियाँ दूर होकर बड़ा ही आनन्द प्राप्त होता है।

दक्षिण दिशा में मोक्षकुंड, मोक्षजा देवी और सिद्धेश्वर नामक शंकरजी का स्थान नगरधन नामक ग्राम में है। इस कुंड में स्नान करने से और सिद्धेश्वर का दर्शन पाने से मन को शांति मिलती है।

उत्तर दिशा में मणिकाल नामक तालाब, हिडिंबा देवी, केदार और भीमनाथ हैं। यह मनसर ग्राम की सीमा पर है।

अंबाला तालाब

इस तालाब के चारों ओर घाट बने हुए हैं। यहां स्नान कर लोग राममंदिर के दर्शन करने जाते हैं। अंबाला तालाब को अंबकुंड भी कहते हैं। उसमें आठ तीर्थों का समावेश है। वे हैं—गंगास्तोत्र, शंखतीर्थ, अग्नितीर्थ, अंब-तीर्थ, वरुणतीर्थ, शुक्लतीर्थ, नृसिंहतीर्थ और कुरुक्षेत्र।

इस स्थान पर पिंडदान किया जाता है। अंबाला तालाब जाने के लिये जो दरवाजा बना है, उसे काशी दरवाजा कहते है। कहा जाता है कि काशी जाने के पहले

यात्रियों को पहले रामटेक के दर्शन करना चाहिए। अंबाला में जाने से पहले रामटेक की म्युनिसिपल कमेटी प्रति यात्री दो आने टैक्स लेती है। उक्त टैक्स का उपयोग वह मंदिरों को सुधारने, सफाई आदि के कामों में खर्च करती है। रामटेक म्युनिसिपल कमेटी की सीमा में रहने वालों को टैक्स नहीं देना पड़ता।

वहीं पास में नारायण टेकड़ी है। वहां पर नारायण-स्वामी की समाधि है और रमणीय स्थान भी।

नागार्जुन का मंदिर

अंबाला तालाब से थोड़ी दूर पर नागार्जुन का मंदिर है। यह पहाड़ के भीतर है और खूब चढ़ाई चढ़ना पड़ता है। पहाड़ पर सीढ़ियां लगी हुई हैं। नागार्जुन से आसपास का प्राकृतिक दृश्य बहुत ही रमणीय मालूम होता है। नागार्जुन का मन्दिर बहुत ही प्राचीन है। कहते हैं कि नागार्जुन सतयुग में वहां पर तपस्या करते थे। वहीं पर अर्जुन भी आये थे। मंदिर में नागार्जुन की मूर्ति बनी हुई है, वहीं पास में तीन जोड़ी खड़ाऊ रखी हुई हैं।

* * *

राममंदिर जाने के पूर्व बाराह भगवान की मूर्ति है। एक ही पत्थर की मूर्ति है और उनके पेट के नीचे से स्त्री पुरुष निकलते हैं कहते हैं कि जो कपटी तथा पापी रहते हैं वे बड़ी मुश्किल से निकल पाते हैं।

आगे चलकर गोपालकृष्ण का मंदिर है। वहां से भैरव दरवाजा, गौकुल दरवाजा, हनुमानजी का मंदिर, लक्ष्मणजी का मंदिर, राममंदिर आदि हैं।

रामटेक में एक बात देखने में विशेष रूप से आई और वह यह कि वहां पर काले मुंह के बन्दर बहुत है और यात्रियों से बड़ी ही नम्रता से पेश आते हैं। यात्रियों को पकड़ कर खडे हो जाते हैं। यात्री उन्हें चना, लाई आदि चीजें बड़ी ही श्रद्धा के साथ देते हैं। बंदर यात्रियों को बिलकुल नहीं सताते और इस तरह यात्रियों से मिलते जुलते हैं मानों कि पहले के परिचित हों। लोग भी उन्हें राम की सेना के सैनिक समझ कर उनका आदर करते हैं।

मंदिर की दीवालों पर लोग कोयले, पेन्सिल व खीलों से अपने नाम लिखते हैं—यह ठीक नहीं। इससे मंदिरों की सुन्दरता नष्ट होती है। मंदिर के व्यवस्थापकों को इस ओर ध्यान देना चाहिए।

* * *

सिंदुरागिरि पर्वत पर शूद्र राजा किरात ने तपस्या की थी और फलस्वरूप अयोध्या में एक ब्राह्मण का लड़का मर गया था। पिता के जीते जी पुत्र उस समय नहीं मरता था। पता लगाने पर जब रामचंद्रजी को मालूम पड़ा कि शूद्र तपस्या कर रहा है तो वे रामटेक आये और उसको मार डाला। वह शूद्र राजा भगवत्भक्त था, इसलिए उसके कटे हुए मुख से 'राम-राम' शब्द निकल रहे थे। उस राजा ने वरदान मांगा और कहा कि भगवान आप इस पर्वत पर हमेशा रहिए। आप अकेले न रहकर लक्ष्मण, सीता व हनुमान के साथ रहिएगा। और उसका शरीर लिंगरूप बन गया। यहीं पर धूमरेश्वर का शिवालय है। जो कोई वहां पर जाता है वह पहले धूमरेश्वर के दर्शन करता है और बाद में राम के दर्शन करता है।

राममन्दिर के नीचे हिस्से पर जैनियों का शांतिनाथ का मन्दिर है। मन्दिर बहुत ही अच्छा बना हुआ है। बहुत ही प्राचीन मन्दिर है।

रामटेक एक दर्शनीय स्थान है यहां पर यात्रियों का आना जाना हमेशा रहता है। यहां पर अंबाला तालाब के पास धर्मशालाएं भी बनी हुई है। रामटेक की यात्रा बहुत ही सुखद होती है और बार-बार जाने को मन करता है।

(शेष पृष्ठ २९ का)

युवक ने बताया कि यह 'चिथडे देवता' हैं। आगे भी एक-दो वृक्ष इसी भांति चिथडों से लदे दिखाई दिए। प्रत्येक बार वह युवक उन्हें प्रणाम करता था। हमें केवल कौतूहल होता था। "यहां क्या शेर-चीते आदि नहीं आते ?" हमने उससे चिरवांछित प्रश्न पूछा। "कभी-कभी चीता दिखाई दे देता है दूर पर।" वह बोला। "तुम्हें डर नहीं लगता—तुम तो हमेशा जाते रहते हो—कभी मुकाबला हुआ ?"

"भाई" उसने कहा, "डरने ही लगे तो हमारा पेट कैसे भरेगा ?"

पखुरिया से ३-४ मील पर आमानाला है। हमने वहीं पर विश्राम करने की सोची, क्यों कि उस के बाद तीन-चार मील की बहुत कठिन चढाई चढनी पड़ती है। आमानाला भी एक मामूली-सा नाला है किन्तु जल उसका बहुत स्वच्छ है।

(शेष अगले अंक में)

सब्जियां और उनका महत्व

हरि बाबू वाशिष्ठ, बी. ए. अलवर,

अनादि काल से मानव-भोजन में, कंद-मूल-शाकादि का महत्वपूर्ण स्थान रहा है किन्तु आजकल हमारे दैनिक भोजन में चाहे हम शाकाहारी हों या मांसाहारी, सब्जियों का महत्व विशेष रूप से अधिक है। हमारे भोजन में विटेमिनों प्राकृतिक लवणों और खनिज पदार्थों की कमी होने से सब्जियों का प्रचुर मात्रा में होना नितान्त आवश्यक है। सब्जियों के सेवन से समस्त प्रकार के उदर-विकारों, गुर्दे की बीमारियों व अन्यान्य सामान्य रोगों में पर्याप्त लाभ होता है।

लेकिन होता यह है कि इतनी महत्वपूर्ण और लाभकारी सब्जी को भोजन में उतना महत्व नहीं दिया जाता, जितना दिया जाना चाहिए। हमारे भोजन में सब्जियों का उपयोग गौण रूप में होता है और वह भी फुलकी-पराठों को खाने के लिए सहायक के रूप में। यही नहीं भोजन में सब्जियों की मात्रा इतनी कम होती है कि वह शरीर के लिए आवश्यक लवण विटेमिन और खनिज पदार्थों की पूर्ति नहीं कर पाती। परिणाम यह होता है कि हम कृश और रुग्ण हो जाते हैं, हमारा जीवन दुखमय और नीरस हो जाता है।

स्वस्थ रहने के लिए हमारे भोजन में सब्जियों की मात्रा का दाल-भात आदि की मात्रा से अधिक होना वांछनीय ही नहीं, आवश्यक भी है। जो लोग सिर्फ जायके या स्वाद के लिए ही सब्जियां नहीं खाते, उन्हें चाहिए कि वे नियमित रूप से, अपने भोजन में, सब्जियों का अधिकाधिक सेवन करें और जहां तक संभव हो नियमित रूप से कोई न कोई कच्ची सब्जी खाया करें। गाजर, मूली, पालक, ककड़ी, खीरा, टमाटर, गोभी, पोदीना, धनिया, प्याज आदि कच्चे रूप में भली प्रकार खाए जा सकते हैं। उपरोक्त सब्जियों में से किन्हीं दो-चार को काट कर, पोदीना, धनिया, नींबू-नमक और भुना हुआ पिसा जीरा मिलाने से वही स्वादिष्ट स्वाद बन जाती है किन्तु ध्यान रखना चाहिये कि उसी समय सब्जियों को काट कर बनाई सलाद अधिक स्वादिष्ट, करारी और सुपाच्य होती है। यह सलाद तीन-चार छटांक की मात्रा में, प्रत्येक वयस्क व्यक्ति को आवश्यक रूप में खानी चाहिए। इससे समस्त प्रकार के उदर-विकार, कब्ज, तृषा-दाह, जलन आदि रोगों में अत्यन्त लाभ होता है और कब्ज तो पुराना से पुराना भी चन्द रोज के सेवन से हवा हो जाता है।

सब्जियों का रस, फलों के समान ही, लाभप्रद, कृमि-नाशन, रक्त-वर्धक, उत्साहप्रद और गुणकारी होता है। गाजर के रस में पाए जाने वाले कैरोटिस नामक लवण और विटेमिन ए के सेवन से फेफड़े, गले की नसें, और उदर सम्बन्धी विकारों में लाभ होता है और दुर्बल संस्थानों को शक्ति प्राप्त होती है। इसी प्रकार चुकन्दर, टमाटर, ककड़ी, शलजम, पोदीना, पालक आदि के रस-सेवन से क्षुदा-रक्त-बल की वृद्धि होती है, निर्बलता, बेचैनी और खाज-खुजली आदि चर्म-रोगों का नाश होता है, त्वचा सुन्दर, चिकनी और कान्तिमान होती है।

सब्जियों को उबाल कर खाने में विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। यदि संभव हो तो 'प्रैशर कुकर' द्वारा केवल भाप की गर्मी से सब्जियों को पकाना अधिक लाभप्रद और उचित होगा। इसमें सब्जियां बहुत ही अल्प समय में उबल जाती हैं और साथ ही उनके गुणों का भी उतना ह्रास नहीं होता जितना पानी को उबाल कर सिझाने में।

सब्जियों को पकाने में इस बात का खास तौर से ध्यान रखा जाना चाहिए कि उन्हें बहुत अधिक न छीला जाए। अधिक छील दिया जाने से सब्जियां का प्राकृतिक लवण नष्ट हो जाना है। सब्जियों को छीलने से पूर्व उन्हें भली प्रकार रगड़-रगड़ कर धो लेना चाहिए और काट कर अधिक देर तक नहीं रखना चाहिए। सब्जियां काट कर पानी में भिगो देने से उनके अधिकांश विटेमिन नष्ट हो जाते हैं सब्जियां काटते समय उन्हें यथासंभव बड़े टुकड़ों में काटना अधिक संगत होता है।

(शेष पृष्ठ ३५ पर)

हिन्दी-प्रचार के नाम पर — सं. १

(हैदराबाद राज्य हिन्दी प्रचार सभा के प्रकाशन)

— चतुर्वेदी श्रीराम शर्मा, हैदराबाद

हैदराबाद राज्य हिन्दी प्रचार सभा ने ता. १९-१-५३ को अपने कार्यालय में एक स्वागत समारोह कर कांग्रेस अधिवेशन में पधारे हुए कई गण्य मान्य नेताओं को अपने कार्य कलापों से अवगत कराया। इस अवसर पर सभा के लक्ष्य और उद्देश्य की पुन: घोषणा की गई और बतलाया गया कि सभा का ध्येय है:—(१) राष्ट्रभाषा के रूप में देवनागरी लिपि में हिन्दी का प्रचार करना (२) हिन्दी की परिक्षाएं अयोजित करना (३) नि:शुल्क शिक्षण केन्द्र, विशेषतया प्रौढ एवं सायंकक्षाएं चलाना (४) दक्षिण की विशिष्टताओं को प्रकाश में लाने की दृष्टि से पाठ्य-पुस्तकें, उच्च साहित्य, आलोचना आदि पुस्तकें प्रकाशित करना (५) शोध, इतिहास और संस्कृति सम्बन्धी पुस्तकों के प्रामाणिक अनुवाद प्रकाशित करना और कोष नर्माण करना (६) हिन्दी पुस्तकालयों और वाचनालयों को स्थापित करना (७) हिन्दी साहित्य प्रतियोगिताएं आयोजित करना (८) विशिष्ट समारोहों यथा तुलसी जयन्ती, प्रेमचन्द दिवस आदि के भाषण, नाट्य, कवि-सम्मेलन इत्यादि आयोजित करना तथा जनता को हिन्दी के साहित्यकारों के राष्ट्रीय स्वरूप से परिचय कराना।

हमें यह जान कर प्रसन्नता हुई कि सभा का और उद्देश्य तो अभीतक विशाल बना हुआ है। इधर पिछले कुछ वर्षों के सभा के कार्य को देखकर चिन्ता हो रही थी। कि कहीं सभा के ध्येय में कुछ फेर-फार तो नहीं हो गया। सभा की नवीन घोषणा ने हमें अत्यन्त संतोष प्रदान किया है। अब साहस के साथ सभा के कार्यों की चर्चा चलाकर यह देख सकते हैं कि सभा ने किस सीमा तक अपने किस उद्देश्य अथवा लक्ष्य की पूर्ति की है। सभा के विभिन्न विभागों की चर्चा एक साथ ही कर देना कुछ कठिन प्रतीत होता है क्योंकि सभाका कार्य-क्षेत्र अब प्रर्याप्त विशाल हो गया है। यह आवश्यक है कि हम अपने विचारों को सीमाबद्ध कर कई लेखों में पाठकों के सम्मुख उपस्थित करें ताकि हिन्दी प्रचार नाम पर होने वाले व्यापार पाठकों के सामने स्पष्ट रूप से आ सकें। सभा के प्रत्येक कार्य पर हमारी दृष्टि है और हमारा ध्येय सभा के प्रत्येक कार्य को सार्वजनिक रूप से हितकारी बना देना है। जब तक जनता के सामने सभा के कार्यों की चर्चा न होगी, सभा की उन्नति कठिन तथा असंभव प्रतीत हो रही है।

सभा ने जो प्रथम लक्ष्य बतलाया है यह वास्तव में स्तुत्य है। हम सब का उस में पूर्ण विश्वास है। सभा उसकी पूर्ति हिन्दी की परीक्षाएं आयोजित कर, शिक्षण केन्द्र खोल और पुस्तक प्रकाशन द्वारा कर रही है। सभा के इन तीनों कार्यों के सम्बन्ध में हमें बहुत कुछ कहना है। इसके अतिरिक्त जो सभाने अपने उद्देश्य सं. ६, ७, ८ बतलाए हैं—वह तो केवल कागज पर लिखने भर के लिए ही हैं ऐसा प्रतीत होता है क्योंकि सभा द्वारा संचालित किसी पुस्तकालय अथवा वाचनालय का समाचार अब तक हमें नहीं मिला। साहित्यिक प्रतियोगिताएं तथा विशेष समारोह भी अब अतीत की वस्तु बनते जा रहे हैं।

आज के निबन्ध में हम सभा के प्रकाशनों की ही चर्चा करना चाहते हैं। परीक्षा व्यवस्था और शिक्षण-केन्द्रों के सम्बन्ध में अपने विचार हम 'दक्षिण भारती' के आगामी अंकों में स्पष्ट करेंगे।

सभा के प्रकाशनों का परिचय देते हुए कहा गया है कि सभा ने अब तक २७ विभिन्न पुस्तकों का प्रकाशन किया है तथा ६ पुस्तकें छप रही हैं। १६ पुस्तकें हाईस्कूल के स्तर तक के पाठ्यक्रम में शिक्षा विभाग द्वारा स्वीकृत की गई हैं। पाठकगण सभा के लक्ष्य और उद्देश्य सं. ४ व ५ से इस वक्तव्य की तुलना करें। कृपया सोचिए तो कि इन २३ पुस्तकों में से कितनी शोध, इतिहास और संस्कृति सम्बन्धी पुस्तकों के प्रामाणिक अनुवाद हैं और कितनी उच्च साहित्य,

आलोचना आदि की हैं। इन ३३ में तो १६ पुस्तकें हाईस्कूल के स्तर तक के पाठ्यक्रम में शिक्षा विभाग द्वारा स्वीकृत की गई हैं और जहां तक हमारा अनुमान शेष १७ के प्रकाशन का ध्येय भी वही होगा जो ऊपर की १६ का है।

पाठकगण सोचते होंगे कि सभा के प्रकाशन सचमुच प्रशंसनीय हैं क्योंकि प्रकाशित होते ही वे सरकार द्वारा पाठ्य-पुस्तक के रूप में स्वीकार कर लिए जाते हैं। परन्तु जो इनकी स्वीकृति का रहस्य जानते हैं, उन्हें यह भी पता है कि सभा के प्रकाशनों का सरकारी पाठ्यक्रम में स्वीकृत होने के लिए उनका उत्तम होना आवश्यक नहीं है। सभा के लिए यह बड़ी सौभाग्य की बात है कि राज्य के शिक्षा-सचिव ही इन दिनों सभा के प्रधान हैं। पाठ्य-पुस्तकों का चुनाव करने वाली समिति का निर्माण उन्होंने अपने हाथ में ले लिया हो, यह असंभव नहीं है। और यही हो सकता है सभा के १६ प्रकाशनों का हाईस्कूल के स्तर तक की परीक्षाओं में स्वीकृत होने का सदस्य।

हमें सभा के सभी सोलह स्वीकृत प्रकाशन देखने का अवसर नहीं मिला—हां, उनमें से अधिकांश हमारे सामने आये हैं। उनके आकार, प्रकार, मूल्य, लेखक, संपादक आदि पर हमने ध्यान दिया है और हमारा विश्वास है कि सभा के ये प्रकाशन स्टैण्डर्ड नहीं हैं। सभी पाठ्यपुस्तकें प्रकाशित करे, यह अति उत्तम बात है; परन्तु ये पाठ्य-पुस्तकें अनुभवी लेखकों से लिखवायी जाएं यह अत्यन्त आवश्यक है। अब तक सभा के जितने भी प्रकाशन हमारे सामने आए, उनके लेखक, संपादक सभा के प्रधान-मंत्री पं. श्रीराम शर्मा ही दिखलाई दिये। एकाध पुस्तक के लेखक 'विपिन' भी दिखलाए गये हैं, परन्तु खोज करने से पता लगा कि यह भी पं. श्रीराम जी का ही उपनाम है। यह कहा जा सकता है कि पं. श्रीराम जी विभिन्न विषयों के विशेष विद्वान् हैं। आपने सम्मेलन की आयुर्वेद-रत्न परीक्षा उत्तीर्ण की है; संस्कृत लेकर साहित्यरत्न हो चुके हैं। हिन्दी साहित्य-रत्न का भी आधा भाग आप उत्तीर्ण हैं। बनारस मैट्रिक आपने अभी हाल ही में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण किया है तथा इण्टर की परीक्षा में भी कदाचित् एक-दो बार बैठ चुके हैं। हम आपकी योग्यताओं का आदर करते हैं, परन्तु हम यह मानने के लिए तैयार नहीं कि उनके अतिरिक्त और कोई हैदराबाद में हिन्दी का लेखक है ही नहीं। सभा के प्रधान-मंत्री को तो सभा के गौरव की रक्षा के लिए किसी भी ऐसे कार्य से पृथक रहना चाहिए, जिसमें कुछ भी आर्थिक लाभ हो।

सभा द्वारा प्रकाशित पुस्तकों में किस स्तर की सामग्री रहती है, यदि इसकी चर्चा की जाए तो लेख का कलेवर बहुत बढ़ जाने की आशंका है। फिर भी एकाध पुस्तक के संबंध में कुछ निवेदन कर यह दिखलाना आवश्यक प्रतीत होता है कि किस प्रकार का कूड़ा, करकट हैदराबाद राज्य के विद्यार्थियों पर हिन्दी प्रचार के नाम पर थोपा जा रहा है।

सभाने एक 'सरल व्याकरण' प्रकाशित किया है। इसकी सरलता की सीमा यहां तक बढ़ गयी है कि व्याकरण के एक मुख्य भेद 'क्रिया' की इसमें चर्चा तक नहीं की गयी। क्या यह पुस्तक भी शिक्षा-विभाग द्वारा पाठ्य-क्रम में स्वीकृत की गयी है? यदि हां तो क्या यह उचित न होगा कि जिन सदस्यों ने शिक्षा बोर्ड की बैठकों में इस पुस्तक की स्वीकृति का प्रस्ताव रखा, उन पर रिश्वतखोरी या कर्तव्य की अवहेलना के लिए कोई मुकदमा चलाया जाए ताकि भविष्य में ऐसे लोग अपने कर्तव्य का अधिक सतर्कता से पालन करें।

सभा ने हाली माल देकर कल्दार मूल्य उगाहना प्रारंभ कर दिया है। अधिक संख्या में खपने वाली बड़े टाइप में प्रकाशित सभा की पुस्तकों के मूल्य की तुलना जब अन्य ऐसे ही प्रकाशनों से की जाती है, तब और भी हमारा क्षोभ बढ़ जाता है। विद्यार्थियों पर यह शिक्षा व्यय का भार बढ़ा देना सो भी हिन्दी प्रचार के नाम पर अत्यन्त अशोभनीय है। सभा के प्रकाशनों का मूल्य सस्ता-साहित्य मंडल की पद्धति पर रखा जाना चाहिए, तब हम कह सकते हैं कि सभा हिन्दी का सचमुच प्रचार कर रही है।

सभा की प्रकाशन-नीति की चर्चा चला कर सभा को बदनाम करना हमारा ध्येय नहीं है। सभा उत्तम से उत्तम प्रकाशन जनता के सामने ला सके, केवल इसी ध्येय से यहाँ कुछ चर्चा की गयी है। सभा की अन्य गति-विधियों के संबन्ध में चर्चा शीघ्र ही फिर की जाएगी।

—

शेष पृष्ठ ३२ का

सब्जियों को सिझाते समय में इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि उसमें बहुत अधिक मात्रा में पानी डालने, पानी डाल कर निकाल लेने या जला देने से अधिकांश लवणों विटैमिनों और आवश्यक अंशों के नष्ट हो जाने का भय रहता है। इसलिए उचित तो यह है कि सिझाते समय पानी उचित मात्रा में डाला जाए और उबालने या पकाने के बाद भी कुछ पानी बच जाए तो उसे सूप या रस आदि के काम लिया जा सकता है।

प्रायः देखा गया है कि सब्जियों को जल्दी सिझाने या गलाने के लिए सोडे का उपयोग किया जाता है। यह तरीका बिल्कुल गलत है। इससे सब्जियों के क्षार, विटैमिन आदि ही नष्ट नहीं होते अपितु समस्त गुण और स्वाभाविक जायका भी नष्ट हो जाता है। सोडे से सिझाई सब्जियां विकार उदर, बेचैनी और थकान बढ़ाने में मदद करती हैं।

सब्जियों के उपयोग करने में एक बात और ध्यान देने की है कि हर रोज़ उनके बनाने के तरीकों में रद्दोबदल की जाए। इससे भोजन में नवीनता, स्वादिष्टता लाई जा सकती है जिससे जीवन रसमय, रुचिमय और उत्साहपूर्ण बना रहता है।

ग्राम-सुधार

-- बालकृष्ण लाहोटी, "कृष्ण" हैदराबाद

पात्र सूची

१ मलैया	५ राजन्ना
२ तिप्परण्णा	६ रामन्ना
३ सखाराम	७ पेद्दन्ना
४ राधाकृष्ण	

दृश्य पहला

स्थान क्लब

(विद्यार्थियोंका आपस में वार्तालाप करते दिखाई देना)

राजन्ना--मित्र क्या सोच रहे हो ?

तिप्परण्णा—हमने विद्याध्ययन में कई वर्ष बिताए। अब हमारा भविष्य क्या होना चाहिए यही सोच रहा हूं।

राजन्ना—हमारा भविष्य और क्या होगा ? हम कहीं न कहीं सरकारी अफसर बनेंगे, क्यों रामैयाजी ?

रामैया—और क्या ? हम इतनी पढाई किसलिए करते हैं ? केवल उच्च स्थान प्राप्त करने के लिए।

राजन्ना—हां हां, और क्या ?

तिप्परण्णा—भाइयो ! सरकार कितनों को स्थान देगी ?

रामैया—तो फिर हम को पढ़ाती क्यों है ?

तिप्परण्णा—तुम सरकार को गलत समझ रहे हो ?

रामय्या—(चिडाते हुए) तुम बडे सही समझ रहे हो। क्यों न तुम्हारे ख्याल में पढ़ लिखकर और क्या करना है ?

तिप्परण्णा—श्रम का बड़ा मूल्य है।

रामय्या—तो क्या हमाली करें। बाजारों में कूली बने, झाड़ू निकाले ? कपडे धोएं, ना बाबा ना यह तो हम से न होगा। हम तो कलम के धनी बनेंगे।

राजन्ना—मामूली क्लर्की कर लेंगे परन्तु यह हलके काम तो हम से न होंगे, यह तो गांव के गंवारों का काम है।

रामय्या--हम हैं नगर के नागरिक ! समझे तिप्परण्णाजी !!

तिप्परण्णा—यदि गांव के लोग खेती-वाड़ी न करें तो नगर के सभ्य लोग भूके मर सकते हैं।

रामय्या—अजी छोड़ो इन बातों को। गांवों में क्या धरा है। हमारी सरकार खाद्यान्न भी तो विदेशों से मंगा रही है।

राजन्ना—हम नागरिकों का काम गांवों से नहीं चल सकता। कहां है ग्रामों में नगरों की चहल पहल ? यह बिजली की रोशनी ? इन पंखों की हवा ? मोटर, हवाई जहाज, तार टेलीफोन यह सब गांवों में कहां हैं ?

रामैया—यदि ग्रामों में ही कुछ होता तो ग्रामों के लोग शहरों में क्यों भाग कर आते ?

तिप्परण्णा—वे अज्ञानता के वश शहरों में आ रहे हैं।

राजन्ना—और आप ज्ञानी होकर गांवों में जा रहे हैं !

(दोनों खूब हंसते हैं।)

रामैया—यह सब कुछ हमको उल्टा ही बता रहे हैं।

राजन्ना--नदियां कहीं चढ़ाव पर चढ़ती हैं !

रामैया--छोटी चीज तो बडे में मिलती हैं, परंतु बड़ी चीज छोटे में कैसे जा सकती है ?

तिप्परण्णा—तुम्हारे ऐसे उदाहरणों से कुछ न होगा। यदि हम परिश्रमी न बनेंगे तो समय हमको बनने के लिए विवश करेगा। क्योंकि सबसे अधिक मूल्यवान श्रम ही है।

रामैया—(घमंड के साथ) हम श्रम करें ? मेहनत मजदूरी करें ? (आश्चर्य से) क्या कहते हैं आप ?

राजन्ना--हम तो कुर्सियों पर बैठकर ही कलम चलाएंगे।

रामैया--हम तुम्हारी बातों में नहीं आएंगे। (पेदन्ना को आते देखकर) यह देखो हमारे मित्र पेदन्ना गांव को छोड़कर आए हैं। इन्हीं से पूछो क्यों आए हैं?

पेदन्ना—यदि नगर में न आता तो क्या करता। क्या मैं इतना पैसे वाला होकर गांव का गंवार बना रहूं? कुछ शिक्षा पाई है। मेरे पिता पटेल पटवारी का काम करते हैं। बस, वह और उनकी एक दुनिया। कभी ग्राम के बाहर निकलते ही नहीं। मैं २ हजार लेकर आया हूं। इससे नगर में व्यापार करूंगा और मजे उड़ाऊंगा।

तिप्पण्णा--क्या तुम पिता की राय लेकर आए हो?

पेदन्ना—अब मुझे राय की क्या जरूरत है

रामय्या—आखिर हम भी तो कुछ हैं। बात-बात में क्या मां बाप की राय लेनी।

पेदन्ना—पूरे २ हजार लेकर आया हूं। अब अपना जोहर बतलाऊंगा। देखना कुछ ही दिनों में २ हजार के २० हजार कर दूंगा। फिर मेरे पिताजी भी प्रसन्न होजाएंगे कि शहरों में इस तरह कमाया जाता है।

तिप्पण्णा—भाई कमाएंगे या गमाएंगे यह तो भविष्य ही बतला सकता है। मगर जरा सोच समझ कर काम करना।

पेदन्ना—अजी हम जवान हैं। ठोकर मारकर पैदा कर सकते हैं।

रामैया—स्वतन्त्रता का जमाना है।

तिप्पण्णा—भाई तुम लोग युवकावस्था में असुध हो।

राजन्ना—भाई साहब भारत को स्वतन्त्रता भी तो हमारे जमाने में मिली हैं।

तिप्पण्णा—अच्छा मित्र राजन्ना तुम क्या करोगे?

राजन्ना---सेल टेक्स में दरख्वास्त दे रक्खी है। वह ५-१० दिन में मंजूर हो जायगी। वहां तो मेरे बडे बाप के बेटे भाई ही हैं।

तिप्पन्ना—और तुम क्या करोगे?

रामैया—मेरे भी मामा के मामा सेक्रेटिरिएट में रहते हैं। चुटकी बजाते ही सिफारसी घोडा मेरे आगे दौड़ जायगा।

तिप्पण्णा—देखो, सरकारी नौकरी भी जितनी सस्ती समझते हो नहीं मिलेगी।

रामैया---अच्छा जी देख लेंगे। तुम अपने रास्ते जाओ और हम अपने रास्ते जाएंगे।

रामैया---जब बड़ी २ बातें करते हैं तो गांव में कुछ करके दिखाओ न!

पेदन्ना—गांवों में क्या धरा है जी। यदि कुछ तो मैं गांव से नगर काहे को आता!

तिप्पण्णा—याद रक्खो मित्रो! यदि संसार में जीवन शेष है तो कुछ करके दिखाने की चेष्टा कर ग्रामों में ही सब कुछ होता है। "ग्राम जीवन" जीवन है! वहां शक्ति है धैर्यता है। प्रेम के मधुर २ चलते हैं।

राजन्ना—अच्छा जाओ बाबा तुम्हारी शांति मुबारक।

रामैया—कहते हैं शहरों में प्रेम नहीं है।

पेदन्ना—गांव के लोग सभ्यता ही नहीं जानते। वालों में केवल मैं ही एक सभ्य हूं। क्योंकि मैंने न शिक्षा पाई है।

तिप्पण्णा—देखो मित्रो! मैं चाहता हूं कि हम मिल कर किसी ग्राम में रचनात्मक कार्य करें।

राजन्ना—कुछ पहले आप उजाला करें तब हम भी जाएंगे।

रामैया—अब ये क्या जाएंगे कई वर्षों से हैदरा शहर में रहते हैं।

पेदन्ना—अब ये जाकर गांव में क्या ३ के १३ वाले हैं! इनकी जिन्दगी तो नगर में खत्म हो गई।

तिप्पण्णा—भाइयों! मुझे ताहिने के छुरे न मा आपकी बातों से मेरा कलेजा छलनी हुआ जा रहा ईश्वर मुझे शक्ति दे। (धडाम से गिर जाना।)

सब—अरे २ क्या होगया!

राजन्ना—डाक्टर! डाक्टर!! (सब घबराते हैं।)

रामैया—अरे कहीं हार्ट फेल तो नहीं होगया।

(परदा गिरता है)

दृश्य २ रा

स्थान---राजन्ना का घर

पेदन्ना—मित्रो! डरो मत, मेरे पास पूरे २००० मैं लखपति होकर रहूंगा।

राजन्ना—क्यों नहीं जब इरादा पक्का है तो फिर क्या डर है। हां, किन्तु मित्र मुझे कुछ रुपये चाहिए।

पेद्दन्ना—रुपयों की तो कोई बात नहीं है, परन्तु इस समय जो तिप्पएणा से युद्ध-सा छिड़ गया है, उसे पूरा करके दिखाना है। हम सब मित्र समझते हैं कि नगरों में रहकर ही काम करना ठीक है। केवल वह बेवकूफ अकेला कहता है कि गांवों में रहना ठीक है। अब देखना है कि बात किसकी ठीक है ?

राजन्ना—इस युद्ध में हमारी निश्चित......

रामैया—...जीत है।

(सखाराम और मलैया का आना)

राजन्ना—नमस्कार, पधारिए ! पधारिए !!

सखाराम—क्या हो रहा है ?

राजन्ना—ऐसे ही विचारों का युद्ध चल रहा है। अच्छा कहिए ग्रामों में रहना अच्छा है या नगरों में ?

सखाराम—यह तो अपनी २ इच्छा पर निर्भर है।

मलैया—आज कल समाचार पत्रों में आन्दोलन चल रहा है कि ग्रामों में जाकर महात्माजी के रचनात्मक कार्य को आगे बढ़ाना चाहिए, परन्तु सुनता कौन है ? पढ़े लिखे विद्यार्थी तो एक भी गांव में बसनेके लिए तैयार नहीं।

राजन्ना—मैं भी तो यही कह रहा हूं। शहर में पढ़ा लिखा गांव में जाकर कलम चलाने वाला क्या हल चला सकता है ?

सखाराम—हां जरा मुश्किल तो है। परन्तु...

राजन्ना—परन्तु, क्या परन्तु ?

मलैया—परन्तु अब तो सरकार भी पढ़ाई की योजना बदल रही है।

राजन्ना—क्या बदल रही है ?

मलैया—शिक्षा और परिश्रम साथ साथ रहेंगे।

राजन्ना—परंतु चलेगा नहीं। मानसिक श्रम करने वाला शारीरिक श्रम नहीं कर सकता।

पेद्दन्ना—देखिए न मेरे पिता हल चलाते हैं परंतु मुझसे कहा जाय कि बैलों को हकालो तो नहीं होगा।

रामैया—सरकार ऐसी योजना में बिल्कुल असफल रहेगी।

राजन्ना—हमारी तो दृढ़ धारणा है कि तिप्पएणा इस में मुंहकी खायगा। क्यों ? सखारामजी ! आपकी क्या राय है ?

सखाराम—भाई कुछ कह नहीं सकते।

राजन्ना—क्या आप समझते हैं कि तिप्पएणा हमसे जीत जायगा ?

मलैया—कदाचित्। देखिए क्या होता है !

सखाराम—देख लेंगे जो कुछ होगा। चलो मित्र इन्हें होड़ पर चढ़ने दो।

मलैया—युवक लोग जो न करें थोड़ा।

(जाना चाहते हैं तीनों इन्हें रोकते हैं)

राजन्ना—कुछ तो राय देकर जाओ।

सखाराम मलैया—हम क्या राय दे सकते हैं ? हम को जाने दो, जरूरी काम है।

पेद्दन्ना—जाने दो, जाने दो। यह सब गोल मोल हैं। इधर के हैं न उधर के।

सखाराम—हां ठीक है। हमको आपने समझ लिया है।

पेद्दन्ना—हम तो आदमी को यों ही जान लेते हैं।

सखाराम—क्या तुमने सर्वोदय प्रदर्शनी देखी है ?

राजन्ना—अजी यह तो युवकों को गुम राह करने की बातें हैं।

सखाराम—अच्छा भाई तुम कहो सो ठीक।

राजन्ना—ठीक, बिलकुल ठीक, नमस्ते !

सखाराम—नमस्ते, नमस्ते !

(एक दूसरे को देखते हुए जाते हैं।)

दृश्य ३ रा

स्थान—सखाराम का घर

(राधाकृष्ण व मलैया आकर दरवाजा खटखटाते हैं)

सखाराम—(अन्दर से) कौन हैं ? (उत्तर नहीं)

मलैया—खोलो हम हैं !

सखाराम—तुम कौन ?

मलैया—तुम्हारे मित्र, शीघ्र खोलो, राधाकृष्ण भी आए हैं।

सखाराम—कौन राधाकृष्ण (एकदम बाहर आकर) कहां हैं राधाकृष्ण

मलैया—(बताकर) यह रहे।

सखाराम—उफ ! धोखा होगया।

मलैया—क्या धोखा होगया ?

सखाराम—मैं स्वप्न देख रहा था कि आवाज आई राधाकृष्ण भी आए हैं तो मैं समझा साक्षात् राधाकृष्ण आए हैं परन्तु यह तो निकले हमारे साथी।

मलैया—खैर, जी यह तो स्वप्न का जंजाल है। आप ने कुछ सुना है ?

सखाराम—क्या बात है ?

मलैया—तिप्पण्णा जी ने जो रचनात्मक कार्य गांव में जाकर प्रारंभ किया था।

सखाराम—हां हां, उसको ४ वर्ष होगए हैं।

मलैया—अब उसका प्रत्यक्ष फल वहां नज़र आरहा है।

सखाराम—क्या फल नजर आरहा है ?

राधाकृष्ण—इन के स्थान की चर्चा तो बडे २ समाचार पत्रों में आने लगी।

सखाराम—ऐसा उन्हों ने क्या कार्य किया है ?

राधाकृष्ण—उन्हों ने सचमुच उस ग्राम का सर्वोदय कर डाला।

सखाराम—सर्वोदय कर डाला वह कैसा सर्वोदय है ?

राधाकृष्ण—यह प्रत्यक्ष जाने पर मालूम होगा।

मलैया—अरे कुछ चाय वाय है नहीं। कहां गई है भाभी साहबा !

सखाराम—वह जरा मेहमान गई हुई है। मैं चाय बनाता हूं।

मलैया—हम तो चाय नहीं पिएंगे, दूध पिएंगे।

सखा—क्यों मैं अभी बना देता हूं मुझे बनाने में कुछ कष्ट न होगा।

मलैया—कष्ट की बात नहीं सिद्धांत की बात है चाय से तो दूध श्रेष्ठ है।

सखा—चलो चाय का बहिष्कार ही कर डालो।

(राजन्ना और रामन्ना का आना)

दोनो—नमस्ते ! नमस्ते !!

राधाकृष्ण—कौन राजन्ना और रामन्ना !

राजन्ना—जी हां !

रामन्ना—आप को ढूंढते २ पेट दुखने लगे। एक मिल से चलकर आरहा हूं

सखा—एक मिल बहुत दूर होगया।

राजन्ना—हम ग्रेज्यूएटों को यही बहुत होगया। मस्तिष्क का काम करने वाले हैं।

रामन्ना—हम सुनते हैं आप सब वहां जाने वाले हैं ?

सखा—कहां जाने वाले हैं ?

रामन्ना—वहीं तिप्पण्णा के गांव को।

सखा—देखो विचार चल रहा है। क्या आप भी…

रामन्ना—हम तो वहां नहीं चलेंगे।

सखाराम—क्यों क्या बात है ?

रामन्ना—मत पूछो उन से अब बात क्या करना। हमारे उन के विचारों में अन्तर होकर भी चार वर्ष होगए।

राधाकृष्ण—विचारों में अन्तर होगया तो क्या होगया। आखिर वह तुम्हारे गहरे मित्र हैं।

राजन्ना—तिप्पण्णा को बड़ा घमंड है कि मैं मैसूर वाला हूं। जहां कुमारप्पा आदि पैदा हुए हैं।

मलैया—हम एक बार महाराज महालिंगेश्वर की यात्रा में मिले थे।

सखा—जब से उन की तारीफ सुने तब से मन उधर ही लगा रहता है।

राजन्ना—किस की तारीफ सुनी, क्या उस मूर्ख की ? होती होगी तारीफ ? मैं तो उस का मुंह न देखूंगा। विचारों में अन्तर तो सब तरह का अन्तर।

राधाकृष्ण—अच्छा तुम मत आओ हम तो जाएंगे।

सखा—कब चलेंगे और कैसे चलेंगे ?

राधाकृष्ण—पैदल चलेंगे। यहां से १०-१२ मिल तो है। मैं पहले एक बार जा चुका हूं। बड़ा रमणीय स्थान है।

मलैया—पैदल जाना भी महत्व पूर्ण है।

राजन्ना—(आश्चर्य से) १०-१२ मिल पैदल जाएंगे।

रामन्ना—हां मित्र, १०-१२ मिल ?

(एक दूसरे को विरोधी भावना लेकर जाते हैं।)

दृश्य ४ था

(स्थान पशुशाला, गायों और बैलों की सेवा करते हुए। कई व्यक्तियों का गाना गाते हुए दिखाई देना और मलैया का आना)

मलैया—नमस्कार !

तिप्पण्णा—नमस्कार, नमस्कार ! कहो, किधर आए ?

मलैया—आप के तरफ ही। आपकी पशुशाला देखकर तो मुझे ईर्ष्या होती है।

तिप्पएणा—क्यों, क्यों ?

मलैया—आपके पशु, आपकी पशुशाला का प्रबन्ध देखकर मैं तो खुश हो जाता हूं।

तिप्पएणा—हां-हां, हमारे करनाटक में कुछ ऐसा ही है। आपके तेलंगाने में पानी अधिक होने पर भी पशु दुबले और कम जोर होते हैं।

मलैया—हां जी कुछ धरतीमाता का ही फर्क होगा। फिर भी आपकी पशुशाला की रुचि अच्छी है।

(सखाराम का आना)

सखाराम—नमस्कार !

तिप्पएणा—आओ, नमस्कार ! आप हम सब महादेव की यात्रा में मिलकर मित्र बने थे।

मलैया—तिप्पएणाजी के ग्राम में आकर मैं तो बड़ा खुश हूं।

सखाराम—भैया मैं तो इस स्थान को एक तीर्थ समझता हूं।

तिप्पएणा—मित्र व्यंग न करिए। हमारा निवास तीर्थ किस प्रकार हुआ ?

सखाराम—हां विवरण सुनिए। इससे व्यंग की क्या बात है ? आपकी तो ग्रामसुधार योजना में नम्बर मार दिया।

मलैया—आपको सरकार से कृषि पंडित की उपाधि भी प्राप्त होगई है।

सखाराम—भला, कहो अब भी आपके स्थान को तीर्थ स्थान न समझे।

तिप्पएणा—समझें जैसा उचित समझें, समझे ? अच्छा, आपके स्वागत में क्या करूं क्या न करूं ? सचमुच मैं भी मनमें फूला नहीं समा रहा हूं। आप दोनों को यहां कम से कम एक सप्ताह ठहराना होगा।

मलैया—क्यों ?

तिप्पएणा—हम एक सुधार सप्ताह मना रहे हैं।

सखाराम—आपकी जैसी आज्ञा होगी मान लेंगे।

मलैया—आना हमारे हाथ था, अब छोड़ना तुम्हारे हाथ है।

तिप्पएणा—हां जी बात ही बात है। देखो एक दिन ग्राम का संगीत होगा, यानी मराठी के पोवाडे, आंध्रके तनदाना, और हमारे करनाटक के लोकप्रिय गीत रहेंगे। दूसरे दिन व्यायाम प्रतियोगता होगी। जिस में.........।

सखाराम—उस में भी आन्ध्र करनाट, महाराष्ट्र रहेंगे ?

तिप्पएणा—जी हां, सबके जुदा २ दाव पेंच हैं।

मलैया—भाई हमारे आन्ध्र में पहलवान तो मार खाजाऐंगे क्यों कि व्यायाम का बहुत कम प्रचार है।

तिप्पएणा—(राधा कृष्ण को आते देखकर) जयहिन्द ! पधारिए ! पधारिए ! आप भी क्या अच्छे समयपर पधार गए हैं। सचमुच अब तो हमारे गांव का उद्धार होने वाला है। अब गांव स्वर्ग हो जायगा।

राधाकृष्ण—किसी के आने जाने से गांवों का उद्धार होने वाला नहीं गांवों का उद्धार तो होगा गांवों के लोगों से ही। यदि प्रत्येक व्यक्ति श्रम करे तो गांव अपने पैरोंपर आप खड़ा हो सकता है।

सखाराम—हां जी, यह तो ठीक है। (ति-की ओर) आप अपना प्रोग्राम बतावें।

तिप्पएणा—तीसरे दिन पशु प्रदर्शनी होगी। चौथे दिन आस पास के सब गांवों के आदमी १ मिल लम्बी सड़क बनाएंगे। पांचवें दिन सब गांवों के लोग कुदाला पावड़ा लेकर एक बावली खो देंगे।

सखाराम—छटे सातवें दिन क्या होगा ?

तिप्पएणा—छटे दिन इस ग्रामके कुम्हार, बढ़ई, लोहार के कलाओं की प्रतियोगिता होगी और सातवें दिन सबको सार्वजनिक कार्य बतलाए जाएंगे।

राधाकृष्ण— फिर तो इस ग्रामका यह सप्ताह बड़ा महत्वपूर्ण होगा। अहोभाग्य जो मैं भी यहां उपस्थित रहूंगा।

तिप्पएणा—आप तो शहर के हैं आपका तो अमूल्य समय.........।

राधाकृष्ण—किन्तु आपका प्रोग्राम सुनकर तो मन ही बदल गया। मैं समझ रहा हूं मेरासमय इससे अधिक महत्वपूर्ण कार्य में नहीं लगसकता।

सखाराम—आपका ख्याल ठीक है।

तिप्पण्णा—अच्छा आप हमारे पशुओं पर एक दृष्टि डालिए (सब उठते हैं और समस्त पशुशाला में घूमते हैं।)

तिप्पण्णा—(एक गायको बताकर) देखिए इस गायको इसके ही पचांसों नाती गोती मौजूद हैं। इसकी ऐसी नसल है कि इस नसल का बैल महंगे से महंगा बिकता है। इसकी गाएं १५ सेर दूधसे कम नहीं देतीं। यह गाय अब बुढ़ियां होगई है, किन्तु इसका बड़ा ध्यान रखता हूं, इसका गोबर और गोमूत्र आदि से जो खाद मेरे पास साल भरमें बनता है इसके सालभर के चारे के लिए बस है।

राधाकृष्ण—धन्य है तुम्हारी पशु भक्ति।

तिप्पण्णा—मेरा अनुभव और विचार दृढ़ है कि पशु धन हम पर भार रूप नहीं है। यदि हम वध करने के स्थान पर पशु पालन करें तो दूध, घी की नदियां बह सकती हैं और नाज भी हम वापिस विदेशों को भेज सकते है। मैं गौभक्तांध नहीं हूं। पशु पालन से हमको बड़ा बल मिल सकता है। परन्तु मनुष्यों का काम भी है कि पशुओं से काम लेना सीखें। पशु उन पर भार रूप नहीं होते। यद्यपि आय रूप होते हैं।

सखाराम—(मलैया से) प्रत्येक मनुष्य को इनसे पाठ लेना चाहिए। कितना अच्छा पाठ है। पशु को काटने के स्थान पर उनका पालन करें तो अधिक लाभान्वित हो सकते हैं।

मलैया—परन्तु मांसाहारी इसके विपरीत ही सोचते हैं।

तिप्पण्णा—मनुष्य को खाने के लिए अनेकों पदार्थ हैं। दूध, दही, मलाई, मसका के समान कोई पदार्थ नहीं है। फलोंको खाइए, वृक्ष को ही नष्ट न कीजिए। आज हिन्दुस्तान और उसकी सरकार! हाय वह हमारी सरकार है ऐसी निष्ठुर सरकार है। क्या यह पशुओं के विषय में दूबारा सोच सकती है!

सखाराम—इसके पहले विदेशी सभ्यता को छोड़ना चाहिए। इनके मस्तिष्क में पशुओं को वध करके ही लाभ उठाने की धारणा काम कर रही है जो प्रत्यक्ष हिंसा है। हाय अफसोस! यह हमारी हमको शर्म आती है कैसी अहिंसक सरकार है!

तिप्पण्णा—यदि हम मनुष्य हैं तो प्रण ले लें कि पशु हिंसा नहीं करेंगे।

(सब अचेत से हो जाते हैं। दृश्य समाप्त)

दृश्य ५ वां

(स्थान-खेत बावली)

सखाराम—उस दिन तो आपने सबको बेहोश कर दिया।

तिप्पण्णा—बेहोश कर दिया कि बे होश कर दिया।

राधाकृष्ण—यह मेरा सप्ताह बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य में गया। तिप्पण्णा की मेहनत अत्यन्त सराहनीय है।

मलैया—इसी लिए तो यहां इनसे सीखने आए हैं।

सखाराम—इस ग्राम की सड़कें तथा गलियाँ कितनी साफ सुथरी हैं। प्रत्येक मकान पर कोई वस्तु ग्राम के बाहर की दृष्टि नहीं आती। यहीं की मिट्टी है, यहीं की ईंटे हैं, यहीं की कवेलू हैं, चूना है। और ग्राम के आस पास के वृक्षों की लकड़ियां हैं। इसको ग्राम के लोगों ही ने तैयार किया है।

राधाकृष्ण—यह जो पक्का मकान नजर आता है?

तिप्पण्णा—इसके पत्थर भी यहीं के हैं और चूना भी हमारी ग्राम की भट्टी में तैयार किया गया है और फिर बैलों से चूना पिसवाया है। हमारी सीमा में लम्बी-लम्बी नाटें नहीं होती इसलिए छोटे २ हाल बन पाए हैं।

राधाकृष्ण—बडे पक्के हालों की क्या आवश्यकता है?

तिप्पण्णा—जब कभी हमको आवश्यकता पड़ती है जंगल के बांसे लाकर तट्टियाँ बना लेते हैं। और २-४ रोज उत्सव आदि का काम निकाल लेते हैं।

राधाकृष्ण—(हरी भरी पृथ्वी को देखकर) नदी के उस पार एक मिल तक पंजर जमीन थी, वह आज ऐसी फलदायक कैसे हुई?

तिप्पण्णा—यह काम मेरा नहीं। मुझे सहयोग देने वाले युवकों का हैं। १०० आदमियों ने रोजाना कुदाली, सब्बल, पावड़ा आदि लेकर २ महीने तक यह कार्य किया

है जिसका फल है कि इस स्थान पर फल देने वाले पेड़ तथा वृक्ष लह-लहा रहे हैं और खेतो आदि भी चालू है। हमारा घास हमारे जानवरों को काफी हो जाता है। आगे चलिए--यह देखिए आम के पेड़, जाम के वृक्ष, कितने सुन्दर दृष्टि पड़ते हैं।

(बाग देखने के बाद गन्ने की खेती को बताते हुए)

तिप्पएणा—यह देखिए इसबार हमारे यहाँ १०० खंडी गन्ना निकला था जिसको यहीं पील कर रस निकाला गया है और आवश्यकता से अधिक गुड़ बना कर नगरों को भेजा जाता है।

राधाकृष्ण—अपने पास कपास भी होती है।

तिप्पएणा—हां-हां, बहुत, देखिए हमारा कपड़ा बुनाने का कारखाना भी है।

राधाकृष्ण—अच्छा तो आपका गांव तो बिल्कुल स्वावलम्बी हो गया है!

तिप्पएणा—प्रयत्न कर रहा हूं। मोटा कपड़ा बना लेते हैं और तन ढांप लेते हैं परन्तु शिक्षण मिलने पर ढाका की मलमल भी बना सकते हैं।

मलैया--कपास के खेत किधर हैं?

तिप्पएणा—यहां से ४ मील पर है। कपास घर आती है तो इसमें सरकी तथा रुई रहती है वह अलग निकाल लेते हैं। इसके आगे इसको विविध रूप धारण करने के लिए हमारे ग्राम के कारीगरों ने अनेकों लकड़ी तथा लोहे के यंत्र निर्माण कर दिए हैं जिनसे सूत काता और कपड़ा बुना जाता है।

राधाकृष्ण—अच्छा इन कामों में स्त्रियां भी सहयोग देती हैं?

तिप्पएणा—इनके सहयोग के बिना कुछ नहीं होता। नगरों की स्त्रियां काम नहीं करतीं परदे या घूंघट में अपने को आप छिपाती हैं। परन्तु यहां तो प्रातः उठते झाड़ू बुहारु, पीसना, पानी भरना, पकाना, खिलाना, धोना धुलाना सब करना पड़ता है। इसके बाद में भी खेतों में काम करना या घर में ही सीना सिलाना, कातना, बुनना आदि कई काम करती हैं। खेती में चुनवाई आदि का काम वही स्त्रियां करती हैं।

राधाकृष्ण— यह कार्य आपने अच्छा किया कि गांव में प्रत्येक को काम में लगा दिया। प्रत्येक मनुष्य या स्त्री को काम पर लगाना ही तो महत्वपूर्ण है।

तिप्पएणा— मेरा विचार तो प्रत्येक बच्चे बच्चियां भी काम करें। बालकों के लिए ऐसे काम निकाल दिए जांय कि वह खेल का खेल हो और काम का काम हो। केवल शिक्षा प्राप्त करना ही ध्येय नहीं चाहिए साथ ही साथ रचनात्मक कार्य का भी अभ्यास करवाते रहना चाहिए।

राधाकृष्ण— लिख पढ़ कर केवल सरकारी नौकरी चाहने वालों को गाँव की ओर देखना चाहिए।

मलैया--(सखाराम से) देखो कितनी व्यवस्था से कार्य चल रहा है। गांव होते हुए भी कहीं कचड़ा कूडा नहीं है बरसात का पानी भी बडे ढंग से गांव के बाहर एक गढे में जमा कर लिया गया है और इससे ही गन्ने को पानी मिलते रहता है।

सखाराम--मुझे तो इस सप्ताह भर के कार्य क्रम वर्षों याद रहेंगे। एक दिन में १ मिल सड़क, इसी प्रकार बनने लग जाय, तो हमारा यातायात बहुत बढ़ कर लाभकर हो सकता है।

मलैया—यहां के कुम्हार मिट्टी के कितने अच्छे २ बरतन बनाते हैं। बढ़ई, लोहार ने तो कमाल कर दिखलाया। कृषि के कितने प्रकार के यंत्र बने हुए हैं। चर्खें भी कई प्रकार के बनाकर सब का ध्यान आकर्षित कर दिया है। मैं तो तिप्पएणा जी को ही धन्यवाद दूंगा कि सफलता का सारा श्रेय आपको है। यदि यह योजना न बनाते और न चलाते तो यह भी ग्राम दूसरे ग्रामों सा होता। तिप्पएणा जी मैसूर राज्य के विद्यार्थी हैं और ग्राम में बसकर यह प्रत्यक्ष उदाहरण रख दिया है।

तिप्पएणा—मित्रों! मेरी और भी कुछ इच्छा है। वह यह कि हमारी ग्रामपंचायतों के अधिकार बढे। ग्रामपंचायतों को सरकार मान्यता दें।

राधाकृष्ण—यह सब तो हो रहा है—सरकार तो चाहती है कि यह ग्रामपंचायत की योजना शीघ्र ही आगे बढे।

राजन्ना, रामन्ना और पेद्दन्ना सुस्त निराशा लिए हुए आते हैं।

तिप्पण्णा—(प्रसन्न) अहा हा मेरे ! पुराने मित्र आए आज मेरे अहो भाग्य जो आप सज्जनों से भेंट हुई।

सखाराम—क्या तिप्पण्णा जी आप लखपति बन गए?

पेद्दन्ना—देखो जी जले पर नमक न डालो।

मलैया—क्यों क्या हुआ?

राजन्ना—गाँव से २ हजार रुपया लाकर नगर में २ ही मास में सब खर्च कर दिया।

तिप्पण्णा—कैसे खर्च कर दिया?

राजन्ना—व्यापार में नुकसान हो गया। मुझे समझ में नहीं आता तुम सब सुस्त क्यों हो?

रामन्ना—मत पूछो—हमको भी कोई सरकारी नौकरी न मिली।

राजन्ना—मेरे मामा ने तो कह दिया मैं बिलकुल सिफारिश नहीं करता अब हम तीनों निराशा के मारे २ फिर रहे हैं। घर वालों ने कह दिया तुम अपना कमाओ और खाओ।

राजन्ना—मित्र हम हारे, तुम जीते।

पेद्दन्ना—मुझे भी मालूम हो गया कि ग्राम से नगर में आने पर क्या परिणाम होता है।

सखाराम—आप तो मस्तिष्क का काम करने वाले हैं।

मलैया—शरीर श्रम से तो फायदा नहीं है।

राधाकृष्ण—सर्वोदय प्रदर्शनी तो खेल है क्यों?

राजन्ना—हम अपने कृत पर लज्जित हैं। अब जो कुछ भी कहते हैं कह लो।

तिप्पण्णा—भाइयो ! अब भी कुछ नहीं बिगड़ा। जाओ ग्रामों में रचनात्मक कार्य प्रारंभ कर दो तब ही गाँव सुधार होगा।

सब—हां हां, प्रत्येक लिखे पढ़े को शरीर श्रम भी करना चाहिए।

तिप्पण्णा—श्रम ही जीवन !

सब—श्रम से ही देश उन्नति को प्राप्त होगा !!

जन शक्ति

(१)

१ मित्र—जन शक्ति ही देश की अपार शक्ति हैं।

२ मित्र—यह तुम्हारी अन्ध भक्ति हैं।

१ मित्र—देखो, आज चीन किस बल बूते पर कूद रहा है? कैसा डांट डपट कर कहा है।

२ मित्र—विज्ञान है, विज्ञान! मशनरी द्वारा हजारां लाखां आदमियों का काम सैकड़ों हजारों से लिया जा रहा है। अमेरिका आज किसके बल पर बड़ा कहलाया जा रहा है?

१ मित्र—फिर भी मनुष्य मनुष्य ही है।

३ मित्र—अरे रहने दो विज्ञान, कोरिया में खुल गई न तमाम शान, अब रहा केवल भयंकर बमों का भय, परन्तु अन्त में वह भी रहेगा अजय।

१ मित्र—हां जी, विज्ञान को मनुष्य ही तो बढ़ाते हैं।

२ मित्र—देखो, हम बताते हैं। फिर सब देश अमेरिका की क्यों गाते हैं? तुमको विज्ञान शक्ति दबा कर रहेगी।

१ मित्र—जन शक्ति विज्ञान शक्ति को ही नष्ट कर देगी। भारत को भी जन शक्ति पर विश्वास करके अपनी तटस्थ नीति पर दृढ़ रहना चाहिए।

अहिंसा

(२)

१ मित्र—जब कोई मरने के लिए तैयार हो जाता है तो उसे कोई नहीं मारता। किसी के सामने गरदन झुकाए और वह उसे काट दे, कदापि नहीं हो सकता।

२ मित्र—क्या तात्पर्य?

१ मित्र—भारत को कदापि किसी युद्ध हें सहायता नहीं देनी चाहिए।

२ मित्र—फिर तुम्हारी सहायता कौन करेगा?

१ मित्र—यदि हम "सत्यमेव जयते" के आधार पर हें तो भगवान हमारी सहायता करेगा।

२ मित्र—(हंसकर) कहां है तुम्हारा भगवान?

१ मित्र—जहां देखो विद्यमान है।

२ मित्र—ऐसे ढकोसले छोड़ो, और समय की दौड़ में दौड़ो।

१ मित्र—हम भारतवासी अहिंसा में विश्वास रखते हैं। 'अहिंसा परमोधर्मः हमारा मूल मंत्र है। अब किसी व्यक्ति, विशेष का राज नहीं, जनता का राज्य है।

३ मित्र—हां निश्चय ही हमारी विजय है।

४ मित्र—एक दिन प्रत्येक देश को यही नीति अपनानी होगी।

१ मित्र—सैनिक राज्य समाप्त होगा। यही एक भारत का हितकर मंत्र संसार को रास्ते पर लाने वाला है। प्रत्येक देश को युद्ध नीति छोड़नी होगी।

४ मित्र—बोलो भारतमाता की जय!

काश्मीर

(३)

१ मित्र—जब संसार में काशमीर एक उदाहरण बन कर रहना चाहता है तो विश्वसंघ क्यों नहीं रहने देता? क्या नुकसान है?

२ मित्र—यदि उसका झट फैसला करदे तो विश्वसंघ को कौन पूछेगा।

१ मित्र--पाकिस्तान इसलामी राज्य, इसलामी राज्य चिल्लाता है तो काशमीर उसके लिए एक थप्पड़ है।

३ मित्र--फिर हिन्दू महासभा को हिन्दू राज्य की चिल्लाहट क्यों करनी चाहिए।

१ मित्र—बिलकुल अनुचित है। मैं गर्व के साथ कह सकता हूं कि यदि पाकिस्तान अपनी आवाज छोड़ दे तो हिन्दू महासभा भी अपनी चिल्लाहट बंद कर देगी।

२ इस फिरका बन्दी ने तो हिन्दुस्तान के पांच आने भाग कोचीर दिया। जनतंत्र को इसे जोडने में सैकड़ों वर्ष होंगे।

३ मित्र—अच्छा मित्रो इस समय अपनी २ राय बताना।

१ मित्र—इस समय तो वही होगा जो हो रहा है।

२ मित्र--क्या हो रहा है?

१ मित्र--टुकडे, भारत का टुकड़ा हुआ। और बंगाल पंजाब के टुकडे हुए एक दिन काश्मीर का भी टुकड़ा होगा।

३ मित्र--अब टुकडे बहुत हो चुके। अब इसे कटने न देंगे।

१ मित्र—इस गर्वोक्ति को त्यागदो। विश्वसंघ का पीछा छोड़कर आपस में समझौता करलो इसी में सार है। इससे जम्बू की प्रजा परिषद का आन्दोलन भी ठंडा पड़ जायगा।

पंच वर्षीय योजना

(४)

१ मित्र—"पंच वर्षीय योजना" की क्या २ सीमाएं है, क्या क्या विशेषताएं हैं? यह जनता तक नहीं पहुंचाया जा रहा है।

२ मित्र—हां इसे बहुत लोग समझना चाहते हैं।

१ मित्र—सरकार की पंच वर्षीय योजना, अच्छी योजना है परन्तु उसके कार्यकर्ता अधिकांश स्वार्थी हैं। १०० के स्थान पर १००० खर्च कर देते हैं। कमीशन, रिश्वत, नजराने जोरों पर चलते हैं। कुछ सिफारशों का भी तांता लगा रहता है। बड़ा अफसर छोटे अफसर पर दबाव डालता है। सारांश यह कार्य ईमानदारी से नहीं चल रहा है।

३ मित्र--इसके लिए तो सरकार भी परेशान है। उसको ईमानदार कर्मचारी नहीं मिलते। जो ईमानदार आता है भ्रष्ट कर्मचारियों के साथ वह भी वेईमान बन जाता है।

२ मित्र—इसीलिए सरकार के गुप्तचर विभाग को सचेत रहना चाहिए, किन्तु वह भी इतना सचेत नहीं रहता।

१ मित्र—मित्रो! सरकार को छोड़ो हमको तो गांवोंगांव पंचायतें कायम करके कार्य करना चाहिए। प्रत्येक ग्रामवासी नित्य कुछ सार्वजनिक श्रम इस प्रकार करे जिस प्रकार नित्य नियत समय पर भोजन किया करते हैं। यदि इसी प्रकार की योजना प्रत्येक ग्राम में चलती रहे तो सरकारी योजना पीछे पड़ कर जनता की योजना शीघ्र आगे बढ़कर सफल हो जायेगी।

२ मित्र--हां सरकार नदियों की रोक कर तालाब नहरें बनाने तक तो ग्रामों में कुए बहुत जल्द खोदे जा सकते हैं। और बिजलीसे या ट्रैक्टर से खेती करने के स्थान पर हाथों से भी कर सकते हैं।

१ मित्र--प्रत्येक ग्राम में कुएं खोदे जांय और जमीन साफ करके खाद बनाया जाय तो १-२ साल में हमारे ग्राम स्वावलंबी हो सकते हैं मनुष्य की आवश्यकता अन्न, कपड़ा ग्रामों में ही तो मिलता है।

२ मित्र—हां-हां, इस प्रकार तो सरकार की योजना से हमारी योजना पार रहेगी। उधर वह चले, इधर यह भी।

———

दक्षिण भारती की गोलियां

१. गत २-३ मास से 'दक्षिण भारती की गोलियां' चलने पर किसी सज्जन ने पूछा कि – यह गोलियां बंदूक की हैं या दवाइयों की ? उत्तर में निवेदन है कि – हम तो सब प्रकार की गोलियां तैयार करते हैं। आपको जिस गोली की आवश्यकता हो कृपया ले लें।

२. दि. १७-१८ जनवरी हैदराबादियों को बहुत दिन याद रहेगी। इतना बडा सार्वजनिक उत्सव यहां कभी नहीं हुआ था। जनसमूह के झुंड के झुंड हैदराबाद आ रहे थे और जा रहे थे। रेल्वे, बस का तांता न टूटने पर भी जनता को ४-६ घंटे तक 'क्यू' सिस्टम में खडा रहना पडता था किन्तु फिर भी कइयों का ख्याल है कि गत जयपुर अधिवेशन में जब प्रथम बार नेहरूजी प्रधान-मंत्री बनकर आये थे, उस समय जितनी जनता आई थी इस कांग्रेस अधिवेशन के समय नहीं। ठीक क्या है, यह अनुभवी ही विचार करें।

३. पंच वर्षीय योजना को कांग्रेस ने हैदराबाद में ही पास किया है। सफल होने पर हैदराबाद का नाम इतिहास में आ जायगा। और 'आन्ध्र' प्रान्त बनाकर भाषावार प्रान्त रचना बनाने की कोशिश भी हो जायगी। यदि यह प्रयोग सफल होगा तो दूसरी भाषा प्रान्त रचना होगी।

४. अधिवेशन में कांग्रेस ने हिन्दी के लिए क्या किया ? अब हिन्दी के लिए बडी पोल चल रही है। और यह पोल ऐसी चलेगी कि भारत सरकार ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा का जो पद दे रखा है वह कहीं.........। जब हैदराबाद में पुलिस एक्शन हुआ, तो हजारों आदमी हिन्दी पढने के लिए व्याकुल हो उठे थे। फिर हिन्दुस्तानी चली। एक ही भाषा दोनों लिपियों में सिखाना उचित समझा गया। फिर हिन्दी उर्दू अलग-अलग हो गई ! इस तमाशे से समस्त हिन्दी पढने वालों के उत्साह नष्ट होगए।

५. कांग्रेस अधिवेशन में सर्वोदय प्रदर्शनी एक मात्र देखने योग्य वस्तु थी। जिसे चार आने टिकट देकर भी १॥-२ लाख व्यक्तियों ने देखा। पंचवर्षीय योजना का भी एक स्टाल था किन्तु दर्शकों की इतनी भीड़ रहती थी कि लोग उन्हें समझ कर देख नहीं पाते। पंचवर्षीय योजना को तो अवकाश से ही बताना चाहिए। अन्यथा पंचवर्षीय योजना पंच वर्ष में ही रह जायगी।

६. बड़े-बडे पत्र कहते हैं कि आइसनहावर की इस मास की चाल विचित्र है क्योंकि उसने एशिया के देशों को आपस में लडाने का जाल बिछाया है। वह चाहते हैं कि जिस प्रकार युद्ध से योरोप का दीवाला निकला था उसी प्रकार एशिया का भी दीवाला निकाल दे और अपनी पांच अंगुलियां घी में ! सब देशों को युद्ध सामग्री सप्लाई कर अमेरिका और भी धनवान बने।

७ स्थानीय मंत्रि मंडल में कुछ गड़बड़ हो गयी। परिणाम का खुलासा नहीं हुआ। लोग कहते हैं कि स्वामीजी तथा बी. रामकृष्णराव के दो ग्रूप हैं जो सदैव टकराते रहे हैं। भाई ! बरतन है ! घर में बडे-बड़े बरतन कभी-कभी तो टक्कर लेते ही हैं तब उसकी आवाज बाहर सुनाई देना संभव है। भगवान ! सु बुद्धि दे हमारे मंत्रियों को कि इस शक्ति को प्रजातंत्र कार्य को आगे बढ़ाने में तत्पर रहें।

८ जम्बू की प्रजा परिषद सिर तोडकर कोशिश कर रही है कि शेख अब्दुल्ला की द्विभंडावादी नीति को खत्म कर दें, परन्तु यह पता नहीं कि राज-सत्ता का मुकाबिला करना टेढ़ी खीर है। उनकी सीधी-साधी मांग उनके समक्ष में ठीक होगी परन्तु...... परन्तु में ...... परन्तु है ! इस लिए सरकार की राग में राग मिलाना ही श्रेष्ठतम उपाय है। मिलकर कहो—हमारी सरकार जिन्दाबाद !

९ करोडगिरी चली गई। भारत में समानता आ गई, परन्तु साथ ही प्रत्येक व्यक्ति पर परेशानी छा गई है। जिस दूकान पर देखो सेलटैक्स पर सरदर्दी हो रही है। विक्रेता पहले अपने माल का भाव कहता है; ग्राहक के स्वीकार करने पर जब सेलटैक्स लगाता है तो ग्राहक माल छोडकर चल देता है। कोई कहता है कि, 'बिल न लिखो'। तब विक्रेता दुविधा में पड जाता है। करोड़गिरी केवल स्टेशनों और सीमाओं पर परेशान करती, परन्तु सेलटैक्स तो प्रत्येक विक्रेता और ग्राहक को परेशान कर रहा है।

१० रेलभाड़ा एक का तीन चार हो गया, परन्तु अब भी सैकडों सज्जन बात-बात में अपने प्रदेशों को चले जाते हैं। अपने विवाह, शादी, मन्नत यानी प्रत्येक बार का उत्सव वहां जाकर मनाते हैं और इधर प्रदेशों के लीडर कहते हैं कि तुम यहीं घुल मिल जाओ। पर रेल्वे सरकार को करोडों रुपया कौन देगा ? इस का उत्तर लीडरों से लेना चाहिए।

११ देश में मंदी की हवा चल गई। जिस व्यापारी को पूछो रोता है और खर्चे के लिए परेशान है। तंग आकर व्यापार बन्द करता है तब उनके कर्मचारी चिल्लाते फिरते हैं और उनका कोई पूछने वाला नहीं। मजदूरों को किसने नहीं बहकाया। उनके नेता बनने की इच्छा से सब पार्टियों के लोग थे। उनके आए दिन की अधिकाधिक मांग कम से कम काम की नीति ने देश को रसातल पहुंचा रहे हैं। अब भी संभल जाना चाहिए और मजदूरों में दूसरी तरह की भावनाएं भरनी चाहिए। जापान का उदाहरण हमारे सामने है अन्यथा देश में बेकारी बढ़ जायगी और अशान्ति छा जायगी।

१२ बहुत से सज्जन कहते हैं कि सन १९३२ की सस्ताई वापिस आएगी या नहीं ? इसका उत्तर—हां आयगी ! पर केवल यही है कि देश के प्रत्येक मनुष्य को हर प्रकार का श्रम करके कुछ न कुछ उत्पन्न करना चाहिए। हराम की नहीं खानी चाहिए। जब तक कोई रचनात्मक कार्य को नहीं अपनाता है तब तक सस्तापन नहीं आ सकता।

(शेष पृष्ठ १२ से)

अब रहा लिपि का प्रश्न। लिपि तो याद कर लेना १ सप्ताह से अधिक का कार्य नहीं है। अंग्रेजी की भांति एक-एक शब्द के स्पेलिंग, उच्चारण और अर्थ याद करने की भी आवश्यकता नहीं है। फिर भी न मालूम कांग्रेस और उसकी सरकार यह गल्ती क्यों कर रही है ? हां, एक बात बीच आ सकती है, वह यह कि वे रात-दिन अंग्रेजी लिखने के आदी थे और उस आदत को बदलना ही उन्हें कठिन मालूम हो रहा है। यदि उन पर सरकार द्वारा दबाव पड़े तो वे जरूर सीख सकते हैं। इस प्रकार हम हिन्दी की उन्नति में सरकारी की ढिलाई देखते हैं ! कांग्रेस ने अपने इस अधिवेशन में जोर नहीं दिया और न जनता का ध्यान इस ओर आकर्षित कराया।

स्थानीय हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं की भी दशा सोचनीय है। २-३- मासिक और एकाध साप्ताहिक दैनिक निकलते हैं, वह भी घाटे से। सरकार द्वारा उन्हें प्रोत्साहन नहीं मिलता। ऐसे हैदराबाद में हिन्दी की उन्नति होगी तो कैसे ? अपनी-अपनी रोटी पर दाल सींचने की बात हो गई है।

जब तक सरकार ने कोई ऐसा ठोस कदम हिन्दी के लिए नहीं उठाया तो दक्षिण भारत के लिए हैदराबाद वह स्थान नहीं बनता जैसा कि सरकार समझ रही है।

प्रह्लाद और होलिका

बच्चों ! होली क्या है ? इस सम्बन्ध में हम आपको एक कथा सुनाएंगे जिससे आपको शिक्षा भी मिल सकेगी।

प्रह्लाद एक राक्षस का बेटा था, परन्तु उसको भगवान् ने ऐसा चमत्कार बतलाया कि वह भगवद्भक्त हो गया।

एक कुम्हारिन मिट्टी के कच्चे बरतनों को आवे में जमा कर पकाना चाहती थी परन्तु उसे यह मालूम नहीं था कि बिल्ली ने आवे में बच्चों को जना है। उसने उस पर घास फुस डाल कर आग लगा दी। बस, आंच लगते ही बिल्लियों की आवाजें आने लगीं। यह सुन कर कुम्हारिन घबरा गई कि कहीं बिल्ली की हत्या मेरे सर पर न रहे। उसने एकदम आंखें मींच कर भगवान राम की प्रार्थना करने लगी।

संयोग वश उधर से राज कुमार प्रह्लाद ने आकर देखा। वह राम-राम की रट लगा रही थी। यह देखकर उसने कहा—'रामनाम बन्द करो। जानती नहीं राम हमारे शत्रु हैं।'

कुम्हारिन ने आंखें खोल कर कहा—'बालक ! राम किसी के दुश्मन नहीं है। वे तो संकट में सब की सहायता करते हैं।'

प्रह्लाद ने पूछा—'तुम पर क्या संकट आ पड़ा है ?'

'मेरी गल्ती से' कुम्हारिन ने कहा, 'बिल्ली के बच्चे आग में रह गए। ईश्वर से प्रार्थना कर रही हूं कि उन्हें बचाले अन्यथा मुझे यह पाप लगेगा।'

'तो क्या वे बच जायेंगे ?' व्यंग कर प्रह्लाद ने कहा।

'अगर मेरी भक्ति सच्ची है तो जरूर बच जायेंगे' कुम्हारिन ने कहा।

'अच्छा, बता तेरे भगवान कहां है ?'

राज के सिपाही तथा अन्य कुमार के साथ तमाशा देख रहे थे। कुम्हारिन ने आवा खोला। हांडी में बच्चे ज्यों के त्यों खेल रहे थे। कुम्हारिन हर्ष से कहने लगी—'देखो मेरा राम कितना सच्चा और संकट में सहायता करने वाला है।'

कुम्हारिन जीत गई और प्रह्लाद हार गया। इस घटना का प्रभाव कुमार के दिल पर बहुत हुआ। वह हर समय रामनाम जपने लगा। लोगों ने प्रह्लाद के पिता के पास इसकी शिकायत की। उसके पिता हिरण्यकश्यप ने पहले समझाया, बुझाया, धमकाया और मारा-पीटा परन्तु इसका उसके दिल पर कुछ भी असर न हुआ। पिता ने उसकी ढिटाई देख कर उसे मरवा देने का निश्चय किया। उसे पहाड़ से गिराया, तलवार चलाई, जहर पिलाया, अन्ध कुएं में डाला गया पर सब जगह वह भगवान की सहायता से बच निकला।

अन्त में हिरण्यकश्यप ने अपनी बहिन होलिका, जो अग्नि में कभी न जलने वाली थी, उसके गोद में प्रह्लाद को बिठाकर अग्नि जला दी पर न जलने वाली जल गई और प्रह्लाद ईश्वर की कृपा से बच गया।

और उसी दिन से अब तक हम लोग हर साल यह त्यौहार मनाते हैं। जो राक्षस थे वे मुंह से बुरी बातें, घृणित क्रियाएं, गंदे गाते हैं और जो देवता कुल के हैं वे खुशियां मनाकर अच्छे भोजन करते और भगवान के भजन गाते हैं। बच्चों तुम भी अच्छी बातें और अच्छे भजन करो न कि यह गंदी गालियां आदि दो।

हां, भक्त प्रह्लाद के पिता को भगवान ने नृसिंह अवतार धारण कर उसे मार डाला। और प्रह्लाद को गद्दी पर बिठाया।

—
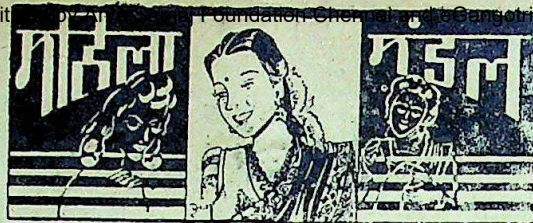
नई होली

होली के दिन थे। चारों तरफ गाने बजाने तथा हंसी मजाक की ध्वनियां सुनाई देती थीं। कोई होरी गाता तो कोई लहेरिया सुनाता।

कमला यह सब शोरगुल सुनती और उसे कभी हंसी आती और कभी क्रोध। रात के १२ बजे तक लोग घर में नहीं आते। सेज रंग के कपडे धोते-धोते थक गई। बच्चे दिन में चार-चार बार हाथ पांव धोने साबुन मांगते। कितना भी पानी भरो समाप्त हो जाता और रंग न मिलता पानी से खेलना प्रारम्भ हो जाता।

पुरुषों की नशेबाजियां होती। कमला ने यह सब देखा उससे रहा नहीं गया। उसने अपने पति कमलदेव से कहा— 'क्यों जी, आप अभी तक पुरानी होली मनाते हुए दीख रहे हैं, जिसमें घृणित रीतियां हैं ?'

कमल देवने कहा—" कैसे ?"

कमला—" देखो न आपका सपूत कल रात को कैसा गाना गा रहा था। शर्म भी है......

बात को बीच ही में काटते हुए कमल देव कहा — अरे पगली ! छोड़ो ऐसी बातों को। होली का त्यौहार है, बक लेता होगा।

कमला ने कहा – " तो क्या उसे इसी तरह बकने दोगे। और बुरे खले खेलने दोगे ?"

यह बात हो ही रही थी कि कमल देव की माता आ गई और कमला का पुत्र भी। कमला ने क्रोध में आकर अपने पुत्र कन्हैया को बुलाकर पूछने लगी — " कहां गया था ?"

" यहीं " कन्हैयाने कहा — " खेल रहा था। "

" माताजी आज तो होली है न होली ! " कन्हैया समझाते हुए कहा ।

जब कमला का क्रोध बढने लगा तब कमलदेव ने कहा – " अब क्यों डांट रही हो ? आज कल के जमाने में जवान बेटे को कोई इतना डांटा करता है ! "

" देखिएजी ! " कमलाने कहा — " आप ही के कारण यह बिगड़ रहा है, आपके देखा देखी यह भी ऐसा ही करता है। "

" तो माताजी, हमें किस प्रकार होली का त्यौहार मनाना चाहिए ! " कन्हैया ने कहा

"हमारे घर का आदमी का कोई नशीली चीज न लें। कोई किसी प्रकार अंट संट न बके। किसी गैर से भद्दी मजाक न हो। " कमलाने गंभीरता से कहा।

कमला एक ऐसी स्त्री थी, जिसे हम 'गृह-शासन विशारदा' कह सकते हैं। उसने जब से घरमें पैर रखा, तब से वह घर की हर एक बुराई को निकालने का प्रयत्न किया था और वह सफल भी रही।

कमलाने फिर कहना प्रारंभ किया — " हमें पुरानी होली छोड़ देनी चाहिए। नई होली मनानी चाहिए। और इस नई होली का स्वरूप महर्षि दयानन्दजीने बताया है। बुरे रंग, कालिक, मिट्टी, किचड़, राख से कभी न खेलना। गाना भी हो तो भगवान के भजन गांए। किसी से भी गन्दी मजाक न करें। माँ बहनों को देखकर वार्तालाप करें। किसी प्रकार का नशा न लें। राह चलने वाले को किसी प्रकार की छेड छाड न करें। "

" यह सब बातें नहीं चाहिए, ठीक है, पर होली कैसे मनाई जाय ! "

" भगवान का भजन करें, होली की पूजा करें, हवन कर घरमें स्वादिष्ट भोजन बनाएं, खाएं और ईश्वर ने दिया है तो औरों को भी खिलाएं। रंग आदि के स्थान पर इत्र फुलेल आदि का प्रयोग करें। सगे-सम्बधियों से मिलने जाना। "

कन्हैया यह सुन कर बडा खुश हुआ। कहने लगा— " माताजी ! हम भी ऐसा ही करेंगे। "

गृह की लक्ष्मी अपने छोटे बडे व्यक्तियों के ठीक से राह चलने के लिए बाध्य कर सकती है।

विश्व-साहित्य

(संसार की समस्त भाषाओं के साहित्य को राष्ट्रभाषा हिन्दी में परिवेशित करने वाली एकमात्र त्रैमासिक पत्रिका ।)

'विश्व-साहित्य' का ध्येय अन्य भाषाओं के साहित्य को हिन्दी में प्रस्तुत करना है।

'विश्व-साहित्य' एक पुस्तक माला है जो त्रैमासिक पत्रिका के रूप में प्रति वर्ष जनवरी, अप्रैल जुलाई और अक्तूबर में प्रकाशित होगी।

'विश्वसाहित्य' का एक विशेषांक भी प्रतिवर्ष प्रकाशित होगा; जिस में लब्ध प्रतिष्ठित विदेशी साहित्यकारों की किसी एक ख्यातिपूर्ण रचना का अनुवाद होगा।

'विश्व-साहित्य' की साधारण प्रति का मूल्य १) रु. होगा, विशेषांक का २) रु.। विश्व-साहित्य के ग्राहकों को विशेषांक केवल १) रु. में मिलेगा। इस प्रकार विश्व-साहित्य का वार्षिक मूल्य ५) रु. होगा।

'विश्व-साहित्य के विषय में सब प्रकार के पत्र-व्यवहार निम्न पते से करें।

सम्पादक, 'विश्व-साहित्य', विष्णुपुरी, अलीगढ

दक्षिण भारती साहित्य प्रकाशन समिति

८६, अफ़ज़लगंज, हैदराबाद दक्षिण

का

पहला—पुष्प

सरदार पटेल

ले. पं. भीष्मदेवजी शास्त्री

प्रकाशित हो चुका है

मूल्य { साधारण १)
राजसंस्करण १।।।)

दूसरा पुष्प

हिन्दी, मराठी, कन्नड़ और तेलुगु साहित्य का

प्रारम्भ-युग

शीघ्र ही प्रकाशित हो रहा है

इसमें

चारों भाषाओं के श्रेष्ठ विद्वानों के लिखे हुए चार तुलनात्मक खोजपूर्ण लेख मिलेंगे।

दक्षिण भारती

पांच भाषाएं एक साथ सीखिए

प्रश्न —:o:— उत्तर

हि. कांग्रेस का ५८ वां अधिवेशन कहां हुआ ?
म. कांग्रेसचें ५८ वें अधिवेशन कोठें झालें ?
क. कांग्रेसद ऐवत्तेंटने अधिवेशनवु एल्लि आइतु ?
ते. कांग्रेसिनि याभैयनुमिदि योक अधिवेशनु एक्कडैनेनु ?
इं. Where the 58 th Congress Session hold ?
उ. کانگریس کا ۵۸ واں جلسہ کہاں ہوا ؟

हि. कांग्रेस अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे ?
म. कांग्रेस अधिवेशनांचें अध्यक्ष कोण होते ?
क. कांग्रेस अधिवेशनद अध्यक्षरारिद्दरु ?
ते. कांग्रेस अधिवेशनमुनकु अध्यक्षुलु यौरु उंडेरु ?
इं. Who was the President for Congress Session ?
उ. جلسہ کانگریس کے صدر کون تھے

हि. श्री नानल कौन थे ?
म. श्री नानल कोण होते ?
क. श्री नानल यारु इद्दरु ?
ते. श्री नानल यवरु उंडेरु ?
इं. Who was mr. Nanal ?
उ. سری نانل کون تھے

हि. नानल नगर कहां बसाया गया था ?
म. नानल नगर कोठें वसविले होतें ?
क. नानल नगर एल्लि बसति यागिद्दितु ?
ते. नानल नगर एकड येरपाट चेसि मुन्डेरु ?
इं. Where the Nanal nagar was built ?
उ. نانل نگر کہاں بسایا گیا تھا ؟

हि. कांग्रेस का ५८ वां अधिवेशन हैदराबाद में हुआ।
म. कांग्रेसचे ५८ वें अधिवेशन हैद्राबाद येथें झाले।
क. कांग्रेसद ऐवत्तेंटने अधिवेशनवु हैदराबाद दल्लि आइतु।
ते. कांग्रेस याभैयनुमिदवा अधिवेशनमु हैद्राबादुलो आएनु।
इं. The 58th Congress Session hold at Hyd.
उ. کانگریس کا ۵۸ واں جلسہ حیدرآباد میں ہوا

हि. कांग्रेस अधिवेशन के अध्यक्ष पं. जवाहरलाल नेहरू थे।
म. कांग्रेस अधिवेशनांचे अध्यक्ष पं. जवाहरलाल नेहरू होते.
क. कांग्रेस अधिवेशनक्के अध्यक्षरु पं. जवाहरलालनेहरू रवरिद्दरु
ते. कांग्रेस अधिवेशन अध्यक्षुलु पं. जवाहरलालनेहरू गारु उंडेरु
इं. Pandit Jawaharlal nehru was the president of Congress Session.
उ. جلسہ کانگریس کے صدر پنڈت جواہرلال تھے

हि. श्री नानल हैदराबाद स्टेट कांग्रेस के संस्थापक थे।
म. श्री नानल हैदराबाद स्टेट कांग्रेसचें संस्थापक होते.
क. श्री नानल हैदराबाद स्टेट कांग्रेसद संस्थापक रिद्दरु।
ते. श्री नानल हैदराबाद स्टेट कांग्रेस योक संस्थापकलु युंडेरु।
इं. Mr. Nanal was the founder of Hyderabad State Congress.
उ. سری نانل حیدرآباد اسٹیٹ کانگریس کے بانی تھے

हि. नानल नगर गोलकोंडा के ऐतिहासिक दुर्ग में बसाया गया था।
म. नानल नगर गोलकोंड्याच्या ऐतिहासिक किल्यांत वसविले गेले होते।
क. नानल नगर गोवलकोंडद ऐतिहासिक दुर्गदल्लि एर्पडिसित्तु।
ते. नानल नगर गोलकोंडा ऐतिहासिक कोंडमंदु येर्पाटु चेसि युंडेनु।
इं. Nanal nagar was built in the Historical Fort of Golconda.
उ. نانل نگر گولکنڈے کے تاریخی قلعہ میں بسایا گیا تھا

हि. कांग्रेस अधिवेशन में मुख्य प्रस्ताव कौनसा था ?

म. कांग्रेस अधिवेशनांत मुख्य प्रस्ताव कोणते होते ?

क. कांग्रेस अधिवेशनदल्लि मुख्यवाद प्रस्तापवु यावदित्तु ?

ते. कांग्रेसाधिवेशमंदु मुख्यमैन प्रस्तापमु येदि उंडेनु ?

इं. What was the main Resolution before Congress Session ?

उ. کانگریس کے جلسہ میں کونسی اھم قرارداد تھی-

हि. कांग्रेस अधिवेशन में मुख्य प्रस्ताव पंचवर्षीय योजना का था।

म. कांग्रेस अधिवेशनांत प्रमुख प्रस्ताव पंचवर्षीय योजनेचें होते।

क. कांग्रेसाधिवेशनदल्लि मुख्य प्रस्तापऊ ऐदु वर्षद योजन वित्तु।

ते. कांग्रेसाधिवेशमुलो मुख्य मैन प्रस्तवमु ऐदु एंडलु युंडेनु।

इं. The main resolution before Congress Session wıs about the Five year Planin8

उ. کانگریس کے جلسہ میں پنجسالا اسکیم اھم قرارداد تھی

हि. कांग्रेस अधिवेशन में कितना खर्च हुआ ?

म. कांग्रेसच्या अधिवेशनांत किती खर्च झाला ?

क. कांग्रेस अधिवेशनदल्लि एष्टु खर्चु आइतु ?

ते. कांग्रेस अधिवेशनलो खर्चु एंत आयेनु ?

इं. How much was spent in Congrees Session.

उ. کانگریس کے جلسہ میں کتنا خرچ ھوا

हि. कांग्रेस अधिवेशन में ५ लाख रुपये खर्च हुए।

म. कांग्रेस अधिवेशनांत ५ लाख रुपये खर्च झाले.

क. कांग्रेस अधिवेशनदल्लि ऐदु लक्ष रुपाइगळु खर्चादवु।

ते. कांग्रेस अधिवेशनमुनंदु ऐदु लक्षलु कोट्टु रुपाइलु खर्चाएनु।

इं. Rs. Five laks wəre spent in Congress Session.

उ. کانگریس کے جلسہ میں ۵ لاکھ روپیے خرچ ھوئے

—————

श्री सम्पादक,

हिन्दी संसार के एक सदस्य के रूप में आपके इस साहित्यिक आयोजन का अभिनन्दन करता हूं, एवं आशा करता हूं कि 'दक्षिण भारती' के द्वारा साहित्य संसार की अच्छी सेवा हो सकेगी।

—कृष्ण नन्दन 'पीयूष'
मुजफ्फरपुर (बिहार)

श्री सम्पादक,

मैं एक व्यापारी हूं, जो दिन-रात व्यापार के कार्य में व्यस्त रहता हूं। मुझे पढने का शौक होने पर भी समय के अभाव में नहीं पढ सकता। दुनिया की हलचल से मैं बिलकुल अनभिज्ञ-सा रहा हूं, परन्तु जब से मैंने 'दक्षिण भारती' का 'संसार समाचार' स्तम्भ पढना प्रारंभ किया है मुझे दुनिया की महत्वपूर्ण घटनाओं, कार्यों का पता लगने लगा और मेरा समय भी बचता रहा। इसके कारण मुझे वृत-पत्र पढने की भी अनावश्यकता प्रतीत होने लगी। मैं इस स्तम्भ के लिए आपको धन्यवाद देता हूं।

—सेठ रामजीवन जाखोटिया, अहमदाबाद

श्री सम्पादक,

जनवरी' ५३ का 'दक्षिण भारती' का कांग्रेस अधिवेशन विशेषांक पढ़ा इस का 'स्वदेशी राज्य हुआ, स्वराज्य नहीं' और 'नई तालीम' लेख बहुत ही सुन्दर है।

—लक्ष्मीनारायण शर्मा, जोधपुर

—————

नया साहित्य

दिग्भ्रमित राष्ट्रकवि (रेणुका से रश्मिरथीतक)

लेखक:—प्रो. कामेश्वर शर्मा, एम. ए.।
प्रकाशक:–जगदीश कुमार श्रीवास्तव, धानमंडी, लखनाऊ।
पृष्ठ संख्या:— ११८, मूल्य:–दो रुपये आठ आने।

उक्त पुस्तक में शर्माजी ने दिनकर के रेणुका, हुंकार, द्वन्द्वगीत, रसवन्ती, सामधेनी, कुरुक्षेत्र, बापू, धूप और धुंआं, रश्मिरथी आदि काव्य ग्रंथों की आलोचना की है।

इस में प्रोफेसरजी ने दिनकर की प्रतिभा, उनकी शैली, काव्यशक्ति और उनकी दार्शनिकता पर प्रत्येक काव्य ग्रंथों को लेकर उनका विश्लेषण और समीक्षा की है। दिनकर को लेखक ने सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियोंका सहारा लेकर, जिनका कवि के ग्रंथों से बडा घनिष्ट सम्बन्ध है, उनके काव्यों की समीक्षा की है।

लेखक दिनकर के प्रति जितनी सहानुभूति रखता है उतनी कठोरता भी। लेखक जहां दिनकर के गुणों को बताता है वहां दोषों को भी। और यही कारण है जो उनकी यह समीक्षा निष्पक्ष और अत्युत्तम बन पडी है।

दिनकर के व्यक्तित्व और कृतित्व का समस्त अनुशीलन करने के लिए यह पुस्तक बहुत ही उपयोगी है। हिन्दी के समीक्षा साहित्य की यह सर्वोत्तम कृति कही जा सकती है।

हम आशा करते है कि लेखक इसी प्रकार हिन्दी साहित्य को अपनी अमर देन प्रस्तुत करता रहेगा। छपाई सफाई साधारण है।

छः एकांकी

लेखक:–भैरुलाल व्यास, साहित्य रत्न।
प्रकाशक:–हिन्दी साहित्य समिति, बेलगांव।
पृष्ठ संख्या:–६४, मूल्य:– आठ आना।

हिन्दी साहित्य में बाल एकांकी–साहित्य की सदा से बड़ी कमी रही है, और जो हैं वह रंगमंच पर खेले जाने योग्य नहीं है। क्यों कि एकांकियां एकांकीकारोंने रंगमंच को ध्यान में रखकर नहीं लिखी थीं। और यही कारण था जो उनकी एकांकियां रंगमंच पर असफल होती रहीं। श्री भैरुलालजी व्यास ने इस छः एकांकियां को, जो रंगमंच पर खेले जाने योग्य हैं। लिखकर वास्तव में हिन्दी की एक महत्वपूर्ण कमी को दूर करने का प्रयत्न किया है।

जितनी खुशी मुझे 'छः एकांकी' शीर्षक पढ़कर हुई, उतनी पूर्ण पुस्तक पढने पर नहीं। कारण स्पष्ट है कि लेखक ने केवल रंगमंच को ही ध्यान में रखकर एकांकियां लिखी हैं। नाटककार का जो दृष्टिकोण होता है, वह इनमें नहीं के बराबर है। केवल रंगमंच को ध्यान में रखने कारण एकांकियाँ कुछ अस्वाभाविक-सी लगती हैं।

नाटककार की एक अपनी शैली होती है और वह शैली इन एकांकियों में कहीं देखने को नहीं मिली। पूर्ण पढने के बाद मुझे आश्चर्य इस बात का हुआ कि यह एकांकियां रंगमंच पर सफल कैसे हुई? क्यों कि हर एकांकीपर लिखा हुआ है कि 'बडी सफलता से, 'प्रभावि ढंगसे' रंगमंच पर लाया गया हिन्दी के बाल एकांकी–साहित्य की कमी को दूर करने की शक्ति तो इस पुस्तक में नहीं पर लेखक अपना दृष्टिकोण बदल दें और नाटककार का दृष्टिकोण सामने रखकर अगर लिखें तो अवश्य ही हिन्दी बाल एकांकी साहित्य की कमी दूर हो सकती है, ऐसी आशा है।

पुस्तक की छपाई सफाई साधारण है।

— श्रीनिवास सोनी, हैदराबाद —

नई–धारा

सम्पादक:—श्री रामवृक्ष बेनी पुरी
अशोक प्रेस, पटना

'नईधारा' एक उच्च कोटि की मासिक पत्रिका है। इसे 'हिन्दी' के लिए विद्वान लेखकों और कवियों का सहयोग प्राप्त है। यह एक अपने ढंग की उच्चतम पत्रिका अपने उद्देश में सफलता प्राप्त कर रही है। पत्रिका पाठ्य सामग्री सुन्दर है और साहित्यिक उन्नतिकी जीती जागती प्रतीक है।

फरवरी अंक का 'विशेष लेख' बहुत ही सुन्दर बन पडा है।

एक प्रति १) वार्षिक १०)

तारीख वार

जनवरी मास

के समाचार

विश्व

ता. १ सीलोन से ४०० मील दूर माल द्वीप में ८३६ वर्ष के बाद प्रजातंत्र की स्थापना। इस द्वीप में ९३००० निवासी रहते हैं जो करीब सभी मुसलमान हैं। प्रजातंत्र दिवस के अवसर पर यहां के प्रथम अध्यक्ष श्री अमीर अमीन दीदी ने एक अध्यादेश निकाल कर माल द्वीप से पर्दा प्रथा का अन्त कर दिया।

ता. २. रंगून में होने वाले एशियाई समाजवादी सम्मेलन की तैयारी प्रारंभ।

ता. ३. आगामी वर्ष की प्रतिरक्षा के सम्बन्ध में ब्रिटेन का श्वेत पत्र प्रकाशित। प्रति रक्षा खर्च में वृद्धि।

ता. ४. ईरानी मजलिस की बैठक में उपद्रव।

ता.५ पाकिस्तान न्यायालय ने रावलपिंडी षड़यन्त्र केसका फैसला सुनाया। मेजर जनरल अकबरखां तथा उनके १२ साथियों को १२ साल की जेल सजा।

ता. ६. उत्तरी आयरलैंड स्थिति बेलफास्ट में भयंकर हवाई दुर्घटना। २७ यात्रियों की मृत्यु और ८ घायल।

ता. ७. ईरान में छात्रों का संघर्ष प्रारंभ। प्रथम संघर्ष में ७ विद्यार्थी घायल।

भारत

ता. १ लाल किले का नाम नेताजी किला रखने का डॉ. शामाप्रसाद मुखर्जी ने सुझाव दिया।

ता. २ भारत के उप राष्ट्रपति श्री डा. राधाकृष्णन ने मैसूर शिक्षा समिति की बैठक में भाषण देते हुए कहा कि विश्व विद्यालयों में शिक्षा का माध्यम इंग्लिश भाषा ही रहे।

ता. ३ मद्रास में सिपाहियों द्वारा वेतन लेने से इन्कार। इसका कारण कान्स्टेबल, एशोसिएशन के पधाधिकारियोंकी गिरफ्तारी है।

ता. ४ भाषागत राज्य समिति द्वारा दर - समिति की आलोचना।

ता. ५ बम्बई के मोटर यातायात संचालकों की हड़ताल समाप्त।

ता. ६ दुर्भिक्ष जांच समिति ने महाराष्ट्र के लिए छोटी सिंचाई योजनाओं की सिफारिश की।

ता. ७ मद्रास में १०६ हड़ताली सिपाही गिरफ्तार।

ता. ८ नेपाल में कामचलाऊ सरकार बनाने का नया प्रयास।

ता. ९ नेताजी का जन्मस्थान भारत सरकार को मिलेगा। इसे राष्ट्रीय म्यूजियम के रूप में सुरक्षित रक्खा जायगा।

ता. १० अखिल नेपाली महिला संघ की अध्यक्षाने मांग की कि नेपाली

घर

ता. २ तालुका वैजपुर में भीषण दुर्भिक्ष। ५ जनवरी से भूख मार्च करने का निश्चय।

ता. ३ खाद्यान्न संकट की झूठी अफवाहें उठाने वाली की श्री डा. चन्नारेड्डी द्वारा निन्दा।

ता. ४ पब्लिक सर्विस कमीशन की द्वितीय रिपोर्ट पर सरकारी क्षेत्रों में खलबली। प्रकाशन असामयिक।

ता. ५ अखिल भारतीय छात्र सम्मेलन ने आन्ध्र प्रान्त के साथ-साथ अन्य प्रान्त बनाने की ओर तत्काल कदम उठाने की मांग की।

ता. ६ शमशाबाद रोड़ पर भीषण बस दुर्घटना। फल स्वरूप २० व्यक्ति घायल।

—ताज ग्लास फैक्ट्री का प्रबन्ध स्थानीय पूंजीपतियों के हाथों सौंपा जाय।

ता. ७ मराठवाड़ा और जिला करीमनगर के ५ कुख्यात डाकू पुलिस द्वारा गिरफ्तार?

ता. ८ हैदराबाद में अधिवेशन की तय्यारियों को अंतिम रूप।

ता. १० भारत सरकार द्वारा राज्य के ४५०० टूटे-फूटे कुंओं की मरम्मत का निश्चय।

ता. ११ राज्य के आगामी अधिवेशन में हैदराबाद टिनेन्सी ऐक्ट में

विश्व

ता. ८. रेडिकल पार्टी, फ्रान्स के नेता श्री रेने मेअर ने घोषणा की कि उन्होंने नई सरकार बना ली है। यह नई सरकार फ्रान्स की युद्धोत्तर कालीन १८ वीं सरकार है।

ता. ९. मिश्र की सैनिक सरकार के नेता कर्नल नसर ने घोषणा की कि फरवरी में होनेवाले मिश्र का आम चुनाव स्थगित कर दिया गया है। कर्नल नसर चुनाव में लगने वाली शक्ति अंग्रेजों को स्वेज नहर से निकालने में लगाना चाहते हैं।

ता. १२ स्वशासन के प्रश्न पर सूडान और मिश्र के मध्य समझौता।

ता. १३ युगोस्लाविया के नये विधान के अनुसार इस वर्ष प्रथम बार प्रेसिडेन्ट का चुनाव होगा। विदेश मंत्री द्वारा संसद में संविधान का नया मसविदा पेश।

ता. १५ लन्दन स्थित अफगान दूतावास में ६००० स्टर्लिंग के जवाहरात की चोरी।

ता. १६ यहूदी के विरुद्ध रूसी कार्रवाई पर इसराइलियों को रूसी युद्ध घोषणा का भय।

ता. १७ लन्दन में महात्मा गांधी का स्मारक बनाने के लिए आन्दोलन आरंभ।

ता. १८ ब्रिटेन में राज्याभिषेक की तैयारियां।

ता. १९ भारतीय कांग्रेस महा समिति के ५८ वें अधिवेशन में ईरानी पत्र प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

ता. २० ईराक में संसद का चुनाव।

ता. २१ जापान की सीमा पर रूसी सेनाएं तैनात।

भारत

महिलाओं को सेना में भरती किया जाय।

ता. १२ पूर्वी पंजाब के लोकल बोर्डों के चुनाव स्थगित।

ता. १३ श्री. शीलभद्रय्याजी ने, जो अखिल भारतीय फार्वर्डब्लाक के महा मंत्री हैं, कहा कि नेताजी सुभाष मार्क्सवादी थे।

ता. १४ मद्रास के मुख्य मंत्री श्रीराजाजी द्वारा भाषागत प्रान्तों के निर्माण का विरोध।

ता. १५ जम्मू के समीप प्रजापरिषद के आन्दोलन में पुलिस गोली बार के फल स्वरूप १५ व्यक्ति मारे गये।

ता. १६ दिल्ली विश्वविद्यालय को रूसी पुस्तकों का उपहार।

ता. १७ कांग्रेस द्वारा श्री नेहरू की विदेश नीति का समर्थन।

ता. १८ बडोदा में कड़ी सर्दी के कारण दो व्यक्तियों की मृत्यु।

ता. १९ हाईकोर्ट के निर्णय के विरुद्ध की गयी रिजवी की अपील खारिज।

ता. २० प्रान्तीय औद्योगिक न्यायालय नागपुर ने बुढानपुर राष्ट्रीय सूती वस्त्र मिल मजदूर यूनियन की मान्यताको रद्द कर दिया।

ता. २२ अखिल भारतीय मुद्रक सम्मेलन का अधिवेशन बम्बई में प्रारंभ।

ता. २३ सहयोग एवं सहायता के लिए जनरल नजीब की भारत से अपील।

ता. २४ कराची में ३० हजार छात्र हड़ताल पर।

ता. २५ कलकत्ते के सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री. नलिनी रंजन सरकार का देहांत।

घर

संशोधन करने संबंधी बिल पेश करने का निश्चय।

ता. १२ कारों पर प्लेट व रफ्तार का केस, जो निजाम पर श्री बी. जी. केसकर ने किया था, आज जिला मैजिस्ट्रेट ने रद्द कर दिया।

ता. १३ हैदराबाद के भूतपूर्व मुख्य न्यायाधीश श्री आर. एस. नायक ने अध्यापक संघ सम्मेलन में सरकार से मांग की कि प्रारंभिक शिक्षा निःशुल्क आरंभ अविलंब की जाय।

ता. १४ ५८ वे कांग्रेस अधिवेशन की। कल से विषय समिति आरंभ होगी।

ता. १५ अधिवेशन में मोरार जी देसाई ने कहा कि दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह में संसार सहयोग दें।

ता. १७ खुले अधिवेशन में श्री जवाहरलाल जो नेहरू ने कहा कि हैदराबाद राज्य के विभाजन से दक्षिण भारत का सन्तुलन बिगड़ जायेगा।

ता. १८ कांग्रेस महासमिति का ५८ वां अधिवेशन समाप्त। पंचवर्षीय योजना को सफल बनाने का निश्चय।

ता. १९ श्रमिकों के निवास स्थान के प्रबंध का केन्द्रीय मंत्री श्री जगजीवनराम द्वारा उद्घाटन।

ता. २४. आर्यप्रतिनिधि सभा ने गो हत्या निषेध कानून शीघ्र बनाने के लिए सरकार से मांग की।

ता. २६ हैदराबाद के कोने कोने में भारत गणतंत्र दिवस समारोह बड़ी शान के साथ मनाया गया।

ता. २७ गौलीगुड़ा स्थित राममंदिर में हरिजनों का प्रवेश। पुजारियों द्वारा विरोध।

विश्व

ता. २२ मिश्र के विद्रोहियों पर सैनिक न्यायालय में मुकदमा।

ता. २३ पाक संविधान परिषद की बैठक स्थगित।

ता. २४ कराची के कालेजों में ... हजार छात्रों की हड़ताल।

ता. २५ सिक्किम के दीवानने प्रथम ऐतिहासिक चुनाव को घोषणा की।

ता. २६ अमरीकी सेना के चीफ आफ स्टाफ कोरिया के लिए रवाना।

ता. २८ भारत पाक पासपोर्ट सम्मेलन में पाकिस्तान की ओर से प्रस्ताव रखा गया कि भारत पाक के बीच यातायात के सभी मार्ग फिर से §

भारत

ता. २६ देश भरमें गणतंत्र दिवस समारोह सम्पन्न।

ता. २७ भारतीय नृत्य नाटक संगीत एकेडेमी की स्थापना।

ता. २८ केन्द्रीय अकाल जांच समिति ने सिफारिश की कि महाराष्ट्र की विकास योजनाओं का आधा खर्च भारत सरकार दें।

ता. २९ उत्तर प्रदेश के ११ नगरों में मेहतरों की हड़ताल। *

§ खोल दिये जाएं।

ता. ३० रूस ने डेन्मार्क के क्षेत्र में उत्तरी अटलांटिक सन्धिकी सेनाओं की उपस्थिति पर पुनः आपत्ति की।

घर

ता. २८ कोप्पल से कुछ ही दूर बन्नीकोप्पा में एक व्यक्ति की हत्या।

ता. २९ उस्मानाबाद की सोशलिस्ट कार्यकर्ता की सभा ने संयुक्त महाराष्ट्र निर्माण की मांग की।

ता. ३० देगलूर में गोधन का नाश होने के कारण आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं में तीव्र रोष।

* ता. ३० उत्तर प्रदेश में मुरादाबाद सबसे अधिक घना बसा हुआ नगर है। यहां की जन संख्या प्रतिवर्ग मील ४०,४६४ के हिसाब से बसी हुई है।

ता. ३१ कल देश के कोने-कोने में राष्ट्रपिता महात्मा गान्धी के प्रति श्रद्धांजलि।

फरवरी १९५३ के समाचार

ता. १ ब्रिटेन का प्रिन्स विक्टोरिया जहाज स्काटलैण्ड के तट पर डूब गया। इसमें १८३ यात्री थे वे सभी जलमग्न।

ता. २ बर्मा के चावल बहुलडेल्टा ... में पुनः विद्रोहियों की कार्रवाइयां आरंभ।

ता. ३ यूरोप के कई देशों में आंधी का प्रकोप। हजारों की मृत्यु।

ता. ४ अफ्रीका में सत्याग्रह को दबाने के लिए विधेयक स्वीकृत। मलान सरकार के विरुद्ध अविश्वास का प्रस्ताव अस्वीकृत।

ता ५ आइसन हावर द्वारा चीनी तट की नाके बन्दी आरम्भ। चीन में युद्ध सामग्री रोकने का प्रयत्न।

ता. ६ श्री मणिलाल गांधी तथा श्री पेट्रिक डंकन को सत्याग्रह के जुर्म में अफ्रीकी सरकार ने १०० पौण्ड का जुर्माना या १०० दिन का सपरिश्रम-कारावास का दण्ड दिया।

ता. ७ इंडोनेशिया का चावल के बदले चीन को रबड़ देने का निश्चय।

ता. ८ जनेवा में पाकिस्तान के

ता. १ भारत पाकिस्तान पार पत्र सम्मेलन दिल्ली में समाप्त। इसमें अनेक विषयों का दोनों देशों में समझौता।

ता. २ हैदराबाद में केन्द्रीय स्वास्थ्य परिषद की बैठकें प्रारम्भ।

ता. ३ कोयंबतूर में बिजली की ५० प्रतिशत कटौती से उत्पादन में ५० % की आशंका।

ता. ४ भारत की अमरीकी टेकनीकल सहायता के अनुसार बिहार, पेप्सू उत्तर प्रदेश आदि में २००० नलदार कुएं बनाने की योजना पूर्ण।

ता.५ बिकानेर में २ लाख आदमी अकाल से पीडित। अनेक गांवों में सहायता कार्य आरम्भ।

ता. ६ राज्यपाल सम्मेलन में राष्ट्रपति और प्रधान मंत्री ने भारत के तटस्थ नीति पर कायम रहने की घोषणा की।

ता. ७ त्रावणकोर, कोचीन के म्युनिसिपल चुनावों में कांग्रेस की विजय। ६० सीटें कांग्रेस को मिली।

ता. १ बापूजी की चौथी पुण्य-तिथि राज्य भर में रचनात्मक कार्यकर्ताओं ने ३० जनवरी को मनाई।

ता. २ हैदराबाद मंत्रि-मंडल के १२ मंत्रियोंने अपने त्याग पत्र मुख्य मंत्री के पास प्रस्तुत किये।

ता. ३ मैट्रिक के विद्यार्थियों की सुविधा के लिए नांदेड और खम्मम में परीक्षा केन्द्र खोले गये।

ता. ४ राज्य विधान सभा की कांग्रेस पार्टी ने भूमि संबन्धी अधिनियम को कुछ संशोधनों के साथ आज की सभा में स्वीकृत किया।

ता. ५ बापू स्मारक समिति की बैठक हुई। इसमें बापू घाट बनाने के प्रस्ताव पर विचार हुआ।

ता. ७ उस्मानिया विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने जनरल एज्यूकेशन सोसायटी की स्थापना की।

ता. ८ हैदराबाद सरकार ने पंचवर्षीय योजना की पूर्ति के लिए ९ करोड़ के कर्ज की केन्द्र से मांग की।

विदेश मंत्री श्री जफरुल्ला ने डा. ग्राहम से २ घंटे गुप्त बातचीत की।

ता. ९ भारत और अफ्रीका में टैकनिकल सहायता का समझौता।

ता. १० अमरीका द्वारा क्षयनिरोधक नई औषधि की खोज। इसका नाम इसोनियाजिद है।

ता. ११ कोजो द्वीप में विषैली गैस का अमरीका द्वारा प्रयोग।

ता. १२ ब्रिटेन और मिश्र द्वारा सूडान के समझौते पर हस्ताक्षर। ५३ वर्षों की गुलामी के बाद सूडान को स्वशासन प्राप्त।

ता. १३ चीन के अमोय बंदरगाह पर छोटे राष्ट्रवादी जंगी जहाजों का घेरा।

ता. १४ ईरान में भारी भूकम्प। १५०० व्यक्ति भूगर्भ में दफन हो गये।

ता. १५ केपटाऊन में मलान के काले कानूनों के विरुद्ध प्रदर्शन।

ता. १८ जापान में पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों की अधिकता होने की घोषणा।

ता. १९ मलान सरकार का सुरक्षा विधेयक पास।

ता. २१ पूर्वी पाकिस्तान में दौलताबाद स्थित चार बडे जूट गोदामों में आग।

ता. २२ रूस में सोवियतों का चुनाव संपन्न। ये सोवियत रूस की प्रशासन व्यवस्था करते हैं।

ता. २३ अमरीकी राष्ट्रपति ने श्री बोलने को रूस में अपना राजदूत नियुक्त किया।

ता. २४ एशियाई व्यापारी सम्मेलन में चीन को शामिल करने का रूसी प्रयत्न विफल।

ता. २५ १९४५ की चीन रूस मैत्रि संधि रद्द करने की सिफारिश राष्ट्रवादी चीन के विधान सभा ने की।

ता. ८ न्याय मूर्ति वांचू द्वारा आँध्र सम्बन्धी रिपोर्ट भारत सरकार के सामने पेश।

ता. १० भारत प्रतिरक्षा मंत्री श्री गोपालस्वामी अयंगार का मद्रास में स्वर्गवास।

ता. ११ कांग्रेसाध्यक्ष श्री नेहरू द्वारा कॉंग्रेस कार्यकारिणी समिति के १९ नामों की घोषणा।

ता. १२ पाकिस्तान सरकार ने भारत पर आरोप लगाया कि भारत पाकिस्तान के विशाल भू भाग को रेगिस्तान बना देगा।

ता. १४ राजा त्रिभुवन की कोइराला से भेंट।

ता. १५ राष्ट्रपति का दक्षिण भारत का दौरा शुरू।

ता. १६ दिल्ली राज्य विधान सभा के उप चुनावों के परिणाम घोषित।

ता. १८ ईरान के भूकम्प पीडितों को भारतीयों की सहायता। १ लाख ३ हजार की थैली भेंट।

ता. १९ आस्ट्रेलिया का पत्र प्रतिनिधि मण्डल भारत पहुँचा।

ता २० काश्मीर के उपगृह मंत्री श्री. जे. पी. दर काश्मीर वार्ता में शामिल होने के बाद आज जैनेवास वायुयान द्वारा वापस।

ता २१ तिलैया बांध तथा बोकारो विद्युत स्टेशन का श्री नेहरूजी द्वारा उद्घाटन।

ता. २२ दिल्ली राज्य विधान सभा का बजट अधिवेशन आरंभ।

ता. २४ अमृतसर में मास्टर तारासिंह तथा अन्य अकाली दल के नेता गिरफ्तार।

त. २५ निष्क्रान्त सम्पत्ति विधेयक में भारत सरकार द्वारा संशोधन स्वीकार।

ता. १० परभणी जिले के ग्राम अमरपुर में १५ सशस्त्र डाकुओं ने हमला किया और १५ हजार लूटा।

ता. ११ कल हैदराबाद औद्योगिक प्रदर्शनी ४० दिन के बाद सफलता पूर्वक समाप्त हुई।

ता. १२ हैदराबाद सरकार ने जवार को एक जिले से दूसरे जिले में न लेजाने की पाबन्दी को हटा दिया।

ता. १३ ताज कले वर्क्स के श्रमिकों की गिरफ्तारियां अमल में आई।

ता. १४ अखिल भारतीय विद्यार्थी संघ ने मराठवाड़ा की अकाल ग्रस्त जनता की सहायतार्थ चार आने के सहायता टिकिट निकाले।

ता. १६ हैदराबाद हिन्दी प्रेमी द्वारा एकांकी उत्सव का आयोजन।

ता. १७ ताज कले वर्क्स के श्रमिकों की गिरफ्तारी।

ता. १८ स्थानीय मंत्री श्री आबा रावजी गणमुखी ने साइकिल रिक्शा मालिकों की यूनियनका उद्घाटन किया।

ता. १९ भारत के रियासतीय मंत्री श्री काटजू द्वारा बताया कि श्री वेलोडी के कार्य काल में मार्च के अन्त तक की वृद्धि की घोषणा।

ता. २१ हैदराबाद हैंडलूम वीवर्स सेन्ट्रल की आपरेटिव्ह असोशिएशन की बैठक हुई इस में राज्य के बुनकरों की सोचनीय स्थिति पर विचार हुआ।

ता. २३ ताज कले वर्क्स का झगड़ा औद्योगिक न्यायालय में प्रस्तुत किया गया।

ता. २४ मदरा में ३ कम्युनिस्टों को पुलिस ने गिरफ्तार किया।

ता. २५. सीताफल मंडी के पास एक २५ वर्षीय नवयुवक ने सरकारी बसके सामने गिरकर आत्मा हत्या की।

नाचो कूदो हृदय बताओ आओ आओ होली है । गोली धोली बोलें वाली धोती साड़ी चोली है ॥

नई होली

दिल मिल बैठो गाओ हरिगुण, [illegible] देश हितैषी चर्चा हो यदि, उपयोगी है होली भी ॥

दि महबूबशाही गुलबर्गा मिल्स कंपनी लिमिटेड

गुलबर्गा-दक्षिण. जी. आइ पी.

मैनेजिंग एजन्ट्स :-

मेसर्स

दयाराम सूरजमल लाहोटी

सिकन्दराबाद दक्षिण

★ यह मिल अपने कलापूर्ण, सुन्दर और मजबूत कपडे के लिए प्रसिद्ध है।

★ इस मिल का तमाम कपड़ा अपने ही सूत से तैयार होता है।

★ हमारी मिल में सब प्रकार का रंगीन शर्टिंग व कोटिंग और

★ धोतियां, चादरें, लांगक्लाथ बारीक, मोटा, कोरा और धुला हुआ सब कपड़ा सुन्दर और सब डिज़ाइनों में तैयार किया जाता है।

कपड़ा खरीदते समय आप इस मिल को जरूर याद रखें!

इन सब प्रकार के कपड़ों के निर्माता

दि हैदराबाद (द.) स्पिनिंग एण्ड वीविंग कं. लिमिटेड	दि महबूबशाही कलबुर्गा मिल्स कं. लिमिटेड
मैनेजिंग एजेन्ट्स	गुलबर्गा (हैदराबाद द.)
दि महबूबशाही कलबुर्गा मिल्स कं. लिमिटेड,	मैनेजिंग एजेन्ट्स — मेसर्स दयाराम सूरजमल लाहोटी,
बेगमपेठ, हैदराबाद द.	सिकन्दराबाद दक्षिण

दक्षिण भारत

अप्रैल १९५३
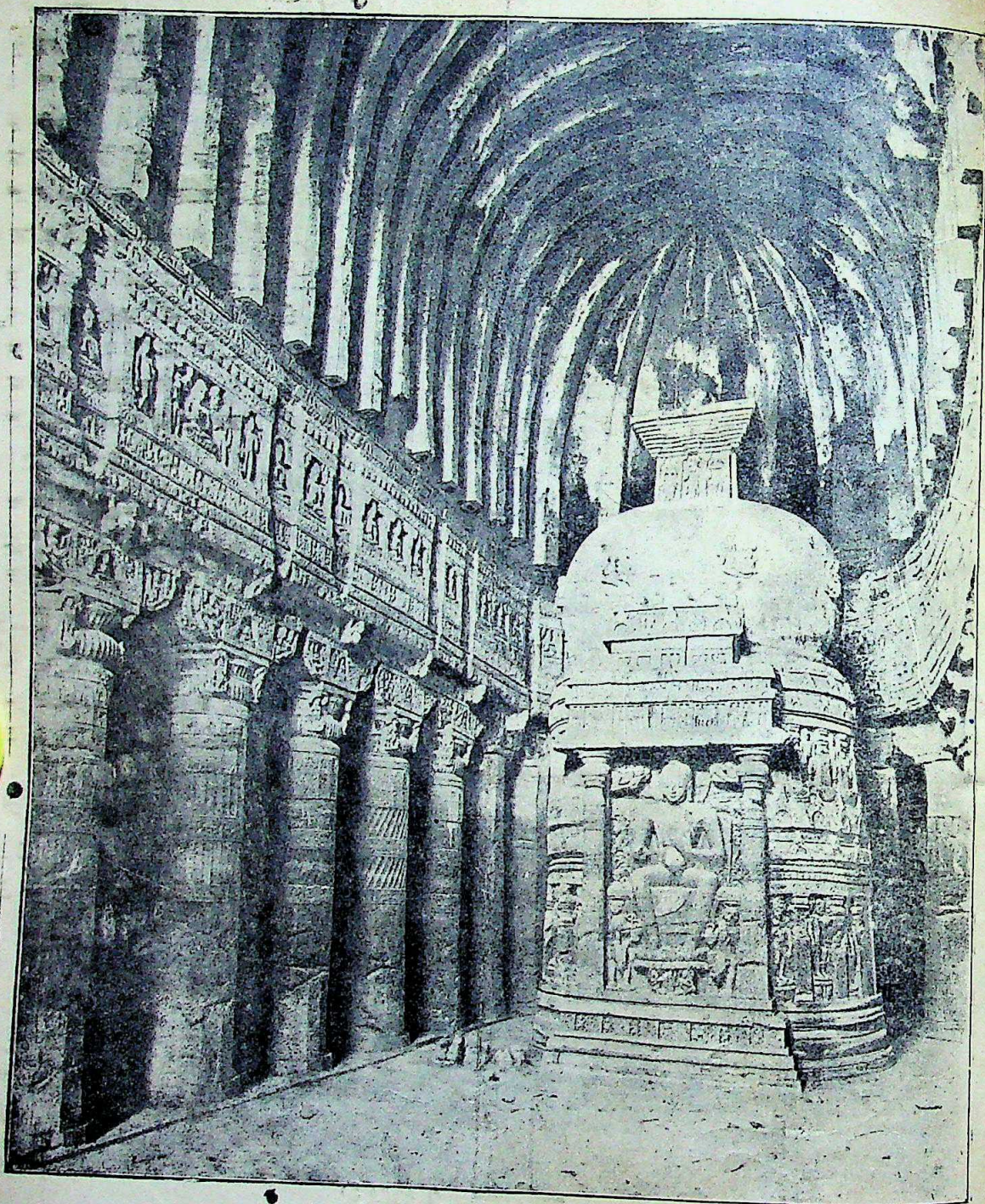
जगप्रसिद्ध अजन्ता के भीतर का एक दृश्य

हैदराबाद सरकार द्वारा स्कूलों, कालिजों तथा वाचनालयों के लिए स्वीकृत

दक्षिण भारती

सचित्र हिन्दी मासिक पत्रिका

अप्रैल १९५३ } ८६, अफ़ज़लगंज, हैदराबाद { वार्षिक ६) अंकका ॥) -भारती

विषय सूची

वर्ष ३] हैदराबाद, अप्रैल १९५२ [अंक ३

सम्पादकीय

हाली से कल्दार

व्यापारियों से—

व्यापारी बन्धुओ ! आप सरकार और जनता के मध्य की कड़ी का काम पूरा कर रहे हैं। आपकी स्थानीय सरकारने निजाम-काल के सिक्के का चलन बन्द कर दिया है। अब हाली रुपया कानूनन बन्द हो गया है। हैदराबाद भारत का ही अंग बन गया है, इस लिए जो भारत भर में रुपया पैसा चलता है वही यहां भी चलाया गया है। इस में देश की सुविधा, भलाई और व्यवस्था की सरलता निहित है। जनता और सरकार दोनों का भी इसी में लाभ है। ऐसी अवस्थामें आपका भी कर्तव्य हो जाता है कि आप इस व्यवस्था को लाने में सरकार और जनता को सहयोग दें। जहां सरकार और जनता की सुविधा है, वहां इससे आपकी कुछ कठिनाइयां भी दूर होने वाली हैं। आजतक आपको हैदराबाद के बाहर से माल लाना पड़ता था, कल्दार दामों में और यहां लाकर उसे बेचना पड़ता था हाली में। इसी तरह कुछ वस्तुएं हैदराबाद से बाहर भेजनी पड़ती थीं। उन्हें यहां आप हाली में खरीदते और कल्दार से बाहर बेचते। इस हाली-कल्दार की झंझटसे अब आपको मुक्ति मिल गयी है। न तो आपको हाली ११६॥≥) देकर १००) कल्दार खरीदने हैं न हाली ११६॥-) के लिए १००) कल्दार बेचने हैं। इस लेन-देन में जो दो आने की व्यावसायिक हानि आपको होती थी, अब न होगी। इसी तरह कल्दार-हाली के लिए बटावन खाते की Exchange Account की खतावनी भी आपको अब करनी नहीं है। बाहर के कल्दार दामों वाले माल को आप यहां हाली में बेचते। इससे आपके ग्राहकों को आपके प्रति यह धारणा उत्पन्न होती कि आप उनसे अधिक लाभ ले रहे हैं। कभी-कभी इस गलत फहमी को दूर करने में आपको काफी समय और शक्ति भी नष्ट करनी पड़ती थी। गाहकों को काफी समझाना पड़ता था। परन्तु अब यह आपको दिक्कत कल्दार चलन से समाप्त हो गयी है।

फिर भी इन सुविधाओं के साथ-साथ कुछ क्षणिक असुविधाएं भी आपको परेशान करने वाली हैं। इन असुविधाओं को आप सरलता पूर्वक दूर कर सकें इस उद्देश से हम कुछ सुझाव आपके सामने रखते हैं।

पहली बात कल्दार चलन के कारण यह पैदा होगी कि आपका जो हिसाब किताब व बहियां आप हाली के हिसाब से लिखते थे उन्हें अब कल्दार में लिखना होगा। कहने के लिए यह आसान बात है कि हाली की जगह कल्दार लिख लीजिए परन्तु वास्तव में यह बात व्यावहारिक

दृष्टि से कुछ कठिन है। आपकी बहियां बैंकों या सरकारी कार्यालयों की तरह up to date तयार तो नहीं रहतीं। शायद ५% व्यापारी भी ऐसे नहीं होंगे जिनकी बहियां रोजाना पूर्ण रूपसे लिखकर तैयार की जाती होंगी। ऐसी अवस्था में जब हाली की बात समाप्त हो रही है, आपके लिए यह समस्या बन गयी है। कारण आपका वर्ष शुरू होता है दीपावली से या जनवरी से और सरकार का वर्ष बदलता है अप्रैल की पहली से। यह बात हैदराबाद सरकार की ही नहीं सारे संसार के सरकारों की है, इनका आर्थिक वर्ष अप्रैल से ही बदलता है। अप्रैल में आपका वर्ष आधा समाप्त हो जाता है। तब आप आधे वर्ष की बहियां हाली में और आधे वर्ष की बहीयां कल्दार में लिखना नहीं चाहेंगे। परन्तु हम आपके सामने यह प्रस्ताव रखते हैं कि आपको जब यह काम कभी न कभी करना ही है तो फिर आज ही इसे क्यों पूरा नहीं कर लेते। यदि आपकी बहियां तैयार नहीं हैं तो आप युगादी से ही कल्दार का बटावन लगाकर अपनी बहियां लिख लीजिए। अगर तैयार हैं तो १ अप्रैल से पहली सिल्लक बाकी कल्दार में निकाल कर आगे कल्दार हिसाब से लिखना शुरू कर दीजिए। इस से यह लाभ होगा कि आपको सरकार के सामने जो इन्कम-टेक्स, सेल्सटेक्स आदि के लिए अपनी बहियां पेश करनी हैं उस में दिक्कत नहीं होगी। बैंकों से जो व्यवहार करना पड़ता है उसमें मतभेद न होगा। सरकारी दफ्तरों, अदालतों, कचहरियों, डाक, तार, रेल घरों के मामलों में परेशान न होना पड़ेगा। सरकार ने एक आदेश निकाला है कि १ अप्रैल से जो भी मामले, कन्ट्राक्ट, मुहायदे लेखी या जबानी होंगे वे सारे कल्दार में हुए हैं ऐसा माना जायगा। यह आदेश आपको हर पग सताने वाला है। ऐसी एक नहीं अनेक बातें हैं जो आपको हाली में हिसाब रखने पर दिक्कतों में डालने वाली हैं। इस लिए उचित तो यही होगा कि आप अब आज ही से अपनी बहियां कल्दार के हिसाब से लिखना शुरू कर दें।

दूसरी बात यह है कि जो भी कोटेशन, टेंडर या अन्दाज पत्र आपको किसी सरकारी या अर्ध सरकारी या गैर सरकारी संस्था के सामने रखना है, आप कल्दार में ही रखें। आप भूल से अगर हाली में रख देंगे तो बटावन की हानि को सहन करना पडेगा। इतना ही नहीं मान लीजिए आपने किसीसे लेन देन की बात की और वह हाली के अनुमान से और सामने वाले ने उसे कल्दार में समझ लिया तो उसके अड़जाने पर आपको उसकी कल्दार की बात माननी पडेगी। अत: इन सारी कठिनाइयों से बचने तथा साथ ही सरकार की व्यवस्था को सफल बनाने में आप सहयोगी सिद्ध हों। इस लिए हाली में नहीं बल्कि कल्दार में ही अपना व्यापार करें, कल्दार में ही नौकरों को बटावन काटकर वेतन दें, कल्दार में सेल्सटेक्स जमा करें, कल्दार में ही अपना हिसाब किताब रखें। इसी में आपकी सुविधा और आपका लाभ है।

सरकारी कर्मचारियों से—

आप तो संसार के प्रतिनिधि हैं और आजके प्रजातंत्रात्मक युग में जनता ही सरकार है। इस लिए सरकार की यानी जनता की सुविधा को देखना और उसके लिए अनुकूल हो ऐसा कार्य करना, आपका कर्तव्य है। सरकार ने अब हाली की जगह कल्दार को कानूनी मुद्रा घोषित किया है। घोषणा करना आसान है, पर उसपर अमल करना कठिन होता है। हाली सिक्के की आदी जनता को अब कल्दार का चलन अखरने वाला है। इस लिए कि वह कुछ महंगा है। इसके महंगे होने से जीवन का भी महंगा होना स्वाभाविक है। इस अपेक्षित महंगाई में आप जनता की हाली कल्दार की भूल पर कडाई से काम लेकर उन्हें परेशान न करें, बल्कि उनका मार्ग दर्शन करें। उनकी भूल उन्हें बताकर उसे ठीक करने का तरीका भी बताएं। इसी में आपके सरकार की भलाई निहित है। अन्यथा आपके कष्टों के बढ जाने तथा उनकी भावनाओं के दुखाने से आपका सरल काम कठिन बनेगा और जो हाली की जगह सरलता पूर्वक कल्दार का चलन आप जारी करना चाहते हैं, वह सरलता से न होगा। इससे आपको भी तकलीफ होगी। इस लिए आप खुद भी तकलीफ न उठाइये और अबोध जनता को भी आपकी कडाई से परेशान न कीजिए। उनको समझाइये, सहयोग दीजिए और आगे बढने में उनकी मदद कीजिए।

मिल मालिकों से—

आप आवश्यक वस्तुओं के निर्माता हैं, तथा साथ ही अपने मजदूरों के पोषक। आप निर्माण में कल्दार के हिसाब से ही वस्तुओं का मूल्य निर्धारित करें। ७ रुपये हाली की

वस्तुका दाम ७ रुपये कल्दार नहीं बल्कि ६ रुपये कल्दार रखें। साथ ही मजदूरों का वेतन हाली सिक्के में नहीं कल्दार सिक्के में दें। ऐसा करने से कल्दार के चलन को सरल बनाने में सहयोग मिलेगा।

मजदूरों से—

कुछ दिनों से आप समान कल्दार वेतन व मजदूरी की मांग कर रहे हैं। यह मांग अनुचित लगती है। वेतन वृद्धि की मांग उचित हो सकती है, परन्तु जो वेतन या मजदूरी हाली में मिलती थी, वही, उतनी ही कल्दार में मिले यह समझ में आने वाली बात नहीं है। आप अपने स्वार्थके लिए राज्य के सम्पूर्ण जनता के जीवन क्रम में हल चल न मचाएं। आपके समान कल्दार वेतन की मांग से आप जिन आवश्यक वस्तुओं का उत्पादन करते हैं उनका दाम बढ़ता है आपको तथा अन्य जनता को महंगा मिलता है। इस लिए आप महंगाई का कारण न बनें बल्कि दैनिक जीवन को संतुलित बनाने में सहयोग दें। व्यर्थ का हंगामा मचाकर लाठी चार्ज, कर्फ्यू, आदि की अराजकता फैलाने वाली बातों के लिए जिम्मेदार न बने। उत्पादन वृद्धि पर ही देश की समृद्धि निर्भर है। आप अपनी शक्ति उत्पादन बढाने में लगायें।

बैंकर्स—

हाली की जगह कल्दार का चलन लाने में बैंकर्स बहुत बड़ा पार्ट अदा कर सकते हैं। कारण पैसे का लेन देन सब इन्हीं के हाथ में है, इस लिए यदि बैंकर्स जनता को हाली नोट लेकर कल्दार देने में उदारता से काम लें तो बाजार में कल्दार रुपये की कमी प्रतीत न होगी और काला बाजारी और अबोध जनता की लूट न होगी। रुपये पैसे की लूट और उसमें होने वाली काला बाजारी को रोकने के लिए बैंकर्स हाली की जगह कल्दार देने में उदारता से काम लेंगे और इसका सुप्रबन्ध करेंगे तो न तो जनता की खुले आम लूट होगी, न उनका हाली की जगह कल्दार पाने में समय ही व्यर्थ जायगा।

विद्यार्थियों से—

आपसे अब हाली की जगह कल्दार में ही वर्ग शुल्क लिया जायगा। इस बात का आदेश सरकार ने विद्यालयों के अध्यापकों को दे दिया है। जो पुस्तकें बाहर से आती थीं उनका दाम आपको एक रुपया कल्दार के लिए सवा रुपया हाली देना पड़ता था, वह अब नहीं देना पड़ेगा। परन्तु इन सुविधाओं के मिल जाने से आप संतोष मान कर न बैठ जाएं बल्कि जो अपढ़ जनता हाली कल्दार की समस्या को समझने में असमर्थ है, उसे समझाने में मदद करें। निर्माण कार्य में विद्यार्थियों ने सदा जनता व सरकार की मदद की है। इस बार भी आपके सहयोग की अपेक्षा की जारही है। आप इसे अवश्य ही पूरा करेंगे।

गांव वालों से—

शहरों की जनता तो सरकार द्वारा किये गये परिवर्तन व बदल को तुरन्त समझ जाती है परन्तु इस परिवर्तन को गांव वालों तक पहुंचने में देर लगती है। अब हाली सिक्का बदल गया है। गांव वालों ने अपने पास जो हाली नोट, रुपये पैसे आदि जमा कर रखे हैं उसे वे तुरन्त कल्दार में बदल लें। ऐसा न करने पर संभव है उनका दबा हुआ या संग्रहित पैसा वैसे ही रह जाय और वह समय पर बाहर न निकलने से अवैध ठहराया जाय। इस से काफी नुकसान होने की संभावना है। इससे गांव वाले बचें।

जनता से—

कल्दार चलन से आपका दैनिक जीवन कुछ काल के लिए प्रभावित हो सकता है। जब तक इसमें स्थिरता न आयेगी यह बात आपको उलझनों में डालेगी ही। परन्तु इस का साहस के साथ आपको मुकाबला करना है। यह उलझनें अधिक दिन रहने वाली नहीं हैं। इन्हें दीर्घ या लघु बनाना आप ही के हाथ में है। आप अगर कल्दार के चलन को सरलता से अपना लें और हाली सिक्के का मोह छोड़ दें तो आपकी उलझनें खुद ही समाप्त हो जाती हैं।

सरकार से—

कल्दार के चलन को सरलता से लाने में सरकार प्रयत्नशील है, यह हर्ष की ही बात है। फिर भी कुछ सुझाव हम उसके सामने रखना चाहते हैं संभव है ये इस कार्य को और सरल बना दें।

शहरों में कल्दार का परिवर्तन बैंकों से करवायें। बैंकों से एक नहीं अनेक अस्थायी विभाग हाली लेकर कल्दार देने के लिए खोल दें। अप्रैल से कालेजों तथा स्कूलों के विद्यार्थी खाली रहते हैं। तीन महीने उन्हें छुट्टी रहती है। इन्हें इस कार्य के लिए काम पर ले लें। इस तरह गरमी

की छुट्टियों में अध्यापक लोग बेकार बैठकर समय व्यतीत करते हैं। इनके समय का तथा विद्यालयों की बन्द जगह का हाली कल्दार लेन देन की जगह बनाने में उपयोग लें। ऐसा करने से अध्यापकों तथा विद्यार्थियों को भी कुछ लाभ हो जायगा और सरकार तथा बैंक वालों को भी सस्ते और सुयोग्य कार्य कर्ता मिल जायेंगे।

जहांतक गांवों का सवाल है हर एक गांव में एक डाक घर बना हुआ है। उस में पोस्ट मास्टर को कुछ कल्दार रकम दी जय और वह हाली लेकर उसे गांववालों में वितरित कर दे। डाक घर सरकारी पेढी है। जिम्मेदार भी है। इस लिए बिना जोखिम उठाये इसका प्रबन्ध सरकार कर सकती है। लोगों को भी डाक घरों पर विश्वास होता है, इस लिए वे भी सहर्ष इससे लाभ उठाएंगे। इस से ग्रामिण भाइयों की समस्या दूर हो जाती है। हर आदमीको डाक घर जाना पड़ता है या डाकिया उनके घर रोजाना जाता है। इस लिए जनता से दैनिक सम्पर्क रखने वाले इस विभाग का हाली कल्दार परिवर्तन में सरकार सहयोग ले तो खुली लूट और हाली कल्दार में कालाबाजारी दूर हो सकती है। आशा है कि सरकार इसपर ध्यान देगी।

गांवों में कल्दार को फैलाने तथा हाली सिक्का लेकर कल्दार देने का एक और सरल उपाय है। सरकारी खजाने से कल्दार रुपया जिलाधीश के पास जाये। वहां से उसका विभाजन तहसीलों में हो और तहसीलें अपने तहत के गांव व मौजों के पटेल पटवारियों तथा देही अधिकारियों को कल्दार रुपये देकर उन्हें आदेश दे कि वे गांव से हाली जमा करें और उसकी जगह लोगों को कल्दार दे दें। देही अधिकारियों के पास मचकूरी (कर्मचारी) रहते ही हैं उनकी मदद से तथा मुनादी के जरिये वे इसका गांव भर में प्रचार भी कर सकते हैं। ऐसा करने से सरकार को खर्च भी कम होगा और जिम्मेदारी व जोखिम भी अधिक नहीं उठानी पड़ेगी। लोगों को भी सरलता से हाली की जगह कल्दार मिल जायगा। हाली सिक्के की जगह कल्दार का चलन सरलतापूर्वक शुरू होजायगा।

❀ ❀ ❀

❋ लहरों का गीत ❋

हवा के सहारे, लहर की डगर से
तरी प्राण की मौन गाती रहेगी
विकल सिन्धु में उठ रहीं नव तरंगे
सिसकतीं हृदय बीच मन की उमंगे
जलन की घड़ी में विकल सी जवानी
तरंगे सुनाती किसी की कहानी
छिपाये हृदय बीच छवी चांद की यह
लहर सिन्धु में गुनगुनाती रहेगी!

खड़े ताड़ के वृक्ष करते इशारे
'पथिक दूर मंज़िल' कहेंगे सितारे
लहर पर चली जा रही नाव गाती
न जाने तरी कब लगेगी किनारे
मधुर प्यार की बात मन में छिपाये
घटा प्यार की मौन छाती रहेगी!

संगोये हृदय में छबि प्यार की यह
चला था सुरभि मैं लुटाने चमन में
मगर प्यार की ये कथायें विकल हो
लगी छलछलाने हमारे नयन में
नयी जिन्दगी के नये पृष्ठ पर ही
छबि प्यार की मुसकराती रहेगी!

हुई सांझ, किरणें बिदा मांगती हैं
विहग गारहे मौन पांखें पसारे
बसेरा बुलाता उन्हें शान्ति देने
बहुत दूर मंजिल, चरण आज हारे
गगन में उगे चित्र मेरे प्रणय के
मधुर तारिका गीत गाती रहेगी!
हवा के सहारे, लहर की डगर से
तरी प्राण की मौन गाती रहेगी

(अप्रकाशित 'इन्द्रबेला' से)

कृष्ण नन्दन 'पीयूष'

नयाटोला मुजफ्फरपूर

छत्रपति शिवाजी

नारायण प्रसाद सिन्हा 'जहानाबादी', झरिया, (बिहार)

(१० अप्रैल '५३ को शिवाजी की जन्मतिथि है। अतः श्री नारायण प्रसाद सिन्हाजी का यह खण्डकाव्य 'दक्षिण भारती' में क्रमशः प्रकाशित कर रहे हैं। आशा है कि पाठक इससे लाभ उठाएंगे। – संपादक)

प्रथम सर्ग

आकाश सुमन हंसते थे,
जीवन के अन्तिम क्षण पर
निष्प्रभ-सा टहल रहा था,
वनमाली अवलोकन कर,

मालिन के नयनों से अह!
झरते ते आँसू के कण
कर पान जिन्हें तृण-तृण में,
मुस्काता था नव जीवन

कृश काय बनी फीकी सी,
रह गया न रक्त बदन में
उजली हो गयी अचानक
प्रियतम वियोग चिन्तन में

रंग गयी रक्त से साड़ी,
कातिल बन आईं घड़ियाँ
बिखरे मोती भूतल पर
अह! टूटीं कोमल लड़ियाँ

ऊषा ने देखा चुपके—
छिप प्राची के प्रांगण से
लाने को कहा उन्हें तब,
सत्वर निज जीवन धन से

फिर मुस्काती बल खाती,
आयी देने नव जीवन
पी अमर बना नश्वर जग
अमृत थी मादक चितवन

पीता था एक युवक भी
बैठा था सरिता तट पर,
लहरों संग खेल रहा था
हंसती थी लहरें सुन्दर

सहसा मानस की लहरें—
भी उद्वेलित हो आयीं
उस वीर युवक की आंखें
भी प्रज्ज्वलित हो आयीं

वह बोला करुणा स्वर से—
'बतला दोगी मुझसे माँ!
यह देश रहेगा कब तक
जकड़ा जंजीरों से माँ?

अह! कहां गया वह गौरव,
जिसके आगे था नत जग?
अह! कहां गया वह साहस,
लख छिपती कायरता भग?

अह! कहां गया वह बन्दर—
आजादी का दीवाना?
क्या याद नहीं है वह दिन,
भूला लक्ष्मी का लाना?

अह! कहाँ गया आजादी का-
पुतला मेरा राणा?
क्या भूल गया जीवन का—
अपना वह वीर तराना?

आक्रांत होगया बिल्कुल—
यह आर्य जाति का उपवन
तरु लतिकाएं मुर्झायीं,
वीरान हुआ सारा वन

अध खिले पुष्प औ' कलियों का-
अन्त हुआ, होता है
पद दलितों के क्रन्दन से
यह स्वर्ग आज रोता है

मिलता न आज पीने को
निर्मल गंगा का पानी
हो गया रक्त क्यों शीतल,
रुकती-सी आज जवानी?

क्या नहीं वीर भारत में?
सचमुच बिलकुल ही खाली?
क्या नहीं पधारेगी फिर,
प्राची में जग-मग लाली?

क्या लाल नहीं है बिल्कुल?
माता की गोदी सूनी?
माँ बिलख-बिलख रोती है,
विपदा बढ़ती नित दूनी

होते जाते हैं प्रति दिन,
परदेशी शक्ति-शाली
पीते हैं खून हमारा
निस-दिन भर भर कर प्याली

हम तड़प रहे हैं व्याकुल
खाने को अन्न न मिलता
हम तड़प रहे हैं व्याकुल,
पीने को नीर न मिलता

चूं बोल नहीं सकते हम,
उनके आगे खर से खर
चलते हैं संकेतों पर,
रोते हैं नित किस्मत पर

हा! आर्य जाति! हा भारत!
हा! विश्व वन्द्य वह गौरव!
सुर तरस रहे आने को,
नर-तन धर सुखकर अनुभव!

उस स्वर्ग लोक के वासी
सहते दुःख आज अनेकों
ये वीर प्रतापी; कायर-
क्यों समझ रहे अपने को ?

उस रोज पन्त * कहते थे-
"दरबार चलोगे सरजा !
अभिवादन कर नरपति का,
गौरव पाओगे सरजा !"

इस पर मैंने धिक्कारा यों—
"लाज नहीं आती है ?
करते हो नित्य गुलामी,
बुद्धि बनती जाती है

वह यवन राज में हिन्दू,
वह दुष्ट शत्रु है मेरा
है गौ माता का भक्षक,
परदेशी, नीच - लुटेरा

वह आर्य जाति-संहारक—
आक्रान्त किया भारत को
नरपति वह कैसा बोलो ?
क्या सिखलाते हो मुझको ?

करना प्रणाम बतलाते,
मर्यादा याद नहीं है ?
हम कौन वंश के वंशज
तुमको कुछ ध्यान नहीं है ?

मैं कभी नहीं जाऊंगा,
मैं कभी नहीं जाऊंगा
सपने में भूल कभी भी,
मैं शीश नहीं नाऊंगा"

सुन बातें मेरी उनका—
मुख सूख गया था कैसा ?
ज्यों मार गयी हो बिजली,
वे दीख रहे थे वैसा

आश्चर्य भरे नयनों से—
वे ताक रहे थे मुझको

औ' गरम-गरम आंखों से—
मैं देख रहा था उनको
वे प्राण शून्य थे बिल्कुल,
उत्साह नहीं था उनमें

वे कोस रहे थे मुझ को—
द्रोही कह अपने मन में
फिर गये हार कर जैसे,
कायर जाता है रण में

बापू को लेकर आये,
बस, केवल दो ही क्षण में
वे लगे शीघ्र ही करने-
कटु वाक्य-बाण की वर्षा

मैं सह न सका पल भर भी,
पर घायल होकर हर्षा
बापू ने शीघ्र कहा यों-
है यवन राज ऐ बेटा !

उनके ही संकेतों पर
चलना है हमको बेटा !

हम मरे हुये हैं बिल्कुल
अब जीवन शेष नहीं है
जीवन हैं वही हमारे,
कुछ भी अवशेष नहीं है

सो गई वीरता बेटा !
चिर निद्रा में भारत की
अह ! चली गई आज़ादी
उसके संग ही भारत की

कायरता और गुलामी
हा ! व्याप गयी नस-नस में
ना, दौड़ रही बन शोणित,
हां, शोणित वे नस-नस में

फिर बुद्धि होवे कैसी ?
तेरी, मेरी या उनकी
मैं बात बताऊं किसकी ?
या नहीं बताऊं किसकी ?"

तब मैंने कहा—"पिताजी !
यदि मैं दरबार न जाऊं;
तो कल क्या होगा कहिये
यदि शीश नहीं मैं नाऊं ?"

तो हंस कर कहा पिताने-
'चलने में हानि बता क्या ?
टक्कर खाने से ही तो
पानी निर्मल होता क्या ?

मैं गया बिजापुर प्रातः
पर भूल न शीश नवाया
तब हंस कर पन्त-पिताने
यवनाधिप को समझाया—

'हुज़ूर ! अभी है बालक,
नावाकिफ़ कानूनों से
गलती होना है ज़ायज,
बच्चों से मासूमों से"

हंस टाल दिया आदिलने;
पर घूरीं आंखों से
वह ताक रहा था मुझको,
क्षण क्षण हंस मुस्ताखों से

फिर संध्या आई, आये—
हम सब भी अपने घर पर
स्नान किया तब मैंने
कुछ शान्ति मिली पूजाकर"

यों ध्यान मग्न था सरजा,
अपने अतीत चिन्तन में
भाववीचियां उठती औ'—
गिरती थी मानस में;

सहसा पीछे से आयी,
एक मृदु पद ध्वनि पहिचानी
वह चौंका, चौंक गयी भी—
भावों की मधुर जवानी

देखा—आती थी उसके—
दिल की मतवाली रानी

---
* मुरार पन्त

यदि वह था प्रलयंकर, तो—
वह प्रलयंकरी भवानी
चलती थी हौले-हौले,
कोमल सुकुमारी बाला
पर ज्ञात हो रही थी ही—
गति शील क्रान्ति की ज्वाला

आंखों से निकल रही थी,
आजादी की चिनगारी
आभास हो रहा था यों—
होवेगी क्रान्ति भारी

आयी प्रियतम ढिग बोली—
'क्यों मौन पड़े उपवन में ?
हंसते हैं फूल अनोखे,
क्या सोच रहे तुम मनमें ?

चंचल लहरें हंसती हैं,
मधु घोल रही जीवन में
तुम उदासीन क्यों साजन ?
क्यों पड़े हुये चिन्तन में ?

हे आर्यराष्ट्र—निर्माता !
जब..."बढ़ न सकी वह आगे
तब रोक दिया सरजाने—
कहते—'हम महा अभागे !

हम हैं गुलाम, लजवाओ—
मत, हम न अभी अधिकारी
कैसे हो सकती बोलो—
वह पावन वस्तु हमारी ?

जब तक स्वाधीन न होंगे,
तब तक यों कभी न कहना
वे पद अति निर्मल उज्ज्वल,
कलुषित मत उनको करना"

"अह! कलुषित क्या कर डाला ?
क्या आर्य नहीं तुम स्वामी ?
वे पराधीन कब होते ?
करते वे नहीं गुलामी ?

जो पराधीन हैं कायर,
वे आर्य नहीं कहलाते
वे तो अनार्य हैं स्वामी !
जो कायरता अपनाते

मैं समझ रही थी 'हूं मैं
स्वाधीन पुरुष की नारी
वह आर्य-राष्ट्र—निर्माता—
पद का होगा अधिकारी

मैं भ्रम में पड़ी हुयी थी,
यह अभी समझ में आयी
सचमुच क्या जीवन-नभ में—
घन घोर-घटा-सी छाई ?

क्या देख रही हूं सपना ?"
वह उदासीन हो बोली
"हां, सपना ही हो सपना"
वह बिजली-सी फिर डोली

जड़वत् सुनते थे सरजा
मुंह ताक रहे थे उसका
चेतना आ गयी उनमें,
मुंह खुला अचानक उनका—

"मैं कहता था क्या तुमसे,
क्या समझ गयी तुम प्यारी !
मैं आर्य—राष्ट्र-सेवक हूं,
उसका सदैव अधिकारी

हैं आर्य—राष्ट्र—निर्माता—
तो श्रेष्ठ हमारे पूर्वज
आवश्यकता है इसकी
रक्षक हों उनके वंशज

आओ मिल कर हम दोनों
उद्धार करें भारत का
पद दलित हो गया है यह,
कल्याण करें भारत का

मैं बादल बन छा जाऊं,
तुम बिजली बनकर चमको
हो अस्त सूर्य दस्यु का,
वर ज्योति मिले भारत को

मैं वज्र बनूं गिर जाऊं,
हो चकनाचूर गुलामी
तुम चिनगारी बन छिटको,
हो भस्म विदेशी स्वामी"

वह लिपट गई चरणों से,
बोली—'क्षम दो हे प्रियतम !
वह सपना था, हां सपना,
लज्जित न करो प्रीतम !'

वह बोला उसे उठाते—
मैं लज्जित तुम्हें न करता
अब महाक्रान्ति फैलेगी—
मैं तो तुमसे सच कहता

मैं यही सोचता था कि
तुम आओ सहसा वन में
मैं चौंका, उच्छृंखलता-
आई मेरे चिन्तन में

मैं यही चाहता हूं चट-
तैयार आर्य-सेना कर
तोरण गढ जीतूं सत्वर,
मावितियों को अपना कर

हैं वीर लड़ाकू योद्धा
ये देंगे साथ बराबर
मैं युद्ध-कला सिखलाऊं
सैनिक होंगे ये सुन्दर

ये घेरे भी रहते हैं,
विश्वास मुझे है इन पर
जो बात कहूंगा इनसे,
वह असर करेगी सत्वर

विश्वास मुझे होता है—
ये बात नहीं टालेंगे
जो आज्ञा होगी मेरी,
उसको अवश्य मानेंगे

अब तुम से पूछ रहा हूं—
क्या राय दे रही हो तुम?
तुम महा शक्ति हो मेरी,
वरदान दे रही हो तुम?"

तुलसी * बोली-हे प्रियतम !
क्यों मुझे लजाते प्रतिपल?
अनुगामिनि तो होती है—
पति की ही नारी कोमल

वरदान माँगते हो क्या?
वरदान तुम्हीं हो मेरे
तन-प्राण तुम्हीं हो मेरे
सर्वस्व तुम्हीं हो मेरे

जो चाहो वह कर डालो
कब उसके परे चलूंगी?
स्वाधीन-देश हो सत्वर,
इसके हित मैं बलि दूँगी

सच कहती हूं—मैं प्रियतम !
मैं भी तैयार करूंगी,
वर बालाओं को सेना-

* तुलसी बाई का दूसरा नाम सोयराबाई भी था।

ले मैं भी युद्ध करूंगी
भारत माता को स्वामी !
मैं बन्धन मुक्त करूंगी
इन आततायियों को मैं-
चण्डी-सी ध्वंस करूंगी

कोमल नारी होती है-
कितनी कठोर मौके पर,
दिखला दूंगी मैं तुमको,
अति शीघ्र सुनो प्रलयंकर !"

शिवाजी देख रहे थे,
आश्चर्य भरे नयनों से
चिनगारी निकल रही थी,
उसके कोमल नयनों से

बोले फिर—"मेरी तुलसी !
सचमुच निकली तुम तुलसी !
यदि हो जायें भारत की—
सारी ललनाएं तुम-सी;

तो सच कहता हूं पलमें-
स्वाधीन देश हो जाये
परदेशी नीच लुटेरा,
क्षण-भर में ही भग जाये

बस, केवल साथ रहो तुम,
लड़ने की नहीं जरूरत
आजाद मुल्क कर लूंगा,
ओ मेरी भोली हिम्मत !

मैं अभी-अभी जाता हूं,
दादाजी * से मिल सत्वर
संग्राम छेड़ देता हूं-
मैं मावालियों को लेकर"

तुलसी बोली—"हे प्रियतम !
यदि दादा राय नहीं दें!
तो नहीं आप लड़ सकते?
कृपया मुझ को बतला दें"

शिवाजी—"बोले प्यारी !
यदि राय नहीं वे देंगे,
तो भी संग्राम छिड़ेगा;
पर, प्रथम मंत्रणा लेंगे"

यों बातें करते दोनों-
चल पड़े उसी क्षण वनसे
मानो जाते हों सुरपति-
औ' शचिनन्दन कानन से

* दादा जी कोण्डदेव।

गीत

रमाकान्त 'विक्षिप्त' शेरकोट (बिजनौर)

मद माते सपने चले गये !
गीत मिलन के गा न सका मैं, अरमान अनोखे छले गये,
मद माते सपने चले गये !

न खिली विहान सदृश मुस्कान;
घन घोर घिरे घन दुख देने,
गर्जन कर कर मानों मेरा;
आये हैं सारा सुख लेने,
रह गईं श्वाँसे सिहर सिहर, निर्मोही बन तुम चले गये !
मद माते सपने चले गये !

रे ! तुम अब भी हो बसे हुये;
मेरी जीवन की चाहों में,
करुणा पुकार हृदय में उठती;
तुम बसे हुए हो आहों में,
आखों में आँसू गये सूख, नित दुख के साधन मिले नये।
मद माते सपने चले गये !

तिमिराच्छन्न रजनी आई-
अमाने, रूप निराशा का ले,
कभी बन जाता हूं उन्मन मैं;
विश्वास मिलन आशा का ले,
अब प्रणय-प्रदीप जला न बुझा, रे उर के छाले छिले गये।
मद माते सपने चले गये !

मानवानों

मराठी-कविता

सूर्य होतां उग्र तेव्हां आग माथि साण्डित
गुदमरोनि दीर्घ होती, श्वास भूमि टाकित
मार्ग होता तापलेला- आग प्यालेला तवा
त्याच मार्गी तो भिखारी, श्रान्त होता तेधवां

करपलेलें चामडें नी, तापलेलीं तीं हडें
जीवधारी एक होतें, वाळलेलें तें मढें
मार्ग जाळीं पाय खालीं, सूर्य माथीं जाळतों
भूख लावा पोट जाळीं, मोह चित्तिं पोळतो

आग भोंति पेटलेली, दाट सारीं भीषण
थण्ड त्यानें तींत कैसे, राहणें एक क्षण ?
कळवळोनि दीन शब्दें भीक वेडा याचितो
नित्य चाळा, हा तयाचा, कोण त्याचे ऐकितो ?

वस्त्र अंगि फाटलेलें, एक होतें पटकुर्
लाज तीही त्यास होती, मुल्यधारी, दुर्मिळ
भव्य वाडे रम्य चाळीं, छान छोट्या बंगली
गोड स्वप्नं तीं परन्तु, त्यास सारीं वाटली

सूर्य अपनी उग्रता मानवों के मस्तिष्कों पर बिखेर रहा है। इस उग्रता से भूमि भी उच्छ-वास छोड़ रही है। मार्ग सूर्य की उष्णता से अग्नि पिए हुए तवे की भांति उष्ण है और उसी मार्ग पर वह भिकारी हांफ रहा है ।

जला हुआ चमड़ा और उसकी तपी हुई अस्थि-यां, जीवधारी प्राणी होते हुए भी वह सूखा हुआ शव है और सूर्य की उष्णता से तपी भूमि नीचे उसके पैर जला रही है और सूर्य अपने तप से मस्तक जला रहा है। भूख से उसका पेट और लालच से उसका हृदय जल रहा है।

भिखारी के चारों ओर गहन और भीषण आग जल रही है। इस आग में वह अपने आपको कैसे शीतल रख सकता है। ? हृदय को मसोस कर वह दीन शब्दों में भीक माँग रहा है यह उसका नित्य का कार्य होने के कारण उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दे रहा है।

शरीर पर फटा हुआ है केवल एक वस्त्र। वही उसे अमूल्य और न मिलने वाली वस्तु है आस पास बहुत से बंगले और घर हैं परन्तु यह सब उसे मीठे सपने की भाँति लग रहे हैं ।

धर्मपेत जयते

कन्नड़-कविता

धर्मवे जयवेंब दिव्य मंत्रा ।
मर्मवनरितु माडलिबेकु तंत्रा ॥
विषबिक्किदवगे षड्रसवनुणिसलु बेकु ।
द्वेष माडिदवन पोषिसलिबेकु ॥
पुसिमाडि केडिसुवन हाडि हरिसलि बेकु।
मोस माडुवन हेसरू मठानिगिडबेकु ॥ १ ॥
हिन्दे निन्दिपरन्नु वन्दिसुतलिरबेकु।
बंधन दोळिद्दवर बेरेय बेकु ॥
कोंड वैरिय मनगे नड़ेदु होगलिबेकु।
कुन्देणिसुववर गेळेतन माडबेकु ॥ २ ॥
कोंडीय्दु बडिववर कोंडाडुतिरबेकु ।
कडु सहिसदवर करेयबेकु ॥
पुंडरीकाक्ष श्री पुरंदरा विठलना ।
कोंडाडि ता धन्यू नागबेकु ॥ ३ ॥

श्री पुरंदरदासजी

'धर्म की ही जय होती है।' इस दिव्य मंत्रका मर्म जानकर कर्म करो।

जो अपने को विष देता है, उसे षडरस देना चाहिये। जो अपने से द्वेष करता है, उसका पोषण करना चाहिये। जो मिथ्या से अपने को नष्ट करता है उसको उसका पुरस्कार देना चाहिये। जो अपने को धोका देता है उसका नाम अपने संतान का रखना चाहिये। जो अपनी निन्दा करता है उसका वन्दन करना चाहिये। जो अपने को बन्धन में रखता है उससे मिलना चाहिये। अपने वैरीके घर को स्वयं आप चलते जाना चाहिये। जो अपना दोष ढूँढता है, उससे दोस्ती करनी चाहिये। जो अपने को मारपीट करता है उसका अभिनन्दन करना चाहिये। जो अपने को देखकर असहिष्णुता दिखाता है, उसीको आमंत्रित करना चाहिये। पुंडरीकाक्ष श्री पुरंदर विठ्ठल का नाम संकीर्तन कर धन्य होना चाहिये।

सर्वोदय अर्थशास्त्र की व्यावहारिकता

—यादव शर्मा, नागपुर

सर्वोदय अर्थशास्त्र की चर्चा इधर कुछ दिनों से बहुत अधिक हो रही है। अंग्रेजों के भारत में रहते हुए भी सर्वोदय अर्थशास्त्र की चर्चा चलती थी। गाँधीजी ने इसे और भी बढ़ाया था परन्तु स्वतन्त्रता के बाद और सर्वोदय कार्य की प्रगति के साथ-साथ यह बात भी बढ़ती जा रही है। जो अर्थशास्त्र विदेशी अर्थशास्त्रज्ञों के नियमों पर आधारित है और विदेशों में प्रचलित है, वही अंग्रेजों के काल से भारत में अपनाया गया है। उसके पहले आदिकाल से भारत में एक अलग अर्थशास्त्र प्रचलित था, इसका उदाहरण हमें कौटिल्य के अर्थशास्त्र से मिलता है, अंग्रेजी शासकों के लिए पुराने अर्थशास्त्र को लेकर आगे बढ़ना असंभव था, इसलिए उन्होंने अपने देश में जो अर्थशास्त्र चलता था, उसी को यहां पर भी चलाया। जब तक अंग्रेज भारत में रहे, यह उनकी दृष्टि से सफलता पूर्वक चला। लेकिन अब आजादी के बाद देश के विद्वानों का यह कहना है कि यह अर्थशास्त्र हमारे लिए उपयोगी नहीं है। सर्वोदय अर्थशास्त्र को अपनाना ही हमारे लिए लाभप्रद है। इधर वे भारतीय विद्वान जिन्होंने विदेशी अर्थशास्त्र का अध्ययन किया है, और इसके प्रकाश में भारतीय आर्थिक स्थिति को सुधारने का विचार करते हैं, उनका यह कहना है कि—"सर्वोदय अर्थशास्त्र पूर्णतया भारत के लिए लाभदायक नहीं है। इसके व्यवहार की एक सीमा है, उससे आगे वह सफल नहीं हो सकता। सर्वोदय अर्थशास्त्र की व्यावहारिता को एक ओर सर्वोदयवादी विद्वान स्वयं पूर्ण बताते हैं, तो दूसरी ओर पाश्चात्य प्रणाली के अर्थशास्त्रज्ञ इसे अपूर्ण बताते हैं। इन दोनों के विचार संघर्ष के कारण सरकार के लिए दुविधा उत्पन्न हो गई है कि आखिर वह कौन से अर्थशास्त्र को अपनाए जिस से कि भारत की भलाई हो।" इसलिए हम यहां दोनों अर्थशास्त्रों का विश्लेषण करते हुए बताएंगे कि दोनों अर्थशास्त्रों की व्यावहारिता कहां तक है और जो विदेशी अर्थशास्त्र आज प्रचलित है उसका लाभ हम कहां तक उठा सकते हैं।

जब से गांधीजी ने सर्वोदय के दृष्टिकोण को भारत वासियों के सम्मुख रखा, तब से स्पष्ट रूप में सर्वोदय अर्थशास्त्र के नियमों का प्रसार हुआ है। यह नियम नये हैं, ऐसा हम नहीं कहते, जो बातें प्राचीन काल से भारतीय जीवन को लेकर चली आ रही थी उन्हीं के आधार पर युग की आवश्यकताओं को देख कर इन नियमों को बापूजी ने सर्वोदय अर्थशास्त्र के रूप में प्रसारित किया है। पर ये केवल नियम बन कर ही प्रसारित हुए हैं, व्यवहार में बहुत कम आए हैं। इस के कारण बहुत कुछ हैं फिर भी यह बात स्पष्ट है। इसलिए जो नियम बने हैं, उनको लेकर हम यहाँ उनका विश्लेषण करते हैं।

सर्वोदय अर्थशास्त्र में सब की भलाई निहित है। इस अर्थशास्त्र को व्यावहारिक रूप देकर गांधीजी सब को भलाई चाहते थे—सब को सुखी बनाना उनका उद्देश था।

भारत को इतिहास काल में 'सोने की चिड़िया' कहा जाता था परन्तु यह तो इतिहास की ही बात है। आज हम देखते हैं कि यहां का जीवन-स्तर बहुत गिरा हुआ है। लोगों की आय डेढ़ आनेसे दो आने तक प्रतिदिन सीमित हो गई है। राष्ट्रीय अंकों की दृष्टि से यह औसत निकाला गया है। इस औसत को निकालने में कुछ असावधानी मान भी ली जाय तो भी यह औसत अधिक ऊपर नहीं बढ़ सकता। आज जो जीवन स्तर बना हुआ है वही इस के लिए उदाहरण है। इसी बात को ध्यान में रख कर बापूजी ने कहा था कि देश के लिए यह आवश्यक है कि इस जीवन स्तर को ऊपर उठाया जाय। लोगों को स्वावलंबी बनाया जाय। इसके लिए उन्होंने चरखा, ग्रामोद्योग आदि बातों को महत्व दिया है। उन्होंने सोचा कि चरखे से हर आदमी को काम मिल जाता है, कपड़ा मिल जाता है और रोजी मिल जाती है। ग्रामोद्योग से भारत का प्रत्येक गांव स्वावलंबी बन सकता है, उसे किसी की ओर सहायता के लिए ललचाई हुई आँखों से देखने की जरूरत नहीं। ऐसा होने से भारत के सात

...गांव सुखी हो सकते हैं, और जहां गांव की समस्या हल हो जाती है; वहां शहरों का शोषण भी दूर होता है। शहरों का शोषण दूर होने से पूंजीवाद स्वयं ही समाप्त हो जाता है और साथ ही केन्द्रीय करण की बात समाप्त हो जाती है। इस के समाप्त होने से बेकारी की समस्या भी स्वयं हल हो जाती है।

यह तो हुआी सर्वोदय अर्थशास्त्र की बात। अब हमें विदेशी अर्थशास्त्र के नियमों को देखना है, इस अर्थशास्त्र में व्यक्ति की अपेक्षा राष्ट्र को अधिक महत्व दिया जाता है। इसका कहना है कि जहां राष्ट्र समृद्ध है, वहाँ उसकी जनता खुद ही सुखी हो जाती है। इसलिए जनता के नहीं राष्ट्र के वृद्धि को महत्व दिया जाना चाहिए और इसी महत्व को ध्यान में रख केन्द्रीयकरण राष्ट्रीयकरण और औद्योगिकरण की बात इसमें कही गई है।

दोनों तरह के अर्थशास्त्रों की प्रणालियों को देखने के बाद अब इनका अर्थिक जीवन पर क्या असर होता है देखेंगे। जहां तक सर्वोदय अर्थशास्त्र का प्रश्न है यह अकेन्द्रीयकरण और अराष्ट्रीय करण चाहता है और साथ ही औद्योगिकरण के खिलाफ है। यह अपने अनुभाइयों से इस बात की अपेक्षा करता है कि वे स्वावलंम्बी बने। अपनी आवश्यकता की हर चीज आप पैदा करें, बनावें और जीवन निर्वाह करे। जीवित रहे और लोगों को जीने का मौका दे। उदाहरणार्थ हर एक आदमी की आवश्यकताएं हैं रोटी, कपड़ा और मकान। रोटी के लिए वह स्वयं ही अनाज उत्पन्न करे, कपड़े के लिए कपास की उपज करे और मकान के लिए जंगलों से लकड़ी प्राप्त करे। इतना ही नहीं बल्कि इससे भी आगे पैदा किये हुए अनाज को आप ही काटे, आपही साफ करें, आपही उसे पीसे और आपही उस की रोटी बनाकर खाये। इसी तरह कपास से सूत काते खुद ही सूत को बुन कर कपड़ा तैयार करे और कपड़े को हाथ ही से सीकर पहनले। मकान भी खुद ही बना ले और उसकी देख भाल व सफाई भी खुद ही करे। जहाँ तक व्यक्ति का प्रारंभिक जीवन है अपनी सारी आवश्यकताएं वह स्वयं ही पूरी कर लें। परन्तु युग कुछ आगे बढ गया है और उद्योग धन्धा करना चाहाता है, राजनीति में भी खेलना चाहता है। इसके लिए सर्वोदय अर्थशास्त्र कहता है कि ऐसा उद्योग हो जिसमें न कोअी मालिक हो न कोअी मजदूर और न किसी का कोअी शोषण करे। हर एक आदमी अपने कुटीर में बैठ कर शान्ति पूर्वक काम करे। जहां मिलजुलकर काम करने की जरूरत है वहां भाअी चारे को लेकर और उस काम को अपना काम समझकर करे। इसी लिए उद्योगों में घरेलू उद्योगों को प्रधानता, सर्वोदय अर्थशास्त्र में, दी गअी है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार और व्यवहार इसके दृष्टि में आवश्यक नहीं है और जहां है, वहां वह केवल बदल प्रणाली या Baster प्रणाली को अपनाना चाहता है वह भी शोषण रहित। एक देश दूसरे देश का शोषण न करे, दूसरे की आवश्यकता का अनुचित लाभ न उठाये। अपने यहाँ कोअी वस्तु अधिक पैदा होती है या उत्पन्न होती है और वह किसी के लिए उपयोगी और आवश्यक है तो वह उसे लागत पात्र पर ही दे दें। जहाँ तक सिद्धान्त की बात है यह बहुत अच्छा है इस में किसी को कुछ विरोध नहीं है, परन्तु आज इसका ठीक उल्टा है। इस पर गांधीवादी इनेगिने लोग भले ही अमल कर लें, जनता इस पर अमल करने तैयार नहीं है। कारण जीवन का जो संघर्ष है वह अपने लिए है। यह भावना आदि काल से चली आअी है। इतिहास काल से तो इसके प्रमाण मिलते ही हैं और आज भी कहीं चल रहा है संभवतः भविष्य में भी कुछ सदियोंतक यह बात रहेगी ही।

दूसरी व्यवस्था को लें तो यह ठीक सर्वोदय के विरुद्ध रास्तेपर चलने कहता है। सर्वोदय में घरेलू उद्योगों को महत्व दिया गया है तो इस में बडे प्रमाण-पर चलने वाली मशीनों की सराहना की गअी है। इस सराहना के लिए दलील यह कि बडे प्रमाण पर उद्योग धन्धे चलने से उत्पादन बढ़ता है और देश समृद्ध बनता है। देश की आवश्यकता की पूर्ति के साथ संसार के बाजार पर अधिकार करने और वहांसे धन बटोर कर लाने में इससे सहयोग मिलता है। जहां देश का धन बढ़ता है, जनता की स्थिति अच्छी होती है, उन्हें अवकाश मिलता है, वे उत्थान के कार्य में निश्चिन्त होकर जुट सकते हैं। रोजी, रोटी, कपड़ा, दवा की उन्हें चिंता नहीं होती। देश की सरकार इसका सब प्रबन्ध कर देती है। हाथ से सूत कातने वाला आदमी कितना भी तेज काते रोजाना आठ गुंडीसे अधिक नहीं कात सकता। मशीन

के द्वारा यह आठ गुंडी सूत एक पल में निकल आता है तब एक पलभर के काम के लिए एक दिन क्यों खराब किया जाय। एक पल मशीन पर काम करने के बाद सारा बचा समय आनन्द विलास, निर्माण, अध्ययन आदि में खर्च किया जाय! यह है दलील इस अर्थ शास्त्र की।

जहांतक भारतका सवाल है यह देश पहले भलेही धनी रहा हो पर आज तो दरिद्र है। इधर संसार दूसरे ही राह आगे बढ़ रहा है, हर देश इसी चिंता में लगा है कि कैसे हम अपना उत्पादन बढ़ायें और उसे सस्तेसे सस्ता बेचकर उसकी खपत संसार के बाजार में कर वहां का सारा धन बटोर कर ले आयें, अपने यहां। सारी दुनिया का यही हाल है तो फिर अकेले भारत इससे कैसे अलग रह सकता है। यदि इसका कहना यह है कि कोई कुछ भी करें हमें उससे क्या? हम तो अपने ही राह चलेंगे तो यही होगा कि विदेशी यहां के बाजार पर छा जाएंगे। स्वदेशी आंदोलन चलाने या सरकार का प्रतिबन्ध विदेशी मालपर लगाने की बात कही जाय तो दरिद्र जनता न तो स्वदेशी पर महंगे माल को खरीदने की ताब ला सकती है न अन्तर्राष्ट्रीय उलझनों में उलझती सरकार विदेशी मालपर भारी रोक या आयात कर लगाने की सोच सकती है। फिर यह भी एक बात है कि जो वस्तुएं हाथ से बनती हैं उनमें समानता नहीं होतीं। यंत्रों की चीजें एक ही सांचे की रहती हैं इस लिए समान होती हैं। एक के खराब होने पर तुरन्त दूसरे को उसकी जगह बिठाकर काम चलाया जा सकता है। यहां आकर मशीनी समानता का बन्धन सभी को मानना पड़ता है-उसकी उपयोगिता को स्वीकार करना पड़ता है। आजका युग केवल व्यक्तिगत युग नहीं है। हर एक व्यक्ति के लिए लाठी या कुल्हाडी लेकर अपनी रक्षा आपकर लेना अब संभव नहीं है। आज जहां हिरोशिमा जैसा नगर को एक ही परमाणु बम में समाप्त किया जासकता है व्यक्ति के शारीरिक बल पर गर्व नहीं किया जा सकता। न तो यह संभव भी है कि व्यक्ति अकेला ही अपनी रक्षा कर सकता है। एक गालपर चपत लगने पर अगर दूसरा गाल सामने किया जाय तो उसपर भी चपत लगाकर लूटने के लिऐ लुटेरे आज तयार हैं, तो फिर इस बात से क्या लाभ होनेवाला है? इस लिए भला तो यही है कि हम पहले इतनी शक्ति अपने में लालें कि चपत का बदला घूंसे से दे सकें। तब अहिंसात्मक प्रणाली का लाभ हो सकता है और वास्तव में वहीं पर अहिंसा की सच्ची शक्ति विराजमान है। इसका अर्थ यह नहीं कि संसार आज विदेशी अर्थ प्रणाली को अपना कर आगे बढ़ रहा है। इस लिए उसी पर हम भी बढे बल्कि कहने का अर्थ यह कि दोनों अर्थ प्रणालियों को लेकर उनके सामंजस्य से आगे बढ़ें। जो बात सर्वोदय अर्थशास्त्र में अच्छी है वह उसमें से अपना लें और औद्योगिकरण का लाभ जहां होता है वहां से उसे प्राप्त करें। सर्वोदय अर्थशास्त्र की घरेलू उद्योग की बात सब को रोजी देने वाली है, इस लिए जहाँ आज देश में बेकारी बढ़ती जा रही है वहां घरेलू उद्योगों में बेकार जाने वाली शक्ति को लगाना चाहिए। मनुष्य का श्रम नाशवान है। जो श्रम शक्ति भोजन या खाने पीने से बढ़ती है वह कुछ समय के बाद समाप्त होती है फिर चाहे हम उसका उपयोग करें या न करें। इस लिए देश में जो बेकारी बढ रही है उसका हल घरेलू उद्योग धन्धे में निहित है। जो शोषण विहीन अर्थ व्यवस्था की बात सर्वोदय अर्थ शास्त्र करता है, वह अगर बडे उद्योगों में आजाय तो वहां शोषण मिट सकता है और उत्पादन का लाभ किसी एक के जेब में न जाकर सबको हो सकता है। इस लिए इस सद्भावना को बढावा दिया जाय। जहां सद्भावना स्वार्थ के सामने लोप होती दीखती है, वहां सरकार को बल और विधान से काम लेना चहिए और व्यक्तिगत स्वार्थ पर चलने वाले उद्योग को राष्ट्र की सम्पति बनाकर उसका संचालन करना चाहिए। अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में भी जहांतक हो सके हमें चाहिए कि हम अपने सस्ते माल को उचित रीतिसे दूसरे देशों में फैलाएं। आज हमारे सामने कपड़ा, जूट, इस्पात, कोयला, मेगनीज आदि उद्योग ऐसे हैं जो अन्य देशों की आवश्यकता पूरी करते हैं। इन उद्योगों को और भी बढाकर इनका उत्पादन बाहर भेजना चाहिए पर इससे केवल बाहर का धन देशों में आये यही बात नहीं सोचनी है बल्कि इसकी जगह जो हमारी जरूरत की चीजें जैसे मशीनरी, अनाज, कल पुर्जे, पेट्रोलियम, औषधियां आदि हैं वह हमें मिलती रहें, इसका प्रबन्ध करना है। इससे हमारी जरूरत भी पूरी होगी और हमारे उत्पादन का लाभ दूसरों को भी हो जायगा।

(शेष पृष्ठ ३७ पर)

इण्डोनेशिया में भारतीय संस्कृति

—नारायण प्रसाद सिन्हा " जहाना बादी, " झरिया (बिहार)

प्राचीन भारत आज की अपेक्षा राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से अधिक महत्व रखता था। राजदूत और व्यापारियों के साथ-साथ भारतीय धर्म और संस्कृति के हजारों प्रचारक भी तत्कालीन ज्ञात जगत् में जाते रहे। जिन देशों की राजनीतिक प्रभुता भारतीय व्यापारियों के हाथ में थी, वहाँ तो ये प्रचारक गये ही, किन्तु जिन देशों से व्यापार भर होता था, वहाँ भी ये अच्छी संख्या में पहुँचते थे। आज भी यूरोप के तमाम उद्योग प्रधान देशों के मिशनरी एशिया और अफ्रीका वासियों को महात्मा ईसाका 'सच्चा मार्ग' दिखाने में तत्पर हैं। जनवादी सरकार के पूर्वचीन और फिलीपाइंस में अमेरिकन मिशनरी वहाँ के वाशिन्दों को ' सभ्यता ' का पाठ पढाते रहे। यद्यपि भारतीय मिशनरियों का भी सर्वांश में वही उद्देश्य नहीं था जो यूरोपियन मिशनरियों का एशिया और अफ्रीका में रहा है, किन्तु इस बात से इन्कार भी नहीं किया जा सकता कि अपने धर्म-प्रचारकों के कारण भारतीय व्यापारियों को अन्य देशों में अपने व्यापार के फैलाव में काफी सुविधा मिलती थी। इसलिये भारतीय व्यापारी इन्हें जी खोलकर सहायता भी करते थे।

प्रसिद्ध विद्वान सिल्वाँलेवी ने लिखा था- " भारत ने साइबेरिया के हिम-प्रदेश से लेकर जावा और बोर्नियों के द्वीपों तक तथा ओशेनिया से लेकर सीकोत्रा तक अपने सिद्धान्त, अपनी कथाओं तथा अपनी सभ्यता का प्रचार किया। सदियों की दीर्घ परम्परा के फल स्वरूप उसने मानव समाज के चतुर्थांश पर अपनी संस्कृति की अमिट छाप अंकित कर दी।" भारत और इण्डोनेशिया का संबन्ध बहुत पुराने समय से चला आ रहा है। पिछली सदियों में इण्डोनेशिया के मसाले ने ही पोर्तुगीजों, अंग्रेजों और डचों को इस द्वीप समूह की ओर आकर्षित किया था। ई. सन् के बहुत पहले भी मसाले, खनिज पदार्थ, कीमती पत्थर और अन्य मूल्यवान् धातुओं ने भारतीय व्यापारियों को इण्डोनेशिया पहुँचाया।

भारतीय व्यापारी इण्डोनेशिया से जहाज द्वारा दक्षिण भारत के बन्दर गाहों पर माल लाते थे और फिर यहाँ से यह माल शेम साम्राज्य के विभिन्न बाजारों में जाता था। वाल्मीकि रामायण के अनुसार सीता की खोज के लिये सुग्रीव ने अपने चरों को जावा (यव द्वीप) भी भेजा था। अलेक्जेंड्रिया का प्रसिद्ध ज्योतिषी टालेमी ने अपने भूगोल में जो दूसरी सदी के मध्य में लिखा गया था, जव दि उ (यव द्वीप) का उल्लेख किया है। इससे स्पष्ट है कि जावा का संस्कृत नाम विदेशों में भी प्रचलित था। इस ' जव दि उ ' का अनुवाद उसने खुद ' जौ का टापू ' किया है। चीनी इतिहास के अनुसार १३२ ई० में ये-तियाओ (यव द्वीप) का राज तियाओ-पियेन (देव वर्मन १) ने अपना राजदूत चीन भेजा था।

भारत और इण्डोनेशिया के सम्बन्ध के प्रारंभिक दिनों में सम्भवत: वहाँ कोई भारतीय उपनिवेश नहीं था। पर ज्यों-ज्यों व्यापार बढ़ता गया, त्यों-त्यों मुख्य भूमि से माल के साथ-साथ मनुष्यों का भी यातायात बढता गया! धीरे-धीरे अनेक भारतीय व्यापारिक नगर बस गये और ये ही नगर कालान्तर में राज्य में परिणत हो गये। पर यह उपनिवेशिकरण विजयी और विजित के सम्बन्ध का द्योतक नहीं था, बल्कि भारतीयों ने वहाँ बस कर, वहाँ के निवासियों में घुल मिल कर, उनके जीवन-स्तर को ऊंचा उठाया और उन्हें उन्नत भारतीय सभ्यता, कला एवं साहित्य का ज्ञान कराया। यही कारण है कि आज हम इण्डोनेशिया में भारतीय स्मारक चिन्हों के अलावा विशुद्ध भारतीयों की कोई बस्ती नहीं पाते हैं। यह भारतीय सभ्यता की उदार भावना का ही द्योतक है।

प्रारंभिक शिलालेख, जो विशेष रूपसे बोर्नियों में मिले हैं, बिना तिथि के हैं। ये शिला-लेख दक्षिण भारत और कम्बोडिया तथा कम्बोज में मिले शिलालेखों से मिलते हैं इनकी भाषा संस्कृत है और लिपि प्रारंभिक पल्लव लिपि है

समान है। एक शिलालेख में अश्व वर्मन राजाका जिक्र है। उसके पुत्रों में प्रमुख मूल वर्मन ने बहुस्वर्णकयज्ञ किया था जिसका यूप ब्राह्मणों ने गाड़ा था। दूसरे शिलालेखों में, जो पश्चिमी जावा के हैं, पूर्ण वर्मन का जिक्र आता है। पूर्ण वर्मन ने चन्द्रभागा और गोमती नामक दो नहरें बनवाई थीं। ये दोनों नदियाँ भारत की हैं।

४१२ या ४१३ ई. में प्रसिद्ध चीनी यात्री फाहिएन् भारत से अनेक संस्कृत ग्रंथों के साथ लंका होते हुये जावा पहुंचा था। उसने लिखा है, "यहाँ ब्राह्मणों की ही प्रमुखता है। बौद्ध धर्म की स्थिति उल्लेखनीय नहीं है।" चीन से फाहिएन् भूमि के मार्ग से आया था। उसे रास्ते में जितने देश मिले, सब पूर्णरूपेण बौद्ध धर्मावलंबी थे। कुछ दिनों तक जावा में रह कर वह एक भारतीय जहाज से कैन्तन के लिये रवाना हो गया। उसके वर्णनानुसार इस जहाज पर २०० हिन्दू व्यापारी थे। इससे स्पष्ट है कि आरम्भ में इण्डोनेशिया में बौद्ध धर्म का विशेष प्रभाव नहीं था।

इण्डोनेशिया में संगठित रूप से बौद्ध का प्रचार काश्मीर के गुणवर्मन नामक राजाने किया। गद्दी त्याग कर यह भिक्षु बन गया और अनेक प्रदेशों का भ्रमण करते हुये लंका पहुंचा, जहाँ से ४२३ में जावा गया। वहाँ सब से पहले उसने राजमाता को बौद्ध धर्म में दीक्षित किया। पीछे राजा भी बौद्ध हो गया। जावा से गुण वर्मन नन्दी नामक एक हिन्दू व्यापारी के जहाज में बैठकर चीन चला गया। सुङ् वंशक के इतिहास के अनुसार ४३५ ई. में जावा के श्री पद-धरा वर्मन ने चीन के दरबार में अपना एक राजदूत भेजा था। इसी तरह ७ वीं सदी में भी मध्य जावा के लिये कलिंग राज की ओर से एक राजदूत चीन जाता है। ६७४ ई. में कलिंग की गद्दी पर सीमा नाम की एक स्त्री बैठती है। उस की शासन व्यवस्था बहुत ही अच्छी थी। भारत का कलिंग (वर्तमान उड़ीसा) के नामपर ही जावा के भारतीयों ने शायद यह राज्य कायम किया था। मध्य-जावा के एक शिलालेख के अनुसार सन्नह और संजय नाम के दो राजाओं (पितापुत्र) ने इस पृथ्वी पर मनु के समान न्याय से राज्य किया था।

कोई हजार-बारह सौ वर्षोंतक इण्डोनेशिया में भारतीय सभ्यता, और कला की बडी उन्नति रही, वैष्णव, शैव और बौद्ध धर्म साथ-साथ अपने क्षेत्रों में उन्नति करते रहे। शैव और वैष्णव धर्मों में काफी परिवर्तन होते रहे। इन दोनों सम्प्रदायों पर स्थानीय प्रभाव बहुत पड़ा। बौद्ध धर्म में भी परिवर्तन होते रहे। पहले वहाँ हीन यान सम्प्रदाय की प्रबलता रही, बाद में महायान की।

इण्डोनेशिया में भारतीय स्थापत्य कला के ध्वंसावशेषों में दिएङ के आठ मन्दिर बहुत ही महत्व पूर्ण हैं। ये ७ वीं सदी के बने हुये हैं और शिव को अर्पित किये गये हैं। ७७२ ई. में स्थापित माण्डीकलसन का बौद्ध मन्दिर भी अच्छा नमूना है। यह तारा देवी को अर्पण किया गया है। इसकी सजावट दिएङ के शैव मन्दिरों से अधिक उन्नत है। ७ वीं सदी में चण्डी से बू का मन्दिर बना। यह बहुत ही विशाल है और २५० छोटे-छोटे मन्दिरों से घिरा है। आज इस विशाल मन्दिर का भग्नावशेष ही है, फिर भी उसे देख कर उसकी प्राचीन गरिमा का अन्दाजा लगाया जा सकता है।

बोरोबुदुर का जगत-प्रसिद्ध स्मारक भारतीय कला का सर्वोत्तम निदर्शन है। यह आठवीं सदी के अन्तिम हिस्से में बना था। यह कोई बौद्ध-विहार था या स्तूप, इसका निर्णय करना कठिन है। इसे हम विहार स्तूप और चैत्य का सम्मिश्रण कहें तो कोई हर्ज नहीं। केदु के मैदान में एक वृत्ताकार पहाड़ समतल बनाया गया है। पिरामिड के आकार का यह पहाड़ निले मकान के रूप में बदल गया है। इसकी दीवारों पर कर्म विभंग, ललित विस्तर, दिव्यावदान, जातक एवं गंडव्यूह आदि ग्रन्थों से बुद्ध का जीवन चित्रित किया गया है। ध्यानी बुद्ध की उनेक मूर्तियाँ हैं जो गुप्त कालीन भारतीय मूर्तियों से मिलती हैं। इसमें चार गैलरियाँ हैं जिनमें कोई १३०० मूर्तियाँ हैं। लोगों ने हिसाब लगाया है कि यदि इन मूर्तियों को एक पंक्ति में रखा जाय तो इनकी लंबाई ३ मील होगी।

इण्डोनेशिया की भाषा, साहित्य, सभ्यता, ललित कला आदि कोई ऐसा अंग नहीं जिस पर भारतीयों का प्रभाव न लक्षित हो। धर्मान्ध हमलावारों ने भारतीय संस्कृति और धर्म के साथ-साथ कला के अमूल्य निदर्शनों का भी नाश कर दिया। फर्ग्युसन साहब के कथनानुसार, "जावा ही एक ऐसा देश है, जहाँ भारतीय पूरी तरह छा गये और उन्होंने वहाँ अपनी सभ्यता एवं कला की पूर्ण प्रतिष्ठा की। भारतीयों ने स्थापत्य और चित्रांकन द्वारा अपने इस उपनिवेश को कला और सभ्यता के शाश्वत चित्रों से गौरवान्वित किया।"

———

सांस्कृतिक आदान-प्रदान

— भगवानदास केला, प्रयाग

हर संस्कृति की कुछ विशेष देन होती है, वह मानव के किसी न किसी पक्ष को विशेष रूप से विकसित करती है और इस लिए उसका अनुभव सर्वांगीण विकास के लिए उपयोगी हो सकता है।

— डा. इन्द्रसेन

समाज में आदान-प्रदान का क्रम चलता रहता है—समाज में रहने वाले आदमियों में एक दूसरे से लेने देने की क्रिया चलती ही रहती है। कोई व्यक्ति यह गर्व नहीं कर सकता कि मुझ पर किसी का कुछ ऋण या उपकार नहीं है। बात यह है कि हम कुछ सेवा या सहायता दूसरों की करते हैं तो जाने-अनजाने हम कुछ-न-कुछ दूसरों से भी लाभ उठाते रहते हैं। संसार में छोटे-बडे अनेक देश हैं, इनमें से कितने ही ऐसे हैं, जिन्होंने अथवा जिनके कुछ हिस्सों ने किसी खास सांस्कृतिक विषय में बहुत प्रगति की, और उससे दूसरे देशों की जनता को अपने विकास में बहुत सहायता मिली। सब देशों के सांस्कृतिक आदान-प्रदानका विषय इतना विशाल है कि उसके यथेष्ट परिचय के लिये स्वतंत्र पुस्तक चाहिए; और एक ही पुस्तक नहीं, कई पुस्तकों की आवश्यकता है। यहां तो इस विषय का विचार बहुत संक्षेप में ही किया जा सकता है।

समान विचार-धाराएं—यदि एक देश में कोई ऐसी विचार धारा प्रचलित है, जो किसी दूसरे देश में भी उस समय है, किसी अथवा कुछ समय पहले रही है तो इससे हमें यह नतीजा नहीं निकालना चाहिए कि उस देश ने वह विचार-धारा अवश्य ही दूसरे से ग्रहण की है। प्राचीन काल में यातायात, आमदरफ्त या खबरों के आने जाने के साधन बहुत कम थे। एक देश में एक जगह क्या हो, रहा है इसका पता उस देश के ही दूसरे भागों के आदमियों को जल्दी नहीं लगता था, फिर दूसरे देशों की तो बात ही क्या! यह होते हुए भी अनेक बार बहुत दूर-दूर के आदमियों में लगभग एक ही प्रकार की विचार धारा चलती रही है।

उदाहरण के तौर पर अब से ढाई हजार वर्ष पहले की बात है भारत में महावीर और बुद्ध ने अहिंसा-धर्म की स्थापना की करीब करीब उसी समय चीन में लाओत्से और कनफ्यूशियस ने कुछ इसी प्रकार की विचार धारा का प्रचार किया। स्मरण रहे कि यद्यपि चीन और भारत एक दूसरे से मिले हुए हैं, पर दोनों में उस समय आपसी सम्पर्क बहुत ही कम था, नहीं के बराबर कहना चाहिए। एक देश में भी एक सिरे से दूसरे सिरे तक समाचार जाने में बहुत समय लग जाता था। इसी जमाने में ईरान में जरथुस्त्र के और मिस्र मूसा के नेतृत्व में और पीछे जाकर इजरायल में ईरान के द्वारा बहुत कुछ इसी प्रकार की विचार-धाराओं का प्रचार हुआ। इस प्रकार चार सौ पांच सौ वर्ष के भीतर इन सभी देशों में भिन्न-भिन्न नामों से जिन धर्मों की संस्थापना हुई, उनमें गहराई से देखने पर एक ही प्रकार की भावनाएं मिलती हैं।

दूर-दूर के विविध देशों में एक ही समय में या एक-दो सदी— जो मनुष्य जाति की दृष्टि से कुछ अधिक समय नहीं होता—आगे पीछे एक ही प्रकार की विचार-धारा कैसे चल जाती है? उसे प्रेरणा कहां से मिलती है? किसी बात की प्रेरणा मनुष्य के मन में होती है, लेकिन मन केवल व्यक्तिगत या निजी नहीं होता, बल्कि सारे समाज का एक सामूहिक मन होता है। बहुधा ऐसा होता है कि एक समय समाज के मन में एक ही प्रकार की प्रेरणा हो जाती है; प्रेरणा देने वाले को परमात्मा कहें या विवेक-शक्ति या और कुछ—यह यहां विचारणीय नहीं है। कहना यही है कि प्राचीन काल में दूर-दूर के कई देशों में एक ही प्रकार का सांस्कृतिक प्रवाह देख कर यह निश्चय-पूर्वक नहीं कहा जा सकता कि उनमें से कौन किसका कितना ऋणी है, और ऋणी है भी या नहीं।

वर्तमान दशा: आपसी संपर्क की अधिकता—यह बात प्राचीन काल को लक्ष्य में रख कर कही गई है, जब कि दूर-दूर के स्थानों के निवासियों में आपसी संपर्क नहीं था। अथवा बहुत कम था। तथापि इस समय के लिए भी यह सत्य है। हां, आजकल स्थिति बदल गई है। भौतिक विज्ञान ने यातायात या आमदरफ्त और लोक-संपर्क बहुत बढ़ा दिया है। भारत और अमरीका के आदमी रेडियो द्वारा अपने विचार तत्काल एक दूसरे देश में भेज सकते हैं। दूसरे देशों के समाचार-पत्र पढ़ना और खुद जाकर दूसरे देशों की परिस्थिति का प्रत्यक्ष परिचय प्राप्त करना अब मामूली बात है। इस प्रकार संस्कृति की जो लहर एक देश में उठती है, उसके दूर-दूर तक जाने और वहां के लोगों को प्रभावित करने में उपस्थित होने वाली बाधाओं का प्रायः अन्त हो गया है। इस प्रकार सांस्कृतिक आदान-प्रदान अब पहले की अपेक्षा अधिकाधिक सुगम और व्यापक होता जाता है।

सांस्कृतिक आदान-प्रदान का इतिहास सुलभ नहीं—प्राचीन काल में समय-समय पर बहुत से देशों ने अथवा उनके एक-एक हिस्से ने महत्वपूर्ण सांस्कृतिक विकास किया है। पर उस सब का ब्यौरा हमारे सामने नहीं है। हमारे पास ऐसे साधन भी नहीं हैं, जिन से उसका यथेष्ट अनुमान किया जा सके। मनुष्य जाति ने संभवतः लाखों वर्ष का समय ऐसा बिताया है, जब वह लेखन-कला से अनभिज्ञ थी। पीछे उसने जिन ईंटों या पत्थरों आदि पर कुछ लिखा भी, तो प्रथम तो वे सब चीजें काल के विनाशकारी प्रवाह में नष्ट हो गयीं; फिर यदि कुछ हजार वर्षों के पुराने लेख मिलते हैं तो उनमें से बहुत से अस्पष्ट हैं, अथवा उनकी लिपि का ठीक ठीक अर्थ निकालना सहज काम नहीं। अस्तु, इतिहास में संसार के विविध देशों के सांस्कृतिक आदान-प्रदान का पूरा लेखा-जोखा रखने की क्षमता नहीं है। मानव संस्कृति की बहुत सी कथा प्रागैतिहासिक (इतिहास से पहले की) मानी जाती है। फिर, इतिहास में तो उन सब बातों का भी यथेष्ट ब्यौरा नहीं है, जो इतिहासकाल के भीतर हुई हैं। अनेक व्यक्ति और संस्थाएं महान विचारक होकर भी चुपचाप इस संसार से चली गईं, उन्होंने अपनी विचार-संपत्ति की यादगार नहीं छोड़ी, अथवा उनकी यादगार अब तक सुरक्षित न रह सकी।

एक और कठिनाई—इसके अलावा एक बात और भी है, जिसके कारण, मानव संस्कृति में विविध देशों की देन के विषय के साथ ठीक-ठीक न्याय नहीं हो सकता। हमारा विविध देशों के तुलनात्मक सांस्कृतिक इतिहास का ज्ञान बहुत कम है, और हम अपनी संस्कारगत कमजोरी के कारण निष्पक्ष विचार नहीं कर पाते। प्रायः हरेक व्यक्ति अपने देश को अधिक-से-अधिक श्रेय देने को उत्सुक रहता है; वह यथा-संभव यह दिखाने की चेष्टा करता है कि उनके देश ने बहुत पुराने समय में ही संस्कृति में बहुत प्रगति कर ली थी, उनकी संस्कृति विश्व-संस्कृति का केन्द्र है, संसार के अन्य सब भाग उस देश के ऋणी हैं, और वह देश केवल देने वाला ही रहा है। यह दिखाने की कोशिश करना या ऐसे विचार रखना अनुचित और अन्यान्य मूलक है। मानव संस्कृति पर लिखने या विचार करने वाले को यह भूल जाना चाहिए कि वह खुद किस देश, किस जाति या किस धर्म का है। ऐसा होने पर ही आदमी इस महान विषय पर निष्पक्ष विचार कर सकता है। परन्तु इस आदर्श का पालन करना बहुत कठिन है। अधिकांश व्यक्ति इसमें सफल नहीं होते। प्राचीन संस्कृतियों और सभ्यताओं की खोज का काम अधिकतर यूरोप अमरीका के आदमियों ने किया है। उनकी लगन, उनका परिश्रम और उनका धैर्य तथा कष्ट-सहन बहुत-बहुत प्रशंसा के योग्य ही नहीं, अनुकरणीय है। हां, उनमें से बहुत-से अपनी स्वाभाविक कमजोरी से नहीं बच पाए। किसी ने अपने धर्म (ईसाई मत) का, और किसी ने अपनी जाति या देश का लिहाज रखा है। संतोष का विषय है कि अब निष्पक्ष विचारकों की संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है, वे शुद्ध वैज्ञानिक दृष्टि से विचार करके ही किसी विषय पर अपना निर्णय देते हैं। आशा है, ऐसे महानुभाव भविष्य में अधिकाधिक होंगे।

विशेष वक्तव्य:—हम यहाँ नमूने के तौर पर थोड़े से ही देशों की देन की चर्चा करेंगे। चीन से आरंभ करके क्रमशः पश्चिम की ओर के देशों को लें। यह क्रम इन देशों की देन के महत्व के अनुसार नहीं है। वास्तव में विविध देशों की देन का ठीक ठीक मूल्यांकन हो भी नहीं सकता। अपनी अपनी परिस्थिति या अनुकूलता के अनुसार

(शेष पृष्ठ २० पर)

कहानी

खून के छींटे

— 'निर्मम', इन्दौर

आँखों आँखों में फर्क होता है–आवाज आवाज में फर्क होता है, और मनुष्य मनुष्य में भी। आपको भी आश्चर्य होगा कि गुलामी गुलामी में भी फर्क होता है–लंगड़ी गुलामी–अंधी गुलामी–कुवड़ी, गुलामी और गूंगी गुलामी। दिनू ने भी समय देखा था, बचपन बिताया था, जवानी के उतार चढ़ाव देखे थे–किन्तु वह भी गुलामी का शिकार था··· शायद इसका उसे भान भी नहीं था।

बचपन में वह अपनी सताने वाली बहन का भाई था, वह कब–कहाँ उसे छोड़कर–उसे ही नहीं सारे संसार को छोड़ कर चली-गई उसे याद नहीं आता ! अपने बडे भाई की जेब से बिड़ियाँ चुराना, गाँव के रामू माली के बाग से फूल, आम व अमरूद चुराना-रात वे रात 'बानर-सेना' के साथ गधों की सवारी करना बडे बूढ़ों की छेड़छाड़ करना-उसे अच्छी तरह याद है। उसे बचपन से ही नाच गाने का बड़ा शौक था। गेहुआ रंग व साथ ही सुन्दर होने के कारण वह हमेशा गाँव में होने वाले तमाशों में नारी, का अभिनय करता था। कभी लोगों ने उसे सीता व गोपी के रूप में देखा तो कभी अलका और मेनका के रूप में। यही कारण था कि स्त्री की चपलता व नारी की मृदुलता उसके स्वभाव में सम्मिश्रित हो गई थी।

आज बसंत पंचमी थी–यह उसके जीवन का पचपनवाँ बसन्त था। बरगद के नीचे बैठा सिगार के धुएं में वह धरती व आसमान की गहराई में खोज रहा था-कुछ ! मस्तिष्क ने स्मृतियों को छेड़ा और विचारों ने हृदय की गहराई टटोली। मानस की सतह, प्रगतिवाद के थोथे सूत्रों की परतों से लिप्त थी। आज बेचैन था। पढ़ा-लिखा, बी. ए. पास और एक लोक नेता वह भी प्रगतिशील पार्टी का, वहाँ से उसे आवश्यक सामग्री मिल जाती थी। अखबारों में उसे मजदूरों का कॉमरेड कहा जाता था। भाषण शैली, वाक्पटुता, अभिनय ने ही उसे इतने ऊंचे स्तर पर ला दिया दिया था। अभी अभी वह विदेश गया था; नगर की पार्टी की गुप्त बैठक से आकर ही वह इस तरह बेचैन हो रहा था। पार्टी ने उसे एक बहुत बड़ा कार्य सौंपा था।

जितनी सरल व मिठी वाणी वह बोल सकता था; वह उतने खतरनाक षड़यंत्र रच कर उन्हें सफल भी बना सकता था।

आज ठण्डी हवा के झोंके में वह 'विनोद' का इन्तजार किये बैठा था। विनोद उसका होने वाला दामाद। विनोद बी. ए. पास करने के बाद मिल में नौकरी करने लगा था। सरल स्वभाव, उदार हृदय और सहिष्णुता की प्रतिमा था। गरीबों का हमदर्द, पूंजी पतियों का सलाहकार और पड़ौसी का हितचिन्तक था। पाश्चात्य शिक्षा दीक्षा व वातावरण के बावजूद भी उसे सफेद टोपी, स्वच्छ श्वेत कुर्ता व पैजामा पहनते देख लोगों को आश्चर्य होता था। दिनू को जिसे अब दिनेश बाबू कहा जाता है, कई बार इससे मौके बे मौके मिलने का काम पड़ता रहा है। विनोद की सूझ बूझ, योग्यता व लेखनी के वे कायल थे। विनोद को गीता के प्रति प्रगाढ़ श्रद्धा थी। उसने कुरान की अनुवादित कृतियों का भी गहरा अध्ययन किया था। यही कारण था जो वह शान्ति प्रिय था। दिनेश बाबू ने इसी लिये अपनी पुत्री को पत्नी रूप में स्वीकारने का प्रस्ताव विनोद के सम्मुख रखा, विनोद उसे इन्कार नहीं कर सका।

* * * * * *

मिल में आज हड़ताल थी। 'बोनस' प्रश्न-को लेकर हड़ताल शुरू का गई थी। प्रगतिशील-पार्टी की ओर से थी। कुछ गरीब मजदूर भीतर ही भीतर कुढ़ रहे थे ! लेकिन वे करते भी क्या दिनेश बाबू की जो आज्ञा है ! विनोद से न रह गया, वह मजदूरों के घर घर पहुंचा उन्हें बताया कि यह तरीका गलत है, हड़ताल समयानुचित नहीं हैं ! लगभग आधे मजदूर निकल आये विनोद के साथ ! विनोद ने दिनेश बाबू से निवेदन किया कि मजदूरों के पेट के खातिर हड़ताल वापस ले लें !

'मजदूर शेर हैं भूखों मर जायेंगे-घास नहीं खायेंगे।' दिनेशबाबू ने कहा- "हड़ताल जारी रहेगी - मिल बन्द रहेगी-हमें बोनस मिलना चाहिए!"

विनोद सुनता रहा। उसने धीरे से कहा, "क्या आप, इन मजदूरों के साथ भूखों रहेंगे। जब तक हड़ताल चलेगी?"

"विवाद के लिये मेरे पास समय नहीं?" दिनेश बाबू ने कहा! "आज मिल चलेगी-हड़ताल टूटेगी!" विनोद मजदूरों के साथ कहता मिल की तरफ चला!

आखिर मिल चली हड़ताल असफल रही! दूसरे दिन अखबारों में उक्त समाचार बडे बडे अक्षरों में प्रथम पृष्ठ पर छपे-प्रगतिशील पार्टी की यह प्रथम पराजय थी। विनोद की लेखनी ने भी प्रगतिशील-पार्टी के विरुद्ध जिहाद शुरू किया।

विनोद का प्रभाव मजदूरों में बढ़ता गया। प्रगति शील पार्टी ने उसके खिलाफ भी प्रचार करने में कमी नहीं की। उसे पूंजीपतियों का एजन्ट, गद्दार, मजदूरों का दुश्मन कहा, परन्तु प्रगतिशील-पार्टी का प्रभाव घटने लगा। इसी विषय पर चर्चा करने के लिये आज वसंत पंचमीको पार्टी की बैठक रखी गई थी—जबान कह कर चुप होगई!

जबान ने कहा और कानों ने सुना—कान सुनकर बहरे होगये हाथ से सिगरेट छूट गई, विश्वास अविश्वास में बदला जा रहा था, सत्य होते हुये भी असत्य की छाया दीख रही थी।

धीरेन्द्र ने कहा—"विनोद .... अब नहीं रहा?" सुनते ही यह अशुभ सन्देश! मैं दौड़ पड़ा विनोद के घर की ओर!

विनोद की लाश खून से लथपथ थी-उसके सीने में ठीक दिल की जगह एक कटार धंसी हुई थी। रात्रि में, बिस्तर पर ही यह हुआ था मैंने देखा सब की आँखों में आँसू थे। प्रगतिशील पार्टी के मंत्री के आँखों में भी; परन्तु दिनेशबाबू नजर नहीं आये। मालूम हुआ वे कल शाम की गाड़ी से ही कलकत्ता रवाना होगये ह[illegible] विनोद बाबू [illegible] छोड़ने [illegible] थे।

लाल रंग देखकर मुझे वे, विनोद के खून के छींटे याद आ जाते हैं!

(शेष पृष्ठ १८ का)

जिससे जिससे जितना बना, उसने उतना कार्य किया। उससे अन्य देशों ने कितना लाभ उठाया या उस कार्य को कितना और आगे बढ़ाया, यह देशों की, उस समय की स्थिति पर भी निर्भर रहा है। अस्तु, पाठकों को चाहिए कि विविध देशों में अपने और पराये का भेद भाव न रखकर, सब से ही आवश्यक गुण ग्रहण करें, जैसे कि भौंरा विविध पुष्पों से रस ग्रहण करता है। ऐसी मनोवृत्ति से हम अपना सांस्कृतिक विकास कर सकते हैं और मानव संस्कृति का स्तर ऊंचा उठाने में सहायक हो सकते हैं।

गद्यगीत

आंसुओं का उपहार

-- अनवर आगेवान, शिवराजगढ़, सौराष्ट्र

सन्ध्या ने आकर रजनी से कहा —'बहन! तुम्हारे स्वामी तुम से मिलना चाहते थे। वे आये और तुम्हारी प्रतीक्षा करके चले गए, पर तुम्हारी भेंट न हुई। विदा होते हुए उसने संदेशा कहा है कि 'प्रिय मैं प्रदक्षिणा कर के जल्दी आ पहुँचूंगा, तुम मेरी प्रतीक्षा करना।'

रजनी स्वामी की प्रतीक्षा में लाख-लाख दीपों की माला जलाये बैठी। प्रतीक्षा में न जाने कितने प्रहर बीत गये। वह थक कर बैचेन हो उठी।

प्रिय मिलन की तीव्र उत्कंठा उसके अन्तर में उमड़ पड़ी और बावरी, बन-बन खोजने लगी। रजनीने उषा के अंचल में आँसुओं के ओस का उपहार छोड़ती, यह कह गई कि—'वह तुम्हारी याद लिए यहाँ से निकल पड़ी है।'

रजनी के जीवन स्वामी सात अश्वों के रथ पर आ पहुँचे। उषा ने उनका स्वागत किया और बिदा लेती उषा ने कहा—'तुम्हारी रजनी तुम्हें मिलने यहां से चल वसी।'

'कहां गई?' आतुरता से उसने पूछा।

'देखो वह हरियाली धरती पर आँसू के ओस-मोती बिखेरती हुई दूर-दूर चली गई। वह आंसुओं के मोती तुम्हें पन्थ बतायेंगे।'

यह सुनकर वह अपना रथ लेकर चल पड़ा। न जाने कितने दिन, कितने वर्ष, कितने युग बीत गए। पर आज तक वह प्रिया की खोज में पृथ्वी प्रदक्षिणा करता घूम रहा है। न जाने कब इन दोनों का मिलन होगा?

अमरकंटक को

(गतांक से आगे)

— रामकिशोर 'पाषाण', वर्धा

(अमरकंटक को हम सन् १९४० में पहली बार गये थे, जिसके विवरण अपूर्ण रूप से सन् १९४१ में लिखा गया था—जो कि गतांक में प्रकाशित हुआ है। उसके बाद का वृत्तांत आज १९५३ में लिखा जा रहा है। यह हो सकता है कि शेषांश भी उसी समय लिखा गया हो, किन्तु वह कहां रखा गया है, यह मुझे नहीं मालूम; इसलिए आज उसे स्मृति से पुनः लिखा जा रहा है। यहां यह कह दूं कि सन् १९४५ में पुनः एक बार मैं अमरकंटक हो आया हूं, और इसलिए यह नहीं समझा जा सकता कि वहां की यात्रा को मैं भूल गया हूं।)

आमानाला के पास का दृश्य भी एक तपस्वी के स्थान-सा प्रतीत होता है, और वहाँ पास की कुटिया में कुछ संत पुरुष रहते ही हैं। दूर पर भयानक जंगल सांय-सांय करता है, और केवल इस घाटी में साधू लोग धूनी रमाते हैं। सुना जाता है कि रात्रि में जंगली पशु भी इस ओर आ निकलते हैं, लेकिन अभी तक किसी मनुष्य को हानि पहुंचाई हो, ऐसा नहीं सुना गया।

यहीं कुटिया में बैठकर एक साधू की दी हुई थाली में हम दोनों ने सत्तू भिगाकर खाया; हमारे साथ के युवकवणिक ने भी कुछ नाश्ता किया और अपने घोडे को स्वच्छ पानी पिलाया—स्वच्छ पानी जो कि पर्वत देव ने नाले के रूप में प्रवाहित किया है।

आमानाला के बाद लगभग ३ मील की ऊंची चढ़ाई चढ़नी पड़ी है, जिसके बारे में एक लेखक ने लिखा था कि—'इस चढ़ाई के समय छठी का दूध याद आता है।' यह बात हम पढ़ चुके थे, इसलिए चढ़ाई चढ़ते समय विचार और मजाक करते जा रहे थे कि छठी का दूध क्या होता है, और वह कैसे याद आता है। लेकिन हमें तो ऐसा कोई दूध याद नहीं आया, हां थकावट काफी आई और जगह-जगह विश्राम करना पड़ा। आस पास का जंगल वृक्षों और लताओं से भरा हुआ था, और हम चाहते थे कि काश! हम इनके नाम जानते होते! तो अपनी इस यात्रा का वर्णन करते समय इनके नाम भी गिना सकते' किन्तु हमने यह भी महसूस किया कि आज की चहारदीवारी के बीच दी जाने वाली शिक्षा में इस बात का स्थान ही कैसे हो सकता है, कि विद्यार्थी लोग पेड-पौधों को जाने पहचानें? और इसलिए हमारे मन में एक प्रकार की हीनता का बोध हुआ।

इस चढाई के समय काफी बड़ी-बड़ी चट्टानें मिलीं, जिनपर बैठा जा सकता था, कुछ खेला जा सकता था [क्योंकि खेलने की ही हमारी उम्र थी, उस समय।]

इस तरह चढ़ाई के बाद एक सपाट-सा मैदान आया और कुछ ही दूरी पर डाक-बंगले का एक छोटा रूप दिखाई दिया, जिसमें सरकारी कर्मचारी आकर कभी-कभी ठहरते हैं। इसके चारों तरफ भी बडे-बड़े पेड़ और झाड़ियाँ हैं। कहीं-कहीं कुछ खेत भी दिखाई पडे। यूं तो आमानाला के बाद चढ़ाई चढ़ते समय भी कुछ खेत भी दिखाई दिये थे, जमीन को काट कर बनाये गये थे। हमने सोचा कि देखो मनुष्य इन पहाड़ियों का भी सदुपयोग करना जानता है! यहाँ भी वह अपनी जीविका का साधन ढूंढ निकालता है।

थोड़ी दूर पर रानी बाई की धर्म शाला है, जिसे शायद रानी अहिल्या बाई ने बनवाया था। यहीं हमें ठहरना था। युवक वणिक ने धर्मशाला के मुन्शी के पास हमें पहुँचा दिया और हमारे ठहरने का प्रबन्ध हो गया। उस युवक को कुछ मेहनताना देकर हमने अपना बिस्तर संभाला और एक कमरे में ठहरे।

* * *

अमरकंटक एक पुण्य-भूमि है, यह मैं आज भी कह सकता हूं। यह सिर्फ भावना के आधार पर ही नहीं, वरन्

प्रत्यक्ष अनुभव के द्वारा हमने इसे ग्रहण किया है। वैसे तो भारत वर्ष में अनेक पुण्य-स्थल हैं। किन्तु कई कारणों से उनकी पवित्रता नष्ट-भ्रष्ट हो गई। हर्ष है कि अमरकंटक की शुचिता अभी तक विद्यमान है; और उसका कारण मेरी समझ में यह है कि कुछ इने-गिने लोग ही वहाँ पहुंच पाते हैं। जिस समय हजारों की संख्या में लोग वहां पहुँचने लगेंगे; वहाँ की भी पवित्रता नष्ट हो जायगी, वह सिर्फ आबादी वाला व्यापारी केन्द्र बन जायगा। अभी भी वहाँ ऐसे पहुंचे हुए लोग हैं, जिन्हें संसार से कोई सरोकार नहीं, जो सिर्फ मुक्ति-प्राप्ति के लिए ही प्रयत्नशील हैं। वहाँ किसी भी विचार शील व्यक्ति को नये विचार और नये संदेश मिल सकते हैं। जब-जब मैं वहाँ गया हूं, मुझे अपार शान्ति और आनंद मिला है।

अमरकंटक में अनेक दर्शनीय स्थल हैं, जिनमें से प्रमुख है—वह कुण्ड जहाँ से नर्मदा नदी निकली है। इसका महात्म्य भी बहुत बताया जाता है। और भी स्थल हैं जहाँ जाने पर वहाँ से वापस लौटने की इच्छा ही नहीं होती। इन सब का वर्णन एक स्वतंत्र लेख का विषय है, और इस वृत्तांत में उन्हें नहीं लेना चाहता।

तो इस तरह हम "अमरकंटक को" पहुँचे, और वहां ३-४ दिन ठहरकर प्रायः सभी पुण्य-स्थानों के दर्शन किये। अनेक महात्माओं से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। ऐसे ही एक महात्मा ने हमें उपदेश और आदेश दिया कि हम अभी से तप नहीं कर सकेंगे—और इसलिए हमें वापस अपने स्थान को जाना चाहिए। विद्यार्थी जीवन समाप्त कर गृहस्थ जीवन का अनुभव करके फिर सन्यास लेने की उम्र में सन्यास लेना चाहिये।

हमने इस पर काफी विचार किया और अच्छा यही समझा कि घर वापस जांय; ईश्वर ने चाहा तो हम फिर यहां आयेंगे और जीवन को सार्थक बनायेंगे। सन् १९४५ की गर्मियों में एक बार फिर से वहां जाने का मुझे अवसर मिला था, और फिर-फिर वहां जाने का दिल होता है। अमरकंटक की सुहावनी संध्या, मनोरम प्रातः सुरम्य वन, आह्लादमयी नदी, हर्षमय जलप्रताप और पूर्ण रूप से पवित्र स्मृतियां मौन निमंत्रण देती हैं कि फिर से और फिर से वहां जाकर हृदय में शान्ति और दिव्य भावना को भरा जाय।

(पृष्ठ २५ का शेषांश)

आज कल वह एक फर्म का साधारण क्लर्क है। लोग जानते भी नहीं कि यह क्लर्क एक समय बड़ा प्रसिद्ध कवि था। दुनिया वालों ने कवि की कविताएं प्रकाशित क्यों नहीं हो रही, इसकी छान बीन की पर कोई न जान सका कि कवि ने कविताएं लिखना क्यों बन्द कर दीं। लोगों ने सोचा—'शायद कवि 'अकिंचन' इस दुनिया में नहीं रहे।'

परन्तु वास्तवता कुछ और ही थी!

ज्ञातव्य बातें

१. अगले वित्तीय वर्ष में केन्द्रीय सरकार राज्य सरकारों को २५६ करोड़ रु. अथवा कुल केन्द्रीय बजट का लगभग ३७ प्रतिशत ऋण या अनुदानों के रूप में देगी।

२. भारतीय कारखानों में १९५२-में २०८,८०,००० बिजली के बल्ब तैयार हुये जब कि १९५१ में १,५५,१०,००० तैयार हुये थे।

३. भारतीय डाक तार विभाग ने १९५२ में लगभग २ लाख नये टेलीफोन लगाये और ४२,००० नये डाकखाने खोले।

४. भारत सरकार के स्टेशनरी विभाग ने चालू वित्तीय वर्ष के पिछले महीने के अंत तक २४,१५० टन कागज खरीदा जिसमें से केवल ७० टन विदेशों से मंगाया गया।

५. स्वेच्छा से आमदनी बताने की भारत सरकार की योजना के कारण ७० करोड़ रु. से अधिक की छिपी हुई आमदनी का पता लग चुका है।

६. भारत में तेलहन की पैदावार १९४८-४९ में ४५०२ लाख टन से बढ़कर १९५१-५२ में ४७९१ लाख टन हो गई है।

(भा. स. पत्र सूचना विभाग से सादर)

कहानी

'अकिञ्चन'

— "श्रीराम", हैदराबाद

वह कवि था। उसकी कविताएं हिन्दी साहित्य की अनूठी रचनाएं समझी जाती थीं। साहित्य-जगत् उसे आदर की दृष्टि से देखता था। कवि की रचनाएं पढ़कर लोग बीन सुनते साँप की भांति मुग्ध हो डोलने लगते। पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित उसकी रचनाओं को पढ़कर लोग उसकी प्रशंसा के पूल बांधते। कवि के पास कई प्रशंसा के पत्र आते। लोग उसकी प्रशंसा करते हुए लिखते—

"कवि 'अकिञ्चन' जी! आप की कविताएं हिन्दी साहित्य की सर्वश्रेष्ठ रचनाएं हैं। आपकी कविताओं में भावों और कविताओं का मधुर समिश्रण, सौन्दर्य और अलंकारों का समन्वय कूट-कूट कर भरा हुआ है। आपकी कविताएं पढ़कर हमें ऐसा प्रतीत होता है कि हम स्वप्न सृष्टि में कल्पनाओं के पंख लगा कर उड़ रहे हैं। कविता के भावों में डूब कर हमें लगता है कि हम तारों की दुनिया में हैं न कि सत्य सृष्टि में! वास्तव में 'अकिञ्चन' जी हिन्दी के रवीन्द्र हैं!"

एक पत्रिका ने कविता समालोचना करते हुए लिखा था—

"कवि 'अकिंचन' की कविता कविता नहीं है, जादू और कल्पना से भरा सौन्दर्य है, जो दुनिया को अपनी ओर आकर्षित करने की क्षमता रखती है! हमें आशा है कि कवि की कविताएं युग परिवर्तक सिद्ध होगी!"

कवि इन पत्रों को पढ़ता। उसे पढ़ने में एक अपूर्व शांति का आभास होता। जैसे ईश्वर ने उसे छप्पर फाड़ कर कुछ दे दिया हो। पहाड़ी की चोटी पर चढ़ने वाले यात्री को पहाड़ी की चोटी पर—अपनी मंजिल पर—पहुंचने के बाद जो आनन्द मिलता; वही आनन्द कवि को इन पत्रों को पढ़कर होता। कवि इन आनन्द सागर की तरंगों में बह जाता, डूब जाता। पत्रों को बार-बार पढ़ता, बार-बार पढ़ने में उसे सुख मिलता।

परन्तु उसी समय कवि के हृदय का एक कोना अपनी आवाज उठाता और कवि का सारा आनन्द इस आवाज की प्रतिध्वनी में लुप्त हो जाता। हृदय की इस भीषण आवाज को दूर करने और उसका प्रतिकार करने में कवि असफल रहता। यह आवाज क्या थी? ......

* * *

कवि की तीन पुत्रियां और एक पुत्र था और थी लक्ष्मी-कवि की पत्नी—नाम तो 'लक्ष्मी' था पर थी निर्धन! लक्ष्मी का किसी के घर में आने से उसका भाग्योदय हो जाता है पर कवि के लिए यह अपवाद स्वरूप था! हाँ, 'लक्ष्मी' के आने से वह पहले से अधिक निर्धन, चिन्ता ग्रस्त और दुःखी हुआ।

आधुनिक युग में नौकरी मिलना भी एक बहुत बड़े सौभाग्य की बात मानी जाती है। कवि स्वयं इस सौभाग्य से अछूता बना रहा। नौकरी वह करना चाहता तो उसे मिल सकती थी, पर वह इस में अपनी मानहानि समझता था। एक बार वह पत्नी के कहने से नौकरी करने के लिए तैयार हुआ किन्तु......

वह एक बड़े फर्म के मैनेजर के पास वह नौकरी मांगने के लिए गया। फर्म का मैनेजर एक भावुक, साहित्य-प्रेमी व्यक्ति था। जिस समय कवि मैनेजर के कमरे में पहुंचा मैनेजर कवि 'अकिंचन' की पुस्तिका 'रश्मिरेखा' की प्रशंसा एक दूसरे व्यक्ति को सुना रहा था। मैनेजर पुस्तक की एक-एक कविता की कुछ पंक्तियाँ पढ़कर सुनाता और उसके भावों, कल्पनाओं और शैली की प्रशंसा में एक लम्बा-सा व्याख्यान दे देता। दूसरा व्यक्ति बीच ही में किसी कल्पना की प्रशंसा करता, तब मैनेजर खुशी से उछलने लगता। कहता—'कविता तो क्या लिखता है, पाठकों को स्वप्न सृष्टि में, निराली दुनिया में पहुंचा देता है। कवि के पास कल्पनाओं का भांडार भरा है। 'अकिञ्चन' एक दिन महान 'विश्व कवि' बनेगा। मुझे इसकी कविताएं पढ़कर ऐसा लगता है कि मैं भी कवि बनता तो कितना अच्छा होता। जी चाहता है कि अपनी दुनिया इस कवि पर लूटा दूँ।'

कवि बैठा हुआ सुनता रहा जैसे किसी प्रभाव शाली व्याख्याता का भाषण सुन रहा हो। आश्चर्यचकित हो, प्रशंसा के शब्दों में डूब गया। एकाएक चौंक पड़ा, वह अपनी वास्तविक स्थिति का ध्यान आते ही। वह मैनेजर से कुछ न कह सका, एक दम पलट कर चल पड़ा मैनेजर के कमरे से !

उसके पश्चात् उसने कभी नौकरी ढूंढ़ने का और करने का नाम नहीं लिया। कवि विचार करता कि —'नौकरी से मेरा स्वाभिमन कुचला जायगा। जहां काम करूंगा, वहां मेरी इज्जत जो अब है, तब नहीं रहेगी।'

* * *

दिन बितते गए। कवि की पत्नी के पास जो भी आभूषण थे, पेट का गढ़ा भरने के काम आगए। कवि पत्र-पत्रिकाओं में अपनी कविताएं प्रकाशनार्थ भेजता, पर उसे पारिश्रमिक नहीं मिलता। पत्रिकाएं देती भी कहां से 'घाटे से जो चल रही थी। दो-चार पत्रिकाएं ऐसी थीं जो घाटे में न थी, वे कवि को देते पर उससे क्या होता ? कवि पहले कहा करता कि—'मैं कभी पैसे लेकर साहित्य न बेचूंगा।' परन्तु, कवि को यह प्रतिज्ञा भंग करनी पड़ी।

कवि की आर्थिक स्थिति बिगड़ती गई। कभी-कभी एक-दो दिन भूखा रहना पड़ता, तो कभी अर्धपेट रहना पड़ता। कवि और उसकी पत्नी अर्धपेट रह सकते थे—उन्हें आदत जो हो गई थी। किन्तु वे अबोध बच्चे अर्धपेट और भूखे कैसे रह सकते ? वें दिन भर भूख से तड़पते हुए बिलबिलाते रहते। लक्ष्मी भूखे, तड़पते, बिलबिलाते बच्चों को देखकर रो पड़ती और तो करती भी क्या ? बच्चे दिन भर रोते-रोते, रोटी-रोटी करते सो जाते ! कवि की पत्नी को नींद न आती ! कवि इन तड़पते बच्चों को, लक्ष्मी के दुःख को न देख पाता। उसे अपनी स्थिति पर क्रोध आता, विवशता पर दुःख होता—तब कवि इन दुःखों से छुटकारा पाने के लिए अपने आपको—अपनी सनसनाती व्यथा को—कविताओं के सृजन में भूला देता, पर बेचारी लक्ष्मी और बच्चे किन साधनों से अपना दुःख और भूख मिटाएं ? लक्ष्मी का मातृ-हृदय रोटी के लिए तड़पते कलेजे के टुकडों को कैसे देख और सह सकता ? वह अपनी व्यथा, दुःख, मातृहृदय की जलन, कलेजे के टुकडों की पुकार कवि की भांति नहीं भूला पाती ! तब वह दुनिया की भांति कभी अपने भाग्य को कोसती, कभी पति के भाग्य को और कोसती, कवि की रचनाओं को जिनके कारण वह नौकरी करने में मानहानि और अपनी शान के खिलाफ समझता ! तब.......

तब क्या करें इन पंक्तियों को लेकर—जिसके लिए वह अपना और अपने कुटुम्ब का जीवन तबाह कर रहा है ! क्या लाभ इनके सृजन से जो इसे सुखी बनाने के बजाय दुःखी बना रही हैं ? मानव किसी अच्छी कला को साधकर अपने आपको उन्नति के शिखर पर पहुंचा देता है पर यह कला उन्नति की अपेक्षा अवनति की ओर ले जा रही है, तब क्या फायदा इसकी रचना करने से ? किस लिए लिखें ? दुनिया के मुख से कवि कहलाने के लिए ! और इसके लिए अपने को, और साथ-ही-साथ इन मासूम बच्चों को मिटा दें ! किसने कहा है कि एक व्यक्ति को उन्नति के लिए, वह स्वयं को और इन मासूम बच्चों को....... ?

* * *

लक्ष्मी ने फैसला कर लिया कि वे अपना कठोर मार्ग छोड़ देंगे और साधारण आदमी की भाँति अपना जीवन व्यतीत करेंगे या नहीं तो मैं स्वयं ही इन बच्चों को छोड़कर घर से चल दूँगी !

एक दिन शाम को उसने कह ही दिया—

" नाथ ! मैंने आज तक तुम्हारे विरुद्ध आवाज तक नहीं उठाई। पर अब मुझ से नहीं देखा जाता। मैंने १७ वर्ष से तुम्हारा साथ दिया, पर कभी मैंने अपने सुख की चाह नहीं की और न अब कर रही हूं ! तुम्हारे सुख में मेरा सुख है और तुम्हारे दुःख में मेरा दुःख ! मैं अपने लिए नहीं कहती, इन मासूम बच्चों की ओर देखो ! भूख से तिलमिलाते हुए इन बच्चों को तुम कैसे देख सकते हो ! शायद तुम्हारा हृदय पत्थर का हो, परन्तु मैं माता हूं — मेरा हृदय पत्थर का नहीं है; मेरे सीने में माता का हृदय है और वह पुकार-पुकार कर कह रहा कि तुम माता-पिता बनने के योग्य नही है। सच भी है कि जो अपने बाल-बच्चों का का पालन-पोषण, पढाने-लिखाने का प्रबन्ध नहीं कर सकता, उसे बाप और मां कहने का कोई अधिकार नहीं है।"

" मैं जानती हूं, तुम अपना दुःख कविता की पंक्तियों भूल जाते हो। पर— पराये अबोध बालक अपनी

भूख कैसे मिटाएं ? तुम स्वयं को कविताओं के रस में डूबा कर अपने को, दुनिया को, अपने संसार को, अपने बच्चों को और अपनी पत्नी को भूला देते हो, उसमें मग्न हो जाते हो, तब तुम्हें किसी प्रकार का दुःख छू नहीं सकता ! तुम्हें न घर की चिन्ता रहती है न तुम्हारी खुद की ! तुम्हारा लाडला सतीश—जिसे तुम प्राणों से अधिक प्यार करते थे—ज्वर में पड़ा है। न उसके दवा का प्रबन्ध है न खाने-पीने का ! जरा रहम करो......

कवि अधिक नहीं सुन सका ! वह दौड़ता हुआ अन्दर के कमरे में पहुंचा जहाँ उसका लाड़ला सतीश बिछौने पर बेहोशी की हालत में पड़ा हुआ था। उसकी स्थिति देखते ही कवि के आँखों में आँसू आगए। कवि ने अपने आपको धिक्कारा ! सोचा—लक्ष्मी सच कहती है ! क्या लाभ मेरी इस साहित्य सेवा से ? दुनिया मुझे बड़ा कवि मानती है, मेरी कविताओं को पढ़कर प्रशंसा करती है, झूठी सहानुभूतियाँ प्रदान करती हैं, पर किसी ने मेरी वास्तविक को जानने की कोशिश की दुनिया की। सहानुभूतियों से मैं मेरा संसार नहीं चला सकता और न पेट ही भर सकता हूं !

कवि बच्चों की भांति सतीश से लिपट कर रोने लगा। आंखों के आंसू मोती का रूप ले ढुलकने लगे। पास खड़ी लक्ष्मी के आंखों से आंसुओं की धाराएं बह चली। उसने कवि को दूसरे कमरे में ले जाकर औषधि का प्रबन्ध करने को कहा !

कवि अन्यमनस्क-सा दौड़ता हुआ डाक्टर के पास पहुंचा ! दवाखाने में भीड़ अधिक थी। कवि कुछ देर बैठा। उसका मस्तिष्क घूम रहा था, मोटर के पहिए की भांति। उसके आंखों के सम्मुख बच्चे की मूर्ति आगई। सूखा मुख, पीला पड़ा चेहरा, निस्तेज आंखें, लकड़ी से सूखे हाथ पैर ! कवि को ऐसा लगा, जैसे वह कुछ ही देर का मेहमान है ! कवि अधिक देर प्रतीक्षा नहीं कर सका। वह पागल की भांति सीधा डाक्टर के कमरे में पहुंचा जहाँ वह मरीजों की परीक्षा कर रहा था।

कविने भीतर पहुंचते ही कहा—"डाक्टर साहब ! मेरा सतीश बहुत बीमार है ! ज्वर की बेहोशी में पड़ा है। चलिए जल्दी चलिए। मैं आपकी फीस और दवा के पैसे आपके पास नौकरी कर चुका दूँगा। मैं आपका यह एहसान जिंदगी भर नहीं भूल सकता। चलिए डाक्टर.......

डाक्टर की घूरती हुई आंखों को देखकर कवि सहम गया। उसकी जबान बन्द हो गई !

डाक्टर ने घूरते हुए, एकबार उसे नीचे से ऊपर तक देखा। रूखे बाल, निस्तेज आंखें, सूखे होंठ, फटे कपड़े, पैर में चप्पल नहीं ! डाक्टर ने गंभीरता से कहा—"बेचारा पागल मालूम होता है !" डाक्टरने चपरासी को बुलाकर उसे बाहर निकाल देने के लिए कह दिया।

"मैं—मैं पागल नहीं हूं डाक्टर साहब ! मैं कवि 'अकिंचन'......... वाक्य पूर्ण होने के पूर्व ही चपरासी ने गर्दन में हाथ देकर कवि को कमरे से और दवाखाने के बाहर कर दिया !

डाक्टर के पास खड़े एक सभ्य व्यक्ति ने हंसते हुए कहा—"पागल कहीं का; अपने को कवि 'अकिंचन' समझता है। हा....... हा........ हा....— !"

डाक्टर उसकी हंसी में अपनी हंसी मिलाता हुआ अपने कार्य में मग्न हो गया, जैसे वहां पर कुछ हुआ ही न हो !

* * *

सतीश-कवि का लाड़ला सतीश—कवि का पुत्र-बिना औषधि के चल बसा ! कवि को बड़ा दुःख हुआ ! औषधि के प्रबन्ध करने, और प्रयत्न करने पर उसकी मृत्यु होती तो कवि को इतना दुःख नहीं होता जितना कि अब हो रहा है। अपनी बेबसी, अपनी निर्धनता, अपनी विवशता पर कवि को बड़ा दुःख हुआ। स्वाभिमानी व्यक्ति को साधारण आदमियों से अपनी इज्जत का ख्याल अधिक होता है। मेरे इस बेबस जीवन से क्या फायदा ? उसके दिल में आत्महत्या का विचार भी आया पर तीन पुत्रियां और लक्ष्मी का ध्यान आते ही उसे अपना विचार त्यागना पड़ा। दुनिया यही कहेगी कि बापने पुत्र को औषधि तक न दी, और मैं उन्हें क्या जवाब दूँगा ?

* * *

आज कवि अकिंचन की कविताएं किसी पत्र में देखने नहीं आती। कवि के पुत्र की मृत्यु के पश्चात् कविने कविताएं करना बन्द कर दीं। उसने अपनी सारी कविताएं, पत्रिकाएं, प्रशंसा के पत्र जला दिए।

(शेष पृष्ठ २२ पर)

हिन्दी-प्रचार के नाम पर — सं. २

(सभा के प्रदीप)

— चतुर्वेदी श्रीराम शर्मा, हैदराबाद

"दक्षिण-भारती" के पिछले अंक में हैदराबाद राज्य हिन्दी प्रचार सभा की प्रकाशन नीति की कुछ चर्चा की गयी थी। इस अंक में सभा की परीक्षा-व्यवस्था पर प्रकाश डालने का विचार था; परन्तु इस बीच हमारे पिछले लेख के सम्बंध में मित्रों के जो पत्र प्राप्त हुए हैं, उसमें कहा गया है कि हमने अपने पिछले लेख में सभा की प्रकाशन नीति के संबंध में कोई ठोस सुझाव नहीं दिया। मैं तो समझता था कि जो कुछ कहा गया है, वह पर्याप्त है, परन्तु मित्रों के सुझाव की भी अवहेलना नहीं की जा सकती। अतएव इस अंक में मैं सभा के अत्यन्त प्रचलित प्रकाशन "हिन्दी प्रदीप" भाग १, २, ३, ४ की विस्तृत चर्चा करना चाहता हूं।

किसी पुस्तक की चर्चा चलाते समय हमारा ध्यान सब से पहले उसके विषय तथा लेखों पर जाता है। हिन्दी प्रदीप पाठमाला पद्धति पर तैयार की गयी हैं और उन्हें सरकार में, सरकारी स्कूलों के पाठ्य क्रम में स्वीकृति के लिए उपस्थित कर उन्हें विभिन्न कक्षाओं में पाठ्य-पुस्तक के रूप में स्वीकृत कराया गया है। अतएव उनके विषय में बात चीत करते समय हमारा ध्यान उनके पाठों की ओर सब से पहले जाता है।

सभा के प्रदीपों में क्रमशः १५, १६, १९ और २२ पाठ हैं। बहुधा वर्ष भर पढ़ायी जाने वाली पाठमालाओं में पाठों की संख्य लगभग ४० होती है। इन पाठमालाओं में विभिन्न प्रकार के पाठ रहते हैं। भारत के अन्य प्रान्तों में सरकारी पाठ्यक्रमों में इसका उल्लेख रहता है कि किन-किन विषयों पर पाठमालाओं में पाठ होना आवश्यक है। हैदराबाद के सरकारी पाठ्यक्रम में इसका कोई निर्देश नहीं है। हमें इसके लिए अन्य पाठमालाओं में प्रयुक्त पद्धति पर ध्यान देना होगा। इन पाठमालाओं में हमें रोचक और ज्ञानवर्द्धक दोनों ही प्रकार की सामग्री मिलती है। यदि किसी पाठमाला के ४० पाठों को हम विषयवार बाँटें तो उसमें हमें लगभग ८ या १० उत्तम कविताएं मिलेंगी — लगभग ५ कहानियाँ होंगी। एक-दो जीवनियाँ; कुछ पशु-पक्षियों, आविष्कारों, सरकारी विभागों, यातायात या उद्योग धधों की जानकारी, कुछ मनोरंजक वार्तालाप, कुछ पाठ पेड़-पौधे व फूलों पर या विज्ञान की बातें प्रायः सभी पाठमालाओं में पायी जाती हैं। हिन्दी प्रदीपों का यदि हम विषयों की दृष्टि से विश्लेषण करें तो उनमें कई विषयों का सर्वथा अभाव एक खटकने वाली बात है। पाठकों की जानकारी के लिए हम इन प्रदीपों के पाठों का विषयवार विश्लेषण करते हैं :—

	कविताएं	कहानियां	पत्र	वार्तालाप	जीवनियां	पेड़-पौधे	भौगोलिक	विज्ञान	खेलकूद	आविष्कार	अन्य	कुल
भाग १	४	२	×	२	×	४	×	×	×	×	३	१५
भाग २	३	२	×	२	१	×	×	×	×	×	५	१३
भाग ३	४	४	×	२	३	×	४	१	×	१	×	१६
भाग ४	७	२	१	×	२	×	१	×	१	२	५	२२

इन पाठों का चुनाव करते समय पढ़ने वालों की आयु का पूरा ध्यान रखना आवश्यक है। प्रदीप का भाग १ प्रारंभिक विद्यार्थियों के लिए उपयोगी होना चाहिये, जिनकी वय लगभग ५-६ वर्ष की होगी। उनके लिए प्रदीप में छोटे टाइप में मुद्रित ४ कविताएं हैं। वे बहुत बड़ी नहीं हैं — हम उन्हें उद्धृत कर दिखलाना चाहते हैं कि प्रदीप के संपादन में किस सीमा तक पढ़ने वाले विद्यार्थी की आयु और विकास की अवहेलना की गयी है। पहली रचना —

हो भारत की जय
हो दीन अभय
हो सब सुखमय
हो जग निर्भय
हो भारत की जय
हो शील, विनय
हो बड़ा हृदय
हो लोक उदय
हो भारत जय

इस रचना के शब्द दीन, अभय, सुखमय, निर्भय, शील, विनय, बड़ा हृदय, लोक उदय पर ध्यान दीजिए। "हो शील विनय" का अर्थ समझने का प्रयास कीजिए।

दूसरी कविता है— "फूल"—

हे फूल ! कहां तू भटका,
किन कांटों में आ अटका
हैं सूखी सूखी डालें
अपने में मुझे छिपा लें।

(पत्तों में फूल छिप जाता है, यह तो आपने सुना होगा, परन्तु सूखी-सूखी डालें अपने में मुझे छिपालें— सचमुच नई सूझ है।)

सुन्दर ऐसी दे कर
पत्तों का दिया तुझे घर
क्या उलटा हुआ विधाता
जो जोड़ा ऐसा नाता।

कवि ने अब सूखी डालों में पत्तों का घर भी बना दिया। छोटे बालक ने अभी यह विश्वास किया था कि सूखी डालों ने फूल को छिपा लिया है। अब पत्तों का घर मिल जाने से विधाता उलटा हो गया। कहिये है न उलटी बात।

यह रङ्गत और कहां है
जो तुझ में भरी यहां है
जब इधर उधर तू हिलता
आंखों को जीवन मिलता

"आंखों को जीवन मिलता" अल्पायु बालक के लिए कठिन मुहाविरा है।

देखा है जब से तुझ को।
कुछ नहीं सुहाता मुझ को
बस ऐसा मस्त हुआ हूं
दुनिया को भूल गया हूं।
अब आता है यह जी में
नहीं एक पलक भी झपकूं
तुझ को ही देखूं-देखूं।

अन्तिम दो पंक्तियों में झपकूं, की देखूं अटपटी तुक मिलाई गयी है तथा पहली पंक्ति में छन्द-भंग भी है।

तीसरी कविता 'अंगूर और लोमड़ी' की भी हालत ऐसी ही है—तुक और छंद-भंग के साथ-साथ भावों का स्पष्टीकरण भी नहीं हो सका। चौथी कविता "बाग में चलें"—छपते-छपते जोड़ दी गयी है। यह पुस्तक का अन्तिम पाठ है।

"बेला चमेली
खेलें खेली
चलो चलेंगे बाग।
तितली तितली
रंग की पुतली
खेल रही हैं फाग।
भौंरे कोयल
स्वर में कोमल
गाते मीठा राग।

इस 'खेलें खेली' को पढ़कर सारी कविता के प्रति अरुचि होती है।

प्रदीपों के अन्य भागों में भी कविताएं अत्यन्त ऊट-पटाँग और वे सिर-पैर की हैं। पाठों के चयन में पर्याप्त सावधानी नहीं रखी गयी-उनकी संख्या कम है। पुस्तकों के दुहराने की आवश्यकता शायद सभा के पदाधिकारी न समझते हों, पर जिन्हें इन पुस्तकों से काम पड़ता है वे अवश्य कहते हैं कि हिन्दी प्रचार के नाम पर यह कलंक जितने शीघ्र दूर हो सके, उतना ही अच्छा है।

मेरे मित्र अब भी यही कहेंगे कि मैं ने कोई ठोस सुझाव सभा के सामने नहीं रखा। अतएव मैं अब बहुत स्पष्ट शब्दों में निवेदन करना चाहूंगा कि इन प्रदीपों को उस्मानियाँ विश्व-विद्यालय के हिन्दी के प्रोफेसर पं. वंशीधर जी विद्या-

लंकार द्वारा संपादित कराया जाए, चाहे इस के लिए भले ही उनको २५०) प्रति पुस्तक देना पडे । इन में पाठों की संख्या बढ़ाई जाएं, उत्तम कविताओं का समावेश किया जाए और सब प्रकार की उपयोगी सामग्री को समन्वित होने पर ही उन्हें शिक्षा विभाग में पढ़ाए जाने के लिए दिया जाना चाहिए ।

इन प्रदीपों के मूल्य के संबंध में ही यहां कुछ कहना अप्रासंगिक न होगा । मैं ने प्रदीप के दूसरे तीसरे भागों को स्थानीय दो प्रेसों में दिलाया और उनके मुद्रण के लिए आंकड़े मांगे । दोनों प्रेसों ने जो अनुमान-पत्रक दिए, उनको मैं नीचे दे रहा हूं ।

	मारवाड़ी प्रेस	कमर्शियल प्रेस
२२ हज़ार प्रतियां ५६ पृष्ठों का मुद्रण	५६० रु.	६७२ रु.
कागज	६९४ रु.	७८० रु.
टायटिल की छपाई	३३ रु.	४४ रु.
टायटिल का कागज़	२४० रु.	२४० रु.
बाइंडिंग	१६५ रु.	२६४ रु.
कुल योग	१६९२ रु.	२००० रु.

इस प्रकार एक प्रेस में मुद्रण की लागत लगभग -)॥ एक प्रति पड़ती है- और दूसरे में)॥ प्रति पुस्तक । ये लागत हाली रुपयों में है । अब इन पुस्तकों की कीमतें देखिये । हिन्दी प्रदीप भाग २ मूल्य ।।) भारतीय मुद्रा तथा ०-९-४ हाली मुद्रा । हिन्दी प्रदीप भाग ३ मूल्य ०-१०-० भारतीय मुद्रा और ०-११-८ हाली मुद्रा ।

इस खुली लूट का उदाहरण अन्यत्र मिलना असंभव है । हमारे पाठक गण याद रखें कि इन पुस्तकों की प्रकाशक-एक हिन्दी प्रचार सभा है जिसके प्रचार के कार्य में सरकार २१०००) वार्षिक सहायता प्रदान करती है । तब इस सभा के लिए आवश्यक हो जाता है कि प्रति पुस्तक आठ आना या दस आना लाभ कमाएं ।

यह संभव है कि हिन्दी प्रचार सभा अपने निजी प्रेस में पुस्तकें छपा कर प्रेस को घाटे से बचाने के लिए कुछ अधिक उदारता से उनके बिल चुकाती हो, अथवा प्रेस कर्मचारियों को हिन्दी प्रचार के नाम पर वेतनादि की सुविधाएं व्यावसायिक प्रेसों से अधिक हों और इस कारण उसमें मुद्रण की दरें अधिक हों, परंतु इतना अधिक अन्तर तो नहीं ठीक माना जा सकता ।

हमें इस बार सभा के प्रेस के मुद्रण की दरों का भी कुछ अन्दाजा मिला । विभिन्न कालिजों व स्कूलों ने इस वर्ष अपनी अपनी हिन्दी पत्रिकाएं निकाली हैं । दो-तीन पत्रिकाओं के बजट ४) या ४।।) प्रति पृष्ठ के बने हुए देखे । एक पत्रिका हिन्दी प्रेस में मुद्रित की, उसका बिल ६) प्रति पृष्ठ से तैयार किया हुआ भी देखा । हिन्दी प्रचार के नामपर १।।) प्रति पृष्ठ अधिक कमाना उतना बुरा नहीं कहा जा सकता, जितना हिन्दी के नाम विद्यार्थी समूह से आँखों में धूल झोंक कर पैसा खींचना ।

अब तक हैदराबाद सरकार पुस्तकों के मूल्य निर्धारित में पर्याप्त सतर्क रहती थी, मगर गुप्त युग में यह सख्ती बहुत ढीली हो गयी है । केवल इतना ही नहीं, ऐसा प्रतीत होने लगा है कि निर्णायक कमेटियों के सदस्य सभा के एजण्टों की भाँति काम करते हैं । आप में से शायद किसी ने ध्यान न दिया हो । इस वर्ष सातवीं कक्षा के द्वितीय-भाषा के पाठ्यक्रम में हिन्दी प्रदीप भाग २, ३ दोनों ही स्वीकृत हैं और सो भी पूरे-पूरे नहीं — केवल आधे-आधे । इन आधे-आधे प्रदीपों को स्वीकार करने में बोर्ड ने क्या हित ध्यान में रखा होगा । जब तक हिन्दी-समिति सभा के हित को सर्वोपरि मानने वाली न हो, तब तक उसके द्वारा ऐसे किसी निर्णय की संभावना नहीं है । द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी लेने वाले विद्यार्थियों की संख्या राज्य में कम न होगी, और उन सब को आधी आधी दो पुस्तकें पढ़ने के लिए पूरी-पूरी दो पुस्तकें खरीदनी पड़ी होंगी ।

यह है हमारी हैदराबाद राज्य हिन्दी प्रचार सभा का हिन्दी प्रचार और उसके नाम पर धन कमाने का सहज उपाय । क्या किसी प्रकार यह लूट बंद की जा सकती है ?

सभा की और भी कई पुस्तकें सभा की परीक्षाओं में तथा सरकारी परीक्षाओं में स्वीकृत हैं । यदि आवश्यकता समझी गयी तो उनके संबन्ध में भी इसी प्रकार का परीक्षण कर उनमें आवश्यक सुधार के उपाय सामने लाए जा सकेंगे मगर इन सब का उचित लाभ तभी हो सकता है, जब सभा

[शेष पृष्ठ ३४ पर]

हम चोर हैं
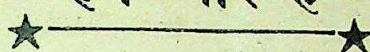
— बालकृष्ण लाहोटी 'कृष्ण', हैदराबाद

पात्र

कमीश्नर	भोजराज
कानस्टिबल	अन्नराज
पुलिस १,२	अमीन
माधो	राही
सेठजी	चौधरी आदि

दृश्य पहला (स्थान चावल का बाजार)

(एकदम हल्ला होता है और चारों तरफ चोर-चोर की ध्वनि आती है।)

इन्स्पेक्टर—कहां है? कहां है? (सीटी बजाता हुआ) पकड़ो, पकड़ो!

पुलिस १—कहां है? (भागकर चारों तरफ देखते हैं।)

पुलिस२—चलो, चलो! देखो, देखो! (भागता है।)

सेठजी—वह भागा!

चौधरी—वह रहा, वह जा रहा है!

राही—अभी यहीं था, अभी अभी गया है, यहीं कहीं छिपा है!)

पुलिस १—कहां है? कहां है?

(फिर दौड़-धूप होती है। मारो पीटो, पकड़ो आदि की आवाजें आती हैं और दृश्य बदलता है और पुलिस स्टेशन का दृश्य दिखाई देता है।

कानस्टिबल—क्या हुआ?

पुलिस १—चोर मिल गए!

पुलिस २—उन्हें पकड़ लिया गया है।

कानस्टिबल—सामने लाओ!

पुलिस १—सरकार! ये दो आदमी हैं!

कानस्टिबल—यहीं हैं (खूब गौर से देखकर) अरे तुम कहां रहते हो?

भोजराज—दुनिया में!

कानस्टिबल—क्या कहा, दुनिया में?

भोजराज—जी हां, दुनिया में!

कानस्टिबल—क्यों बे, दिमाग ठीक है? मारे जूते के सर तोड़ डालूगा। सीधा जवाब दे। समझा या नहीं? गधा कहीं का!

भोजराज—हुजूर! मैं गधा नहीं आदमी हूं।

कानस्टिबल—फिर वही मुंहजोरी! (दूसरे चोर की ओर देखकर) क्यों, बे तू कहा रहता है?

अन्नराज—मैं भी इन्हीं के साथ रहता हूं।

कानस्टिबल—ओह! कितने छटेल बदमाश हैं! अभी तफ़सीस में दूं तो इनका 'भूत' भाग जायगा।

भोजराज—अजी, हम खुद भूत हैं!

कानस्टिबल—हां, यह तो मैं भी जानता हूं। अच्छा आप लोगों का नाम क्या है?

भोजराज—मेरा नाम भोजराज है!

कानस्टिबल—और तेरा?

अन्नराज—मेरा नाम है अन्नराज!

कानस्टिबल—बडे घराने के मालूम होते है परन्तु तुम्हारे काम......

भोजराज—चोरी करना और पेट भरना!

कानस्टिबल—चोर को क्या सजा मिलती है?

भोजराज—यही, कैदखाना या ज्यादा-से-ज्यादा मौत!

कानस्टिबल—ओह हो! यह दिल जले चोर, मालूम होते हैं।

(चौधरी और सेठ साहब क आना)

चौधरी--मैं कहता हूं कि हमारे यहां सरकार भी है या नहीं !

सेठजी—बाजार में लूट-मार हो रही है और पकड़ने वाले का कोई पता ही नहीं ?

चौधरी--नहीं क्यों, थाने में तो कानस्टिबल साहब बैठे हैं।

सेठजी--थानेदार साहब, नमस्ते !

कानस्टिबल—नमस्ते सेठजी ! आइए। आपका क्या गया है ?

सेठजी—मेरे चावल के कोठे को फोड़कर सारा चावल लूट लिया गया !

कानस्टिबल--आप बेफिक्र रहे। मैं सब बदमाशों के मकान की तलाशी लूंगा।

सेठजी--आश्चर्य तो यह है कि दिन दहाड़े चोरी होती है, अब हम व्यापार-धन्धा कैसे करेंगे।

कानस्टिबल--देखिए, अच्छा सेठजी देखे अब यह मुकदमा क्या रंग लाता है !

सेठजी--देखो यही आदमी (भोजराज को दिखाकर) सब को लूटने के लिए उचका रहा था।

कानस्टिबल--क्यों रे, यह बात सही है ?

भोजराज--बिल्कुल गलत !

सेठजी—जब माल बरामद होगा, सब गुल खिल जायगा।

कानस्टिबल—सेठजी, आपको अपने माल का सबूत देना होगा।

चौधरी—सबूत ! आपको जिन्दा सबूत मिलेगा। जो नंगे बदमाश लोग हैं, जिनके घर में मुट्ठी भर अनाज नहीं दिखता वहां दो-दो चार-चार बोरी चावल मिलेगा। क्या सरकार इस पर विचार नहीं करेगी।

भोजराज—और जिस साहूकार के पास १०००० रुपये नहीं थे, उसके पास १ लाख हो गये। इसे भी सरकार पूछ सकती है या नहीं ?

कानस्टिबल—चुप बदमाश ! तुम रंगे हाथ पकड़े गए हो, कुछ न कहो।

भोजराज—हुजूर ! जबान मेरी है ! मैं जैसा चाहूं, बोल सकता हूं। कोई ब्लाक मार्केटिंग करके लखपति बन जाय और किसी को खाने के लिए अन्न न मिले ?

सेठजी—मिले क्यों नहीं, मेहनत करो, चोरी क्यों करते हो ?

भोजराज—हम चोर हैं; चोरी करते हैं किन्तु तुम साहूकार हो, फिर चोरी क्यों करते हो ?

सेठजी—हम चोरी करते हैं ? अहा ? हा....हा... भगवान मेरा बस चले तो अभी फाँसी का हुक्म दे दूं। हम को चोर बताता है। क्या गजब है !

चौधरी—हमारी चोरी नहीं होशयारी है !

कानस्टिबल—बेशक, होशियारी है ! तुम बक बक मत करो ! ये व्यापार करते हैं। नफा उठाते हैं तो कभी घाटा भी !

चौधरी—क्या कानस्टिबल साहब ! एक चोर-उचक्का हम से इस तरह पेश आएं और आप देखते रहें ?

कानस्टिबल—चोरी का इल्जाम तो इस पर लग गया है। अब फौजदारी केस चलाओ। दो-दो मुकदमें चलेंगे तो बेटों की तबीयत बहाल हो जायेगी।

सेठजी—बदमाश ! हम को चोर कहता है !

भोजराज—बदमाश हम नहीं है बदमाश तुम हो, चोर बाजारी......

कानस्टिबल—बस, चुप रहो ! (पुलिस नं. १ से) इन्हें अन्दर ले जाओ।

सेठजी—आपके थाने में हमारा अपमान हुआ है। मेरा दिल ......

कानस्टिबल—मुझे दुःख है सेठजी !

(दलाल का आना और सब का चौंकना)

दलाल—बस, हो चुका इन्तजाम ! मेरे पास भी चोर घुस गए।

कानस्टिबल—कहाँ पर ?

पुलिस नं. १—किधर से और कहाँ पर ?

दलाल—चलो देखो, जल्दी करो ! हे भगवान ! ये दुष्ट हमें जीने देंगे या नहीं ?

(परदा गिरना)

दृश्य दूसरा

(स्थान कमीश्नर की बैठक का बाहरी हिस्सा)

कमीश्नर—(अन्दर से) मार्केट की मिसल लाओ।

(चपरासी अन्दर जाता है और फिर बाहर आता है)

चौधरी—(चपरासी को विजिटिंग कार्ड देकर) जल्दी ... जरूरी काम है!

(चपरासी अन्दर जाता है और बाहर आकर चौधरी ... भीतर जाने का संकेत करता है।)

(दृश्य भीतरी, कमीशन की बैठक)

चौधरी—नमस्ते, कमीश्नर साहब! क्या हम को नगर मे ... देंगे या नहीं?

कमीश्नर—क्या बात है, हमें भी तो कहो।

चौधरी—बाजार में लूट-खसोट चल रही है। पुलिस ... प्रबन्ध नहीं हो रहा है।

कमीश्नर—तुम चिन्ता मत करो। मैं अभी मिल्ट्री बुलवा- ... प्रबन्ध किए देता हूं।

चौधरी—बीमार को मरने के बाद दवा देने से क्या ...। आप सरकारी अधिकारी गफलत में क्यों हैं? आप ... मर्ज की दवा हैं, जब कि हमारी रक्षा नहीं हो रही है?

कमीश्नर—अच्छा, तुम जाओ। सब व्यवस्था ठीक ... दूंगा। (टेलिफोन के नंबर फिरा कर; लूट मार करने ... पर गोली बार करने का आदेश देना।) अब सब ... हो जायेगा।

(कमीश्नर और चौधरी बाहर आते हैं।)

कमीश्नर—(सोचता हुआ) चौधरी जी! यह लूट ... चाँदी की न होकर अनाज की क्यों हो रही है?

(भोजराज आता है)

भोजराज—नमस्ते, कमीश्नर साहब!

चौधरी—(आश्चर्य से) अरे, तुम छूट गए?

कमीश्नर—कौन है यह?

चौधरी—यह वही है, जो लूट-मार करने वालों को ... भड़काता है।

भोजराज—मैं जमानत पर छूट गया हूं।

(सेठजी आते हैं)

सेठजी—कमीश्नर साहब! यह बिल्कुल झूठ बोल ... रहा है। इसे फिर से गिरफ्तार कर लीजिए, अन्यथा लूट-मार और फैलेगी और हम ही नहीं, सैकड़ों लोग तबाह हो जायेंगे।

कमीश्नर—ऐसा नहीं होगा। यह अपराधी है, तो ... पकड़ लेंगे! [भोजराज की नीचे से ऊपर की ओर ... देखकर] तुम कौन हो?

भोजराज—हम चोर हैं!

सेठजी—यह तो हम को चोर बताता है।

भोजराज—यह सब कमीश्नर साहब जानते हैं परन्तु एक एहसान के बोझ में दबे हैं। हम चोर हैं। या तुम यह तो ईश्वर ही जाने।

कमीश्नर—आप! तुम क्या बोल रहे हो?

भोजराज—सत्य कह रहा हूं।

(अन्नराज का आना है)

अन्नराज—भला हो इस सरकार का! तीन आदमी मारे गए। तुम्हारी गोलाबारी में। क्या यह सेना निरपराधों को सताने के लिए बनी है!

कमीश्नर—हरगिज नहीं! यह सेना तो बदमाशों और चोरों के लिए हैं और पुलिस तथा सेना इसका अवश्य दमन करेगी।

भोजराज—हजारों रुपये ब्लाक मार्केटिंग में कमाने वाला चोर नहीं है! हजारों रुपये घूस लेने वाले सरकारी पदाधिकारी चोर नहीं है। संसार में न्याय है या नहीं?

कमीश्नर—तुम सबूत लाओ, हम उन्हें सजा देंगे।

भोजराज—गुप्त कामों का सबूत कैसे दिया जा सकता है? यह काम आपके गुप्तचर विभाग का है कि वह भ्रष्टाचार को ध्यान पूर्वक और ईमानदारी से पकड़े।

कमीश्नर—मतलब यह कि पुलिस भी..................

सेठजी—हाँ, हाँ, इसे आपने समझ क्या रखा है? यह आपकी बदनामी करने को पीछे नहीं हटेगा! नगर में इसी के कारण लूट मार हो रही है। जब तक इन गुंडों का दमन नहीं होगा नागरिकों का जीवन खतरे में रहेगा।

भोजराज—चौधरीजी! परसों के खून रंग लाएंगे।

अन्नराज—व्यर्थ ही गरीबों के प्राण चले गए।

(कान्स्टेबल का आना। पीछे पुलिसों का ५-१० आदमियों को रस्सी से बाँध कर कमीश्नर साहब के पास लाना।)

कान्स्टेबल—कमीश्नर साहब, यह लोग भयकर नारे लगाते हुए सड़कों पर पकड़े गए। लूटने वालों को इन्होंने प्रोत्साहन दिया।

कमीश्नर—इन्हें कोटर ग्याड में ले जाओ।

बन्दी १—ब्लाक मार्केटिंग बन्द करो।

बन्दी २—ब्लाक करने वालों को सूली चढ़ाओ!

बन्दी ३—घूसखोरों को काट डालो।

बन्दी ४—कन्ट्रोल को हटा दो।

बन्दी ५—हमारी माँगें पूरी हों। (पुलिस ले जाती है।)

कमीश्नर— आश्चर्य ! क्या विद्रोह फैला रहा है। आप लोग जा सकते हैं, सब ठीक जायेगा।

(दोनों चले जाते हैं।)

कमीश्नर—कान्स्टेबल जाओ सब के बयान लो। कर्फ्यू आर्डर की पाबन्दी करो। (दोनों का चला जाना।,

दृश्य तीसरा
(पोलिस स्टेशन)

कमीश्नर—(भीतर आते हुए) थानेदार हैं ?

पुलिस—जी हैं ! (सैल्यूट देता है)

कमीश्नर—अमीन को बुलाओ !

(पुलिस जाता है और अमीन आता है)

अमीन—(घबराता हुआ) नमस्ते !

कमीश्नर—(नमस्ते कर) कर्फ्यू में कुछ व्यक्ति बन्दी बने या नहीं ?

अमीन—जी नहीं, चारों ओर शाँति है !

कमीश्नर—कितने बन्दियों का बयान लिया गया है और कितने लेना है ?

अमीन—४० बन्दियों के बयान ले लिये हैं और ५१० शेष हैं। वादी और प्रतिवादी के भी बयान तैयार हो जायेंगे।

कमीश्नर—पूरी रिपोर्ट कबतक मिलेगी ?

अमीन—प्रतिवादी के बयान लेते ही रिपोर्ट पेशकर दूंगा। (जाता है)

दृश्य परिवर्तन

भोजराज—अभी कितने बयान लेना है ?

अमीन—केवल प्रतिवादी के ही लेना है।

चौधरी—क्या मैं पहले बयान दे दूं ?

अमीन—पहले यह कहो कि 'मैं जो कुछ कहूंगा सच कहूंगा।'

चौधरी—जी हां, परमात्मा की सौगन्ध खा कर कहता हूं।

अमीन—क्या तुमने लूट-मार होते वक्त देखी थी ?

चौधरी—जी हाँ, प्रत्यक्ष ! यदि उस समय मेरे आदमी उनसे लड़ते तो बसर नहीं आते थे।

अमीन—तो क्या वे भी लूट मार में शामिल थे ?

चौधरी—नहीं, नहीं ! मेरे आदमी ऐसे बेईमान नहीं हैं। मैंने अपने नौकरों से कह दिया कि वे कुछ न करें।

अमीन—बस ! तो सबने तुम्हारे हुक्म की तामील की कम से कम चोरों को मना तो करना था !

चौधरी—ऐसा करता वे मुझे मार डालते !

अमीन—तुम्हारा दावा खत्म हो गया। सेठजी आपका बयान दीजिए। क्या आपने लूट ने वालों को देखा है ?

सेठजी—सैंकड़ों को देखा है और कइयों को जानता हूं।

अमीन—किसी के नाम बताइए ?

सेठजी—नाम तो……(कुछ सोच कर) परन्तु इन सब को बहकाने वाले तो भोजराज और अन्नराज हैं। यदि ये ऐसा न करते तो कभी लूट न होती

अमीन— भोजराज और अन्नराज से आपकी कभी बात हुई थी ?

सठजी-कई बार !

अमीन-वे क्या कहते हैं ?

सेठजी-उनके कहने का छोड़ो। रोज कहते थे चावल कहीं न भेजों, यहीं पर बेचो !

अमीन-तुम क्या जवाब देते ?

सेठजी-मैं तो कहता कि ऐसा कभी हो सकता है ? हम यहाँ वालों को बेचेंगे या बाहर वालों को ! हम जिस में फायदा देखते हैं बेच देते हैं।

अमीन- अच्छा, घर का अनाज पहले तुम खाते हो या घर वालों को खिलाते हो ?

सेठजी-जी पहले……पहले घर वालों को खिलाता हूं।

अमीन-बस ! आप अन्याय कर हैं। इन्हें चावल न बेचकर बाहर भेजते हो ! क्या आपका इनके साथ झगड़ा भी हुआ था ?

सेठजी-जी नहीं ? हाँ वे कभी अट-संट बकते और मैं सुनता रहता।

अमीन- लूट-मार कब हुई ?

सेठजी-तीन चार बार बात चीत होने पर पाँचवें बार लूट मार करने आए। भोजराज ने और अन्नराज ने लोगों को भड़काया और पहले मेरी दुकान लूट ली !

अमीन-अच्छा, अब तुम चाहते क्या हो ?

सेठजी-बस! हमें हमारा माल और परेशानी का हरजाना या जैसा सरकार उचित समझें। हम बड़े दुःखी हैं। व्यापारियों से न्याय कर सरकार अपनी न्याय प्रियता बतला दें।

अमीन-मैं आपका बयान कमीश्नर साहब के पास पेश करता हूं। वे जो निर्णय करें।

चौधरी-(२ हजार के नोट बताकर) देखिए, हमको हमारा अनाज दिला दें।

अमीन-खबरदार! याद रखना अभी मैं तुम पर इस का मुकदमा चला सकता हूं।

सेठ-क्या अपने अमीन साहब को ऐसा वैसा समझ रखा है।

अमीन-आप दोनों एक ही माल के चट्टे बट्टे हैं।

अमीन-भोजराज और अन्नाराज को बुलाओ। (पुलिस बुलाने जाता है और दोनों आते हैं।)

अमीन-भगवान की सौंगध खाओ कहो कि मैं सच-सच कहूंगा?

भोजराज—(सौगन्ध खाकर) मैं बिल्कुल सत्य कहूंगा। मैंने कई बार समझाया कि माल यहां पर बेचो न कि बाहर। परन्तु इन लोगों नहीं सुना और मजबूरन मुझे आन्दोलन करना पड़ा।

अमीन—देखो तुम्हारे कारण ही लूटमार हुई, खून-खच्चर हुआ है, इसका उत्तरदायी कौन है?

भोजराज—सरकार जिस पर समझे! पर हम तो चोर हैं!

अन्न--हां हम चोर हैं।

भोज--क्या आपको मालूम है--बेचारी माधो गरीब जिसके घर के तीन आदमी मारे गए।

अमीन--मैं सुनता हूं कि वह दीवाना हो गया है।

भो--हां, वह दुःख के मारे दीवाना होकर मारा-मारा फिर रहा है।

(माधो का फटे चिथड़े में पाव सेर चावल का बांधकर लाना)

माधो—हम चोर हैं! इस पावसेर चावल के? माधो-मौत भैया! मैं तबाह हो गया।

अमीन—लूटने क्यों गए थे? हराम की खाना चाहते थे न?

माधो--हमने हार कर प्रति मनुष्य पावसेर चावल की चोरी की! हम चोर हैं, हमें सजा दो, दंडित करो!

अमीन—अच्छा, माधो तुम्हारे घर के मरने वालों में कौन कौन थे?

माधो—मेरी माँ, बहन और मेरा पुत्र १८ वर्ष का नौजवान! मैं ही बद किस्मती से बच गया! मुझे भी गोली लग जाती तो यह दुःख तो सहन नहीं करना पड़ा।

अमीन—तुम घबराओ मत! सरकार तुम्हारी मदद करेगी। हमें तुमसे बड़ी हमदर्दी है परन्तु.......

चौधरी—क्या चोरों से हमदर्दी?

सेठजी—चोर-चोर मौसेरे भाई!

माधो—अमीन साहब! मेरा बयान लो। मैं सत्य कहूंगा। मुट्ठी भर चावल के लिए तीन जानें चली गईं।

चौधरी—झूठ बोल रहा है।

माधो—हाँ, हम झूठ बोल रहे हैं, क्योंकि हम गरीब हैं। तुम सब सच कहते हो, इसलिए कि तुम्हारे पास धन-दौलत है। हमारा सत्य भी झूठ है और तुम्हारा झूठ भी सत्य है! हम दीन हैं, गरीब हैं। तुम धनवान हो, सामर्थ्यवान हो।

सेठजी—अमीन साहब! इसको बीच में क्यों बुलाया गया है?

अमीन—हम जिस प्रकार रिपोर्ट जमा कर रहे हैं, उसमें आप दखल न दें।

माधो—हम को मत पूछो, कोई मत पूछो। हमारा भी भगवान् है। हम चोर हैं!

भोजराज—हाँ, हम चोर हैं!

(पुलिस का भीतर से आना)

पुलिस—अमीन साहब! कैदी भागना चाहते हैं।

अमीन—(पिस्तोल निकाल कर) कौन भाग रहा है?

पुलिस—कोई नहीं भाग रहा है!

अमीन—(पिस्तोल को नीचे रख कर) सेठजी और चौधरी मैं देख रहा हूं कि यह सब सब आप लोगों की ज्यादती है।

सेठजी--हमारी········?

चौधरी—तो क्या हम चोर हैं?

(शेष पृष्ठ ३४ पर)

(शेष पृष्ठ ३४ से)

अमीन—हां ये छोटे चोर हैं, और तुम बड़े चोर!

सेठजी—जरा सोच विचार कर.......................।

माधो—कोई चोर नहीं हैं, चोर हम हैं क्यों कि हम गरीब है।

काला बाजार करने वाले साहूकार सैंकड़ों मन अनाज घर में रख कर गरीबों का भूखों मरना उन्हें अच्छा मालूम होता है! मैं इन पावसेर चावल के लिए बरबाद हो गया। तीन प्राण इसके लिए चल बसे, अब मैं भी जीकर क्या करूं? (मेज से पिस्तौल उठा कर अपने को मार लेता है!)

अमीन—अरेरे! यह क्या?

माधव— मैं—.........हम चोर हैं (मर जाता है)

अमीन—अब आपकी कुशल नहीं है, सैठजी!

सेठजी और चौधरी— हमारा कुछ न बिगडेगा।

(एक चपरासी अमीन को पत्र लाकर देता है।)

अमीन—(पत्र खोल कर पढता है) अफसोस! मेरी बदली करा दी गई, अच्छा! यह चाल तो सेठजी की है।

सेठजी—हम चोर हैं?

भोजराज—हां, चोर हैं?

(शेष पृष्ठ ३४ से)

की कार्य कारिणी व परीक्षा समिति मेरे इन सद्भावनाओं से प्रेरित होकर लिखे गये विचारों से लाभ उठा कर अपना जन-हित कारी रूप सामने लाएं।

मैं अपने सुझाव को फिर संक्षेप में कहे देता हूं ताकि उसके अभाव की कोई शिकायत न रहे।

[१] पुस्तकों का पुनः संपादन, पाठों की संख्या में वृद्धि बालकों की वय का ध्यान रखते हुए विषयों का चुनाव -

[२] कविताएं उचित स्तर की हों।

[३] मूल्य लागत के अनुसार हो।

[४] मुद्रण ढंग का हो। व्यर्थ ही पृष्ठ भर देने की नीति सर्वथा त्याग दी जाए। [देखिए हिन्दी प्रदीप भाग-४ पृ. १, ३, ११, १५, १८, १९, २१, २२, २४, २५, २८, ३०, ३७, ३८, ४५, ४६, ४७, ५०, ५१, ५५, ५८, ६३, ६४, ६८, ६९, ७०, ७५, ७६, ७७ इन पृष्ठों में अधिकांश आधे से अधिक खाली हैं।]

[५] यदि स्थानीय लेखकों व कवियों से बालोपयोगी उत्तम कविताएं नहीं प्राप्त हो सकतीं, तो इलाहाबाद आदि से मंगवाकर पुस्तकों में दी जाएं।

दी मारवाडी प्रेस लि. द्वारा दूसरी बार बडी सजधज कर प्रकाशित हो रही है।

हैदराबाद डायरेक्टरी

हैदराबाद सम्बन्धी सम्पूर्ण ज्ञातव्य

प्रसिद्ध साहित्यिक, एडव्होकेटस् तथा डाक्टरर्स का संक्षिप्त परिचय

हैदराबाद हिन्दी डायरेक्टरी

राज्य विधान सभा तथा हैदराबाद राज्य से निर्वाचित सदस्यों का परिचय

कौन क्या है? स्तम्भान्तगत जीवनियां प्रकाशित होंगी।

व्यापारियों के लिए व्यापार की उन्नति करने का शुभावसर।

विज्ञापन आदि विस्तृत जानकारी के लिए लिखिए या कार्यालय में आकर मिलिए।

दी मारवाडी प्रेस लि.

२७०, अफजलगंज, हैदराबाद द०

(शेष पृष्ठ ३८)

इस लिए जहांतक देशकी बेकारी को दूर करने का सवाल है और लोगोंकी बची और बेकार शक्ति के सदुपयोग का सवाल है उसके लिए घरेलू उद्योग शुरू करने चाहिए। ग्रिन-कुछ करने में सर्वोदय अर्थ प्रणाली का लाभ उठाना चाहिए और जहां अन्तर्राष्ट्रीय मामलों की, और दुनिया के बाजार और उसमें होने वाली प्रतिस्पर्धाकी बात है वहां हमें सर्वोदय प्रणाली को दूर रखकर विदेशी प्रणाली को अपनाना चाहिए। ऐसा करने से देश का धन देश में रहेगा और बाहर से जो वस्तुएं मंगवानी पड़ती हैं उसके लिए संचित कोष को खाली नहीं करना पडेगा। देश के संचित कोष की सुरक्षितता और उसमें वृद्धि निःसंदेह ही हमारी प्रगति में सहायक सिद्ध होगी।

सूर्य-तापसे भोजन पकाइये

भोजन गर्म करने या पकाने के लिए सूर्य-तापके उपयोग का प्रश्न बहुत दिनों से लोगों का आकर्षण केंद्र बना हुआ है और पिछले सौ सालों में इस दिशा में कई प्रयत्न किये गये हैं। फिर भी इस संबंध में अभी अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं है और ऐसा मालूम पड़ता है कि सूर्य की शक्ति से खाना पकाने के सम्बन्ध में ढूंढे गये तरीकों की कार्य-कुशलता आंकने के अब तक प्रयत्न नहीं किये गये। वैज्ञानिक और औद्योगिक गवेषणा पत्रिका (जर्नल आफ. साइंटिफिक एण्ड इंडस्ट्रियल रिसर्च) के मार्च अंक के मुख्य लेख में इस विषय के साहित्य और राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला, नई दिल्ली के परीक्षणों पर प्रकाश डाला गया।

अन्य गर्म देशों के समान भारत में भी लगभग सारे साल सूर्य की पर्याप्त शक्ति उपलब्ध होती है। इस उपलब्धि और भारत में सामान्यतः ईंधन की कमी ने सूर्य की गर्मी को खाना पकाने के काम में लाने की छानबीन की प्रेरणा दी। परीक्षणों से ज्ञात हुआ है कि भारत में सीधे 'रिफलैक्टर' किस्म के पाक-यंत्र (कुकर) अधिक सस्ते और व्यापक दृष्टि से उत्तम सिद्ध हो सकते हैं। छोटे यंत्रों पर भी न केवल दोपहर के समय वरन् सुबह और शाम के काफी समय में खाना पकाया जा सकता है। धातु के बने रिफ्लैक्टरों से कुछ ऐसे छोटे पाक-यंत्र बनाये गये हैं और वे संतोषजनक कार्य कर रहे हैं।

(भा. स. प. सू. वि. से)

ज्ञातव्य बातें

१. भारत में प्रत्यक्ष करों का स्तर, जो आमदनी के उच्च खंडों पर ८२ प्रतिशत है, संसार के अधिकांश देशों की अपेक्षा ऊंचा है। संभवतः अमेरिका और ब्रिटेन का स्तर इससे भी अधिक ऊंचा है, जो क्रमशः ९१ प्रतिशत और ९७.५ प्रतिशत है।

२. सन् १९५२ में भारत में सिलाई की ५०,०४५ मशीनें बनाई गयीं जब कि १९५१ में ४४, ४६० बनाई गयी थीं।

३. मंहगाई भत्ता समिति की सिफारिशों को क्रियान्वित करने से १५, २५,००० व्यक्तियों को लाभ पहुंचेगा और सरकार को प्रति वर्ष ५ करोड़ रु. का अतिरिक्त व्यय करना पड़ेगा।

४. १९५१-५२ में भारत में अनाज और दालों की खेती का कुल क्षेत्रफल २३, ४५,५८,००० एकड़ था, जिसमें से ४, १४, ४६,००० एकड़ उत्तर प्रदेश में और २, ७०, ८०,००० एकड़ बम्बई में था।

५. पिछले वर्ष के अंत में अखिल भारतीय रेडियो से प्रति दिन ७३ समाचार बुलेटिन प्रसारित किये जाते थे, जिस में से ४४ भारत में रहने वाले श्रोताओं के लिए और २९ विदेशों के श्रोताओं के लिए थे। भारत के श्रोताओं के लिये प्रसारित समाचार बुलेटिनों की अवधि ९ घंटे १६ मिनट प्रति दिन और विदेशों के श्रोताओं के लिये बुलेटिनों की अवधि ५ घंटे थी।

(भा. स. प. सू. वि. से)

चीन-युद्ध या जन-युद्ध

१ मित्र—समाचार पत्रों में आजकल चीन, चीन के चर्चा होते हैं। नया चीन, पुराना चीन, लाल चीन, कम्युनिस्ट चीन, हिन्द चीन, यह चीन, वह चीन इतने कितने चीन हैं ?

२ मित्र—क्रांति कारी चीनने दुनियां को अचम्भे में डाल दिया है। विज्ञान शक्ति और मनुष्य शक्ति का युद्ध हो रहा है। न जाने इसका परिणाम क्या होगा !

१ मित्र—चीन किधर है ?

२ मित्र—हमारे पूर्व उत्तर दिशा के मध्य में एक महान राष्ट्र है, जिसकी मनुष्य शक्ति सब राष्ट्रों से बड़ी है। वे ५० करोड़ हैं और उन में अब जागृति फैल रही है।

१ मित्र—तो क्या हमारे देश में यह कार्य नहीं हो रहा है ?

२ मित्र—होरहा मित्र, परन्तु उन में कुछ तेजी ज्यादा है, वे सर्वोदयोन्नति कर रहा है।

३—चीन का युद्ध ही संसार को भविष्य का मार्ग बतायेगा। संसार एक नीति को अपनाएगा और विश्वसंघ का मार्ग बतलाया जा सकेगा। कई कहते यह पूंजीवाद और साम्यवाद का युद्ध है। खत्म हो कर रहेगा।

१ मित्र—परन्तु मित्र, राज्य बढ़ाने की पालिसी चीनियों में भी पाई गई।

२ मित्र—क्या आपके हिन्दुस्तान में नहीं है ?

१ मित्र—हां नहीं हैं। काश्मीर हमारा है और पाकीस्तान भी हमारा है। ब्रह्मा, लंका, भी भारत में मिले हुये हैं।

२ मित्र—तिब्बत पर सब बौद्ध रहते हैं।

१ मित्र—परन्तु हिन्द चीन की तरह तिब्बत पर भारत का प्रभाव है। बौद्ध धर्म कहाँ का है ?

२ मित्र—हमारे भारत देश का। बौद्ध भगवान हमारे ही हैं।

१ मित्र—हमारे भी हैं। नहीं पहले बुधदेव हमारे हैं।

३ मित्र—भला इस देश से किस देश ने शिक्षा नहीं पाई।

१-२ मित्र—सब हैं हमारे गुरु नाई।

जैसे को तैसा

१ मित्र—बड़ी मुश्किल है, जैसे को तैसा बनना पड़ता है ?

२ मित्र—क्या हुआ ?

१ मित्र—क्या होता है ! अहिंसा के देश में संसद् की यह बाते देख कर मुझे लज्जा आती है ?

२ मित्र—काहे की लज्जा ?

१ मित्र—मत पूछो मित्र !

२ मित्र—आखिर बात क्या है ? कहो भी तो !

१ मित्र—भारत के सुरक्षा उद्योगों को विकसित करने की क्या योजना है ?

२ मित्र—अरे मित्र यह तो बहुत ही अच्छी बात है।

१ मित्र—अधिकांश संसद् के सदस्य इस पक्ष में—

२ मित्र—आखिर तुम सुरक्षा का क्या अर्थ ले रहे हैं ?

१ मित्र—मैं कहता हूं यह सुरक्षा नहीं सैनिक चाह को बढवा देने की बात है।

२ मित्र—धन्य है मित्र ! तो क्या आपके विचार में अपनी आप रक्षा करना भी पाप है ?

१ मित्र—मित्र खुलासा आपो आप है। यह सत्य अहिंसा से कैसा मिलाप है ?

३ मित्र—अरे मित्रों जैसे को तैसा होना पड़ता है ! यदि तुम समझते हो पाप है तो झगडा साफ़ है। चाणक्य नीति पढिए, महाशयजी !

संसार का पटाक्षेप

१ मित्र—भाई यह स्तालिन कौन था ?

२ मित्र—यह रूसका प्रधान था ।

३ मित्र—राज नीति में महान थे !

१ मित्र—जिस प्रकार हमारे गान्धीजी थे ।

२ मित्र—परन्तु स्तालिन में और महात्मा गान्धी में अन्तर था ।

१ मित्र—वह क्या ?

२ मित्र—स्टालिन संसार का महान् कूट नीतिज्ञ था ।

१ मित्र—और गान्धीजी ।

२ मित्र—गान्धीजी महान् त्यागी और अहिंसक थे। वह डंडे से काम लेना जानते थे और हमारे गान्धीजी सत्य, अहिंसा और प्रेम से विजय पाते थे ।

३ मित्र—किन्तु मित्र स्तालिनवादी भी संसार के प्रत्येक देश में मौजूद हैं, जिन्हें हम कम्युनिस्ट कहते हैं ।

१ मित्र—अच्छा तो वे कम्युनिस्टों के नेता थे ?

२ मित्र—हां ! अब गान्धीवाद सर्वोदय का सितारा भी हर देश में चमक रहा है ।

३ मित्र—अब देखना है संसार में सैनिकवाद जिन्दा रहेगा या सत्य, प्रेम, अहिंसा ?

२ मित्र—यह संसार के नाटक का बड़ा ड्राप है ।

१ मित्र—देखना है यह पटाक्षेप क्या रंग लायगा ?

नया सवेरा

१ मित्र—अमेरिका के प्रधान बदलना, और स्तालिन का सूर्य ढलना एक नया सवेरा लायेगा ।

२ मित्र—अरे भाई यह संसार है बुराई भी होती है और भलाई भी । राजा लोग योंही आपस में कट मरते थे और यह गणराज्य भी क्या शांति से चल रहा है ?

१ मित्र—हां प्रयत्न तो कर रहे हैं परन्तु, उस में 'परन्तु' है ।

२ मित्र—अब भी संसार में वह राज्य बढ़ाने की नीति, एक दूसरे को अधिकार में लेनेकी नीति ज्यों की त्यों हैं ।

१ मित्र—हां (ठंडी सांस लेकर) यह भी सही है ।

३ मित्र—इन दोनों के बदलने से बेचारी "राजनीति" का क्या होगा ?

१ मित्र—बड़े चिन्ता करनेवाले, अजी यह तो कानून काले, यों ही चलते रहेंगे इसकी कौन टाले ।

२ मित्र—संसार में लाखों विद्वान हैं लाखों मूर्ख अनजान हैं, परन्तु इन पढ़े लिखे मूर्ख विद्वानों को यह सीधी साफ बात, समझ में नहीं आती कि युद्ध या लड़ाई करना बुराई है ।

३ मित्र—देखो यों ही रातें होती है यों ही नया सवेरा होता है । चलो हमें क्या ? इनसान यों ही हंसता है यों ही रोता है !

"नवजीवन वाचनालय का द्वितीय वर्ष"

हमारे पूर्वजों ने पहले से ही नये वर्ष "युगादी" नाम रखा है। जिसके आजकी संसार के अधिकांश देश मानते हैं। वे ५२-५३ कहते हैं हम सं. २०१० कहते हैं। इसी शुभ दिन सं. १८८४ युगादी को प्रेस की स्थापना हुई थी और इसी युगादी सं. २००४ में प्रेस ने लिमिटेड का रूप धारण कर लिया । आज सं. २०१० युगादी प्रेस की स्थापित तिथि है आज हम प्रेस द्वारा स्थापित नवजीवन वाचनालय का प्रथम वार्षिक उत्सव भी मना रहे हैं । वाचनालय का समय प्रातः ७ से ९ और सायं काल ५ से ८॥ तक है । वाचक वृंद उपरोक्त समय में पधार कर लाभ उठा सकते हैं ।

इस समय में वाचनालय की पुस्तकें भी पढ़ सकते हैं और मूल्य रखने पर घर पर भी पढ़ने को दी जाती हैं। इस वाचनालय में हिन्दी के मासिक ७०-७५ तथा अनेक साप्ताहिक और हिन्दी के ३ दैनिक आते हैं । इस के अलावा अंग्रेजी उर्दू तेलगु के दैनिक भी आते हैं और भी कर पत्रिकाएं आती हैं परन्तु हिन्दी की विशेष पत्रिकाएं ही आती हैं । गत वर्ष प्रेस का 'रजत जयती' मनाई गई थी जिसका चित्र अन्यत्र मुद्रित है ।

पुस्तकालय के प्रबन्ध में भी सुधारणा करने का निश्चय किया गया है । जिस से वाचनालय में आने वालों को अधिकाधिक लाभ हो सके !
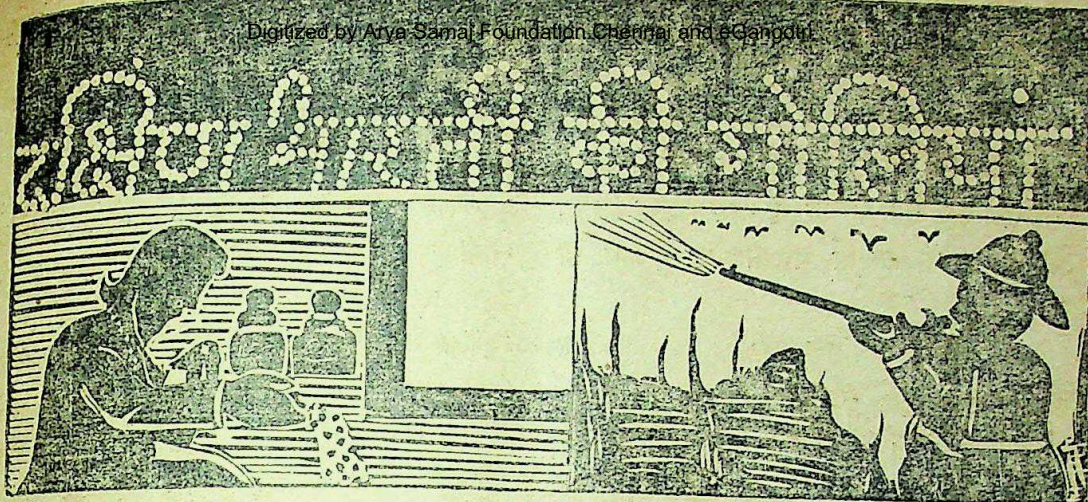
सत्ता की जय

१ एक मित्र ने एक दूसरे मित्र से कहा "भाई ! विश्व में बड़ा परिवर्तन आने वाला है !" तो दूसरेने उत्तर दिया "क्या भूलोक का मान चित्र ही बदल जायगा ?"

इन मित्रों को यह नहीं मालूम कि भूलोक ही क्या प्रत्येक मानव का परिवर्तन होता है। अमेरिका का प्रधान तथा रूसका प्रधान बदल गया है। एक मरकर बदल गया है तो दूसरा वोटों से जीतकर बदल गया है। इसी लिए तो लोगों में बातें होती हैं कि संसार का प्रबन्ध बदलने वाला है। दोनों शक्ति शाली देश एक समय से आपस में रगड़ते आए हैं।

विश्वसंघ

२ सुनते हैं विश्वसंघ, विश्वसंघ के सेक्रेटरी जनरल नजीब के स्थान पर विजय लक्ष्मी पंडित को लेने वाला है। यदि संसार को सत्य, अहिंसा और प्रेम से विजय प्राप्त करनी है तो यह कार्य तुरन्त होजाना चाहिए। क्यों कि लंका रूपी महाताप से सीता रूपी शांति को लाने का दूसरा कोई उपाय नहीं। शायद भारत फिर एक बार संसार का गुरु बने।

गुरु और शिष्य

३ एक विद्यार्थी ने मास्टर ने पूछा-पाकिस्तान हिन्दुस्तान का खट्टा-मिट्ठा कुछ निराला है। कहीं तो समझौतों पर दस्तखत देते हैं, तो कहीं विरोध भावना से भरे शब्दों के लेख पढ़ने को मिलते हैं। गुरु ने कहा-ना समझ चेले ! यह "राज नीति" है हम तो क्या हमारे गुरुजी समझ नहीं पाए इसे। विद्यार्थी ने कहा-फिर आप हमारे गुरु होने योग्य नहीं। गुरु खिसियाना-से होकर खामोश होगए और विद्यार्थी की इस हरकत से नाराजगी प्रकट की।

राष्ट्रभाषा

४ राष्ट्र भाषा प्रचार में कई संस्थाएं और करोड़ों व्यक्ति लगे हुए हैं परन्तु भारत भर में हिन्दी प्रचार की कैसी स्थिति है इसका आंकड़ों से तो पता चला है कि हिन्दी का प्रचार है ही नहीं। हिन्दुस्तानियों के सरदारों ने बैठने २ ही तो मातृभाषा को पहले मान लिया है, यदि इसके विरोध में, हो यानी पहले राष्ट्रभाषा बादमें मातृभाषा तो यह बहुत जल्द हिन्दी राष्ट्रभाषा हो सकती है। अन्यथा इसे कोई नहीं मानेगा। यदि बेचारे अंग्रेज आंग्रेजी न चालू करते तो मालूम नहीं भारत की क्या दशा होती। बेचारी सब भाषाओं की माता संस्कृत को अंग्रेजों ने भी दबाया था और अब हिन्दुस्तानी भी उन्हीं के पद चिन्हों पर जा रहे है। हिन्दी को राष्ट्र भाषा मान कर भी कुछ नहीं कर रहे हैं।

हिन्दी प्रचार सभा

५ हैदराबाद हिन्दी प्रचार सभा की नीति को दुनिया के सब लोग अपना सकते हैं। क्यों कि हैदराबाद हिन्दी प्रचार सभा की यह विशेष विशेषता है कि उसके विरोध में कोई कुछ कहे, कोई कुछ लिखे वह अपने कानों पर जूं नहीं रेंगने देती। "सुना-अनसुना" वाली नीति को सब लोगों को अपनाना चाहिए। दक्षिण भारती के लेख माला तथा अन्यान्य पत्र पत्रिकाओं को देखने वालों को मालूम होगा कि हिन्दी का प्रचार है या लूट खसोट का व्यापार हो रहा है? भगवान इसके सदस्योंको सुबुद्धि दे ताकि सच्चे हिन्दी प्रचारक बनकर यश के भागी बनें।

विज्ञान और ईर्षा

६ भारत विज्ञान में भी आगे बढ़ रहा है यह देखकर दूसरे देश के लोग ईर्ष्या करते हैं। ईर्षा तो बहुत अच्छी चीज़

है। बिना ईर्षा के कोई आगे नहीं बढ़ता। इसलिए ईर्षा प्रत्येक को करनी चाहिए, परन्तु ईर्षा कार्य को आगे बढ़ाने वाली हो। भारतीय वायु सेना का सम्पूर्ण भारतीकरण होगया है, अब विज्ञान का भी सम्पूर्ण भारतीकरण होजाय तो अच्छा है।

भाषावार प्रांतरचना

७ बल्लारी में छात्रों द्वारा प्रदर्शन किया जा रहा है कि हम आन्ध्र में नहीं जाएंगे। मद्रास राज्य के कन्नड़ भाषियों की मांग है कि बल्लारी जिला विशुद्ध कन्नड़ प्रांत है। अब यह आन्दोलन क्या रंग लाता है देखिए। प्रांत रचना के चमत्कार शीघ्रातिशीघ्र सामने आएंगे सरकार को सावधान होजाना चाहिए।

हाली-कल्दार

८ हैदराबाद में हाली से कल्दार हो रहा है। कल्दार कल से बनता है, तो हाली भी कल से बनता है। इसका नाम हाली कैसा होगया ? हाली को उस्मानिया सिक्का भी कहा जाता है और कलदार को कंपनी और सूरती रुपया भी कहा जाता है। सारांश हैदराबाद का सिक्का बदलने से कइयों को आश्चर्य और कठिनता मालूम होती है जो कि निरर्थक है। ३५-४० वर्ष पहले यहां चलनी और सुगर रुपये का प्रचार था। हैदराबाद में सन १९२० तक भी बाजारों में चलनी का भाव होता था जो कि रु. ११०) चलनी के १००) हाली होते थे। और सुगर तो १० आने हाली का होता था और निकट १०-१२ वर्ष तक लोग रसमों में देते लेते थे। और कलदार का भाव नीचे ऊपर होता था। एक बार कंपनी ३) ४) सैकड़ा के भाव का रह गया था और एक बार २०) सैकड़ा भी भाव होगया था। इससे सरकार ने १६॥=)८ भाव सदैव के लिए मुकर्रर कर दिया। अब भी चुनांचे बेंक्स तथा बेंकर्स कुछ भाव रखकर देते लेते हैं। सारांश व्यापारियों को या और किसी को घबराने की आवश्यकता नहीं है। धीरे २ जिस प्रकार सुगर और चलनी का सिक्क विलीन होगया, उसी तरह हाली का होकर रहेगा।

कल्दार-बरकत नहीं करता

९ बहुत से सज्जन फरमाते हैं कि हाली पैसे में बरकत थी यानी रुपये के ९६ पैसे, १९२ पाइयाँ होती थी। तो क्या कल्दार से भारत भर में बरकत नहीं थी ? केवल हैदराबाद में ही बरकत थी। पाइयां तो सब जगह पाइयां होती हैं। अजी यह तो भारत का ही एक सिक्का हो रहा है। बहुत से लीडरों के मस्तिष्क में तो दुनिया का एक सिक्का कर देने की है। फिर देखें क्या क्या कठिनाइयां सामने आएगी।

नया साहित्य

(समालोचना के लिए दो-दो प्रतियां आना आवश्यक है।)

सुबोध श्रीगुरु चरित्र (मराठी)

लेखक:— श्री. ना. हुद्दार
प्रकाशक:— अरविन्द श्री. हुद्दार, औरंगाबाद
पृष्ठसंख्या:— १७१, मूल्य २॥)

श्रीगुरु के चरित्र पर मराठी में अब तक कई ग्रंथ ओवियों में प्रकाशित हुए हैं परन्तु साधारण जनता के लिए यह ग्रंथ उपयुक्त नहीं है, क्यों कि लोगों की रुचि जितनी कहानी रूपी चरित्र की ओर होती है, उतनी ओवी और गीतों के ग्रंथ से नहीं। श्री हुद्दारजी ने अपनी इस पुस्तिका में श्रीगुरु के चरित्र को छोटी-छोटी कहानियों के रूप में बना कर लिखा है। साधारण जनता को श्रीगुरु के चरित्र से परिचित कराने में आपका यह ग्रंथ सफल कहा जा सकता है ग्रंथ कहानी के रूप में होने के कारण जनता इसे सानन्द अपनाएगी और जिस से अनभिज्ञ रही, परिचित हो जायेगी।

रफ कागज़ होते हुए भी छपाई-सफाई सुन्दर है। मूल्य भी उपयुक्त है। पुस्तक संग्रहणीय कही जा सकती है।

'आरसी'

सम्पादिका:— श्रीमती लीलाप्रकाश
पता: ११३/११६, स्वरूप नगर, कानपुर

'आरसी' का मार्च का अंक आठवां अंक है। हिन्दी पत्रजगत में पारिवारिक पत्रिकाओं की जितनी आवश्यकता है, उतनी उपलब्ध नहीं है। पारिवारिक पत्रिकाओं में "मनोरमा" और उसके बाद "आरसी" ही ऐसी पत्रिका है, जो पारिवारिक शब्द की यथार्थता सिद्ध कर रही है।

'आरसी' आधुनिक नारी जाति की उन्नति की एक मात्र पत्रिका कही जा सकती है। हर माह ६० पृष्ठ की यह पत्रिका केवल ।=) आने में स्त्रियों का मार्ग दर्शन करा रही है। हमें आशा है पत्रिका अपने उद्देश्य में सफल होगी!
वार्षिक ३) अर्ध वार्षिक १॥)

संस्कृत प्रचारकम्

सम्पादक:- श्री रामचन्द्र भारती
पता:- जोगीवाड़ा, नई सड़क, देहली

राष्ट्र की एकता के लिए, भाषा की एकता के लिए और हमारी संस्कृति की उन्नति के लिए संस्कृति ही एक भाषा है, जिस से हम उपरोक्त समस्याओं की एकता स्थापित कर सकते हैं अतः इस दृष्टि से संस्कृत का प्रचार होना बहुत ही आवश्यक है। लोगों की धारणा है कि संस्कृत बड़ी कठिन भाषा है; पर यह नितांत झूठ है।

लोगों की इस झूठी धारणा को दूर करने और सबसे प्राचीन और उन्नत भाषा संस्कृत का प्रचार करने में 'संस्कृत प्रचारकम्' का प्रकाशन स्तुत्य है।

वार्षिक मूल्य ५

तारीखवार अप्रैल मास के समाचार

विश्व

ता. १ पाकिस्तानी पंजाब में जगह जगह जफरुल्ला नीति विरोधी आन्दोलन। फल स्वरूप सरकार द्वारा ६९ व्यक्ति गिरफ्तार।

ता. २ ईरानी सेना व पुलिस के प्रमुख को ईरान के प्रधान मंत्री डा. मुसादिक ने ईरान की सरकार को उलटने के षड़यंत्र के आरोप में बर्खास्त कर दिया।

ता. ३ तेहरान में २०० से अधिक साम्यवादी गिरफ्तार।

ता. ४ लाहोर में आज से एक सप्ताह के लिए रोजाना ९॥ घंटे का कर्फ्यू लागू।

ता. ५ लाहौर में पुलिस द्वारा उपद्रवी भीड़ पर गोली चलाई गई फल स्वरूप १० मरे और १४ घायल !

ता. ७ साम्यवादी नेता मार्शल स्टालिन का स्वर्गवास। इनकी जगह रूस के प्रधान मंत्री श्री मोलोटोव बने।

ता. ८ मिश्री नौ सेना का एक सुरंग साफ करने वाला जहाज सिकन्दरिया से १५ मील की दूरी पर डूब गया। इसमें सवार ५५ नाविक भी डूब गये।

ता. ९ नये रूसी नेता स्टालिन के उत्तराधिकारी श्री मालेनकोफ ने इस बात की घोषणा की कि सोवियत रूस शान्ति की नीति पर दृढ रहेगा।

भारत

ता. १ मध्य प्रदेश की सरकार ने भूदान विधेयक का मसविदा प्रकाशित किया। विधेयक के अनुसार एक बोर्ड बनाया जायगा जो भूदान यज्ञ में भूमि ग्रहण करेगा। बोर्ड के सदस्यों की नियुक्ति विनोबा भावे करेंगे।

ता. २ पेप्सू के मुख्य मंत्री श्री ज्ञानसिंह राड़ेवाला ने अपने पद से त्याग पत्र दे दिया।

—दिल्ली राज्य विधान सभा द्वारा दुकान कर्मचारी बिल पास।

ता. ३ लोक सभा में केन्द्रीय उत्पादन कर विधेयक स्वीकार। इसमें देश के एकत्र उत्पादन कर का विभिन्न राज्यों में बांटने का तरीका बताया गया है।

ता. ४ पेप्सू में राष्ट्रपति का शासन प्रारंभ। राजप्रमुख को सहायता के लिए सलाहकार की नियुक्ति।

ता. ५ पंजाब विश्व विद्यालय की हिन्दी भूषण परीक्षा का परिणाम प्रकाशित।

ता. ७ भारतीय रेलवे शताब्दी प्रदर्शनी का प्रधान मंत्री श्री नेहरू द्वारा दिल्ली में उद्घाटन।

ता. ८ उत्तर प्रदेश में ८० हजार अध्यापकों की हड़ताल आरंभ। इस हड़तालका संचालन अध्यापक मंडल कर रहा है।

घर

ता. १ हैदराबाद के मुख्य मंत्री श्री बी. रामकृष्णराव ने अपने मंत्रि मंडल के १० सदस्यों में विभागों का पुनः विभाजन कर उसकी घोषणा की।

ता. २ राजप्रमुख निजामने विधान सभा के बजट सेशन का उद्घाटन किया !

ता. ३ वित्तमंत्री श्रीमेलकोटे ने विधान सभा में १९५३–५४ के लिए घाटे का बजट प्रस्तुत किया।

ता. ४ साम्यवादी नेता श्री के. साम्बमूर्ति को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया।

ता. ५ तालुके सिरसिल के निवासी श्री वेंकटराव देसाई ने भूदान यज्ञ में ५० एकड़ भूमि प्रदान की।

ता. ६. साम्यवादी नेता स्वर्गीय श्री स्टालिन के स्वर्गवास के कारण राज्य के सभी सरकारी कार्यालयों के झण्डे उतार दिये गये।

ता. ७ विधान सभाने अनुमान समिति तथा लेखा समिति के सदस्यों का निर्वाचन किया।

ता. ९ श्री मेलकोटे ने विधान सभा में इस बात का स्पष्टीकरण किया कि सरकारी कर्मचारियों को बटावन काटकर हाली की जगह कल्दार वेतन दिया जायगा।

विश्व

ता. १० भारत सरकारने दक्षिण अफ्रीका की सरकार को एक विरोध पत्र भेज कर वहां की संसद में पेश एक विधेयक पर नाराजी प्रकट की। इस विधेयक के अनुसार दक्षिण अफ्रीका में रहने वाले नागरिक अपनी पत्नी और बच्चों को वहाँ नहीं लेजा सकेंगे।

ता. ११ पश्चिमी पंजाब के नगरों में छुरे बाजी व आग जनी के कारण अहमदियों में बेचैनी और प्रस्थान।

ता. १२ अहमदिया विरोधी आन्दोलन के बढ जाने के कारण पश्चिमी पंजाब में पाकिस्तान सरकार ने फौजी कानून लागू किया है।

ता. १३ रूसी जेट विमानों द्वारा ब्रिटिश बमवर्षक को उडाये जाने के कारण रूस के प्रति प्रबल विरोध प्रकट करने के सम्बन्ध में चर्चिल का आदेश दिया।

ता. १४ स्वेज क्षेत्र को खाली करने के प्रश्न पर आंग्ल मिश्री वार्ता काहिरा में अमरीकी राजदूत जैफर सन कैफ़री की उपस्थिति में प्रारंभ।

ता. १५ पाकिस्तान के वित्तमंत्री मुहम्मदअली ने पाकिस्तान संसद में ... लाख रुपये के मुनाफे का छठा बजट प्रस्तुत किया।

ता. १६ पश्चिमी पंजाब के लाहौर तथा अन्य नगरों के व्यापारियों ने अहमदिया लोगों को राशन देने से इन्कार कर दिया।

ता. १७ मिश्र के प्रधान मंत्री जनरल नजीब ने हिरा में भारत मिश्र ... का उद्घाटन किया।

ता. १९ मिक फांऊंड लैंएड में एक १० इंजिन वाला शक्तिशाली अ-

भारत

ता. ९ पांचवां अखिल भारतीय सर्वोदय सम्मेलन तीन दिन के बाद चांडिल में सफलता पूर्वक समाप्त।

ता. १० जनसंघ, हिन्दू महा सभा तथा रामराज्य परिषद द्वारा आरंभ किये आन्दोलन के फल स्वरूप भारत सरकार ने दिल्ली में ७९ आन्दोलन कारियों को गत पांच दिनों में गिरफ्तार किया।

ता. ११ शिरोमणि अकाली दल के अध्यक्ष सरदार हुकुम सिंह ने आज घोषणा की कि अकालियों की धार्मिक स्वाधीनता के लिए जो संघर्षात्मक सत्याग्रह प्रारंभ किया जाना था वह स्थगित कर दिया गया है।

ता. १२ उत्तर प्रदेश में प्राईमरी स्कूल अध्यापकों का सत्याग्रह पांच दिन के बाद समाप्त।

ता. १३ ग्वालियर से १५ मील दूर एक गांव में बरातियों और डाकुओं में झड़प। फलस्वरूप १० बराती जिनमें दो पुलिस मैन भी थे, मारे गये। डाकुओं ने बरात को लूट लिया।

ता. १४ आन्ध्र प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष श्री संजीव रेड्डी ने बताया कि आंध्र राज्य के निर्माण की घोषणा १६ मार्च के पूर्व ही हो जायगी। १६ मार्च को तेलुगु वर्ष आरंभ होता है।

ता. १५ राष्ट्रपति भवन में आयोजित एक समारोह में राष्ट्रपति ने इस वर्ष के चार सर्व श्रेष्ठ भारतीय संगीतज्ञों का सम्मान किया तथा उन्हें उपहार भेंट किया।

ता. १६ राष्ट्रपति ने संसद के सदस्य श्री. अरुण चन्द्र गुहा को भार-

घर

ता. १० स्वास्थ्य तथा मेडिकल विभाग के कर्मचारियों ने एक जुलूस निकाला जिसमें मशालों का उपयोग किया गया था।

ता. १३ विधान सभा में आज वित्त मंत्री श्री मेलकोटे ने हाली सिक्का समाप्ति बिल पेश किया।

ता १४ स्वायत्त शासन मन्त्री ने विधान सभा में बताया कि हैदराबाद शहर में सिनेमा घरों की संख्या सीमित रखने के बारे में सरकार के सामने कोई प्रस्ताव नहीं है। इस समय हैदराबाद में २६ सिनेमा थिएटर हैं तथा ३ और थियेटरों के लिए लाइसेंस दिये गये हैं।

ता. १५ हैदराबाद नगर पालिका के नगरपाल के चुनाव को अप्रैल के प्रथम सप्ताह तक बढ़ाया गया।

ता. १६ संयुक्त राष्ट्र की जनरल असेम्बली में भारतीय सदस्य श्री मेनन ने उस्मानिया विश्व विद्यालय की फाकल्टी आफ आर्ट्स में तीन वर्ष तक सम्मानित आगंतुक प्राध्यापक स्थान को स्वीकार करने की अनुमति दी।

ता. १७ राजप्रमुख निजाम की की ७० वीं वर्ष गांठ मनाई गई।

ता. १९ ताज ग्लास फेक्ट्री के कर्मचारियों की बैठक में माजी मंत्री श्री राजू का भाषण।

ता. २० नलगोंडा में धान की लेवी वसूली बन्द कर दी गई।

ता. २१ उस्मानिया युनिवर्सिटी के केमिकल स्टोअर को आग लग गई। फलस्वरूप १५ हजार का नुकसान।

ता. २२ वरंगल जिले में हनमकोंडा के हजार स्तम्भों के मन्दिर के एक कुंएं से गत शुक्रवार को १४ शव निकाले गये।

मरीकी हवाई जहाज विफल। दुर्घटना में २३ व्यक्ति मरे।

ता. २० ईरान द्वारा तेल विवाद पर आंग्ल अमरीकी प्रस्ताव अस्वीकृत।

ता. २१ चेकोस्लाविया की राष्ट्रीय विधान सभा ने श्री. एन्टोनिन जी पोटी की को चेकोस्लाविया का नया राष्ट्रपति निर्वाचित किया।

ता. २२ मिश्र के प्रधान मंत्री श्री नजीब ने नील नदी के किनारे १० हजार की भीड़ के सामने प्रतिज्ञा की कि या तो वे ब्रिटिश सेनाओं को मिश्र से निकाल देंगे या उनका खात्मा कर देंगे।

ता. २३ साम्यवादी विद्रोहियों ने अचानक आक्रमण करके बर्मा के सरकारी शस्त्रागार को लूट किया। यह घटना १८ मार्च को प्रातःकाल में हुई।

ता. २५ लन्दन में भारतीय विद्यार्थियों के लिए ब्रिटेन स्थित भारतीय उच्चायुक्त श्री खेर ने एक भव्य इमारत का उद्घाटन किया।

ता. २६ पाकिस्तानी पंजाब के मंत्रिमण्डल का त्याग पत्र प्रान्त के राज्यपाल के पास प्रस्तुत।

ता. २७ पेरिस में पुलीस द्वारा कई साम्यवादी कार्यालयों पर छापे मारे गये।

ता. २९ नैरोबी में बाहरी क्षेत्र की छान बीन की और हजारों अफ्रीकियों को गिरफ्तार किया गया।

ता. ३० लालचीन के प्रधानमंत्री ने घोषणा की कि कोरिया के युद्ध बंदियों की समस्या सम्बन्धी मत भेदों को दूर करने के लिए इस समय कम्युनिस्ट तैयार है।

... के उप मुख्य मंत्री के पद पर नियुक्त किया।

ता. १७ राजस्थान सरकार का १९५३-५४ का संतुलित बजट राजस्थान विधान सभा में प्रस्तुत।

ता. १८ पूर्वी तथा पश्चिमी बंगाल में भयंकर आंधी का प्रकोप। इससे ५२० व्यक्ति मरे। १६ लापता हो गये और ७०० घायल हुए।

ता. १९ अखिल भारतीय रेलवे कर्मचारी संघ तथा भारतीय राष्ट्रीय रेलवे श्रमिक संघ की बात चीत सफल। दोनों संघ का विलय मंजूर। नये संगठन के अध्यक्ष श्री हरिहरनाथ शास्त्री निर्वाचित।

ता. २० आज रात भारत तथा पाकिस्तान के मध्य कोयला तथा पटसन के विनियम के बारे में एक त्रिवर्षीय व्यापारी समझौते पर हस्ताक्षर हो गये।

ता. २१ राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद ने रायपुर में एक संग्रहालय का उद्घाटन किया।

ता. २२ पंजाब विश्व विद्यालय की प्रभाकर परीक्षा का परिणाम कल प्रकाशित हुआ।

ता. २३ ज्ञात हुआ कि मैसूर के महाराजा जब यूरोप और अफ्रीका के दौरे पर जाएंगे तो उनकी जगह उनकी माँ राजप्रमुख का कार्य देखेंगी।

ता. २४ राजस्थान के उप मुख्य मंत्री श्री टीकाराम पालीवाल ने अपने पद से त्याग पत्र दे दिया।

ता. २५ हिन्दी साहित्य सम्मेलन उत्तमा (साहित्य रत्न) के द्वितीय खण्ड और वैद्य विशारद परीक्षाओं के परिणाम कल प्रकाशित। *

ता. २५ पुलिस राज्य के ... भाषाभाषी प्रदेश में कम्युनिस्टों की गिरफ्तारियां जारी।

ता. २७ श्री वी. वी. राजू ने ... दरों की सभा में घोषणा की कि सर्व... आन्दोलन समाजवाद बनाने में ... देगा।

ता. २८ गुलबर्गा टैंक का ... केवल एक दो सप्ताह तक ही बच ... का अन्देशा।

ता. ३० स्वामी रामानन्द ... ने निजाम को राजप्रमुख पद से ह... की मांग की।

—निजाम के शाही निवास स्थान ... एक जुलूस अपनी मांगों को स्वीकृत ... ने जा रहा था, पुलिस ने १० व्यक्ति... को गिरफ्तार कर लिया।

ता. ३१ आज यहाँ पर पु... जुल्म दिवस मनाया गया तथा सायं... ३ बजे जुलूस विधान सभा ले जाया ... जुलूस पर पुलिस द्वारा अश्रु गैस ... वार, फल स्वरूप ६० घायल।

---

* ता. २६ श्री नेहरूजी ने कल ... सभा में घोषित किया कि १ अक्तूबर... आन्ध्र राष्ट्र की स्थापना होगी।

ता. २७ बनारस में ४० प्राथ... अध्यापकों को अनुशासित रहने... अभियोग में मुअत्तिल कर दिया गया।

ता २९ कल नेहरू ने ... गर्ल्स हायस्कूल में भाषण देते हुए ... की निन्दा की और कहा कि ... शांति के लिए राष्ट्रों के बीच ... और मित्रता आवश्यक है।

३० बम्बई के दौरा जज श्री ... बी. होनावारने एक व्यक्ति को ... की हत्या के अभियोग में आजीवन ... कारावास का दण्ड दिया।

दक्षिण-भारती में विज्ञापन देकर लाभ उठाइए

दक्षिण भारती

(दक्षिण भारतका सर्वोपयोगी सचित्र हिन्दी मासिक)

के

विज्ञापन दर

भारतीय सिक्के में (केवल एकबार के लिए)

विशेष पृष्ठ	रु.	साधारण पृष्ठ	रु.
टैटिल पृष्ठ	५०	पूर्ण पृष्ठ	२५
,, का चौथा पृष्ठ	५०	आधा ,,	१५
,, ,, दूसरा ,,	४०	1/3 ,,	११
,, ,, तीसरा ,,	४०	1/4 ,,	८
पहला साधारण ,,	३५	1/8 ,,	५
अन्तिम साधारण ,,	३०	प्रति कालम इंच	२

१०० से अधिक के विज्ञापन पर विशेष सुविधा।

वर्षभर के लिए दिए जाने वाले विज्ञापन को ३ बार अमूल्य छापा जायगा।

अधिक रंगों के लिए १०) प्रति रंग

विशेष जानकारी के लिए लिखिए:—

मैनेजर "दक्षिण भारती"
६८, अफ़ज़लगंज, है. द.

विश्व-साहित्य

(संसार की समस्त भाषाओं के साहित्य को राष्ट्रभाषा हिन्दी में परिवेशित करने वाली एकमात्र त्रैमासिक पत्रिका ।)

'विश्व-साहित्य' का ध्येय अन्य भाषाओं के साहित्य को हिन्दी में प्रस्तुत करना है।

'विश्व-साहित्य' एक पुस्तक माला है जो त्रैमासिक पत्रिका के रूप में प्रति वर्ष जनवरी, अप्रेल जुलाई और अक्तूबर में प्रकाशित होगी।

'विश्वसाहित्य' का एक विशेषांक भी प्रतिवर्ष प्रकाशित होगा, जिस में लब्ध प्रतिष्ठित विदेशी साहित्यकारों की किसी एक ख्यातिपूर्ण रचना का अनुवाद होगा।

'विश्व-साहित्य' की साधारण प्रति का मूल्य १) रु. होगा, विशेषांक का २) रु.। विश्व-साहित्य के ग्राहकों को विशेषांक केवल १) रु. में मिलेगा। इस प्रकार विश्व-साहित्य का वार्षिक मूल्य ५) रु. होगा।

'विश्व-साहित्य के विषय में सब प्रकार के पत्र-व्यवहार निम्न पते से करें।

सम्पादक, 'विश्व-साहित्य', विष्णुपुरी, अलीगढ

दक्षिण भारती साहित्य प्रकाशन समिति

८६, अफ़ज़लगंज, हैदराबाद दक्षिण

का

पहला—पुष्प

सरदार पटेल

ले. पं. भीष्मदेवजी शास्त्री

प्रकाशित हो चुका है

मूल्य { साधारण १)
राजसंस्करण १॥)

दूसरा पुष्प

हिन्दी, मराठी, कन्नड़ और तेलुगु साहित्य का

प्रारम्भ-युग

शीघ्र ही प्रकाशित हो रहा है

इसमें

चारों भाषाओं के श्रेष्ठ विद्वानों के लिखे हुए चार तुलनात्मक खोजपूर्ण लेख मिलेंगे।

पाठकों तथा लेखकों से—

दक्षिण भारती को अधिकाधिक उपयोगी बनाने के लिए पाठकों तथा लेखकों के सुझावों का हम सदा स्वागत करेंगे। उपयोगी पत्रों को यथा संभव प्रकाशित करने का प्रयत्न किया जायगा।

—संपादक

दी मारवाड़ी-प्रेस लि. के "रजत जयंती" संवत २००६ उत्सव के
समय का लिया हुआ चित्र

दक्षिण भारत

मई १९५३

एलोरा में बनी हुई जगप्रसिद्ध कैलाश की गुफा का दृश्य

हैदराबाद सरकार द्वारा स्कूलों, कालिजों तथा वाचनालयों के लिए स्वीकृत

दक्षिण भारती

सचित्र हिन्दी मासिक पत्रिका

सम्पादक मण्डल

रामानुजदास भूतड़ा (प्रधान संपादक)

वे. आंजनेय शर्मा, सिद्धय्या पुराणिक

बालकृष्ण लाहोटी (संचालक)

श्रीनिवास सोनी (प्रबन्ध संपादक)

मई १९५३ } ८६, अफ़ज़लगंज, हैदराबाद { वार्षिक ६) अंकका ॥) -भारती

विषय सूची

कविता

लेख और निबन्ध—

कहानी और एकांकी—

हमारे स्तम्भ—

और—

आवरणपृष्ठ के द्वितीय पृष्ठ का चित्र हैदराबाद सरकार के पुरातत्व विभाग के सौजन्य से।

विश्व-साहित्य

(संसार की समस्त भाषाओं के साहित्य को राष्ट्रभाषा हिन्दी में परिवेशित करने वाली एकमात्र त्रैमासिक पत्रिका ।)

'विश्व-साहित्य' का ध्येय अन्य भाषाओं के साहित्य को हिन्दी में प्रस्तुत करना है।

'विश्व-साहित्य' एक पुस्तक माला है जो त्रैमासिक पत्रिका के रूप में प्रति वर्ष जनवरी, अप्रेल जुलाई और अक्तूबर में प्रकाशित होगी।

'विश्वसाहित्य' का एक विशेषांक भी प्रतिवर्ष प्रकाशित होगा, जिस में लब्ध प्रतिष्ठित विदेशी साहित्यकारों की किसी एक ख्यातिपूर्ण रचना का अनुवाद होगा।

'विश्व-साहित्य' की साधारण प्रति का मूल्य १) रु. होगा, विशेषांक का २) रु.। विश्व-साहित्य के ग्राहकों को विशेषांक केवल १) रु. में मिलेगा। इस प्रकार विश्व-साहित्य का वार्षिक मूल्य ५) रु. होगा।

'विश्व-साहित्य के विषय में सब प्रकार के पत्र-व्यवहार निम्न पते से करें।

सम्पादक, 'विश्व-साहित्य', विष्णुपुरी, अलीगढ

दक्षिण भारती साहित्य प्रकाशन समिति

८६, अफ़ज़लगंज, हैदराबाद दक्षिण

का

पहला—पुष्प

सरदार पटेल

ले. पं. भीष्मदेवजी शास्त्री

प्रकाशित हो चुका है

मूल्य { साधारण १)
राजसंस्करण १।।।)

दूसरा पुष्प

हिन्दी, मराठी, कन्नड़ और तेलुगु साहित्य का

प्रारम्भ-युग

शीघ्र ही प्रकाशित हो रहा है

इसमें

चारों भाषाओं के श्रेष्ठ विद्वानों के लिखे हुए चार तुलनात्मक खोजपूर्ण लेख मिलेंगे।

वर्ष ३] हैदराबाद, मई १९५३ [अंक ४

सम्पादकीय

" हैदराबाद टुडे " का पुनः प्रकाशन

हैदराबाद सरकार के जन सम्पर्क तथा सूचना विभाग से " हैदराबाद टुडे " का पुनः मासिक प्रकाशन प्रारंभ हुआ है। १८ अप्रैल को अंग्रेजी में प्रकाशित पहला अंक हमें देखने मिला। इस अंक के पहले पृष्ठ पर यह भी देखने मिला कि यथा शीघ्र आवश्यक प्रबन्ध होते ही " हैदराबाद टुडे " अंग्रेजी की तरह हिन्दी, तेलुगु, मराठी, कन्नड़ तथा उर्दू में भी प्रकाशित किया जायगा। वास्तव में यह हर्ष की ही बात है। साहित्यिक, राजनैतिक, औद्योगिक, व्यावसायिक तथा इसी तरह के अन्य सभी वर्गों में इसका निःसंदेह स्वागत होगा।

साहित्यिक दृष्टि से समाचार पत्रों का क्षेत्र जितना अधिक विस्तृत होता है और समाचार पत्रों की संख्या जितनी अधिक होती है, उतना ही उसका महत्व बढ़ता है। इस लिए सरकार के सहयोग से " हैदराबाद टुडे " समृद्ध एवं लोकोपयोगी साहित्य का प्रकाशन कर लोगों की रुचि इस ओर बढाने में अग्रसर हो यही हमारी इसके प्रति शुभ कामना है।

आज कल राजनीति का क्षेत्र बहुत व्यापक बन गया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से तो हर आदमी राजनीति में दखल देना अपना कर्तव्य समझ रहा है। न्यूनाधिक प्रमाण में कहीं कहीं तो इस धारणा के कारण अनुचित हरकतें भी होती दीख रही हैं। परन्तु इसका कारण सिवाय गलतफहमी के और क्या हो सकता है? राजनीति को या राजकीय बातों को जहां लोग गलत रीति से समझ बैठते हैं वहीं पर तो राजतन्त्र के विरुद्ध जनमत संग्रह का प्रयत्न आरंभ होता है। इस कठिनाई को दूर करने का सरल मार्ग है लोगों में राजकीय बातों का तथा राज्य के सुप्रबन्ध का उचित प्रचार करना। यह प्रचार पत्र-पत्रिकाओं द्वारा ही संभव है। ऐसी अवस्था में सरकार की ओर से किसी न किसी अच्छे पत्र का प्रकाशन अवश्यंभावी है। यही कारण है जो देश की विभिन्न सरकारें इस दिशा में कदम बढा चुकी हैं। हैदराबाद सरकार ने भी इस कमी की पूर्ति " हैदराबाद टुडे " का प्रकाशन कर की थी, परन्तु बीच में २॥ वर्ष तक आर्थिक कठिनाइयों के कारण यह प्रकाशन बन्द कर देना पड़ा था। अब यह फिर से प्रारंभ हो गया है, यह उचित ही है।

औद्योगिक तथा व्यावसायिक लोगों की प्रगति सरकार की नीति पर ही निर्भर है। यदि इन लोगों को समय समय पर तथा कम मूल्य में व सरलता पूर्वक इन बातों को जानने का अवसर मिले तो ये लोग उत्साह से आगे बढ़ सकते हैं। जो भी नियम, उपनियम सरकार की ओर से बनते या हटते हैं उनको सरकारी गजट में प्रकाशित किया जाता है पर ये गजट सर्व साधारण जनता तक नहीं पहुँच पाते। इसके दो कारण हैं। एक तो यह कि जिस भाषा में ये छपते हैं, उसे जानने वाले बहुत कम लोग हैं फिर दूसरा यह कि इन्हें पाना आर्थिक दृष्टि से बहुत महंगा है, जो राज्य की गरीब व मध्यम वर्गीय जनता के लिए संभव नहीं है। इसकी जगह अगर "हैदराबाद टुडे" दो आने में मिले और हर भाषा में उपलब्ध हो तो जिसे जो भाषा अच्छी आती हो उसी में वह इसे पढ़ सकता है। रही बात अन्य समाचार पत्रों की कि वे सरकारी बातों को प्रकाशित करेंगे तो और भी सरलता हो आती है, पर यह तो हर पत्र की मर्जी पर निर्भर है। इस में भी दो कठिनाइयां हैं, वे ये कि हो सकता है अन्य पत्र अपनी सुविधानुसार सरकारी आदेशों को, उसकी नीति को कम अधिक बनाकर छाप दें। इस कमी वेशी में कभी कभी वास्तविकता को समझने में भी कठिनाई होती है। बहुत से पत्र सरकार की नीति से सहमत नहीं होते, वे इन बातों को दूसरा रूप देकर प्रकाशित कर देते हैं, जिससे लाभ की जगह हानि की अधिक संभावना होती है। इस लिए अगर सरकारका पत्र हो तो उसपर जनता भरोसा कर ज्ञातव्य प्राप्त कर सकती है। यह सुविधा "हैदराबाद टुडे" के प्रकाशन में उपलब्ध हो सकती है।

सरकार की नीति का प्रचार व प्रसार करना भी आवश्यक है। हम देखते हैं कि विदेशी सरकारें करोड़ों का धन खर्च कर अपने प्रचार साहित्य का बंटवारा जनता में मुफ्त में करती है। इसकी जगह अगर दो आने मूल्य पर "हैदराबाद टुडे" द्वारा जनता में प्रचारकार्य होता है तो क्या बुरा है! इससे माले मुफ्त दिल बेरहम की सी बात तो चरितार्थ न होगी। लोग व्यर्थ में हैदराबाद टुडे को मंगवा कर नष्ट न करेंगे। फिर जनता की स्थिति कोमल डंठल की सी होती है जिधर चाहो उसे मोड़ लो। अगर सरकार की नीति का उचित प्रसार न हो तो अबोध जनता को विरोधी दल आसानी से भटका सकते हैं। "हैदराबाद टुडे" अगर इसकी अंशतः भी पूर्ति कर पाये तो काफी है।

"हैदराबाद टुडे" का एक और लाभ है। सरकारी पदाधिकारी यदि कुछ लिख कर जनता के सामने अपने विचार प्रकट करना चाहें तो सरकार का पत्र न होने पर दूसरे पत्रों की ओर उन्हें ताकना पड़ता है। कभी कभी सरकारी प्रतिबन्ध भी उन्हें ऐसा करने से रोकते हैं। ऐसी अवस्था में "हैदराबाद टुडे" का प्रकाशन इस कठिनाई को दूर कर सकता है। इसका प्रणाम हमें अंग्रेजी में प्रकाशित नये अंक से मिल गया है। इस अंक में जो माननीय मंत्रियों तथा अन्य पदाधिकारियों के लेख छपे हैं, वे जनता को उनके विचारों से अवगत कराने में समर्थ सिद्ध हुए हैं। इससे जनता को इन अधिकारियों के प्रति सही धारणा बनाने में सहयोग मिलता है।

अन्त में जिन बातों को लेकर "हैदराबाद टुडे" के प्रकाशन पर आपत्ति की जाती है उस सम्बन्ध में भी हम कुछ सुझाव प्रस्तुत करना चाहते हैं आशा है कि इसके प्रकाशक तथा सम्पादक इस ओर ध्यान देंगे।

"हैदराबाद टुडे" पर वर्ष भर में क़रीब एक लाख रुपये का व्यय होता देखा गया है। कुछ लोगों का कहना है कि एक मासिक मात्र के लिए इतना धन खर्च करना व्यर्थ की सी बात है। ठीक है। जनता से कर वसूल करके इस प्रकार उसका व्यय नहीं करना चाहिए। साहित्य का मनुष्य जीवन में महत्व-

(शेष पृष्ठ २१ पर)

छत्रपति शिवाजी

(गतांक से आगे)

नारायण प्रसाद सिन्हा 'जहानाबादी', झरिया, (बिहार)

द्वितीय सर्ग

बाल सूर्य हंसता था -
देता जग को नव जीवन
घासों पर झलक रहे थे -
ओसों के कण मोती बन

था दृश्य मनोहर अतिशय,
दादा जी देख रहे थे
जाने क्या गुन गुन करते,
मन्दिर पर टहल रहे थे

थी शान्ति मनोहर छाई
देवालय मुग्ध खड़ा था
हंसती थी सब प्रतिमाएं,
वह हाँ सानन्द पड़ा था

दादा के पास शिवाजी,
दर्शन कर उनके आये
और नम्रता पूर्वक,
उनको भी शीश झुकाए

आशीष दिया दादा ने,
औ' पूछा-"कैसे आये ?
गंभीर मुखाकृति है क्यों ?
गम के बादल क्यों छाये ?"

तत्क्षण शिवाजी बोले -
"हे आर्य जाति - उद्धारक
निशि दिन बढ़ते जाते हैं,
ये भारत के संहारक

मेरी इच्छा होती है -
छोटी सी कुमुक बनाकर
स्वाधीन राष्ट्र कर लेवें,
परदेशी नीति मिटाकर

आज्ञा श्रीमन् देते हैं ?
जननी का सेवक उत्सुक"
दादा जी बोले —"सरजा !
तुम हो क्यों इतने इच्छुक ?

है अभी विलंब समय में,
आने दो पहले उसको
तब कहना नहीं पड़ेगा -
ऐ बेटा ! मुझको तुमको"

हो उदासीन तब सरजा,
बोले -" आ गया समय वह
हे तात ! सिर्फ आज्ञा की
है शेष प्रतीक्षा ही बस"

बोले दादा जी - "बेटा !
तुम करते नाहक आग्रह
भारत तैयार नहीं है,
हैं क्रूर पड़े इस के ग्रह

अच्छा, कहते ही हो; तो -
मावलियों को अपनाओ
वे होंगे सुन्दर सैनिक,
खुद युद्ध - कला सिखलाओ

सहयोगी उन्हें बना कर,
जो चाहो, कर सकते हो
वर दान दे रहा बेटा !
विजयी तुम हो सकते हो"

उत्साह सहित सुन बातें,
चेहरा खिल उठा अचानक
आँधी - सी आई, भागी
चिन्ता की घटा भयानक

छू चरण कहा सरजा ने -
"दादा जी ! दया तुम्हारी
कल्याण करेगी सन्तत,
विपदा टालेगी सारी

मैं जाता हूं, हो तत्पर,
अब कार्य करूंगा सत्वर
मावलियों की सेना ले,
चढ़ जाऊंगा तोरण पर"

दादा जी बोले - "बेटा !
क्यों घबड़ाते हो इतना ?
उच्छृंखलता मत फैले,
हो जाय न जीवन सपना

जितना मैंने सोचा है,
सोचा ही रह जायेगा
आजाद न होगा भारत,
विकलाता रह जायेगा

तुमने देखे हैं केवल -
उन्नीस बसन्त जीवन के
तुम नीति भला, क्या जानो ?
उन्माद सिर्फ यौवन के

इस तरह कार्य हो बेटा !
'आदिल' को ज्ञात नहीं हो
होगी न सफलता हमको,
फैलेगी बात कहीं जो

अच्छा, जाओ अब जल्दी,
औ' कार्य करो तुम अपना
भारत माता को बेटा !
अब पड़े न अतिशय तपना"

प्रस्थान किया सरजा ने
थी नहीं खुशी की सीमा
विजयी था वीर युवक वह,
थी नहीं जोश की सीमा

मुख मंडल चमक रहा था,
थी निकल रही चिनगारी
उस पर प्रकाश रेखाएं
अह ! भरती थी किलकारी

चलता था वह इस गति से,
पड़ते थे पैर न थल पर
मिल गई उसे थी मानो,
पहले ही विजय यवन पर

नव युवक एक आता था,
सरजाने देखा उसको
नव युवक रुका भी सहसा,
उसने भी देखा उसको

शिवाजी बोले — "बोलो
तुम किधर चले ÷ आबाजी ?
कुटिया पर ही तो होंगे —
* श्री रामदास बाबा जी ?"

"हाँ, तुम्हें बुलाने ही तो —
मैं जाता था मन्दिर पर;
पर मिले राह ही में तुम,
सच मुच, हूं मैं किस्मतवर

स्वामी जी जाने कब से —
अह ! इन्तजार करते हैं
मावली युवक आये हैं,
वे बार—बार कहते हैं —
'हैं कहाँ हमारे सरजा ?
स्वामी ! हमको बतलाओ
हम युद्ध कला सीखेंगे,
अति शीघ्र हमें सिखलाओ"

उन ने भेजा है मुझको,
अब चलो चलें हम सत्वर
रुकने का समय नहीं है,
साथी, आया शुभ अवसर

अह ! कितने हैं वे उत्सुक,
कैसे बतलाऊं तुम को
यदि चूक गया यह मौका,
तो पायेंगे क्या उन को ?"

"सच मुच आये हैं वे सब ?
अच्छा, अब चलो, चलें हम
अति शीघ्र बनायें सैनिक,
रण-कौशल सिखलायें हम"

दोनों आये कुटिये पर,
स्वामी जी टहल रहे थे
गंभीर, शान्त थे बिल्कुल
जाने क्या सोच रहे थे ?

कर जोड़ किया अभिवादन -
सरजाने; बोला — गुरुवर !
दो आशीर्वाद हमें यह —
"हम विजयी हों दस्यु पर"

"हो कर्म वीर तुम बेटा !
है विजय तुम्हारी चेरी
मावली मित्र आये हैं,
बेटा ! होती है देरी

अब श्री गणेश कर दो तुम;
सिखला शस्त्राशस्त्र-प्रचालन
वर सैनिक इन्हें बनाओ,
सिखला कर अश्वारोहण

है शुभ मुहूरत बेटा !
अब जरा विलंब न लाओ
स्वाधीन देश होवेगा,
मत सोच हृदय में लाओ"

यों होती ही थीं बातें,
चल आये सभी युवक भी,

ऐसा प्रतीत होता था,
थी चैन नहीं पल भर भी
थे प्रस्तुत बलि चढ़ने को,
माता की बलि वेदी पर
था खून खौलता उनका,
थी बंधी कफनियाँ सर पर

अभिवादन किया उन्होंने,
सरजाको; बोले—"कारण ?
होता विलंब है क्यों अब ?
होवेगा कब से शिक्षण ?"

"तत्काल"—कहा सरजाने,
औ' किया शुरू सिखलाना
सारी विद्याएं रणकी,
प्रारंभ किया बतलाना

प्रथम सिखाई उसने,
सब कला उन्हें लड़ने की
फिर नीति सिखाई रणकी,
औ' दुश्मन से बचने की

हो गये सहस्त्रों सैनिक,
तैयार सिर्फ दो पख में
हो गये एक से बढ़ कर,
वे चतुर लक्ष्य में दल में

बस, अब क्या था शिवाजी -
बोले एक दिन—'हे गुरुवर !
मैं सोच रहा हूं कल ही -
चढ़ जायें हम तोरण पर

प्रस्ताव मेरा जंचता है
कि नहीं आपको कहिये ?
करना विलंब है अनुचित,
चुप बैठ न रहना चहिये"

स्वामी जी बोले—"बेटा !
अच्छा, रण - साज सजाओ
कल प्रातः ही तोरण पर
'शिव बम-बम' कह चढ़ जाओ

÷ आबाजी सोमदेव ।
* श्री समर्थ स्वामी रामदास।

...सोम देव सुनते हो ?
...भी विलंब मत लाओ
...ही तो हो सेनानी
...सेना सजलाओ "

...में आई सन्ध्या,
...—सी बलखाती
...विश्व को मधुमय –
...मय में', गीत सुनाती

...शान्ति विश्व खो देवे,
...देने वह हाला,
...कहां शान्ति है उनको,
...खाली जीवन प्याला ?

...राका मुस्काती,
...हीरों की माला
...नव ज्योति जगाती,
...को देती मधु - प्याला

...मत्त बना भोला जग,
...रही नहीं सुधि तन की
...संग लजीली करने
...के लियाँ मन की

...ज्यों हंसती थी रजनी,
...त्यों अल्हड़ दीवाने
...बाँध कफनियाँ अपने -
...गये कुटी पर आने

...उन्मादी यौवन,
...निशीथ की बेला
...पता नहीं था जग को
...गया अचानक मेला

...था सोम गगन में,
...था सोम वहाँ भी
...में थी सोम * भवानी,
...अति प्रसन्न सरजा भी

...लग गये सिपाही
...के दीवाने

शस्त्राशस्त्रों से सजधज
लग गये विज्जु चमकाने

पड़ती थी चन्द्र-किरण जब
आकर पैनी धारों पर
करती थी क्रीड़ा बिजली
मुस्काती तलवारों पर

लखते रण की तैयारी,
अह ! सिहरी कोमल रजनी
वह खिसक चली चुपके-से,
चन्दा बोला–'क्यों सजनी ?'

मोती ढुलकाती बोली–
आंखों -से-'मेरे प्रियतम !
मैं जाती हूं, तुम ठहरो,
मैं देख न सकती यह तम

इतने कठोर हैं मानव ?
यह नहीं जानती थी मैं
हिंसक– प्रति हंस हैं क्या ?
क्यों श्रेष्ठ मानती थी मैं ?

लालायित हैं पीने को
क्यों रक्त कहो, अपना ही ?
क्रीड़ा बीभत्स का होगा,
अच्छा है, अब चलना ही "

" प्रियतमे ! बीभत्स नहीं है-
बैरी से बदला लेना
ये वीर चाहते हैं अब
साहस का परिचय देना

जंजीरों से जकड़ा है–
अह ! भारत वर्ष दुलारा
स्वाधीन बनायेंगे ये,
अह ! तड़प रहा है प्यारा

तुम तो हो कोमल नारी,
यदि तेगा तुम बन जाओ;
तो दो ही क्षण में तुम भी–
प्यारी कमाल दिखलाओ "

" सौंदर्य, दया, कोमलता–
प्रतिरूप, देव ! नारी के
क्षमता, लज्जा, मोहकता–
शृंगार, देव ! नारी के

मैं कभी नहीं बन सकती–
प्रिय ! तेगा–सी पाषाणी
अह ! दया नहीं आती है,
खूं पीती मानों पानी

अच्छा, अब चली, बिदा दो "
चल गई छोड़ कर माला
हो गया खिन्न रजनी-पति,
उतरी यौवन की हाला

चल पड़े अनोखे सैनिक,
ज्यों अन्त हुआ दोषा का
था सोम देव सेनानी –
सारी पैदल सेना का

रणधीर बहादुर सरजा -
अश्वारोही अलबेला –
सेना पति गज-अश्वों का -
था वन में शेर अकेला

सेना थी मानों बादल,
चमकीले, उजले, काले
बिजली बन चमक रही थीं –
नंगी--पैनी तलवारें

साहस हिम्मत की आंधी -
करती प्रदान थी जीवन
अह ! बढ़ती थी इस गति से,
उपमान न हो सकता मन

बजती थी भैरव भेरी,
आवाज रक्त से मिल कर
रग-रग में क्रान्ति मचाती,
कहती थी बढ़ो समर पर
'हर-हर बम-बम' की ध्वनि से
आकाश गूंजता था यों;

* शिवाजी की तलवार।

वह भी अनन्त लय में लय
सानन्द मिलाता था ज्यों
सुनते ध्वनि ऊषा चुपके,
घूंघट – पट – उठा कर
लग गई झांकने प्राची के -
आंगन से मुस्का कर
फिर लगी पिलाने मादक -
रक्तिम अंगूरी हाला
लग गये झूमने सैनिक –
पीकर प्याला पर प्याला
बन गईं लाल तलवारें,
उनने भी ढाला डंटकर
जग गई ज्योति, रवि-किरणें –
हंसती थी आलिंगन कर
तोरण पति अब तक सोया –
था देख रहा यह सपना –
"कर कैद शिवाने गढ़ पर–
अधिकार कर लिया अपना
जल्लादों को बुलवा कर,
फांसी का हुक्म सुनाया
जल्लादों को लखते ही,
भयभीत हुआ घबड़ाया"
वह चौंका, निद्रा टूटी,
लखते ही स्वप्न भयानक
जगते पहुँचा कानों में –
धौंसा का नाद अचानक
उतरा वह घबड़ाया-सा,
गढ़ बिल्कुल शून्य पड़ा था
था कोई नहीं वहां पर,
कातिल-सा स्वयं खड़ा था

वह गुप्त द्वार से भागा,
तोरण को छोड़ अकेला
अपना बनता बेगाना,
आती दुर्दिन की बेला
आई दो क्षण में सेना,
घिर गया शीघ्र ही तोरण
मुखरित हो उठे अचानक –
दरवाजे पर उस के घन
सह सके न चोट चोटी ले,
गिर गये लौह के फाटक
पट, शीघ्र हुआ परिवर्त्तन,
प्रारंभ हुआ नव-नाटक
गढ़ में प्रविष्ट हो आये –
सैनिक संग सरजा हंसते
जीवन के प्रथम समर में –
कर विजय शंख ध्वनि करते
जाज्वल्यमयी आभा—सी
थी चमक रही मस्तक पर
उठती थीं मृदुल हिलोरें
अधरोष्ठों के शतदल पर
बोला सरजा —'आबाजी !
ले लो सैनिक कुछ संग में
कर लो तो शीघ्र निरीक्षण,
दुश्मन हों कहीं न गढ़ में"
आज्ञा पाते सरजा की,
दो चार नवयुवक लेकर
सर्वत्र सोम लख आया,
प्राणी था एक न अन्दर
सरजा ने शीघ्र बुलाया –
प्रांगण में नवयुवकों को

औ' कहा शान्ति से बैठो –
मेरे साथी नवयुवको !
तुमने तोरण गढ़ जीता,
माता की लज्जा रख ली
रुक सका न शत्रु हमारा,
अह ! ताकत पूर्व परख ली
है तुम्हें बधाई वीरो !
है जीत तुम्हारे बल की
ईश्वर दे सदा सफलता,
हो विजय तुम्हारे रण की
आबाजी ! वितरण कर दो,
इनमें गढ़ का धन सारा
विजयी हो साथी ! तुम सब,
प्यारे ! सर्वस्व तुम्हारा"
बोले सैनिक सब–"स्वामी !
सर्वस्व हिन्द माता का
वह शीघ्र मुक्त हो जाये,
उपयोग करो तुम उसका
तुम माँ के लाल अनोखे,
सर्वस्व तुम्हारा स्वामी !!
हम सब तो हैं अनुगामी,
बस, सिर्फ तुम्हारा स्वामी !"
सरजा ने कहा —"नहीं हूं–
मैं स्वामी, मेरे साथी !
माता का सेवक हूं मैं,
औ' तुम लोगों का साथी
अच्छा, आओ हम बोलें
दिल से–"भारत माँ की जय"
गढ़ गूंजा प्रति ध्वनि आई–
टकरा 'भारत मां की जय'
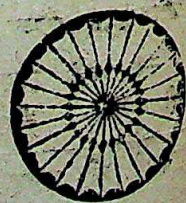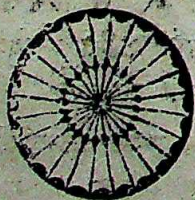
अनुशासन

—रामकिशोर "पाषाण", वर्धा

किसपर किसका अनुशासन है ?

अनुशासन मन का, प्राणों का ;
अनुशासन जग का, शासन का ;
दो कोटि के अनुशासन हैं—
दो कोटि के मानव-जीवन ।

तू जीत सके जिसके मन को,
दे सकता है जीवन जिसको,
जिसमें समरस हो जाना ही
तेरे मन-प्राणों का चिंतन
उस पर तेरा अनुशासन है....

*** *** ***

मार-भय से जिसका शासन,
डांट-डपट-मय जिसका जीवन,
वह नेता नहीं किसी का,
नहीं किसी का गुरुवर है ।
शिक्षक का केवल ज्ञान नहीं
मन का बस अभिमान नहीं,
उसके हृदय का प्रेम-रस
लाखों शासन से गुरुतर है ।
वही सत्य अनुशासन है....

*** *** ***

जिसपर तुझको प्यार नहीं,
प्रेम का अधिकार नहीं,
मन की कोमलता का भी,
तुझको, उसकी, भान नहीं;
उसका मन क्या जीत सकेगा ?
मन का उसके मीत बनेगा ?
जब उसके दुःख में दुःखी नहीं,
उसकी विजय का अभिमान नहीं;
उससे कितना अपना-पन है ?....

*** *** ***

तेरे शब्दों से तृप्ति उसे,
तुझसे मिलने की वृत्ति उसे
तुझमें प्रेमल भ्रातृ-भाव या
तुझमें पिता-सी चाह उसे ।
तुझपर उसका विश्वास अमर
तेरे हृदय की उसे खबर....
तुझसे उसकी आस बड़ी,
तुझपर भी अधिकार उसे ।
यही प्रेम का अनुशासन है ।

*** *** ***

जन-जीवन का मान बढ़ाना है,
गर, नव-जागृति लाना है....
शिक्षक का जीवन बदले,
जीवन के नियमन बदले;
शिक्षक, शिक्षा का यंत्र नहीं,
झूठे जीवन का तंत्र नहीं....
वह जीवन का निर्माता बनकर,
युग का यह जीवन बदले ।
जीवन ही सच्चा शिक्षण है
जीवन का ही अनुशासन है ।

**** **** ****

सन्ध्या चित्र

सिद्धय्या पुराणिक, हैदराबाद

बयल भित्तियमेले मुगिलोळि चित्रिसिदे
होंबिसिल बण्णदलि रमणीय चित्र
अदनु सरिपडिसुतिदे नय भयदि यलरुगुरु
बरेवंते कण्व सुते प्रणय पत्र ॥ १ ॥

अदर सौबगनु सवियॆ मनेमनेगे तेरॆयुतिवे
स्वडरुगळ हळतेगळ होळेहोळेव नेत्र
इंथ स्वबगिन्नोम्मे सिगदेंदु इणुकुतिवे
नियत कालके मोदलॆ मुगिल नक्षत्र
मुळुगुलिह दिनकरनु मूडुतिह उडुगण के
हेळुतिह — " मुगिददॆ नन्न पात्र
नीविन्नु बेळगिरि निम्मल्ले जनिसलि
रात्रियने बेळगुवा सिवनमृत नेत्र ॥ २ ॥

ई दिव्य संदेश केळि कळे मेरिदुवु
तारेगळ म्लान मुख, मोड मात्र
सूर्यनु मुळुगिदनु चंद्रनू बरिलिल्ल
मंदु कप्पेरिदुवु कुदिदु वक्य
सूर्यास्तवू लेसु चन्द्र बरिदरे लेसु
य दुदाकडे रात्रि वहिसि सूत्र ॥ ३ ॥

शशियुदिस दिद्दरू रविमत्ते बन्दानु
तंदानु मत्तोंमे प्रकाश सत्र
यंबासे यिंदलॆ कविद निशे यल्लिये
कादिहुदु ताळ्मेयलि हताश धात्रि
दिव रात्रि एंबुदिदु भ्रमे यल्ल ? एंबकवि
आशेये बेरगु निराशे रात्रि ॥ ४ ॥

कन्नड कविता का हिन्दी गद्यानुवाद

* संध्या चित्र *

वायु मंडल की दीवार पर मेघ मालाने संध्या के स्वर्णिम वर्ण में एक रमणीय चित्र चित्रित किया है। मेघ माला द्वारा चित्रित चित्र को मन्द मारुत का नख, नय, भय से ठीक कर रहा है; मानो कण्वसुता पत्र लिख रही है।

उस रमणीय चित्र की शोभा देखने के लिए पृथ्वी के हर घर का दीप अपनी प्रज्ज्वलित आंखें खोल रहा है। ऐसी सुन्दर शोभा फिर कभी दिखाई न देगी। इस विचार से नभ के तारे नियत समय के पहले ही झांक रहे हैं। इन निकलते हुए नक्षत्रों को देख कर डूबता हुआ सूर्य कह रहा है कि—" अब मेरा अभिनय समाप्त हुआ। तारागणो ! अब तुम चमको तुम्हारे बीच ही अंधेरी रात में जगमगाने वाले चन्द्र का उदय होगा।"

इस दिव्य संदेश को पाकर तारों का म्लान मुख चमक उठा, परन्तु सूरज के डूबने के पश्चात् चन्द्र को न निकला देख कर बादलों के मुख काले हो गए।

इधर रात्रि ने राज्य सूत्र धारण कर कहा—" सूर्यास्त हुआ, और चन्द्र अभी तक नहीं निकला, यह बड़ा ही अच्छा हुआ।"

उधर हताश धात्रि चारों ओर छाई अंधेरी में ही इस आशा के साथ निरीक्षण कर रही है कि यदि चन्द्रोदय न भी हुआ तो सूर्योदय तो कहीं अवश्य होगा।

कवि कह रहा है कि—" यह दिन रात का भेद भ्रामक है। कारण आशा ही दिन है और निराशा ही रात्रि !"

———

मम अश्रूंनों

दि. ना. पळशीकर, हैदराबाद

मम अश्रूनों ! थबका क्षणभर
आण तुम्हाला माझी कट्टर
दुःख कशाचे सलतें हृदयीं
का करिता मग असली घाई ?
तुम्हां रक्षिलें जाळुन अन्तर
वडवानलहि कधीं पेटला
तुम्हि अश्रूनों त्यांतहि कढला
कधि न मजला त्यजिलें तुम्हि पर
दुःख ग्रासतें मजला कधि तर
चिन्ता मागे उभी निरन्तर
तुम्हीं सज्ज पण नेत्र सीमेवर
अणू अणू हा मम हृदयाचा
कणहि इवला नित रुधिराचा
तुमच्या साठिंच कढला निर्भर
नेत्रांतिल जर सान भावल्या
आग मुखांतुन तीव्र ओकल्या
तुम्हिच त्यांना शांतविलें पर
जीवन माझें तुमचे लघुपण
बलहि माझें तुमचा कण कण
तुमचें ढळणें पतन ही मम तर

मराठी कविता गद्यानुवाद

मेरे आँसुओं ! पलभर ठहरो, तुम्हें मेरी सौगन्ध है। मैंने अपना हृदय जलाकर तुम्हारी रक्षा की है। तुम्हारे मन में ऐसा कौन-सा दुःख है जो तुम अधीर बनकर यों गिर कर मुझसे दूर हो जाना चाहते हो ?

मेरे हृदय में कभी दावानल भी भड़कता है, और इस में तुम तपते भी रहे। किन्तु इतना कष्ट सहते हुए भी तुमने मुझे कभी नहीं त्यागा !

मुझे कभी दुःख आ घेरता है, चिन्ता निरन्तर मेरे पीछे खड़ी रहती है और तुम इन सब का सामना करने के लिए नेत्र सीमा पर तत्पर रहते हो।

मेरे हृदय का अणु-अणु और रक्त की बून्द-बून्द नित्य तुम्हारे लिए ही जली है।

मेरे आँखोंके भीतर की छोटी पुतलियां ने अपने मुख से तीव्र अग्नि बरसाई, परन्तु तुमने ही उसे अपनी शीतलता से शान्त किया।

हे आँसुओं ! तुम्हारी लघुता ही मेरा जीवन है। मेरा बल भी तुम्हारे कण-कण से ही व्याप्त है।

हे आँसुओं ! तुम्हारा इस प्रकार आँखों द्वारा गिरना वास्तव में मेरा पतन है।*

गीत

*

मामचन्द कौशिक

*

आया वसन्त
खिला कमल
खिला गुलाब
खिला वसन्त का सौन्दर्य।
खिल गए सभी पुष्प।
आया वसन्त।
नूतन सन्देश लाया,
कण कण खिल गया,
दो हृदय मिल गए,
प्रेम पाश में बन्ध गए,
स्पर्श कर गई हैं वायु।
आया वसन्त

जीवन संगीत

अनवर आगेवान, शिवराजगढ़ (सौराष्ट्र)

(१)

हे स्वप्न !

तुम अपना रंगमहल छोड़कर कर्तव्य पथ पर सिधारो
और साकार रूप से संसार में प्रवेश करो ।

(२)

हे समय !

तेरा प्रतिक्षण ही मेरा जीवन है। तू अपने साथ मुझे ले जा। तेरे साथ ही मेरी सफलता है। यदि तू अकेला ही चल दिया तो, ऐसा जीवन अवसर मुझे बार-बार नहीं मिलेगा।

(३)

हे मन-बीने !

इस दुःख – दर्द भरी दुनिया में तू आनंद का संगीत भर दे। यदि ऐसा हुआ, तो यह जीवन धन्य बन जायेगा।

(४)

हे मन हंसा !

जीवन–सरोवर में आनंद के मोती चुगो, जो शोक और
दुःख के सीपी में छिपे हैं।

(५)

अय दिल !

यह जिन्दगी चंद दिन की है। तू इस जगत की झंझट को छोड़ दे और ग़मको अपने ही अंतर की आगोश में छिपा कर खुशियाँ मनाये जा। बस यही सारे जीवन का रहस्य है।

(६)

हे कविता !

तू मेरे अंतरकी आवाज है, आत्मा का संगीत है। तेरा यह संदेश मुझे सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम्, की ओर ले जाये।

(७)

हे जीवन !

तुझ से संग्राम करने वाले मानव नहीं मूर्ख–पशु हैं।
तू तो सदा ही मेरे लिये उत्सव रहा है, संग्राम नहीं !

एक शास्त्रीय अध्ययनः—

सूर की "साहित्य-लहरी"

—'निर्मम', खेतिया

महाकवि सूर के तीन प्रमुख ग्रन्थ हैं। 'सूरसागर', सूर का दूसरा ग्रन्थ 'साहित्य-लहरी' और तीसरा है 'सूरसारावली'। कहा जाता है कि गोवर्धनलीला, दशमस्कन्धटीका, नागलीला, पदसंग्रह, प्राणप्यारी, व्याहलो, सूर पच्चिसी, सूरसागर सार, एकादशी महात्म्य, रामजन्म, नलदमयन्ती आदि भी सूरदासजी की ही रचनाएं हैं। किन्तु एकादशी महात्म्य व रामजन्म में 'सूरजदास' नाम उल्लेखित हैं। यदि यह सब रचनाएं महाकवि सूर की ही हैं तो उनके कुलग्रन्थ १५ हो जाते हैं। संवत १५१५ से १६२८ तक जीने वाले सूर के लिए यह असम्भव नहीं है। सूरसागर के बाद प्रमुख ग्रन्थ 'साहित्य लहरी' माना जाता है।

साहित्य-लहरी के रचना काल के सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद है। कुछ विद्वान निर्माण काल संवत १६०७, १६१७ और १६२७ मानते हैं। साहित्य-लहरी के १०९ वें पदानुसार यह धारणायें फैली हैं।

मुनि पुनि रसन के रस लेख।
दसन गौरी-नन्द को लिखि, सुवल संवत पेख॥
नन्द नन्दन मास, छै ते हीन तृतिया वार।
नन्द-नन्दन जनम ते हैं बान सुख आगार॥
तृतीय ऋक्ष, सुकर्म जोग विचारि सूर नवीन।
नन्द-नन्दन-दास हित साहित्य लहरी कीन॥

इस पद से स्पष्ट होता है कि ग्रन्थ श्रीकृष्ण के भक्तों के लिए लिखा गया या तत्कालीन अष्टछाप के सुकवि कृष्णदास के कहने पर। विश्लेषण इस प्रकार है:—मुनी=७ रसन अर्थात रसना=१ या २ (कार्यों की दृष्टि से), रस=६, दसन गौरीनन्दन=१; 'अंकाना वामतो गतिः', अनुसार उल्टा पढ़ने से १६१७ या १६२७ संवत आता है। नन्द-नन्दन पास=माधव या वैशाख मास, क्षयहीन तृतीया=अक्षय तृतीय, तृतीय ऋक्ष=कृत्तिका नक्षत्र; योग=सुकर्म. कृष्णजन्म बुधवार था अतएव उस से बाण याने पाँचवा=रविवार हुआ-संवत सबल (वृषभ) अतएव ज्योतिष गणनानुसार संवत १६२७ में ही माना जाना उचित है।

सूर की साहित्य लहरी के दूसरे पद में सूर के जीवन पर गहरा प्रकाश पड़ता है। यह उपसंहार को छोड़कर ११८ पद लहरी में हैं। डा. धीरेन्द्र वर्मा के मतानुसार 'लहरी' के कुछ कूटों का संकलन 'सेनापति' के बढ़ाये हुए हैं। साहित्य लहरी के पदों में विषयों की तारतम्यता सूरसागर की तरह दृष्टिगोचर नहीं होती। सूर की लहरी में विशेषतः कृष्ण की बाल लीला से सम्बन्धित एवं नायिका भेद के रूप में राधिका के मान सम्बन्धी पद भी हैं। जहां वियोगिनी प्रोषितपतिका की प्रतिमा है, वहां संयोगिनी विलासवती नायिका का भी चित्र है। इसी प्रकार परकिया व स्वकिया का भी वर्णन है। साथ-ही-साथ व्यतिरेक, विनोक्ति, निदर्शना, परिकर, दृष्टांत, समासोक्ति, सहोक्ति, प्रस्तुत आदि अलंकारों का भी श्लिष्ट शब्दों में जानबूझ कर प्रयोग व उल्लेख किया गया है। पद संख्या ७४ व ७५ में महाभारत कथा का भी जिक्र आया है। साहित्य लहरी के पद दृष्टकूट कहलाते हैं।

दृष्टकूट पद—इन में श्लेष, यमक और रूपकातिशयोक्ति आदि अलंकारों के प्रयोग से अर्थ स्पष्ट नहीं हो पाता। कहीं, कहीं ऐसे भी शब्दों का प्रयोग मिलता है जो अपना विशेष गूढ़ अर्थ रखते हैं, जैसे—दधिसुत=चन्द्र और शैकतनया=पार्वती कहीं कहीं शब्द साम्य के आधार पर ही अनुमान द्वारा अर्थ लगाना पड़ता है। जैसे हरि आहार याने मांस परन्तु यहां गोश्त नहीं मास (माह) है। लहरी में ऐसे शब्दों का प्रयोग है जो प्राचीनकाल से किसी विशेष संख्या के लिए प्रसिद्ध है। जैसे नयन=२, रुद्र=११, संस्कार=१६ आदि। कभी कभी प्रथम, मध्यम तथा अन्तिम शब्दाक्षरों को मिलाकर नये शब्द का प्रयोग अर्थ हेतु करना होता है। उपरोक्त बातों के उदाहरणः—

यमक अलंकार:— " सारंग बस भय, भयबस सारंग, सारंग बिसमैं माने ॥" यहां सारंग शब्द भिन्न-भिन्न अर्थों के लिए प्रयोग में लाया गया है।

रूपकातिशयोक्ति:—उपमानों द्वारा उपमेय का वर्णन:—

"कमल उपर सरल कदली, कदली पर मृगराज।
सिंघ उपर सर्प दोई सर्प पर ससिसाज॥

श्लेष के आधार पर मुद्रा, परिसंख्या आदि कई अलंकार होते हैं—

"हेम जूही है न जा संग रहे, दिन पश्चात।
कुमुदनीसंग जाहु करके केसरी को गात ॥"

हेमजूही=सोनजूही फूल= (सो=वह, न—नहीं, जु जो, ही=हृदय में) अर्थात मैं वह नहीं हूं जिसको तुम अपने हृदय में रखते हो। उसी तरह कुमुदिनी=एक फूल (कामका नशा चढ़ा है)।

रूढ़ार्थ शब्दों का प्रयोग:—

"भानुसुत हित हित शत्रु पितु लागत उठत दुख घेर।"

भानुसुत=कर्ण, कर्णका हित=दुर्योधन, दुर्योधन का शत्रु भीम, भीम का पिता पवन; अर्थात पवन के चलने से राधा को दुख घेर लेता है।

शब्द साम्य से अर्थ की उद्‌भावना:—

"ग्रह नक्षत्र है वेद जासु घर ताहीं कहा सारंग संभारो॥"

ग्रह=९, नक्षत्र=२७, वेद=४ कुल ४० हुये। ४० सेर का मन होता है, अतः मन के साम्य पर मणि की कल्पना की गयी है।

कहीं कहीं शब्दों के अन्त, मध्य लेकर: —

" भूसुत मेघकाल निसी इनके आदि बरनचित आवै।"

भूसुत =कुब्ज, मेघकाल=वर्षा, निसी=जामिनी तीनों शब्दों के आदि अक्षरों के योग से 'कुब्जा' बना। अतः कुब्जा कृष्ण के चित्त में समाई हुई है।

संख्या वाचक:—

मुनि पुनी रसन के रस लेख,
दसन गोरीनन्द को लिखि सुबल संवत पेख।
मुनी=७, रसन=२, रस६,
गणेशदशन=१=१६२७ संवत सुबल।

साहित्य-लहरी के प्रत्येक पद में किसी न किसी अलंकार का निर्देशन अवश्य है। यह परिपाटी चन्दबरदाई से प्रारंभ हुई। रस-भेद के साथ नायिका-भेद की परिपाटी महापात्र विश्वनाथ से प्रारम्भ हुई। उक्त दोनों बातें साहित्य-लहरी में हैं। सूर की साहित्य-लहरी, कबीर की उलटबासियां, गोरख के कुछ पद, रासो के श्लेष आदि का प्रौढ़ स्वरूप है। वेद में भी कई मंत्रों में यह लक्षण पाये जाते हैं। अन्य रचनाओं की तरह सूर की यह रचना भी रस प्रधान है। यह गोपनीय रस है। सूर ने अप्राकृत, अलौकिक परंब्रह्म की लीला को प्राकृत रूप दिया है।

साहित्य-लहरी एक स्वतंत्र ग्रन्थ है, यह सूरसागर या सारावली का अंग नहीं है। उसके एक पद से स्पष्ट होता है—'मन्द नन्दन दास हित साहित्य लहरी कीन।" हाँ सागर व लहरी के पदमें कहीं-कहीं साम्य अवश्य है जैसे—

" देखो, मैं दधिसुत दधिजात।
एक अचम्भौं दखि सखीरी रिपु मे रिपु जुसमात॥
दधिपरकीर, कीर पर पंकज, पंकज के द्वै पात॥
(सूरसागर)

आज चरित नन्दन सजनी देख।
किनो दधिसुत सुतसे सजनी सुन्दर श्याम सुभेष॥७८॥
(साहित्य-लहरी)

साहित्य-लहरी के उपसंहार के समस्त पद प्रायः सूर के ही हैं। साहित्य-लहरी के कुछ पदों की टेक अथवा अन्तर्भावना सूरसागर के पदों में भी हैं, परन्तु ढाँचा दृष्टकूट की अलंकार, नायिकाप्रधान शैली के कारण वे भिन्न हैं। सारावली के पदों में भी साहित्य-लहरी के पदों की समानता मिलती है—

" धौरी धूमर काजर कारी कहि कहि नाम बुलावै॥७९॥"
(साहित्य लहरी)

" वेणु बजाई विलास वियोवन धौरी धेनु बुलावत॥४७५॥
(सूरसारावली)

उपरोक्त भाव यह साम्य सिद्ध करते हैं कि तीनों ग्रन्थों के रचयिता महाकवि 'सूर' ही हैं। तीनों ग्रन्थों में शब्द, पद, अलंकार, भावाभिव्यञ्जन तथा विषय सम्बधी अद्‌भुत समता भी पाई जाती हैं।

लहरी की टीका:- कुछ लोगों का यह ख्याल है कि साहित्य-लहरी की टीका स्वयं महाकवि सूरदास की ही लिखी

(शेष पृष्ठ ५१ पर)

भूदान यज्ञ में प्राप्त भूमि का उपयोग कैसे हो ?

रामानुजदास भूतड़ा, हैदराबाद

अप्रैल १९५१ में भूदान यज्ञ आरंभ हुआ है और उसमें अब तक ११ लाख एकड़ भूमि मिल चुकी है। पूज्य विनोबाजी ने संकल्प किया है कि जब तक २५ लाख एकड़ भूमि भूदान यज्ञ में नहीं मिलेगी वे अपने पौनार आश्रम को नहीं लौटेंगे। यह संकल्प निकट भविष्य में ही पूरा होगा ऐसा लगता है, कारण इस पुनीत कार्य में राजनीति के भेदा भेद को दूर रखकर सभी दलों के लोग भाग ले रहे हैं। परन्तु भूदान यज्ञ का भूमि प्राप्त करना ही मुख्योद्देश्य नहीं है। उद्देश्य की पूर्ति का यह एक मार्ग है। जो उद्देश्य है वह यह कि कृषिप्रधान भारत के श्रमिकोंको श्रमका साधन सरलता से मिले और उसके सहारे वे अपना निर्वाह ठीक ढंग से कर सकें। भूदान यज्ञ के पीछे भारत के दरिद्रनारायणों की दरिद्रता को दूर करने का लक्ष्य छिपा है। दरिद्रता को दूर करने का अर्थ यह कि उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी हो। अतः भूदान यज्ञ अर्थशास्त्र के सिद्धान्तों पर ही आधारित है। ऐसी अवस्था में जो भूमि भूदान यज्ञ में प्राप्त होती है, उसका उचित तथा पूर्ण उपयोग हो यही अर्थशास्त्र की मांग है। इस माँग की पूर्ति उचित रीति से कैसे हो सकती है यह हमें देखना है।

भूदान यज्ञ के प्रारंभ से अब तक लोगों का ध्यान भूमि प्राप्त करने की ओर ही लगा है। इसे प्राप्त करने के बाद इसका कैसे उपयोग लिया जायगा, इसपर अभी तीव्रता से सोचा नहीं गया है। आज भी केवल यही कहा जा रहा है कि भूमि प्राप्त करने के बाद जो भूमिहीन हैं उनमें इसका वितरण होगा। परन्तु केवल वितरण होगा इतना कहना अर्थशास्त्र की दृष्टि में काफी नहीं है। उसके लिए तो निश्चित रूपरेखा चाहिए।

अबतक भूदान यज्ञ में जो भूमि प्राप्त हुई है उसका अंशतः वितरण व्यक्तिक प्रधान भूमिहीन परिवारों में हुआ है। परन्तु वितरण में भूमि का प्रमाण इतना कम है कि उससे अधिक लाभ की कम संभावना है। भूमि पाने वाले परिवारों को अबतक जो लाभ हुआ है उसमें सबसे बड़ी बात उनका क्षणिक संतोष है। क्षणिक इसलिए कि भूमि नहीं थी, वह मिल गई। परन्तु जब उसपर काश्त करने और उसे अन्त तक संभालकर उसका लाभ उठाने की बात आती है और प्रत्यक्ष में उन्हें कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तब यह क्षणिक संतोष जाता रहता है। उसका कारण यह है कि जिन लोगों को भूमि मिली या मिलती है वे निर्धन हैं। भूमि पानेपर भी काश्त के लिए आवश्यक सामग्री जुटाने की क्षमता उनमें नहीं है। आई हुई जिम्मेदारी को निभाने के लिए फिर उन्हें साहुकारों की शरण में जाना पड़ता है, जो उनके लिए खतरे से खाली नहीं है। प्राप्त भूमिको जोतने के लिए जिन साधनों की जरूरत होती है, उनमें कुछ तो ऐसे हैं जो अंशतः आवश्यक है पर पूर्णतः जुटाने पड़ते हैं, जिनमें जरूरत से ज्यादा शक्ति का व्यय और क़र्ज़ का भार आ पड़ता है। उदाहरण के लिए बैल और हल को ले लीजिए बिना बैल और हल के खेती नहीं हो सकती। और एक बैल की जोड़ी या एक हल की पूर्णतः उसे जरूरत नहीं है। कारण एक बैल की जोड़ी तरीकी भूमि होतो ५ से ७ एकड़ जोत सकती है और खुश्की की ज़मीन होतो १५ से २० एकड़ जोत सकती है। ऐसी अवस्था में यहां तो केवल तरीकी एक एकड़ या खुश्की की पांच एकड़ भूमि ही उपलब्ध है। इधर बैल एक जीवधारी प्राणी है उसकी शक्ति को बनाये रखने के लिए जितना उसे खाद्य चाहिए, उतना देना ही पड़ता है। कम शक्ति चाहिए इसलिए कम खिलायें, यह नहीं हो सकता। यही बात हल की भी है। हल खरीदने में काफी पैसे की ज़रूरत है और उतना उसमें खर्च करना ही पड़ता है। यही बात अन्य साधनों की भी है। यहां तक कि परिवार के परिश्रम की भी यही स्थिति है। एक पांच आदमी का परिवार ५ एकड़ नहीं २५ एकड़ भूमि की देखभाल और मशागत कर सकता है। ऐसी अवस्था में

उसे केवल एक पंचमांश भूमि ही मिलती है। इसका स्पष्ट अर्थ यही कि जिन लोगों को भूदान में प्राप्त भूमि मिली या मिलती है, उन्हें उस भूमि को जोतने में जहां एक पंचमांश शक्ति की आवश्यकता होती है, वहां पूरी शक्ति जुटानी या लगानी पड़ती है। और इस अधिक शक्ति के लगाने में इतना व्यय होता है कि उत्पादन की बचत तो दूर उसमें घाटा ही होता है। यही घाटा भूमिहीन परिवार को और अधिक परेशान करता है और जो भूस्वामी बनने से आनन्द मिलता है व जाता रहता है या यह कहिए कि भूस्वामी बनने से जो क्षणिक आनन्द प्राप्त होता है वही कठिनाई बनकर परेशानी का कारण बनता है।

इधर राष्ट्र हित की दृष्टि से देखा जाय तो देशमें कृषियोग्य भूमि की यहां की जनता के अनुपात में कमी ही है। उदाहरण के लिए हम हैदराबाद के अंक यहां देते है। हैदराबाद की जन संख्या १,८६,५५,१०८ है। इस जन संख्या का ६५% भाग कृषिपर निर्भर है यानी ६५% लोग किसान हैं। इधर कृषियोग्य भूमि राज्य भर में केवल २,२६५,००,००० एकड़ ही है। इस राज्य के मुख्य मंत्री चाहते हैं कि एक परिवार को जिसमें पांच सदस्य हों १५ एकड़ भूमि मिले व वे लोग इसपर अपना निर्वाह चलाएं। हैदराबाद में ५ व्यक्तियों का परिवार मानने पर २५ लाख परिवार ऐसे हैं जिन्हें ज़मीन दी जानी चाहिए, कारण कि उनका जीवन निर्वाह का साधन वही है। एक परिवार को १५ एकड़ यानी २५ लाख परिवार को ३ करोड़ ७५ लाख एकड़ भूमि चाहिए, जो राज्य में उपलब्ध नहीं है। यदि एक परिवार को १५ की जगह १० एकड़ भूमि ही दी जाय तो कृषि पर निर्भर परिवारों को हैदराबाद की भूमि काफ़ी है, परन्तु यहां १० एकड़ भूमि आर्थिक दृष्टि से लाभप्रद नहीं मानी जारही है। जब १० एकड़ भूमि आर्थिक दृष्टि से लाभप्रद सिद्ध नहीं होती तो हम कैसे कहें कि भूदान में प्राप्त १ एकड़ भूमि लोगों के लिए लाभप्रद सिद्ध होगी। फिर भूदान में लोगोंने पिछड़ी हुई बेकार क़िस्म की और पड़ी भूमि ही दी है। इधर हैदराबाद की भूमि तो कृषियोग्य है। इस लिए हम यह कह सकते हैं कि भूदान यज्ञ में प्राप्त भूमि का जो वितरण होने वाला है और उसके लिए आज जो प्रमाण रखा गया है, वह अधिक लाभ पहुंचाने वाला नहीं है।

एक बात और है वह यह कि सरकार भूमि के बंटवारे के साथ साथ भूमि का विशेष रूप से छोटे छोटे भागों में विभाजन भी नहीं चाहती कारण वह आर्थिक दृष्टि से हानि पहुंचाने वाला है। इसीलिए सरकार Family holding के साथ साथ Basic holding का क़ानूनी निर्धारण भी आवश्यक समझती है। इसीलिए इसने कहा है कि The object of fixing a basic holding is to prevent furthes fragmentation of laud. Family holding में १५ एकड़ भूमि रखने पर Basic holding ५ एकड़ भूमि आवश्यक माना गया है। यह ५ एकड़ भूमि भी बेसिक होल्डिंग में यानी न्यूनतम भूमि के प्रमाण में बहुत ही कम मानी जारही है। ऐसी अवस्था में भूदान में प्राप्त भूमि का बटवारा एक एकड़ के हिसाबसे हो तो कहां तक उचित हो सकता है।

अब प्रश्न यह उठता है कि अखिर भूदान में प्राप्त भूमि का वितरण किस प्रकार हो? इस सम्बन्ध में हम यहां एक सुझाव प्रस्तुत करना चाहते हैं।

श्री सहस्रबुध्देजी ने पूना के पास दो ढाई सौ एकड़ भूमि लेकर सहकारी ढंग पर कृषि कार्य कर रहे हैं। गत वर्ष जब श्री सहस्रबुध्देजी हैदराबाद पधारे थे, तो मुझे उनसे मिलने का सुयोग मिला। अर्थशास्त्र का विद्यार्थी होने के नाते मैंने आप से सहज में इस सहकारिता प्रणाली के रूप में खेती का क्या फल निकला? यह पूछा। उत्तर में समाधान होने योग्य बात सुनने को मिली। आपने बताया कि जितने आदमी वहां कार्य करते हैं उन में स्त्री और पुरुष दोनों हैं। सभी समान परिश्रम करते हैं। करीब २० या २५ परिवार इस कार्य में जुटे हुए हैं। श्रमिकों को रोजाना डेढ़ रुपया मजदूरी मिलती है। फिर अनाज, दूध, सब्जी और मकान की व्यवस्था सरकारी समिति ने उन के लिए की है, सो अलग। यह तो हुआ दैनिक पारिश्रमिक की बात। जब वर्षान्त में सरकारी समिति ने हिसाब देखा तो मालूम हुआ कि दैनिक डेढ रुपया पारिश्रमिक देने पर भी बोनस इतना बचा था कि एक रुपया दस आने रोज के हिसाब से सारे श्रमिकों को और रोजी दी जा सकती है। इस तरह कुल मिलाकर एक व्यक्ति को रोजाना तीन रुपये दो आने

(८ वें पृष्ठ का शेषांश)

पूर्ण स्थान है। फिर भी हम इसपर होने वाले व्यय को व्यर्थ का व्यय समझते हैं। इसमें दोष किसी का नहीं, हमारी मानसिक दुर्बलता का तथा आर्थिक दरिद्रता का है। ये दोनों चीजें पल भर में छू मंतर से दूर होने वाली नहीं हैं। इसे पाने में हमें वर्षों का समय लगनेवाला है। पर तब तक क्या हो ? क्या हम उस समय की प्रतीक्षा करते हुए योंही बैठ जाएं ? यदि नहीं तो फिर हमें कुछ बीच का मार्ग निकालना होगा। इसी मार्ग रूप में हम एक सुझाव यहां प्रस्तुत करना चाहते हैं।

" हैदराबाद टुडे " का प्रकाशन स्वतंत्र रूप से नहीं हो रहा है। सरकार की ओर से जनसम्पर्क विभाग जनता को तथा पत्र पत्रिकाओं को सरकारी, अर्धसरकारी तथा गैर सरकारी महत्व पूर्ण बातों से हमेशा अवगत करता रहा है। उसी विभाग के अन्तर्गत इस पत्रिका का सम्पादन व प्रकाशन हो रहा है। इस लिए सम्पादन व प्रकाशन में पत्रिका के खाते में कुछ व्यय नहीं होता, यदि होता भी है तो नहीं सा ही। रही बात मुद्रण की सो हमारा गत वर्षों का अनुभव यह बताया है कि आज जिस रूप में " हैदराबाद टुडे " निकला है वैसा ही निकालने में व्यापार नीति को अपनाया जाय तो हर अंक पर ५०० से ६०० तक खर्च आता है, इस से अधिक नहीं। यह खर्च पहली एक हज़ार प्रतियों के लिए है। यदि १००० से अधिक प्रतियां निकालनी हों तो बाद की हर हजार प्रतियों पर २०० से ३०० रुपयों तक ही अधिक खर्च आता है। इस खर्च में कागज, छपाई, कम्पोजिंग तथा बाइण्डिंग सभी का खर्च शामिल है। इस हिसाब से देखा जाय तो अगर हम यह मान लें कि छः भाषाओं में मासिक " हैदराबाद टुडे " का प्रकाशन हो और हर भाषा में साधारणतः १००० प्रतियां छापी जाएं तो महीने में तीन चार हजार से अधिक खर्च नहीं होगा। यानी साल भर में चालीस पचास हजार से अधिक खर्च नहीं होगा।

इस खर्च को जुटाने के दो मार्ग हैं। एक तो इसकी बिक्री का दूसरा विज्ञापन का। पत्र की कीमत दो आने है। इस लिए वर्ष भर में बिक्री से सात आठ हजार से अधिक आय नहीं हो सकती क्योंकि परिवर्तन आदि में भी कुछ प्रतियां चली जाती हैं। बचे हुए घाटे को विज्ञापन से पूरा करना चाहिए। सरकारी विभागों के टेलीफ़ोन डायरेक्टरी जैसे कई ऐसे प्रकाशन हैं जिनमें विज्ञापन लिए जाते हैं। इस लिए इसमें भी विज्ञापन लिया जाय। अगर सरकार को यह मंजूर न हो तो फिर सरकार को वर्ष भर में जो ३० या ४० हजार का खर्च आता है वह बर्दाश्त करना चाहिए। यों भी सरकार अपनी अनेक बातों के लिए प्रचारार्थ विज्ञापन पर काफी खर्च करती है। उसी खर्च में इसे भी जोड़ लेना चाहिए।

फिर भी खर्च की बात गौण सी है। जैसे भी हो सरकार को इसकी पूर्ति करनी ही चाहिए। हर्ष की बात है कि हैदराबाद सरकार ने इसका प्रबन्ध कर " हैदराबाद टुडे " का प्रकाशन फिर प्रारंभ कर दिया है। इसके लिए वह बधाई की पात्र है। जिस परिश्रम और रुचि से जनसंपर्क तथा सूचना विभाग ने अंग्रेजी अंक का संपादन व प्रकाशन किया है वह भी स्तुत्य है। अन्य भाषाओं में भी इसी तरह के प्रयत्न की हम कामना करते हैं। साथ ही हम आशा करते हैं कि इसी लगन और दृढ़ता से यह काम होता रहा तो जनता धीरे धीरे इसके महत्व को समझ लेगी और जो आज इस पर होने वाले व्यय को व्यर्थ का बोझ समझ रहे हैं, वे ही मूकवाणी से इसकी आवश्यकता का समर्थन करेंगे।

भारतीय रेल्वे-शताब्दी

१६ अप्रेल १९५३ को भारतीय लोहमार्गशताब्दी दिवस मनाया गया। सौ वर्ष पूर्व इसी दिन भारत भूमि पर लोहमार्ग द्वारा यात्रा का आरम्भ हुआ था। बम्बई से ठाना तक २० मील का लम्बा लोहमार्ग भारत का ही नहीं एशिया का सर्व प्रथम लोहमार्ग था। अंग्रेज शासकों ने यातायात की सुविधा को राजनैतिक दृष्टि से देखकर भारत में लोहमार्ग को प्रधानता दी थी। भारत की जनता कृषि प्रधान थी और आज भी है। इन के लिए यातायात की अपेक्षा खेती सुधार संबन्धी, सिंचाई सम्बन्धी तथा जीवनोपयोगी अन्य साधनों में वृद्धि अवश्यकथी, परन्तु विदेशी शासकों की दृष्टि में इन सब की अपेक्षा यातायात का महत्व अधिक था। जहां कहीं उन के विरुद्ध उपद्रव होता वहां वे अपनी सेना तुरन्त पहुँचाना चाहते। वह काल था भी वैसा ही। अंग्रेजों के पैर भारत में जम रहे थे। पर देश भर में स्वातन्त्र्य संग्राम चल रहा था। अंग्रेजों की सेना संख्या में कम थी पर वे जनता पर अपनी धाक जमाये रखना चाहते थे। इस लिए उन्हों ने यातायात के साधनों को जुटाना शुरू किया। देश की आय का अधिकांश भाग इसी में खर्च होने लगा, यही कारण था जो केवल ८० वर्ष की अवधि में यानी १९३५ तक भारत भर में ४३, १२८ मील लम्बा लोहमार्ग जाल की तरह फैल गया। १९३५ में ब्रह्मदेश भारत से अलग हुआ इस लिए करीब २००० मील की कमी भारतीय लोह मार्ग में हुई। इधर १९४७ में फिर भारत भूमि खण्डित हुई। हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में वह बट गयी। पाकिस्तान में बिछा हुआ लोहमार्ग पाकिस्तान सरकार के अधीन चला गया। इस लिए भारत के लोहमार्ग में फिर ६॥ हजार मील की हुई। अब भारत में केवल ३४, ३३९ मील लंबा लोहमार्ग ही रहा है। भारत सरकार, जिन भागों में रेलों की जरूरत है वहां उसका प्रबन्ध कर रही है। अनेक स्थानों में लोहमार्ग बिछाया जा रहा है। सम्भव है पंचवर्षीय योजना के पूर्ण होने तक भारत में लोहमार्ग की लंबाई फिर से ४० हजार मील की हो जाय लोहमार्ग पह अब तक पिछले सौ वर्षों में करीब ८६२ करोड़ रुपया खर्च हुआ है। साथ हीं इस अवधि में २८४ करोड़ की आय भी हुई है। भारतीय रेल्वे शताब्दी दिवस के अवसर पर जो सराहनीय बात हुई है वह यह कि आज तक जो दो प्रमुख संगठन रेल्वे कर्मचारियों के लिए कार्य करते रहे वे अब एक हो गये हैं। अखिल भारतीय रेल्वे कर्मचारी संघ और भारतीय राष्ट्रीय रेल्वे कर्मचारी संघ एक दूसरे में विलीन हो गये हैं। इन दोनों के मिलने से अखिल भारतीय राष्ट्रीय रेल्वे कर्मचारी संघ का निर्माण हुआ है। इस संघ की कार्यकारिणी में ३४ सदस्य लिए गये हैं, जिस में श्री हरनाथ शास्त्री अध्यक्ष और एस. गुरुस्वामी महामंत्री रहेंगे। श्री जयप्रकाशनारायण तथा खंड भाई देसाई भी समिति के सदस्य हैं। समिति का प्रधान कार्यालय दिल्ली में रखा गया है।

हम आशा करते हैं कि भविष्य में यह संगठन सरकार को सहयोग देते हुए भारतीय लोहमार्ग में वृद्धि करने, यात्रियों की सुविधाओं को बढाने, रेलों को यथा समय नियमित रूप से चलाने तथा सरकार व रेल मजदूरों में आपसी मेल जोल पैदा करने में सहयोगी सिद्ध होगी।

सरकार से हम आशा करते है। कि वह रेलों को व्यापार की दृष्टि से न चलाकर यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए इसका संचालन करेगी। आज जो महंगी रेल यात्रा है उसे सस्ता करेगी, जो रेल यात्रा में असुविधा है उसे दूर करेगी। भारतीय रेलों का राष्ट्रीयकरण हो चुका है फिर भी हम शोषण रहित प्रबन्ध की कामना करते हुए देश के लोहमार्ग की वृद्धि चाहते हैं।

पाकिस्तान में राजनैतिक उथल पुथल

पाकिस्तान के गवर्नर जनरल श्री गुलाम मुहम्मद ने अपने विशेष अधिकारों से पाकिस्तान के प्रधान मन्त्री श्री ख्वाजा नाजिमुद्दीन को अलग कर दिया और उनकी जगह अमरीका के राजदूत श्री मुहम्मदअली को नियुक्त किया। श्री मुहम्मदअली ने प्रधानमन्त्री का पद संभालते हुए एक नया मन्त्री मंडल बना लिया है। इधर ख्वाजा नाजिमुद्दीन को यह परिवर्तन स्वीकार नहीं है। वे अब तक अपने आप को पाकिस्तान का प्रधान मन्त्री कह कर त्याग पत्र देने से इन्कार कर रहे थे। जो भी हो, पाकिस्तान के नये प्रधान मन्त्री श्री मुहम्मदअली ने भारत के साथ मैत्रिपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने की अिच्छा प्रकट की है। वे भारत के प्रधान मन्त्री श्री नेहरू से मिलना भी चाहते हैं। भगवान उन्हें सद्-बुद्धि प्रदान करें। जिससे कि वे जिस मैत्रिपूर्ण नीति का प्रदर्शन कर रहे हैं उसी पर अटल रहें। यदि ऐसा न हुआ तो भारत के लिए मुहम्मदअली की मैत्रिपूर्ण नीति मुख में राम और बगल में छुरी साबित होगी। जब तक यह नई दोस्ती लाभप्रद सिद्ध नहीं होती, तब तक भारत सरकार के लिए इस नये मित्र से सतर्क रहना ही अच्छा है। कारण यह भी सम्भव है कि अमरीकी दूतावास से लौटते समय श्री मुहम्मदअली ने अपने साथ कुछ मीठी गोलियां साथ लाई हों और अब पाकिस्तान के प्रधान मन्त्री बनकर उनका वे प्रयोग करना चाहते हों।
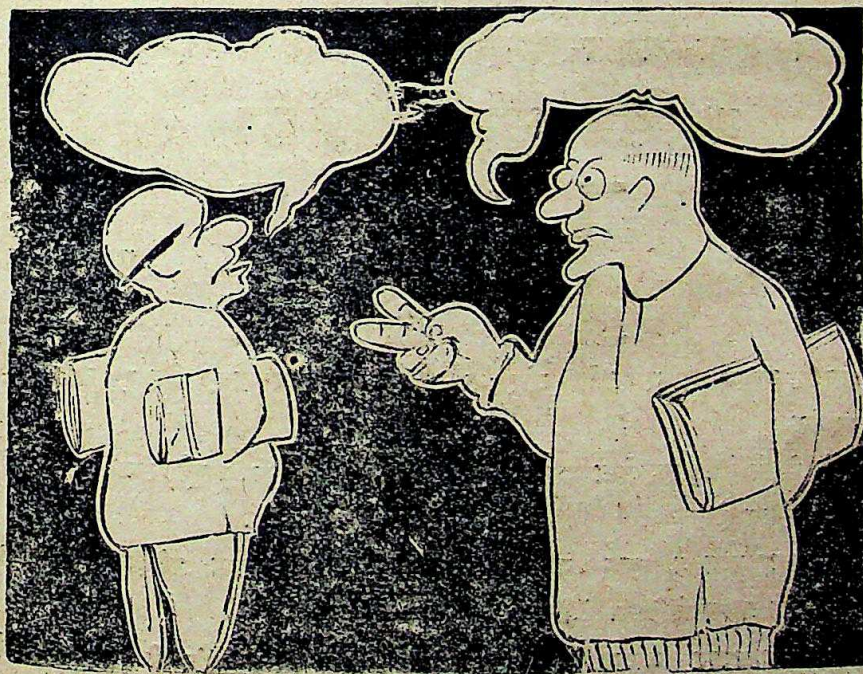
हाली कल्दार के लिए अलग अलग बहियों से कितनी परेशानी हो रही है ? तो इतनी परेशानी क्यों उठाते हो। केवल कल्दार की बहियां रखकर क्यों काम नहीं निकालते।

पारिश्रमिक के रूप में मिले। सहकारी समिति को समान भागीदार होने के नाते उस जीवन के सभी मालिक हैं इस लिए वहां मालिक और मजदूर का या शोषक और शोषित का भी कोई प्रश्न उपस्थित नहीं होता। इस लिए यह प्रणाली वहां सफल हुई।

जब यह प्रणाली सहस्त्रबुद्धेजी के यहां सफल हो सकती है, तो क्या कारण है कि यह प्रणाली भूदान यज्ञ में प्राप्त भूमि के जोतने में सफल नहीं हो सकती। अवश्य सफल हो सकती है। इस लिए भूदान यज्ञ में प्राप्त भूमि का वितरण करने वाली समितियों के सामने मैं यह प्रस्ताव रखना चाहता हूं कि जहां तक सम्भव हो वे २०० या २५० एकड़ भूमि के लिए एक सहकारी समिति का निर्माण कर उस के नेतृत्व में कृषि कार्य प्रारम्भ करें। ऐसा करने से न शोषितों और शोषकों का प्रश्न उपस्थित होगा न जमीन के छोटे-छोटे टुकड़े होंगे। एक लाभ और होगा कि भूमिका स्वामी हर श्रमिक होगा पर व्यक्तिगत मालिक कोई न होगा। इस लिए गरीब और अमीर या मालिक और मजदूर का भेदाभेद वहां न बढेगा। जिन परिवारों को भूमि दी जारही है उन से यह आशा की जारही है कि ये इस भूमि को १० सालतक न बेच सकेंगे। इस बात की भी सहकारी प्रणाली में जरूरत न पडेगी। जिसने श्रम किया उसने पाया, जिसने न किया वह रह गया। इससे श्रम को प्रधानता मिलेगी और हर एक श्रम करने की सोचेगा। एक बात और होगी वह यह कि हिल मिल कर बन्धु भाव से श्रम करते हुए जीवन व्यतीत करने की आदत सब में पैदा होगी। अतः सभी दृष्टियों से यह प्रणाली उपयुक्त और लाभप्रद प्रतीत होती है। इसे यदि भूदान यज्ञ में प्राप्त भूमि का वितरण करते समय ध्यान में रखा जाय तो जनता का और देश का हित होगा। फिर संसार के लिए एक नया मार्ग भी निकल आयेगा।

प्राचीन लोकसत्तात्मक भारत

—दि. ना. पळशीकर, हैदराबाद.

किसी काल में जनता की विचारधारा थी कि—"जनतंत्रात्मक तत्त्व का उदय प्राय: पाश्चिमात्य राष्ट्रों में ही हुआ है। 'जनतंत्र' का तत्त्व पौर्वात्यवासियों के लिए अपरिचित है।" परन्तु कालान्तर के नन्तर कुछ भारतीय विद्वानों ने तथा प्रो. ह्रीस डेवीडस् आदि विद्वानों ने संशोधन कर, "जनतन्त्र" भारत की निजी सम्पत्ति है।" यह सिद्ध किया है।

प्राय: आर्य लोग 'जनतंत्र' के लिए 'गण' शब्द का प्रयोग व्यवहार में लाते थे। 'गण' शब्द का मूलार्थ 'संख्या' होने के कारण इन राज्योंको 'संख्याराज्य' भी कहा जाता था। ऐसे गणराज्य किसी एक व्यक्ति के नहीं होते थे। संस्था के आज्ञानुसार ही राज्यों के सूत्र मध्यवर्तीय सभा के अधीन रहने के कारण इन्हें प्रजासत्तात्मक राज्य भी कहा जाता था।

संस्कृत भाषा में 'गण' शब्द के लिए 'संघ' शब्द का प्रयोग भी पाया जाता है। पाणिनी ने इन दोनों का प्रयोग एक ही अर्थ से किया है, परन्तु वास्तव में युनाइटेड स्टेटस् ऑफ अमेरिका की इस प्रणाली को ही संघ-राज्य कहा जाता है।

पाली भाषा में 'अवधान-जातक' नामी ग्रंथ में प्रजासत्तात्मक तथा व्यक्तिसत्तात्मक राज्य का उल्लेख मिलता है। एक प्रश्न का उत्तर देते हुए वाणिज्य कहते हैं कि—"हमारे देश में कहीं गणों की सत्ता आरूढ़ है तो कहीं व्यक्ति राज्य भी अस्तित्व में पाए जाते हैं।"

व्यक्ति राज्य अर्थात् एकमुखी राज्य पद्धति। आधुनिक युग में इसी पद्धतिको साम्राज्यवाद कहने का प्रघात है। इस पद्धति के साथ प्राचीन काल में गणराज्य पद्धति किस प्रकार अस्तित्व रूप थी। इसका उदाहरण निम्न सर्वपरिचित व सुप्रसिद्ध मंत्र में पाया जाता है।

"साम्राज्यं, भौज्यं, स्वराज्यं वैराज्यं, पारमेष्ठ्यं राज्यं"

"स्वराज्य" शब्द भारत के लिए कुछ नई देन नहीं है। इसी अनोखे शब्द को 'स्व-राज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है' इस घोषणा से पूज्य तिलक ने अमर कर रखा है।

उपरिनिर्दिष्ट नामावली गणराज्यों की है। इस गणराज्य पद्धति में अध्यक्ष चुना जाता था। महाभारत के शान्ति पर्व में, 'मैं गणराज्य का अध्यक्ष होने पर भी जनता का सेवक हूं।' यह भगवान् श्रीकृष्ण का वचन माननीय है।

स्वराज्य की घटना पंजाब में मूर्त रूप थी। इस घटना के अध्यक्ष को 'स्वराष्ट्र' कहा जाता था। वैराज्य की घटना वास्तव में लोकसत्तात्मक घटना का एक नमूना था और अराजक घटना में राजा की अपेक्षा 'दंड' को प्रधानता प्रदान कर राज्यसूत्र संचालित किए जाते थे।

धार्मिक तत्व के अनुसार भी अध्यक्ष की योग्यता गोचर होती है। गणराज्य के अध्यक्ष को गणनायक, गणनाथ गणराज इन प्रकारों की संज्ञाओं से गौरवित किया जाता था। धर्मपूजा के अनुसार अग्रपूजा का मान अध्यक्ष यानी गणेश या गणपति को ही दिया जाता है। गणपति का रूपक इस प्रकार भारतीय लोक पद्धति का एक अनुपम उदाहरण है। 'गणेश' के साथ 'मेला' लगना लोकसत्तात्मक पद्धतिका ही गमक है। वर्तमान युग में अमरीका का संघ राज्य प्रसिद्ध नाम है। अति प्राचीन काल की एक गणेशजी की मूर्ति अमरीका में पाई गई है। हिन्दू धर्म का चिन्ह जब अमरीका जैसे देश में पाया जाता है, तब उस का सरल अर्थ यही निकलता है कि विदेशी राज्यपद्धति भारतीय शासन पद्धति से ही प्रभावित है।

इ. स. ६०० वर्षों के पूर्व में भारत प्रजासत्तात्मक राज्यों से व्याप्त था। इसका प्रत्यंतर बुद्धकालीन साहित्य से मिलता है। मेगस्थनीज लिखता है कि—"भारत में तीन बार जनराज्य स्थापित हुए तथा लुप्त हुए।" वैशाली का लिच्छवी राज्य ५०० गणराज्यों से परिपूर्ण था। वैशाली का वैभव इस गणराज्य के सत्ताधिकार की गवाह देता है। आधुनिक एम. एल. ए. और एम. पी. के नमूनेपर उस काल में "राजा" हुआ करते थे। उस काल में लोक सभाके सदस्यों

को 'राजा' की पदवी से विभूषित किया जाता था।

प्राचीन काल में राजा की नियुक्ति प्रायः प्रजापर निर्भर रहती थी। ऋग्वेद के १० वे मण्डल के, १७३ वे सूत्र में राज्याभिषेक के शुभावसर पर प्रजा की कामनाएं इस प्रकार प्रकट की गई हैं—

"हे राजा! हमने तुझे उदीयमान किया है। तू हम पर राजा के नाते अधिकार कर। तू चिर स्वरूपी, नित्य वासी, अचल बन कर रह और तेरा अधिकार सभों पर निर्भर रहे यही कामना हम सब लोग करते रहें। पद अटल हो। पदच्युति का कलंक तुझे न लगने पाए। तू पर्वत जैसा अचल रह और इंद्र के सदृश्य अपना अधिकार पृथ्वी पर शाश्वत रख और राष्ट्र का संरक्षण कर।"

"आकाश, पृथ्वी और पर्वत जिस प्रकार स्थायी हैं उसी प्रकार हम लोगों का यह राजा चिरंजीवी बने।"

"वरुण, बृहस्पति, इंद्र व अग्नि तुझे और तेरे राष्ट्र को सुस्थिर बनाते रहें।"

"इंद्र की कृपा से प्रजा तुझे ही भेंट समर्पित करे।

मानवता का प्रणेता एवं पतितों का उद्धारक इस नाते अपने युग में गौतमबुद्ध गांधीजी के सदृश्य ही जनप्रिय थे। वह प्रजा सत्तात्मक राज्य के अध्यक्ष शुध्दोधन के पुत्र थे। गौतमबुद्ध साम्राज्यवाद पद्धति के विकट शत्रु थे और वे स्वयं राजपुत्र थे, यह भ्रम भी असत्य ही है। गौतम शाक्य विधान सभा के पुरस्कारक थे। इस सभा के सदस्यों को 'राजा' की उपाधि प्रदान की जाती थी और शाक्यों की विधान सभा कपिलवस्तु में ही मनाई जाती थी।

सिकन्दर की विजय का वर्णन करते हुए, "सिकन्दर ने समस्त भारत पर विजय पाई थी।" यह स्पष्ट करने की चेष्टा कुछ इतिहासकार करते हैं, किन्तु सिकन्दर के आक्रमण के बाद भी मालव व शूद्रक संघ अजेय, प्रबल एवं वैभव सम्पन्न थे। पुरु राजा के 'शकट व्यूह' की रचना से स्वयं सिकन्दर, उसका सेनानी और उसकी सेना जो संख्या में विराट थी किस प्रकार हतबुद्ध हुई, इसका उदाहरण इतिहास देता ही है।

सातवीं शताब्दी के प्रारंभ से इतिहास के परिवर्तन स्वरूप भारतीय राज्य प्रणाली जाती रही है। अब १३०० वर्षों के बाद भारत स्वतंत्र हो चुका है और उसने अपने प्राचीन अमोल तत्त्व को फिर से अपनाया है। जनतंत्रात्मक पद्धति भारतीयों के लिए कोई नई व अनोखी या असाध्य घटना नहीं है, इसी लिए इतिहास का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए भारत अब समस्त संसार का राजनैतिक मार्ग दर्शक बन सकता है, परन्तु इसके लिए अपूर्व त्याग, महान स्वाभिमान और विकट निःस्पृहता की नितान्त आवश्यकता है। क्या भारत इन गुणों को अपनाने के लिए फिर से तैयार होगा?

मौलवी साहब

देवकीनन्दन चतुर्वेदी, बी. ए., एल. टी., हनमकोंडा.

"मौलवी साहब ! आपकी छुट्टी नामंजूर की जाती है।" झल्ला कर प्रिंसिपल साहब ने कहा।

"साहब ! मुझे तीन दिन से बुखार आ रहा है मगर फिर भी मैं काम पर आ रहा हूं। यदि और इसी प्रकार कुछ चलता रहा तो कहीं बुखार स्थायी न हो जाय, इसलिए २ दिन के विश्राम की आवश्यकता है।" मौलवी साहब ने पुनः आग्रह किया।

"देखिए, आपकी छुट्टी के केवल ४ दिन शेष रह गई हैं और पूरा वर्ष अभी बाकी पड़ा है। आज कल वैसे ही परीक्षा समीप है। आप को ऐसे समय पर अवकाश देना मेरे लिए उचित न होगा। मैं विवश हूं। आप को काम पर आना ही पडेगा।"

अब बेचारे मौलवी साहब को पाठशाला आने के अतिरिक्त कोई दूसरा चारा न था। परन्तु मौलवी साहब कोई साधारण मौलवी न थे अपनी नौकरी के पच्चीस वर्ष शिक्षा विभाग की सेवा में व्यतीत कर चुके थे। कई प्रिंसिपल और हेडमास्टरों को देख चुके थे। हाथ भर की लम्बी दाढ़ी के बाल धूप में खिचड़ी नहीं हुए थे। प्रिंसिपल साहब का स्पष्ट उत्तर उनके हृदय में कांटे की भाँति चुभ गया, फिर भी वे उस समय कुछ भी न कह सके। केवल उनके मुख से "अच्छी बात है साहब !" निकल कर रह गया।

× × × ×

दूसरे दिन मौलवी साहब पाठशाला जाने के लिए तैयार हुए। नौकर को बुला कर उसके सर पर एक बिस्तर रखा। अपने एक हाथ में एक छड़ी और दूसरे हाथ में दवाई की शीशी लेकर धीरे-धीरे चलने लगे। २ फर्लांग की दूरी आपने लगभग ½ घंटे में पूरी की और पाठशाला पहुँचते ही दरवाजे पर गिर पड़े और वहीं लेट गए।

नौकर ने उनको धीरे से लेजाकर पुस्तकालय के कमरे में पहुँचा दिया। वहीं भूमि पर उनका बिस्तर एक ओर लगा दिया। एक सुराही, दवा की शीशी और कांच की गिलास उनके सिरहाने रख दी। मौलवी साहब आराम से पैर फैला कर बिस्तर पर लेट गये। पुस्तकालय में बैठने वाले सज्जनों से उनका वार्तालाप होने लगा।

प्रिंसिपल साहब का नियम था कि वे दिन में २ बार अपनी पाठशाला के प्रत्येक कमरे की चक्कर अवश्य लगाते। नियमानुसार वे इस बार भी पुस्तकालय में आए। मौलवी साहब भी सतर्क थे। जैसे ही उनके आने की आहट कानों में पड़ी रोगी की-सी आकृति बनाली, जैसे ही उनका कमरे में प्रवेश हुआ, सब खड़े हो गये। परन्तु मौलवी साहब ने बड़ी विचित्र मुद्रा से उठने का प्रयत्न किया। प्रिंसिपल साहब की दृष्टि भी सर्व प्रथम उनके बिस्तर पर ही पड़ी। वे आश्चर्य चकित हुए। परन्तु उन्होंने भी अपने जीवन के अनेक वर्ष सरकारी सेवा में बिताए थे। १० वर्ष से तो वे प्रिंसिपल ही थे। राज्य की न मालूम कितने ही शिक्षा संस्थाओं का उन्होंने भार सम्भाला था, परन्तु ऐसी विचित्र परिस्थिति उनको आज तक देखने के लिए न मिली थी। उनके जीवन में कोई भी शिक्षक रुग्णावस्था में इस प्रकार अपने बिस्तर को लेकर पाठशाला में नहीं दिखलाई दिया था। वे सोच में पड़ गए --

"यह नया युग है। भारत स्वतंत्र हो गया है, प्रत्येक पुरुष अब अपने को नितान्त स्वतंत्र समझने लगा है। अनुशासन नामकी कोई वस्तु अब बाकी नहीं रह गई है। दो दिन का अवकाश स्वीकार न होने पर यह नाटक सम्मुख आया है। मैंने अब तक न मालूम कितने प्रार्थना पत्र इस प्रकार के अस्वीकृत कर दिए है, परन्तु कभी ऐसा दृश्य देखने में नहीं आया। वाहरे युग ! तुमने कैसा पलटा खाया !" परन्तु प्रकट में मौलवी साहब के अभिवादन का उत्तर देते हुए उन्होंने कहा — "आदाब अर्ज मौलवी साहब ! कहिए कैसे मिजाज है ? यह कैसा नाटक बना रखा है।"

"नाटक!" मौलवी साहब ने जरा उग्र स्वर से उच्चारण किया फिर कुछ स्वर को नर्म करके बोले—"आप अफसर हैं और मैं आपका मातहत। आप जो चाहें सो कह सकते हैं, परन्तु बाहरे समय! आज यदि ग़रीब रोग शय्या पर पड़ जाता है तो उसे नाटक समझा जाता है। आज तीन दिन से लगातार रात में सख्त बुखार आ रहा है। खाना-पीना हराम हो गया है। नींद नाम तक को नहीं है। पर अफसोस इतना सब होने पर भी यह आपको "नाटक" मालूम हो रहा है।"

मौलवी साहब के स्वर की दृढता देख कर प्रिंसिपल साहब भीतर ही विचलित हुए। उन्हें अपने शब्द पर मन ही मन क्षोभ हुआ। तुरन्त ही उकडू बैठ कर मौलवी साहब की नाड़ी अपने हाथ में ली और उसकी गति विधि का ध्यान से अध्ययन करने लगे। कुछ सैकिन्ड के पश्चात कहने लगे, आपको तो इस समय भी ज्वर प्रतीत होता है। आप आराम कीजिए।" चपरासी! से-" चपरासी ये पैसे ले जाओ, मौलवी साहब के लिए एक सोड़ा और २ मौसम्बी ला दो।" मौलवी साहब को और भी सान्त्वना देते हुए वे अपने पाठशाला के चक्कर पर पुनः चल दिए।

उधर मौलवी साहब प्रसन्न थे, अपनी युक्ति पर। देखो जरा सी गर्मी पर कैसा अच्छा फल मिला। उन्हें अब पूर्ण विश्वास होगया कि सीधी उंगली से घी नहीं निकलता। यदि वे उस समय उग्रता न दिखलाते तो न जाने क्या परिणाम होता!

× × ×

दूसरे दिन भी मौलवी साहब उसी प्रकार आकर उसी स्थान पर लेट गए। प्रिंसिपल साहब भी नित्य नियमानुसार अपने चक्कर पर निकले तो फिर उनको उसी प्रकार पड़ा पाया। बेचारे पशोपेच में पड़ गए कि इस बला का निराकरण किस प्रकार हो। बोले- "मौलवी साहब! आप को ज्वर आ रहा है तो आप छुट्टी का प्रार्थना पत्र दे दीजिए मैं स्वीकृत कर दूँगा।"

मौलवी साहब-"नहीं साहब! मैं अपना प्रार्थना पत्र देकर आपके उत्तरदायित्व की गम्भीरता को बढ़ाना नहीं चाहता। आप के लिए ऐसे समय पर छुट्टी देना उचित नहीं है तो मैं आपको अपनी ओर से विवश नहीं करना चाहता।"

प्रिंसिपल साहब—"तो आप ऐसा कीजिए कि आप हस्ताक्षर करके चले जाया कीजिए। घर पर ही विश्राम कीजिए। वहीं आपको सुविधा रहेगी।"

मौलवी साहब—"घर पर क्या सुविधा है साहब! यहां आकर लेट जाने में कुछ सोडा वाटर और मौसम्बी तो भी मिल जाती है। घर पर हम गरीबों के लिए क्या रक्खा है। इसीलिए मैं इसी प्रकार आता रहूंगा। आप चिंता न कीजिए। हस्ताक्षर करने के लिए वैसे भी तो आना ही पड़ेगा।"

अब तो प्रिंसिपल साहब और भी घबराए। सोचा न जाने कितने दिन तक हम पर आठ आने प्रति दिन के हिसाब से डिगरी होती रहेगी। बोले—"मौलवी साहब इस प्रकार आने जाने से आप की तबियत और भी अधिक बिगड़ जाने की सम्भावना है। आप घर ही रहिए। मैं चपरासी को भेजकर आपके हस्ताक्षर वहीं से करवा लिया करूंगा। आप जब स्वस्थ हो जाँय तब पाठशाला आवें।"

मौलवी साहब—"आप की बड़ी कृपा है साहब! आपने मुझे ऐसी सुविधा दी है जो अब तक किसी को नहीं मिली। मैं आप का सदा कृतज्ञ रहूंगा। आदाब अर्ज! हाजिर होता हूं।"

* * *

मौलवी साहब के मित्र मौलवी साहब से पूछते—"आपने कितने दिन तक इस बहाने छुट्टी ली?" मौलवी साहब उत्तर देते, "सिर्फ आठ दिन तक, क्योंकि मुझे अपनी सरकार का ध्यान था।"

"मौलवी साहब! आपको बीमारी क्या थी?"

"बीमारी क्या थी, बहुत दिन से आराम नहीं मिला था। यही बीमारी थी। ८ दिन का विश्राम पर्याप्त था। और घर पर भी तो पडे २ दिल नहीं लग सका। इसलिए पुनः जाना आरम्भ कर दिया। इतना अवश्य हुआ कि जब तक वे रहे, उन्होंने मेरे किसी भी छुट्टी के प्रार्थना पत्र को अस्वीकार करने का साहस न किया।"

———

जीवन की होली

—कु. हरबंस खन्ना, औरंगाबाद

सतीश का बंगला शहर से काफी दूर था—मोटर से जाना ही सुविधाजनक था—मगर मनोहर और शीतल चान्दनी ने मुझे पैदल ही चलने के लिए बाध्य किया। मैं चल पड़ा और चलते-चलते सोच रहा था कि विधाता ने भी प्रकृति में कितना रहस्य भर दिया है। कहाँ दिन की तड़पाने वाली सूरज की उष्णता और कहां यह प्रशान्त और मनको आह्लाद देनेवाली शीतल चान्दनी! कैसे परस्पर विरोधी गुण हैं, दोनों में। इन्हीं विचारों में उलझा मैं चला जा रहा था कि एक नन्हें बालक की आवाज ने मेरे हृदय को विदीर्ण कर दिया। मेरे पैर रुक गए। मैं उस ओर बढ़ा, जिधर से आवाज आ रही थी। ओफ! कैसा हृदयस्पर्शी दृश्य था वह! एक तीन वर्ष का बालक माँ के सूखे स्तनों को चूस रहा था, किन्तु दूध न आने के कारण जब चूसते-चूसते थक जाता, तो चीख पड़ता। दूध आये भी कहाँ से, तीन दिन से एक चौकर ज्वारी के सिवाय माँ के पेट में गया ही क्या था? सूखे स्तनों को चूसने और खींचने से मां को असीम वेदना हो रही थी। फिर भी वह स्तन को बालक के मुंह से न निकालती। वेदना अधिक होने पर भी, दूध न मिलने से जब बालक रो उठता, तब वह विवश हो कर झुंझला उठती। बेचारा बालक! रोने के सिवाय और कर भी क्या सकता था? अन्त में वह जोर-जोर से रोने लगा। मां उसे चुप करने का प्रयत्न कर रही थी। कभी उसे हाथों पर झेलती, तो कभी उसके कान में कुर्ऽऽ करती, परन्तु बालक रोता ही रहा, भूख से। आखिर हार कर मां ने एक थप्पड़ मारी। बालक और भी जोर से रोने लगा। इस रोने ने मां के हृदय को हिला दिया। उसने उसे झट-से गले लगाया और थपकियां देकर सुलाने लगी पर भूखे पेट बालक कैसे नींद ले? मां के नेत्रों से आंसू टपक पड़े, मानो उसने बालक की भूख को हर लिया हो। रो-रो कर बालक जब थक गया तो वह ग्लानि से चुपचाप पड़ा रहा।

उस स्त्री के पास ही बैठा हुआ छः- सात वर्ष का एक बालक मां से पूछने लगा—"मां! बापू कब आयेंगे? भूख बहुत जोर से लगी है मां!"

मां ने उसके मुख पर हाथ फेरते हुए कहा—"हां बेटा! तेरे बापू आते ही होंगे। अभी वे पैसे लायेंगे, फिर तुझे मैं गुड़-रोटी दूँगी। मेरे जीवन को (बीमार बालक) दूध और साबूदाना बनाकर दूँगी।"

मां का आश्वासन सुन कर जीवन की घड़ियां गिनने वाले जीवन के मुख पर आशा की मुस्कराहट छा गई।

प्रतिक्षण जीवन का बुखार चढ़ने लगा। मां चिन्तित-सी बार-बार द्वार की ओर देखने लगी। मुन्नू ने फिर पूछा—"मां! बापू पैसे लायें तो हम भी होली जलायेंगे। जीवू! (जीवन) तू भी जलायेगा?" जीवन ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह कैसे बताता कि मैं सीधी-साधी—दुनिया की भांति होली नहीं जलाऊंगा बल्कि जीवन की होली जलाऊंगा।

इसी समय एक चालीस वर्ष का अधेड़ पुरुष वहां पर आ गया। उसे देखते ही पार्वती (मां) ने एकदम कहा—"कितनी देर लगा दी आपने? देखिये न जीवन का बुखार बढ़ता जा रहा है।" बग़ैर उत्तर दिए वह दीर्घ उच्छ्वास छोड़ माथा थाम कर बैठ गया। पिता को चुप देख कर अस्थिरता से मुन्नू ने पूछा—"बापू! पैसे लाये हो न? मां अब मुझे गुड़ के साथ रोटी दोगी न!" पिता क्या उत्तर देता? लाख प्रयत्न करने पर भी दो बूंद आंसुओं के उस के नेत्र से निकल ही पड़े। वे आंसू क्या थे, वेदना से असह्य हो कर निकली हुई रक्त की दो बूंदें थीं। पति को इस तरह उदास और निराश देख कर पार्वती ने भय से सकुचाते हुए कहा—"बैठ क्यों गए? जाकर दूध ले आइए न! कब से भूख-भूख कर रहा है। जरा इस के मुंह में कुछ डालूं तो होश भी आये!"

निराशा भरे स्वर में व्यक्ति ने कहा—"दूध कहाँ से लाऊं? राधी, पीरा तो देंगे नहीं। कल ही उन्होंने साफ़ जवाब दे दिया कि अब पैसे के बग़ैर नहीं आना।"

"तो क्या आज भी पैसे नहीं मिले ?" तड़प कर पार्वती ने कहा।

पति—"नहीं"

पार्वती—"फिर इतनी देर क्या करते रहे ?"

पति—"सेठ की कोठी पर बैठा था। सेठजी कहीं बाहर गए थे। अभी-अभी आये। झुक कर सलाम किया तो त्यौरियां चढ़ाते हुए भीतर चले गए। उनके साथ और दो आदमी भी थे। आधे घंटे के बाद जब मैंने पुकारा तो, गुस्से से बाहर आकर कहने लगे—"तुझे नज़र नहीं आता कि मेहमान आये हैं! जा कल-परसों आना।"

पार्वती—"फिर तुमने कुछ नहीं कहा ? बच्चों की हालत बतानी थी।"

पति—किसे कहें, कोई सुने भी तो। बोलने के लिए मुंह खोला तब तक सेठजी भीतर पहुंच गये थे। कहो, तब मै क्या करता ?"

पार्वती बेबस हो रो पड़ी—"हे भगवान! तू भी क्या अंधा बन गया है? हाय! अब मेरे कलेजे के टुकड़ों को क्या दूँ? तुम वहां से उठे क्यों? यहां बच्चा मर रहा है और उन्हें फ़ुरसत नहीं है! काम किया है, कोई मुफ्त तो नहीं माँग रहे हैं। आज तीन रोज से चक्कर काट रहे हो। रोज झिड़की के सिवाय और कुछ नहीं! मैं जाती हूं, देखती हूं कैसे नहीं देता।" पार्वती नागिन-सी फुफकार कर उठी। मां को यों क्रोधित देख मुन्नू भी "मां-मां" कह रो पड़ा छोटे बालक—जीवन—ने भी उसका साथ दिया। फिर जीवन अचेत हो गया और इस निर्दय जगत् से छुटकारा पाने की राह देखने लगा।

पार्वती को साक्षात् चंडी और नागिन के रूप में देखकर पति ने उसका हाथ थाम कर कहा—"ठहरो, पारो ठहरो! इस तरह पागल न बनो। वहां पहुँच कर फायदा नहीं होगा, उल्टे धक्के मारकर तुम्हें बाहर निकाल दिया जायेगा।"

"तो क्या बच्चों को इसी तरह मरने दूँ!" पार्वती ने दुःखी स्वर में कहा—"दो दिन गांव भर भटकती, मांगती फिरी। दो-तीन सूखे रोटी के टुकड़े के अतिरिक्त और कुछ न मिला। जिसके द्वार पर जाती हूं, झिड़की के सिवाय और कुछ न मिलता। सब यही कहते, 'तुझे काम करने को क्या हो गया? अच्छी हट्टी-कट्टी तो नज़र आती है।' पर जब मैंने काम मांगा तो कहते—'हूं, धरा है यहां हमारे पास। जा जा, आगे बढ़।' कहो, अब क्या करूं, हमसे तो भगवान् भी रूठ गया है।"

"ऐसा न कहो पारो! शान्त हो जाओ। भगवान् जो भी करता है, अच्छा ही करता है।" पति ने सांत्वना दिलाते हुए कहा।

पति की बात सुन कर पार्वती ने चिढ़ कर कहा—"हां! क्यों नहीं! बच्चे भूख से मर रहे हैं, इस में अच्छाई नहीं तो और क्या है?"

जीवन की सांस जोर से चलने लगी। दुःश्चिन्हों को देख कर पार्वती कांपते हुए कहने लगी—"लाइए, इसे दवा तो दीजिए। मेरा बच्चा!"

"दवा तो आज नहीं मिली। होली होने के कारण सरकारी दवाखाना बन्द था।" पति ने गंभीरता से कहा।

मुझे इस दृश्य को देखते आधा घंटा बीत गया, मगर फिर भी मैं वहां से न हिल सका। पत्थर की मूर्ति की भाँति यह सब देखता रहा। मैंने विह्वल हो चारों ओर देखा मुझे लगा कि रात की स्निग्ध चांदनी कह रही है—"देख रहे हो न मानवता को!" मैंने चट से जेब में हाथ डाला कि उन्हें कुछ पैसे दे दूँ, मगर जेब में चिल्लर न थी। सोचा दस का नोट ही दे दूं। फिर मुझे ध्यान आया कि आज ताराबाई का गाना है, सतीश के बच्चे की सालगिरह भी है। बच्चे को कम-से-कम १० तो देने ही चाहिए और ताराबाई को १० से कम क्या दूँगा और यहां तो बीस ही हैं। फिर इन्हें क्या दिया जाय? मैंने यही सोच कर निकाला हुआ नोट भीतर रख लिया। आह! आज अधिक पैसे होते तो अवश्य ही कुछ दे देता मगर करें क्या, इनके नसीब ही फूटे हैं। यों ही हार्दिक सहानुभूति दिल के दिल ही में प्रकट कर मैं चुपचाप आगे को चल पड़ा।

× × × ×

सतीश के बंगले के चारों ओर, ऊपर-नीचे रंगी बिरंगी बल्ब जगमगा रहे थे। भीतर से हंसने की आवाजें आ रही थीं। सतीश मेरी राह देखता हुआ द्वार पर ही खड़ा था। मुझे देखते ही कहने लगा—"हल्लो प्रवीण! बड़ी देर कर दी तुम ने? तुम्हारी प्रतीक्षा में हम सब बैठे हुए हैं। अच्छा तुम पैदल क्यों आये, मोटर क्या हुआ?"

घर ही में है। आज दोपहर का भोजन हज़म नहीं था। सोचा, चान्दनी रात है, पैदल ही चला चलूं। इसी से व्यायाम हो जायेगा और पाचन क्रिया भी बढ़ेगी।"

बातें करते हुए हम भीतर पहुँचे। वहां और भी मेहमान थे। ९ बज चुके थे, १० से ताराबाई का गाना था। अतः सतीश के आग्रह पर भोजन के लिए उठे। भोजनालय में दो लंबे टेबल थे, जिनके दोनों ओर कुर्सियां पड़ी थीं। कुर्सियों पर बिठाया गया। अनेक स्वादिष्ट चीजों से भरे थाल हमारे सामने, डायनिंग टेबल पर रख दिये। इन स्वादिष्ट मिठाइयों को देख कर मेरे आंखों के सम्मुख वही थोड़ी देर पहले वाला दृश्य खड़ा हो गया। दिल में आया भागता जाऊं और मुन्नू को यह मिठाइयां दे आऊं। किन्तु…… !

उसी समय रेडियो से रेकार्ड बजी—

"भगवान दो घड़ी जरा इनसान बन के देख।
इस दर्द दुनिया में जरा मेहमान बन के देख॥"

मुझे लगा कि यह गाना पार्वती ही गा रही है। सबने भोजन प्रारम्भ कर दिया था। मुझे देखकर सतीश ने कहा—"अजी जनाब! क्या सोच रहे हैं? चलिये, प्रारंभ कीजिये।"

"सतीश भैया! यह मीठी चीजें निकाल लो। मैं सिर्फ सादा भोजन ही करूंगा। अभी तो पहला ही हज़म नहीं हुआ है। फिर इनके खाने से कहीं स्वास्थ्य न बिगड़ जाय!" मैंने कहा।

"नहीं, नहीं!" सतीश ने हंसते हुए कहा—"कोई हर्ज नहीं। स्वास्थ्य बिगड़ जायगा तो, डाक्टर किशोर किस मर्ज की दवा हैं? क्यों डाक्टर साहब?"

"हां, हां! क्यों नहीं, हम फिर किस दिन के लिए हैं? आप शुरू कीजिए।" डाक्टर किशोर ने कहा।

सब लोग हंसी मजाक और आग्रह से भोजन कर रहे थे। मैं लाख प्रयत्न करने पर भी न हंस सका और न कुछ खा ही सका। उस दृश्य ने मेरा सारा आनन्द किरकिरा कर दिया था! ऐसा लग रहा था मानो मुझे पुकार कर कोई कह रहा हो—"देखो मानवता! क्रूर मानवता!!" मैं भय और परेशानी से काँपने लगा। ऊपर बिजली के पंखे चल रहे थे, फिर भी मैं पसीने से तर बतर हो गया। मैंने उस दृश्य को भुलाने का प्रयत्न किया पर न भूल सका और न आंखों के सामने से उसे हटा ही सका। मैं जितना उससे दूर भागने का प्रयत्न कर रहा था, वैसे-वैसे वह घटना मुझे अपनी ओर खींचती जा रही थी।

भोजन समाप्त हुआ। ताराबाई आई। सब लोग उस के गाने के रंग में रंग कर झूमने लगे।

× × ×

जीवन भूख की असह्य वेदना से तड़पने लगा। माँ उस की वेदना देख नहीं सकती थी, पर विवश थी, कुछ करने-धरने के लिए था नहीं! छोटा मुन्ना समझदार था। उसने देखा, माता-पिता घबराये हुए हैं, जीवन तड़प रहा है। वह भी भय से कभी माँ की ओर कभी पिता की ओर देखता और वास्तविक स्थिति जानने का प्रयत्न करता। जीवन ने जोर की साँस ली। पार्वती जोर-जोर से पागलों की भाँति चिल्लाने लगी—"बचाइए, मेरे लाल को बचाइए! मेरा मुन्ना, मेरा लाल जा रहा है। मुझे छोडकर जा रहा है। हाय! अब मैं क्या करूं?"

पिता से न रहा गया। वह उठा। घर में जो एकमात्र पीतल का घड़ा था। उसे लेकर जल्दी से भागता हुआ बालूभाई के यहाँ गया। बालूभाई होली की तैयारी में व्यस्त थे। उसे देखते ही कहने लगे—"क्या है शंकर? किधर आया?"

शंकर ने दुःखी स्वर में कहा—"सरकार! बचा बहुत बीमार है। यह घड़ा रख कर कुछ रुपये दे दीजिए।"

बालूभाई—"क्या हुआ उसे? बुखार आ रहा होगा?"

शंकर—"जी!"

लापरवाही से बालूभाई ने कहा—"कोई बात नहीं उतर जायेगा। अच्छा जरा भैया के साथ तो जा और उपली का थैला उठा ला। होली जो जलानी है! और देखना शंकर इस बार सबसे बड़ी होली अपनी ही होगी।"

शंकर—"बच्चे की हालत बहुत खराब है?"

बालूभाई—"हाँ, हाँ! सुन लिया है मैंने। पाँच मिनट में कोई मरा तो नहीं जा रहा है। जा, तू उपली लेकर आ, मैं पैसे निकालता हूं।"

शंकर चुपचाप भैया के पीछे चला गया। इस के सिवा और करता भी क्या? भागता हुआ उपली का थैला लाकर पटक दिया और नम्रता से बोला—"सरकार!"

बालूभाई—"अच्छा, बोल अब क्या चाहता है ? अरे भाई, तुम भी कैसे आदमी हो, वार देखते नहीं त्यौहार देखते नहीं, उठ कर चल पड़े। मेरा तो स्वभाव ही ऐसा है कि मैं किसी के कुछ दिये बगैर वापिस नहीं करता। मगर इसका मतलब यह नहीं कि गन्ना मीठा है तो जड़ समेत खा लेना। कहो, कितने पैसे चाहिए ? और देख भाई गिरवी तो हम कुछ नहीं रखते। लल्ला की माँ ने तो साफ इन्कार कर दिया। होली के दिन कौन इस झंझट को मोल ले, परन्तु मुझे तेरे बच्चे पर तरस आता है। अच्छा इस घड़े का वजन कितना है ?"

शंकर—"चार सेर!"

बालूभाई—"यों तो पुराने बर्तनों का बाजार भाव ढाई रुपये सेर का है मगर आज त्यौहार के दिन ड़ेढ़ से भी कोई न लेगा। मैं तेरे लिए दो से लेता हूं।"

शंकर—"सरकार! अभी बिल्कुल नया है। एक माह के पहले मैंने इसे पांच के भाव से खरीदा है।"

बालूभाई ने तनक कर कहा—"देख, लेना है तो आठ रुपये ले ले; मुझे देर हो रही है, होली जलानी है।"

शंकर क्या बोलता, उसे अपने बच्चे को बचाना था। २० का माल आठ में देकर डाक्टर की ओर भागा।

जीवन अन्तिम सौंस ले रहा था। डाक्टर ने एक इंजेक्शन दिया। वह जानता था कि इन्जेक्शन का कोई उपयोग नहीं है, फिर भी उसने दे ही दिया। उसे तो पैसे वसूल करने थे। सात रुपये बारह आने लेकर उसने बाहर पैर रखा ही था कि पार्वती की चीख उसके कान पर पड़ी....'हाय, मेरा बच्चा! मुझे छोड़कर चला गया।' डाक्टर ने अपने पैर तेजी से आगे बढाये, जैसे कोई पकडने आ रहा हो।

× × ×

ताराबाई का गाना दो बजे समाप्त हुआ। १० का नोट उसकी थाल में रखकर मैं उठा। डा. किशोर ने भी मेरा ही अनुकरण किया और कहा—"ओह,! दो बज गए हैं, चलिए मैं तुम्हें मोटर से छोड़ता जाऊं! हम दोनों बाहर आये। मैंने उन्हें धन्यवाद दिया और मोटर में बैठ गया। दिल धड़क रहा था, मन अस्वस्थ था। कानों में वही आवाज घूम रही थी—'देखी मानवता!' जैसे-जैसे मोटर आगे बढ़ रही थी, मेरे दिल की धड़कन भी बढ़ती जा रही थी। डर रहा था कि न जाने अब क्या देखने को मिलेगा। मोटर पार्वती के घर से गुजरने लगी, मेरा सारा शरीर काँपने लगा। मैंने पार्वती के घर की ओर देखा, सन्नाटा छाया हुआ था। घर स्वार्थी संसार को देख विकटता से अट्टहास कर रहा था। जब वहां से किसी प्रकार की आवाज न आई तो मेरे जी में जी आया। सोचने लगा कि—'अब बच्चे को आराम होगा, सब सो गए होंगे।'

...मेरा घर सराफे में था। होली सब से बड़ी इसी मोहल्ले में जलाई गई थी। अभी तक उस की लपटें आकाश से बातें कर रही थी। किशोर को धन्यवाद दे, मैं ऊपर के कमरे में पहुंचा। बिना कपड़े बदले ही पलंग पर लेट गया। नींद नहीं आ रही थी। रह-रह कर वही आवाज कानों में गूंज रही थी—'देखी मानवता!' मैं घबरा कर उठ बैठा। इसी समय नीचे से एक धीमी आवाज सुनाई दी—"हाय! मेरा लाल, मेरा बच्चा!" मैं आवाज सुन खिड़की के पास पहुंचा। देखा, शंकर बच्चे को पार्वती से ले रहा है, मगर पार्वती उसे और भी अधिक जोर से हृदय को लगा रही है।

"पागलपन मत करो पारो? देखो, किसीने देख लिया तों आफत आजायेगी। छोडो, इसे होली माता की गोद में सुला दूं।" शंकर ने बच्चे को होली माता की गोद में लिटा दिया। होली की ज्वालाएं और तीव्र हुईं। मानो भूखी होली को खाद्य मिल गया हो। होलिका के पवित्र अग्नि स्पर्श से जीवन हंस पडा। मैंने एकदम आँखें मूंद लीं।

सोचने लगा—'जिस भगवान की कृपा से प्रहलाद होलिका के अग्नि से बच गया, उसी भगवान के विधि-विधान से आज "जीवन" को होली की गोद में सोना पडा।' पर अब भी मेरे कानों में वही आवाज़ गूंज रही थी—"देखी मानवता!"

एकांकी

रोटी और कपड़ा

—बालकृष्ण लाहोटी 'कृष्ण', हैदराबाद

पात्र

पुजारी	बौद्ध भिक्षुक	पादरी	जैनियों के गुरु
मुल्ला	रचनात्मक कार्य कर्ता	नेता	शासक (अधिकारी)
डाक्टर	अध्यापक	पूंजी पति	गृहस्थ

दृश्य पहला (स्थानः— सर्व धर्म-सम्मेलन का पंडाल)

(पुजारी प्रार्थना करता है। पादरी, मुल्ला, बौद्ध, भिक्षु आदि-अपने २ मतानुसार ईश्वर को याद करते हैं।)

पुजारी—संसार में अनेकों धर्म हैं, परन्तु उन सब के तत्व एक ही हैं। सभी धर्म ईश्वर को मानते हैं। धर्मों के नाम अलग-अलग हैं; पूजा के ढंग पृथक-पृथक हैं। सब धर्म यही कहते हैं कि सत्य बोलो, झूठ न कहो, न्याय से चलो और किसी धर्म या जाति पर जुल्म न करो। सारांश इसी प्रकार की निर्विवाद बातें सब में एक ही सी मिलती हैं। सभी में बुराई को बुराई और भलाई को भलाही कहा जाता है।

गृहस्थ—हाँ, यह तो ठीक है पुजारीजी! परन्तु मुल्ला, पादरी आदि अपने-अपने धर्म को श्रेष्ठ बतलाते हैं तब इन धर्मों में कौनसा धर्म श्रेष्ठ है?

पुजारी—देखिए, हमने यहाँ पर स्नेह सम्मेलन बुलाया है। अतः यहाँ श्रेष्ठाश्रेष्ठ की बातें न करो। सब धर्म समान हैं। ईसाइयों के ईसा भगवान हैं तो मुसलमानों के पैगम्बर हजरत मुहम्मद और बौद्धों के भगवान बुद्ध हैं।

गृहस्थ—यह तो ठीक है, पर जब सभी धर्मों के महन्त एक स्थान पर आगए हैं तो हर एक का कुछ भला-बुरा मालूम हो जाना चाहिए।

पुजारी—तो क्या तुम सब को लड़ाना चाहते हो?

गृहस्थ—इस में लड़ाने की कोई बात ही नहीं है। मैं एक गृहस्थाश्रमी हूं, मुझे कुछ तो सन्तोष प्रद बोधामृत मिलना ही चाहिए।

मुल्ला—अच्छा तुम कौन हो?

गृहस्थ—मैं एक आदमी हूं!

पादरी—मगर किस मज़हब में पैदा हुए हो?

गृहस्थ—मैं 'विश्वधर्म' में पैदा हुआ हूं।

मुल्ला—विश्वधर्म कौनसा धर्म है?

गृहस्थ—दुनिया का सर्व प्रथम धर्म कौनसा है?

पुजारी— सब से प्राचीन तो वैदिक धर्म है!

गृहस्थ—और अब............

पुजारी—वैदिक धर्म ही को हिन्दू लोग मानते हैं। अतः यह सिद्ध है कि प्राचीन धर्म-हिन्दू धर्म ही है।

गृहस्थ—बस, मेरा बाप भी उसी धर्म में पैदा हुआ था। मैं समय की गति विधि में आकर कुछ समय के लिए भटकता रहा, पर अब मैं फिर से इस समस्या में विचार मग्न हो गया हूं।

मुल्ला—देखिए जनाब! सब धर्मों में इस्लाम धर्म ही ऐसा है, जिससे बिना रोक-टोक नजात मिलती है।

पादरी—भगवान ईसा का बताया हुआ मार्ग सरल और सच्चा है, और यही कारण है जो दुनिया में इस धर्म को मानने वाले सब से अधिक हैं।

बौद्ध भिक्षु—'दया और प्रेम को अपनाइए।' यही बौद्ध भगवान का एक मात्र सन्देश है। अहिंसा परमोधर्मः

जैनी—'अहिंसा परमोधर्मः' इस महा मंत्र से ही संसार का कल्याण हो सकता है। दया करो, प्रत्येक प्राणी पर दया करो। कोई ऐसी हरकत न करो, जिससे जीव हिंसा

हो। सब से बड़ा पाप जीव-हिंसा है। हमारे चलने फिरने और बोलने से भी जीवहिंसा होती है! अतः हमारा धर्म कहता है कि इस में सावधानी बरती जाय। इस प्रकार का पालन करने से आत्मा ८४ लाख योनियों में भटकने से बच सकती है।

मुल्ला—हमारे धर्म-शास्त्र में भटकना-वटकना कुछ नहीं है। नजात का रास्ता साफ़ है बस, कल्मा पढ़ा कि....

पादरी—हमारा ईसा मसीह दुनिया का प्यारा है। यदि किसी ने एक चपत लगाई तो झट से दूसरा गाल सामने कर दिया। आह! कितनी उदारता है। हमारे धर्म से ही दुनिया को शाँति का मार्ग मिल सकता है।

मुल्ला—हमारे अल्लामियाँ सबको पहचानते हैं। सब के गुनाहों को तोलते और उसी के अनुसार दोज़क या जन्नत का न्याय करते हैं।

गृहस्थ—मुझे आपके उत्तरों से शाँति नहीं मिली। सब धर्म और मज़हब वाले अपने-अपने धर्म और मजहब की तारीफ कर रहे हैं। (डाक्टर की ओर देखकर) आप कौन साहब हैं?

डाक्टर—मैं ईश्वर का अंश हूं। प्रत्येक बीमारी का ईलाज करता हूं।

गृहस्थ—क्या आप से मुझे शान्ति मिल सकती है?

डाक्टर—शाँति प्राप्त करने के लिए तुम्हें डाक्टर बनना होगा और डाक्टर बनकर दुनिया पर उपकार करना होगा। इससे काफ़ी पैसा भी मिलता है। पैसा पास होने पर सब लोग आदर करते हैं, जिससे हृदय को बड़ी शाँति मिलती है।

गृहस्थ—पर मुझे ऐसी शाँति की आवश्यकता नहीं है।
(सेठ आते हैं और जयगोपाल करते हैं।)

गृहस्थ—सेठजी! मुझे शाँति चाहिए, क्या आप दे सकते हैं?

सेठ—जिसके पास पूंजी है, उसे शाँति खोजने की आवश्यकता नहीं है। पूंजी के साथ शान्ति का चोली और दामन का साथ है। जहां पूंजी हो वहां अशांति फटकने भी नहीं पाती।

गृहस्थ—'पूंजी नहीं तो शाँति नहीं' यदि यह ठीक है तो मुझे ऐसी शान्ति नहीं चाहिए। कारण पूंजी के अभाव में शान्ति नहीं मिलेगी।

नेता—तुम्हें शाँति प्राप्त करनी है, तो पहले अपने मन में देश प्रेम उत्पन्न करो। देश-प्रेम से सारे देश में शाँति छा जाएगी। और देश में शान्ति छा जाने से देश के हर एक मनुष्य को शाँति मिलेगी। इस लिए देश प्रेमका चिन्तन करो।

गृहस्थ—"देश प्रेमके चिन्तन से शाँति" अच्छा इस पर विचार करूंगा। (अधिकारी को आते देखकर) नमस्ते! आप क्या करते हैं?

अधिकारी—मैं शासन करता हूं!

गृहस्थ—क्या आपको शासन करने में शाँति मिलती है?

अधिकारी—यदि शासन चलाने में सफलता मिल गई तो अवश्य ही शान्ति मिलती है।

गृहस्थ—तो आपको शाँति नहीं मिलती होगी? यदि आपको शाँति मिले तो आप शासक नहीं कहला सकते। आप अपना दायरा दिन ब दिन चौड़ा कर रहे हैं, और इसकी सुव्यवस्था के लिए आपको नित नये नियम बनाने हैं, नित नये परिवर्तन करने हैं। इसकी पूर्ति होने पर ही शासन टिक सकता है। इससे सिद्ध है कि आपके पास शाँति नहीं है। आपको सुव्यवस्था की चिन्ता लगी रहती है।

पुजारी—सब धर्म एक स्वर से कहते हैं कि बिना भक्ति भाव के शाँति नहीं मिलती। इस लिए एकान्त भक्ति में ध्यान लगाओ और उसका आनन्द लो।

मुल्ला—हाँ, यह बात तो सही है कि बिना इबादत किए शान्ति नहीं मिल सकती।

पुजारी—प्रत्येक धर्म में कुछ-न-कुछ पूजा-पाठ, संध्या, हवन, इबादत, नमाज आदि हैं। और इन्हें बगैर किये किसी प्रकार भी शाँति नहीं मिल सकती।

अध्यापक (प्रवेश करता हुआ) — अध्ययन करने से शांति जरूर मिलती है। किसी वस्तु का अध्ययन कीजिए, उसे याद कीजिए और फिर लिख लीजिए। शाँति अवश्य ही मिल जायगी। जो लोग अपना समय योंही बरबाद करते हैं वे पूरे गंवार हैं। मनुष्य को चाहिए कि वह आवश्यक कार्य से छुट्टी पाते ही अध्ययन करे और लिखे।

रचनात्मक कार्यकर्ता—(आकर) रचनात्मक कार्य तथा शरीर-श्रम से मानव अपना सुधार कर सकता है।

गृहस्थ—तो क्या रचनात्मक कार्य से हृदय को भी शान्ति मिल सकती है ?

रचनात्मक कार्यकर्ता—सोचो अगर रचनात्मक कार्य से शांति नहीं मिलती तो फिर संसार में किसी भी बात से शान्ति नहीं मिल सकती। श्रम करोगे तो देश समृद्ध होगा और तुम्हें शान्ति मिलेगी।

गृहस्थ—मैंने सब से पूछा परन्तु मुझे कोई संतोषजनक शांतिप्रद उत्तर नहीं मिला। सब अपनी-अपनी गाने में हैं। इन सब से मुझे शान्ति नहीं मिल सकती, पर शांति कहाँ है ? लो, वह साधु महाराज आ रहे हैं, उन्हीं से पूछ लूं। उठकर, महाराज प्रणाम !

साधु—जीते रहो बेटा !

गृहस्थ—महाराज ! मैंने शान्ति की बहुत खोज की परन्तु वह कहीं नहीं मिली। हार कर मैं आपकी शरण में आया हूं। अब आप ही बताइए कि शान्ति कहाँ है ?

साधु—बच्चा ! तू कैसी शान्ति चाहता है ?

गृहस्थ—मैं वह शान्ति चाहता हूं, जिससे कुछ भी चिन्ता न हो !

साधु—ऐसी शान्ति मृत्यु से ही मिल सकती है।

गृहस्थ—मृत्यु के पश्चात् रह ही क्या जाता है ! यह तो अनुचित लगता है।

साधु—चिन्ता हर मानव को होती है। हाँ, कुछ शान्ति सन्तोष से भी प्राप्त हो सकती है, परन्तु वह भी अस्थायी। मनुष्य को चिर शाँति तो ज्योति में ज्योति मिलने से ही प्राप्त हो सकती है। ईश्वर के ध्यान में ऐसी समाधि लगा कर…………

गृहस्थ—साधु महाराज ! आपकी बातों से मुझे शान्ति नहीं मिली। अब मैं किस के पास जाऊं ?

साधु—भगवान का भजन करो। देखो मैं भी तुम्हारी तरह शान्ति प्राप्त करने के लिए घूम रहा हूं, परन्तु मुझे भी शान्ति कहीं नहीं मिली। मैं बहुत संतोषी हूं। मुझे न कपड़े की चिन्ता है न सोने जागने की। शरीर पर विभूति और सिर पर जटा रखी है, किन्तु फिर भी उदराग्नि आत्मा में व्याकुलता फैला देती है। विवश हो भिक्षा वृत्ति करनी पड़ती है और जब उदराग्नि भोजन से बुझा दी जाती है तब कुछ समय के लिए शान्ति मिल ही जाती है।

गृहस्थ—(चौंक कर) तो आपको भी भूख असन्तुष्ट कर देती है ? आश्चर्य है !

साधु—क्या हम मनुष्य नहीं हैं ?

गृहस्थ—फिर साधु क्यों हो गए ?

साधु—मुझ में संसारी बनने की शक्ति न थी। कौन झंझट में पड़े। १ से २, २ से ४ और ४ से दर्जनों सदस्य हो जाते हैं। इन सब का भार सर पर उठाना ही पड़ता है इसी लिए……

गृहस्थ—साधु हो गए ?

साधु—हां !

गृहस्थ—परन्तु इस पर भी आपको शान्ति नहीं मिली ?

साधु—शान्ति ! शान्ति !! कुछ देर के लिए रहती है। और……

गृहस्थ—कुछ देर के लिए रहती है ?

साधु—जब पेट भर भोजन मिल जाता है !

गृहस्थ—तो फिर आपकी दृष्टि में गृहस्थाश्रम ठीक है या सन्यासाश्रम ?

साधु—बेटा ! गृहस्थाश्रम ही ठीक है क्यों कि बेचारे गृहस्थ गृहस्थी चला कर हमें भी कुछ न कुछ दे ही देते हैं !

मजदूर—(प्रवेश करता हुआ) देश में बेकारी बढ़ रही है। नित्य मजदूरी भी नहीं मिलती। अब हम क्या करें।

गृहस्थ—तुम कौन हो ?

मजदूर—मैं मजदूर हूं, जो रोटी और कपड़े के लिए तरस रहा हूं !

गृहस्थ—क्यों भाई तुम मजदूर होकर ऐसी बातें क्यों कर रहे हो ?

मजदूर—मजदूरी नहीं मिल रही है, जिससे मन में अशान्ति ने घर कर लिया है।

गृहस्त—तो तुम्हें मजदूरी मिलने पर शान्ति मिलती है ?

मजदूर—मजदूरी प्राप्त होने के पश्चात् सब घर के सदस्यों का समय पर पेट भरता है तब शान्ति मिल ही जाती है।

गृहस्थ—सब झूठे हैं। पुजारी, मुल्ला, पादरी, बौद्ध, जैनी, साधु आदि सब झूठे हैं। सब आडम्बर है। शान्ति

न तो वैदिक धर्म में हैं, न इस्लाम, ईसाई, बौद्ध आदि धर्मों में हैं। सब अपने-अपने धर्म का प्रचार कर रहे हैं। डाक्टर कहता है कि मुझे इलाज करने में शान्ति मिलती है। पूंजीपति कहता है कि मुझे पूंजी जमा करने से शान्ति मिलती है। अधिकारी अपने शासन में शान्ति देखता है। अध्यापक अध्ययन में शान्ति पाता है। नेता केवल देश की चिन्ता में शान्ति देखता है, परन्तु मैंने देखा कि शांति कहीं नहीं है। चारों ओर अशांति है। आगे बढ़ने, उन्नति करने और धर्म बढाने की उमंगों में भी शान्ति तड़प जाती है। कहीं भी शान्ति नहीं है!

पुजारी— वैदिक धर्म से बराबर शान्ति मिल सकती है। क्यों कि यह दुनिया का सबसे प्राचीन धर्म है! वैदिक धर्म ने ही दुनिया को रास्ता दिखाया है, प्रकाश दिया है। वेदों में विज्ञान है और वेद ही दुनिया के प्राचीन और प्रथम ग्रंथ हैं। अतः दुनिया को इसी धर्म से शान्ति मिल सकती है। किसी अन्य धर्म से नहीं!

मुल्ला— हमारे धर्म को पास से देखो, स्वयं शान्ति आपके पास पहुंच जायगी।

गृहस्थ—भाइयों! शान्ति धर्मों में नहीं है, शाँति सन्तोष और श्रम में हैं! धर्म के ठेकेदार महन्त-पुजारी, मुल्ला-मौलवी, बौद्ध-जैन सब उपदेश रूपी धंधा करते हैं। ये सब अपने-अपने पन्थ के, अपने २ धर्म के अनुसार लोगों की संख्या बढाना चाहते हैं। इनके प्रचार के लिए अब भी करोड़ों रुपये खर्च किये जाते हैं क्यों कि इन धर्म के ठेकेदारों को किसी न किसी रूप में वेतन भी मिलता है।

सब—(एक स्वर से) यह हमारे धर्मों का अपमान है। हमारे धर्म का मजाक उड़ाया रहा है। यह पाखंडी है! नास्तिक है!!

मुल्ला— तुम्हारा कोई ईश्वर नहीं है?

पुजारी— तुम्हारा कोई धर्म या मज़हब नहीं है?

गृहस्थ— है, पर तुम्हारे सब धर्मों से न्यारा!

मुल्ला— वह कौन सा है? जिससे तुम्हें शान्ति प्राप्त हो सकती है।

गृहस्थ— (डाक्टर से) तुम्हारा कार्य भी अच्छा है, परन्तु वह अब धन्धे का रूप ले चुका है।

डाक्टर— इलाज हमारा धन्धा नहीं है, सेवा है!

गृहस्थ— यों तो सभी सेवा करते हैं। एक छोटा-सा दूकानदार भी अपने आपको सेवक बतलाता है, किन्तु सच्ची सेवा अलग ही होती है।

नेता— मैंने जनता की बहुत बडी सेवा की है!

गृहस्थ— अच्छा, आपने सेवा किस लिए की?

नेता— देश को उठाने के लिए, देश को आज़ाद कराने के लिए।

गृहस्थ—नहीं! तुमने अपने बडप्पन को बढ़ाने के लिए देश सेवा की है। ऊपर से देश सेवा का नारा लगाया, भीतर से देश का धन लूटा, चन्दा हज़म किया। तुम में भी अशान्ति है, इसी कारण तो हर जगह नेताओं की संख्या के साथ-साथ पार्टियों की संख्या भी बढती जा रही है।

अध्यापक— आपको-शान्ति की खोज में दूर जाने की आवश्यकता नहीं है! शान्ति तुम्हारा चरण चूमेगी यदि तुमने अध्ययन किया तो!

गृहस्थ— आपका अध्ययन रहने दीजिये। पहले रोटी और कपड़ा चाहिए। बाद में अध्ययन की सोचेंगे। इनके बिना किसी का जीवन क्रम नहीं रुका है। भोजन वस्त्र न मिले तो अध्ययन-वध्ययन सब अपनी जगह ही रह जाता है। सब उपस्थित में बन्धुओं से पूछता हूं कि कोई बिना भोजन के शान्ति रख सकता है?

पुजारी— आहार ही सब का प्राण है। बिना आहार के वृक्ष और पौधे तक जीवित नहीं रह सकते।

मुल्ला— बिना भोजन के धर्म-कर्म सब झूठा मालूम होता है।

गृहस्थ—अतः आप सबका यह दावा झूठा है कि धर्म से शान्ति मिलती है। शान्ति मिलती है केवल भोजन और वस्त्र से। गृहस्थी-के लिए तो सब से बड़ी शान्ति यही है। जब तक आप धर्म प्रचारकों को भोजन नहीं मिलेगा, आप से न पूजा पाठ होगी और न धर्म प्रचार ही। अतः इससे सिद्ध होता है कि शान्ति सब के लिए भोजन में ही है।

सब—(एक साथ) हाँ, शाँति भोजन वस्त्र से ही प्राप्त हो सकती है।

व्यर्थ सभी है रोना धोना।
रोटी कपड़ा पहले होना॥

नहीं धर्म से पेट भरेगा।
उपदेशों को व्यर्थ करेगा॥
हिन्दू मुस्लिम या ईसाई।
बौद्ध जैन या हो कोई भाई॥
धर्म सभी का सुघड़ सलोना।
रोटी कपड़ा पहले होना॥

लिखना-पढ़ना शासन करना।
नेता का दम पीछे भरना॥
और कहीं भी शान्ति नहीं है।
भोजन के बिन कांति नहीं है॥
औरों में बस समय न खोना।
रोटी-कपड़ा पहले होना॥

पाठकों तथा लेखकों से—

दक्षिण भारती को अधिकाधिक उपयोगी बनाने के लिए पाठकों तथा लेखकों के सुझावों का हम सदा स्वागत करेंगे। उपयोगी पत्रों को यथा संभव प्रकाशित करने का प्रयत्न किया जायगा।

—संपादक

थाईलण्ड की महिलायें

सुश्री सेमस्री कासमस्री

हिन्दुस्तान और थाईलैण्ड की सांस्कृतिक परम्परा में कुछ समानता है, और यह दोनों देश वर्षों से अच्छे पड़ौसियों की तरह रह रहे हैं। इसलिये स्वभावतः ही हम अेक दूसरे के बारे में जानने को उत्सुक रहते हैं, मैं आशा करती हूं कि भारतवर्ष के लोग, विशेषतः यहां की महिलायें, मुझसे थाईलैण्ड की बहनों के बारे में दिलचस्पी से सुनेंगी। मैं नई दिल्ली में होने वाले दक्षिण एशिया में महिलाओं की स्थिति पर होने वाली अन्तर्राष्ट्रीय परिषद् में भाग लेने के लिये थाईलैण्ड की प्रतिनिधि के रूप में आई हूं।

थाईलैण्ड की अधिकांश जनता बौद्ध है, इसलिये वहां जाति, वर्ण या पुरुष स्त्री के भेद का झगड़ा नहीं है। वहां की महिलाओं के कौटुम्बिक जीवन में अैसे खास या कड़े नियम नहीं हैं कि वे क्या करें – क्या न करें? घर में महिला की स्थिति पूर्णतः उसके चरित्र और व्यक्तित्व पर अवलम्बित है-और कुछ अंश में शायद उसकी सामाजिक और आर्थिक स्थितिपर निर्भर है। विवाहिता स्त्री अपने पति के कुटुम्ब के साथ रह सकती है अथवा पति स्त्री के कुटुम्ब के साथ रह सकता है। साधारणतः यह रिवाज है कि एक नव दम्पति अपना एक नया परिवार बनाता है। इस नये परिवार के लिये कौन सी चीज़ें वर पक्ष के लोग दें और वधू के पक्ष से क्या चीज़ें दी जायें-इस बारे में प्रत्येक ज़िले में अलग अलग प्रथायें हैं।

यद्यपि पति ही परिवार का मुखिया माना जाता है, उसे परिवार के प्रबन्ध के बारे में बहुत कम हस्तक्षेप करना होता है। कानूनन पति पत्नी की जायदाद निम्नलिखित चार तरह की होती है –

१. हर अेक की व्यक्तिगत जायदाद जो विवाह के पूर्व उसके पास थी और जो व्यक्तिगत जायदाद के रूप में मान ली गई है। हर अेक को अधिकार होता है कि वह उसका प्रबन्ध करे या किसी भी प्रकार उसका उपयोग करें।

२. विवाह के पूर्व जो चीजें प्रत्येक के पास थीं अथवा जो विवाह के अवसर पर भेंट या वसीयत के रूप में उसे मिलीं और जो परिवार आरम्भ करने के लिये अेक दूसरे की चीजों के साथ मिला दी गई थीं। इन्हें **सिन दरम** कहा जाता है।

३. विवाह के बाद जो सम्पत्ति प्राप्त होती है, उसे **सिन समरोस** कहते हैं।

४. सिन दरम और सिन समरोस अेक सम्मिलित सम्पत्ति बन जाती है और इसे **सिन बोरिखोन** कहते हैं। इसका उपयोग पूरे परिवार के लिये किया जाता है। साधारणतः इसका प्रबन्ध पति ही करता है।

सम्बन्ध विच्छेद या मृत्यु होने पर जायदाद को ऊपर लिखे चार भागों में बांटा जाता है। पहले दो हिस्सों की सम्पत्ति जिसकी हो उसे मिल जाती है। विवाह के बाद प्राप्त होने वाली सम्पत्ति सिन समरोस को दो भागोंमें बांटा जाता है – यह तो सम्बन्ध विच्छेद की बात हुई। एक की मृत्यु होने पर उसकी सम्पत्ति बच्चोंको और जीवित पक्ष (पति या पत्नी) को प्राप्त होती है। वहां विवाह अेक साझेदारी है। विवाह या तलाक धर्म का विषय नहीं है।

स्त्रियों के जीवन में यदि कोई अभाव है तो वह सिर्फ अज्ञान और स्वार्थ के कारण ही। बहुपत्नीत्व प्रथा के रूप में मिट चली है। अधिकांश स्त्रियां इस पक्ष में हैं कि दासी-पुत्रों को भी पिता के कानूनन पुत्रों के समान माना जाय। माता पिता की गल्ती के कारण बच्चों को क्यों कष्ट भुगतना पड़े।

(ता. २८ दिसम्बर, १९५२, को आल इण्डिया रेडियो से दिये हुअे अंग्रेजी भाषण का अधिकांश।)

अनुः रामकिशोर 'पाषाणी', वर्धा

किसान

अहाहा! किसान क्या है तेरा देश।
माणिक मोती भरा है इसका वेश॥
तेरे हाथ के छाले जब पड़ते हैं ईश्वर।
तब होती है प्रभु की मर्जी सब पर॥
तेरी मर्जी वैसी ही होती है खेत पर।
जैसी मांकी मर्जी होती है बालक पर॥
फिर भी सदा तू रहता है दुखी।
जब कि तेरे बलपर बनते सब हैं सुखी॥
तू ही जतन करता है सारे जग का।
फिर क्यों तू बनता शोषित शोषक का॥
तेरी उदारता से बन गये हैं सब ऐदी।
पर तू है जो सदा फिरता है कष्ट कैदी॥
न मिलता तुझे कपड़ा न मिलती तुझे रोटी।
खाता है जतन से तू जो मिलती सूखी रोटी॥
इतना होकर काम में रात दिन लीन।
जग कहता है सारा तुझे है तू दीन॥
पर मैं कहती हूं ना तेरी मुट्ठी खाली।
ऐ किसान तू है सब जगका माली॥

(सौ. लीला भुरट)

पाठ १६ वां

पांच भाषाएं एक साथ सीखिए

हिन्दी

हैदराबाद दक्षिण भारत के मध्य में स्थित है। यह समुद्र की सतह से साधारणतः दो हजार फिट ऊंचा है। रायचूर के पास यह ऊंचाई ४०० फिट ही रह गई है। तेलंगाना और मराठवाड़ा हैदराबाद के दो मुख्य भाग हैं। कर्नाटक के तीन जिले मराठवाड़ा में ही आते हैं। तेलंगाना में ३२ इंच वर्षा होती है और मराठवाड़ा में २८ इंच, परन्तु मराठवाड़ा की भूमि काली और उपजाऊ है। तेलंगाना की जमीन रेतीली है। तेलंगाना में तालाब अधिक हैं। मराठवाड़ा में बावलियों से सिंचाई का काम लिया जाता है। मराठवाड़ा में गेहूं, जवार, कपास, दालें और तिलहन अधिक पैदा होते हैं। तेलंगाना में चावल और इमली की काश्त बहुतायत से होती है।

मराठी

हैद्राबाद दक्षिण भारतांच्या मध्यभागीं स्थित आहे. साधारणपणे हैद्राबाद समुद्र तटांपेक्षा २००० फूट ऊंच आहे. रायचूर जवळ ही ऊंची फक्त ४०० फूट राहिलीं आहे. तेलंगाणा आणि मराठवाड़ा हैद्राबादचे दोन मुख्य भाग आहेत. कर्नाटकांचे तीन जिल्हे मराठवाड्यांतच मिळविलें आहेत. तेलंगाण्यांत ३२ इंच पाऊस पडतो आणि मराठ-वाडयांत २८ इंच, पण मराठवाडयाचीं जमीन काळी आणि सुपीक आहे. तेलंगाण्याची जमीन रेताळ आहें. तेलंगाण्यांत तलाव जास्त आहेत. मराठवाडयांत जमीनीस पाणी देण्याचें काम विहीरीनी घेतले जातें. मराठवाडयांत गहूं, जवारी, कापूस, दाळीं, आणि तेलाचें बी जास्त पिकतास. तेलंगाण्यांत तांदूळ आणि चिंच जास्त पिकते.

कन्नड़ी

हैदराबादउ दक्षिण भारतद मध्यदल्लिदे। इदु समुद्रद दंडेगिंत सुमारू एरडु साविर फीटु एत्तरवागिदे। रायचूर हत्तर मात्र केवल नाल्कु नूरू फीटु उळिदिदे। तेलंगाणेयू मत्तु मराठवाडेयू हैदराबादद मुख्य भागगळागिवे। कर्नाटकद मूरू जिल्हेगळु मराठवाडदलिये बरुत्तिवे। तेलंगाणेयल्लि मूवत्तेरडु इंचु मळेयागुत्तदे मत्तु मराठवाडेयल्लि इप्पत्तेंटु इंचु। आदरे मराठवाडेय भूमियु कप्पु मत्तुं निश्चळवाददु। तेलंगाणेय भूमियू मोसबु इरुवदु। तेलंगाणेयल्लि केरेगळु हेच्चागिवे मराठवाडेयल्लि बाविगळिंद होलगळिगे मोटेयन्नु होड़ेदु नीरू पूरैसिकोळ्ळुत्तारे, मराठवाड़ेयल्लि गोदी, जोळ, हत्ति, बेळे मत्तु कुशिवे, एण्णेकाळु विशेषवागि बेळेयुतवे। तेलंगाणेयल्लि अक्कि मत्तु हूळीहण्णु हेचागि बेळेयुत्तदे।

तेलुगु

हैदराबादु दक्षिण देशमु मध्यनु उंडुनु, ईसमुद्रमि योक्क लेवलु नुंचि रोंडु वैला फूट्ठ पैन उंडुनु, रायचूरलो दीनी ऊंचाई नालगु वंदल फूट्ठ उंडनयिनदि। तेलंगाना, मराठवाडा, हैदराबाद रोंडु खास हिस्सालु येरपडिनाइनदी कर्नाटक लो मूडु जिल्लालु मराठवाडलो कल्सिनार। तेलंगानालो मुपै रोंडु इंचुलु बर्षमु अउनु। मरियु मराठवाडालो इरवैयेनमिदि इंचुलु, मराठवाड भूमि नलपु धान्यादुलु चाला हेच्चुगा पंडुनु, तेलंगाणालो चरउ चाला उन्नवी,

मराठवाडालो-बावललो नुंचि आवपाशी पनलु तीसकोन बडनु। मराठवाडालो गोधमलु जोन्नलु दूदि पोप्पुलु हेच्चुगा पंडुनु। तेलंगाणालो बीयमु चिंतपंडु चाला बागुगा आउनु।

अंग्रेजी

Hyderabad is situated in the heart of South India. It is generally 2000′ high from the sea level. Near Raichur this high level has come down to 400′ only. Telangana and Marathwada are the two main regions of Hyderabad. The three districts of Karnatak are included in Marathwada. The rain fall in Telangana is 32 inches and in Marathwada 28″. But the land in Marathwada is black and furtile. The land in Telangana sandly. In Telangana there are many Tanks. The irrigation in Marathwada is done with the help if wells. Wheat, Jawar, cotton, pulses and oil seeds are the main products of Marathwada. Paddy and Imli are highly produced in Telangana.

उर्दू

حیدرآباد جنوبی ہند کے بیچ میں آباد ہے - یہ سمندر کی سطح سے عام طور پر دو ہزار فٹ اونچا ہے - رائچور کے پاس یہ اونچائی چار سو فٹ ہی رہ گئی ہے - تلنگانا اور مرہٹواڑہ حیدرآباد کے دو خاص حصے ہیں - کرناٹک کے تین ضلع مرہٹواڑہ میں ملائے گئے ہیں - تلنگانے میں ۳۲" بارش ہوتی ہے اور مرہٹواڑا میں ۲۸" - لیکن مرہٹواڑہ کی زمین کالی اور زرخیز ہے - تلنگانا میں زمین ریتلی ہے - تلنگانا میں تالاب زیادہ ہیں - مرہٹواڑہ میں باولیوں سے آب پاشی کا کام لیا جاتا ہے - مرہٹواڑہ میں گیہوں - جوار - کپاس - دالیں - اور تلہن زیادہ پیدا ہوتے ہیں - تلنگانا میں چاول اور املی کی کاشت کثرت سے ہوتی ہے -

हमारी अजंता, एलोरा व पंचवटी यात्रा

—राजमल फ़रक्या, सेवाग्राम

एक्सकरशन का शैक्षणिक महत्व समझाते हुए हमें दिनांक १०-२-५३ को अजन्ता, एलोरा, पञ्चवटी व कोरा-... की यात्रा पर जाने की पूज्य आर्यनायकमजी ने आज्ञा ...। हम २३ व्यक्ति दिनांक १७-२-५३ की सन्ध्या के ७॥ ... सेवाग्राम से बिदा हो वर्धा पहुँचे। प्लेटफार्म पर ... कर १२॥ की गाड़ी से जलगाँव के लिये रवाना ... व दिनांक १८-२-५३ को प्रातः ६ बजे जलगांव पहुँचे। ... मुसाफिर खाने में प्रार्थना की और नाश्ता करके जलगांव ... अजन्ता को मोटर पर रवाना हुए। दिन के ११ बजे ...दापुर डाकबंगले पर पहुंचे और स्नान व भोजन के ... अजन्ता की प्रसिद्ध गुफाएं देखने गये। फ़रदापुर ... बंगले से अजन्ता की गुफाएं ३ मील दूर इंदियाद्रि ... में स्थित हैं।

अजन्ता की गुफाएं

फ़रदापुर से ३ मील दूर अजन्ता की गुफाएं इंदियाद्रि ... में बनी हैं। यहां पर दो पहाड़ियां मिलती हैं और पास ... एक नदी भी प्रवाहित है। नदी को वघारा नाम से सम्बोधित ... जाता है, पहाड़ी के निचले भाग में ये गुफाएं अर्द्ध चन्द्रा-... बनी हैं। इन सब गुफाओं की लंबाई ५०० गज़ है।

ये गुफाएं बौद्ध काल की हैं और इनका समय २५० ...पू. से ५०० ई. तक का है। भिन्न २ गुफाएं भिन्न २ ... की प्रतीत होती हैं। वे गुफाएं, पहाड को काट कर ...ई गई हैं। और इतनी बड़ी, इतनी सुन्दर और इतनी ...पूर्ण हैं कि इन्हें देख शिल्पकारों की प्रशंसा करते २ ... नहीं होती। इन गुफाओं में ३ प्रकार की गुफाएं हैं। ... जो चैत्य हैं, जहां बौद्ध भिक्षु एकत्र होकर प्रार्थना करते ...। चैत्य में एक बड़ा केन्द्रीय कमरा व स्तूप है। ... का प्रवेश द्वार बहुत ही सुसज्जित है। अजन्ता के ... की दीवारों पर मूर्तियां व चित्रकारी बहुत ही सुन्दर है।

(२) दूसरे विहार हैं जो भिक्षुओं के निवासस्थान हैं। ...विहार की रचना निम्नांकित रीति से है—मध्य में बड़ा ..., प्रवेश द्वार के सामने, मध्य में मंदिर है, जिन में बुद्ध की मूर्तियां प्रतिष्ठित हैं। फिर प्रत्येक विहार में १६ से २० तक छोटे-छोटे १०′×२०′ के कमरे हैं जिन में भिक्षु रहते थे।

(३) स्तूप—गुम्बदाकार इमारत को स्तूप कहते हैं। ये किसी सन्त की स्मृति में बनाए जाते हैं। स्तूप जीवन काल में या उस के पश्चात् भी बनाये जाते थे।

अजन्ता की इन गुफाओं को सबसे पहले कैप्टन मिल ने देखा था, सन १८४३ में फर्ग्यूसन ने यहाँ का विवरण प्रकाशित किया और यहां के चित्र लिये। और धीरे-धीरे सरकार ने इन की सुरक्षा का प्रबन्ध किया, आज यहां का प्रबन्ध हैदराबाद सरकार करती है।

अजन्ता में २९ गुफाएं हैं। गुफा नं. १ व ३ जो प्राचीन तम हैं, २०० ई. पू. की प्रतीत होती हैं। पुरानी गुफाओं में पालिश नहीं है। गुफा नं. १२ व ८ भी इसी काल की हैं (२०० ई. पू. की)। उनकी साइज $13\frac{1}{2} \times 16\frac{1}{2}$ है और दूसरी गुफाओं से छोटी हैं।

गुफा नं. ८, ९, १०, ११, १२, १३ हीनयान बौद्धों की हैं। और शेष महायान शाखा के बौद्धों की हैं। पहली १५० से २०० ई. पूर्व की मानी जाती है और इन में ४ चैत्य और शेष विहार हैं।

गुफा नं. १, २, १६ व १८ में पेंटिंग अच्छी दशा में है। गुफा नं. ९ व १० जो कि चैत्य हैं, पेंटिंग अच्छी हालत में हैं। इन गुफाओं की दीवारों, प्रवेशद्वारों, छतों व स्तंभों पर चित्रकारी है। १८७९ तक निम्नांकित गुफाओं में भी पेंटिंग थी १, ३, ४, ६, ७, ९, १०, ११, १५, १६, १७, १९, २०, २१, २२, २६ और अब वह मलीन हो गई है तथा खुरची हुई है। गुफा नं. १, २, ९, १०, ११, १६, १७, १९, २१ में अच्छी महत्व पूर्ण कलाकृतियां हैं। सौभाग्य से विगत २० वर्षों से इन गुफाओं का अच्छा संरक्षण हो रहा है। गुफा नं. ६ व ७ ४५० से ५५० ई. की मानी जाती हैं।

अब हमें यह देखना है कि उस चित्रकारी का विषय क्या है!—इस चित्रकारी में महात्मा बुद्ध का जीवन

चरित्र कथाओं के आधार पर अंकित किया गया है। यह माना जाता है कि गुफाओं के बनाने व चित्रित करने का समय एक था; अलग २ भी हो सकता है। इन गुफाओं के चित्रों की आकृति उनके महत्वानुसार छोटी बड़ी है। यहां अधिकांश में बुद्ध की खड़ी, बैठी व मृत्युशय्या पर पड़ी मूर्तियां हैं। साथ में पद्मपाणि, वज्रपाणि, यशोधरा, राहुल आदि की भी मूर्तियाँ हैं। इन गुफाओं की रचना व मूर्तिकला अद्वितीय है।

दिनांक १८ व १९-२-५३ को हमने दो बार अजंता की गुफाएं देखी व २०-२-५३ को १२ बजे औरंगाबाद पहुँचे औरंगाबाद अजंता से ६४ मील दूर है। अजंता से आगे का मार्ग पहाड़ी का ३० फुट ऊंचा चढाव है। ३०० फुट की ऊंचाई पर पठार व समतल मैदान आता है। औरंगाबाद में नायक ने विश्रांति लेने को कहा व पूरा दिन बिना कुछ देखें नष्ट कर दिया। हमारी इच्छा थी कि बीबी का रोज़ा व ७ गुफाएं देखें पर नायक की शिथिलता से पूरा दिन नष्ट हो गया। केवल दिन में बाजार व पनचक्की देखी। २१-२-५२ को एलोरा के लिये रवाना हुए। एलोरा की गुफाएं औरंगाबाद से १८-२० मील दूर हैं। बस मोटर नित्य आती है। २१ रु. किराया है। हम ८ बजे रवाना हुए और दौलताबाद का क़िला देखा। यह क़िला देवगिरी के राणा रामदेव ने बनाया था। क़िला एक बहुत ऊंची पहाड़ी पर बना हुआ है। इस के तीनों ओर पहाड़ियाँ हैं। सुरक्षा व दृढ़ता की दृष्टि से यह क़िला बहुत ही श्रेष्ठ है। इस में सात कोट व ७ बड़े द्वार हैं। बीच २ में १,१ फर्लांग लम्बी सीढ़ियाँ हैं। बीच में व ऊपर महल बने हुए हैं। प्रवेश द्वार के बाईं ओर महल थे, वहां अब पोलिस एक्शन के बाद भारत माता का सुन्दर मन्दिर बना दिया गया है। पास ही दायीं ओर १ चांद मीनार है जो २१० फीट ऊंची है। इस पर हम चढ़े व चारों ओर का दृश्य देखा। हम किले के ऊपरी भाग तक बढ़े और वहां रखी हुई तोपें देखीं। हमने किले के गुप्त मार्ग भी देखे। इस किले को अलाउद्दीन ने जीता था। वास्तव में यह क़िला बहुत ही मज़बूत है।

२१-२-५३ संध्या को हम एलोरा की गुफाएं देखने पहुँचे। यहां ३४ गुफाएं हैं जिनमें नं. १ से ९ तक बौद्ध गुफाएं, नं. १० से २९ तक की हिन्दू गुफाएं और नं. ३० से ३४ तक की जैनी गुफाएं हैं। बौद्धकाल की गुफाएं-विश्वकर्मा गुफा से लेनभाव गुफा तक का निर्माण काल ५०० से ६५० ई. पू. माना जाता हैं। यहां की गुफाएं अजंता की गुफाओं जैसी जुड़ी हुई नहीं हैं, कुछ गुफाएं ही जुड़ी हैं शेष अलग २ व डेढ़ मील की लम्बाई में फैली हुई हैं।

हिन्दू गुफाओं में (नं. १० से २९ तक में) भगवान शिव की मूर्तियाँ हैं। शिव विवाह, शिव कैलास पर, शिवभैरव के रूप में, कहीं तांडव नृत्य करते हुए शिव, भस्मासुर को वर देते शिव, कहीं दशावतार व कहीं काल भैरव के रूप में शिव और कहीं शिवलिंग हैं। शिव, पार्वती, गणेश आदि की भी कई मूर्तियां हैं। यहां की मूर्तियां बड़ी सुन्दर व भावपूर्ण है। गुफा नं. १६ सर्वोत्तम है।

बौद्ध मूर्तियों में बुद्ध की मूर्तियां ध्यानासन, सिद्धासन, पद्मासन व खड़ी विराजित हैं। यहां की बौद्ध मूर्तियां अजंता जैसी सुन्दर नहीं हैं। चित्रकारी भी यहां नहीं के बराबर है।

हिन्दूकाल की मूर्तियां शंकराचार्य व उनके बाद की प्रतीत होती हैं। कैलास मंदिर बहुत बड़ा व बहुत सुन्दर है।

जैन गुफाएं नं. ३० से ३४ तक की हैं। तीर्थंकरों की मूर्तियां हैं। महावीर स्वामी व पार्श्वनाथ की मूर्तियाँ विशेष हैं। इन जैन मंदिरों के द्वारों पर इन्द्र इन्द्राणि, विष्णु शिव ब्रह्मा आदि द्वारपाल के रूप में चित्रित किये गये हैं। ये बाद की गुफाएं हैं।

एलोरा से लौटते समय हमने खुल्दाबाद में मुगल सम्राट औरंगजेब की क़ब्र देखी। यह क़ब्र बड़ी सादी बनी है जिससे औरंगजेब की मितव्ययी प्रवृत्ति दृष्टिगोचर होती है। औरंगज़ेब धर्म और कुरान के अनुसार चलने वाला बादशाह था, वह प्रजा का धन अपने भोग विलास में खर्च करना नहीं चाहता था। इसी लिये उसने अपनी वसीहत में अपनी सादी क़ब्र बनवाने का ज़िक्र किया था। इस क़ब्र पर निज़ाम ने पीछे से संगमरमर जड़वाये हैं। औरंगजेब की इच्छानुसार उसकी क़ब्र उसके गुरु सैयद जैनुद्दीन की क़ब्र के पास बनाई गई है।

फिर हमने बीबी का मकबरा देखा, यह मकबरा ताज महल की छोटी तस्वीर है। वही आकृति, वही गेटआदि वही पत्थर और वही सजावट, पर केवल छोटे रूप में। इस

मकबरे में औरंगजेबके बीबी की क़ब्र है । इसके फव्वारे, क़ब्र के चारों ओर का शांत वातावरण, आस पास के बगीचे इस स्थान की शाँति व सुन्दरता को बहुत रोचक व हृदयाकर्षक बना देते हैं ।

यहाँ से चल कर हम पन चक्की पर आये । जहां एक तालाब जैसा भरता है और वहां के पानी से एक चक्की चलाई जाती है । इस स्थान के चारों ओर का दृश्य भी मनोहर है ।

२१ की रात को औरंगाबाद से रवाना हो कर रात के १ बजे हम नासिक उतरे । सबेरे ६ बजे तक स्टेशन पर ही रहे और नायक की अव्यवस्था व प्रबन्धहीनता से ७ बजे बम्बई को रवाना हुए और पञ्चवटी जानें के कार्यक्रमानुसार नहीं जा सके । ता. २२ को १० बजे बम्बई पहुँचे, फिर नायक की अव्यवस्था रही, जिससे ५ बजे तक कहीं ठहरने न जाकर स्टेशन पर ही पडे रहे । माटुंगा में जो कमरा लिया था, वहां नायक ने नहीं ठहराया और होटल के मालिक को १० रु. देकर माटुंगा का प्रबन्ध समाप्त किया । फिर धोबी तालाब पर ग्रेट पंजाब होटल में १७ रु. रोज पर दो कमरे लिए एक भाइयों के लिए और एक बहिनों के लिये ।

ता. २३ से २६ तक बंबई में रहे । एलीफेंटा की गुफाएं, गेट वे आफ इंडिया, म्यूजियम, जू, कोराग्राम आदि देखे जिनका वर्णन नीचे दिया जाता है ।

गेट वे आफ इंडिया एक बड़ा दरवाजा समुद्र के तट पर बनाया गया है । वह १९१० में जार्ज पंचम के स्वागत के लिये बनाया गया था । यहां लार्ड हार्डिंग; विक्टोरिया आदि की पाषाण मूर्तियां हैं । इसी के पास भारत का प्रसिद्ध ताजमहल होटल है, जहां राजा, महाराजा व रईस ठहरा करते हैं ।

हमने अजायब घर देखा, जिस में भारत के बौद्ध, हिंदू, जैन काल की सहस्रों मूर्तियां हैं । पाषाण काल से आजतक के औजार व हथियार हैं । भिन्न २ कालों की पोशाकें, आदमियों के चित्र व मूर्तियां हैं । पुराने सिक्के, पुरानी वस्तुएं, पुराने मकानों के ढांचे, पुरानी पोशाकें आदि हैं ।

हमने जू या चिड़िया घर देखा, जहां हाथी, घोडे, ऊंट, चीते, शेर, तेंदुल, रीछ, बारहसिंगे, जिराफ, शुतुरमुर्ग, कबूतर, तोते, सांप, नाग नागिन, नीलगाय, गधे, बन्दर, कंगारु आदि अनेक पशु पक्षी देखे । सब पशु पक्षियों के लिए प्राकृतिक वातावरण का निर्माण भी यहां की विशेषता थी । रानीबाग में स्थित बम्बई का यह चिड़िया घर अपना सानी नहीं रखता । यहां देखने का ४ आने टिकट लगता है ।

इस के बाद दिनांक २५-२-५३ को हम कोराग्राम देखने गये । यहां जापानी ढंग से चावल की खेती होती है । यहां खाद बनाने की क्रिया देखी । यहां का गेरुप्यांट व ब्रोन डाइजेस्टर बडे उपयोगी यंत्र थे ।

दिनांक २३-२-५३ के रात्रि को ९ बजे हम नासिक के लिये रवाना हुए । नासिक ठहरने का कनसेशन आर्डर में उल्लेख नहीं था अतः स्टेशन मास्टर ने वहां ठहरने देने से इनकार कर दिया ।

मैं ता. २६-२-५३ को, डिविजनल ट्राफिक मैनेजर बम्बई, के पास गया, अपना कनसेशन आर्डर दिखाया व उनसे प्रार्थना की कि वे हमें बंबई से वर्धा जाते समय नासिक ठहरने की आज्ञा दे दें । उन्होंने ऐसा स्वीकार किया और उन्होंने कम टिकिट पर हमें ता.२७ को नासिक ठहरने की आज्ञा लिख दी । हम दो बजे रात को, ता. २६ को नासिक आये । सबेरे ६ बजे स्टेशन से नासिक ग्राम की बस में गये (किराया ४ आने) और ४ आने म्युनिसिपल टेक्स देकर नगर में उतरे । वहां से गाड़गे महाराज की धर्मशाला में गये, गोदावरी नदी में रामघाट पर स्नान किया । गोदावरी देवी, राम सीता, शिव हनुमान आदि के मन्दिर देखे । तपोवन देखा, सीता हरण का स्थान, पंचवटी का स्थान, चोमुखी हनुमान आदि मन्दिरों के दर्शन किये व रात्रि की गाडी से वर्धा के लिये रवाना हुए । हम ७ बजे की गाडी से रवाना होने वाले थे परन्तु जयापाल, श्रीवास्तव भाई और रामनाथ भाई इस गरदी पर चलने को राजी नहीं हुए और वे बस के चलने के पहले कहीं चले गये जिससे बस रेल के समय ५ बजे स्टेशन पर पहुँची तो भी ये दोनों व्यक्ति नहीं आये । इसलिये हमें रात के २ बजे तक स्टेशन पर पड़ा रहना पड़ा । दूसरे दिन ता. २८ को २ बजे वर्धा आये व नायक की अव्यवस्था से ५ बजे तक स्टेशन पर पड़े रहे व ६॥ तक सेवाग्राम पहुंचे ।

इस एक्सकरशन में हमने अजंता, एलोरा की भव्य एवं अद्वितीय भारतीय शिल्प कला, मूर्ति कला, चित्रकारी का दर्शन किया। एलोरा में हमें ब्राह्मण काल की कला व जैन काल की कला का भी दर्शन हुआ। हमने मध्यप्रदेश, हैदराबाद, बम्बई आदि प्रांतों की धरती, जमीन की पैदावार, रहन-सहन, आचार-विचार आदि का अध्ययन किया! पंचवटी जैसे तीर्थ स्थान के दर्शन कर अपने को धन्य माना, बम्बई की चहल-पहल व कारोबार को देखा, वहां के म्यूजियम, जू व एलीफेंटा केव्ज को देखा। एलीफेंटा की गुफाएं भी बौद्धकाल के बाद की कृतियां हैं, यहां एलोरा के शिवालयों जैसी ही कृतियां हैं। कहीं शिव पार्वती विवाह का दृश्य है, तो कहीं शिव कालभैरव के रूप में है। कहीं रावण कैलाश पर्वत ही पर है। मन्दिर के मध्य में बहुत बड़ा शिवलिंग है। ये गुफाएं समुद्र के टापू पर बसी हैं। जो ३००, ४०० फुट ऊंचा है। एलीफेंटा को हम मोटर बोट में बैठ कर गये थे। समुद्र में हमारी यात्रा बहुत ही सुन्दर रही। हमने डाकयार्ड व कई जहाज़ भी देखे। हमने जिस उद्देश्य से यात्रा आरंभ की थी वह हमने पूर्ण किया। यात्रा का विवरण लिखने का केवल दो घंटे समय है, इसलिये अधिक लिखना असंभव है। वैसे मैंने प्रत्येक स्थान अजन्ता, एलोरा, पंचवटी, बीबी का मकबरा, दौलताबाद का दुर्ग आदि का विवरण १०० पृष्ठों में लिख रखा है। जिस-जिस स्थान पर मैं गया, वहां का विस्तृत वर्णन मैंने लिख रखा है। कहां कितने मन्दिर, उनमें कितनी मूर्तियां, मन्दिर की लम्बाई चौड़ाई, स्तंभों की संख्या, स्तंभों का आकार व मोटाई आदि विस्तृत नोट्स मेरे पास हैं, किन्तु आज समय का अभाव है इसीलिये मैं उस यात्रा का वर्णन उतने सुन्दर, सुव्यवस्थित व रोचक रूप में नहीं लिख सका, जैसे कि मैं अपनी इस अभूत पूर्व रोचक व सुन्दर यात्रा का वर्णन लिखना चाहता था।

———

हिन्दी प्रचार के नाम पर सं० ३

सभा की ललकार

—चतुर्वेदी श्रीराम शर्मा, हैदराबाद

'दक्षिण भारती' के पिछले अंक में सभा के प्रदीपों की चर्चा की गई थी। सभा के कुछ अन्य प्रकाशन भी हिन्दी प्रचार के नाम पर हिन्दी का पर्याप्त अहित कर रहे हैं। उनके संबंध में भी कुछ चर्चा कर उनके सुधार के लिए कुछ सुझाव उपस्थित करना अप्रासंगिक न होगा।

इन प्रकाशनों में कविवर श्रीराम विरचित 'ललकार' का एक प्रमुख स्थान है। मानो हिन्दी प्रचार सभा इसके द्वारा ललकार रही है कि देखो—सभा अपना कूड़ा-कचरा अपने प्रभाव के बल पर सब स्थानों में बखेर रही है यदि किसी में साहस हो तो आए—सामने ताल ठोंक कर युद्ध करे अन्यथा चुप चाप अपनी दुम निकाल कर अपना मुंह पोंछ कर इस कचड़े की गदगी दूर करले। आपने अश्वमेघ यज्ञ के इतिहास पढे होंगे। 'ललकार' सभा के अश्वमेघ यज्ञ का छोड़ा हुआ अश्व है। इसके ऊपर उंगली उठाने वाला सभा का कोप भाजन बनेगा। स्वयं श्रीराम के कोदण्ड का भय इस ललकार के साथ सन्निहित है।

'ललकार' की अब तक ८०,००० प्रतियाँ खप चुकी हैं। सभा का छोड़ा हुआ अश्व होने के कारण इस की मान्यता हर जगह है। सभा की परीक्षाओं में तो कम से कम दो पाठ्यक्रमों की यह मुख्य पुस्तक है ही। 'बोर्ड आफ सैकण्डरी एज्यूकेशन' ने भी इसको अपनी पाठ्य-पुस्तकों में विशेष रूप से आमंत्रित कर स्थान दिया है। उस्मानिया विश्व विद्यालय को इस 'ललकार' के आगे सर झुकाने का सम्प्रति कोई अवसर मिला या नहीं—यह विश्वस्त रूप से ज्ञात नहीं है, पर वैसे यह ललकार घर-घर पहुंच चुकी है और अब कदाचित ही कोई हिन्दी का विद्यार्थी, पाठक या शिक्षक ऐसा बचा होगा, जिससे इसका साक्षात् न हुआ हो।

'ललकार' की लोकप्रियता का एक दूसरा प्रमाण भी है। सुना जाता है कि ललकार की रायल्टी के खाते में उसके लेखक को ६०००) मिलने वाला था, मगर दानवीर लेखक ने उसे सभा को भेंट कर सभा के अन्य कार्यकर्त्ताओं के सामने आदर्श उपस्थित कर दिया। इस प्रकरण से आप भली भाँति जान गये होंगे कि इस ललकार का कितना प्रचार अब तक हो चुका है।

अब हमें देखना चाहिए कि ललकार में है क्या?

'ललकार एक कवि विशेष की १५ रचनाओं का संग्रह है, जिनके द्वारा कवि महोदय ने कविता लिखने का कुछ अभ्यास किया था और जिन्हें सभा द्वारा प्रकाशित कराने पर सभा कि आर्थिक कठिनायों की बड़ी उलझन एक साथ ही दूर हो गयी। यह २८ पृष्ठों की ८०००० खपने वाली पुस्तक भारती मुद्रा ६ आने में मिलती है तथा हाली मुद्रा ७ आने में। सभा की २ परीक्षाओं में स्वीकृत होने के कारण हिन्दी प्रचार के नाम पर इसकी बिक्री की अच्छी व्यवस्था हो चुकी है और प्रति पुस्तक लगभग चार आना कल्दार का लाभ उठाकर सभा ने २००००) कल्दार तो जमा कर ही लिया होगा।

इन १५ कविताओं में ५ कविताएं कदाचित् प्राथमिक परीक्षा में हैं और शेष १० मध्यमा में। हिन्दी प्रचार सभा की परीक्षाएं एक प्रकार से प्रौढ़ शिक्षण की व्यवस्था है। जिनकी मातृभाषा हिंदी है वह तो अपने-अपने विद्यालयों में बहुत-सी हिन्दी की पुस्तकें पढ़ ही लेते हैं। सभा का ध्येय उन लोगों में विशेष रूप से हिंदी का प्रचार करना है, जिनकी मातृभाषा हिंदी नहीं है। अतएव सभा की परीक्षाओं में विशेष रूप में ऐसे व्यक्ति बैठेंगे, जिनकी मातृभाषा हिंदी नहीं है। अधिकांश उन में से प्रौढ़ ही होंगे। उन के लिए ललकार की पांच कविताएं—"चूं चूं चिड़िया", "बिस्तू तेजू दोनों भाई", "चन्दारानी", चन्दामामा", "मेरी माता" उनके बचपन को पुनः हरा करने वाली वस्तुएं हैं।

जो कविताएं मध्यमा परीक्षा के लिए स्वीकृत हैं उन के सम्बन्ध में भी विषय की दृष्टि से कोई भी महत्व नहीं है। भाषा और छन्द की दृष्टि से भी इन में केवल लड़कपन ही प्रतिबिंबित है। यह पुस्तक कहीं भी पाठ्य पुस्तक के रूप में स्वीकृत की जाने योग्य नहीं है। हां, बालक अपने मनो-

रंजन के लिए इस की कविताएं पढ़ सकते हैं—परन्तु जो पाठ विद्यालयों में या वर्गों में पढ़ाने के लिए रचे जाते हैं, उनका स्तर कुछ दूसरा ही होता है।

यदि यह मान भी लिया जाए कि 'ललकार' केवल प्रारंभिक कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए ही रची गयी है, तो फिर उसका उपयोग केवल उन कक्षाओं में हो सकता है जहां कि बालकों की वय ५-६ वर्ष की हो। मगर सभा के समर्थकों ने उस पुस्तक को दो वर्ष से समस्त हैदराबाद राज्य में हिन्दी मातृभाषा वाले विद्यार्थियों के लिए पाँचवीं कक्षा के लिए स्वीकृत करा लिया है। अतएव पांचवी कक्षा में दूसरे प्रांतों में हिन्दी मातृभाषी जहां सूर और तुलसी की वाणी में राम और कृष्ण के बाल चरित्र का आनंद लेते हैं, वहाँ हैदराबाद में उन्हें 'चूं चूं चिड़िया' और 'चन्दामामा' से मन बहलाना पड़ता है।

सभा की पुस्तकों के प्रचारक इन पुस्तकों को केवल सभा के प्रकाशन होने के कारण ही इतना महत्व देते हैं। कहा जाता है कि हैदराबाद राज्य के पाठ्य क्रम में हिंदी की ५ व ६ कक्षाओं के लिए जो पाठ्य पुस्तकें रखी गयी हैं, उन में कविताएं भी हैं और वे कविताएं ११ वर्ष की आयु के लिए उपयुक्त भी हैं। परन्तु, हिन्दी प्रचार सभा की पुस्तकों का प्रचार बढ़ाने की दृष्टि से उन पुस्तकों के पद्य पढ़ाने की मनायी कर दी जाती है और इन पुस्तकों के प्रचार का क्षेत्र विकसित किया जाता है।

यह है सभा की ललकार की वास्तविक परिस्थिति! अब इस के सम्बन्ध में सुधार के लिए क्या सुझाव दिया जाए। सब से सीधा सुझाव तो यही हो सकता है कि ललकार का जो बिना बिका स्टाक है, उसे होली तक सुरक्षित रखा जाए। पाठ्य-पुस्तक के लिए इस में से ५-६ अथवा ८ कविताएं चुनकर किसी काव्य मर्मज्ञ से उन्हें दुहरवाई जाए तथा उन्हें पुनः मुद्रित करा कर, लगभग एक या दो आना मूल्य पर, लागत के अनुसार बेचा जाए। यह पुस्तक केवल सभा की प्रथमा परीक्षा में रखी जाए। 'मध्यमा' के लिए कवी कवियों की १०-१२ रचनाओं का पृथक संग्रह प्रकाशित किया जाए।

सभा की ललकार सुनकर सभी भले आदमी मौन हो रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि लोगों ने तुलसीदास की प्रसिद्ध चौपाई को बिल्कुल भुला दिया है "रघु वंशिन महं जहं कोउ होई। तिहि समाज अस कहहि न कोई" सभा हिन्दी प्रचार के नाम पर ललकार-ललकार कर हिन्दी का अहित कर रही है, उसे रोकना हम सब हिंदी हितैषियों का आवश्यक कर्तव्य है।

(४७ का शेषांश)

विद्यार्थी इस वर्ष मैट्रीक की परीक्षा दे चुके हैं उन्हें राममनोहर स्वतः अपने साथ लेकर गांव-गांव घूमना चाहते हैं। घूम-घूम कर संत विनोबा के भूदान यज्ञ का प्रचार कर भूदान में जमीन प्राप्त करना चाहते हैं। इस के लिए ३० दिन की पदल यात्रा का राममनोहर ने कायक्रम आंका है। हर दिन वे १० मील की पैदल यात्रा करेंगे। १० मील चलने पर जिस गांव में वे ठहरेंगे वहां की सफाई, वहां के घर घर का निरीक्षण, ग्रामवासियों से पृथक-पृथक भेंट तथा शाम में सार्वजनिक प्रार्थना करेंगे। प्रार्थना के पश्चात भूदान यज्ञ के महत्व को समझाते हुए भूदान प्राप्त करेंगे। इस कायक्रम में विद्यार्थियों के साथ-साथ कुछ उत्साही अध्यापक बन्धु भी राममनोहर का साथ दे रहे हैं। वास्तव में ऐसे कार्यक्रम से ही ग्राम सेवा के कार्य को पूरा कर सकते हैं। इससे गांवों में नव जीवन का संचार भी होगा और विद्यार्थियों के समय का उपयोग भी। इस लिए इस सुन्दर कार्यक्रम के लिए हम उत्साही मार्गदर्शक राममनोहर को बधाई देते हैं और साथ ही सब विद्यार्थी वर्ग से निवेदन करते हैं कि वे इसे यथा सम्भव अपनायें तथा अपनी गरमी की छुट्टियों का उचित लाभ उठाएं। इससे उन की छुट्टियां भी सानन्द बीतेंगी और उनके समय का न केवल उनको ही बल्कि उनके ग्रामीण भाइयों को भी लाभ होगा। इस निर्माण कार्य से देश का हित होगा और यह समृद्ध बनेगा, सो अलग ही।

गरमी की छुट्टियाँ कैसे बितायें

राममनोहर सन्तपुर हाईस्कूल के एक अध्यापक हैं। गत वर्ष इन्होंने बी. ए. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास की और तुरन्त इन्हें सरकार के शिक्षा विभाग ने हिन्दी अध्यापक बना कर संतपुर भेज दिया। जब से आप विद्यालय में आये हैं विद्यार्थियों में एक नया उत्साह और नवजीवन भर गया है। वर्ष भर आप विद्यालय में वाग्वर्धिनी सभा, खेल-कूद, चित्रकला, संगीत तथा दस्तकारी के वर्ग चलाते रहे। इस कारण विद्यालय का हर विद्यार्थी भाषण देना सीख गया है। खेल-कूद में विद्यार्थियों को विशेष रुचि निर्माण हो गई है। प्रधानाध्यापकजी को विद्यालय के टाईम टेबल में इस वर्ष खेल-कूद का घण्टा नहीं रखना पड़ा है। विद्यार्थी स्वयं ही अपनी रुचि से विद्यालय समाप्त होने पर एक दो घण्टे रोजाना खेल में बराबर भाग लेते हैं। हर वर्ग के विद्यार्थियों को राममनोहर नित नये खेल सिखाते हैं। साथी राममनोहर को विद्यार्थियों में मिल-जुलकर खेलते देखकर अन्य सारे अध्यापकों को भी विद्यार्थियों से मेल बढाने में आनन्द आने लग गया है। चित्रकला के वर्ग में विद्यार्थी सानंद भाग लेते हैं। इससे उन्हें चित्रकारिता से प्रेम हो गया है। चित्र निकालने में सफाई, सुन्दरता और सावधानी के कारण विद्यार्थियों के अक्षर भी सुधर गये हैं। यही वजह है जो संतपुर हाईस्कूल के विद्यार्थियों को इस वर्ष हस्ताक्षर प्रतियोगिता में पहला पुरस्कार मिला है। संगीत के वर्ग विद्यालय आरंभ होने से पूर्व १ घंटा पहले से शुरू होते हैं फिर भी विद्यार्थी अविलम्ब इस वर्ग में शरीक हो जाते हैं। इस वर्ग के कारण देर से आने वाले विद्यार्थियों की संख्या शून्य हो गयी है। दस्तकारी में राममनोहर अपने विद्यार्थियों को लिफाफे बनाना, फूल-पत्ते बनाना, खेल-कूद का सामान तैयार करना, मिट्टी के खिलौने बनाना, लकड़ी को काट कर चित्र बनाना, रोजाना उपयोग में आने वाली तथा घरकी सुन्दरता को बढाने वाली वस्तुओं का निर्माण करना सिखलाते हैं। इससे बहुत से गरीब विद्यार्थी स्वावलंबी बन गये हैं। छुट्टी के या अवकाश के दिन वे इन चीजों को बना कर बेच लेते हैं और अपना खर्च आप बना लेते हैं। यही कारण है जो इस वर्ष स्वावलंबी विद्यार्थियों की संख्या बढ़ गई है। गरीब माता-पिता सहर्ष अपने बालकों को विद्यालय में भेज रहे हैं।

अप्रैल में विद्यार्थियों की परीक्षा समाप्त हो गई है। सब विद्यार्थी अपने-अपने घर जाने वाले हैं। विद्यार्थियों के प्रिय अध्यापक राममनोहर ने इस बार विद्यार्थियों को गरमी की छुट्टियों में कार्य करने के लिए एक कार्यक्रम दिया है। यह कार्यक्रम सभी तरह के विद्यार्थियों के लिए लाभदायक और सरल है। किसी विद्यार्थी को कोर्स की पुस्तकें पढ़ने की सलाह राममनोहर ने नहीं दी है। प्राथमिक कक्षाओं के पढ़ने वाले विद्यार्थियों के लिए, नये-नये टिकिट जमा करना, सुन्दर चित्रों का संग्रह करना, कागज के फूल बनाना तथा विद्यालय के वाचनालय की सुन्दर बालोपयोगी पुस्तकों को पढ़ने, कहा है। मिडल स्कूल के विद्यार्थियों को राममनोहर ने अपने अपने गांव या मुहल्ले में प्रौढ शिक्षा के वर्ग चलाकर, अपने अपढ भाइयों को अखबार, अन्य धार्मिक, सामाजिक तथा शैक्षणिक पुस्तकें पढ़कर सुनाने कहा है। साथ ही उन्हें सूत कातने, कपड़ा बनाने तथा ग्राम सफाई करने को कहा है। हाईस्कूल के विद्यार्थियों को आठ-आठ के जत्थों में बांट कर अपने-अपने क्षेत्र में ग्राम सेवा का कार्य दिया है। ग्राम सफाई में रास्तों की सफाई, बहने वाली तथा गंदगी फैलाने वाली मोरियों का प्रबंध, सोख पीठ बनाने का कार्य तथा ग्राम के कुंओं तथा तालाबों की सफाई का काम सिखाया है। जो

(शेषांश पृष्ठ ४६ पर)

मई १९६३ का भविष्य

काशीनाथ शर्मा, शास्त्री, (श्री गुप्तेश्वर, जोतिषाश्रम, खिरकिया (म. प्र.)

मेष:— अधिक समय अवरुद्ध मार्ग में निर्विघ्नता पूर्वक प्रगति संभव लाभ के मार्ग खुलेंगे। ऋण सम्बन्धी चिन्तायें मिटेंगी। ता. १८ के पश्चात् नवीन व्यावसायिक कार्यों में सफलता मिलेगी। ता. ३ से ८, १३ से १७, २० से २२, २५ से २७, ३०, ३१ के दिन उत्तम।

वृषभ:— आपसी मामलों में व्यय होगा, पर मास के आरम्भ में परस्पर तनाव कम हो कर चिन्तायें मिटेंगी और शान्ति का वातवरण बनेगा। दि. १८ से आकस्मिक धन लाभ सम्भव। ता. १, २, ५ से ८, १३ से १५, १८, १९, २३, २४, २८, से ३१ सुखप्रद।

मिथुन:— अनिच्छित कार्यों में अधिक और आकस्मिक व्यय। परन्तु यह भविष्य के लिए लाभकारी सिद्ध होगा। ता. २१ के पश्चात् लाभ के सुयोग हैं। ता. ३, ४, ८ से १२, १८, १९ २५ से २७ के दिन उत्तम।

कर्क:— प्रथम सप्ताह से ही प्रगति के सुअवसर प्राप्त होंगे। आकस्मिक द्रव्य लाभ होगा। ता. २८ के पश्चात् राज्य में मान-सम्मान बढ़ेगा। ता. १, २, ५, ६, ९ से १५, २० से २२, २८, २९ उत्तम हैं।

सिंह:— अस्वस्थता और अशान्ति मास के आरम्भ से रहेगी। ता. १४ के पश्चात् सुख सुविधा और व्यापार में धन लाभ होगा। ता ३, ४, ७, ८, १७, २३, २४, ३०, ३१ के दिन अत्युत्तम।

कन्या:— अनेक विरोधी और दूर-दूर भागने वालों को शरण में आना पड़ेगा। बहुत दिनों के विछड़े प्रेमी जनों से सम्पर्क बढ़ेगा। उन के सहयोग से उत्तम धन लाभ और अन्य सभी कार्यों में सफलता मिलेगी। ता. ३, ४, ७, ८, ११ से १७, २३, २८, ३० और ३१ के दिन उत्तम।

तुला:— छिपे हुए विरोधियों का स्वरूप प्रकट हो कर नई चिन्ताओं का कारण बनेगा। ता. ४ के पश्चात् कुछ सुख सुविधा का आभास मिलेगा। ता. १४ से मानसिक कष्ट, शारीरिक शिथिलता रहेगी। ता. २१ के पश्चात् सभी प्रकार की निराशायें दूर होंगी। ता. २८ से बहुत से उलझे हुए मामलों में सफलता मिलेगी। ता. १, २, ७, ८, १६ से २२, २८, २९ के दिन शुभ रहेंगे।

वृश्चिक:— पारिवारिक चिन्तायें दूर होकर अपने बौद्धिक विकास की कुशलता से सभी कार्यों में विजय प्राप्त होगी। ता. १४ से प्रवल विरोधी भी शरणागत होंगे। ता. २१ से धर्मपत्नी के स्वास्थ्य में न्यूनता के योग। ता. ३, ४, ९, १०, १८ से २४, ३०, ३१ उत्तम।

धन:— दबे हुए उपद्रव एक बार फिर ज़ोर पकड़ेंगे। ता. १४ से सभी मानसिक अशांति के योग दिखाई देंगे। ता. १४ के पश्चात् छिपा हुआ विरोध प्रकट होगा। ता. २१ से सभी प्रकार के विरोधी शान्त हो जायेंगे और नये लाभकारी कार्यों का श्रीगणेश होगा। ता. ५, ६, ११, १२, २० से २७, ३०, ३१ के दिनों में उत्तम धन लाभ।

मकर:— अपने प्रारंभ किये हुए सभी कार्यों में उत्तम सहयोग होकर अधिक लाभ होगा। ता. १५ से बौधिक कार्यों से विजय की प्राप्ति और सन्तान लाभ होगा आनन्द वृद्धि के सुयोग उपलब्ध होंगे। ता. २१ से बुद्धि जन्य कार्यों में असफलता के नये कारण उपस्थित होंगे। ता. १, २, ७, ८, १३ से १५, २३ से २९ के दिन उत्तम धन लाभ।

कुम्भ:— अधिकांश कार्यों में मासारम्भ से ही पूर्ण सफलता के सुअवसर उपलब्ध होंगे। ता. ४ से एक उत्तम सहयोगी मित्र या बन्धु के सम्बन्ध में नई चिन्ता उत्पन्न होगी। ता. २१ से बहुत से उपद्रव अपने आप शान्त होंगे और चिंता मिटेगी। ता. १ से ४, ९, १०, १६, १७, २५ से ३१ उत्तम।

मीन:— अस्वस्थता और अशान्तिजन्य वातावरण से छुटकारा मिलेगा। ता. ४ से धन प्राप्ति के मार्ग में रुकावट का अनुभव होगा। ता. १४ से समुन्नत और उत्साही सहयोगियों के बलपर अच्छी सफलता प्राप्त होगी। ता. २१ से उत्तम सहयोग के अभाव मे कार्यों में रुकावट का अनुभव होगा। ता. १ से ६, ११, १२, १८, १९, २८ से ३१ के दिनों में पूर्ण सफलता का योग है।
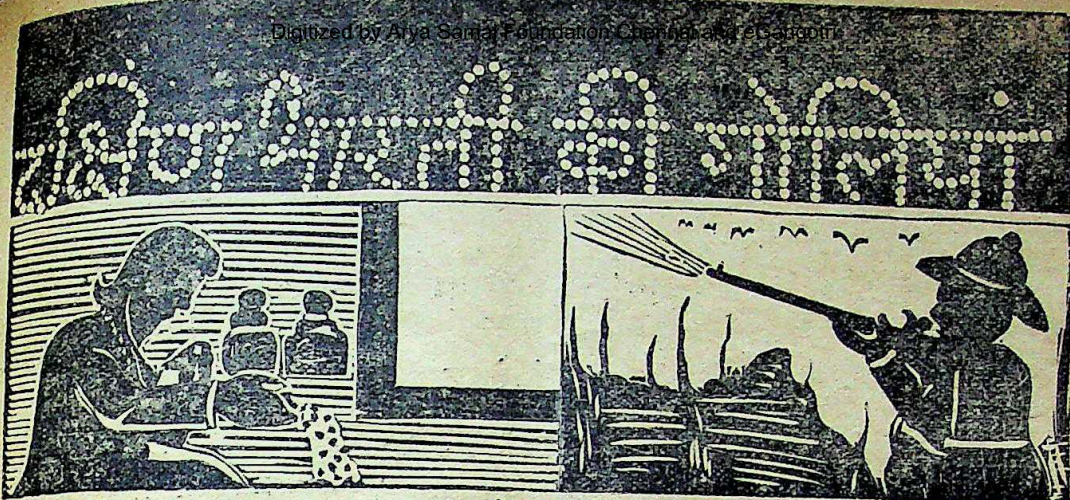
—गोला बाज

१ वाहरे गुलाम मुहमद ! तुमने तो हैदराबाद की नाक रखदी ! तुम ने यहां से जाकर पाकिस्तान पर पूर्ण अधिकार जमा लिया और पाकिस्तान के भूत पूर्व गवर्नर और वर्तमान प्रधान मन्त्री को पछाड़ दिया । पछाड़ ही नहीं दिया, बल्कि घी की मक्खी की तरह निकाल फेंका । फिर कराची में घर-घर का कर दिया । धन्य है ईश्वर तेरी माया ! कहीं धूप और कहीं है छाया !

२ अब नए प्रधान मंत्री साहब को देखेंगे कि पाकिस्तान का काम इन्साफ से चलाते हैं या वही लकीर के फकीर रहेंगे। पाकिस्तान की राष्ट्र भाषा बंगाली होती है या उर्दू । कारण पूर्वी पाकिस्तान में बहु संख्या तो बंगालियों की है और पश्चिमी पाकिस्तान में उर्दू, सिंधी, पिश्तो आदि भाषाएं चलती हैं । लिपि का सवाल भी बड़ा है । एक पक्ष का लिपि दायें तरफ से आती है तो दूसरे पक्ष की लिपि बायें तरफ से । जमीन आसमान का अन्तर । है एक पूरब से एक पश्चिम से । यह नैया कैसे पार लगेगी भगवान ही जाने ।

३ मैं हैदराबादी हूं इस लिए हैदराबाद की तारीफ़ के लम्बे पुल बांधूंगा । पर सही बात तो यह कि अगर हैदराबादी न होते तो पाकिस्तान का जन्म ही दुस्तर था, क्यों कि पाकिस्तान का नाम संस्करण करने वाला एक हैदराबादी ही था । मुसलमानों में कट्टर धार्मिक का निर्माण भी तो हमारे हुजूरे पुरनूर ने ही किया, जो सद फी सद । दिल्ली को ललकार ने वाला बहादुर रजवी भी हैदराबादी था और अब भी पाकिस्तान का प्रधान भी एक हैदराबादी ही है । हैदराबाद का टाटा, बिरला, भगोड़ा मीर लायक अली भी बड़ा मशहूर है । आज भी हैदराबाद ट्रस्ट फंड का निर्माण कर पाकिस्तान को लाभ पहुँचा रहा है ।

४ लोग कहते हैं यदि हैदराबादी दिमाग खर्च न होता तो पाकिस्तान ही नहीं बनता । बिलकुल सच है ।, एक हैदराबादी दिमाग की उपज ने ही जिन्ना के कांग्रेसी दिमाग को बिगाड़ दिया था और एक हैदराबादी रईस ने लाखों करोड़ों का धन साम्प्रदायिकता को बढ़ाने में खर्च कर दिया था, जिस के फलस्वरूप भारत में हिन्दू मुस्लिम झगड़े फूट पड़े थे । वाह रे हैदराबादी, तेरी क्या तारीफ करूं ?

५ अब भी सुना जाता है कि कई हैदराबादी पाकिस्तान को तन मन धन से सहायता पहुँचाते हैं । भला अपनी लगाई हुई बेल को बिना सिंचे वे किस तरह सूखा सकते हैं । बराबर दिली हमदर्दी रहेगी । कई हैदराबादी भाग गए हैं, कई भागने का विचार करते हैं, किन्तु फिर घबराते हैं कि कहीं ऐसा न हो कि न खुदा ही मिला न विसाले सनम, 'न इधर के रहे न उधर के रहे' की बात उन्हीं पर चरितार्थ हो जाय ।

६ अब सुनते हैं कि दोनों देशों, अर्थात् भारत पाक के मंत्रियों में शान्ति की वार्ता होने वाली है । बात बड़ी अच्छी है किन्तु उनके गुरु जिन्ना, लियाकत से कुछ समझौता न हुआ और भारतके दो टुकड़े होगए, तो मौजूदा प्रधान मन्त्री जी से क्या आशा करें । यह तो अभी शासन बाल्यावस्था में हैं । इनकी प्रसिद्धि भी दोनों देशों में कम है । इसका भी बड़ा गम है । (शेष पृष्ठ ५१ पर)
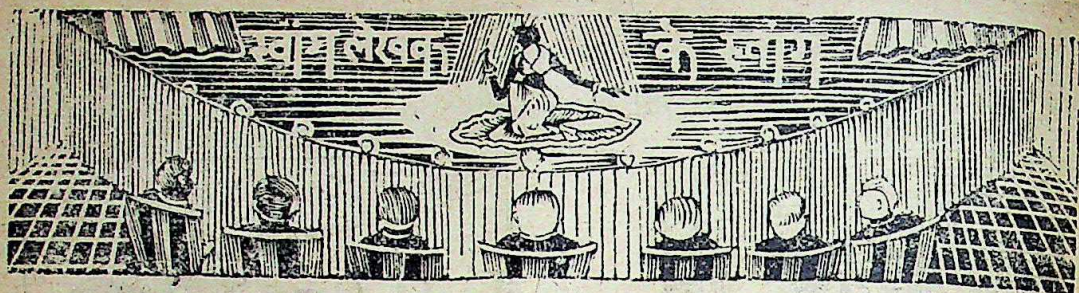
—स्वांग लेखक

कोरिया

१ मित्र—कोरिया में युद्ध रुक गया है।

२ मित्र—यह तो बड़ा ही अच्छा हुआ।

३ मित्र—मगर विजय किस की हुई ?

२ मित्र—अमरीका और कोरिया दोनों की विजय हुई।

३ मित्र—दोनों की विजय कैसे संभव है ?

२ मित्र—यही तो कमाल है।

१ मित्र—मित्रो ! विजय किसी की नहीं और हार भी किसी की नहीं।

३ मित्र—तो यों कहो कि समझौता हुआ है। चलो अच्छा ही हुआ।

४ मित्र—यदि भारत का कहना पहले ही मान लिया जाता, तो अमरीका की इज्जत रह जाती।

विज्ञान और इन्सान

१ मित्र—कहो मित्रो ! इन्सान बढ़कर है या विज्ञान ?

२ मित्र—विज्ञान !

३ मित्र—नहीं इन्सान !

४ मित्र—विज्ञान को इन्सान ही बनाता है, इस लिए इन्सान ही की शक्ति बढ़ कर समझनी चाहिए। क्यों मित्रो ?

३ मित्र—अमरीका ने कोरिया पर हजारों बम बरसाए, परन्तु क्या हुआ ?

२ मित्र—हुआ क्या ! कोरिया जल भुन कर खाक हो गया। वहां का प्रत्येक व्यक्ति दुःखी है, पर अमेरिका का क्या बिगड़ा ? हां, धन की हानि जरूर हुई।

३ मित्र—और उसका एक सिपाही भी नहीं मारा गया ?—वाहरे तुम्हारा घमंड इन्सान होकर हैवान बनते हो।

१ मित्र—मारे क्यों नहीं गये, अमरीकी सैनिक भी बड़ी संख्या में मारे गए हैं। सच पूछो तो युद्ध प्रथा ही खराब है। इस में धोखा, दगा, फरेब सब चलता है।

४ मित्र—विश्व संघ को चाहिए कि युद्ध प्रथा को दफनाकर विज्ञान की भलाई के कार्य में लाने का प्रस्ताव पास करें।

पाकिस्तान और हिन्दुस्तान

१ मित्र—क्या पाकिस्तान लड़ाकू देश है ?

२ मित्र—देखो न इसी लिए तो रात दिन वहां चैन नहीं है। पहले तो हिन्दुओं से विरोध था, पर अब कादियानी सियाही मुसलमानों में भी विरोध हो रहा है।

३ मित्र—झगड़ा किस-किस बात का है ?

१ मित्र—एक पक्ष कहता है, भारत पर हमला कर दो, तो दूसरा कहता है समझौता कर लो।

२ मित्र—मगर इस्लामी राज्य का नारा तो, एक-स्वर से है।

१ मित्र—हां ऐसे भी कुछ लोग हैं जो कहते हैं धर्म निर्पेक्ष राज्य हो।

३ मित्र—हां कुछ अवामी लीग के लोग हैं जो पाकिस्तान शासन का विरोध करते हैं।

४ मित्र—उन में वह सोहरावर्दी भी हैं, जो बंगाल मिनिस्टरी के समय कलकत्ते को खाक कर देना चाहते थे, मगर भारत को देना मंजूर न करते।

१ मित्र—दुनिया के मुसलमान देखते हैं कि भारत और पाकिस्तान का शासन प्रबन्ध किस प्रकार चल रहा है। वहां अबतक विधान भी नहीं बना।

२ मित्र—पहले विधान बनाएंगे या लड़ाइयां लड़ेंगे। वहां बहु संख्यक लोगोंकी बंगाली भाषा को राष्ट्रभाषा नहीं मान रहे हैं और बहुत से मसले हैं जो धर्मान्धता के कारण नहीं सुलझ रहे हैं।

रेल्वे-शताब्दी

१ मित्र—रेल को चलकर १०० साल होगए हैं, सरकार इस का उत्सव मना रही है परन्तु—

२ मित्र—परन्तु क्या यह तो अच्छा कार्य ही हुआ। लोगों को ३० रुपए में सैकडों मिल भ्रमण करने को मिला। लोग एक दूसरे से नए पुराने हुए, एजंटों को काम मिला। व्यापारियों का व्यापार बढा और भी कइयों का भला हुआ।

१ मित्र—किन्तु मैं यह सोचता हूं कि हमारी सरकार अंकोत्पत्ति दिवस क्यों नहीं मना रही है? जिस प्रकार रेल से भ्रमण व आयात निर्यात में सुविधा हुई है उसी प्रकार भारत की देन दस अंकों की है। आज मनुष्य मात्र को हिसाब की जरूरत पड़ती है और वह केवल दस अंकों द्वारा ही पूर्ण होती है। इन अंकों को हमसे ईरान ने लिया और वहां से योरोप आदि संसार भर के देशों में ये अंक और इस पर आधारित गणित शास्त्र फैल गया। आज अंक गणित की पल-पल में जरूरत पड़ती है। पहले गिनती को, लोग अक्षरों में या विविध चिन्हों में लिखते थे, परन्तु इस मसले को हमारे भारत देश के, विद्वानों ने दस अंक निकाल कर हल कर दिया। और मनुष्य मात्र को सुविधा पहुंचाई।

२ मित्र—अच्छा तो, आपका ख्याल है कि रेल की अपेक्षा हजार गुना अधिक अंकों ने हमें उन्नति में सहयोग दिया है।

१ मित्र—हां! हां! बेशक यही बात है।

२ मित्र—तो अब भारतीय संसद् के सदस्यों से कहें कि वे इसका आन्दोलन शीघ्र ही छेड़ दें ताकि भारत की गुरुता प्रकट हो। बोलो भारत की जय!

———

(शेष पृष्ठ ४९ का)

७ कोरिया को बांटकर जो नतीजा निकाला गया, वह सामने आगया। भारत को भी बांटने का मजा सबको मिल गया। अब भाषावार प्रान्त बनाने की बात सरकार तथा प्रांतीय भाषी जनता सोचती है, यह अच्छी है या बुरी, यह तो भविष्य ही बतलायेगा किन्तु बांटने की नीति बुरी है। इसको भारत सरकार फिर अपना कर लाभ उठायेगी या हानि यही देखना है। अब तो करनाटक, महाराष्ट्र, सिखिस्तान, राजस्थान आदि भी आवाजें उठा रहे हैं।

८ सरकार ने ऐलान किया है कि आन्ध्र को परीक्षा रूप में देखकर आगे सोचा जायगा परन्तु खुदाके बेचैन बन्दों को कहां सब्र है। आहिस्ता २ आवाजें बुलन्द कर रहे हैं। देखें सरकार क्या सोचती है। आज भाषावार प्रांत रचना न करने से भी काम चल ही रहा है और शायद होने पर भी ऐसा ही चलता रहेगा तब इस उतावलेपन से क्या लाभ? इस समय तो पंच वर्षीय योजना को सफल बनाने में प्रयत्नशील रहना ही बुद्धिमानी है।

(शेष पृष्ठ १८ का)

हुई है। इस धारणा का मूल कारण टीका के अन्त में लिखे हुये शब्द हैं:—"इति श्री पद् कूट सूरदास टीका सम्पूर्णम्।" यदि 'सूरदास' व 'टीका' शब्दों के बीच आड़ी पाई होती तो यह स्पष्ट अर्थ होता कि "सूरदास द्वारा निर्मित टीका" किन्तु पद वास्तव में ऐसा है:—" इति श्री पदकूट सूरदास। टीका सम्पूर्णम्॥" इस से यह स्पष्ट होता है कि सूरदास के पदकूटों पर यह टीका किसी अन्य विद्वान ने लिखी है। डा. धीरेन्द्र वर्मा यह मानते हैं कि एक टीका सेनापति ने भी साहित्य-लहरी पर लिखी है और कुछ कूटों का संकलन उनका बढ़ाया हुआ है। इसी टीका पर आधारित सरदार कवि की अधिक प्रसिद्ध है।

——*——

—हवा का झोंका चलना होता है चलता ही है, घटनाएं जो होती हैं, हो कर रहती हैं। पर हम केवल उनके कारणों का विवेचन मात्र करते हैं।

—विक्टर ह्यूगो

—बड़ी बड़ी बातें बोलना, सोचना आसान है, किन्तु जब बड़े-बड़े काम करने की बारी आती है तो हृदय पीपल के पत्ते की तरह कांपने लगता है।

—मोहनलाल महतो

बावलियों के लिए सरकारी सहायता

हैदराबाद राज्य में सिंचाई का काम नहरों व तालाबों की अपेक्षा कुंओं तथा बावलियां से ही अधिक होता है। यहां के किसानों को इसी में सुविधा हैं। हैदराबाद सरकार ने इस सुविधा को और बढ़ाने के लिए इस वर्ष २४ लाख रुपये की सहायता देने का निश्चय किया है।

यह सहायता नये कुंएं, बावलियां खुदाने तथा पुरानी बावलियों या कुंओं को ठीक तरह से दुरुस्त करने के लिए दी जायगी। जो नये कुएं या बावलियां खुदवाना चाहते हैं उन्हें सरकार ३००० रुपये की सहायता देगी तथा पुरानी बावलियां या पुराने कुंओं की दुरुस्ती के लिए १००० रुपये की आर्थिक सहायता सरकार की ओर से दी जायगी।

यह रकम किसानों को कर्ज के रूप में दी जायगी। प्रति वर्ष 6¼ % की दर से इस रकम पर किसानों से सूद वसूल किया जायगा। असल रकम को ५ वर्षों में, ५ बराबर किस्तों में वसूल किया जायगा। पहली किस्त पहला वर्ष समाप्त होने पर वसूल की जायगी।

इस सहायता से जो बावलियाँ या जो कुंएं खुदवाये या दुरुस्त किए जाएंगे, उनसे खाद्यान्न की खेती की सिंचाई किसानों पर लाजमी होगी। एक कुंएं या बावली पर कमसे कम छः एकर जमीन की सिंचाई हो सकती है। इस जमीन में खाद्यानों की उपज आवश्यक है। ऐसा न होने पर सरकार को अधिकार होगा कि सूद और असल रकम पहली किस्त में ही वसूल करले।

जून १९५३ के अन्त तक ही यह सहायता दी जायगी। इस के बाद आने वाले प्रार्थना पत्रों पर विचार नहीं किया जायगा।

सहायता के लिए प्रार्थना पत्र तहसीलदार साहब के पास या अग्रीकल्चरल असिस्टन्ट के पास भेजना चाहिए।

सहायता दो किस्तों में दी जायगी आधी रकम पहले और आधी रकम आधा काम पूरा होने पर। आधाकाम पूरा हुआ या नहीं इसकी जांच सरकारी अधिकारी करेंगे।

सेल्स टैक्स

हैदराबाद विधान सभाने राज्य में प्रचलित सेल्स टैक्स में कुछ संशोधन पास किये हैं, उनमें से कुछ ये हैं—एक रुपये पर जहां चारपाई हाली वसूल किये जाते थे। वहां अब कल्दार एक पैसा यानी ३ पाई वसूल किये जायेंगे।

—सेल्स टैक्स वसूल करने के लिए जो ६५०० रुपये की वार्षिक बिक्री की सीमा थी, उसे बढ़ाकर ७५०० कर दी गई है। यानी जिन की वार्षिक बिक्री ७५०० या इससे अधिक रुपयों की होगी वे ही सेल्स टैक्स वसूल कर सकते हैं।

राज्य भर में जो करीब २,५०,००० व्यापारी है उन में से केवल ३०,००० व्यापारियों ने सेल्स टैक्स जमा करके सरकारी कार्यालय में जमा करवाया है। शेष व्यापारियों की साल भर में बिक्री ६५०० से अधिक नहीं हो सकी इस लिए कानूनन वे सेल्स टैक्स वसूल नहीं कर सके।

कपडे का निर्यात

सरकार ने कपडे के निर्यात पर से टैक्स की दर घटा दी, इस लिए इस महीने में ४ करोड़ गज की जगह ४ करोड़ ६० लाख गज कपडे का निर्यात हुआ।

हाली की जगह कल्दार

हैदराबाद विधान सभा ने हाली की जगह कल्दार वाले प्रस्ताव को ३० मार्च १९५३ को मंजूर किया। इससे हैदराबाद का हाली सिक्का जो गत ७० वर्षों से चल रहा था, कानूनन बन्द हो गया। फिर भी लोगों की, इस परिवर्तन से हानि न हो इस लिए सरकार ने हाली सिक्के चलने में और दो साल का समय बढाया है। इस काल में हाली चिल्लर तथा एक रुपये नोटों की कमी न प्रतीत हो और हाली सिक्के में चोर बाजारी व लूट न हो इस दृष्टि से सरकारी खजाने से इसके दिये जाने का प्रबन्ध भी किया गया है। मात्र बंकों का व्यवहार अब कल्दार में ही हुआ करेगा। रेलों, बसों तथा डाक घरों में कल्दार की जगह निश्चित बटावन की दर से हाली भी लिये जायेंगे।

अप्रैल १९५३ का समाचार

विश्व
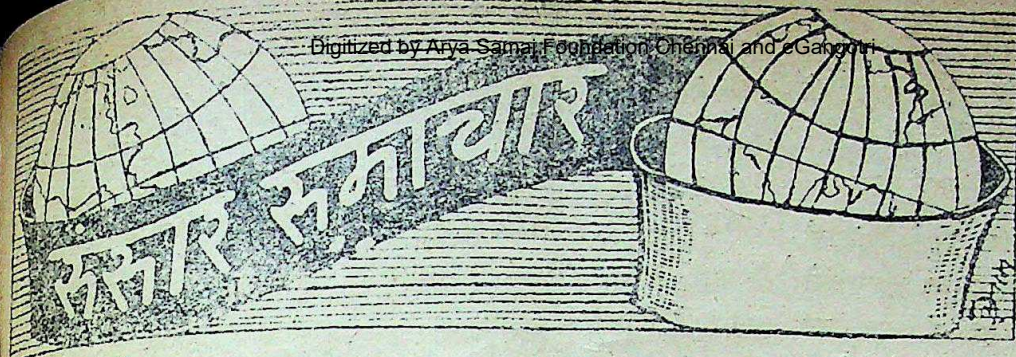
ता. १. बर्मा के एक वन्य नागा सरदार ने श्री नेहरू को वचन दिया कि कुछ दिन पूर्व उन के स्वजातीय लोगों ने जो भारतीय सीमा में रहने वाले १९ लोगों के सिर काटे हैं, उस के बदले में १९००० रुपये मृत व्यक्तियों के परिवारों को हर्जाने के रूप में देंगे तथा भविष्य में कभी सिर न काटेंगे।

ता. २. संयुक्त राष्ट्र संघ के महामन्त्री पद के लिए त्रिग्वेली के उत्तराधिकारी के रूप में स्वीडन के राजदूत द्वारा हैमर्स्कजोल्ड को पांच राष्ट्रों ने एक मत होकर नामजद किया।

ता. ३. मालिक फिरोजखां नून के नेतृत्व में पाकिस्तानी पंजाब के नये मन्त्रिमण्डल ने आज शाम लाहौर के भवन में शपथ ग्रहण की।

ता. ४. पेकिंग रेडियोने दावा किया है कि साम्यवादी सेना ने गत तीन मास में कोरिया में ३६५०० संयुक्त राष्ट्रीय सैनिक नष्ट कर दिये, जिन में १४००० अमरीकी थे।

ता. ६. भारत और पाकिस्तान ने पार-पत्र प्राप्त करने की अवधि तीन मास के लिए यानी १०. जुलाई १९५३ तक बढ़ा दी।

ता. ७. मिश्र के प्रधान मन्त्री श्री नजीबने मिश्र के सैनिक गवर्नर की

भारत

ता. १ स्विटजरलैण्ड में भारत राजदूत श्री आसफअली का देहान्त आधीरात से कुछ पहले बर्न में हुआ। आपकी आयु ६५ वर्ष की थी।

ता. २ दिल्ली राज्य के शिक्षा मंत्री श्री शफीकुर्रहमान का देहांत सायंकाल में ५॥। बजे दिल्ली में हुआ। आप ५१ वर्ष के थे।

ता. ३ लखनऊ में पुनः १३ अध्यापकों की गिरफ्तारी। अब तक कुल ५१० अध्यापक गिरफ्तार हो चुके हैं।

ता. ४ दिल्ली में सफाई आन्दोलन के फल स्वरूप आज से सफाई पखवाडे का आरंभ।

ता. ५ ज्ञात हुआ है कि यात्रियों के लिए बद्रीनाथ के कपाट ११ मई को खुलेंगे।

ता. ६ पटना में ३० हजार किसानों ने समाजवादी नेताओं के नेतृत्व में भूमि के पुनर्वितरण की मांग करते हुए ३ मील लम्बा जुलूस निकाला।

ता. ७ राजस्थान में राष्ट्रीय सप्ताह का मुख्य मंत्री व्यास द्वारा उद्घाटन।

ता. ८ उत्तर प्रदेश में प्रायमरी स्कूल के ७४ अध्यापक दण्डित। हर एक को चार मास का कठोर कारावास

घर

ता. १. हैदराबाद विधान सभा ने कल हाली सिक्के का चलन समाप्त करने सम्बन्धी प्रस्ताव पास किया। इससे ८० वर्षों से चलने वाला हाली सिक्का अब २ साल में बन्द हो जायगा।

ता. २. भारत के मुख्य न्यायाधीश श्री पतंजली शास्त्री ने हैदराबाद के बेकार वकीलों से कहा कि ये तालूकों में जाकर वकालत करें।

ता. ३. सर्फेखास के चार माजी कर्मचारियोंने राजभवन के सामने सत्याग्रह प्रारंभ किया। पुलिस ने इन्हें तुरंत गिरफ्तार कर लिया।

ता. ४. जनता की सुविधा को ध्यान में लाकर स्टेट बैंक ने रविवार को भी हाली कल्दार सिक्के की अदाई का प्रबन्ध किया है।

ता. ५. सिर सिल्क और सिरपुर पेपर मिल्स के ६००० मजदूरों का सिरपुर टाऊन में जुलूस निकाला गया। मजदूरों ने मांग की कि उन्हें समान भारतीय मुद्रा में वेतन दिया जाय।

ता. ६. निजामाबाद और डिचमपल्ली के बीच रेल के तार अज्ञात व्यक्तियों ने काट डाले।

ता. ७. राजप्रमुख की मोटर को रोकने का प्रयत्न करने वाले ८ व्यक्तियों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया।

हैसियत से मिश्र में फौजी कानून की अवधि १२ महीने और बढ़ा दी है। यह आदेश १ मई से लागू होगा।

ता. ८. केनिया अफ्रीकी संघ की व्यवस्था करने तथा उसका सदस्य होने के अपराध में ७ वर्ष की सजा देकर आज रात उन्हें जेल में भेज दिया गया।

ता. ९. उत्तरी कोरिया से ७ अंग्रेज बन्दी रिहा।

ता. १०. पश्चिमी में ३५ रूसी गुप्तचरों का दल गिरफ्तार।

ता. ११. संयुक्त राष्ट्रों और साम्यवादियों ने आज पानमुनजोन में बीमार और घायल युद्ध बन्दियों की अदला बदल के एक समझौते पर हस्ताक्षर कर दिये।

ता. १२. मिश्र के १२ मंत्रियों ने सैनिक सार्जेन्ट से सैनिक प्रशिक्षण लेना प्रारम्भ किया।

ता. १३. जापानी विदेश विभाग ने आज घोषित किया कि पाकिस्तान ने पंजाब स्थित ३ जापानी सूती मिलें और एक मील की जमीन वापस करने का निश्चय किया।

ता. १४. राष्ट्रीय रोगी बन्दियों का प्रथम साम्यवादी जत्था २० गाड़ियों पर पानमुनजोन को रवाना।

ता. १५. दक्षिण अफ्रीका में चुनाव मतदान आरम्भ।

ता. १६. अमरीकी राष्ट्रपति श्री आइजनहोवर की अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के लिए रूस से अपील की है।

ता. १७. पाकिस्तान के प्रधान मन्त्री ख्वाजा नाजिमुद्दीन बरखास्त। और ३० रु. जुर्माना न देने पर एक मास का कारावास अधिक।

ता. ९ भारत के सुप्रसिद्ध उद्योग पति सेठ वालचन्द हीराचन्द का कल सिधपुर (गुजरात) में देहावसान। आप ७१ वर्ष के थे।

ता. १० मध्य प्रदेश विधान सभा में भूदान यज्ञ विधेयक स्वीकृत। इससे दान में दी गई जमीन का हस्तान्तरण करने में सुविधा होगी।

ता. ११ इंडोनेशियाई समाजवादी नेता श्री विजोनो को एशियाई समाजवादी संगठन का महामंत्री नियुक्त किया गया।

ता. १२ १६ अप्रैल से रेलवे शती की स्मृति में डाक का नया टिकट जारी किया जायगा।

ता. १३ मद्रास में ट्राम सर्विस कल रात से बन्द। यह सर्विस ६० वर्ष से चल रही थी।

ता. १४ रुड़की में प्रधान मंत्री नेहरू द्वारा केन्द्रीय भवन निर्माण गवेषणाशाला का उद्घाटन।

ता. १५ गुरुवार ९ अप्रैल को रीवामें प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन की ओर से राहुल सांकृत्यायन की हीरक जयती मनाई गई।

ता. १६ प्रधान मंत्री श्री नेहरू की सुपुत्री श्रीमती इंदिरा गांधी मास्को के लिए जहाज द्वारा बम्बई से रवाना।

ता. १७ पंजाब विधान सभा द्वारा जागीरों व माफी की समाप्ति सम्बन्धी बिल की स्वीकृति।

ता. १८ पंजाब सरकार ने राज्य में खाद्यान्न पर से कन्ट्रोल हटाने का निर्णय लिया।

ता. ८. राजप्रमुख निजाम ने अपने कर्मचारियों को हाली की जगह कल्दार मुद्रा में बटावन काटकर वेतन देने का आदेश दिया।

ता. १० विधान सभा का अधिवेशन अगस्त तक के लिए स्थगित करने का निर्णय किया गया।

ता. ११ सरकार ने कामारेड्डी तालुके ने श्रोमकुंडा ग्राम में जनता कालेज खोलने की अनुमति देदी।

ता. १२ जस्टीस मनोहर प्रसाद हैदराबाद हाईकोर्ट के ऑफीशियेटिंग जज नियुक्त किये गये।

ता. १३ भूदान यज्ञ के कार्य को बनाने के लिए विधान सभाई सदस्यों की एक समिति श्रीकर श्री वैद्य की अध्यक्षता में बनाई गई।

ता. १४ विधान सभा में सेल्स टैक्स संबन्धी संशोधन स्वीकृत।

ता. १५ ज्ञात हुआ है कि श्री जयप्रकाश नारायण ५ मई को हैदराबाद आ रहे हैं।

ता. १७ सिकन्दराबाद के नगराध्यक्ष श्री बी. वी. गुरुमूर्ति निर्वाचित।

ता. १८ हैदराबाद हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश श्री मिश्रजी वेलारी कमीशन के सदस्य बनाये गये हैं।

ता. १९ हैदराबाद सरकार ने "हैदराबाद टुडे" का प्रकाशन फिरसे प्रारंभ किया।

ता. २० खम्मममेट में हिन्दी विशारद विद्यालय की स्थापना।

ता. २१ उस्मानिया यूनिवर्सिटी के मेडिकल उपाधि को मद्रास, बम्बई,

मोहम्मद अली के नेतृत्व में नया मन्त्रि मण्डल स्थापित।

ता. १८. ख्वाजा नाजिमुद्दीन और पाकिस्तान सरकार में वैधानिक संघर्ष आरंभ। नये पाकिस्तानी मंत्रि-मण्डल का कार्य विभाजन प्रकाशित।

ता. १९, संयुक्त राष्ट्रीय संघ के अध्यक्षने कोरिया सम्बन्धी प्रस्ताव चीन व उत्तरी कोरिया को भेज दिया।

ता. २१ पाकिस्तान सरकार ने देश के समस्त सूत भंडारों पर नियन्त्रण कर लिया।

ता. २२ अन्तर्राष्ट्रीय अमरीकी फ्री स्टाइल कुश्ती में हिन्द श्री हरबंससिंह ने न्यूजीलैण्ड के राय हैफरनैन को हरा कर विजय प्राप्त की।

ता. २३ सीमाप्रान्त की पुलिस के इन्सपेक्टर जनरल अब्दुल रशीद खां सीमा प्रांत के नये मुख्य मंत्री बनाये गये।

ता. २४ ब्रिटिश किसान श्री आर. ई. जी. रक की हत्या के सम्बंध में ७ अफ्रीकियों को फांसी और तीन को गवर्नर की इच्छा रहने तक कारावास का दण्ड दिया गया।

ता. २५ मलाया की सरकार ने एक आदेश के द्वारा यह पाबन्दी लगा दी है कि जनता में से कोई व्यक्ति ऐसी वर्दियां न पहने जो किसी राजनैतिक दल से या किसी राजनैतिक उद्देश्य की पूर्ति से सम्बन्ध रखना जाहिर करती हों।

ता. २६ अमृतसर लाहौर सीमा पर पाकिस्तानी पुलिस ने एक भारतीय सिपाही साधुसिंह को गोली से उड़ा दिया। *

ता. १९ अखिल भारतीय हिन्दू महासभा के महामंत्री श्री वी. जी. देशपाण्डे तथा अ. भा. जन संघ के कोषाध्यक्ष श्री उमाशंकर त्रिवेदी जालंधर में गिरफ्तार।

ता. २० बौद्ध गया मन्दिर के लिए नौ व्यक्तियों की कमेटी नियुक्त।

ता. २१ राजस्थान में दो उप मंत्रियों की नियुक्ति।

ता. २१. नेपाली विद्रोही नेता श्री खरेल पुलिस की हिरासत से गायब।

ता. २२. श्री चुन्द्रीगर भारत में पाकिस्तान के उच्च आयुक्त नियुक्त।

ता. २३. राजस्थान विधान सभा में भूमिका अविलम्ब बन्दोबस्त विधेयक स्वीकृत।

ता २४. उत्तर प्रदेश में शिक्षक आन्दोलन समाप्त। सभी बन्दी शिक्षक रिहा।

ता. २५. लोक सभा में आयकर के साथ अन्य चार विधेयक स्वीकृत।

ता. २६. भारत के यातायात मंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री ने जालन्धर मुकेरिया पठानकोट सड़क का जो ७० मील लम्बी है, उद्घाटन किया। इस सड़क से काश्मीर और भारत के बीच यातायात सुलभ होगी।

ता. २७. नेपाल नरेशने हिन्दू विश्व-विद्यालय बनारस को संस्कृत की पुस्तकें छापने के लिए एक लाख का अनुदान दिया।

ता. २८ प्रधान मंत्री नेहरू महाराष्ट्र के दौरे पर रवाना।

ता. २९. मद्रास सरकार ने घोषणा की कि बेल्लारी जिले के बारे में §

कलकत्ता तथा पंजाब की यूनिवर्सिटी ने मंजूर कर लिया।

ता. २२ आर. टी. डी. के अधिकारी श्री गिस्तामजी को रिश्वत लेने के अपराध में गिरफ्तार कर लिया गया।

ता. २३ हरिजनों के लिए १३० मकान बनाये जारहे हैं। इन मकानों का शिलान्यास मुख्य मंत्री ने किया।

ता. २४ हैदराबाद पुलिसने चोरी करने वाले एक दल को गिरफ्तार किया है। इसमें १४ व्यक्ति हैं। एक जागीरदार का लड़का भी इसमें शरीक है।

ता. २५ पुलिस द्वारा दक्कन न्यूज़ एजन्सी के कार्यालय की तलाशी। एक बनावटी गश्ती पुलिस को मिली।

ता. २६ मराठवाड़ा साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष श्री सेतुमाधव राव निर्वाचित।

ता. २९ दक्षिण भारती प्रकाशन समिति हैदराबाद, के दूसरे पुष्प "प्रारंभिक भाग" का प्रकाशन थियोसोफिकल हाल में हुआ है।

---

§ रिपोर्ट देने के लिए हैदराबाद के मुख्य न्यायाधीश श्री लक्ष्मीशंकर मिश्र को नियुक्त किया गया है और वे अपनी जांच पहली मई से प्रारंभ करेंगे।

ता. २७ कोरिया में सभी युद्ध बन्दियों का विनिमय समाप्त।

ता. २८ पानमुनजोन में परसों साम्यवादियों और संयुक्त राष्ट्र ने पूर्ण विराम संधि वार्ता प्रारंभ कर दी।

ता. २९ पाकिस्तान के प्रधान मंत्री ने घोषणा की कि सिंध विधान सभा के आम चुनाव स्थगित नहीं होंगे। चुनाव ४ मई को होंगे।

संस्थापक :-
बरार केसरी श्री ब्रिजलाल बियाणी
(वित्त मन्त्री मध्यप्रदेश)

प्रवाह

राजस्थान भवन, अकोला

राष्ट्रभाषा का उत्कृष्ट सचित्र मासिक
प्रत्येक मास की १५ तारीख को
प्रकाशित होता है।

★

प्रवाह का लक्ष और साधनाः—

१ "प्रवाह" साहित्य क्षेत्र में प्रवाहित होकर जीवन की हर धारा में बहना चाहता है। जीवन के सारे छोटे मोटे हिस्सों को वह स्पर्श करना चाहता है।

२ "प्रवाह" ने साहित्य एवं समाज की ठोस सेवा करने के लिए जन्म लिया है।

३ "प्रवाह" जीवन के स्थायी निर्माण की ओर प्रयत्नशील एवं जागरूक है-वह ऐसे निर्माण के लिए प्रयत्नशील है, जो सत्यं, शिवं, सुंदरम् की ओर गतिशील हो।

४ "प्रवाह" बीते का निरीक्षण करता है, वर्तमान को व्यवस्थित करता है और भविष्य को गढता है।

५ "प्रवाह" अपनी कीमती विरासत का अनमोल धरोहर को अपनी संस्कृति का स्मरण रखता है खुदको नहीं भूलता।

★

कुछ विशेष स्थायी स्तंभः—

१ सम्पादकीय विचारधारा-महीनेकी महत्वपूर्ण घटनाओं का निष्पक्षता और निर्भीकतापूर्वक विवेचन और उन पर सम्पादकीय विचार।

२ समयचक्र- इस स्तंभ में महीने के एक एक दिन की विशिष्ट एवं मार्केट की घटना का संकलन।

३ साहित्य परिचय इस स्तंभ से पत्र-पत्रिकाओं और नवीन पुस्तकों की निष्पक्ष समालोचना की जाती है।

आजही प्रवाह का वार्षिक चंदा ६) रु. भेजकर

इसके ग्राहक बन जाइये।

न्यूजएजेंट इसकी एजेंसी लेकर लाभ उठा सकते हैं।

व्यवस्थापक—
'प्रवाह' राजस्थान भवन, अकोला

हैदराबाद राज्य द्वारा स्कूलों एवं वाचालयों के लिए स्वीकृत

मूल्य
प्रवार्षिक ६) भा.
ति अंक ।।) भा.

दक्षिण-भारती

५१) रु. भा. डिपॉजिट कराने पर
अमूल्य।
डिपॉजिट जब चाहे वापिस

दक्षिण भारतका सर्वोपयोगी सचित्र हिन्दी मासिक

दी मारवाड़ी प्रेस लि. अफजलगंज, हैदराबाद-दक्षिण

इसमें:—

* दक्षिण भाषाओं का परिचय।
* दक्षिण के ऐतिहासिक स्थानों का वर्णन।
* दक्षिण के लेखकों के चरित्र।
* हैदराबाद के नये नये कानून।
* देश विदेश परिचय माला।
* स्वास्थ्य संबन्धी लेख माला।
* कृषि उपयोगी लेख माला।
* विज्ञान माला।
* महापुरुषों के जीवन।
* साहित्य जगत (कहानियां, कविताएं लेख आदि)
* उद्योग व्यवसाय सम्बन्धी लेख माला।
* मासिक भविष्य।
* संसार समाचार।
* पुरस्कृत पहेलियां।
* महिला मंडल, बाल जगत, साहित्य परिचय।
* पांच भाषाओं के एकत्रित शिक्षा पाठ आदि।

इसके अतिरिक्त इसमें

हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी, तेलुगु, कन्नड आदि की पत्रिकाओं में प्रकाशित उत्कृष्ट लेखों का संक्षिप्त सार पढ़कर समय बचाइए।

दी मारवाडी प्रेस लि. द्वारा दूसरी बार बड़ी सजधज कर प्रकाशित हो रही है।

है
द
रा
बा
द

हैदराबाद सम्बन्धी

सम्पूर्ण ज्ञातव्य

प्रसिद्ध साहित्यिक, एडव्होकेटस्
तथा
डाक्टरर्स का संक्षिप्त परिचय

हैदराबाद हिन्दी डायरेक्टरी

डा
य
रे
क्ट
री

राज्य विधान सभा
तथा
हैदराबाद राज्य से निर्वाचित
सदस्यों का परिचय

कौन क्या है ?
स्तम्भान्तर्गत जीवनियां
प्रकाशित होंगी।

व्यापारियों के लिए व्यापार की उन्नति करने का शुभावसर।

विज्ञापन आदि विस्तृत जानकारी के लिए लिखिए या कार्यालय में आकर मिलिए।

दी मारवाडी प्रेस लि.

२७०, अफजलगंज, हैदराबाद द०

दक्षिण भारती

हैदराबाद दक्षिण

जून १९५३

विनोबा—संसार में [illegible] तत्वों पर अधिकार नहीं हो सकता।

श्रोतागण—नाम बताइए महाराज।

विनोबा—जमीन, अग्नि, जल, वायु व आकाश।

* * *

१ कम्युनिस्ट—यह बुड्ढा बड़ा अजीब है ! हम जो मारकाट से नहीं कर सकते उसे वह भूदान यज्ञ का उपदेश देकर कर रहा है।

२ कम्युनिस्ट—क्या हम भी उस में शामिल हो जांय।

पाठकों तथा लेखकों से—

दक्षिण भारती को अधिकाधिक उपयोगी बनाने के लिए पाठकों तथा लेखकों के सुझावों का हम सदा स्वागत करेंगे। उपयोगी पत्रों को यथा संभव प्रकाशित करने का प्रयत्न किया जायगा।

Tele Add: "BUPTACO" Post Box No. 3530

बालासिनोर पेपर ट्रेडिंग कार्पोरेशन

पेपर एण्ड स्ट्रॉ बोर्ड मर्चेंट ९-११, काऊलेन, कांदेवाडी, बंबई –४.

प्रत्येक प्रकार का देशी तथा विदेशी पेपर ग्राहकों को उचित मूल्य में थोक भाव से सप्लाई किया जाता है।

जरूरतमन्द निम्न पते पर पत्र व्यवहार करें।

Balasinor Paper Trading Corporation

PAPER & STRAW BOARD MERCHANTS,
9-11, Cow Lane, Kandewadi, BOMBAY—4.

दक्षिण–भारती में विज्ञापन देकर लाभ उठाइए

दक्षिण भारती

(दक्षिण भारतका सर्वोपयोगी सचित्र हिन्दी मासिक)

के

विज्ञापन दर

भारतीय सिक्के में (केवल एकबार के लिए)

विशेष पृष्ठ	रु.	साधारण पृष्ठ	रु.
टैटिल पृष्ठ	५०	पूर्ण पृष्ठ	२५
,, का चौथा पृष्ठ	५०	आधा ,,	१५
,, ,, दूसरा ,,	४०	⅓ ,,	११
,, ,, तीसरा ,,	४०	¼ ,,	८
पहला साधारण ,,	३५	⅛ ,,	५
अन्तिम साधारण ,,	३०	प्रति कालम इंच	२

१०० से अधिक के विज्ञापन पर विशेष सुविधा।

वर्षभर के लिए दिए जाने वाले विज्ञापन को ३ बार अमूल्य छापा जायगा।

अधिक रंगों के लिए १०) प्रति रंग

विशेष जानकारी के लिए लिखिए:—
मैनेजर "दक्षिण भारती"
६८, अफ़ज़लगंज, है. द.

फोटोग्राफी में कॉलेज के विद्यार्थियों को संतुष्ट करना बहुत कठिन है
क्योंकि
सदा उनकी चाह और पसंद एकदम सुन्दर और उत्कृष्ट कला चाहती है।
हैदराबाद में कॉलेज के विद्यार्थियों को इस दिशा में सन्तुष्ट करनेवाला सर्व श्रेष्ठ केन्द्र

पावले आर्ट स्टूडियो गौलीगुडा, हैदराबाद दक्षिण

PAWLE'S ART STUDIO

PHOTOGRAPHERS & ARTISTS
CHEAPEST HOUSE FOR ALL STANDARD PHOTO MATERIALS
GOWLIGUDA, HYDERABAD-DN.

हैदराबाद सरकार द्वारा स्कूलों, कालिजों तथा वाचनालयों के लिए स्वीकृत

दक्षिण भारती

सचित्र हिन्दी मासिक पत्रिका

सम्पादक मण्डल

रामानुजदास भूतडा (प्रधान संपादक)
वे. आंजनेय शर्मा, सिद्धय्या पुराणिक
बालकृष्ण लाहोटी (संचालक)
श्रीनिवास सोनी (प्रबन्ध संपादक)

जून १९५३ } ८६, अफ़ज़लगंज, हैदराबाद { वार्षिक ६) एक का ॥) -भारती

विषय सूची

वर्ष ३] हैदराबाद, जून १९५३ [अंक ६

सम्पादकीय

श्रम और पूंजी का युद्ध

श्रम और पूंजी का सम्बन्ध बहुत गहरा है। श्रम के विना पूंजी बेकार है और पूंजी के विना श्रम अधूरा है। इसी लिए दीर्घ परीक्षण के बाद अर्थशास्त्र के विद्वान लेखक प्रोफेसर मार्शल ने कहा है कि— Capital without labour is dead and labour without capital would not be long alive अर्थात् श्रम हीन पूंजी मृतप्राय है और पूंजी विना श्रम अल्पजीवी है। यहां श्रम का अर्थ है मानव श्रम–मनुष्य श्रम। पशु श्रम को या अन्य किसी तरह के श्रम को इसमें सम्मिलित नहीं किया जाता। इसी प्रकार पूंजी का अर्थ केवल रुपये पैसे या धात के सिक्के या कागज की नोट ही नहीं है बल्कि पूंजी में वे सभी साधन आते हैं जो श्रमिकों के श्रम को सफलता पूर्वक अपना काम पूरा करने में योग देते हैं। अतः श्रम और पूंजी के इस व्यापक अर्थ को लेकर ही आज संसार भर में पूंजी और श्रम का द्वन्द्व चल रहा है। एक ओर पूंजी श्रम को अपना क्रीत दास बनाना चाहती है तो दूसरी ओर श्रम पूंजी पर आधिपत्य जमाये रखना चाहता है। इस संघर्ष को विज्ञान की प्रगति ने और भी जटिल बना दिया है। विज्ञान के सहारे पूंजी मशीनों का निर्माण कर श्रम की प्रधानता को गौण बनाने की चेष्टा कर रही है तो श्रमिक वैज्ञानिक प्रगति की उपज विशाल मशीनों को अपने श्रम न लगने पर निरर्थक होते देख कर पूंजी पर अपनी विजय का अनुभव कर रहे हैं।

श्रम और पूंजी का यह द्वन्द्व अब विश्वव्यापी बन गया है। संसार के हर कोने में इसकी झलक दिखाई दे रही है। पूंजीवादी राष्ट्र अमरीका हो या साम्यवादी देश रशिया हो सब जगह ये द्वन्द्वज्वालाएं फैल चुकी है। यहां तक की साम्यवाद और पूंजीवाद का दम भरने वाले ये दोनों राष्ट्र भी आपस में टकराते दिखाई दे रहे हैं। एक ओर अमरीका संसार भर के व्यापार क्षेत्र पर अपना अधिकार जमाकर वहां के धन को बटोरना चाहरहा है तो दूसरी ओर रशिया अपना साम्यवादी विचार तत्व सभी जगह फैलाकर अपनी प्रतिष्ठा बढाना चाहता है। परन्तु दोनो अवस्थाओं को देखने से यह स्पष्ट होता है कि जहां पूंजी और श्रम का संतुलन है वहीं

पर प्रगति और शांति विराजमान है। जहां इन दोनों का द्वन्द्व चल रहा है वहां अशांति का वातावरण सब को परेशान किहा हुआ है। रूस ने कुछ प्रगति की तो श्रम और पूंजी दोनों के सहारे। अमरीका ने महानता पाओ तो वह भी श्रम और पूंजी के योग से। रूस में पूंजीवाद भले ही न हो पर पूंजी अवश्य है जो यहां के श्रमिकों को आगे बढने में योग देती है। इसी तरह अमरीका में श्रमवाद की प्रभुता न होने पर भी वहां का श्रम पूंजी का सदुपयोग करने में संलग्न है। यही बात हर छोटे बड़ेकारखाने की भी है। जहां पूंजी और श्रम में मेल है वहाँ शाँति और लाभ है और जहां ऐसा नहीं है वहां बरबादी और अशांति का ताण्डव नृत्य होता पाया जाता है। विश्वशाँति की कल्पना भी इसी पर आधारित है। जब तक पूंजीवाद और श्रमवाद का मेल नहीं होगा, पूंजीवादी राष्ट्र और साम्यवादी राष्ट्र एक मत होकर आगे नहीं बढेंगे तबतक विश्वशांति असंभव है। अतः इससे यही निष्कर्ष निकलता है कि पूंजी और श्रम को आपसी संघर्ष में न पड़कर एक दूसरे का पूरक बनना चाहिए। इसी में श्रम की प्रतिष्ठा है, इसी में पूंजी की महानता है। इसी पर विश्वशांति आधारित है। श्रमिकों का जीवन भी इसी से सुखमय बन सकता है। पूंजी अस्थिपंजर है तो श्रम आत्मा है। दोनों के एकत्र होने में ही सजीवता का आभास है, जीवन का आनन्द है।

मजदूर आंदोलन किधर ?

आजकल औद्योगिक क्षेत्र में देशव्यापी मजदूर आन्दोलन चलरहा है। जहांतक मजदूरों के अधिकारों तथा इनकी मांगों का प्रश्न है, इससे हमें इन्कार नहीं। श्रमिकों को अपनी मांगो के लिए संगठित होकर आगे बढ़ने का पूरा अधिकार है परन्तु जिस मार्ग को आज श्रमिक अपना रहे हैं वह कुछ हानिप्रद दिखाई दे रहा है। कारण यह मार्ग उनका अपना नहीं है दूसरों का बनाया हुआ है। इस में उनकी अपेक्षा बतानेवालों का ही अधिक हित निहित है।

आज राष्ट्र को अधिकाधिक उत्पादन बढाने की आवश्यकता है। उत्पादन तभी बढ सकता है जब कि श्रमिक कार्य करें। पर जहां श्रमिकों की ओर से मांगे होती हैं उसके साथ कार्य न करने तथा हड़ताल पर रहने की बात भी जुड़ी हुई दीखरही है। इससे उत्पादन में वृद्धि नहीं हो सकती। इतना ही नहीं श्रमिकों पर इसका दूहरा असर पड़ता है। उत्पादन के अभाव में राष्ट्र की हानि भी होती है। फिर मालिक और मजदूर में जो भेदाभेद की भावना जाग्रत होती है सो अलग। इस में मालिक और मजदूर दोनों का अहित है। ऐसी अवस्था में एक स्वाभाविक प्रश्न उपस्थित होता है कि अहित के भय से मजदूर अपनी मांगे छोड़दे क्या? परन्तु मेरी राय में मजदूरों को मांगे छोड़देने की जरूरत नहीं, वे शांति पूर्ण रीति से अपनी मांगे प्रस्तुत करते हैं इतना अवश्य है कि हिंसा की अपेक्षा अहिंसा का मार्ग अपनाने में संयम की जरूरत अधिक होती है। लेंकिन इस संयम मे मिठास होती है। दोनों ही में मालिक और मजदूर की भलाई होती है। जहां मालिक शोषण की नीति को नहीं छोड़ सकते वहां सरकार भी तो श्रमिकों का साथ देती है। और एक स्पष्ट बात यह है कि श्रमिकों के पास श्रम धन होता है। जो मालिक की पूंजी से कई गुना महत्व रखता है। इस श्रम के सहारे श्रमिक कहीं भी सजीव बनकर रह सकता है। बिना श्रम के पूंजी अनुत्पादक है। इतना होते हुए भी हमारे श्रमिक हिंसात्मक मार्ग अपना रहे हैं, अपनी बुद्धि से नहीं दूसरों की बुद्धि से चलरहे हैं। हित अहित को न देख कर संयम को खोते जा रहे हैं। समय की अनुकूलता या प्रतिकूलता का विचार किये बिना ही आगे बढ रहे हैं यह दुःख की बात है। श्रमिकों को चाहिए कि वे इन बातों का विचार करें और स्वयं अपनी समझ से अपने और देश के हित के लिए आन्दोलन चलाएं। *

छत्रपति शिवाजी

नारायण प्रसाद सिन्हा 'जहानाबादी', झरिया, (बिहार)

(गतांक से आगे)

त्रितीय सर्ग

ऊषा बिखर कर चली गई,
अह ! घासों पर मोती सुन्दर
ललचाया-सा आया दिनकर,
उनको बटोरने फैला कर
हंस पड़ी पर्ण कुटिया स्वामी की,
यह उतावलापन लख कर
हंस पड़ी मनोहर कलियां भी,
निज पंखड़ियों को विकसाकर

मनचले चले अलियों के दल,
अभिसार खींच लाया उनको
कलियों के गल से लिपट गये,
मतवाला कर डाला उनको
थे घुम रहे शिवाजी भी,
दिल बहलाते-से उपवन में
जाने क्या सोच रहे थे वे,
गुन गुना रहे थे वे मन में

मुस्काते बोले स्वामीजी—
"बेटा ! क्या गुन गुन करता है?
क्या भ्रमरों का मधुमय स्वर,
तुझ में भी मादकता भरता है ?
बेटा ! है समय न रंग-रसका,
क्षण-क्षण अमूल्य है जीवन का
मत व्यर्थ करो बरबाद इसे,
साधन न तात ! मनरंजन का"

"गुरुवर ! मैं सोच रहा हूं यह-
क्या हमें चाहिये अब करना ?
तोरण में जो धन मिला हमें,
उसका कुछ सदुपयोग करना"
"आवश्यकता क्या चिन्ता की ?
तत्काल बताता हूं मैं तुमको

छत्रपति शिवाजी

कुछ सम्मतियाँ

श्री नारायण प्रसाद सिन्हा 'जहानाबादी' की प्रतिभाकी झलक उनके लेखों में देखने को मिली है। उनका यह छत्रपति शिवाजी काव्य गुण संपन्न होते हुए भी थोडा परिमार्जन खोजता है। इस काव्य ग्रन्थ की रचना कर इन्होंने अपनी रसात्मक प्रवृत्ति का परिचय दिया है और मुझे पूरा विश्वास है कि अगर इन्हें उपयुक्त सहयोग मिलता रहा, तो इनकी प्रतिभा चमक उठेगी।

—हरिशंकर द्विवेदी
सम्पादक "नवभारत टाइम्स" कलकत्ता।

श्री नारायण प्रसाद सिन्हा 'जहानाबादी' की लिखी दो पुस्तकों छत्रपति शिवाजी और मेघदूत को मैंने उन्हीं से पढवाकर सुना। कविता में गति है। उस में कहीं-कहीं थोडी त्रुटियां हैं, जो होनहार कवि के प्रयत्न से दूर हो सकती हैं।

—शिवपूजन सहाय, मंत्री
बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना।

सेना का संग्रह करो पूर्व,
यदि विजयी होना है तुमको"
"मैं भी तो यही सोचता हूं,
एक कोटि बना भी लेवें हम
फिर शस्त्रास्त्र चाहिये भी
सेना के हेतु बना लें हम

चलिये न आज तोरण गढ़पर,
सब का प्रबन्ध हो जाय अभी
शुभ कार्य शीघ्र तर हो जितना,
अच्छा है, कहते लोग सभी"
"अच्छा प्रस्थान करेंगे; पर
स्नान-ध्यान करलें पहले
मंगल है करना आराधन,
बेटा ! सद्कर्मों के पहले"

कुछ घड़ियों में कर सब समाप्त
अश्वों पर चढ़ गुरु शिष्य चले
कर में त्रिशूल था स्वामी के,
अंगों में थे कर भस्म मले
कटि तट में पाता था शोभा—
मृग छाला, उर पर सुभग माल
द्वितीया के चन्द्र सदृश त्रिपुण्ड,
अह ! यम कर रहा था दिव्य भाल

श्वेत जनेऊ छूती थी...
कहरि कन्धर पर केशों से
मानों साक्षात रुद्र आया,
औ गंगा चली जटाओं से
सरजा के संग भवानी थी,
चलता था ऐसा दीवाना
उतरा जनु कार्तिकेय भूपर,
सरजा का पहन वीरबाना

अब पहुंचे दोनों तोरण तो—
प्रतिहारि ने देखा उनको
दौड़ा आया स्वागत करने,
अभिवादन किया पूर्व उनको

ले गया पुनः गढ़ के अन्दर,
लख जुड आये मरहठा युवक
सप्रेम प्रणाम किया सबने
मुख पर थी आभा रही झलक

फिर बैठे आसन पर दोनों,
ज्यों कार्तिकेय हों औ' शंकर
बैठे गण-सदृश युवक भी सब,
हंसने लग गये शक्ति सुन्दर

शक्ति भंग करते सरजा ने--
कहा—"कहां है आबाजी ?"
नत मस्तक तो एक युवक ने—
कहा नाम था सम्भाजी—

"चले गये पूना वे, आया—
सन्देशा दादा जी का
लौटेंगे अति शीघ्र तात!
सन्देश नहीं कुछ चिन्ता का"

"और नहीं कुछ कहते थे ?
क्यों उन्हें बुलाया दादा ने ?"
घबड़ाया-सा कम्पित स्वर से—
पूछा उस से सरजाने

"घबड़ाहट की बात न कोऔ,
यों हताश क्यों आप हुये ?
कर्म वीर होते अधीर कब ?
फिर अधीर क्यों आप हुये ?

वीर भला कब घबड़ाते हैं ?
सब कुछ करते हैं हंस कर
मंजिल तय कर लेते अपनी,
वे बाधाओं से लड़कर"

"ऐसी कोई बात नहीं है,
अस्वस्थ थे दादा जी
कैसा इनका इधर स्वास्थ्य है ?
कहते थे कुछ आबा जी ?"

"कहते थे सानन्द सभी हैं,
आऊंगा अति शीघ्र यहाँ
आजायें शिवा जी तो
कह देना वे हैं गये वहाँ"

"अच्छा, आओ करें शीघ्रतर,
जो कुछ है करना हमको
हां, गुरुवर ! अब निर्देश करें
क्या क्या है अब करना हमको ?"

स्वामी जीने कहा—"पुत्र !
क्या सिखलाना है अब तुमको ?
अरे, शीघ्र बतला दो उनको,
जो कुछ ही करना तुमको"

"गुरुवर ! मैं तो कहता हूं,
बन जाय दुर्ग सब से पहले
सम्भा जी पर भार रहा
उसका विचार वे भी कर लें

सह्याद्री पर्वत पर होगा—
ठीक यही है ख्याल मेरा
आर्य-राष्ट्र का यह प्रधान गढ़—
होगा यही विचार मेरा

उसका होगा नाम रायगढ़,
आर्य जाति का संरक्षक
हमें बचायेगा अरियों से,
होगा राष्ट्रोन्नति वर्द्धक

* राघो जी कर लेंगे संग्रह—
सेनाओं का तो तत्काल
हथियारों की बात छोड़िये,
कर लेंगे हम पुनः विचार"

होती थीं यों बातें तब तक,
प्रति हारी बोला आकर—
"नाथ ! एक दूत आया है,
पूना से, लाऊं जाकर ?"

अति उत्सुक तो शिवाजी ने—
आज्ञा दी—"लाओ सत्वर"
आज्ञा पाते ही प्रतिहारी ने—
लाया उसको भीतर

अभिवादन कर कहा दूत ने—
हो अतिशय विनम्र तत्क्षण
मानों बिखर रहे हो दल से
पुष्पों के परिमल के कण

"नाथ ! बुलाया है दादा ने
स्वामी जी को संग लेकर"
करने लगा प्रतीक्षा उत्तर की,
उनको चिट्ठी देकर

पढ़ कर पत्र कहा सरजा ने-
"जाओ, तुम विश्राम करो
जाते हैं हम लोग अभी,
आना पीछे, आराम करो"

स्वामी जी को पत्र दिया फिर,
और कहा संभाजी से-
"रक्षा करना तोरण की,
रहना सब बुद्धिमानी से

निर्मित हो जाये नूतन गढ़,
कार्य नहीं ढीला करना
बना बनाया बिगड़ जाय मत-
खेल, न सब गीला करना

राघो जी ! तुम भी सेना के
संग्रह में होकर तत्पर
सैन्य-शक्ति अब सुदृढ़ बनाओ,
हाथ रहेंगे सभी समर

घबड़ाने की बात नहीं,
सब पार लगायेंगे ईश्वर
लौटेंगे हम देरी से,
है दादा की हालत बदतर"

मौन हो गये शिवाजी फिर,
शान्ति छा गई तोरण में;

* राघो बल्ला जी अत्रे

किन्तु हिलोरें उठती थीं-
अस्थिरता की उनके मन में
शीघ्र किया प्रस्थान संग ले-
स्वामी जी को पूना का

घूम रहा था दृश्य सामने-
शिवा जी के पूना का
बढ़ते थे वे पथ पर अपने,
बढ़ता था पथ पर दिनकर

आशंका होती थी मन में,
सता रहा था तम का डर
"क्या भविष्य में अन्धकार की-
ही सत्ता जम जावेगी ?

क्या उद्भ्रान्त पथिक की घड़ियां
हीं निज नाहक दिखावेगी
अह ! दिनकर का अंत हुआ,
जल रही चिता कैसी उसकी

ज्वालाएं हंसती हैं नभ में,
विजय हुयी है जो उनकी
लो बुझ गई चिता लहराया-
रजनी का अम्बर सुन्दर

चिनगारियां उड़ी थीं जो;
सब दीप जला. लाया अम्बर
कुछ मिलता आलोक विश्व को
अन्तिम बेला छोड़ गया

दे उपहार निशा को माला-
हीरों की, रवि चला गया
हंसने लगी विमुग्ध कारिणी,
अह ! कितनी खुश है मन में

होता है क्या अन्त एक का,
पर के हेतु सुखद जग में ?
यह नियम है इस दुनिया का,
ज्ञात हो गया अब मुझको

पर देश करते हैं अब क्रीड़ा
करके खतम आज हमको
नज़र आ रहे हैं वे दीपक,
क्या हम पूना चल आये ?"

सोच रहे थे यों शिवा जी
तब तक सोम देव आये
अभिवादन कर पूछा उसने—
"तात ! कुशल है तोरण का ?"

सरजाने उत्तर दे पूछा—
"क्या हालत है दादा की?"
कहा सोमने—"क्या बतलाऊं ?
दिवस गिन रहे हैं केवल

रटते हैं शिवा-स्वामी जी,
जीते हैं बस उसके बल"
तदनन्तर शिवा-स्वामी जी—
गये पास काका जी के

पड़े हुये मृत्यु-शय्या पर
थे दिन अन्तिम जीवन के
था अवशेष अस्थि-पंजर बस,
शेष नहीं था कुछ तन में

जाने क्या क्या सोच रहे थे—
दादा जी अपने मन में
आहट पा बोले धीरे से—
"कौन ? पुत्र सरजा आया ?"

कर प्रणाम सरजा बोले—
"हाँ तात ! वही सेवक आया"
आशीर्वाद दिया औ' पूछा—
"स्वामी जी हैं कहाँ कहो ?"

स्वामी जी बोले—"आया हूं,
दादा जी ! तुम शान्त रहो
रुग्नावस्था है, बोलोगे,
थक जाओगे क्षण भर में"

कर प्रमाण दादा जी बोले—
"अब क्या है इस ज़र-ज़र में"
अमर शान्ति की मुझे खोज है,
मिल जायेगी भी क्षण में

दर्शन हुये आपके स्वामी !
अति उत्कंठा थी मन में
अब सुख से प्रस्थान करूंगा
शिवा ! सोम नहीं है क्या ?"

बोला सोम समन—"तात !
"होती है आज्ञा मुझको क्या ?"
दादाजी ने पुनः कहा—
"जीवन की है अन्तिम घड़ियां

तुम सब यहीं रहो अब औ',
सुनते जाओ अन्तिम घड़ियां
स्वामीजी ! हैं आप यहीं ?
बेटा सरजा तुम सुनते हो

सावधान हो सुनते जाओ,
जो भी वचन निकलते हों
मैं अपने मन की अभिलाषा—
मन में ही ले जाता हूं

माता का ऋण सत्वर अपने—
आह ! लिए मैं जाता हूं
कुछ न किया मैंने जीवन में,
बन्धन मुक्त न कर पाया

किन्तु शांति पाऊंगा बेटा !
तुम-सा श्रेष्ठ लाल पाया
सिर्फ न है आशा ही बेटा !
है विश्वास पूर्ण मुझ को

जंजीरों से जकड़ी जननी,
मुक्त करोगे तुम इस को
स्वामीजी औ' सोम आदि
सब श्रेष्ठ सहायक हैं बेटा !

पूना का सर्वस्व भार भी
करना वहन तुम्हीं बेटा !
स्वामी जी ! अह ! दर्द हृदय में,
जान गयी अह ! जान गयी

"बेटा सरजा-सोम आह मा !"
सहसा बोली बन्द हुयी

घेरे ही रह गये सभी, पर—
पता न दादा गये कहां ?
नश्वर जग की यही कहानी,
आज यहां औ' काल वहां

मोहक माया सूत्र धारिणी
बस, संकेतों पर चलना
खाना पीना, हंसना-रोना,
आना-रहना चल पड़ना

था कंकाल पड़ा शय्या पर,
आँसू लोग बहाते थे
दादा जी न श्रवण करते थे,
अंग न एक चलाते थे,

नाटक खेल चुके थे अपना,
दर्शक की कैसी चिन्ता
रंग स्थल से अब क्या जाता ?

सूत्रधार की बस चिन्ता
आलोचना करे कोई,
यह बात नई है नहीं यहां
यही दर्शकों की तो खूबी,
लखते जाती दृष्टि जहाँ

घेरे लाश को आह ! खड़े थे—
शमशान पर लोग सभी
पटाक्षेप की धूमिल छाया—
दूर हुयी या नहीं अभी

सहसा धधक इस रजनी की—
चिता लगी हंसने ज्वाला
शोकाकुल पलकें जग की—
खुल गईं देख ज्योतिर्माला
जली चिता दादा जी की भी
क्षण में भस्म हुआ कंकाल

बचता नहीं यहाँ है कोई,
ग्रास बनाता सब को काल
घर-घर लौट पड़े सब कोई,
मातम का चेहरा लेकर
किन्तु नहीं लौटे दादा जी,
अपना जीवन तक देकर

उनका अन्त हुआ क्षण भर में,
फिर कर्मों का अन्त हुआ
और, दुख दाई शिशिर काल भी
बहुतों के हेतु बसन्त हुआ
धन्य हमारी आर्य-जाति है !
धन्य हमारा वैदिक धर्म !!
अन्त अन्त तक पहुंचाना
जिनके अटल ध्येय सत्कर्म

क्रमशः

★ ★ ★

गीत

— रमाकान्त 'विक्षिप्त', शेरकोट (बिजनौर)

डगर मिली है कुटिल कँटीली !

जग जीवन, सुख दुःख के भ्रम में,
इस सोये से अन्तर-तम में,
उठते भाव, क्या आग तम में ?

बातें मन की बड़ी हठीलीं !
डगर मिली है कुटिल कंटीली !

जीवन है दुख का आख्यान,
निविड़ तम है, फिर नहीं विहान,
नहीं कुछ शेष मधुर पहिचान,

दुनियाँ मेरी कहाँ सजीली ?
डगर मिली है कुटिल कंटीली !

सुमनों से मेरा अंचल रिक्त,
न मिला कुछ शूलों के अतिरिक्त,
नयन हैं आंसुओं से अब सिक्त,

सूखी जीवन-धार रसीली !
डगर मिली है कुटिल कंटीली !

मेरा मार्ग बड़ा दुर्गम है,
विपदा सहना नहीं सुगम है,
कटु कण्टक मय जग निर्मम है,

कैसे छेड़ूं तान सुरीली ?
डगर मिली है कुटिल कण्टीली !

मराठवाडा

—ल. घ. आड़े, नांदेड

मंगल देशा, पवित्र जया न काठें तुला !
सहस्र नमनें नित प्रभातीं मराठवाड्या तुला ॥

करि अमृतवाहिनी गोदी तुज पावन
निसवतो जियेच्या जलांत हा सद्गुण
करि स्वकार्य प्रवृत्त लोकां उत्तेजुन
तव पुत्रांनीं प्रचण्ड, जगतीं प्रताप संपादिला
सहस्र नमनें नित प्रभातीं मराठवाड्या ! तुला ॥१॥

तव अलंकार हे पैठण, नंदीतट
जोगाइ, जांब, दारुकावनहि विश्रुत
कीं, परळी, श्री तुळजापुर, गोदातट
गतवैभव-सौगंध ज्यामध्यें दरवळुनी राहिला
सहस्र नमनें नित प्रभातीं मराठवाड्या तुला ॥२॥

तूं संत जनांची परंपरा राखिली
तूं विद्वज्जनखनि-कीर्ति खरी साधिली
तूं बाह्य जनांला स्वराज्य-स्फूर्ति दिली
हिन्दुभूमिचा भगवा झंडा तूंच खरा रक्षिला
सहस्र नमनें नित प्रभातीं मराठवाड्या तुला ॥३॥

ज्ञानेश निर्मितो प्रमाण ज्ञानेश्वरी
एकनाथ दावी जगा साधुता खरी
दासास मान्यता लाभे विश्वांतरी
स्मरणें ज्यांच्या जलौंध उसळे स्फूर्ति सागरांतला
सहस्र नमनें नित प्रभातीं मराठवाड्या ! तुला ॥४॥

तव पुण्य श्लोका नृपावली भूषण
तो शककर्ता रणवीर शालिवाहन
नृप देवगिरि चे यादव कुलभूषण
स्मरणें ज्यांच्यातिमिर नाशतो हताश हृदयांतला
सहस्र नमनें नित प्रभातीं मराठवाड्या तुला ॥५॥

मराठवाडा प्रान्त की विशेषता दर्शाते हुए कवि कहता है—हे मराठवाडा ! ऐसा कौन-सा क्षेत्र है जहां तुझे जय प्राप्त न हुआ हो । इस लिए प्रतिदिन सर्व प्रथम प्रभात काल में हम तुझे सहस्रों प्रणाम करते हैं ।

तेरे विस्तृत क्षेत्र में प्रवाहित होनेवाली गोदावरी नदी अमृतरूपी जल से तेरी प्यास बुझाती है । यह सदकार्य लोगों की भलाई हो इस विचार से प्रभावित होकर ही तो पूर्ण होता है ।

तेरे सपूतों ने संसार भर में अपने प्रभुत्व का सम्पादन किया है । इस लिए हे मराठवाडा ! प्रतिदिन प्रभात में हम तुझे सहस्रों प्रणाम करते हैं ।

पैठण, जोगाई, जांब, दारुकावन, परळी, तुलजापुर आदि पवित्र स्थान तेरे ही क्षेत्र में विद्यमान है जिनसे आज भी प्राचीन वैभव की हुँकार सुनाई देती है । इसलिए हे मराठवाडा ! हम तुझे प्रतिदिन सहस्र प्रणाम करते हैं ।

तूने स्वजनों की परम्परा बनाये रखी । इस परंपरा से जो ख्याति प्राप्त हुई वह भी तेरे ही कारण । तूने हिन्दू धर्म के प्रतीक भगवे झण्डे की, रक्षा की उसकी लाज रखी और साथ ही दूसरों को स्वराज्य प्राप्ति की प्रेरणा दी । इसलिए तुझे हम प्रति दिन सहस्रों प्रणाम करते हैं ।

तेरी पवित्र भूमि में जन्म लेकर ज्ञानेश्वर ने 'ज्ञानेश्वरी' का निर्माण किया, एकनाथ ने अपनी सच्ची साधुता दुनिया को बताई तथा स्वामी रामदास ने अपने प्रताप से संसार भर में ख्याति प्राप्त की । इन सब की स्मृति पाकर मानव के हृदय सागर का जल सदा तरंगित हो उठता है । इस लिए हे मराठवाडा ! तुझे हम प्रति दिन सहस्रों प्रणाम करते हैं ।

तेरे रणवीर शालिवाहन जिसने शालिवाहन शक का प्रारम्भ किया, देवगिरी के यादव वंश ने अपने कुल की मर्यादा उज्ज्वल बनाई, जिन के स्मरण मात्र से ही हताश हृदयों का अन्धकार नष्ट होकर वहां स्फूर्ति का प्रवाह प्रवाहित होता है, इस लिए तुझे हम प्रतिदिन सहस्रों प्रणाम करते हैं ।

मळे

वर्षा

-- सिद्धय्या पुराणिक, हैदराबाद

मोडगल जडे बिच्चि मैदोलेदु कोळुतिहळु
बयल भामिनि जगत मरोय मेले
केशराशिय नीरु तोट्टु किक्कि सुरियुतिदे
इदके जनवेन्नुवदु मळेय मळेय लीले

मळेय हनि मधु नेलके, ई नेलद मृत्तिकेय
कणकणवु मधु व्रतवु, सृष्टियेम्ब
हुट्टिनलि शेखरित वागुतिदे मधु कोश
माधुर्य पसरिसिदे तिरेय तुम्ब

हुल्ल हासिन मेले मळेवनियं सेसे इद्दु
मार परिणयकागि हेळु कवियें
आगसद हंदर के मळेय मुत्तिन सखु
आगिहुदु मदुवु मने भुविगे भुवियें

नेल मुगिल नप्पिदुदो, मुगिले नेलनप्पिदुदो
मळेयल्लि बयलायतु, बयलि नन्तरवु
एल्ल नेल, एल्ल जल, एल्ल अम्बर तलवु
नल मुगिलु बयलें भेद अवांतरवु

जगद पीठद, बयल गोलकद, मिंचुगळ,
पंचसूत्रद लिंग, मळिय अभिषेक
नीरल्ल विदु तीर्थ, विश्व लिंगोदकवु
आग लिन्नादरु ई नरक नाक

वायुमंडल की परी बादल रूपी केश के जुल्फों को खोल कर इस जगत के ऊपर नहा रही है। उसकी केशराशी से बूंद-बूंद पानी टपक रहा है जिसे लोग वर्षा कहते हैं।

वर्षा का पानी भूमि के लिए मधु है, इस भूमिकी मिट्टी का हरकण मधुरस है। इस सृष्टि के शरद के जत्थे में आज मधुकोश रिक्त हो रहा है और धरती के हर हिस्से में माधुर्य फैल रहा है।

चारों ओर बिछी हरियाली पर वर्षा के बिंदुओं की अक्षता किसकी शादी के लिए बिछाई जारही है? कहो हे कवि! आकाश के लग्न मंडप से वर्षा के मोतियों की लड़ियाँ लटकाई गई हैं वह ऐसी मालूम होती है कि मानो सारा विश्व शादी का घर बना हुआ है। क्या पृथ्वी ने आकाश को आलिंगन किया या आकाश ने पृथ्वी को गले लगाया? इस वर्षा ने पृथ्वी और आकाश के बीच के अन्तर को नष्ट कर दिया है। अब सब थल है, जल है और अम्बर तल है। यह जगत पीठ है, वायुमंडल गोलक है, बिजलियां पंच सूत्र हैं। इस प्रकार विराट विश्व रूपी लिंग का अभिषेक हो रहा है। यह वर्षा नहीं है, यह तीर्थ है और विश्व 'लिंग' है। क्या इससे यह नरक स्वर्ग बनेगा?

गलतियां
गलतियों से कभी नहीं घबराना चाहिए, क्यों कि गलतियों में ही जीवन पलता है और विकास करता है इसलिए दुःखी होने की अपेक्षा उससे सबक लेना चाहिए।

शब्द
यदि हम किसी दुःखी जन को कुछ नहीं दे सकते तो कम से कम हम उसे सांत्वना के प्रेम भरे दो शब्द अवश्य ही दे सकते हैं।

प्रेम में आस्था रखने की अपेक्षा प्रेम करना श्रेष्ठ हैं और प्रेमी बनना परमात्मा के समीप जाना है।

प्रेम का अर्थ देना है लेना नहीं!

प्रेम दिया जाता है, और अन्त में देने वाला ही उसे पाता है।

आदर्श
आदर्श को समझो और उस पर विश्वास करो; तुम देखोगे कि सफलता तुम्हारे द्वार खटखटाती खड़ी है।

त्रुटियां
नाना प्रकार की त्रुटियां चिनगारियां है, जो जीवन की भव्य मंजिल को भस्मीभूत कर देती है।

स्नेह जीवन का सौन्दर्य है, संसार में इससे बढ़कर और कोई सौन्दर्य नहीं है।

बहनें
आलस्य और दरिद्रता दो बहनें हैं। जहां आलस्य जाती है वहां दरिद्रता भी।

तुम सुखी रहना चाहते हो तो सुख के पीछे न भागो।

कामना
कामना मृत्यु है, कामना का त्याग जीवन।

आशा
आशा मंथर-गति विष है जो शनैः शनैः मृत्यु के पास पहुंचा देती है।

कसौटी
कसौटी के समय ही मानव की क़ीमत होती है कि वास्तव में मानव क्या है?

चरित्र
चरित्र जीवन रूपी इमारत की नींव है।

नियम
जो दे सकता है वही पा सकता है; चाहे कुछ भी हो।

नम्रता
नम्रता शक्ति है, जो समशीर का भी मुकाबला कर सकती है।

तृष्णा
तृष्णा में तृषा है पर कभी बुझती नहीं। उसे दूर करना है तो तृष्णा का त्याग करो।

हिन्दी को राष्ट्रभाषा के अनुरूप बनाने की तिहाई अवधि बेकार ही गई !

—प्रो. रंजन

अंग्रेज़ी के स्थान पर हिन्दी को लाने के लिए संविधान ने १५ वर्ष की अवधि रखी। यह अवधि सिमिट कर अब दस वर्ष के लगभग रह गई है अर्थात् सम्पूर्ण अवधि का ⅓ भाग बीत चुका है। इस बीच राष्ट्रभाषा को योग्य बनाने और उसकी वांछित योग्यता की पूर्ति हमने कहाँ तक पूर्ण करली है—इस तरह का सामूहिक या व्यक्तिगत पर्यवेक्षण अबतक नहीं हो सका है और न आगे होने की सम्भावना है। हाँ, व्यक्तिगत रूप से डा. राघुवीरसिंह, बनारसीदास चतुर्वेदी आदि के प्रेरणा प्रद लेख प्रकाशित हुए थे, पर इस से कोई ठोस नतीजा न निकला।

इस के अतिरिक्त हिन्दी के दुर्भाग्य से देश की समस्त राष्ट्रभाषा-प्रचारक संस्थाएं कोई सामयिक प्रगति कर ही नहीं सकी हैं और घूम-फिर कर उसी परीक्षा के चारों ओर चक्कर काट रही हैं। इस संकीर्णता के वातावरण को फैलाने में प्रयाग का हिन्दी साहित्य सम्मेलन कम उत्तरदायी नहीं है। हिन्दी प्रान्त की यह संस्था यदि अवसर की गम्भीरता को समझती तो शायद हिन्दी का सम्भावित संकट टाला जा सकता था।

विधान सभा में हिन्दी को राष्ट्रभाषा पद पर प्राप्त होने की धारा अनिवार्य नहीं है। क्यों कि इस धारा में यह भी शर्त्त जुड़ी है कि १५ वर्ष तक हिन्दी समृद्ध न हुई तो २० होंगे और २० से ३० वर्ष और भी आगे जा सकती है। ऐसी अवस्था है स्थिति और भी गम्भीर हो जाती है।

हिन्दी के सम्यक विकास की दो बाधाएं

हिन्दी की इस दयनीय और विवादग्रस्त उन्नति के लिए स्वतन्त्र देश का प्रत्येक नागरिक और विशेष कर हिन्दी भाषी लेखक अपने कर्म से इस ज़िम्मेदारी को उतारकर फेंक नहीं सकता परन्तु लोक तंत्र के ढाँचे में ऐसे कार्य की ज़िम्मेदारी विशेषकर सरकार और लोकप्रिय संस्थाओं पर ही आती है। जहाँ तक केन्द्रीय सरकार को अपनी राष्ट्रभाषा के विकास के लिए जो कुछ करना चाहिए था, वह नहीं किया गया है। केन्द्रीय शिक्षा-सचिवालय का हिन्दी के प्रति विमाता का-सा व्यवहार रहा है। शिक्षा-सचिवालय ने समय-समय पर परामर्श-आयोग या समितियाँ बुलाने के अलावा और कुछ भी नहीं किया है, और आजकल करते-करते ५ वर्ष बीत रहे हैं। केन्द्रीय सरकार की यह टालमटोल हिन्दी-विकास में सब से बड़ी बाधा है पर हमारा भी सरकार की ओर मुंह ताकना बुद्धिमानी नहीं है।

समस्त देशमें फैली राष्ट्रभाषा प्रचार की कुछ संस्थाओंने प्रचार के नाम पर आज तक व्यवसाय मिश्रित परीक्षाएं चलाने का ही काम किया है। समय और आवश्यकतानुसार कुछ नया सोचने की इन में जैसी शक्ति ही नहीं है। साहित्य के नाम पर यदि कुछ यहाँ से प्रकाशित हुआ है तो इन की लाखों की संख्या में बिकने वाली पाठ्य पुस्तकें।

आप कभी इन संस्थाओं के प्रांगणों में जाकर चक्कर काटिए, तो पता चलेगा कि इनकी खुशी का पारा केवल परीक्षार्थियों की संख्या पर चढ़ता-उतरता है। इन्हें एक मात्र परीक्षार्थियों की सख्या बढ़ाने की चिन्ता रहती है। इसके अतिरिक्त उन्हें कुछ सोचने और चिन्ता करने नहीं आता। कभी प्रचार सभा के मंत्रियो से पूछिए—फौरन उत्तर मिलेगा—'खूब प्रचार हो रहा है, इस वर्ष इतने लाख विद्यार्थी परीक्षा में बैठे।' श्री बनारसीदासजी के शब्दों में—"हम लोग प्रचार को तो आवश्यकता से अधिक महत्व देते हैं और ठोस साहित्य रचना की प्राय: उपेक्षा ही करते हैं।" प्रचार संस्थाओं पर यह कथन बिल्कुल लागू होता है।

अहिन्दी भाषा-भाषी प्रान्तों में कम-से-कम चार-पांच तो प्रथम श्रेणी की संस्थाएं हैं ही—१ दक्षिण भारत हिन्दी

प्रचार सभा, मद्रास, २ राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा, ३ हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद राज्य, ४ पूना राष्ट्रभाषा प्रचार सभा तथा ५ गुजरात की हिन्दुस्तानी प्रचार सभा। इन सभी संस्थाओं को काफी निकट से देखने का मुझे मौका मिला है; ये संस्थाएं हिन्दी के एक-एक अंग की जिम्मेवारी अपने कंधों पर लेकर काम जुटाती तो अभी भी १० वर्ष में अप्रत्याशित प्रगति निर्माण की दिशा में की जा सकती थी।

नई दिशा—नया संगठन

यह तो वर्तमान की आलोचना हुई पर क्या आलोचना ही हमें आगे बढ़ा सकेगी? अब आगे कैसे बढ़ा जाए यह मुख्य प्रश्न है। यदि सचमुच हिन्दी के नाम पर इन संस्थाओं को व्यवसाय नहीं करना है, तो सब संस्थाओं को शीघ्र एक मिला-जुला सम्मेलन बुलाना चाहिए। इस सम्मेलन में सभी संस्थाओं के प्रतिनिधि हों, जो बैठकर निर्णयात्मक रूप से तीन बातों पर विचार करें—

[१] हिन्दी-राष्ट्रभाषा को शीघ्र-से-शीघ्र समृद्ध करना।

[२] एक सर्वमान्य केन्द्रीय बोर्ड या परिषद के निर्माण की आवश्यकता।

[३] प्रचार और परीक्षाएं।

सब से प्रथम एक ऐसे केन्द्रीय संगठन की आवश्यकता है, जो विभिन्न प्रान्तों में प्रचार, नीति और समान योग्यता के मापदण्ड को स्थिर करने की एक मर्यादा कायम करें। अपने-अपने प्रान्तों में कुछ परीक्षाएं इन संस्थाओं द्वारा संचालित हों परन्तु एक या दो परीक्षाएं केन्द्रीय परिषद द्वारा संचालित होनी चाहिए। प्रान्तीय सरकारों द्वारा इन्हीं परीक्षाओं को मान्य कराना चाहिए। ऐसा करने से—संपूर्ण देश में समान योग्यता के विद्यार्थी निकल सकेंगे और हिन्दी का स्तर नीचे नहीं गिरने पायेगा, जैसा कि आज हो रहा है और प्रान्तीय शिक्षा विभाग के दफ्तरों में अपनी-अपनी परीक्षाएं मान्य करवाने के हमले बन्द हो जायेंगे।

परीक्षाओं की होड़ में हिन्दी सीखनेवालों की मौत है—किसे अच्छा समझें, किसे बुरा? माँ-भारती की चरण सेवा करने का एकमात्र अधिकार अमुक संस्था को ही है और केवल उसी की परीक्षा में तो बाक़ायदा यही हो रहा है। यही हिन्दी के लिए गौरव नहीं कलंक है।

साथ-ही-साथ शक्ति और क्षेत्र के विचार से केन्द्रीय मंडल साहित्य निर्माणके विभिन्न पक्षों पर विचार करें और तदनुसार अलग-अलग विषय अलग अलग को दें। इस सम्पूर्ण कार्य की प्रेरणा और नियंत्रण केन्द्रीय परिषद से प्राप्त हो।

इस प्रकार साहित्य निर्माण को तीन श्रेणियों में रखा जा सकता है—

(१) शासकीय, वैज्ञानिक एवं उच्च पाठ्य ग्रन्थों की तैयारी।

(२) सार्वदेशिक शब्दकोश जिसमें जहाँतक सम्भव हो, प्रान्तीय शब्दों को स्थान दिया जाय।

(३) अन्तर्प्रान्तीय श्रेष्ठ साहित्य का हिन्दी में अनुवाद और हिन्दी के श्रेष्ठ ग्रन्थों का प्रान्तीय भाषा में अनुवाद।

इन तीन कामों के आधार पर एक पंचवर्षीय योजना तैयार कर लें और उस पर गम्भीरता से जुट जाएं तो अभी भी बहुत कुछ किया जा सकता है।

आज हिन्दी में प्रचलित अंग्रेजी के पर्यायवाची शब्दों में भी एकरूपता नहीं है। कहीं डा. रघुवीर जी का पलड़ा भारी है तो कहीं राहुलजी बाज़ी मारे बैठें हैं। इस स्थिति को तत्काल खत्म करने की जरूरत है।

यदि अगले पाँच वर्षों में भी इस दिशामें कुछ न किया जा सकता तो राष्ट्रभाषा हिन्दी का भविष्य अन्धकार पूर्ण ही समझिए; और तब १५ वर्ष पूर्ण होने पर भारतीय संसद जब हिन्दी की प्रगति और समृद्धि का लेखा-जोखा लेने खड़ी होगी तब क्या अंग्रेज़ी को दी गई गालियों का भंडार अथवा विद्यार्थियों की संख्या (लाखों में) हिन्दी की रक्षा कर सकेगी? और यदि कहीं दुर्भाग्य से १५ वर्ष की अवधि को बढ़ाकर २५ वर्ष कर दिया गया तो इसका उत्तरदायित्व किसपर होगा?—हिन्दी के उन कवियों और लेखकों पर; उन अखाड़ेबाज प्रयाग और बनारस के महारथियों पर और सबसे अधिक परीक्षा प्रकाशन के नाम पर लाखों के वारे-न्यारे करने वाली राष्ट्रभाषा-प्रचार संस्थाओं पर, जिन्हों ने निर्माण की उपेक्षा कर महफ़िलों की शोभा बढ़ाई, मंचों से निष्क्रिय हिन्दी समर्थक उद्घोष किए, पर राष्ट्रभारती के कंकाल-कलेवर को जो रक्त और मज्जा का दान न दे सकीं। *

सामाजिक प्रगति का मनोवैज्ञानिक साधन

— प्रो. लालजीराम शुक्ल, बनारस

मनोविज्ञान मनुष्य को अपार शक्ति का ज्ञान कराता है, मनोविज्ञान से ज्ञात होता है कि मनुष्य के सभी दुःखों और सुखों का प्रधान कारण उसके मन में ही है। बाह्य परिस्थितियां दुःखद अथवा सुखद तभी होती हैं जब कि मनुष्य अपने मन को उनसे प्रभावित होने देता है। यदि मनुष्य अपने को इतना बलवान बनाले कि उसे बाह्य परिस्थितियां प्रभावित न कर सकें तो वह प्रतिकूल वातावरण में रहकर भी सुखी रह सकता है। मनोविज्ञान भाव के बली बनाने का मार्ग बताता है और इस प्रकार वह मनुष्य के दुःखों को अन्त करने का उचित पथ प्रदर्शन करता है!

जब समाज का प्रत्येक व्यक्ति अपनी शक्ति को रचनात्मक कार्य में लगाता है तो सम्पूर्ण समाज भी प्रगतिशील हो जाता है। अब भी व्यक्ति का इस ओर प्रयत्न करना समाज के लिए हितकर है। जैसा समाज का नेता अथवा श्रेष्ठ पुरुष करता है। समाज के दूसरे लोग भी उसी प्रकार विचार और आचरण करने लग जाते हैं। आत्म-कल्याण का मार्ग जो श्रेष्ठ पुरुष निर्धारित करता है उसी पर दूसरे लोग चलने लगते हैं। इस प्रकार पूरा समाज बदल जाता है। प्रत्येक व्यक्ति की सामाजिक जिम्मेदारी महान है, उसके सच्चे निजी विचार समाज के विचार बन जाते हैं और उसका आचरण समाज पथ बन जाता है। इस प्रकार समाज को सुधार का सर्वोत्तम उपाय व्यक्ति को सुधारना है।

जब कोई व्यक्ति अपने आपको समझे बिना और अपनी मानसिक भ्रान्तियों को सुलझाये बिना ही समाज सुधार का कार्य करने लगता है, तो वह समाज की जितनी समस्यायें हल करता है, उनसे अधिक समस्यायें वह पैदा कर देता है। जो लोग समाज की त्रुटियों से परेशान हो जाते हैं वे समाज की कोई भलाई नहीं कर सकते। कभी-कभी समाज में उपस्थित बुराइयां अपनी ही छिपी बुराइयों का आरोपण मात्र होता हैं। मनुष्य इन बुराइयों को हटाने में असमर्थ रहता है और इसका कारण उनका उस व्यक्ति के व्यक्तित्व में निहित रहना है।

मनुष्य की प्रगति का अन्तिम लक्ष्य सामाजिक वस्तु नहीं अपितु वैयक्तिक वस्तु है। सामाजिक प्रगति का अर्थ केवल आर्थिक जीवन अथवा व्यावहारिक जीवन की सफलता हो सकती है। सामाजिक प्रयत्न के द्वारा मनुष्य के जीवन का स्तर बढ़ाया जा सकता है। मानव जीवन के अन्तिम मूल्य किसी व्यक्ति की चेतना को ही प्राप्त कर सकते हैं। इसके लिए सभी लोग प्रयत्न कर सकते हैं। परन्तु इनकी प्राप्ति विरले ही व्यक्ति को होती है। यदि खाने पीने और काम वासना की तृप्ति के अतिरिक्त जीवन का कोई दूसरा हेतु माना गया तो उसके लिये प्रत्येक मनुष्य को अपने आप ही प्रयत्न करना पड़ेगा।

समाज की सेवा व्यक्ति द्वारा इन अन्तिम मूल्यों की प्राप्ति का साधन है। जो मनुष्य अपने सुख को भूलकर समाज की जितनी अधिक भलाई करने की चेष्टा करता है। दूसरों के सुख के लिये अपने आपको जितना कष्ट देता है वह उतना ही जीवन के अन्तिम मूल्यों की प्राप्ति करने में समर्थ होता है। प्रत्येक मनुष्य जीवन के अन्तिम मूल्य प्राप्त करना चाहता है। अतएव इस कार्य में एक व्यक्ति की समर्थता अनेक लोगों को प्रोत्साहित करती है। इस प्रकार अन्तिम मूल्यों की प्राप्ति की चेष्टा मात्र करना समाज की सेवा करना है।

आधुनिक मनोविज्ञान की खोज से पता चलता है कि मनुष्य को सभी प्रकार की सुख की सामग्री रहने पर भी वह दुःखी रह सकता है। मनुष्य का सुख और दुःख उस की मानसिक बनावट पर निर्भर करता है। समाज मनुष्य की प्रारम्भिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकता है। परन्तु वह उसके मानसिक क्लेश का विनाश नहीं कर सकता।

जो मनुष्य आन्तरिक मन से दुःखी है वह जिस क्षेत्र में कार्य करेगा, अपने आस पास दुःख का वातावरण उपस्थित कर लेता है। जो व्यक्ति मानसिक विभाजन की अवस्था में है, अपने आप से घृणा, करता है; वह समाज में उसी प्रकार की परिस्थिति उत्पन्न कर लेता है। वह अपने विचारों से दूसरे लोगों के मस्तिष्क को प्रभावित कर लेता है और जैसे वह है वैसा ही अपने आस पास के समाज को बना देता है, सामाजिक ग्रन्थियों को वही व्यक्ति सुलझा सकता है, जिस की अपनी मानसिक ग्रन्थियां सुलझी हों। इसके लिए न केवल सामाजिक कार्य करना वरन् अपने आपको समझना, अपनी छानवीन करना और अपने विभिन्न तत्वों में एकत्व स्थापित करना आवश्यक है। जिन लोगों ने अपने मन की छानबीन नहीं की है और जिन्हें जीवन के अन्तिम मूल्यों का ज्ञान नहीं है वे समाज के नाम पर कार्य करना आरम्भ करते हैं। परन्तु पीछे समाज का शोषण करने लगते हैं। वे अस्वयंसेवकों के सदृश्य हैं, जो किसी ड्रामा में प्रबन्धकारों के लिये नाम लिखते हैं, परन्तु ड्रामा प्रारंभ हो जाने पर दूसरे दर्शकों में ड्रामा के बाधक बन जाते हैं। इस प्रकार समाज में गोल माल उत्पन्न कर देते हैं। यदि हमारा देश ऐसे समाजसेवियों से बचा रहे तो कितनी सुखद बात होगी।

प्रत्येक उदार व्यक्ति समाज की प्रगति चाहता है। इस प्रगति का एक अंग वर्तमान सत्ताधारियों को हटाना है। इनके कारण धनी-गरीब, छूत, अछूत और जात-पात के भेद भाव बने हुए हैं। इन के कारण ही समाज में वह ज्ञान प्रचलित नहीं हो जाता जिससे सब प्रकार की सामाजिक असमानतायें दूर हों और व्यक्ति को आत्म-विकास के लिए स्वतन्त्रता मिले। परन्तु इस कार्य के करते-करते समाज के सेवकों में ही सत्ता के प्रति मोह हो जाता है। फिर एक की जगह दूसरा समाज शोषक अथवा तानाशाह उपस्थित हो जाता है। मनुष्य के उदार विचारों के स्थायी रहने के लिए उसकी शिक्षा इस प्रकार होनी चाहिए कि वह ऐसे मूल्यों का शासन करले ताकि उसे सामान्य सुखों के लिए प्रलोभन न रहें। एक एक व्यक्ति को उच्च कोटि का बनाया जा सकता है। ऐसे व्यक्तियों जब राजसत्ता सौंपी जायगी तभी सच्चा जनहित होगा। अविकसित मन के व्यक्ति जब सत्ताधारी हो जाते हैं तो समाज की प्रगति न होकर उसका प्रतिगमन होता है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से व्यक्ति को सुधार कर ही समाज को सुधारा जा सकता है।

कवि का स्वाभिमान

१९४२ में दिल्ली कालेज में एक फारसी के प्रोफेसर की जरूरत थी। बुलवाए जाने पर गालिब पालकी पर सवार होकर कालिज के डेरे पर गए और उन्हें सूचना दी। मंत्री ने गालिब को बुलवाया, किन्तु गालिब साहब पालकी से उतर कर इस प्रतीक्षा में रहे कि नियम के अनुसार मन्त्री उन्हें लेने आयेंगे। जब देर हो गई और मन्त्री को यह कारण ज्ञात हुआ— तो स्वयं बाहर निकल आये और गालिब से कहा—

"जब आप दरबार गवर्नरी में तशरीफ लायेंगे तो आपका इसी तरह इस्तकबाल किया जायगा। लेकिन इस वक्त आप नौकरी के लिए आये हैं, इस मौके पर यह वर्ताव नहीं हो सकता।"

गालिब ने उत्तर दिया—"गवर्नमेंट मुलाजमात का इरादा इस लिए किया कि एजाज कुछ ज्यादा न हो न कि इस लिए कि मौजूदा एज़ाज़ में भी फर्क आए।"

"हम कायदे से मजबूर हैं।"

गालिब ने जवाब दिया;—"मुझ को इस खिदमत से माफ रखा जाय।" और घर वापस चले गए।

मराठी साहित्य की प्राचीन काव्य परम्परा

—दि. ना. पलशीकर, हैदराबाद

प्राकृत भाषाओं के सम्बन्ध में अनेकों प्रकार के विभिन्न विचार सर्वत्र प्रचलित हैं। भिन्न २ विद्वानों ने इस विषय पर अपने नवनवीन विचार प्रकट किए हैं। प्राकृत भाषाओं का आधुनिक रूप तो कभी २ मूल भाषाओं से भी सुन्दर तथा परिपूर्ण प्रतीत होता है। संस्कृत 'गच्छत्' शब्द से 'जाना' यह स्थूलार्थ व्यक्त होता है, किन्तु मराठी भाषा में अन्यान्य भिन्नार्थी शब्द उस स्थूलार्थ के लिए प्रचुर हैं, जैसे जाता, जातांना, जात असतांना, जाणारा आदि। संस्कृत भाषा में क्रिया विशेषण-अव्यय या विभक्त्यंत रूप की सहायता से ही कहीं २ विशेषणों की धारणा शक्य होती है, परन्तु मराठी में वर-वरील, जनीं-जनींचा, पाण्यांत-पाण्यांतील वाजतां-वाजतांची इस प्रकार सहज सुलभ रचना साध्य है। प्राकृत भाषाओं का इस प्रकार सर्वांग परिपूर्ण विकास निःसंदेह विलोभनीय है।

प्राकृत भाषाओं का आदि वैयाकरणी वररुची ने महाराष्ट्री, शौरसेनी, मागधी व पैशाची इन चार भाषा भगिनियों का व्याकरण निर्माण कर प्राकृत भाषाओं को स्थिर व चिर रूप देने का सफल प्रत्यन किया है।

प्राकृत भाषाओं के सम्बन्ध में प्रसिद्ध विद्वान ग्रियर्सन महाशय कहते हैं कि, प्रति प्राकृत भाषा से नवनवीन एक-एक अपभ्रंश भाषा जन्मीभूत हुई और इन अपभ्रंशी भाषाओं से देशी भाषायें मूर्त स्वरूप बनी। यानी महाराष्ट्र प्राकृत से अपभ्रंश, महाराष्ट्री व अपभ्रंश महाराष्ट्री से मराठी प्रयुक्त हुई।

उत्क्रांत- अवस्था अनिवार्य रहने के कारण भाषा का मूल रूप समयानुसार परिवर्तित होना अपरिहार्य है। मराठी का वास्तविक रूप इसी प्रकार अति प्राचीन रूप से सर्वोपरी अतीव विभिन्न प्रतीत होता है। प्राचीन मराठी ग्रंथों में हिन्दी, गुजराती व मराठी की अद्भुत मिलावट पाई जाती है। विदेशी भाषाओं का भी कुछ परिणाम अवश्य मराठी पर प्रमुद्रित हुआ है।

मराठी साहित्य निःसंदेह संस्कृत साहित्य से प्रभावित हुआ है। अतः संस्कृत विद्वानों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त न करना ही कृतघ्नता के दोष को स्वीकार करना है। कालिदास का अनुपम-साहित्य तथा शंकराचार्य के दुर्दम्य प्रयास मराठी साहित्य के लिए स्फूर्तिस्थान बन कर रहे हैं।

इ. स. ८०० से मराठी को राज्याश्रय प्राप्त हुआ और मराठी साहित्य शुक्लेंदुवत् गोचर होने लगा। चक्रवर्ती महेंद्रपाल का गुरु, विद्वान कवि तथा प्रसिद्ध नाटककार राजशेखर कहता है कि "महाराष्ट्रीय जनता का विद्याप्रेम और भाषानिपुणता सर्व विख्यात है। इसी कारण महाराष्ट्र भूमि को 'सरस्वती जन्म भू' कहना सर्वथा उचित है। राजशेखर जैसे विद्वान पंडित के इन शब्दों से मराठी साहित्य का मूल्य निश्चित् करना कुछ असंभव नहीं है।

इ. स. ८०० से दौलताबाद को राजधानी का गौरव प्राप्त हुआ और मराठी राज्याश्रित हुई। कृष्णवंशीय यादव राजाओं के काल में मराठी साहित्य सुस्थिरता की ओर अग्रसर हुआ। यादव राजाओं के काल के मराठी साहित्य पर संस्कृत भाषा का प्रभाव विशेष मात्रा में दिखाई देता है। संस्कृत के प्रभाव से मराठी अधिक चैतन्यशील व सुसम्पन्न बन पडी है। इ. स. १२०० तक मराठी को राज्याश्रय मिलता रहा व इन ४००-५०० वर्षों की मर्यादा में मराठी ने एक अनोखा गठित रूप पाया।

इ. स. के ८-९ वें शतक से शंकराचार्य का काल प्रारंभ होता है। शंकराचार्य के भागीरथ प्रयत्नों से बुद्ध और जैन धर्मों का प्रचार कुण्ठित बन गया। इस काल में जनता पर वेदांत मत का गहरा प्रभाव अंकित

...था और यह कठिन विषय जनता को आकलन होने के लिए साहित्य का निर्माण परमावश्यक था, परन्तु यह विश्लेषण संस्कृत शब्द-धन से ही संभव था। अतः परिणाम वश अनेक संस्कृत शब्द मूल रूप में ही मराठी में सन्निविष्ट हुए और इस प्रकार मराठी का शब्द संभार वृद्धिंगत होते रहा।

अन्य साहित्य की भांति मराठी साहित्य का निर्माण पद्य साहित्य से ही अवतीर्ण है और मराठी साहित्य का वास्तविक गौरव ज्ञानेश्वरी से प्रारंभ होता है।

अपभ्रंश कवियों में आदि कवि का मान स्वयंभूदेव को प्राप्त है। इस कवि का उल्लेख पुष्पदंत कवि के महापुराण में आ चुका है। स्वयं स्वयंभूदेव ने अपने पूर्व के परिचित कवियों का नामोल्लेख अपने ग्रंथ में अंकित कर रखा है। हरिवंश पुराण व पउम चरिय (जैन रामायण) ये स्वयंभूदेव की उपलब्ध रचनाएं हैं।

स्वयंभूदेव के नंतर अपभ्रंश कवि पुष्पदंत अपना एक विशेष स्थान रखता है। इस कविने रॉयल साइज के १६०० पृष्ठों का साहित्य निर्माण कर अपभ्रंश भाषा के साहित्य को उन्नत किया है। अपने काव्य साहित्य में अनेक शुद्ध मात्रा वृत्तों का प्रयोग कर उसने मोरोपंत-वामनादि कवियों का नेतृत्व प्राप्त किया है। महापुराण, यशोधर चरित और नागकुमार चरित ये पुष्पदंत की रचनाएं हैं। पुष्पदंत विद्वान व अभ्यासू कवि था। यह उसके साहित्य से सुस्पष्ट हो जाता है। अपने महापुराण ग्रन्थ के प्रारंभ में उसने पूर्व व परिचित कवियों की नामावली दी है।

विगत ८०० वर्षों से मराठी का काव्य संभार उत्फुल्ल दिख पड़ता है। महानुभावों के सिद्धांत सूत्रों, शिशुपाल वध, रुक्मिणी स्वयंवर आदि साहित्य के बाद ज्ञानेश्वर के ज्ञानेश्वरी युग का प्रारंभ होता है। विवेक सिंधु तथा ज्ञानेश्वरी जैसे ग्रन्थों ने मराठी साहित्य मंदिर पर सुनहरी कलश चढ़ाया है। ज्ञानेश्वर का ज्ञानेश्वरी ग्रन्थ तो सरस्वती के मुकुट का मेरूमणी ही माना जाएगा। वास्तवार्थ में मराठी का नव्य व भव्य रूप ज्ञानेश्वरी से ही दृश्यमान है। बारहवीं शती से अठारहवें शतक तक मराठी काव्य वैभव संपन्न बनता रहा। चक्रधर नरेन्द्र, महदम्बा, महेंद्र आदि कवि तथा महानुभावीय सज्जन ज्ञानेश्वर, नामदेव, एकनाथ, तुकाराम, रामदास आदि संत कवि व मुक्तेश्वर-मोरोपन्त ये पण्डिताऊ कवि मराठी की काव्य संपदा वृद्धिंगत करते रहे। रामजोशी, अनंत फंदी, होनाजी और प्रभाकर ने मराठी साहित्य पर शाहिरी साज चढ़ाया और मराठी काव्य-वैभव देदिप्यमान बन अपनी अपूर्व शोभा सरसाने लगा।

मराठी साहित्य स्वयंभूदेव से ज्ञानेश्वर तक भिन्न भिन्न रूपों में परिवर्तित होते रहा। ज्ञानेश्वरी से उसने एक विशिष्ट निश्चित रूप धारण किया। पुष्पदन्त के वृत्त चमत्कार, वामन-मोरोपन्त का पांडित्य या रामजोशी-होनाजी का भड़क भावदिग्दर्शन न होने पर भी ज्ञानेश्वरी अपने रसादि गुणों से व साहित्यिक विशेषताओं से परिपूर्ण है। ज्ञानेश्वरी की रचना सहज सुलभ तथा जनप्रिय ओवी छन्द में की गई है। सामान्य छन्द में भी तत्वज्ञान जैसा गंभीर एवं गहन विषय किस प्रकार सुस्पष्ट किया जा सकता है इसका प्रथम दृष्टांत ज्ञानेश्वरी से ही मिलता है।

ज्ञानेश्वर ने केवल ज्ञानेश्वरी प्रदान कर मराठी साहित्य को उपकृत नहीं किया वरन् वैष्णव संप्रदाय या वारकरी पन्थ की स्थापना कर अनेक संत कवियों की देन मराठी साहित्य को समर्पित की। इस संप्रदाय से प्रभावित संत कवियों ने तत्वज्ञान विषयक व भक्तिमार्ग पर काव्य निर्माण कर साहित्य कोष को समृद्ध किया।

स्वयंभूदेव से लेकर ज्ञानेश्वर तक प्राचीन काव्य की परंपरा संक्षिप्त में इस प्रकार दी जा सकती है। यह कालखंड मराठी साहित्य का आदि एवं महत्वपूर्ण कालखंड माना जाता है। भविष्यत इतिहास के लिए यह परंपरा संदर्भ के रूप में निश्चयतः अनिवार्य है। मराठी साहित्य को अपने इन सपूतों पर गर्व है।

—जो वीर, दुर्जय संग्राम में लाखों योद्धाओं को जीतता है, यदि वह एक अपने आप को जीत लें, तो यह उसकी विजय सबसे बढ़ कर होगी।

—दूसरे लोग मेरा वध बन्धनादि से दमन करें, इसकी बजाय मैं संयम और तप से अपना दमन करूं, यही कहीं अच्छा है।

—उत्तराध्ययन

एकनाथी-भारूड

— जगमोहनलाल चतुर्वेदी, औरंगाबाद

कवि की स्फूर्ति स्वाभाविक होती है परन्तु प्रत्येक कवि का एक क्षेत्र होता है जिसको उद्देश्य में रखकर वह अपनी रचना करता है। स्वान्तः सुखाय भी जो कविता की जाती है वह अपनी ओर एक विशेष समुदाय को आकर्षित करती है। एकनाथ की कविता में लोकरंजन का भाव सर्वत्र दिखाई देता है। उन्होंने अपने ग्रन्थों में ऐसी भाषा का प्रयोग किया है जिसे सामान्य साक्षर लोग समझ सकें। फिर भी ऐसे विशिष्ट समुदायों के लिए जो इस स्तर तक भी नहीं पहुँचते हैं उन्होंने उनके वातावरण और मनानुकूल विषयों में आध्यात्मिक ज्ञान भर दिया है। ये है इन के भारूड़ जिनकी भाषा और विषय भी तद्रूप है। ये ग्राम्य गीत हैं जो लोकप्रिय होने के कारण "बहुरूढ़" कहे जाने लगे और यह शब्द विकृत होकर भारूड़ बन गया। ये ग्राम्यगीत देखने में निरर्थक प्रतीत होते हैं परन्तु भाव निर्मित और अर्थपूर्ण हैं। इन में संतों की वाणी के गहन उपदेश छिपे हुए हैं। पांगारकर के मतानुसार भारूड़ों का उद्देश्य यह है कि सब लोग सर्वात्म भाव का आनंद भोगें व सकल भेद भाव को छोड़कर परमात्म स्वरूप में लीन हो जायं। न. र. फाटक ने भारूड़ का उद्देश्य यह बताया है कि जोशी, बाळसंतोष, वासुदेव, गारुड़ी, पाईक इत्यादि भिन्न-भिन्न नामों से घूमकर भीक मांगने वाले लोगों को भिक्षा मांगते समय जो बोलना पड़े उस में परमार्थ विषयक विचारों को गावों के लोगों के कान तक पहुंचाया जाय! भारूडों को गारुड़ भी कहते हैं क्योंकि इन में अद्‌भुतपन, हास्य विनोद और चमत्कार होता है। सुनने वालों का विनोद भी हो और बोध भी। इस उद्देश्य से इन की रचना की गई है। इन भारूड़ों में ३५० वर्ष पूर्व के महाराष्ट्र समाज की उत्कृष्ट झलक पाई जाती है।

काल की गति से महाराष्ट्र की यह जन संपत्ति गाने वाले लोग धीरे धीरे बहुत कम हो गए और इन के अर्थ जानने वाले लोग तो उंगलियों पर ही गिने जा सकते हैं। इसका अर्थ यही है कि जिस ज्ञान ज्योति के प्रकाश से महाराष्ट्र के बहुजन समाज ने भी अपने ज्ञानज्योति के दिये जलाये थे वे धीरे धीरे बुझते जा रहे हैं। बहुजन समाज या तो अपने उत्थान द्वारा इन से जब प्रभावित नहीं होता अथवा उन में इन धार्मिक प्रतीकों की ओर कोई रुचि बाकी नहीं रही है। उत्तरीय भारत में गौरा-महादेव के गीत गाने वालों की जो स्थिति है वही भारूड़ गाने वालों की यहां हुई है।

भारूड़ों का जन्म ज्ञानेश्वर काल में हुआ परन्तु इनका उत्कर्ष एकनाथ काल में हुआ। नाथ के भारूड़ १२५ विषयों पर हैं जिनकी संख्या तीन सौ से ऊपर है। इन में जोहारों की संख्या ५० है। एकनाथ के इस रूपक रहस्य को स्पष्ट करने के लिए उनके भारूड़ का एक नमूना नीचे दिया जाता है। वे लिखते हैं कि

कसबा काया पुर साडे तीन हाथ लंबा है। इस में ३६० मुहल्ले हैं चौदह चौक व दस रास्ते हैं। शिवाजी पन्त इस गांव के मालिक हैं। उन्होंने जीवाजी पन्त को अपना दीवान बनाकर भेजा है और यह आदेश दिया है कि कसबे की व्यवस्था ठीक रखना और अंत में जमा खर्च का हिसाब देकर बाकी पूरी करना। यहां काम क्रोधादि षड्विकारों ने मनाजी की सहायता से लूटमार मचाई है। ये सब प्रतिष्ठित मित्र जीवाजी पन्त के सामने सौम्य बन गए। कामाजी कोतवाल ने बहुतों को सता डाला है और हरिहर की इज्जत लेने में भी किसी का डर नहीं है। क्रोधाजी फौजदार भी उस से मिल गए हैं। उन्होंने जमदग्नि, दुर्वासा सदृश्य बड़े बड़े ऋषियों को सता रखा है। लोभाजी चौधरी को पैसों की बडी लालच है। अहंकार पटेल से सब गांव कांपता है। दंभाजी सेठ सदा दौड़ धूप करते हैं। इन सब को रैयत पर दया माया कुछ नहीं है। गांव उजाड़ दिया है। शिवाजी पन्त को हिसाब दो नहीं तो इसके पैर में सदा के लिए बेडी पहना दो। एकनाथ महाराज

कहते हैं कि गुरू की शरण में आओ तभी तुम्हारे गांवका संचालन अच्छी तरह हो सकेगा।

कसबे कायापूर लांबी साड़े तीन गाव ।
तिन शे साठ पेठा तेथें नांदति उमराव ।
चौदा चौक दहा रस्ते बसविले अपूव ।
दिली धन्यानें सनद जिवाजी पंताच्या नावे
जोहार माय बाप जोहार महार मं कायापूरीचा ।
जन्मो जन्मी वंस राख्या आहे या गांवीचा ॥जोहार॥

शिवाजी पन्ताने जिवाजी ठेंवला दिवाण ।
साही षड् विकार त्यासी मि-ाले मन ।
आप आपणापरी मधिंचते घेती भोदून ।
तुम्हीं सर्व एका तुम्हांसी सांगुतो खूण ॥जो.॥२
कामाजी कोतवाल त्याणें नाडिले बहुतांसी ।
हरी हरांची अब्र घेतो भय नाहीं त्यासी ।
क्रोधाजी फोजदार तेही मिळाले त्यासी ।
जमदग्नी दुर्वासा नाडिले महा महा ऋषी ॥ जो ॥ ३
लोभाजी चौधरी याला पैक्याचि फार हांव ।
अहंकार पाटिल त्यासी कापतो सव गांव ।
दंभाजी शेटे सर्वदा करिति धांवा धांव ।
दया नाहीं रयते वर केला उजाडचि गांव ॥ जो ॥ ४
शिवाजी पंतास हिशेब द्या अवघा झाडा ।
नाहीं तर याचे पायीं टाका अनुहात खोडा ।
तरिच माई बाप गांव तुमचा चालेल बरा ।
एका जनार्दनि पाय गुरुचें बळकट धरा ॥ जो ॥ ५

मनुष्य की लम्बाई साड़े तीन हाथ की होती हैं। इस शरीर में ३६० हड्डियां हैं चौदह हड्डियों के जोड़ हैं। दस इन्द्रियां है। शिवाजी पन्त [परमात्मा] ने जीवाजी पन्त [जीव] को यह शरीर सुपुर्द किया है। काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार और दम्भ इस शरीर को सता रहे हैं। जीव यदि इस शरीर का व्यवस्थित प्रबन्ध न करेगा तो गर्भवास के चक्र में पड़ कर सदा जन्म मरण पाता रहेगा। इससे मुक्त होने का एक उपाय यही हैं कि गुरु की शरण में जा।

एकनाथ ने इस रूपक द्वारा अध्यात्म के इस गहन तत्व को कितनी सरलता से हृदयगंम कराया हैं कि जीवात्मा इस शरीर का निरीक्षक है जिसका यह कर्तव्य है कि इस शरीर को षड्रियों और मन से सुरक्षित रखे नहीं तो जन्म मरण का चक्र सदा भोगना पड़ेगा। इस अध्यात्म तत्व के साथ तत्सामायिक शासन की तरफ भी इशारा किया गया है जहां कोतवाल, फौजदार, चौधरी, पटेल व सेठ गांव को किस प्रकार से लूट रहे थे और उन्हें बिल्कुल दया माया न थी, जिसके कारण गांव के गांव उजड़ रहे थे।

"जोहार" जय हर का विकृत रूप है। महार लोग अपने से बड़ों को अभिवादन करते समय इसका उच्चार करते हैं। जोहार का प्रयोग अन्य जातियों में न होकर केवल महार की हद तक महाराष्ट्र प्रदेश में सीमित होने से क्या यह अनुमान नहीं किया जा सकता कि इनका संबन्ध उत्तरीय भारत से है?

इन 'जोहारों' से हमें एक पता और लगता है कि एकनाथ अपने को कहीं निर्गुण नगरी का महार, कहीं विठु पटेल का और कहीं रामजी पटेल के दरवाजे का महार बतलाते है। कभी वे अपने को संत सभा का महार बतलाते हैं इत्यादि। जिससे स्पष्ट होता है कि एकनाथ को इन महारों के प्रति न केवल सहानुभूति है अपितु वे उनके साथ समरस हो गए हैं और महार बनने में कोई हेय नहीं समझते थे। उन्होंने अपने व्यवहार से स्पष्ट कर दिया कि वे गीता के इस उपदेशानुकूल आचरण भी करते थे। "शुनिचैव श्वपाकेच पंडिता: समदर्शिनः"

भारूड के रचयिता की हैसियत से एकनाथ की तुलना हिन्दी में कबीर के रूपक रहस्यों और उलटवासियों से की जा सकती है जिनकी अटपटी वाणी ने भी इन्हीं बहुजन समाज को अधिक आकृष्ट किया है। तुलसीदास ने भी रूपक रहस्यमयी कुछ रचनाएं की हैं। वे कहते हैं—

अरे भाई! रामनाम कहते चलो, नहीं तो संसारी बेगार में पड़ जाओगे, जहां से छूटना बड़ा कठिन है। हमारे कुटिल कर्मों ने चन्द्रडोले का नाम लेकर बिना दाम का निकम्मा डोला मत्थे मढ़ दिया है, जिसके बांस पुराने हैं, जिस में बे तरतीब साज लगे हुए हैं जो सड़ा गला और तीन कोने का खटोला है। इसके उठाने वाले कहार एक से नहीं हैं। वे कामरूपी मद्य में मतवाले हैं और इसी से एक से पैर रखते नहीं चलते। कोई किधर जाता है,

कोई किधर। कभी नीचे की ओर और कभी ऊंचे की ओर चलने से झटके और धक्के लग रहे हैं और अिस खींचा-तान में बड़ा दुःख हो रहा है। रास्ते में कांटे बिछे हैं; कंकड पड़े हैं, सांप अलग लिपट जाते हैं। जगह-जगह पर उलझने हैं। ज्यों ज्यों आगे बढ़ता हूं त्यों त्यों मंजिल दूर होती चली जाती है। कोई संगी साथी भी तो नहीं मिलता कि उसके साथ साथ जैसे तैसे वहां तक पहुँचू। मार्ग बड़ा कठिन है। साथ में राह खर्च भी नहीं हैं। जहां जाना है उस गांव का नाम तक याद नहीं। इस लिए हे रामचन्द्रजी! इस तुलसीदास के सांसारिक भय को, जन्म मरण के दुःख को आप ही कृपाकर दूर कीजिए।

राम कहत चलु, राम कहत चलु, राम कहत चलु भाई रे।
नहीं तो भव-बेगारि महँ परि हौ छूटत अति कठिनाई रे॥
बाँस पुरान साज सब अटखट सरल तिकोन खटोला रे।
हमहि दिहल करि कुटिल करम चँद मंद मोल बिनु डोलारे
विषम का हार मार-मद-माते चलहि न पाऊं बटोरा रे।
मंद बिलंद अभेरा दलकन पाइय दुख झकझोरा रे॥
काँट कुराय लपेटन लोटन ठाँवहिं बझाऊ रे।
जस जस चलिय दूरी तस तस निज बास न भेंट लगाऊ रे॥
मारग अगम, संग नहिं संबल, नाऊं गाउ कर भूलारे।
तुलसिदास भव-भास हरहु अब, होहु राम अनुकूला रे॥

तुलसीदास ने तिकोने खटोले से शरीर की उपमा दी है। कर्म बढ़ई है जिसने हमें मुफ्त शरीर रूपी डोला बनाकर दिया है। जन्म जन्मान्तरों की विषय प्रवृत्ति पुराना बाँस है। प्रकृत्ति, महत्तत्व और अहङ्कार ये तीन पाटियाँ हैं तथा सत्व, रज और तमोगुण ये तीन पाँव हैं। यह शरीर क्षण भंगुर है इसलिए इसे सड़ा गला कहा गया है। जागर्ति, स्वप्न और सुषुप्ति ये जो तीन अवस्थाएं हैं वे ही इस खटोले के तीन पाँव (कोने) हैं। ज्ञानियों की दृष्टि में यह मंद डोला है। उसको उठाने वाले कहार पाँच हैं और वे हैं जिव्हा, नेत्र, नासिक, कर्ण और त्वचा। ये सब अपने अपने विषयों की ओर दौड़ रहे हैं। इन्द्रियाँ कभी तो बुरी वासनाओं की ओर दौड़ रही है, कभी सद्भावनाओं की ओर परन्तु मन को संकल्प विकल्प के कारण पूरा कुछ भी नहीं पड़ता। जीव बीच में व्यर्थ ही धक्के खा रहा है। शरीर यात्रा के मार्ग में अनेक बाधाएं हैं। चाहते तो यह है कि ब्रह्मानन्द पीयूष पान करें पर मिलता है विषय सुखों का ज़हरीला प्याला। परमार्थ पर चलना, तलवार की धार पर चलना है। सत्कर्म भी नहीं किए हैं। जिनके बल भरोसे पर मार्ग तय कर लिया जाय। निर्दिष्ट स्थान तक मालूम नहीं, फिर ईश्वर की प्राप्ति कैसे हो सकती है।

तुलसीदास ने भी एकनाथ की भाँति बहुत से पद जन साधारण की भाषा में लिखे हैं। इस पद में बहुत से प्रांतीय शब्द आए हैं, मुहाविरें भी ग्रामीण हैं। इसका उद्देश्य यही है कि उनकी अमृतवाणी से वे लोग भी लाभ उठा सकें जो उच्च भावों को सुसंस्कृत वाणी में नहीं समझ सकते। तुलसीदासने बेगार का भी जिक्र यहाँ किया है जिससे तत्सामयिक बेगार प्रथा पर प्रकाश पड़ता है।

एकनाथ ने कुछ भारूड़ हिन्दी में भी लिखे हैं। यद्यपि भाषाकी दृष्टि से इनका कोई विशेष महत्त्व नहीं है। तथापि इससे उनकी बहुमुखि प्रतिभा का पता चलता है। नाथ परमार्थ बताने वाले (गारुड़ी) सपेरे बनते हैं। अपनी झोली में साँप लेकर रास्ते में खेल दिखाने वाला यह सपेरा बड़े बड़े महाजनों को हिन्दी भाषा में पुकार पुकार कर अपना खेल दिखाता है और कहता है कि अज्ञान के कारण मनुष्य काम, क्रोध, मद, मत्सर, दंभ, अहङ्कार में फंसा हुआ है। जिस प्रकार सपेरा साँप के जहर को उतारने की जड़ी बूटी (मोहरा) अपने पास रखता है और उससे जहर उतारने में समर्थ होता है उसी प्रकार सपेरा सद्गुरु की जड़ीबूटी द्वारा सांसारिक षड्रियों को प्रेम, भक्ति व ज्ञान द्वारा नष्ट करने के योग्य है।

सुनो संत सज्जन भाई। हमतो निराकार के गारुडी आया है।
ये देखो खेल खेलते रास्ते में। अलम दुनिया देखत हैं॥
अबे चल यहाँ हंडी बाग। ज़रा प्रेम का ढोल बजव।
पहिलेतो छे साप निकालुं मैदान में। बड़े बड़े अजगर।
उसके नाम बताऊँ। काम, क्रोध, मद, मत्सर, दंभ, अहंकार।
अब बबे। अज्ञान के पेटी में भरें हैं।
निकालूं समाल बे डंक मारेगा। ये हाथ डाला।
डंक मारा बे डंक मारा। हाय हाय।
बडी बडी वेदना होती है। अबी जान जाती है।
तुज कुं क्या बताऊँ। अबी उतारने वाला कौन बुलाऊँ।
सुनो मेरे पास सद्गुरु का मोहराहै। प्रेम की बनाऊँ सान।
बोध का बनाऊँ पानी। भक्ति के बैठुं दरबार में।
अबी लगाऊं घस के। तो सबहि ज़हर उतारूं।...
ऐसा एका जनार्दनी खेल। भक्ति पुरस्सर लगाया मेल॥

कहानी

सारा और सिपाही

—यादवेन्द्रनाथ शर्मा, "चन्द्र", कलकत्ता

पूस की रात !

गोल बगीचे के सामने वाली सेठ मस्तराम जी की ...र अट्टालिका में नृत्य हो रहा था और बाहर सड़क पर ...रा' ठिठुराती हुई आंचल से अपने बच्चे को बार बार ...कर सर्दी से बचाने का प्रयास कर रही थी। सर्दी इतनी तेज़ ...कि सड़क के गढ़ों में भरा पानी बरफ बन कर जम गया ...। तीखी हवा सनसनाती हुई हड्डियों को चीर कर शरीर ...एक कम्पन सी पैदा कर रही थी। सारा का रोम रोम ...रहा था जैसे पतझड़ का पीला पात। उसका हृदय ...रहा था क्यों कि वह शीत की असह्य पीड़ा भी सहन ...सकती थी, पर उसका मासूम बच्चा उसके लिए बिल्कुल ...मर्थ था। पर वह करे क्या बेचारी ? "क्या मेरे भविष्य ...केवल वेदना ही होगी या पूस की उस रात में कुत्तों सी ...?"—इस खयाल के डर से ही सारा ने अपने बच्चे को ...ती से और चिपका लिया और पवन के रुख की ओर ...करके मुड़ गई।

सी सी सी—की घुटी आवाज निकल रही थी उसके ...कण्ठों से, ज़िसे समीप खड़ा पहरेदार पुलिस वाला सुन ...रहा था। वह चोटी से एड़ी तक ओवर कोट पहने हुआ ...था, फिर भी बीड़ी पीने के लिए ज्योंही जेब से हाथ निकालता ...उसके मुँह से अनायास 'सी' की ध्वनि निकल जाती थी ...और वह देख रहा था, एक माँ,...एक बच्चा...सड़क ...पर नीले आकाश के नीचे और सुन रहा था वही ...सी सी सी.. ...... ।

अट्टालिका में शहर की प्रसिद्ध नर्तकी 'हमीदा बानू' ...का नाच हो रहा था। यों तो सेठ जी के घर में कोई ...मुसलमान पैर भी नहीं रख सकता था, यदि संयोगवश कोई ...रख भी देता तो उसकी पीठ फिरते ही गो-मूत्र और गोबर ...से उस जगह को शुद्ध किया जाता था। लेकिन आज की रात की बात कुछ और ही थी ? सेठजी ने स्वयं ही तो हमीदा बानू को बुलवाया था, विरोध कौन करे ?

घुंघुरू की आवाज ठुमके के साथ आ रही थी और इतनी तेज़ ठंड और पीड़ा होने के बावजूद भी सारा का ध्यान उस आवरण को चीर कर घुंघुरू की ओर चला ही जाता था। धीरे धीरे सारा के स्तनों का थोड़ा बहुत दूध समाप्त होगया और दूध तो था ही कहाँ ? मुश्किल से माँग कर पेट भराई करती थी और बेचारी को कभी-कभी तो भूखों तक मरना पड़ता था। बच्चे ने दूध के अभाव में स्तन को मुंह के मसूड़ों के बीच ज़ोर से दबाकर काट-सा लिया। सारा पीड़ा से व्याकुल हो उठी चिल्ला उठी—"छोड़, छोड़ दुखदायी !" और एक झटके के साथ उसने अपने स्तन को बच्चे की मुंह से विलग कर लिया। पीड़ा से उसकी 'जबाड़ी' चिपक गई, साथ ही उसके चेहरे पर वेदना की रेखायें उभर आईं।

बच्चा फिर चिल्लाने लगा था। सारा दुविधा में थी। एक तो बच्चा शीत की कठोर अनुभूति से चिल्ला रहा था और दूसरा स्तन में दूध नहीं था, जिससे उसको मार्मिक पीड़ा का अनुभव हो रहा था। वह परेशान थी, विवश थी, दुःखी थी।

"ठक ठक ठक"...पहरेदार का नालदार जूता। वह असमंजस में खड़ी खड़ी पुलिस वाले को देखने लगी।

पुलिस वाला अपनी 'बीट' पर चक्कर लगाता हुआ कभी कभी उसकी ओर ताक लेता था, लेकिन जब वह समीप आता और अपनी पैनी आँखों से सारा की ओर घूरता तो उसके रोंगटे खड़े हो जाते थे। वह पुलिसवाले की आँखों से बचने के लिए इधर उधर ताकने लग जाती, और अपने बच्चे को थप थपाकर कहती "सोजा मुन्ने ! हौआ आरहा है सोजा।" और ज्योंही पुलिसवाला आगे

बढ़ता, वह ज़रा तेज़ स्वर में पुलिस वाले को सुनाने के ध्येय से कहती—"सोजा, नहीं तो सिपाही को पकड़वा दूँगी।"

पुलिसवाला हल्की हंसी हंस कर फिर उधर चहल कदमी करने लग जाता था।

रात ढल रही थी और चन्द्रमा क्षितिज के छोर पर आकर एक पल के लिए ठिठक गया था......शायद पूर्णिमा थी। आज की रात उसके जीवन में विशेष महत्व रखती थी। तभी पुलिसवाला सारा के पास फिर आया और ओवर कोट की कालर से अपने कानों को ढकता हुआ बोला—"तुम्हारा घर नहीं है?"

"घर!" उसने उस चमकती हुई रात में अपनी सूखी आँखें उठाई और व्यथा के बोझिल स्वर में बोली—"यदि घर होता तो इस ठंडी रात में इन सड़कों पर जिन्दगी काटने की मुसीबत ही क्यों आती?"

"तब भी तुम्हें किसी खंडहर अथवा ओट में आश्रय लेना चाहिए।...तुम हो, बच्चा है।" पुलिसवाले ने बीड़ी का लम्बा कश खींच कर कहा।

"सरकार! मुझे डर लगता है......खण्डहर में आश्रय लेने से!"

"क्यों!" विस्मय से पूछा उसने।

"इसलिये कि खंडहरों और ओटों में वासना के शैतान भेष बदले मौके की ताक में रहते हैं, यहां कम से कम आप का सहारा तो है, पहरा तो है, वहां कौन होगा? मेरी भी अपनी इज्जत आबरू है।"...... और सारा की आंखों में वेदना अंगारे की भांति दहक उठी।

पुलिसवाले की बीड़ी खत्म हो चुकी थी। अपने दोनों हाथों को जेब में डाल कर बोला—"तेरा खसम कहां है?"

"वह मुझे छोड़ कर चला गया।"

"छोड़ कर चला गया......पर क्यों?"

"मैं बदसूरत हूं इसीलिये, संसार का शायद यही नियम है कि बदसूरती के बादशाह रूपी आदमी को भी बीबी चांद-सी सुन्दर चाहिये या फिर सिपाहीजी, ये सब अपने अपने भाग्य!"

"बातों से तुम काफी समझदार मालूम पड़ती हो, लेकिन तुम जैसी चतुर स्त्री को ऐसी हालत में देखकर आश्चर्य होता है!"—पुलिसवाले की बोली में गंभीरता थी। "परिस्थितियों के साथ सबको चलना पड़ता है सिपाही जी! मुझे जीवन के कष्ट और अनुभूतियों ने सब कुछ सिखला दिया है। भविष्य में और क्या सिखायेगा, यह मैं नहीं जानती।"

सहसा अट्टालिका में से एक एक कर लोग निकलने लगे और सवारियों पर अपना रास्ता लेने लगे। एक जोर की ठंडी हवा का झोंका दुबारा आया, सारा का बच्चा चीख पड़ा। वह हड़बड़ा कर उठ बैठी और बच्चे को पुरानी 'लोरी' गाकर सुनाने का प्रयत्न करने लगी। पुलिस वाला फिर लग गया अपने चक्कर में। नालदार जूतों की आवाज आ रही थी—ठक...ठक...ठक...।

समीप ही सेठ मस्तराम जी हमीदा से बातें कर रहे थे—प्यारी-प्यारी, मीठी-मीठी और गन्दी भी! हमीदा उनके बाहुपाश में जकड़ी हुई थी। बाहर कार खड़ी थी, जिसमें ड्राइवर बैठा हुआ कुछ गुन गुना रहा था। गुनगुनाने का मकसद महज़ इतना ही था कि सेठजी और हमीदा यह न समझें कि वह उनकी बातें सुन रहा हो।

"हमीदा! आज की रात कितनी सुहानी है, मैं.... उसे जन्म भर याद करता रहूंगा।" सेठजी उसे बाहुपाश से मुक्त करते हुए कहा।

"रहने भी दीजिये सेठजी, नाचने वाली की जिन्दगी में आप जैसे रईसजादे बहुत आये और चले गये, मगर कहा सबने ऐसे ही।......अच्छा मैं चली।" बड़े शोख, अन्दाज और व्यंगात्मक ढंग से कहा उस तवायफ ने।

"बेशर्म!" सारा की क्रोधित अवस्था में अनायास ही निकल गया और फिर वह अपने मन में सोचने लगी—"बेशर्म कहीं की, टके-टके में इज्जत बेचने से तो जहर खाकर मर जाना ही अच्छा है।" तभी शहद सा मीठा स्वर फिर सुनाई पड़ा—"सेठजी, वह अपना काश्मीरी शाल तो दीजिए।" हमीदा का अंग प्रत्यंग अन्दाज से भरा था।

सेठजी ने अपना शाल दे दिया। वह देख एक पल के लिये सारा के मन में एक विचार आया कि वह भी

[ल]ाकर एक कपड़ा अपने बच्चे के लिए सेठजी से मांग लाये। [प]र साथ ही एक और विचार दूसरे सिरे से उठा—"यह वह आदमी है, जो पैसा देकर शरीर खरीदता है, जवानी खरीदता है, सतीत्व का सौदा करता है। मुझसे भी यही सवाल करेगा, बाहुपाश में जकड़ेगा, अधर चूमेगा और अन्त में कहेगा—"आज की रात को जीवन भर याद रखूंगा! पर मैं ऐसा नहीं कर सकती।" सारा ने बच्चे को हृदय से लगा लिया। वह पत्थर-सी बैठी रही और धीरे-धीरे उस की चेतना विलुप्त हो गई। अब भी हवा ठंड थी और वही सी...सी की आवाज।

बच्चा रो पड़ा। बर्फीली हवा बहुत तेज हो रही थी और हल्की सी बरफ भी गिरने लगी थी। सिपाही बीडी के [ज]रा पर कश लगाये जा रहा था। मानो वह ठंड से लड [र]हा हो। शान्त वातावरण और भी अधिक शून्य हो गया। केवल साराका ध्यान था—बूट की खट् खट्, चमकती [व]र्दी, ओवर कोट और तडपते बच्चे पर।

उसे पुलिसवाले की बड़ी बड़ी आँखों का डर लग रहा था, क्यों कि वह उसकी ओर विचित्र दृष्टि से देख रहा रहा था। हवा अब भी चल रही थी। वह क्या करें? ठंड का तीखापन बढ़ रहा था और अर्धनिर्जीव शरीर कितनी [ग]र्मी दे सकता था बच्चे को, दे रहा था, पर वह गर्मी उस [ठं]ड में प्रभावहीन हो गई थी। बच्चा चीख पड़ा एक लम्बी चीख, एक टूटती, सिकुड़ती, छटपटाती चीख जो शायद मौत का आगमन दर्शाती हो। वही सन...सन...सन...वही ठक...ठक...ठक...!

यन्त्र चालिता-सी सारा उठी। उसी वेग से मुड़ी और आगे को बढ़ आई। सिपाही चौंका। बीड़ी की लाश उसके हाथ से छूट कर सनसनाती हवा में उड चली। सिपाही को सुनाई दिया—"सिपाही जी! मेरे बच्चे को [ज]रा ओवरकोट से ढक दीजिये न, नहीं तो बेचारा ठंड से ठिठुर कर मर जायगा।"

सनसनाती हवा रोने के स्वर में गूंज रही थी। रोती हुई वह सनसना कर सारा के शब्दों को सिपाही के कानों से दूर ले जाने की चेष्टा कर रही थी। सिपाही एक क्षण तो ठिठका, फिर उसका सिपाहीपन जागा। कड़क कर उसने कहा—"अजीब हो तुम! कितने जोर का जाड़ा पर रहा है, जिसमें मैं अपना ओवरकोट उतार कर अपने को ऐसे खतरे में डाल सकता हूं। चल भाग जा, देख तेरा बच्चा चिल्ला रहा है।" बच्चा चिल्ला रहा था फिर भी सारा नहीं हटी। वह दीनता भरे स्वर में याचना कर रही थी—"दे दो न सिपाही जी, भगवान आपका भला करेंगे।"

"भगवान किसी का भला नहीं करता·······पगली।"

"इन्सान तो कर सकता है! इन्सानियत के नाते मेरे जीवन के सहारे को बचाओ सिपाही जी!"

पुलिस वाला कुछ देर तक विचार प्रवाह में तल्लीन रहा फिर बोला—"एक शर्त पर?"

"वह क्या?"

"तुम्हें मुझ से सट कर बैठना होगा।" भावना पतित थी।

"क्यों?" आखों में भय था।

"मुझे सर्दी नहीं लगेगी और ओवरकोट की गर्मी से तेरा बच्चा भी बच जायगा।—" वासना आंखों में और भी स्पष्ट हो रही थी।

सारा काँप गई। वह सोच रही थी—"ठीक नहीं है, यह ठहरा पुलिसवाला और पुलिसवाले मन के काले होते हैं, इसका एतबार नहीं करना चाहिए।"

तभी बच्चा जोर से चीखा। सारा का रोम रोम बच्चे की मृत्यु की कल्पना से काँप उठा।—"बच्चा मर जायगा। नहीं, मैं इसे नहीं मरने दूँगी, यह मेरा जीवन-दीपक है! सहारा है, आसरा है।····मैं सिपाही से सट कर बैठूंगी। अगर इसकी नीयत बदली, उसमें पाप आया, तो मैं अपनी जान पर खेल कर उसे कच्चा चबा जाऊंगी। इसने नारी का विद्रोही रूप नहीं देखा है।" और सारा टूटते स्वर में बोली—"आओ सिपाही जी, यह शर्त अच्छी तो नहीं है लेकिन समय की लाचारी मनुष्य से सब कुछ करवा लेती है।"

पुलिसवाले की गन्दी उत्तेजना मुस्करा उठी। वह उससे सट कर बैठ गई। पुलिसवाले ने ओवरकोट उतार

[शेष पृष्ठ २८ पर]

गरमियों में दही सर्वोत्तम पदार्थ है

—प्रो. रामचरण महेन्द्र

गरमियों में आन्तरिक शीतलता की रक्षा के लिए दही सर्वोत्तम पदार्थ है ! अनावश्यक प्यास तथा खुश्की से मुक्ति के लिए अपने आहार में दही-मट्ठे का समावेश अवश्य करें। मट्ठा न केवल तरावट देता है, प्रत्युत पाचन में भी सहायता प्रदान करता है।

दही-मट्ठे के नित्य प्रयोग से मनुष्य के बल, सौंदर्य एवं जीवनी-शक्ति की कितनी अभिवृद्ध हो सकती है, इस तत्व का ज्ञान इस्तम्बूल से डाक द्वारा आए हुए एक समाचार से लगता है। यह समाचार गुजराती भाषा के जन्मभूमि' नामक पत्र में छपा है। उसका अनुवाद नीचे दिया जाता है।

"तुर्की में १५० वर्ष से ऊपर की आयु के व्यक्ति जीवित हैं। ये व्यक्ति तुर्की के पूर्वी विभाग में रहते हैं तथा इनका मुख्य आहार दही है। इन दीर्घजीवी मनुष्यों में से सबसे वृद्ध सेनापति अली हैं। वह पूर्व ऐन्टोलिया के अल-अलीक नगर में रहते हैं। वह संसार में सम्भवतः सबसे वयोवृद्ध व्यक्ति मालूम पड़ते हैं। इनकी सगी बहन १३७ वर्ष की है जो तुर्की की सबसे वयोवृद्ध स्त्री है। सेनापति अली ज्यादा बोल नहीं पाते। इनका मुख्य भोजन दही रहा है। इनका विचार है कि दूध तथा दही में मनुष्य की जीवन शक्ति बढ़ाने की प्रचुर क्षमता है। समाचारों से मालूम हुआ है कि तुर्की में ६४२१ मनुष्यों ने दही के अधिकाधिक प्रयोग द्वारा जीवन के १०० वर्ष पूर्ण कर लिए हैं और अब आगे बढ़ रहे हैं। इनमें से ३९८५ स्त्रियां तथा २४३६ पुरुष हैं। दही ऐसा ही बलवर्द्धक जीवनी-शक्ति बढ़ानेवाला तथा ताज़गी देनेवाला भूलोक का अमृत है।'

दही में उच्च कोटि की खटास और चिकनाई रहती है। शक्कर या मिश्री मिलाकर लस्सी बना लेने से यह अत्यन्त ठण्डा और पौष्टिक हो जाता है। घी या चरबी का अंश भैंस के दही में गाय के दही की अपेक्षा अधिक होता है। गाय के दही की लस्सी शीघ्रपाची, कमचरबी वाली होती है। इससे पेट नहीं फूलता। भैंस के दही में विटामिन 'ए' की कमी होती है। जिनके स्वस्थ्य के लिए विटामिन 'ए' की आवश्यकता है, उन्हें गाय के दही की लस्सी पीनी चाहिए। भैंस का दही राजसी और गाय का दही सात्विक होता है।

पश्चिमी देशों के वैज्ञानिकों का मत है कि खट्टा दूध मीठे दूध से अधिक पौष्टिक होता है, लेकिन यह खटाई के कारण विशेष प्रचलित नहीं है। छाछ में दूध की शक्कर लेक्टिक एसिड में बदल जाती है और इसलिए उस छाछ की पौष्टिकता दूध से अधिक हो जाती है। लेकिन एसिड पैदा करनेवाले कीटाणुओं में रोगहारक शक्ति होती है और ये कीटाणु पाचनक्रिया में मदद देते हैं।

लस्सी से छोटी तथा बड़ी आंतों में उत्पन्न होनेवाले विषैले कीटाणु नष्ट होते हैं। इन विषाक्त कीटाणुओं द्वारा शरीर तथा कोमल ज्ञान-तन्तुओं पर पड़नेवाला विष-प्रभाव लस्सी से दूर होता है। संग्रहणी, पेचिश और मन्दाग्नि के रोगियों के लिए नमकीन लस्सी महौषधि है। छाछ या मट्ठे में चाहें तो पीसकर ज़ीरा भी मिलाया जा सकता है। गरमियों में मीठी या नमकीन लस्सी पुष्टि के साथ सौंदर्य और स्फूर्ति देती है। त्वचा की भी स्निग्धता बनी रहती है।

——

[पृष्ठ २७ का शेष]

कर, बीड़ी सुलगाते हुए कहा—आज की रात कितनी सुहानी है ?"

"बहुत !"—दो आंसू धरा पर ढुलक पडे—विवशता से प्रस्फुटित विद्रोह की दो चिनगारियों सम।

पूस की रात, बर्फीली ठंड, सनसनाती हवा....सिपाही को लगा कि जैसे उसके बाजू में शोले भड़क रहे हों। वह हड़बड़ा कर उठा और टटोलने लगा लेकिन बीड़ियां तो ओवरकोट में थी जिसमें बच्चा लिपटा पड़ा था। उसने बच्चे को देखा—बच्चा बड़ी शान्तता से सोया हुआ था, उसने सारा को देखा जो बच्चे को वात्सल्य भरी दृष्टि से देख रही थी। उसके अधरों पर वेदना भरी मुस्कान थिरक रही थी। सिपाही भी देखता रहा !, उन दोनों को। और देखते-देखते मतिहीन-सा बैठ गया, सारा के पास ! सारा सतर्क होकर बैठ गई, जैसे बिल्ली कुत्ते को आते देख सतर्क होकर बैठ जाती है। पर सिपाही ने वैसी कोई हरकत नहीं की। उसके हृदय की गन्दी भावनायें मातृ हृदय के प्यार को देखकर जल चुकी थी। सारा अब रमणी नहीं थी—वह हिम रात्रि में अपने अरक्षित बच्चे के लिए सम्पूर्ण रूप से मां हो गई थी। अपने बच्चे के लिये भी और सिपाही के लिये भी। सिपाही सारा से सट तो गया और उसकी सूखी जांघ की ओर भी झुका पर झुक कर उसने बच्चे को सारा की गोद से छीन लिया और बच्चे को चूम कर पुनः अपनी बीट पर चक्कर लगाने लगा।

वही नालदार बूटों की खटखट—
तेज हवा की, सी-सी-सी—और............
पूस की रात।

विवाह की समस्या

—'श्रीराम' हैदराबाद

प्रोफेसर निरंजन प्रसाद बम्बई के निवासी हैं। उनका एक छोटा-सा परिवार है, जिस में वे, उनकी धर्मपत्नी, एक नवयुवती कन्या—रानी—और एक है पुत्र रामप्रसाद। निरंजन प्रसाद युनिवर्सिटी में दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर हैं। वे दर्शनशास्त्र के एक अच्छे ज्ञाता हैं। पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव केवल उनपर ही नहीं बल्कि उनके रहन-सहन, आचार-विचार, वेश-भूषा आदि पर गहरा दिखाई पड़ता है।

अपने विचानुसार उन्होंने घर भर में सब को स्वतन्त्रता रखी थी। उन के मतानुसार हर स्त्री-पुरुष को अपना जीवन-साथी चुनने में स्वतन्त्रता थी। उन्होंने अपने पुत्र को कह दिया कि तुम अपनी इच्छानुसार किसी को भी अपना जीवन-साथी बना लो और साथ ही पुत्री को भी कह दिया था कि तुम्हें अपना पति अपने विचारों के अनुसार ढूंढना होगा। मैंने सोचा है कि मानव अपने भविष्य के लिए भूत से ही ऐसा ढंग निश्चित करता है कि वह उस में अपने आपको सुखी रख सके। इसी लिए तुम भी अपने जीवन-साथी को अपने विचारानुसार, अपना भविष्य सुखी बनाने के लिए, चुन लो। तुम जिसे पसंद करोगी, वह मुझे भी मान्य होगा। और हां, कोई भी क्यों न हो, पर हो अपनी ही श्रेणी का।

बचपन से पाश्चात्य सभ्यता में लालन-पालन होने के कारण रानी को उपरोक्त कथन का कोई आश्चर्य न हुआ। हां, इस घटना के बाद वह चिंतित-सी रहने लगी। उसके सम्मुख केवल एक ही समस्या थी कि जीवन-साथी किसे चुने? और इस समस्या के हल एक नहीं अनेक थे, पर इस अनेकों में किसी एक को भी वह उपयुक्त न समझ सकी। कभी डाक्टर का ध्यान आया तो कभी वकील, कवि या चित्रकार का। ये चारों उस के सम्मुख स्वयंवर के इच्छुक राजकुमारों की भांति खड़े हो जाते। राजकुमारी—रानी—यह निर्णय न कर पाती कि किसे वरमाला पहनाएं?

कभी सोचती कि किसी कवि को अपना जीवन-साथी बना लूं, क्यों कि वह मेरे सौंदर्य के महत्व को जान सकेगा और साथ-ही साथ वह मेरी इच्छाओं को भी पहचानेगा। मैं भावुक हूं और कवि तो भावुकता का प्रतीक होता है। मैं सुन्दर हूं और कवि सुन्दरता का प्रेमी। मैं प्रकृति से प्रेम करती हूं, और वह प्रकृति का पुजारी होता है। मैं कविता से निकट हूं, और वह तो कवि ही है।

फिर उसने सोचा, डाक्टर भी तो कोई बुरा नहीं है। दुनिया को मृत्यु के मुंह से खींचे लाने की शक्ति उस में है। और वकील........चित्रकार........सभी उसे एक से एक बढ़ कर दिखाई देने लगे। सब में उसने विशेषताएं देखीं। वह निर्णय न कर सकी कि इन सब में उस के लिए कौन अच्छा सिद्ध होगा। इस से वह और भी चिंतित हो गई। और इस चिंता से निकल ने का मार्ग ढूंढने लगी।

उसने एक तरकीब निकाली। अपने और अपने पिता के परिचित नामों की एक सूची बनाई। जिस में डाक्टर, वकील, प्रोफेसर, कवि सब अपनी अपनी कला के तथा शास्त्र के विद्वान थे। रानी ने निश्चय किया कि इन सब की मनोवृत्ति, रहन-सहन आचार-विचार आदि का निकट से अध्ययन कर ही कुछ निर्णय लूंगी। रानी की चिंता विलुप्त हो गई। उसने चुनाव के लिए कमर कस ली। जैसे कोई लड़की के विवाह के लिए कमर कस कर 'वर' की खोज करता है। रानी को अपना जीवन-साथी चुन कर उसके साथ जीवन बिताना था, इस लिए वह अभी से कमर कस कर तैयार हो गई। वह पहले दिन डाक्टर अमृत प्रसाद के यहां पहुंची और वहां का अध्ययन करने लगी—

डाक्टर साहब का जैसा नाम है, वैसा काम नहीं है। क्यों कि उनके अमृत रूपी दवा से अब तक कोई अमर नहीं हुआ था। कोई ही क्यों वह स्वयं भी तो नहीं हुए थे। और शायद इसी कारण वे हर समय कहा करते कि 'कलियुग आ गया है' शायद उनका अमृत प्रसाद इस कलियुग में विष प्रसाद बन गया हो। ख़ैर, रानी ने देखा कि प्रसादजी को दिन भर एक मिनट की फ़ुरसत नहीं है। प्रति दिन सुबह ७ से ९॥ तक अपने दवाखाने में मरीज़ों को देखते रहते हैं। १०-१०॥ तक भोजन कर नगर के मेडिकल कालेज में पढ़ाने जाते हैं। वहाँ दिन भर मृत शरीर और कीडे मकोडों की चीर-फाड़ कर अपने आपको रुक्ष और भावुकता का दुश्मन बना लिया है। ५-६ घंटे की चीर-फाड़ के बाद शाम के ४॥-५ बजे पों...पों... करती हुई अपनी प्रिय 'हिल मैन' कार पर सवार हो कर सीधे अपनी निजी डिस्पेन्सरी की चार दीवारी में आ बैठते हैं। आते ही हाथ-मुंह धोया, जलपान किया और फिर वही दवाख़ाना, मरीज, दवा की शीशियाँ, इंजेक्शनस और पेशन्ट्स। दवाखाने में बीमारी से तड़पते हुए मरीज़ों का तांता-सा लगा रहता है। परन्तु वापसी में डाक्टर का बिल चुकाते समय रोगियों को ऐसा लगता है कि मानो ये किसी को रिश्वत दे रहे हैं, वह भी लाचार हो कर अपने रोग रूपी स्वार्थ को पूरा करने के लिए। क़रीब ९ बजे दवाखाना बन्द होता है। फिर भी डाक्टर साहब को चैन कहां? दिन भर की थकावट को दूर कर नया उत्साह पैदा करने के लिए न घूमने जाते हैं, न क्लब, सिनेमा की राह पकड़ते। बस ९॥ से वही मेडिकल पुस्तकें पढ़ना और अपने विष प्रसाद को अमृत प्रसाद बनाने की अनुचित चिंता में डूब जाना। इतना नहीं, बल्कि जब डाक्टर साहब के सोने का समय होता है, तब भी नित्य प्रति किसी का करुण स्वर उन्हें विचलित कर देता है—"डाक्टर साहब! जल्दी.......चलिए !..........बीमार है!" इधर डाक्टर साहब कुछ तो अपनी साख जमाने के लोभ से और कुछ मुफ़्त में मिलने वाली फ़ीस के लालच में इच्छा न होने पर भी निकल ही पड़ते हैं। यह है डाक्टर महाशय और यह है उनकी दैनंदिनी! स्त्री को अपने पति की ऐसी व्यस्तता से बड़ी घृणा होती है। इसे देख रानी सोचने लगी है भला मैं ऐसी मुसीबत में फंस जाऊंगी तो मेरी सुख-दुःख की बातें कौन सुनेगा? कौन मेरा ख्याल रखेगा? घुमाने फिराने कौन ले जायगा? कौन मेरे लिए अपना सब कुछ अर्पित करेगा?

रानी ने प्रतिज्ञा कर ली कि वह कभी डाक्टर को अपना जीवन साथी न बनाएगी! क्यों कि डाक्टर की एक अपनी प्रतिष्ठा है, और उसका एक आना कार्य है। वह अपने कार्य को सेवा और भला [illegible] है, परन्तु वास्तव में वह लालच में [illegible] कर अपने [illegible] को धोखा देता है। डाक्टर उसकी परीक्षा में अनुत्तीर्ण रहा।

डाक्टर की ओर से निराश हो कर रानी की खुशी कुछ देर के लिए समाप्त हो गई। उसने डाक्टर की दैनंदिनी देखी, उसे ग्लानि सी होने लगी। उसने निश्चय किया कि वह वकील के जीवन क्रम को देखेगी।

रानी दूसरे दिन वकील के यहाँ पहुँची। देखा, डाक्टर और वकील साधारणतः भाई-भाई की भाँति ही हैं, कोई विशेष अन्तर नहीं है। डाक्टर की भाँति वकील का जैसा नाम है, वैसा उसका काम नहीं! नाम तो ऐसा है, जैसे कलियुग के नचिकेता हैं पर काम है दिन भर झूठ का सच और सच का झूठ करना। उन्हें अपने नाम से और मेहनताने से विशेष सरोकार है, झूठ और सच से नहीं!

हाँ, तो हमारे सत्यकुमारजी भी ठीक प्रातःकाल 'बेड-टी' ले कर, मुक़द्दमों में होने वाली जिरह की चिन्ता और विचार विमर्ष में डूब जाते हैं। नहा-धो कर, भोजन कर बेचारे किसी तरह टम-टम में बैठ कर कोर्ट पहुंचते हैं। झूठी गवाहें बनाना, किसी को धन का लालच दे झूठी गवाह देने के लिए खड़े करना और सचाई को झुठलाकर अपना पेट भरना यही इनका लक्ष्य है। आधि रात तक बेचारे झूठी गवाहों को बनाते-बनाते और समझाते-समझाते मस्तिष्क को ख़ाली कर देते हैं। ५ बजे कचहरी से लौट कर फिर उन्हीं मुवक्किलों से घिर जाते हैं। उनकी मिसलों को अपने हाथ में लेकर उन्हें किस ढंग से आगे बढ़ना चाहिए उसकी शिक्षा दे कर उठते हैं। और भोजन कर फिर वही डाक्टर की भाँति क़ानूनी पुस्तकों से माथा पच्ची करते हैं और क़ानून की आवश्यक धाराएँ, उपधाराएं देख

कर कल का प्रोग्राम बनाते हैं कि कल किस ढंग से बहस को चला कर सत्य का गला घोटा जाय। बेचारे इन बातों को सोचते-सोचते ही निद्रादेवी के अधीन हो जाते हैं।

रानी अपने दूसरे परीक्षार्थी से भी निराश हो गई। क्यों कि वकील और डाक्टर [illegible] कार्य क[illegible] है। डाक्टर [illegible]

[illegible]

[illegible] बदलने का प्रयत्न करता है। दोनों की राह अलग-अलग है, परन्तु मंजिल एक ही है। दोनों में स्वार्थ की भावना के सम्मुख मानवता नाम की कोई वस्तु ही नहीं है।

रानी को यह वर भी पसन्द न आया। शायद वह घुमक्कड़ रही हो, और वह इसके विपरित है। खैर, कुछ भी रही हो रानी ने उसे अपना जीवन-साथी बनाना कतई अच्छा नहीं समझा।

रानी वकील और डाक्टर से निराश होकर हिन्दी के लब्ध प्रतिष्ठित कविवर "जीवन" के यहां पहुंची। घर के भीतर जाते ही उसने देखा, विजिटर्स--रूम में बहुत से आदमी बैठे हैं, और जीवन का नौकर कह रहा है —कवि महोदय लिखने में तल्लीन हैं, और लिखना समाप्त होने पर ही वे आपसे मिलने आयेंगे।

बहुत से विद्वान उनसे मिलने की प्रतीक्षा में बैठे हैं और कविवरजी अपनी तन्मयता में डूबे कुछ लिखे जा रहे हैं। मानो उन्हें ध्यान ही नहीं है कि वह इस दुनिया में हैं या नहीं। वास्तव में देखा जाय तो उनकी यह तन्मयता सत्य है, उन्हें भान नहीं था कि मेरी इस तन्मयता के कारण कितने ही बेचारों को कष्ट हो रहा है। लोग प्रतीक्षा में थे कि कविवर जी कब अपनी तन्मयता भंग करेंगे और कब हम उनसे बातचीत करेंगे।

कविवर जी अपने नाम के अनुसार कविता में जीवन भरने की शक्ति रखते थे, पर उनकी यह शक्ति केवल कविता के लिए ही थी, मानव के लिए नहीं। कुछ भी हो, कवि महोदय अपने नाम के अनुसार काम कर तो रहे थे।

यह तन्मयता! इतनी लगन!! ओफ!!! रानी पत्थर की भांति खड़ी देखती ही रह गई। रानी विचार करने लगी—'जो व्यक्ति अपनी तन्मयता की धुन में दुनिया को भूल सकता है, वह मुझे कैसे याद रख सकेगा! मुझे अपने पास पाकर भी वह मेरी उपस्थिति से अपरिचित रहेगा। नहीं, नहीं, यह लक्षण ठीक नहीं है। और यह अपनी त[illegible]

[illegible] [illegible]नुकने—जो उनकी [illegible]

[illegible]

कवि की तन्मयता को चीरते हुए वे शब्द कवि के कान तक पहुंचे। कवि महाशय हड़बड़ा कर उठे! मन में झुंझलाहट थी। "कौन है यह उल्लू का पट्ठा! सारा मूड खराब कर दिया, मूर्ख कहीं का!!" दिल ही दिल में कोसते हुए बैठक में आये और कहने लगे—"क्षमा कीजिए, मुझे मालूम नहीं था कि आप......!"

उनकी बात पूर्ण होने के पूर्व ही एक महाशय ने कहा—"कोई बात नहीं। इसमें क्षमा करने की ऐसी कौन-सी बात है! खैर, आज सायंकाल 'कवि-सम्मेलन' है, आप..."

महाशय की बात को बीच ही में काटते एक दूसरे महोदय कह उठे—"कविवर जी! आज 'साहित्य-संगम' समिति की मासिक 'साहित्य गोष्ठी' है और आपकी कविता वहां पर अवश्य ही पढ़ी जानी चाहिए।"

कविवर जी किसी प्रकार सब को अलग-अलग समय देकर बला टालने के भाव से उठ कर चल दिए।

इस प्रकार कविवर जी को दिन भर कविताएं लिखने, कवि-सम्मेलनों और साहित्य-गोष्ठियों में भाग लेने से ही फुरसत नहीं है। रानी ने सोचा इनसे तो शादी करना, अपनी बरबादी करना है।

इस प्रकार कवि से निराश होकर रानी कवि के सगे भाई चित्रकार के पास पहुंची। परन्तु वहां भी उसे निराश ही होना पड़ा।

कवि भावुक है, चित्रकार उससे कहीं अधिक। कवि कल्पना के पंख लगा कर काल्पनिक सृष्टि में विचारता है, और चित्रकार अपनी कल्पना को वास्तविक रूप देने में मग्न रहता है। कवि दिन भर अपने कमरे में कविताएं लिखने

में लीन रहता है, और चित्रकार महाशय दिनभर अपने स्टुडियो में चित्र बनाने में।

रानी ने देखा कि चित्रकार चित्र में प्राण भरने की पर्याप्त शक्ति रखता है, पर केवल निर्जीव चित्र में ही! वह जितना प्रकृति के निकट है, उतना ही वास्तविक दुनिया से दूर। वह वास्तविक की अपेक्षा, अवास्तविक को अधिक महत्व देता।

रानी ने डाक्टर और वकील में जैसी समता देखी वैसी ही कवि और चित्रकार में भी। वह निराश होगई। क्योंकि अब कोई शेष 'वर' था ही नहीं। था एक प्रोफेसर, जिससे वह पूर्ण परिचित थी। उसके पिता निरंजन प्रसादजी स्वयं प्रोफेसर थे। उसके लिए प्रोफेसर की दैनंदिनी और रहन-सहन, आचार-विचार देखने की आवश्यकता नहीं थी; क्योंकि वह अपने पिता के कार्य को आज कई वर्षों से देखती आ रही है।

दिन भर कालेज में लेक्चर देना और शाम को दर्शन-शास्त्र की पुस्तकें पढ़ना। जिस चीज को देखा बस वहीं अपनी दार्शनिकता का लेक्चर देना प्रारंभ किया। जो मिलने आया उसीसे दार्शनिकता की बातें करना शुरू कीं। रानी ऐसे पुस्तक के जन्तुओं से दूर रहना ही अच्छा समझती थी।

रानी के चुनाव में कोई भी उत्तीर्ण न हुआ। उसने देखा कि अब मुझे शायद जीवन भर कुंवारी ही रहना पड़ेगा। वह इस का उपाय ढूंढने लगी, परन्तु उसे न कोई राह ही मिली और न कोई उपाय ही। चिन्ता करते-करते उसके दिन व्यतीत होने लगे।

रानी अपने घर के निकट के एक मजदूर परिवार को रोज देखती है। उनका सुखी जीवन देख कर उसे ईर्षा होती। मजदूर दिन भर परिश्रम कर अपनी हक की कमाई लाता है, जिसमें वह अपना और अपने कुटुम्ब का पेट भरता है। न उसे किसी से लेना ही है, न देना ही। रानीने सोचा—'इनका स्तर बहुत ही गिरा हुआ है, और इसे उठाने वाला कोई नहीं है। फिर....'

रानी ने निश्चय कर लिया कि मैं इन मजदूरों के उत्थान में अपनी शक्ति लगा दूंगी। दिन भर मजदूर की स्त्रियां घर में बेकार बैठी रहती हैं और मैं दिन भर उनके उत्थान की योजनाएं बनाऊंगी। आखिर ये भी आदमी ही है कब तक ये नीचे गिरे रहेंगे। और इसके लिए मुझे मजदूर से विवाह करना पड़ेगा। मैं करूंगी....अवश्य करूंगी! न वह डाक्टर और वकील भांति विद्वान है परन्तु उनके पास मानवता है, जो दुनिया की दौलत से बढ़कर है। जिसके पास न स्वार्थ है, न झूठ का सच है और न सच का झूठ है, न दुनिया को भूलने की तन्मयता है और न वास्तविक जगत् से दुराव है। दिन भर मजदूरी करना। शाम को अपने परिवार के सदस्यों के साथ हंसी खुशी में अपनी दिन भर की थकावट को दूर करना यही उसका जीवन क्रम है।

मजदूर से विवाह कर मैं घर का आवश्यक कार्य कर दिन भर अपनी श्रेणी के मजदूरों को जो पतन के अथाह सागर में डूब हुए हैं, ऊपर उठाने का प्रयत्न करूंगी। उनका जीवन इन डाक्टरों, वकीलों का-सा न हो कर एक परिश्रमी और वास्तविक जीवन है। जहां न प्रतिष्ठा के आड़ में पाप किया जाता है, न अपने स्वार्थ के लिए झूठ को सच किया जाता है, न वास्तविक दुनिया को छोड़ कर अवास्तविकता को अपनाया जाता है, वहां न भेदभाव है, न छोटे-बड़ों का भान है, न धर्म है न अधर्म ही। उनका धर्म केवल मानवता ही है।........

मैं मजदूर से विवाह कर अपना और उन मजदूरों का जीवन धन्य करूंगी। दुनिया के परिश्रम करने वालों का मैं साथ दूंगी। मानव ने अपने स्वार्थ के लिए उन्हें नीचे गिरा दिया है, मैं उन्हे ऊपर उठाऊंगी। मैं उससे विवाह करूंगी, जो अपने खून के पसीने की कमाई खाता है। बड़े बड़े धनियों के ऐश आराम के लिए वह अपना खून बहाता है! मजदूर इन कुबेरों के महलों का स्तम्भ है; जिस पर शान से वे अपना जीवन बिता रहे हैं। मैं ऐसे मजदूर की महान आत्मा में एक रूप होना पसंद करूंगी।

यही है मेरा जीवन साथी!

——

जीवन !

— नरेन्द्र कुमार, 'गुप्त'

वह वसन्त ऋतु का नितान्त सुन्दर प्रभात था!

आम्रवृक्ष पर कोयल पंचम में कूक रही थी, 'कुहूऽ ऽऽऽ कुऽऽऽऽ !'

उस मधुर स्वर से अमृत संजीवनी पाकर निर्जीव में ...न समाया जा रहा था। धरती का क्षुद्र अणुरेणु उस ...से प्रभावित हो उठा था।

कलाकार ने अपनी छोटी तूलिका उठाई और वह ...में चैतन्य भरने लगा। बीच २ में रुककर, ब्रह्मांड में ...भरने की अपनी अद्भुत क्रिया देख कर वह स्वयं ...हो जाता। उसकी तूलिका और कोयल की कूक उस ...धुर वातावरण में उन्माद भर रही थी। चित्रकला और ...त कला का वह अपूर्व मिलन रसिक मन को लुब्ध कर रहा ...।

सहसा कानों से कर्ण कटु ध्वनि आ पहुँची, 'खल्, खल्, ...!'

चित्रकार ने अपनी अधो दृष्टि राह की ओर उठाई ...। विचित्र वेषधारी व्यक्ति को कुछ सिपाही सुसज्ज ...के साथ लिए जा रहे थे। वह अशुभ दृश्य देखना ...कार के लिए असह्य था। मानो उस घटना के रूप में ...शिव एवं सुन्दर कला की मूर्तिमान विडंबना प्रत्यक्ष ...र्तमान थी।

--और उस कोयल की सुमधुर कूक........

वह तो बेडियों की 'खल्, खल्,' ध्वनि में कभी की ...हो चुकी थी।

मनुष्य की अरसिकता पर उसने उपहास से एक बार ...दिया और उसकी तूलिका निर्जीव रेखाओं में फिर से ...न भरने लगी।

कुछ निर्भय होकर कोयल ने आर्द्र स्वर में अपना ...केंद्रित किया, 'कुहूऽ, कुहूऽऽ, कुहूऽऽऽ !'

...स्मित करते हुए चित्रकार ने आम्रवृक्ष को निहारा। ...यों की आड़ में छिप कर कोयल कूक रही थी। चित्रकार की अंगुलियां द्रुत गति से कागज पर इतस्ततः नाचने लगीं। किन्तु......

'देशबंधु की जय, राष्ट्र गौरव देशबन्धु जिंदाबाद, देशबन्धु चिरंजीवी बने !' इन घोषणाओं से उस की तन्मयता भंग हुई। वह मन ही मन, झुंझला उठा, 'राष्ट्रगौरव देशबन्धु जिन्होंने अपना सारा जीवन देश व परोपकार के लिए व्यतीत किया, वह महान् विभूति ! और आज अज्ञानता से मैंने उन पर हंस दिया, धिक् है मेरा जीवन !! ईश्वर की पवित्र, सजीव कला का मैंने आज इस जड कला के अहंकार में अपमान किया है। कितना नीच हूं मैं !' अपने पथ के परिमार्जनार्थ उसने अपनी कूंची के शतशः टुकडे २ कर डाले। अनमनस्क की अवस्था में वह शांत रहना चाहता था कि—

'कुहूऽ, कुहूऽऽ, कुहूऽऽऽ।'

आम्रवृक्ष पर कोयल कूक उठी। मानो वह उपहास भरे स्वर में उसका निषेध कर रही थी।

अब उसके लिए अपना क्रोध वश में रखना असम्भव हुआ। उसने एक पत्थर उठाया और कोयल को अपना लक्ष्य बनाया। धरती पर कुछ गिर पडा।

टप्प !'

धरती पर रक्तरंजित कोयल अन्तिम सांस ले रही थी। उसकी कूक कण्ठ में बरफ बनकर रह गई थी।

वह सोचने लगा, 'ईश्वर कला का सचमुच वास्तविक साक्षात्कार है। देशबन्धु की प्रतिमा और जीवन का संगीत है इन लौहशृंखलाओं का कठोर गीत, 'खल्, खल्, खल् !' अच्छा हुआ इस कोयल के रूप में आज कला का स्वप्न चूर २ हो गया। इसी मायावी कला के अन्त में नये वास्तविक कला का जन्म होता है। जिसका नाम है, जीवन ! जो संसार की केवल आद्य ही नहीं वरन् सत्य, शिव और सुन्दर कला है। धन्य है इस कला को, और उसके महान् कलाकार को !'

पुस्तकें तो हमारी ही चलेंगी

— चतुर्वेदी श्रीराम शर्मा

सरकार की ओर से तीन वर्षों के लिए स्कूलों में पढाये जाने योग्य पुस्तकों का चुनाव कर उनकी सूची प्रकाशित की गयी है। जानकार क्षेत्रों का कहना है कि इस सूची में हैदराबाद राज्य हिन्दी प्रचार सभा को बहुत बड़ा भाग मिला है। हम सभा को उसकी इस सफलता पर बधाई देना चाहते हैं। किसी प्रकाशक के लिए यह बडे सौभाग्य की बात होती है कि उसका एकाध स्टैण्डर्ड प्रकाशन किसी सरकारी पाठ्यक्रम में स्वीकृत हो जाए। सभा का इसे परम सौभाग्य ही मानना चाहिए कि उसके कई प्रकाशन तीन वर्षों के लिए चल गये। योग्य पति का वरण कर सभा यदि चिर सुहाग की अधिकारिणी बन गयी तो इसमें किसी को आपत्ति क्यों हो!

मगर देखा यह जा रहा है कि इस सूची के प्रकाशन के पश्चात भी हिन्दी-प्रेमियों में आनन्द की लहर नहीं छा रही। अध्यापकों और अन्य संबन्धित व्यक्तियों से बातचीत करने से ज्ञात हो सका है कि वही पुराना कचरा, जिसकी 'दक्षिण भारती' के पिछले अंकों में चर्चा की गयी थी, फिर नये नाम देकर हिन्दी पढ़ने वालों के लिए सभा की प्रेरणा द्वारा स्वीकृत कराया गया है और तीन वर्ष के लिए हिन्दी पढ़ाने वालों का अच्छी हिन्दी सीखने का अधिकार हिन्दी प्रचार के नाम पर छीन लिया गया है।

पिछले दो-तीन वर्षों में पुस्तकों के चुनाव में जो धांधली चलती रही थी, उसको देख कर प्रकाशकों का एक समूह उस समय के शिक्षा मंत्री श्री. फूलचन्द जी गांधी से मिला था और उनके सामने शिक्षा विभाग के सभा विशेष के साथ पक्षपात की बात लायी गयी थी। प्रकाशकों का कहना था कि शिक्षा विभाग विभिन्न प्रकाशकों से पुस्तकें मंगवाता है, उनसे फीस ली जाती है परन्तु पुस्तकों का चुनाव करते समय अन्य प्रकाशकों की पुस्तकें स्टैण्डर्ड होते हुए भी अस्वीकृत हो जाती हैं, और हिन्दी प्रचार सभा की पुस्तकें बिना दाखिल किए हुए भी स्वीकार कर ली जाती हैं। इन परिस्थितियों में प्रकाशकों ने शिक्षा मंत्री से यह आश्वासन मांगा था कि पुस्तकें जो दाखिल की जाती हैं उन में से सर्वोत्तम को ही स्वीकार किया जाए। श्री फूलचन्द जी गांधी के इस आश्वासन पर ही अन्य प्रकाशकों ने अपनी अपनी पुस्तकें दाखिल की थीं। मगर हैदराबाद की राजनीतिक उथल-पुथल में श्री. गांधी को शिक्षा-मन्त्री के पद से हटना पड़ा और अब यह कहना कठिन है कि उनके आश्वासन का बाद के शिक्षा-मन्त्री ने किस सीमा तक आदर किया।

हिन्दी की पाठ्य पुस्तक कमेटी का निर्माण शिक्षा-विभाग के लिए दो-तीन वर्षों से एक पहेली हो गया है। अब इस कमेटी के निर्माण के लिए किसी विधान अथवा नियम का आश्रय नहीं लिया जाता। विभाग के अधिकारी एक सूची पेश करते हैं, शिक्षामन्त्री और शिक्षा सचिव अपने अपने कारणों से उसमें हेर-फेर करते रहते हैं। कैसे भी इस बात का पूर्ण ध्यान रखा जाता है कि सभा के समर्थकों का कमेटी में अल्प मत न रहे। फिर भी इस कमेटी की शिफारिशों का शिक्षा विभाग में समुचित आदर नहीं किया जाता। यदि लाचारी में कमेटी के सदस्य सभा की पुस्तकों को अस्वीकृत कर दें, तो विभाग द्वारा अन्य कमेटियां बना कर फिर उन पुस्तकों पर विचार किया जाता है और निर्वाचित पुस्तकों की सूची तब तक संपूर्ण नहीं मानी जाती जब तक उसमें सभा की पुस्तकों को यथोचित अथवा यथेष्ठ भाग न मिल सकता हो।

यदि किसी व्यक्ति को छदामी लाल की शेरवानी, मुनीरखां की टोपी, रणजीतसिंह के जूते और रामनिवास का पाजामा पहनाया जाय तो उसकी क्या अजीब शक्ल निकलेगी जरा सोचिये तो सही, मगर शिक्षा विभाग की सभा-दर्शी नीति ने हिन्दी के विद्यार्थियों की ऐसी ही सजा का विधान किया है। उन्हें प्रायमरी पढ़ाई जाती है बम्बई

की, पहली तिनाली की, दूसरी सभा की, तीसरी किसी प्रेस की और चौथी किसी अन्य प्रकाशक की। इन सब को संतुष्ट केवल इसी लिए करना पड़ता है कि सभा के घटिया प्रकाशनों के स्वीकृत होने का कोई विरोध न करे। इस योजना से विद्यार्थियों के विकास में कितनी बाधा पड़ती है, इससे कमेटी, सभा और शिक्षा-विभाग को कोई सरोकार नहीं।

कहा जाता है कि इस वर्ष की आरम्भिक हिन्दी कमेटी ने इण्डियन प्रेस के हिन्दी सैट को पाठशालाओं में पढ़ाए जाने योग्य समझ कर उसके लिए अपनी स्वीकृति दी थी। टैक्स्ट-बुक कमेटी ने भी इस शिफारिश को मान लिया था—मगर इसमें हिन्दी प्रचार सभा की पुस्तकें न आ सकने के कारण शिक्षा-विभाग को फिर एक विशेष कमेटी का निर्माण करना पड़ा। उस कमेटी का कार्य तो कुछ और था, मगर उसने किया वही, जिसकी उससे आशा की जा सकती थी। इण्डियन प्रेस की पुस्तकें अस्वीकृत हुईं और उनका स्थान सभा की पुस्तकों को मिल गया।

अब तीन साल के लिए हिन्दी के विद्यार्थियों की प्रगति का मार्ग अवरुद्ध हो गया। उन्हें सभा के प्रकाशनों का मुंह मांगा मूल्य देकर हिन्दी के नाम पर कूड़ा-करकट जो भी सभा देगी स्वीकार करना पड़ेगा। सभा तो तीन साल के लिए निश्चित हो गयी। उसका बजट तो मुनाफे का बनाता रहेगा चाहे विद्यार्थी हिन्दी सीख सकें या नहीं।

भारत के कई प्रांतों में यह रिवाज है कि शिक्षा विभाग ४ या ६ सैट स्वीकार करता है और फिर कौनसा स्कूल कौन सा सैट पढ़ाए यह विद्यालय के प्रधान पर निर्भर रहता है। जब यह व्यवस्था की जाती है तब पुस्तक प्रकाशक मूल्य कम करने और अच्छा सैट तैयार करने में प्रतिस्पर्धा करते हैं और विद्यालयों में अच्छी से अच्छी पुस्तकों के पढ़ने का मार्ग खुला रहता है। इंगलैंड में तो प्रत्येक विद्यालय पुस्तकों और पाठ्यक्रम के चुनाव के संबंध में स्वतंत्र रहता है कि वह जो चाहे सो पढ़ाए केवल उसे इन्सपेक्टर आफ स्कूल्स को संतुष्ट करना पड़ता है कि वह जो मार्ग अपना रहा है वह ठीक है। हैदराबाद की शिक्षा कमेटियों की अमान्य शिफारिशों को देख कर यहां भी शिक्षकों में यह भावना उत्पन्न हो रही है कि क्यों न वे शिक्षा विभाग से अपने लिए इसी प्रकार की स्वाधीनता प्राप्त करने की मांग करें।

सचमुच अब प्रश्न यह है कि शिक्षक और विद्यार्थी इन परिस्थितियों में क्या करें। हमारा सुझाव तो इस संबन्ध में बहुत स्पष्ट है। हैदराबाद राज्य के समस्त हिन्दी शिक्षक नवीन पुस्तकों की एक एक प्रति मंगवा कर उनको पढें और उनके संपूर्ण दोष या तो सम्मिलित रूप से या पृथक रूप से बोर्ड के सेक्रेटरी और डायरेक्टर शिक्षा विभाग (D. P. I.) की सेवा में भेज कर उनसे इन पुस्तकों के बदलने की प्रार्थना करें तथा मैट्रिक की कक्षा १० की पुस्तकों को छोड़कर शेष सब कक्षाओं में पुस्तकों को स्वयं चुनने का अधिकार प्राप्त करलें। जिन शिक्षकों को पुस्तकें पढ़ानी पड़ती हैं, वेही जानते हैं कि कौनसी पुस्तक आकर्षक है और विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त है। विश्व-विद्यालयों के लेक्चरर या सभा के प्रतिनिधि जिनका चुनाव कमेटियों में प्राधान्य रहता है, या तो अल्पायु बालकों की आवश्यकताओं को समझ नहीं पाते और या फिर जान बूझ कर किसी प्रकाशक विशेष का पक्ष ले लेते हैं। इस सब का परिणाम एक ही होता है-बालकों की शिक्षा की अव्यवस्था कम से कम हिन्दी कमेटी की शिफारिशों को देख कर तो हम इसी निष्कर्ष पर पहुंचते हैं।

शिक्षा विभाग ने जो बेतुकी सूची प्रकाशित की है, उस में सुधार अत्यन्त आवश्यक है, इसके लिए एक बडे आन्दोलन की आवश्यकता है। जब तक समस्त हिन्दी प्रेमी सामूहिक आन्दोलन कर सभा के इस एकाधिकार का विरोध न करेंगे, हिन्दी की हैदराबाद राज्य में प्रगति संभव नहीं है। हिन्दी प्रचार की आड़ में सभा जो कर रही है, वह आपके सामने है। हिन्दी के ह्रास को रोकने के लिए यदि आप सब कटि-बद्ध हों, तो अभी कोई कठिनाई नहीं है। यदि आपको अपने बालकों का भविष्य सुधारना है, तो एक स्वर से शिक्षा-विभाग के इस निर्णय का विरोध कीजिए अन्यथा तीन वर्षों के लिए सभा की कृपा से हिन्दी की शिक्षा का भविष्य अंधकार मय तो बन ही चुका है।

—

गीता का तत्वज्ञान

— कु. हरबंस खन्ना, औरंगाबाद

भगवान श्रीकृष्ण की महिमा विविध रीति से गाई जाती है, यद्यपि सबसे अधिक उनका तत्वज्ञान है। महायुद्ध के समय निराश और थका हुआ अर्जुन जब कुरुक्षेत्र के रण में आया तब अपने स्वजनों का विनाश अपने हाथ से होगा यह सोचकर निराश एवं शक्तिहीन हो गया; उस समय अर्जुन को प्रोत्साहन देने के लिये भगवान श्रीकृष्ण ने जो उसे उपदेश दिया वही गीता का तत्वज्ञान है। यह गीता भगवान का वचनामृत ही नहीं बल्कि भगवान स्वरूप है। गीता-तत्त्व सिर्फ भारत में ही नहीं किन्तु विश्व के समस्त तत्वज्ञानात्मक साहित्य में अलौकिक है। महमद का वीरत्व, बुद्ध की अहिंसा, ईसा का भक्तियोग और धृतराष्ट्र का सत्याग्रह इन सब का मधुर संगम यानी गीता का तत्वज्ञान है। प्रवृत्ति और निवृत्ति इन दोनों का समन्वय करके श्रीकृष्ण ने अपने ज्ञान को जीवित और प्रफुल्लित रखा है। श्रीकृष्ण की अहिंसा यानी विश्व के सुख के लिए अनन्य भाव से परिश्रम करना और उनका संन्यास योग यानी किसी फल की आसक्ति तथा अपेक्षा न रखते हुए किया हुआ कर्म-योग। हर एक प्राणीमात्र को आत्मौपम्य दृष्टि से देखना जैसे श्रेष्ठ पुरुष का स्वभाव धर्म एवं कर्तव्य है, उसी प्रकार वर्णाश्रम के समान विहित कर्म करना यह भी उसका कर्तव्य है। यही उपदेश अर्जुन को दिया गया है यद्यपि त्याग अपरिग्रह और असक्ति इनकी भी महिमा उतनी ही तीव्रता से बताई है।

गीता, उपनिषद् तथा अध्यात्मशास्त्र का एक मेव ग्रन्थ होने के कारण ब्रह्मविद्या है। इसके अतिरिक्त जिसके द्वारा ब्रह्मतत्व का साक्षात्कार होता है वह उपाय भी गीता में प्रतिपादित किया गया है। इसलिए गीता योगशास्त्र भी है। यह योग तीन भागों में विभक्त है— कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्ति योग। गीता के अतिरिक्त अन्य अध्यात्मशास्त्रों में ज्ञानयोग, भक्तियोग और कर्मयोग पृथक पृथक साधनरूप में निर्दिष्ट हैं ऐसा प्रतीत होने पर भी वस्तुतः ज्ञान भक्ति और कर्म परस्पर निरपेक्ष साधन ही नहीं हैं बल्कि वास्तव में भगवत् तत्व साक्षात्कार के असाधारण और अभिन्न साधन हैं। यही बात गीता में स्पष्ट रूप से प्रतिपादित हुई है। भगवत तत्व का साक्षात्कार करने के लिए जो कर्म करने पड़ते हैं वे यदि ज्ञान और भक्ति निरपेक्ष हों तो फलप्रद नहीं होते। सिद्धांत साधन तत्व के विषय में गीता का असाधारण वैशिष्ट्य है, इसी कारण गीता उपनिषद् ब्रह्मविद्या का अद्भुत रम्य दर्शन है।

गीताध्यान में यह बिलकुल ठीक कहा है कि सब उपनिषद् रूपी गायों को दुहकर भगवान ने यह दूध रूपी गीतामृत प्रदान किया है। सचमुच श्रुति, स्मृति, वेद वेदांत, उपनिषद् तथा शास्त्र पुराणादि का मथकर उन सब का सार गीता में भर दिया गया है।

कर्मशास्त्र का सर्वथा निर्दोष सिद्धांत न हमें श्रुतियों में मिलता है, न स्मृतियों में, न शास्त्रों में और न पुराणों में। गीता प्रतिपादित निष्काम कर्मयोग का सिद्धांत ही हिन्दू धर्म का सर्वोच्च सिद्धांत है। इसमें उपनिषदों के वेदान्त सूत्र के ज्ञानयोग मीमांसकों के कर्म काण्ड का समुच्चय तथा दूसरी ओर ज्ञानमार्ग और भक्तिमार्ग का सुन्दर समन्वय किया गया है। ममत्व बुद्धि का त्याग करके निःस्वार्थ बुद्धि से परमात्मा प्रवर्तित यज्ञचक्र को चलाना लोक संग्रह के काम जैसे—भक्तियोग में कहा है कि खुद विमुख होकर दूसरों को भी उनकी शक्ति के अनुसार विमुख रहने को सिखाना। इसीसे अपने ज्ञान का मंगलमय प्रकाश चारों ओर प्रकाशित होगा, ऐसा भगवत कटाक्ष है। इस कारण लोक संग्रह को अपनाना समाज की सेवा करना ही भक्ति मार्ग का सर्वोत्तम मार्ग है।

कर्म ज्ञान के समान ही भक्ति की आवश्यकता उतनी ही तीव्रता से बताई गई है। मोक्ष प्राप्ति के लिए और भगवत प्राप्ति के लिए भक्ति ही एकमेव साधन है। इसके विषय में प्रभु कहते हैं— समस्त विश्व मुझसे ही व्याप्त हुआ है और विश्व की हर एक वस्तु मेरा ही अंश है, इस

कारण मेरे अंश की पूजा करना यानी मेरी पूजा करना है, इसीसे आप मुझे पा सकते हैं। कोई मुझे पुष्प फल तथा निर्मल जल भक्ति भाव से अर्पित करे तो मैं उसे सहर्ष स्वीकार करता हूं। कोई दुराचारी ही क्यों न हो भक्ति भाव से अगर उसने मेरी पूजा की है तो उसके लिए भी मोक्षद्वार खुले हो जाते हैं। इस तरह भक्तियोग बहुत ही सुलभता से बताया है जो अन्यान्य भाव से विश्व में लीन होकर मेरी भक्ति करता है वही मुझ में एक रूप हो सकता है।

उपासना के मुख्य दो प्रकार बताये हैं, सगुणोपासना व निर्गुणोपासना। कहीं कहीं तो सगुणोपासना को निर्गुणोपासना से श्रेष्ठ माना गया है, कारण प्रत्यक्ष ईश्वर रूप सामने रखकर उसके चिन्तन में रहना भक्ति उपासना का सर्व श्रेष्ठ मार्ग तथा साधन है। विषय वासना को तजकर खुद का अस्तित्व भूलकर ईश्वर का रूप देखना और उसीके चिन्तन में कालव्यय करना ही सगुणोपासना है। इस तरह उपासना करने वाले को सगुणोपासक कहते हैं और अव्यक्त ब्रह्मज्ञान द्वारा उपासना करना निर्गुणोपासना है। इस तरह उपासना करने वाले को निर्गुणोपासक कहते हैं। निर्गुणोपासना ही अव्यक्तोपासना है। इंद्रियजय व मनोराज्य करना सर्वदा स्थिर बुद्धि से रहना और प्राणीमात्र का कल्याण करना ही अव्यक्तोपासना है। जो हर समय हर प्रसंग में सम बुद्धि से रहते हैं और वासना तथा अभिमान को त्यागकर विश्व कल्याण के चिन्तन में तथा मंगल कृत्य में मग्न रहते हैं, वे साक्षात् ब्रह्मरूप में ही मिल जाते हैं। इस लिये सगुणोपासना तथा निर्गुणोपासना दोनों को समान समझना ही उचित होगा।

भक्ति साधन की मीमांसा करते हुए भगवान कहते हैं कि जो लोग अव्यक्त नामक लक्ष्मी की भक्ति पूर्वक आराधना करते हैं और इंद्रियों को विषय पराङ्मुख करके सम बुद्धि से परहित करते हुए श्री उपासना करते हैं वे भी मुझमें ही एक रूप हो जाते हैं। जो स्थिर रहते हैं, शत्रु तथा मित्र को समान ही समझते हैं, सुख दुःख व वासना को निर्विकार बुद्धि से देखते हैं और प्राणीमात्र की सेवा में अपना तन, मन, धन अर्पित करते हैं; वे भी मुझमें ही लीन होते हैं। ये सब लोग मेरे परम भक्त हैं। इस तरह भक्ति के विविध प्रकार बताकर मानव उन्नति का पवित्र तथा मंगलमय मार्ग ही भक्तियोग का साधन बताया गया है। गीता प्रेरित क्रांति के कारण ही निराकार ईश्वर को जगत साकार ईश्वर को उपासना बढ़ी, सन्यासियों की अव्यक्त उपासना का स्थान जगत् रूपी जगदीश्वर और जनता रूपी जनार्दन की सेवा में सर्व सुलभ तत्व ने लिया। गीता के भक्ति मार्ग में न योनी भेद है, न जाति भेद और न श्रेणी भेद। हर एक को उपासना के लिए एक सा स्थान है। यही हिन्दू संस्कृति है। गीता ही उसका एक मात्र प्रमाणित ग्रन्थ है। गीतोक्त कर्म शास्त्र के कारण ही भारतीय संस्कृति का कर्तव्य शास्त्र एक साथ ही आत्म रक्षा के लिए वज्रकीभांति कठोर और सब से मिलने के लिए कुसुमादपी कोमल है। यह समस्त जातिगत, बुद्धिजन्य तथा सांस्कृतिक भेदों के प्रति सहिष्णु है। सब से हिलमिल कर सब को मिलाने की शक्ति केवल गीता में ही है। अन्य धर्म ग्रन्थों पर आक्रमण न करते हुए मोक्ष का शुद्ध तथा पवित्र मार्ग ही गीता के तत्वज्ञान का तथा भक्ति साधन का सार है।

कानून का पन्ना

इनकम टैक्स के लिए नया फार्म

भारत सरकार के वित्तमंत्रालय (राजस्व शाखा) की एक विज्ञप्ति में बताया गया है कि १९२२ के इन्कम टैक्स नियमों के १६ वें नियम को सुधारा जा रहा है। इस नियम के अनुसार जो फार्म आजकल भरना पड़ता है उसमें बहुत सी ऐसी बातें पूछी जाती हैं जो अधिकांश करदाताओं पर लागू नहीं होतीं।

इस फार्म की जगह अब दो सरल और छोटे फार्म बनाए गये हैं और 'सूचनाओं' को भी एक पुस्तिका के रूपमें अलग कर दिया गया है। दोनों फार्मों में ऐसी आमदनी दिखलाने के लिए अलग खाने रखे गये हैं जिन्हें करदाता कर मुक्त समझता है। यह करदाताओं के हित ही में है कि वे इस खाने को अवश्य भरें क्योंकि इसमें दिखाई हुई आमदनी को यदि बाद में कर योग्य माना गया तो भी इसके कारण करदाताओं को कोई दण्ड नहीं दिया जायगा।

फार्म और पुस्तिका हिन्दी तथा मुख्य प्रादेशिक भाषाओं में छापे गये हैं। फार्म और सूचनाओं की एक एक प्रति इनकम टेक्स कार्यालय से मुफ्त मिल सकती है।

रामानुजदास मूंदड़ा, हैदराबाद

भारत सरकार के प्रतिरक्षा संगठन मन्त्री श्री महावीर त्यागी ने ११ मई १९५३ को रात्रि के पौने नौ बजे अखिल भारतीय रेडियो के दिल्ली केन्द्र से अफीम विषय पर एक भाषण प्रसारित किया। भारत सरकार के पत्र सूचना विभाग ने इस भाषण की विशेष प्रति लेख के रूप में पहले ही हमारे पास भेज दी। इस लेख का शीर्षक है "अफीम की गोली बन्दूक की गोली से गहरा वार करती है" माननीय मंत्री के इस छोटे से वाक्य में कितना कटु सत्य छिपा है। अफीम की गोली वास्तव में ही बन्दूक की गोली से गहरा और बुरा वार करती है। परन्तु इस से निराश होने की जरूरत नहीं है। अफीम की गोली जितना गहरा वार करती है उतना ही सरल मार्ग इस से बचने का प्रकृतिने बना दिया है। और इस पर चलना हर एक के लिए संभव भी है। आवश्यकता है केवल दृढ निश्चय की, पक्के इरादे की। यह बात मैं केवल पुस्तकों में पढकर या यत्र-तत्र सुनकर नहीं लिख रहा हूं। प्रत्यक्ष में इसे देखा है। अनुभव लिया है। आज भी इसके लिए प्रमाण मौजूद है। श्री कन्हैयालालजी बंग हैदराबाद के वयोवृद्ध व्यक्ति हैं। इन्होंने गत ५० वर्ष की अफीम खाने की आदत को छोडकर हमारे लिए उदाहरण प्रस्तुत किया है। इनकी आयु ६६ वर्ष की हो गई है। इन्हें हम सब मासाजी कहते हैं। तीन वर्ष से मुझे इन के साथ रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। मैं ने तीन वर्ष पहले भी इन्हें देखा था और आज भी देख रहा हूं। इनका पिछला इतिहास भी इन्हीं के मुंह से सुना है। इस लिए इन की तीनों अवस्थाओं से परिचित हूं। जब यह १६ वर्ष के थे तब से इन्होंने अफीम खानी शुरू कर दी थी। शायद बचपन में भी एक दो वर्ष की आयुतक इन की माता ने इन्हें अफीम घुट्टी में दी हो। यह इस लिए कह रहा हूं कि अकसर हमारे

समाज में यह प्रथा चली आरही है। आज भी एक हद तक इसका अनुकरण हो रहा है। बच्चे के जन्मते ही घुट्टी में अफीम घिस कर उसे पिलाई जाती है। जरा बड़ा होने पर वह रो धो कर माता को तंग न करे, उस के काम में रुकावट पैदा न हो इस लिए अफीम की गोली बना कर बच्चे को दी जाती है। गोली छोटी हो या बड़ी वह तो अपना काम पूरा करती है। पेट में पहुंचते ही बच्चा सुस्त होकर पड़ा रहता है। यह उचित है या अनुचित यह मैं यहां नहीं कहना चाहता। मैं तो केवल यह बताना चाहता हूं कि मासाजी को बचपन से अफीम की आदत थी। १६ वर्ष की आयु से तो उन्होंने खुद अफीम खानी शुरू की। यह सिलसिला तीन वर्ष पहले तक यथा क्रम चलता आया। बीच बीच में मासाजी इससे तंग आकर इसे छोड़ने की सोचते कारण आदत इतनी बढ गई थी कि महीने की पांच तोले अफीम इन्हें लगती। रोजाना सुबह और शाम एक माशा ले लेते। इधर कर भार के कारण अफीम का भाव बढता जा रहा था। जहां पहले एक रुपये में एक तोला अफीम मिलती वही १० रुपये तोला बिकने लगी। महीने में ५० रुपये अफीम में और उतने ही उसे पचाने के लिए मलाई दूध में मासाजी को खर्च करने पड़ते। इस भारी खर्च के कारण मासाजी परेशान हो गये। पर लाचार थे। दूसरा मार्ग इनके सामने नहीं था। डाक्टरों, हकीमों, चिकित्सकों तथा साथी सहयोगियों ने भी यही सलाह दी कि जिसे बचपन से खाया उसे अब बुढापे में छोड़ने से क्या लाभ? बुढ़ापे में स्फूर्ति और चंचलता आती रहे इस लिए अफीम शुरू की जाती है और आप इसे छोड़ने की सोच रहे हैं। अब अफीम छोडना गोया मौत को दावत देना है। मासाजी भी इससे डरते। आखिर मौत का भय जो था। जीवन किसे प्यारा नहीं है, कौन मरना चाहता है? सौ साल

की आयु होने पर, कमर झुक जाने पर, शरीर पीड़ा से पीडित होने और मृत्युशैया पर अंतिम सांस गिनने पर भी जीवन का मोह नहीं छूटता फिर आखिर मासाजी तो ६४ वर्ष के चलते फिरते खाते कमाते व्यक्ति थे ! ये मरने की कैसे सोच सकते थे। अफीम को छोडकर मौत को दावत देना अिन्हें कब पसंद था। अिस लिए गीला सिकवा, हीला हवाला करते जाते और अफीम की गोली नित समय पर सुबह शाम चढाते रहते। पर ईश्वर की लीला कुछ निराली है। उसे यह सब मंजूर नहीं था। मासाजी के पूर्व जन्म के और शायद अिस जन्म के भी सारे पुण्य कर्म मिलकर अिनके पाप से वजनी बन गये। अिस वज़न ने अिन के पाप को हलका बना दिया। धीरे-धीरे अिसका असर जाने लगा। मासाजी के मन में सद्बुद्धि जाग्रत होने लगी। अफीम छोडने की वे सोचने लगे। पर प्रत्यक्ष साहस न होता। कभी कभी निश्चय करके छोड़ जाते पर विवश होकर फिर शुरू कर देते।

आखिर वह दिन आ गया। शीतल स्वच्छ चांदनी छिटक पड़ी। काले बादल निश्चय रूपी दृढ पवन के प्रवाह से बह चले, ढह चले। श्री स्वामी नागभूषणजी कलम्ब (कल्याणी) निवासी १९५० की शरद पूर्णिमा को अपनी पुस्तक छपवाने हैदराबाद पधारे थे। सुयोग से यह पुस्तक मारवाड़ी प्रेस लि. में ही छपने आई। मारवाड़ी प्रेस हैदराबाद का सबसे पुराना और सब में बड़ा प्रेस है। प्रेस में अधिकतर हिंदी का ही काम होता है। स्वामीजी की पुस्तक भी हिंदी में ही थी। अिस लिए वह छपने अिसी प्रेस में आई। उन्हीं दिनों दक्षिण भारती का पहला अंक छप रहा था। सुअवसर पाकर हमनें भी अिन्हीं के हाथों दक्षिण भारती का उद्घाटन करवा लिया। हमारी और स्वामीजी की घनिष्ठता बढी। मासाजी स्वामीजी के बहुत निकट तक पहुंच गये।

मासाजी के मन में अफीम की दाह तो जल ही रही थी। वे उसे बुझाने की चेष्टा में लगे थे। सहज ही में हृदय की बात मुख द्वारा से बाहर निकल पड़ी। स्वामीजी का ध्यान इस ओर गया। वे कुछ चौंके। उन्होंने अपने नये पर एक निष्ठ वृद्ध भक्त के इस ग्रहण को दूर कर उसके दामन में लगी कालिख को धोने की सोची। मासाजी से अफीम छोड़ने की बात कही। मासाजी सोच में पड़ गये। साहस कर स्वामीजी से पूछा कि साथी सहयोगी और स्वास्थ्य के ज्ञाता हकीम वैद्य और डाक्टर जो मौत का भय उन्हें बता रहे हैं उसका हल क्या है? उत्तर में स्वामीजी ने पूछा कि अफीम खाने से यह प्रश्न हल हो सकता है क्या? मौत अफीम की गोली से घायल होकर भाग सकती है क्या? यदि डाक्टर वैद्य और अनुभवी साथी सहयोगी इसकी हामी भरते हों तो अफीम खाने में हर्ज नहीं। इतना ही नहीं बल्कि अफीम की गोली में मृत्यु पर विजय पाने की शक्ति हो तो उसे और भी बड़ी बना देनी चाहिए। और यदि ऐसी बात नहीं है तो फिर व्यर्थ में अफीम की दुहाई देने और उसके पीछे पड़ने में क्या लाभ। जब मरना ही है तो अफीम खाकर और उसकी कालिख से मुंह पर दाग लगाकर क्यों मरें। ग्लानि रहित और शान्त मनोभाव से आत्मा को मुक्त क्यों न होने दें। बात सादी सीधी थी। वयोवृद्ध मासाजी कई बार इसे सुन चुके थे, पढ़ चुके थे और कह चुके थे पर समय की बलिहारी है जो इस बार हृदय के अन्तरात्मातक यह बात पहुँच गई। उस पर पत्थर की लकीर बनकर अंकित हो गई। दूसरे ही दिन से अफीम की मात्रा कम की जाने लगी।

परंतु ५० वर्ष तक खाते रहने से अफीम का मद मासाजी की रग रग में जम-सा गया था। वह सहसा इनका पिण्ड कैसे छोड़ता। मात्रा कम होते देख भूखे शेर की तरह वह गुर्राने लगा, इन्हें परेशान करने लगा। पर इस बार उस मदमाते मद की एक न चली। आखिर चलती भी कैसे। ब्रह्मचर्य के तप में तपे हुए स्वामी नागभूषण जी की दीक्षा जो मासाजी को मिली थी। धीरे धीरे एक महीने की अवधि में मासे भर अफीम की गोली तिलभर की ही रह गई। नाम मात्र के लिए अणुभर का दाग रजत पट पर रह गया। पर मासाजी इसे भी कैसे रहने देते। अहर्निश उन्हें उसी की चिंता बनी रहती। हर एक से इसका हल पूछते, हर जगह इसे खोजते। आखिर वह संजीवनी भी बुलारम के प्राकृतिक चिकित्सालय में इन्हें मिल ही गई। चिकित्सालय के प्राकृतिक चिकित्सक श्री बी. वेंकटराव ने इन्हें भूल का मूल मर्म बता दिया। अफीम के साथ साथ नमक मिर्च मसाला छोड़कर उसकी जगह प्राकृतिक आहार की राय दी। भविष्य के शुभ

की आशा बड़ी विचित्र होती है। मनुष्य के हाथों असंभव को संभव बना छोड़ती है। संसार के सारे दुःखों का आधार भी शायद यही उज्वल भविष्य की आशा ही है। मासाजी को प्रकृति पथपर चलने से लाभ हुआ था। उस लाभकी झलकने इन्हें और आगे बढा दिया। इसी कारण हम आज देख रहे हैं कि ६६ वर्ष का वृद्ध शरीर बिना अन्न के और बिना अफीम के भी पहले की अपेक्षा अधिक चचलता से, गति से चलता फिरता और काम में रत रहता दिखाई देरहा है। आज मासाजी न अन्न खाते हैं न अफीम। प्रकृति की देन फल और दूध पर ही उनका आहार अवलम्बित है। वे रोज़ाना प्रातः ७ बजे पावसेर दूध लेते हैं। क़रीब नौ दस बजे फलहार करते हैं। चार पांच बजे फिर वही फलमूल उनके भोजन के रूप में आते हैं। रात में सोने से पहले थोड़ासा दही पेय के रूप पेटकी धधकती ज्वाला को शान्त करने अमृत बन कर गले से उतरता है। कन्द मूल फल में मासाजी मौसमी फलों का सेवन करते हैं। मौसमी फल मौसम के कारण सस्ते भी होते हैं और प्रकृति उन्हें ऋतु के अनुकूल बना देती है इस लिए वे स्वास्थ्य के लिए हितकर और सुग्राह्य भी होते हैं।

जब से मासाजी फल मूल पर रह रहे हैं पहले की अपेक्षा कुछ अधिक फूर्तिले और चंचल दीख रहे हैं। जहां मासाजी के लिए दो एक फर्लांग चलना या जीने की चार आठ सीढ़ियां चढना दूभर प्रतीत होता था वे आज नित्य तीन बजे उठते हैं मील दो मील घूम कर आजाते हैं प्रभात फेरी में राम धुन करने वाली भक्त मण्डली में सम्मिलित होते हैं और फिर सुबह ७ बजे से शाम के ७ बजे तक आफिस में हमसे अधिक काम भी करते हैं। वे डाक्टर वैद्य जो दो वर्ष पहले मासाजी के लिए अफीम को छोड़ना मौत को दावत देना बताते थे आज प्रकृति की दुहाई देते हैं और मूकवाणी से इस बात को स्वीकार करते हैं कि मनुष्य बिना अफीम के भी रह सकता है। जीवन के सौ वर्ष सानन्द बिता सकता है।

यह है प्रकृति की महिमा और दृढ़ निश्चित के बल का फल। प्रकृति के बल पर आगे बढ़ने वालों के लिए संसार में सब कुछ सुलभ है, सरल है। जो बूढ़े बुजुर्ग बिना अफीम के जी नहीं सकते वे निःसंदेह अभी भूल में हैं, भटक रहे हैं। वास्तविक मार्ग का उन्हें ज्ञान नहीं है और ज्ञान होने पर भी यदि वे उधर नहीं जाना चाहते हैं तो उनके लिए अफीम की गोली जीवनदायिनी नहीं बल्कि जीवन नाशिनी है जो मीठे ज़हर के रूप में शरीर में जाकर बन्दूक की गोली की अपेक्षा कहीं अधिक गहरा घाव करती है और मनुष्य को तत्क्षण न मार कर शरीरका क्षय करते हुए उसे तड़पा तड़पा कर मारती है।
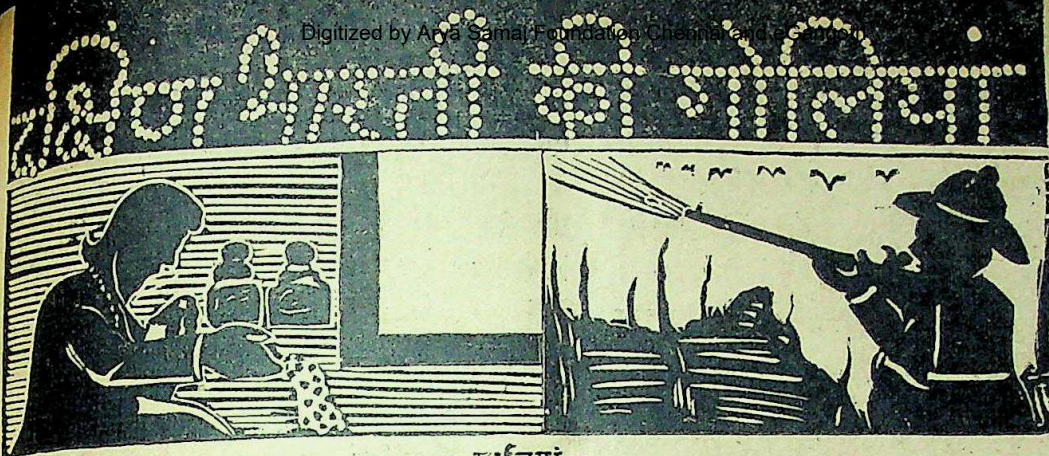
गालियां

किसी महाशय ने कहा गोलियों के बजाय गालियां तो अच्छा है। केवल प्रथम में आकार ओकार का है। उनकी दरख्वास्त जुरूर क़बूल हो जाती यदि अजर्फ रहते। उत्तर दिया गोलियां और गालियां की दृष्टि से भी तुक नहीं मिलता। गोलियों में बहुत हैं। पहला अक्षर तो गाय का अर्थ रखता है बनाने पर कई तरह की गोलियां होजाती हैं। दवा गोलियां भंग की गोलियां अफीम की गोलियां और चूने की गोलियां भी होती हैं और बन्दूक़ की गोलियां भी परन्तु हमारी गोलियों को अपनी बीमारी में सदैव की गोलियां समझिए।

समाज सुधार के नेता बाबू जय प्रकाश नारायण परिवार छोड़ कर भूदान यज्ञ में समिलित हो गए और दूसरे किसी विषय में या किसी के विरुद्ध में कुछ कहते। यह तो ठीक ही है। इसके मानी यही हैं कि को कुछ गालियां नहीं देंगे बल्कि गोलियां ही देंगे। प्रत्येक से प्रार्थना करूंगा कि हर बीमारी में दवा की गोलियां देते रहें बल्कि खुद भी खाएं।

दो बालक रास्ते में चूने की गोलियां खेल रहे थे हम तमाशा देख रहे थे कि कौन जीतता है और कौन हारता है परन्तु थोड़ी ही देर में वे बच्चे गोलियों के लिए लड़ने आपस में गोलियों के बदले गालियां चलने लगीं। यह देखकर ऐसी गोलियां व्यर्थ हैं जिससे कि गालियां पैदा हों। सारांश गोलियों को इस्तेमाल करने में बड़ी सावधानी रखनी चाहिए।

४ इंगलैण्ड में दावा समिति की स्थापना जनवरी मास होगई थी अब एलिजाबेथ राज्याभिषेक के सब प्रबन्ध समिति ने ठीक कर लिए हैं। ता. २ जूनवरी ५३ को यह उत्सव खूब धूम धाम से सम्पन्न होगा इसमें बड़े बड़े देशों के नेता मिनिस्टर आदि सम्मिलित हो रहे हैं देखें इसमें क्या होगा। बहुत से लोग बहुत स्थानों पर इसकी प्रतीक्षा बड़े ही उत्सुता से कर रहे हैं। जैसे कुछ इनको मिल जायगा। कुछ भी हो संसार में एक बड़ा उत्सव मनाया जा रहा है इस में सब को संतोष की गोलियां खालेनी चाहिए संतोष नहीं तो कुछ नहीं।

५ पंचवर्षीय योजना पर भी सरकार गोलियां पर गोलियां झाड़ती है परन्तु आधी गोलियां बिना नशाने लगती हैं और गोलियां ख़ाली चली जाती हैं इसका कारण केवल गफलत है। यह गफलत किसकी है इसे तो जाननेवाले जानें। भ्रष्टाचार निवारक क़ानून पर यदि ज़ोर दिया जाय तो संभव है पांच वर्ष का कार्य चार वर्ष में हो जाय किन्तु पहले प्रत्येक योजक को निस्वार्थ होना चाहिए यानी अपने वेतन में ही गुज़ारा करके तन मन से पूर्ण शक्ति लगाने वाला होना चाहिए।

६ डाक ख़र्च में क्रमशः वृद्धि हो रही है इससे कई महानुभावों की राय है कि सरकार को इससे उलटा घाटा होगा। यानि दस लेटर आदि से काम लेने वाला ४ लेटरादि से काम लेकर सन्तोष मानेगा। मूल्य वृद्धि की बीमारी जनता और सरकार में जबतक रहेगी हमारी गोलियां असर नहीं करेंगी।

७ व्यापारी कहते हैं अब दुनियां में फ़ैक्टरी रख कर तो नहीं कमासकता दूसरे ने उत्तर पूछा क्यों ? व्यापारी ने कहा अब मजदूर को काम करने की चिन्ता नहीं रही। टाईम नापकर मजदूरी लेते हैं परन्तु काम को नहीं नापना चाहते हैं क्यों कि हमारा राज्य है। यानी स्वराज्य है इसे हम मजदूर राज कहें तो अतियुक्ति न होगी।
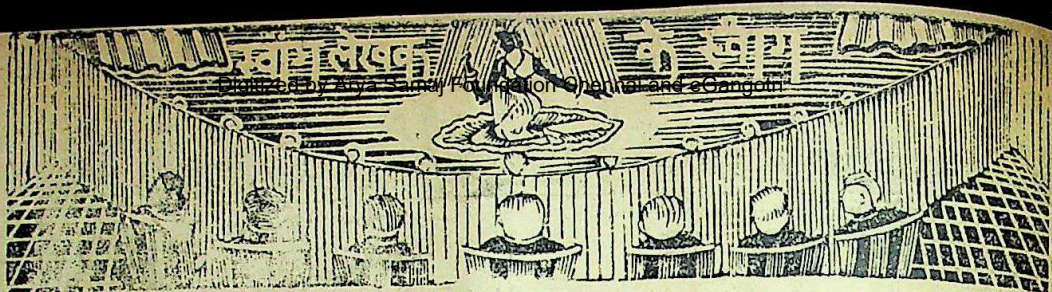
स्वांग लेखक

ग्रामवार्ता

(४ आदमी आपस में वार्तालाप कर रहें हैं)

१ ग्रामीण—रहने दो तुम्हरी बातें ! आज ३-४ साल से हत्याओं पर हत्याएं हो रही हैं, पर नतीजा कुछ नहीं।

१ कम्युनिस्ट—नतीजा जुरूर निकलेगा संसार में तलवार के बल पर ही सब कुछ मिलता है।

२ कम्युनिस्ट—संसार का इतिहास पढ़िए।

२ ग्रामीण—अब हम तलवार पर भरोसा नहीं कर सकते। महात्माजी ने बताया है कि अहिंसा से सब कुछ हो सकता है।

१ ग्रामीण—अब हम तुम्हारा साथ न देंगे।

१ कम्युनिस्ट—क्यों नहीं देंगे-याद रखो हम तुमको भी यमपुरी पहुंचा देंगे।

१ ग्रामीण—इसके पहले आपकी पोल सरकार में खोल देंगे।

२ ग्रामीण—हमको तुमने बहुत बनाया, पर अब तुम्हारा जादू नहीं चलेगा।

१ कम्युनिस्ट—बराबर चलेगा।

कम्युनिस्ट जेब से पिस्तोल निकालता है। पीछे से एक ग्रामीण हाथ पकड़ता है। पिस्तोल की गोली ख़ाली जाती है। कई ग्रामीण जमा हो जाते हैं। एक कम्युनिस्ट भागजाता है दूसरा पकड़ लिया जाता है।

घबराये हुए

१ ग्रामिण—अफसोस एकदम हमारे विरुद्ध।

२ कम्युनिस्ट—वह खूसट बूढ़ा हमारे आन्दोलन को ठंडा कर गया।

१ कम्युनिस्ट—अच्छा जी अबतक तुमने कितनों को ज़मीन बांटी। कितनों की जड़ें काटीं।

२ ग्रामीण—इसका हिसाब मेरे पास है हज़ारों के खून किए और सैकड़ों एकड़ ज़मीन बांटी।

१ ग्रामीण—वह भी यदि हर तरह की मदद दिया हो तो।

२ ग्रामीण—क्या क्या मदद ?

१ ग्रामीण—किसी का गुप्त धन बताया हो। या किसी मालदार को दिखाया हो।

कम्युनिस्ट—तुम हमारी मज़ाक़ उड़ा रहे हो ?

१ ग्रामीण—मज़ाक़ की क्या बात है ? तुमने हमारे आन्ध्र-देश में सैकड़ों निरपराध व्यक्तियों की हत्याएं की हैं यह पाप फूट फूट कर सामने आरहा है।

१ कम्युनिस्ट—हमने जनता के लिए ज़मीन्दारों व साहूकारों की हत्याएं कीं।

१ ग्रामीण—मगर महाशयजी ज़माना बदल गया है। विना हत्या के हज़ारों लाखों एकड़ ज़मीन बांटी जा रही है। जानते हो भूदान यज्ञको।

कम्युनिस्ट—हां जी इससे हम घबराए हैं।

भूदान यज्ञ

१ मित्र—क्या तुमने "भूदान यज्ञ" का नाम सुना है ?

२ मित्र—भूदान, यज्ञ यह शब्द अपरिचित तो नहीं है। सब के अर्थ जानता हूं परन्तु भूदान यज्ञ से जो परिवर्तन होने वाला है वह युगान्तर है।

३ मित्र—मैं तो सुनता हूं इस यज्ञ से कम्युनिस्ट लोग भी सहमत हो कर हत्याएं छोड़ रहे हैं।

२ मित्र—यह तो सरकार की मार का भी नतीजा है। तेलंगाने आन्ध्र देश में हज़ारों कम्युनिस्टों को मौत के घाट उतार दिया।

१ मित्र—कम्युनिस्टों ने भी क्या कम किया। हत्याओं के अतिरिक्त लाखों की सम्पत्ति को नष्ट भ्रष्ट भी कर दिया।

३ मित्र—किन्तु भूदान यज्ञ की मार तो कम्युनिस्टों के आन्दोलन को नष्ट कर देगी।

[पृष्ठ ४४ पर]

मासिक भविष्य

— काशीनाथ शर्मा शास्त्री,
खिरकिया, म. प्र.

[मे]ष—आर्थिक समस्याएं सुलझ कर प्राप्ति का मार्ग [होगा]। सहयोगियों के गरमागरम संघर्ष के कारण जो [चिन्ताएं] थीं वे इस मास में कम हो जायेंगी। ता. २ के [पश्चात्] बहुत दिनों के स्थगित कार्यों में प्रगति एवं लाभकी [संभाव]नाएं बनेगी। सम्पूर्ण मास में ता. १ से ५-१०-११-[१२]-२७ से ३० के दिन शुभ लाभकारी और [साफल्य]प्रद सिद्ध होंगे।

[वृ]षभ—अभी-अभी बनेबनाए कार्यों में भी एक एक [आकस्मि]क विग्रह का अनुभव करना होगा। धनागम और [व्यय]स्थिति दोनों का कुचक्र चलेगा इससे परिणाम [स्वरूप ह]ोकर धन लाभ तो होगा ही संतोष भी मिलेगा। [ता. ..] से एक नए सहयोगी द्वारा प्रोत्साहन प्राप्त होकर [उत्त]म और यशस्वी रहेगा। ता. १ से ७, १२, १३ .. के दिन सफल यश और धनप्रद रहेंगे।

[मि]थुन—अनिश्चित परिस्थितियां और आर्थिक संकोच [से] मास के आरंभ में ही मुक्ति अवश्य मिलेगी। परन्तु [शारीर]िक अस्वस्थता के कारण मनस्थिति चंचल ही [रहेगी] क्रमशः ता. १४ और २७ के पश्चात् शनैः शनैः [लाभ] मिलेगा और सुख शांति प्राप्त होगी। ता. ४ से .. से १६ २२ २३ के दिनों में पूर्ण सफलता द्रव्य [लाभ] और यश एवं संतोष प्राप्त होता रहेगा।

[क]र्क—अच्छी सफलता और संतोष जनक वातावरण [की स्थि]ति में अनायास अतिव्यय और हानि की संभावनाओं [के कार]ण चिन्ताएं बढ़ेंगी, परन्तु ता. ७ के पश्चात् आम- [दनी] और स्थायी सुविधाओं के कारण चिन्ताएं कम [हो]गी। ता. २७ के पश्चात् रहे हुए सभी कार्यों में [सुख]प्रद समाधान हो जावेगा। ता. ६ से ११ १७ १८ [..] २६ के दिन उत्तम परिणाम कारक लाभ प्रद और [यशस्वी] रहेंगे।

सिंह—अधिक दिनों से चलने वाले विवाद और [झगड़ों] का इस मास में अन्त अवश्य हो जावेगा। व्याव- [सायि]क सफलता और आकस्मिक धन लाभ के संबंध में यह मास उत्तम रहेगा। ता. १४ से एक अकल्पित लाभ कारी योजना का श्री गणेश होगा। ता. २७ से एकत्रित लाभांश के रुक जाने से नई चिन्ता बढ़ेगी। ता. ८ से १३, १९ से २१ २७ २८ के दिन उत्तम रहेंगे।

कन्या—आकस्मिक भाग्योदय और यश प्राप्ति के सुयोग मिलते रहेंगे। ता. ३ के पश्चात् स्थान संबन्धी चिन्ताएं दूर होंगी मामले मुकदमे में विजय होगी ता. ७ से एक स्तम्भित योग नई उलझन पैदा कर चालू गाड़ी ठप्प कर देने की स्थिति उपस्थित करेगा, परन्तु ता. १४ से स्थिति में सुधार हो कर सुख शांति और संतोष का संचार होंगा। ता. १० से १३ १९ से २१ २७ २८ के दिनों में उत्तम सफलता यश और धन लाभ होता रहेगा।

तुला—अस्तव्यस्त और अशांत परिस्थितियों के सुधार करने में यह मास अधिक उल्लेखनीय और सफल सिद्ध होगा। ता. ७ से अतिव्यय हानि और रुकावट के कारण नूतन चिंता समुद्भूत होगी। ता. १४ के पश्चात् नई आशाओं का संचार होकर समस्त विघ्न बाधाओं का संहार होगा। ता. ४-५-१२ से १८, २४ से २६ के दिन अधिक लाभ प्रद यशस्वी और सन्तोष कारक रहेंगी।

वृश्चिक—अनेक सुविधाओं और सुव्यवस्थाओं के होते हुए भी ता. ३ के पश्चात् स्वास्थ्य सम्बन्धी उलझनों के कारण मानसिक शिथिलता और अकर्मण्यता का अनुभव होगा। ता. ७ के पश्चात् यथा प्रयत्न सुधार हो जाने की संभावना अवश्य रहेगी। ता. १९ के पश्चात् चिंताएं मिटेंगी और सभी प्रकार का सुख संतोष मिलेगा। ता. १०-११-१४ से २१-२७-२८ के दिनों में यश, लाभ, मान, सम्मान सुख सन्तोष और शांति मिलती रहेगी।

धन—अकारण उद्भूत विवाद और विरोधजन्य वातावरण को सुधारने में इस मास के ग्रह योग अधिक सफल होंगे ता. १४ के पश्चात् उत्तम सहयोगी और आत्मीय जनों के द्वारा अच्छा प्रोत्साहन और यश, धन, लाभ के

सुअवसर मिलेंगे। ता. १ से ३, १७ से २३ २९ ३० के दिन अधिक यशस्वी धनप्रद और सफल सिद्ध होंगे।

मकर—अपने ही पारिवारिक अस्वस्थता और अशांति के संबन्ध में तो ता. ३ के पश्चात् सुधार हो कर सुख शांति और संतोष लाभ होगा, परन्तु इस मास में अकारण विरोध वाद विवाद एवं मनमुटाव की घटनाएं अधिक घटेंगी। ता. १४ के पश्चात् विरोधी ग्रहों का प्रभाव कम होने लगेगा। ता. ४-५-१९ से २८ के दिनों में अधिक लाभ यश मान सम्मान प्राप्ति और सफलताएं मिलती रहेंगी।

कुम्भ—अनुत्तम और उलझी हुई चिन्ताग्रस्थ मनस्थिति में भी नई-नई आशाओं का संचार इस मास के आरम्भ से ही होने लगेगा। ता. ७ के पश्चात् शारीरिक मामलों में चिंता और भय का कारण उपस्थित हो… ता. १४ के पश्चात् इस भयग्रस्त वातावरण में भी आ… स्मिक सुधार, उत्तम धन लाभ और यश के उत्तम … मिलेंगे। ता. ६-७-२२ से २८ के दिनों में प्रायः सभी कार्यों… यश मिलता रहेगा।

मीन—आरंभसे ही चिंताग्रस्त अनेक उपद्रवों … सामना करना पड़ेगा। परन्तु ता. ३ से होने वाले गुरु… उदय से उत्तम सहयोग जन्य प्रोत्साहन से कठिनाइयों… हटाने में यश प्राप्त होगा। ता. १४ से ता. २७ तक… स्थिति भी अच्छी नहीं कही जा सकेगी। ता. १ से ३ … २४ से ३० के दिनों में रचनात्मक सफलता मिलती रहेगी।

[शेष पृष्ठ ४१ का]

४ मित्र—मैं सुनता हूं वह भी इसी कार्य में सम्मिलित होने वाले हैं।

१ मित्र—वाह "भूदान यज्ञ" भारत ने कैसे कैसे ऋषि उत्पन्न कर दिये जिनसे संसार का कल्याण हो रहा है "भूदान यज्ञ" योजना भी उनमें से एक है।

२ मित्र—भूदान यज्ञ संसार का कल्याण करें। पंच तत्वों का मालिक कोई नहीं हो सकता।

हैदराबाद का गौरव

१ मित्र—जब भूदान यज्ञ में सब पार्टियां सहायक होंगी तब गरीबों का काम आसान हो जायगा।

२ मित्र—फिर भी एक बुराई कम्युनिस्टों में रह जायगी। वे भारत का खा कर रूस के गीत गाते हैं। यह बुराई निकल जाय तो अति उत्तम हो।

१ मित्र—समाजवादियों के नेता तो इसमें भाग ले रहे हैं।

३ मित्र—भूदान यज्ञ का महत्व हैदराबादियों के लिए ज्यादा है क्योंकि इस पृथ्वी पर ही सब से पहले प्रथम यज्ञ प्रारंभ हुआ है। इस भूदान यज्ञ में प… आहूती हैदराबादी ही ने दी है।

२ मित्र—बड़ा गौरव है हमारे हैदराबाद को।… कर आन्ध्रप्रदेश को जिस से यह ज्योति निकली।… प्रकाशन फैलाना मनुष्य मात्र का कर्तव्य है।

१ मित्र—भूदान यज्ञ से किसीका विरोध नहीं… कम्युनिस्ट भाई हमारे हैं हम में से ही होते हैं। ऐसी परिस्थि… निर्माण होजाती है कि न्याय प्रमावित व्यक्ति कम्यु… बनजाता है। उन्नति वे भी करना चाहते हैं… हम भी करना चाहते हैं।

२ मित्र—फिर अन्तर क्या रह जाता है? फिर … क्या है?

१ मित्र—यही कि हम शांति और अहिंसा से उ… करना चाहते हैं और वे जोरजुल्म और अत्याचार से।

३ मित्र—जब अहिंसा और सत्य से काम … होता है तो फिर (हिंसा) हत्याएं क्यों करेंगे।

शिक्षा योजना

ले०—बालकृष्ण लाहोटी

श्रीपत एक साधारण स्थिति के माता पिता का लड़का था। स्कूल में पढ़ता था। और भी बहुत से लड़के स्कूल में आते थे। सब के ध्यान एक तरफ तो इसका ध्यान और तरफ। आधिकांश लड़के पढ़ने लिखने के बाद खेल कूद में मस्त रहते और कई आराम लेते, परन्तु श्रीपत के हाथ से किताब न छूटती। अध्ययन के अलावा एक न एक पुस्तक साथ रहती। पढ़ते पढ़ते इसका ध्यान साहित्य के तरफ गया। किसी पुस्तकालय का सदस्य होकर भी लाभ उठाने लगा। जो सामने आता उसे पढ़ लेता। सारांश १४ वर्ष की अवस्था में ही म्याट्रिक पास कर लिया। आगे कालेज में शरीक होकर अपनी विद्वत्ता बढ़ाना चाहता था परन्तु माता पिता की आर्थिक कठिनाई इसके आड़ी आई। इस कठिनाई का सामना करना चाहा। यानी ट्यूसन ढूंढने लगा जो मनुष्य जिस वस्तु को चाहता है ईश्वर उसे देता है परन्तु सच्चे दिल से चाहे और योजना बना कर आगे बढ़े।

ढूंढते २ एक मास के बाद ट्यूसन मिला १० मासिक पर प्रातःकाल १ घंटा पढ़ाना प्रारंभ किया और उसीसे कालेज की फीस भरी। पुस्तकें मंगाईं और कालेज जाना प्रारंभ किया।

कालेज और पढ़ाई के बाद जो समय मिलता उसे अन्यान्य पुस्तकालयों में काटता और नए २ अखबार देखना प्रारंभ किया। मासिक पाक्षिक पत्र तथा साप्ताहिक और दैनिक पत्रों का अवलोकन अध्ययन भी करने लगा। शहर के पुस्तकालयों की कोई पुस्तक ऐसी नहीं थी जिसे श्रीपत ने पढ़ न लिया हो। इस प्रकार वह स्कूल में न पढ़ाए जाने वाले विषय भी बहुत कुछ जान गया। केवल २ बार भोजन के सिवाय मां बाप से कुछ नहीं मांगता। रु. १०) ट्यूसन के मिलते वह कालेज में रु. ५) तथा शेष पुस्तकों में पांच खर्च देता। मध्य में कुछ भी खर्च न करता। दूसरे २ लड़के खाने पीने के लिए कुछ पैसे माता पिता से मांगते परन्तु यह घर की स्थिति देखकर कुछ भी नहीं मांगता। न कभी वह मन को इधर उधर भटकने देता। उसे और कोई रुचि न थी केवल एक रुचि रहती कि कोई नई किताब पढ़ने को मिले। इसकी पूर्ति शहर के पुस्तकालय और वाचनालय से हो जाती।

माता पिता भी इससे बड़े खुश थे। शोभारामजी के घर में भी श्रीपत सर्व प्रिय होगए। कारण उनके लड़के को इस प्रकार पढ़ाता कि मालूम ही नहीं होता कि यह गुरु चेले हैं। एक दिन भी भूल कर बच्चे पर हाथ न उठाया और बहुत कुछ पढ़ा दिया यह देखकर शोभाराम तो बहुत ही खुश थे।

शोभाराम अच्छी स्थिति के मनुष्य थे उनकी थोड़ी बहुत इधर उधर चल जाती। इसी प्रकार कई वर्ष बीते शोभाराम जी ने समय समय पर सहायता देकर श्रीपत को बी. ए. तक पढ़ने में मदद दी। और सरकार में नौकरी दिलाने का प्रयत्न किया, परन्तु सरकारी नौकरी न होकर एक मिल की नौकरी मिल गई उसी में मां बाप की आज्ञा से नौकर होगया परन्तु यह नौकरी इसके मन के माफक न थी।

२

श्रीपत बातें कम और काम अधिक किया करता था। वह नौकरी करके भी संतुष्ट न हो सका। माता पिता विवाह करना चाहते थे किन्तु आर्थिक कठिनाई सामने दीवार बन जाती। माता पिताने शोभाराम से कह सुनकर आर्थिक कठिनाई हल कर ली। लड़की देखने लगे जब ३-४ सगाइयां आगई और एक लड़की का बाप सगाई करने आमादाहुआ तो मैं विवाह नहीं करूंगा। मैं अभी इस योग्य नहीं हूं। यही नहीं बल्कि लड़की के पिता से भी कह दिया— श्रीपत "तुम्हारी लड़की भूखों मरेगी। मैं शादी विवाह नहीं करूंगा लोगों ने कारण पूछा तो दामोदर ने कहा— "मैं अभी ऐसा स्वावलंबी नहीं हुआ कि कुटुम्ब को पालसकूं।

इस पर लोगों ने कहा "माता पिता रहते तुमको क्या चिन्ता है ? सब का कहना मानना ही तुम्हारा धर्म है।"

सारांश सब के समझाने बुझाने से विवाह करना स्वीकार कर लिया और विवाह हो गया। अब उसे और एक चिंता हो गई कि गृहस्थी किस प्रकार चलेगी। इस मिल की नौकरी में दिल न लगता कारण दिन भर उसी कारोबार में जाता और दूसरा अध्ययन पठन न होता। इसने इस प्रकार कई महीने व्यतीत किए अन्त में अर्धरात्री को एकांत में शांत चित से निर्णय कर लिया कि अब किसी मुद्रणालय की नौकरी करूं या किसी प्रकाशन का ऐसा पधाधिकारी बनूं जिससे मैं अपने मन के माफक कार्य करूं! साहित्याधिकारी बनने की इच्छाएं हिलोरें लेती रहती, परन्तु आर्थिक दृष्टि से साहित्याधिकारी का कुछ भी महत्व नहीं। श्रीपत को यह मालूम था कि विशेष कर भारत में साहित्यकार भूखों मरते हैं। बहुत से लेखक चिथड़े लगाए फिरते हैं। कदाचित् कोई साहित्यकार अपना पेट इससे चलाते हों, परन्तु इस युवकने यह प्रण कर लिया, कि चाहे जो भी कष्ट आए, परन्तु साहित्य सेवा में लगजाएं। साहित्य में भी कई अंग होते हैं उन मे से पत्रकारिता को चुन लिया।

पत्रकार होने का सौभाग्य प्रत्येक को नहीं मिलता, परन्तु "जाके जैसा मन बसे ताके तैसा होत।" वाली बात चरित्रार्थ भी हो जाती है। नित्य नये २ विषयों पर लेख लिखने का अभ्यास करने लगा और देश के मासिक तथा साप्ताहिक पत्रों में भेजना प्रारम्भ किया। इसके अधिकांश लेख अच्छे होने पर भी स्थानाभाव में संपादकों की रद्दी की टोकरियों में पड़जाता कुछ लेख पत्रों में प्रकाशित भी होते परन्तु पारिश्रमिक कुछ न मिलता। इस परिस्थिति से कभी कभी दुखी भी हो जाता कि साहित्यकों की ऐसी नाकदरी क्यों है? फिर सोचना जो चीज़ लेखनी से निकल गई, वह स्थाई हो गई। कदाचित् मरने के बाद भी यह वस्तु यानी साहित्य कोई देखे और मुझे तथा मेरे नाम को याद करें। कविता का भी शौक था इनकी कविता उच्चस्तर की न होकर सुझाव या उपदेश प्रद रहती। इनके विचार में यह था कि जो लिखा जाय उपदेशप्रद और लाभप्रद लिखा जाय, ताकि मामूली आदमी भी पढ़ कर लाभ उठा सके। लेख, कहानियां नाटक सारांश जो भी लिखाजाय उपदेश प्रद लिखा जाय।

कभी बार कभी श्रीमान आकर श्रीपत की लेखनी से कुछ मतलब का लेख लिखाना चाहा परन्तु उसने साफ इन्कार कर दिया। पैसे टके का लालच बताया गया। इसे क्रोध आया और कहा—श्रीमान् मैं अपनी लेखनी को आपके हाथों नहीं बेचना चाहता "श्रीमानजी ने नम्रता पूर्वक कहा कि आप अपना नाम न दीजिए, पर इस पर भी उन्होंने कहा—मेरे आत्मा के विरुद्ध मेरी लेखनी चलती ही नहीं। विवश हूं क्या करूं और कोई वकील को देखलो! यह काम मुझसे नहीं होता। यह कार्य करने के लिए वकील मौजूद हैं। चाहे सो लिखाकर प्रकाशित करा सकते हैं।

श्रीपत के दिल में यह था कि मुझे कम से कम वेतन मिले, परन्तु किसी पत्र का संपादकीय स्थान प्राप्त हो। कभी बार पत्र को जाति तौर पर निकालने का सोचा, परन्तु आर्थिकावस्था साथ नहीं दे रही थी। किसी के भागीदारी में अखबार चलाना चाहा परन्तु कोई न मिला। अन्त में एक मुद्रणालय के स्वामी से भेट हुइ उन्हें अपने विचारों का पाकर बड़ा खुश हुआ। श्रीपत ने वहां पर आसन जमा दिया। पहली बड़ी नौकरी १५० की छोड़ दी और मामूली ५०) मासिक पर रहगया। और एक मासिक निकालने का निर्णय हुआ।

३

श्रीपत का अध्ययन इतना बढ़ गया कि वह बड़े से बड़े विद्वान से टक्कर ले सकता था। प्रौढ़ शिक्षा, स्त्रीशिक्षा किस किस प्रकार से होनी चाहिए इसका एक लेख स्थानीय सरकार चाहती थी। उन लेखों को बहुत से लेखक लिखे परन्तु किसीका पसन्द न आया। परन्तु श्रीपत का लिखा हुआ प्रौढ़ शिक्षा और स्त्रीशिक्षा शीर्षक लेख पसन्द आए। इनको इनाम मिला श्रीपत इस प्रकार की जीत पाकर फूला नहीं समाया। प्रौढ़ शिक्षण की न्यारी न्यारी धाराएं बताकर सरकार को मुग्ध कर दिया। उसने सुझाव दिया

कि प्रत्येक लिख पढे देश प्रेमी को कुछ न कुछ समय प्रौढ़ों को पढ़ाने के लिए लिखे पढे चाहिए। उनके अक्षर ज्ञान से जो फ़ायदा होगा वह अवर्णनीय है। स्त्री शिक्षा तो गांव गांव और मुहल्ले मुहल्ले में होनी चाहिए। जिस ग्राम में या मुहल्ले में जो योग्य स्त्री मिले उसे इस काम के लिए मुक़र्रर करदेना चाहिए। सरकार अपना फ़र्ज समझे और जनता अपना कर्तव्य समझे। सरकार का काम है कि वह ऐसी योजनाएं स्थापित करने में योग दे। जिस कार्य में कुछ मत भेद नहीं वह कार्य तो शीघ्र हो जाना चाहिए। और भी बहुत दृष्टि कोण बतलाए थे जिन को देख कर नीचे से ऊपर तक हुए थे। श्रीपत भी अपने लेखों की तारीफ़ सुनकर मन ही मन में खुश थे। इन लेखों पर पुरस्कार भी मिला इस पुरस्कार को श्रीपत अपने जीवन में बड़ी भारी सफलता समझी। और भी उत्साह बढ़ा। उमंगें हिलोरें लेनी लगीं। और लेखन कार्य ज़ोरोंपर चलने लगा।

इधर श्रीपत साहित्य सेवी बन रहे थे उधर घर में खर्च के लिए गड़बड़ होरही थी। मां बाप भी हैरान थे कि इसे क्या शौक लग गया जो कि १५०) की नौकरी छोड़कर ५०) की नौकरी कर रहा है और घर में तंगी लारहा है। शोभाराम भी आकर कहा "श्रीपत तुम इतनी छोटी नौकरी क्यों एख़त्यार करली है ? आख़िर घर का खर्च तो चलना चाहिए। अब मां बाप कहां तक देंगे तुम जवान हो गए हो! मां बाप को उलटा खिलाना चाहिए" तो श्रीपत उत्तर दिया—

"भाइयो! बहुत से ऐसे युवक हैं जो पिता की जायदाद से या पिता की कमाई से पलते हैं उनमें से मुझे भी एक क्यों नहीं समझ लिया जाता।"

शोभा—श्रीपत यह उत्तर तुमको शोभा नहीं देता देखो मां बाप की आशाएं भी तो होती हैं।

श्रीपत—मैं भूखों मरूंगा और उनकी आशाओं को पूर्ण करूंगा यदि ऐसी परिस्थितियां आगईं, परन्तु सेठ साहब! घर में कई साल का खाना पड़ा हुआ है। इसके अलावा मैं ५०) मासिक तो लाता हूं। उसमें रु १) भी मालगुज़ारी के वास्ते भी नहीं लेता। मुझे और कोई व्यसन नहीं है।

शोभाराम के पीछे ही श्रीपत के पिता रामाचारी जी सुन रहे थे उनके मुंह से सहसा निकल पड़ा "बेटा इस महंगाई में रु ५०) से क्या होता है ?"

श्रीपत क्रोधित होकर बोला "पिताजी यदि आज्ञा हो, तो अलग निर्वाह करलूं। मैं तंगी से काम लूंगा परन्तु काम मेरे मनका करूंगा।

पिता—अच्छा अब तू क्या चाहता है ? मैं तो यह कह रहा था कि बड़ी नौकरी को छोड़ कर छोटी नौकरी क्यों करली ?

श्रीपत—पिताजी मैं ५०) लेकर २४ घंटे कामकरूंगा परन्तु १५०) लेकर २ घंटे भी कभी नहीं कर सकता कारण मेरी चाहकी वस्तु नहीं। मैं क़लम चलाने चलाने में बड़ा अन्तर समझता हूं। पिताजी! मुझे पैदा न हुआ समझकर रह जाइए। मैं बड़ा विवश हूँ। यह मेरा दुर्भाग्य या सौभाग्य जो कुछ भी समझते हैं। समझें

इस प्रकार जब पुत्र के वचन पिताने सुने तो मुंह पलटा लिया। शोभाराम और रामाचारी श्रीपत को आश्चर्य की दृष्टि से देखने लगे। कोई उत्तर न सूझा-पिताने कहा "पुत्र! तुम जो जी चाहे करो मैं अब कुछ नहीं कहूंगा।

श्रीपत—पिताजी आपको कहने का अधिकार है। मुझे दुख है कि मैं कमाने के लिए पैदा नहीं हुआ।

पुत्र को यह तर्क पूर्ण चेष्टा सुनकर पिता कुछ न कह सका। और घर जाकर बिस्तरे पर पड़ा पड़ा सोचने लगा।

४

नव विवाहिता युवती पति के इस आचरण से असंतुष्ट थी, कि वह भारी नौकरी छोड़कर हलकी नौकरी पकड़ ली है। युवती को १५०) के समय बहुत कुछ ख़र्च करने को पैसे मिलते वह रु ५०) मासिक का होने के बाद कुछ भी हाथ ख़र्च को नहीं मिलता था। पति को एक बार उलहना दिया कि "प्रत्येक व्यक्ति उन्नति करता है, परन्तु एक आप हैं जो जान बूझ कर कम वेतन पर काम कर रहे हैं ? क्या इसमें इज्जत बढ़ गई ?"

श्रीपत ने बड़े गम्भीर भावसे कहा—"देवी! मनुष्य की इज्जत किस से बढ़ती है।"

कमला—तनख़ा तलब से या गहरी आमदनी से।

और क्या ? यह तो साधी सीधी बातहै । मैं क्या बताऊं ?

श्रीपत [खूब गौर से देख कर] देवी खेद है कि तुमने मुझे नहीं समझा । मैं ने तो तुम्हारे पिता से साफ कह दिया था कि तुम्हारी लड़की भूकों मरेगी । मुझे मत बताव परन्तु खानदान के लोगों ने विवश कर दिया । अब तुम जी चाहे सो करो । यदि तुम सम्बन्ध विच्छेद भी करना चाहो तो मैं तैयार हूँ । पति के यह शब्द सुनकर पत्नि तिलमिला उठी और आगे कुछ न कहकर इतना कहा—"बस नाथ ऐसा मत कहो मैं अब से कुछ नहीं कहूँगी ।"

एक बार माताने भी नाराज़गी बताई परन्तु श्रीपत अनसुनी करदी । सब खानदान के लोगों ने पीछा पकड़ा कि चलो हम तुम्हें बड़ी नौकरी दिलवाते हैं, परन्तु श्रीपत किसी और काम पर ध्यान ही नहीं दिया ।

साहित्य का दीवाना साहित्य में ही दीवाना हो रहा था । आगे पीछे सोचने की आवश्यकता भी नहीं समझी । यों ही वर्षों तंगी चलो, परन्तु अपनी धारणा से तिल भर भी इधर उधर न होता ऐसा दृढ़ प्रतिज्ञ हो गया कि उसे कोई हिलाने वाला न रहा ।

इधर प्रेस का मालिक भी कई बार श्रीपत से कहा "कि अब पत्रिका बंद करना है ।"

श्रीपत ने पूछा क्यों ?

मुद्रक—क्या करें ग्राहकों के अभाव में इसे बंद करने का विचार है ।

श्रीपत ने कहा—आप अब तक क्या कर रहे थे मुझे कहते तो सैकड़ों स्थायी ग्राहक बना देता । फिर भी न घबराओ मैं प्रत्येक पढ़े लिखे के पास जाऊंगा और इसके ग्राहक बनाऊंगा । "यदि मैं ग्राहक वृद्धि न कर सका तो जीवन संग्राम में हथियार डाल लूंगा ।

श्रीपत का यह आश्वासन पाकर मुद्रक प्रसन्न हुआ और समय की प्रतिक्षा करने लगा । उत्साही युवक ने बड़ी तेजी से कार्य करना प्रारंभ किया ।

श्रीपत प्रण कर लिया कि रोजाना १-२ ग्राहक बनाए बिना रोटी न खायगा । वास्तव में उसने ऐसा ही किया । १ साल में मासिक पत्रिका चमक उठी । इसमें लेखों का चुनाव भी योग्यता पूर्वक होने लगा । उसमें कई स्तम्भ ऐसे रख दिए जिससे प्रत्येक व्यक्ति देखने को लालायित होता । समालोचना भी बड़ी गजब की होती थी । "रंगदार छीटे" तो ऐसा स्तंभ हो गया था कि उसे गंभीर से गंभीर आदमी भी पढ़ कर हंस देता । कतिपय मंडलियों को तो रंगदार छीटे बड़े अच्छे मालूम पड़ते । बाज २ बात तो ऐसी होती कि हंसते २ पेट में दर्द पड़ जाता । इधर बड़ी २ कंपनियों में जाकर विज्ञापन की भी कोशिश की गई । विज्ञापन भी खूब मिले, इस प्रकार पत्रिका घाटे के स्थान पर लाभ बताने लगी ।

पत्रिका का मान समस्त विद्वान् मंडलियों में होने लगा । बड़े से बड़ा लेखक इस पत्रिका में लेख देने को लालायित होने लगा । सरकार में एक साख बंध गई । कई बार इस के लेखों में सुधारात्मक भावनाएं पाई गई और अमल भी हुआ । सारांश इस पत्रिका वजन सरकार में भी दिन दिन बढ़ने लगा ।

पत्रिका में और २ खूबियां भी आगई थीं । एक निश्चित समयपर यानी प्रत्येक मास की प्रथम तारीख को पत्रिका ग्राहकों के हाथों में रहती । ग्राहक भी उस दिन की प्रतीक्षा करते । यदि कभी एक तारीख से दो तारीख होगई तो पचीसों पत्र आकर पड़ जाते । एक बार मशनरी बिगड़ने के कारण दूसरी को भी परचा न जा सका तो ग्राहकों के पत्रों का ढिगार लग गया । किसी ने कुछ शिकायत लिखी तो किसी ने कुछ लिख दिया ।

श्रीपत को पत्र निकालने का शौक था परन्तु साथ ही साथ छपाई की सफाई पर भी अधिक ध्यान देता । कभी कोई अशुद्धि न रहती । मशीन का प्रूफ देखकर अन्तिम स्टाफिक आर्डर स्वयं देता । अब तो इस पत्र की यह परिस्थिति होगई कि एक बार पढ़ने वाला व्यक्ति इसका स्थायी ग्राहक बन जाता । इस परिस्थिति को अवलंकन करके मुद्रक महाशय भी प्रसन्न रहने लगे पत्रोन्नति की चर्चा छिड़ने लगी । यानी इसे साप्ताहिक अथवा अर्ध साप्ताहिक बनाने का विचार उत्पन्न होने लगा । इसके लिए विविध योजनाएं बनाने लगे ।

(५)

श्रीपत आहिस्ता आहिस्ता एक उच्चश्रेणी का पत्रकार बन गया। पत्र को मासिक से पाक्षिक और पाक्षिक से साप्ताहिक कर दिया और अब तो दैनिक निकालने के लिए सोचा जा रहा है। कई संस्थाओं से सहायता मिलने के आश्वासन मिल गए हैं।

श्रीपत अपने पत्र को एक ऐसे कार्य के लिए लगादेना चाहता है, जिसे हम बुनियादि कार्य कह सकते हैं। मित्रों ने बहुत सारे विषय बतलाएं, किसी ने कहा केवल शिक्षा पर जोर दिया जाय तो किसी ने कहा सबसे बढ़कर रचनात्मक कार्यों का कार्य देशके लिए बड़ा लाभप्रद है। एक मित्र ने राय दी कि प्रौढ शिक्षा पर अधिक जोर दिया जाय। तीसरे ने कहा—स्त्री शिक्षा का कार्य भी कम नहीं है। उनका समय जो खाने पकाने के बाद मुफ्त में बर बर होता है उसे बचाने का प्रयत्न किया जाय, परन्तु श्रीपत को यह आन्दोलन पसन्द है और उन के लिए प्रयत्न भी किए और कई लेख तथा पुस्तकें लिखीं, परन्तु इस के दमाग़ में एक अलग ही योजना जम गई। वह यह कि बालकों की उन्नति। बालकों की शिक्षा पद्धति में सुधार ? बालकों में पढ़ने पढ़ाने की अभिरुचि उत्पन्न करके उन को बौद्धिक वृद्धि उत्पन्न की जाय। और उन में राष्ट्रीय विचार कूट २ कर भरे जांय. जिससे रचनात्मक कार्य के लिए एक अच्छी सेना तैयार हो सके।

जब श्रीपत का दैनिक अखबार निकला तो पहला लेख बालकोपयोगी योजना शीर्षक लेख लिखा गया। उसमें कई प्रकार से समझाया गया था कि हम बालोन्नति किस २ प्रकार कर सकते हैं। श्रीपत पत्रकार बनते बनते व्याख्याता भी बन गया। सब विषयों पर व्याख्यान कर सकता है। परन्तु अधिक समय बालकों की बातों पर ही देता। एक बार बालकों की टोली में चले गए तो बालकोंने इनकी खिल्ली उड़ाई सोचा कि लड़के तो मुझे बनारहे हैं। वहां से चले गये और एक पुस्तक विक्रेता के पास जाकर २५-३० अच्छी २ मजेदार चित्ताकर्षित पुस्तकें खरीदी और बालकों में गए। फिर बालक बानर एक समाना वाली बात हुई। श्रीपति ने कहा देखो हम तुम्हारे वास्ते अच्छे २ खिलोने लाए हैं परन्तु शान्ति से काम लें तो [पुस्तकें बताकर] तुम्हें देखने को देसकता हूं।

सब बालकों ने कहा बहुत ठीक बहुत ठीक। २५-३० पुस्तकें थीं २५-३० बालकों को पढ़ने के लिए दी गईं। बालक सब खेलों को छोड़ कर इन पुस्तकों को आश्चर्य के साथ देखने लगे तथा पढ़ने लगे। कई बालक श्रीपत को गौर से देखने लगे उनमें से एक १० वर्षीय बालक पूछा "आप कौन हैं ? क्या आप मास्टर हैं ?"

श्रीपत ने उत्तर दिया हां मैं मास्टर हूं।

बालक !—क्या यह पुस्तकें हमको देकर चले जाएंगे।

श्रीपत—जाओ अपने माता पिता से पैसे लाकर दे दो पुस्तकें यहीं छोड़ दूंगा।

बालक गए अपने माता पिता के पास गए और पुस्तकें खरीद ने को पैसे मांगे किसी को पैसे मिले किसी को नहीं। इतने में एक बालक का पिता आकर श्रीपत को पूछा—आपका निवास स्थान कहां है। श्रीपत ने उत्तर दिया मैं ५-६ मिल पर नगर के उत्तरी भाग में रहता हूं परन्तु एक बात आप लोगों से कहने आया हूं ! कि इस ग्राम में एक बालवाचनालय खोल दें जिसका प्रबन्ध आप गांव के ४ आदमी करें। पुस्तकों का रजिस्टर रख कर उसे सुरक्षित रक्खी जांय और जो बालक जिस पुस्तक को चाहे पढ़ने दें। पढ़ने के बाद वापिस जमा कर दी जांय। गांव के महानुभाव राजी हो गए और पैसे देकर तमाम पुस्तके ले लीं। इसका उद्घाटन समारोह भी हुआ। पुस्तकें रखने की व्यवस्था कर दी तथा जुरूरी १-२ रजिस्टर बना दिए। जिसमें वे पुस्तकों का आय व्यय लिखा करें।

६

श्रीपत को बालवाचनालय का बड़ा चसका लग गया। जहां जाता यही चर्चा प्रारंभ करता। इसकी उपयोगता पर घण्टो व्याख्यान देता और महीने में ५-७ बालवाचनालय किसी न किसी तरह स्थापित करवा देता।

अब श्रीपत वह श्रीपत न रहा। अब वह एक दैनिक पत्र का संपादक है। दैनिक पत्र की शक्ति इसके हाथ में थी। वह सदैव बालोपयोगी चर्चाओं को अधिक महत्व

देता। दृढ़ विश्वास था कि बालकों को बनाना सभ्यता की जड़ को मजबूत बनाना है। एक जबरदस्त पाया बांधना है। बालको में जितने राष्ट्र भाव अधिक भरे होंगे लड़का उतना ही देश भक्त व देश सेवक बन सकता है। माता पिता का नाम उजागर कर सकता है। ऐसे सुसंस्कृत लड़के जो भी काम करेंगे अच्छा करेंगे।

श्रीपत बालकों के लिए प्रतियोगता—योजनाएं भी बनाई। उनकी परीक्षाएं निश्चित कीं। पुरस्कार चलाए और विजयता बालकों के चित्र छापे। सारांश अधिकांश समय बालोन्नति के लिए दिया। दैनिक पत्र को भी अच्छी तरह चलाने का भार भी संभाला। इस प्रकार श्रीपत बड़ा ख्याति प्राप्त व्यक्ति हो गया। श्रीपत चलता फिरता लेखक था। जिस समय कलम उठाई तो पृष्ठों के पृष्ठ रंग दिए। जैसे सरस्वती उसके क़लम से उतर रही हो। जिस विषय पर लेख लिखा जाता उसकी प्रति क्रिया सरकार तथा जनता में होती। बालोन्नति आन्दोलन ने तो श्रीपत को सर्व प्रिय कर दिया। अब जिले भर में ८००-९०० बालवाचनालय स्थापित हो गए। जिस कस्बे में स्कूल है वहां साथ ही जनता की ओर से बालवाचनालय खुल गया और उसमें १०० से ५०० तक पुस्तकें फौरन आजाती और उसके पैसे गांव वालो से वसूल कर लिए जाते। वाचनाल के नाम बाल मंदिर बालवाचनालय, किशोर केंद्र किशोरपुस्तकालय वाचनालय आदि नाम रखे जाते। साथ ही रूल की [नियम] एक कापी स्वीकृत कर ली जाती। इस प्रकार स्थान २ पर बालोपयोगी कार्य चलने लगा।

दैनिक अखबार निकल कर जब सर्व प्रिय होने लगा तो इसके ग्राहको की संख्या आपोआप बढ़ने लगी। इसमें सरकार के तथा और प्रसिद्ध फर्मों के विज्ञापन भी आते। इस प्रकार मुद्रक को भी लाभ होने लगा। मुद्रक प्रसन्न होकर तनखा बढ़ा दी और लाभांश भी देने लगा।

यह सब कार्य कुछलता माता पिता तथा सारे खानदान को मालूम होने पर उनकी खुशी का पारावार न रहा। तथा १५०) मासिक की नौकरी छोड़ कर रु. ५०) मासिक पर रहने का रहस्य सब को मालूम होगया।

अब उसे निकट ४००) ५००) मासिक पड़ जाता है और हाथ में एक बड़ी भारी दैनिक पत्र की सत्ता भी है। बडे २ नेता और बड़े २ सरकारी पदाधिकारी इशारे पर चलते हैं।

बाल आन्दोलन का सुपरिणाम निकला। अब तो सरकारी तौर पर भी यह कार्य होने लगा। राज्य के सब जिलों में बालवाचनालय स्थापित होने लगे। बालकों की खेल कूद की शक्ति अध्यायन पठण में लगने लगी। इसकी सफलता को देख कर सरकार ने प्रौढ़ शिक्षा तथा स्त्री शिक्षा के लिए भी इसी प्रकार के प्रबन्ध करने लगी। कुछ ही वर्षों में परिणाम यह हुआ कि ग्रामों में भी बेलिखा पढ़ा व्यक्ति नजर न आने लगे। सरकार की अनिवार्य शिक्षा का मतलब हल होगया। इस प्रकार श्रीपत की शिक्षा यजोना सफल रही।

——

पांच भाषाएं एक साथ सीखिए

हिन्दी

३० वर्ष पूर्व हिन्दुस्तान में भ्रमण करना धनवानों के लिए ही सम्भव था; क्यो कि प्रवास बहुत महंगा था। यातायात के साधन भी बहुत सुस्त थे! परन्तु आज कल हिन्दुस्तान में भ्रमण करना सस्ता हो गया है। अन्य देशों में हिन्दुस्तान की अपेक्षा प्रवास करना खर्चीला है। यहां भारतीय रेल्वे सहुलतें पैदा करती हैं। विदेशी प्रवासियों के लिए हिदुस्तान में आने के कई मार्ग हैं। पश्चिम से आनेवाले अधिकांश प्रवासियों के लिए बम्बई ही प्रवेशद्वार है। इसी लिए इसे भारत का प्रवेशद्वार कहते हैं।

मराठी

३० वर्षां पूर्वी हिन्दुस्थानांत प्रवास करणे श्रीमंतांनाच शक्य होतें. कारण प्रवास फार महाग होतें. दळणवळणाचें साधन देखील फार सुस्त होतें. पण सध्यां हिन्दुस्थानांत प्रवास करणे सरल आणि स्वस्त झाले आहे. इतर देशांत हिन्दुस्थानांपेक्षां प्रवास फार महाग आहे. येथे रेल्वेगाड्यांनी सोय झाली आहे. इतर देशांतील प्रवास्यां साठी हिन्दुस्थानांत येण्यांस पुष्कळ से मार्ग आहेत. पाश्चिमात्य प्रवासी बहुत करून मुम्बई हून येतात. म्हणून मुंबईला हिन्दुस्थानांचें प्रवेश द्वार म्हणतात.

तेलुगु

३० येंडु पूर्वमु भारतदेशमन्दु अक्कडिक्कड पोई वच्चेटन्दुकु केवल श्रीमन्तुलकु मागमें अनुकूलभुगा उण्डेनु. आइते इप्पुडु अतिसुलभमुगा अइनदी. इतर देशमन्दु तिरूगाडुटमुकै खर्चु येक्कुवुगा वच्चुनु. इक्कड भारत रेल्वे वांडलु चाला अनुकूलमु चेशियुन्नारू. इतर देशस्थुलु इक्कड रावटमुकै अनेक मार्गालु उण्डिनवी. चाला यात्रीकलू पश्चिम दिवकुंनुंचि बम्बई मार्गमुगा वागलरू. अन्दुके इदि भारत योका प्रवेश द्वारमेंदरू.

कन्नड़

३० वर्षगळ मुंचे हिन्दुस्थानदल्लि तिरूगाडलू केवल श्रीमन्तरिगे मात्र अनुकूल वित्त. होगि बरुव साधनगळू कडिमे इद्दउ. आदरे ईग हिन्दुस्थानदल्लि अड्डाडलु अति सुलभ वागिदे. इतर देशदल्लि तिरूगाडलू हिन्दुस्थान किंतलू खर्चु हेच्चु बरुवदु. इल्ली भारतीय रेल्वेयु अनुकूल सिद्ध पडिसुत्तिदे. विदेशियरं हिन्दुस्थानक्के बरलु अनेक मार्गगळिवे. पश्चिम दिंद बरुव विशेष प्रवाशिकरिगे मुम्बइये मुख्य द्वारवागिदे. अदक्कागिये इदक्के हिन्दुस्थानद प्रवेशद्वार वेन्नुवरु.

अंग्रेजी

Thirty years ago, a tour in India was possible only to the wealthy. Because the cost of the journey was very high. The methods of transportation also were very slow. But now a days travel in India is easy and inexpensive. In other countries travel is expensive than India. Here the Indian Railways provide facilities. The travellers to India have thr choice of many ports by which they may enter. To the majority from the west Bombay is the gateway. So Bombay is known as the gateway of India.

उर्दू

۳۰ سال پہلے ہندوستان میں سفر کرنا دولت مندوں کے لئے ہی ممکن تھا
کیونکہ سفر بہت مہنگا تھا حمل و نقل کے ذرائع بھی بہت سست تھے - لیکن آج کل
ہندوستان میں سفر کرنا بہت سستا اور سہولت بخش ہو گیا ہے دیگر ممالک میں
سفر کرنا ہندوستان کے مقابلہ میں زیادہ مہنگا ہے - یہاں ہندوستانی ریلیں
سہولت بہم پہنچاتی ہیں - ہندوستان میں آنے والے سفیروں کے لئے کئی
سمندری راستے ہیں - مغرب سے آنے والی اکثریت کیلئے بمبئی ہی خاص
راستہ ہے - اسی لئے بمبئی کو ہندوستان کا گیٹ وے کہتے ہیں -

तारीखवार
मई मास
के
समाचार

विश्व

ता. १. सोवियत रूस के प्रधान मंत्री श्री निकोलाई ने मई दिवस पर रूस द्वारा सशस्त्र सैन्य-शक्ति सुदृढ़ बनाने का संकल्प किया।

ता. २. कम्युनिस्टों ने आज वापसी के अनिच्छुक युद्धबन्दियों के संरक्षण के लिए भारत, पाकिस्तान, बर्मा तथा हिन्देशिया को तटस्थ देश स्वीकार करने की घोषणा की।

ता. ३. ट्यूनिस के बे ने शांति के लिए जनता से तथा आतंकवादी उत्पातों के लिए जिम्मेदार व्यक्तियों की सार्वजनिक रूप से निन्दा करने से अस्वीकार कर दिया है।

ता. ४. कराची के चलचित्र प्रदर्शकों की संस्थाने सिनेमा घर १५ मई से बन्द रखने की घोषणा की।

ता. ५. मित्र राष्ट्रों द्वारा साम्यवादी कोरियासे युद्धवन्दियों को नहीं हटाया जाय का प्रस्ताव अस्वीकृत।

ता. ६. स्वेज नहर के भविष्य प्रश्न पर मिस्र और ब्रिटेन में चलरही समझौता वार्ता संकट पूर्ण स्थिति में।

ता. ७. समझौता वार्ता का महत्वपूर्ण सन्देश सीलोन कांग्रेस द्वारा भारत सरकार को रवाना।

ता. ८. कोरियाई संधि के लिए नये कम्युनिस्ट प्रस्तावों से कओ प्रश्न उपस्थित।

भारत

ता. १ हैदराबाद पुलिस ने कल रात निजाम के सर्फेखास के ५०० कर्मचारियों के एक जुलूस को तितर बित्तर करने बेत प्रहार किया।

ता. २ पूना में अखिल भारतीय महिला परिषद की रजत जयंती शुरू.

ता. ३ हुगली के निकट भयंकर विमान दुर्घटना। ३६ आदमियों का स्वर्गवास।

ता. ४ गत एक वर्ष में उत्तर प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में १३०० नये स्कूल खोले गये।

ता. ५ उत्तर प्रदेश की राज्य सरकार ने हिन्दी की नई पुस्तकों पर पुरस्कार देने की घोषणा की।

ता. ६ उत्तर प्रदेश में भूमि की चक बन्दी प्रारंभ।

ता. ७ नेहरूजी द्वारा शारीरिक श्रम की प्रतिष्ठा बढाने पर जोर।

ता. ८ न्याय मूर्ति श्री मिश्र का वेल्लारी में जांच कार्य समाप्त।

ता. ९ पालम हवाई अड्डे पर हुई दुर्घटना की जांच के लिए सरकारी समिति नियुक्त।

ता. १० हैदराबाद के अकाल पीडित क्षेत्रों की मदद के लिए १३ लाख की सरकारी सहायता स्वीकार।

ता. ११ दिल्ली में मौसम खराब होने के कारण हवाई यातायात बन्द।

घर

ता. १ मई दिवस पर श्री वी. एस. महादेव सिंह द्वारा मजदूरों पर लाठी चार्ज की निन्दा।

ता. २ औरंगाबाद के एक गांव शामवाड़ी में आग के कारण १८ व्यक्ति जल मरे।

ता ३ अखिल हैदराबाद शांति सम्मेलन जून के द्वितीय सप्ताह में होगा।

ता. ४ चार सौ मजदूरों द्वारा रेल्वे में टेकेदारी के अन्त की मांग।

ता. ५ भूत पूर्व मंत्री श्री राजू द्वारा लाठी चार्ज रोकने की मांग।

ता. ६ कामारेड्डी के व्यापारियों ने पुलिस अधिकारियों के विरुद्ध हड़ताल की।

ता. ७ सर्फेखास सत्यग्राह आन्दोलन मुख्य मंत्री के आश्वासन द्वारा स्थगित।

ता. ९ हेदराबाद विधान सभा के विरोधी-दलके नेता श्री वी. डी. देशपांडे ने कहा कि हैदराबाद पर आन्ध्रों का अधिकार है।

ता. १० श्री जयप्रकाशनारायण हदराबाद प्रांत में भूदान यज्ञ में सफल। प्रथम दो दिन में ५७० एकड़ भूमि और क़रीब तीन हज़ार रुपये प्राप्त।

ता. ११ कल यहाँ पर परिगणित जाति की सभा में एक प्रस्ताव पास किया गया कि संविधान में दी गई

ता. ९. अमरीकी व्यापारियों ने मांग की कि यूरोप के कुछ देशों का अमरीकी आर्थिक मदद बन्द करें।

ता. १०. नैरोबी के आतंकवादियों का किकूयू सरदार के पडाव पर हमला। फलस्वरूप ५ मरे और ९ घायल।

ता. ११. ब्रिटेन के प्रधान मंत्री द्वारा प्रमुख शक्तियों को उच्च स्तरीय सम्मेलन तुरन्त करने का सुझाव।

-- ब्रिटेन द्वारा मिश्र को चेतावनी दी गयी कि अगर वह स्वेज क्षेत्र में आक्रमण किया तो अंग्रेजी सेना लड़ेगी।

ता. १२. मिश्र के प्रधान मंत्री ज. नजीब ने चर्चिल के भाषण की कटु आलोचना करते हुए कहा कि मिश्र की भूमि पर अंग्रेजी सेना आक्रमण की सूचक है।

ता. १३. पाकिस्तान के गवर्नर जनरल ने कहा कि भारत और पाक गंभीरता पूर्वक विचार करें और अपने हृदय को टटोलें।

ता. १५. भारत–पाकिस्तान प्रधान मंत्रि-सम्मेलन के कार्यक्रम पर सहमति।

ता. १६. कोरिया में सम्मानपूर्ण समझौते की प्रत्येक संभावना खोजी जायगी।

ता. १७. अर्जेन्टाइना के राष्ट्रपति व मन्त्रिमण्डल को मार डालने का षड्यंत्र। योजना पुलिस के कारण विफल।

ता. १८. ब्रिटेन के अनेक रविवारी पत्रों द्वारा अमरीकी वार्ताकारों की कड़ी आलोचना।

आंग्ल-मिश्र समझौता सन्नि कट

ता. १२ भारत-पाक अफसरों की वार्ता जारी।

ता. १३ लोकसभा में सम्पदा शुल्क विधेयक पर चर्चा।

ता. १५ दिल्ली विश्व विद्यालय के फ्री-मेडिकल परीक्षा का परिणाम प्रकाशित।

ता. १६ कल लोक सभा का बजट अधिवेशन समाप्त।

ता १७ रेल्वे शताब्दी प्रदर्शनी समाप्त।

ता. १८ डा. राधाकृष्ण का अमरीका की यात्रा के लिए प्रस्थान।

ता. १९ बैंक मालिकों को शास्त्रीय फैसला स्वीकार।

ता. २० उत्तरी आसाम के हजारों वर्ग मील क्षेत्र में बाढ़।

ता. २१ भारत सराकार द्वारा बेल्लारी को मैसूर राज्य में मिलाने को श्री मिश्र की सिफारिश स्वीकृत।

ता. २२ दिल्ली के समीप हुई डाकोटा विमान दुर्घटना की जांच शुरू।

ता. २३ भारत के व्यापार मंत्री कृष्णमाचारी ने सलहकार परिषद में बताया की भारत के निर्माण में डेढ अरब रुपये की कमी हुई।

ता. २४ कांग्रेस के महामंत्री श्री. श्रीमन्नारायण जी अग्रवाल ने कहा कि कांग्रेस का चन्दा चार आना की जगह आठ आना कर दिया जायगा।

ता. २६ आचार्य विनोब भावे अस्वस्थ। पैदल यात्रा स्थगित।

ता. २७ धूप चूल्हे का बडे पैमाने पर बनाया जाना शुरू।

ता. २८ रानी एलिजाबेथ के राज्याभिषेक और राष्ट्रमंडलीय प्रधान

सुविधाएं परिगणित जाति को प्रदान की जायें।

ता. १२ परभणी जिले के कनादी गाँव में सशस्त्र डाकुओं का डाका। छः हज़ार का माल लेकर फ़रार।

ता. १३ समाजवादीनेता श्री गोविन्दसिंह तथा मनजीत सिंह गिरफ्तार।

श्री जयप्रकाश नारायण को चार दिन के भीतर १५० एकड़ भूमि भूदान यज्ञ में प्राप्त।

ता. १४ राज्य का भाषावार विभाजन पर प्रदेश कांग्रेस समिति पर विचार।

ता. १५ गुलबर्गा के प्रोवेशनरी तहसीलदार को दिया गया मुल्की सदाख़त नामा रद्द।

ता. १६ राज्य भर में १७०० स्कूल खोले जाएंगे इसके लिए केंद्र से बीस लाख की सहायता।

ता. १७ निज़ाम को सरकार द्वारा मुफ़्त अफ़्यून सप्लाय करने का दायित्व है।

ता. १७ बाँध कार्य के लिए राज्य सरकार द्वारा ८७ लाख की मांग।

ता. १९ सिकन्दराबाद की नगर पालिका ने निर्णय किया कि हैदराबाद को आन्ध्र की राजधानी बनाई जाय।

सरकारी स्कूलों में शुल्क वृद्धि।

ता. २० कृषि मंत्री डा. देशमुख ने बताया कि हैदराबाद सरकार की आर्थिक सहायता संबन्धी मांग पर केंद्र सरकार विचार कर रही है।

ता. २१ ज्ञात हुआ है कि आन्ध्र राज्य के निर्माण के पश्चात् चितूर व नेल्लोर हैदराबाद के अन्तर्गत कर दिया जायगा।

ता. १९. नाइजेरिया के उपद्रवों में ५२ मरे और २०० से अधिक घायल।

ता. २०. स्वेज नहर क्षेत्र के प्रश्न पर आंग्ल-मिश्री वार्ता स्थगित।

ता. २१. बरमूडा में अमरीकी ब्रिटेन व फ्रान्स का उच्च स्तरीय सम्मेलन।

ता. २२. दक्षिण अफ्रीका के अश्वेत नेताओं की अपील अस्वीकृत।

ता. २३. प्रारंभिक नेहरू-मुहम्मद अली वार्ता आगामी मास लन्दन में।

ता. २५ अमरीका पाकिस्तान को दस लाख टन गेहूं देने को तैयार।

... राज्याभिषेक में भाग लेने के लिए नेहरूजी का लंदन के लिए प्रस्थान।

ता. ३० ब्रिटिश अभियान, जो माउन्ट एवरेस्ट पर चढ़ाई का प्रयत्न कर रहा था, असफल।

ता. २६ भारत पाकिस्तान वार्ता के लिए संचालन समिति की नियुक्ति।

ता. २७ रूस द्वारा चार अमरीकी गुप्तचरों को फांसी।

ता. २८ लन्दन में भारतीय दस्तकारी तथा उद्योग प्रदर्शनी का उद्घाटन।

ता. ३० चिक्कड पल्ली बालाजी मन्दिर में कल्याणोत्सव हुआ।

ता. २२ सिकन्दाराबाद हीरालाल कम्पौंड में आज मध्यान्ह ज़बरदस्त आग फल स्वरूप १५ हज़ार की हानि।

ता. २३ पुलिस इन्स्पेक्टर जनरल श्री मोनप्पा आन्ध्र राज्य के प्रथम इन्स्पेक्टर नियुक्त किए जायेंगे।

ता. २५ खम्मम में १३२ मकानों को आग लगने के फलस्वरूप २९ हजार की हानि।

ता. २६ खाद्यमन्त्री श्री चन्नारेड्डी का विदेश यात्रा के लिए प्रयाण।

ता. २७ हैदराबाद कामगार संघ का पंजीयन किया गया।

ता. २८ ताजग्लास वर्क्स के मजदूरों ने कारखाना खोलने की मांग की।

मुद्रक व प्रकाशक :—
बालकृष्ण लाहोटी 'कृष्ण'
मैनेजर डायरेक्टर, दी मारवाड़ी प्रेस लि.
अफजलगंज, हैदराबाद [दक्षिण]

दी मारवाडी प्रेस लि. द्वारा दूसरी बार बडी सजधज कर प्रकाशित हो रही है।

है
द
रा
बा
द

हैदराबाद सम्बन्धी

सम्पूर्ण ज्ञातव्य

प्रसिद्ध साहित्यिक, एडव्होकेटस्
तथा
डाक्टरर्स का संक्षिप्त परिचय

हैदराबाद हिन्दी डायरेक्टरी

डा
य
रे
क्ट
री

राज्य विधान सभा
तथा
हैदराबाद राज्य से निर्वाचित सदस्यों का परिचय

कौन क्या है ?
स्तम्भान्तर्गत जीवनियां
प्रकाशित होंगी।

व्यापारियों के लिए व्यापार की उन्नति करने का शुभावसर।

विज्ञापन आदि विस्तृत जानकारी के लिए लिखिए या कार्यालय में आकर मिलिए।

दी मारवाडी प्रेस लि.

२७०, अफजलगंज, हैदराबाद द०

DAKSHIN BHARATI'S Regd. No. H. 428

दक्षिण भारती

भगवान श्रीकृष्ण

परित्राणाय साधूनाम् विनाशाय च दुष्कृताम्
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ।

सितम्बर १९५३

"निद्रा और आलस्य आदि की बहुलता से अन्तःकरण और इद्रियों में चेतनशक्ति का लय होना मोह है और अन्तः करण और इन्द्रियों में आलस्यका अभाव होकर जो एक प्रकार की चेतनता होती है, उसका नाम प्रकाश है।"

भगवान श्रीकृष्ण-

हैदराबाद सरकार द्वारा स्कूलों, कालिजों तथा वाचनालयों के लिए स्वीकृत

दक्षिण भारती

सचित्र हिन्दी मासिक पत्रिका

जुलाई–अगस्त १९५३ } ८६, अफ़ज़लगंज, हैदराबाद { वार्षिक ६) एक का ॥) -भारती

विषय सूची

कविताएं—

आवश्यक सूचना

जुलाई और अगस्त मास की "दक्षिण भारती" का परिशिष्टांक इस लिए निकाला गया था कि "हैदराबाद हिन्दी डायरेक्टरी" पूर्व सूचनानुसार ता. १५-८-५३ को प्रकाशित न हुई कारण मजदूर आन्दोलन से डायरेक्टरी में मैटर सप्लाई नहीं कर सके जिसका हमको खेद है, हालांकि बारह आने डायरेक्टरी छप चुकी थी।

हम पाठकों से क्षमा चाहते हुए सितम्बर का अंक आप के कर कमलों में देते हुए भविष्य में 'दक्षिण भारती' समय पर दे सकने का प्रयत्न करेंगे। हम आशा करते हैं कि हिन्दी प्रेमी सज्जन ग्राहक बनकर दूसरे को भी ग्राहक बनाएंगे। जो सज्जन ४ ग्राहक बना देंगे उन्हें 'दक्षिण भारती' सालभर मुफ्त भेजी जायगी।

विज्ञापनदाताओं से प्रार्थना है कि इस में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं।

संचालक
'दक्षिण भारती'

वर्ष ३] हैदराबाद, सितम्बर १९५३ [अंक ८

सम्पादकीय

पंचवर्षीय योजना के दो वर्ष

स्वतंत्र होते ही देशने प्रगति पथपर अग्रसर होने की सोची और योजनाबद्ध कार्य आरंभ किया यह हर्ष की बात है। संविधान बनते ही आम चुनाव हुए। संविधान के अनुसार ही मंत्रि मण्डल बना। इस बीच २८ मार्च १९५० को देश के उन्नतिकी रूपरेखा पंचवर्षीय योजना के रूप में बनाने के लिए प्रधान मंत्री श्री नेहरू की अध्यक्षता में समिति का निर्माण हुआ। इस समिति ने ९ जुलाई १९५१ को अपनी योजना प्रकाशित की। देशने इस योजना को स्वीकृत किया और स्वीकृति के साथ ही इस पर अमल शुरू हुआ। इसे आज पूरे दो वर्ष हो गये हैं। अब हमें देखना यही है कि इन बीते दो वर्षों में इस योजना को हम कहां तक सफल बना सके हैं और अभी सम्पूर्ण योजना को पूरा करने में कितना काम बाकी है।

योजना का लक्ष भारत के करोड़ो जनों के खाने पीने, पहनने, ओढने तथा रहने सहने के स्तर को ऊंचा करने का है। इसके लिए योजना में कुल १७९२ करोड़ की धन राशि खर्च करने का अनुमान लगाया है। इसमें से १४९३ करोड़ योजना के प्रथम भाग पर खर्च होगा और शेष दूसरे भाग पर। प्रथम भाग से सामाजिक स्थिति का सुधार होगा और दूसरे भाग से औद्योगिक प्रगति की जायगी। अतः पहले पहल प्रथम भाग का कार्य आरंभ हुआ है। इसे भी अब दो वर्ष हो गये हैं। इस अवधि में ५८५ करोड़ खर्च हुए और निश्चित कार्य का करीब ३० % भाग भी पूरा हुआ। इस ३० % में देशके वे बडे बड़े बांध तथा कारखाने भी हैं जिनसे अब आंशिक सिंचाई का और प्रारंभिक उत्पादन का कार्य आरंभ हो चुका है।

इन दो वर्षों में केन्द्रीय सरकारने राज्यों की सरकारों को ७१.७ करोड़ रुपये की सहायता दी। इस सहायता से अधिक अन्न उपजाओ आंदोलन को बल मिला और ८.८ लाख टन अनाज की अतिरिक्त उपज हुई। सिंचाई योजनाओं की पूर्ति से १४.२ लाख एकड़ भूमि की सिंचाई की गई। इससे २.७ लाख टन अधिक

अन्न पैदा हुआ। केन्द्रीय ट्रैक्टर संघ द्वारा ४.१४ लाख एकड़ भूमि का सुधार, बनावटी खाद का बड़ी मात्रा में उत्पादन और वितरण, खेतों की चकबन्दी आदि कार्य भी इस दिशा में पूरे हुए जो पंचवर्षीय योजना की अबतक की सफलता के द्योतक हैं।

दो वर्षों में २,३९,००० किलोवाट बिजली पैदा करने का अनुमान लगाया गया था परन्तु इसकी जगह ३,१५,००० किलोवाट बिजली पैदा की गई। सामाजिक सेवा के संबन्ध में स्वास्थ्य, शिक्षा, पिछड़े वर्गों की उन्नति, मजदूरों की सुविधा, मकानों का निर्माण तथा विस्थापितों को बसाने आदि के कार्य हुए हैं। राज्य सरकारों ने भूमि सुधार करने के लिए कानून बनाकर जमींदारी या पट्टेदारी को समाप्त करने का कार्य किया है और साथ ही कृषकों के अधिकार बढ़ा दिये हैं।

१९५१ के आरम्भ में जिन कई कारखानों का निर्माण हो रहा था उसमें अब उत्पादन शुरू हो गया है। सीमेंट, रासायनिक पदार्थ तथा खाद, सूती माल, इंजिन, साइकलें, टेलिफोन, इन्स्ट्रूमेंट आदि बनाने वाले कारखानों का उत्पादन बढ़ा है। इस दिशा में कई नये कारखाने भी खुले हैं। घरेलू उद्योग धंधों को भी बढ़ावा दिया गया है।

विदेशी व्यापार की प्रगति, मुद्रा बाहुल्य पर नियंत्रण आदि से भी देश को अपनी स्थिति को सुधारने का मौका मिला है। सैनिक संगठन बढ़ाया गया है और कई बड़े बड़े उद्योगों का राष्ट्रीयकरण किया गया है। इन सारी बातों से इन दो वर्षों में पंचवर्षीय योजना में कितनी सफलता प्राप्त हुई तथा देश की आर्थिक नींव को मजबूत बनाने में हम कहांतक सफल हो सके हैं यह स्पष्ट होता है।

परन्तु इतना सब होते हुए भी देश में जो महंगाई है उसमें कमी नहीं हुई। बेकारी की समस्या उग्ररूप धारण किये जा रही है। लोगों का जीवन पहले की अपेक्षा और महंगा होता जा रहा है। इसे रोकने के प्रयत्न असफल-से रहे हैं। इसका कारण अधिकारियों तथा कुछ स्वार्थी लोगों के स्वार्थ के सिवा और क्या हो सकता है? यदि ये लोग देश की भलाई के लिए अपने स्वार्थ को छोड़कर प्रामाणिकता से कार्य में जुट जाएं तो निसंदेह पंचवर्षीय योजना सफल हो सकती है। इस तरह की योजनाओं की सफलता का रहस्य जनता और सरकार के पारस्परिक सहयोग और प्रामाणिक रीति से काम करने में निहित है यह रूस की तीनों पंचवर्षीय योजनाओं ने सिद्ध कर दिया है।

स्व. श्री सुरवरम प्रताप रेड्डी जी

५७ वर्ष की अल्पायु में श्री सुरवरम् प्रतापरेड्डीजी का स्वर्गवास हैदराबाद की जनता के लिए दुःख की बात है। आपके उठजाने से न केवल विधान सभा की एक महत्वपूर्ण जगह खाली हुई है बल्कि हैदराबाद की कई शैक्षणिक व सामाजिक संस्थाएं ऐसी हैं जिनका आधार इन्हीं पर था वे भी शिथिल बन गई हैं। आप के चले जाने से तेलुगु साहित्य की भी बहुत बड़ी क्षति हुई है। आपने अब तक करीब दो दर्जन उत्कृष्ट पुस्तकें तेलुगु साहित्य को दी हैं और समाचार पत्र के सम्पादक के नाते जो वे लिखते रहे वह तो अलग है ही। मातृभाषा तेलुगु के साथ-साथ आपने राष्ट्रभाषा की भी सेवा की है। हैदराबाद में हिन्दी का प्रचार व प्रसार करने में आपने बहुत बड़ा योग दिया है। इन सब के सिवा उन्होंने जो महत्वपूर्ण सामाजिक कार्य किये हैं उन्हें हैदराबाद की जनता भूल नहीं सकती। जहां जनता की भलाई का प्रश्न उपस्थित हो जाता और सच्चाई की बात सामने आती उसके लिए वे चाहे जो करने के लिए तैयार हो जाते। ऐसे साहसी और उत्साही व्यक्ति का बिछड़ना शोक की ही बात है।

क्रांति का जूझार

[yau]वन-उदधि-तूफान में,
[vi]प्लव हृदय के आन में,
[ga]र्म खूनों की है धारा क्रान्ति का जूझार है।
[tū]फ़ान उड़ता शान में,
[vi]प्लव लड़ता आन में,
[ta]लवार की टंकार में विप्लव हृदय झंकार है ॥
[ā]ँधियां उठती प्रबल हैं घोर, निशि के द्वार पर,
[ha]लचली मचाता है विप्लव का प्रबल फुफकार पर;
[kr]ांतिओं की गोलियों का असर क्या हुंकार पर?
[ka]पुरुषता क्यों यहां से लेखनी फुंकार पर?
[phū]ंक दे तुम लेखनी तुझको हमारा प्यार है।
[ga]र्म खूनों की है धारा क्रान्ति का जूझार है ॥
[a]ज्ञान पारावत गगन में विचरते हैं आज रे!
[ma]द घटते दीप के जलते भूपति के ताज रे!
[sa]थियों के धूल कण में क्रांति का ही नाज रे!
[jha]ंकार कर दे गगन-भेदी पस्त क्यों आवाज रे?
[mau]त से लडले, कदम, तब, समर से उस पार है।
[ga]र्म खूनों की है धारा क्रांति का जूझार है ॥
[pyā]स है जगती अगर तो खून का ही पान कर,
[kṣu]धा की तृप्ति स्व-तन के मांस से ही म्लान कर।
[de]श का है शर्म तो अपने हृदय में आन कर,
[to]ड़कर ला इन्दु को फिर अम्बरी तूफान कर,
[ḍa]टकर पट दे समर जब तक प्रबल टंकार है।
[ta]लवार की टंकार में विप्लव-हृदय झंकार है ॥

— माणिक 'विश्वकान्त'

गीत

साथी, अन्धकार है आगे।

एकाकी मैं, पथ निर्जन है।
यह जीवन उजड़ा उपवन है।

तारों से भी अधिक धरापर

मुझ से लाख अभागे।
साथी, अन्धकार है आगे।

लपटें लेतीं ज्वाल जठर की,
सूखी जीभ मशाल डगर की,

तन किंचित अवशिष्ट हड्डियां

उस को भी जग माँगे।
साथी, अन्धकार है आगे।

दृष्टि क्षीण, निर्बल डग मग डग
मिलती रही निराशा पग-पग

फिर भी आशाओं की मद्धिम-

ज्योति हृदय में जागे।
साथी, अन्धकार है आगे।

— योगेन्द्रनाथ शर्मा

नया निर्माण

— शिव सक्सेना 'दीपक'

[...] श्रमिक
[...] धनिक
[...]ं हम
[...]ं तुम।
[...] युग में
[...] राह के पत्थर
[...] बहु मूल्य हीरे।
[...]ं तुम्हारी सत्ता
[...]ं हमारी सत्ता।
[...] अब तुम्हारी सत्ता
[अ]वश्य होगी मटियामेट

ज्वार जो उठा है अनायत्त
आज हमारे हृदयों में।
जलेंगे दीप
नए सिरे से
होगा अन्त अवश्य
इस प्रबलतम अन्धियारे का।
ये भव्य भवन
चमचम करते
औ' ये टूटी-फूटी झोंपड़ियां
अपनी दुर्दान्त दशा पर रोतीं।
पर अब होगा परिवर्तन

अवश्य ही
इन दोनों में।
कुछ समय बाद
झोपड़ियों के रूप
भवन लेंगे
औ' भवनों के रूप
झोंपड़ियां।
सच जानो
होगा अवश्य
नव निर्माण
नई रचना।

छत्रपति शिवाजी

(गतांक से आगे)

नारायण प्रसाद सिन्हा ' जहानाबादी ', झरिया, (बिहार)

चतुर्थ सर्ग

" अह ! कर सोलह शृंगार मधुर,
दिल में लेकर उद्गार मधुर
संध्या-बाला आयी पाने
निज प्रियतम का अभिसार मधुर
पंछी ले चंचु भर दाना,
करते कलरव गाते गाना
अपने नीड़ों की ओर चले-
आजादी के सब दीवाना
चरवाहे ले ले कर डग पर
आने लग गये सभी घर पर
लोरी गाते, बिरहा गाते
कुछ विरह व्यथित गाना सुन्दर
सरिता का पानी लाल-लाल,
लहरें हंसती हो लाल-लाल,
वे वृक्ष लाल, वे शिखर लाल,
जग का मुख मण्डल लाल-लाल
अह दिवानाथ का करुण अन्त,
संध्या के हेतु मधुर वसन्त,
मुस्काती-सी, बलखाती सी-
निज धाक जमाती दिग् दिगन्त
नभ वातायन से झांक रही,
जाने क्या मन में आंक रही,
उसके अधरों के दल जल पर-
मुस्कान मधुर है नाच रही
लो धधक उठी अन्तर्ज्वाला,
हो गया रिक्त जीवन प्याला,
"स्वामी जी देखो दिनकर को-
दादा-सी क्लान्त ज्योति माला "
" शिवा ! नहीं कोई वश अपना,
मैं, तुम या सारा जग नश्वर"

छत्रपति शिवाजी

कुछ सम्मतियां

अनुभूति और कल्पना के पंख पर उड़कर साहित्य जगत् में विचरण करने वाले श्री नारायण प्रसाद सिन्हा एक सफल कवि रूप में प्रकट हुये हैं। महा कवि के लिए जिन गुणों की अपेक्षा है-उनके काव्य और जीवन के रग-रेशे में व्याप्त हैं। हिन्दी संसार में इतनी छोटी अवस्था में काव्य प्रेषित करने का श्रेय मेरे विचार से अकेले श्री नारायण प्रसाद जी 'जहानाबादी' ही को प्राप्त है-मेरी अन्तर्भावना है कि कवि की अनुभूति, प्रखर कल्पना के प्रकाश से समग्र हिन्दी संसार आलोकित रहे।

रामवरण सिंह सारथी,
सरथा (बिहार)

श्री नारायण प्रसाद सिन्हा की रचना 'छत्रपति शिवाजी' की कुछ पंक्तियां मैंने सरसरी तौर से देखीं। पदों में भावुकता और प्रवाह दोनों हैं, अतः प्रभावोत्पादक भी हैं—

धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री, एम० ए०,
समाज शिक्षोपनिर्देशक, बिहार

यों करते थे बात बैठ कर
दोनों पूना के मन्दिर पर
सहसा आया एक नव युवक
चढ़ा हुआ सुन्दर हय पर
उतर किया अभिवादन उनका
पत्र दिया उसने सत्वर
स्वामी जी के कर में देते-
पत्र कहा शिवाजी ने-
" बतलाओ प्रस्थान किया था
कब कर्नाटक से तुमने !
बापूजी तो हैं सकुशल !
चिन्ता की है तो बात नहीं !
शान्तचित्त हैं अथवा कोई
जारी है संग्राम कहीं ? "
" देव ! चला था कल ही मैं,
बापू जी हैं युद्ध स्थल में
छिड़ा हुआ है विकट युद्ध,
अह ! कर्नाटक के घर-घर में
किसी तरह चल आया मैं,
अरियों के दल से लुक छिपकर
तात ! करूं मैं कितना वर्णन !
करलें ज्ञात पत्र पढ कर "
" गुरुवर ! क्या लिखा है
बापूने पत्रोत्तर में कहिये !
चर ! जाओ विश्राम करो तुम,
तात ! न अब विलम्ब करिये
अति उत्कण्ठित लख सरजा को,
स्वामी लगे पत्र पढ़ने
मानों करुणा शान्त रस की
सुन्दर प्रतिमाओं को गढ़ने

हा मान्यवर स्वामी जी !
चिर जीवी सरजा मेरे !
योग्य अभिवादन मेरा
शीर्वाद स्वीकार करें
मिला या विष का प्याला
गिरा, आँधी आयी
नहीं आंखों तर सहसा
! अंधियाली सी छायी
पड़ा हूं युद्ध स्थल में,
की सेनाओं से
हूं, घबड़ाता है दिल,
! अतिशय चिन्ताओं से
समय हा ! दादाजी भी
छोड़ कर चले गये
न हो पाया, पहले ही-
देकर कूंच भये
! पीड़ा !! हा ! शान्ति नहीं है-
मानव के जीवन में ?
ही पीडा बस केवल,
नहीं सुख जीवन में ?
, जो होना होता है,
होकर ही रहता है
अभागा मानव निशि दिन,
हाथों को मलता है
पूना की देख भाल-
! हुशियारी से करना
प्रजाओं को सुख देना,
से रहना
का वक्त नहीं अब,
हुये आज से तुम,
के बन्धन से अब
! बंधे आज से तुम
वही सफलता पाता,
धार से हो पैनी

काल चक्र की गति से गति हो-
तीव्र, तात ! हो मधु बैनी
समय परख निज कार्य करे,
नर्मी-गर्मी बौछार सहे
बाधाओं के पडने पर,
जो भूल न मुंह से आह कहे
हो कठोर तर तात ! वज्र से,
पुष्पों से ही कोमल तर
राष्ट्रोन्नति के हेतु सदा-
तन-मन-धन से होवे तत्पर
रक्त सदा उद्वेलित होवे,
आजादी का नस-नस में
अब क्या आगे लिक्खूँ बेटा !
नहीं लेखनी है वश में
आग उगलने लगी-तोप,
दुश्मन की सेना चढ आई
बिदा हो रहा हूं बेटा ! अब,
रण की घड़ियाँ चल आयीं
विजय लक्ष्मी लेकर माला-
धूप, दीप निज थाली में
पूजा करने चलती है
वीरों की रण की बारी में-
यदि न हुयी पूजा जिसकी,
अह ! मिलता कहीं न पानी है
नहीं देखती नजर किसी की,
अन्तिम यही कहानी है''
पत्र श्रवण कर बोला सरजा-
'अब न विलम्ब करें गुरुवर !
आर्य-राष्ट्र की वृद्धि होवे,
हो जायें हम सब तत्पर
अब तैयार हो गया होगा,
दुर्ग रायगढ का दृढ तर
तात ! निरक्षण कर लें उसका
कल सबेरे ही चल कर

सोम गये कल ही तोरण,
पर मिली नहीं कुछ अभी खबर
पता नहीं बैठे हैं क्यों सब,
मौन व्रत धारण कर कर ?''
होती थीं, यों बातें, तब तक-
आहट मिली अश्व पद की
वाणी मन्द पड़ी और सहसा-
आंखे फिरी उधर उनकी
नजरों के सम्मुख वाणी की,
सचमुच नहीं एक चलती
कोमल पंखड़ियों पर पैनी
धारें कब न काट सकतीं ?
आश्वारोही आ पहुंचा,
लखते ही लखते मन्दिर पर
किया सनम्र प्रणाम उन्हें-
उस वीर युवक ने शीघ्र उतर
चकित हो गये शिवाजी,
सम्भाजी को उस क्षण लख कर
कारण चली गयी थी रजनी-
कम से कम दो-तीन प्रहर
सरजाने पूछा...“कैसे आये-
सम्भा ! तुम इस अवसर
कुशल वहाँ तो है अथवा-
कुछ...चुप क्यों हो बोलो सत्वर ?''
“ तात ! नहीं कुछ बात नई है,
घबड़ाने का काम नहीं
हैं सानन्द सभी जन स्वामी !
है अशान्ति का नाम नहीं
दुर्ग रायगढ़ पूर्ण हो गया,
कार्य एक अवशेष नहीं
चल कर कर लें शीघ्र निरक्षण,
त्रुटियां हैं तो कहीं नहीं ?''
“ मैं भी यही सोचता था,
बातें करता था गुरुवर से

इतने ही में तुम आये,
हो गया ज्ञात सब कुछ तुम से
अच्छा, अब विश्राम करें,
कल होते प्रातः सिधारेंगे
देख भाल कर तात ! वहीं-
हम सब कुछ पुनः विचारेंगे"
शयनालय आये शिवाजी,
हेम दीप मुस्काता था
आलोकित था भव्य भवन
वह जगमग ज्योति जगाता था
हंसते थे मणि-चित्र अनोखे
निकल रही थी ज्योति प्रखर
ज्ञात हो रहा था प्रकाश से-
हीं निर्मित तो दिव्य महल
टंगे हुये थे चित्र अनोखे-
वीरों के मस्तानों के
लालों के, वर शूरों के,
आजादी के दीवानों के
राम लक्ष्मण महावीर थे-
लंका में करते घमसान
लव-कुश कछनी का छेदन-दन
मार रहे थे तीखे बाण
पकड़ कंस के केश कृष्ण थे-
पटक रहे सिंहासन से
कारागार ध्वंस कर, माँ को-
छुड़ा रहे थे बन्धन से
कुरु क्षेत्र में वीर धनंजय
युद्ध कला दिखलाते थे
आततायियों के शोणित से-
उसकी प्यास बुझाते थे
हल्दी घाटी में प्रताप
चेतक पर जंग मचाते थे
भ्रष्टाचारी मानसिंहको-
अद्भुत मजा चखाते थे

यों होता था ज्ञात वीर रसका
हो शयनागार सुघर
पड़े हुये थे एक बगल में
भाले, बर्छे, तीर-तबर
टंगी हुयी थी खूँटी से-
जीवन सहचरी भवानी भी
और शक्ति-सी बैठी पुस्तक
देख रही थी रानी भी
आहट पा वह चौंक गई,
देखा अपने जीवन धन को
खड़ी हो गयी उतावली सी,
आगे बढ़ी सुस्वागत को
बैठ गये शिवाजी आकर,
कोमल शय्या पर सत्वर
" आओ मेरे दिल की राणी "
बोले उसे खड़ी लख कर
बैठ गयी भोली तुलसी भी,
प्रियतम की अनुमति पाकर
मौन रहे दो क्षण दोनों,
शिवाजी बोले तदनन्तर-
" प्रिय ! उधर देखो केशव
किस तरह दनुज को मार रहे
कारा का अन्त अहा !
माता का बन्धन काट रहे
वह दिन आयेगा कब प्यारी!
कर परदेशी शासन नाश,
बन्धन मुक्त करेंगे माँ को
कब पूजेगी स्वर्णिम आश ! "
" प्रियतम ! जरा विलम्ब नहीं है,
आशा लतिका लहराई
कोमल-कोमल किस लय कैसे !
लाली से रच कर लाई !
दीपक लौ देखो साजन !
अह ! कैसे कलिका उग आई
प्रस्फुटित होगी, फैलेगा-
सौरभ, मादक घड़ियाँ आई

गूंजेंगे अब शीघ्र
आजादी के, देव !
मतवाली कोयल
आया मधुर वसन्त
देखो, मां मुस्काती
वरदान दे रही है
चपला-सी द्रुत गति से
चित्र दिखाया फिर
चिबुक पकड़ कर कहा शिवाजी
" ओ मेरी कोमल रानी
ओ मेरी साकार कला
ओ मेरी मादक दीवानी
मधुर कल्पना फले तुम्हारी
बने सत्य की प्रतिच्छाया
नवल सृष्टि की सूत्र–धारिणी
बन जाओ मोहक माया
रच दो नव संसार शीघ्र तुम
अमर तूलिका ले कर
आदि शक्ति ! नव जीवन भर दो
क्रान्ति मचा दो घर-घर में
" प्रियतम ! अब मत... कहती-कहती
गोदी में वह लुढ़क
मानों वीर अंक में मादक
शर्मिली वीरता
चूम लिया सरजा ने
कलित कपोलों को
यों होता; था ज्ञात
शत दल के दल हों इन्दु
अर्द्धोन्मीलित नयनों
देखा उसने जीवन धन को
झांक रहे ज्यों अर्द्ध प्रस्फुटित
अलिमय पंकज दिनकर को
यों करते मधु केलि सी
दोनों ही सुध बुध
मानों सोये हों
वीर वेश धारण

ठी कविता

पेटवुनी घे पणती

ये इथें आपुली पेटवुनी घें पणती
क्षण एक प्रभाकण फुलु दे मलिन स्वांतीं
केलेंस खुराडांतुनी आजवर गाणें
जळलास गर्द रातींत निरानंदानें
घर तुझे तुला जाहलें भयानक कारा
ये बाहिर बघ उगवला ध्रुवाचा तारा
घातल्या मृत्युला हांसत ज्यांनीं माळा
धगधगे तयांची प्रेरणा येथें ज्वाळा
हुंकार उसासे भोंवतिं जे थरारलें
ते धन्य! त्यांत जे रमले, झुरले, स्फुरलें
लागली गळा जरि तांत, इमान न चळलें
त्यांचेच इथें किति दीप राग झरझरलें
या अमर दीप्तिच्या दिव्य यज्ञयागांत
नवलाख स्वयंप्रभ रिचल्या ज्योति गात
ये इथेंच अपुली पेटव निष्प्रभ पणती
मग नवा जीवनानंद नवज्वलनांतीं

* — बी. रघुनाथ

मराठी कविता का हिन्दी गद्यानुवाद

दीपक यहां आ और अपना ज्योति जला ले। एक क्षण भर इस अंधकारमय स्थान को अपने प्रकाश से प्रकाशित कर दें। आज तक तूने अपने गीत केवल कुटी में ही गाए हैं। निराशा से घोर अंधकार में तुम अब तक जलते रहे। तेरा घर तेरे लिए भयानक कारावास बन गया है। दीपक! बाहर आकर देख ध्रुव तारा निकल आया है जिसने हंसते हुए मृत्यु को आलिंगन किया। उसकी प्रेरणा से यहां ज्वालाएं धधक रही हैं। इसके आसपास हुंकार एवं ठंडी आहें निकली हैं। वे धन्य हैं, जो इनके साथ समरस हुए। उनके गले में फांसी की रस्सी भूलती रही फिर भी वे कृतघ्न नहीं हुए उन्हीं के यहाँ कितने ही दीप राग चमक उठें। इस अमर प्रकाश के दिव्य यज्ञ में स्वयं प्रभा वाली अनेक ज्योतियां मिल गईं। दीपक आ और अपनी तेज हीन ज्योति यहां जला, फिर इस नव ज्वलन में जीवन का आनन्द प्राप्त कर।

०*०

ड कविता

देव लोक मर्त्य लोक

देव लोक मर्त्य लोक बेरिल्ल काणिरो।
सत्यव नुडिवुदे देव लोक॥
मिथ्यव नुडिवुदे मर्त्य लोक।
आचार वे स्वर्ग,
अनाचर वे नरक,
इदके नीवे प्रमाण,
कूडल संगम देव॥

कन्नड कविता का हिन्दी गद्यानुवाद

देव लोक और मर्त्य लोक अलग-अलग नहीं है, सत्य बोलना ही देव लोक है और मिथ्या बोलना ही मर्त्य लोक है। मानव के आचार ही स्वर्ग है और अनाचार नरक।

हे संगम नाथ! तुम ही इसके प्रमाण हो।

* — महात्मा बसवेश्वर

०*०

बंगाल के लोक-गीत

— अनवर आगेवान

लोक-गीत, लोक-कथा, लोक-नृत्य जन हृदय की विशुद्ध भावना के प्रतिबिम्ब हैं। यह राष्ट्र की अमूल्य सांस्कृतिक निधि है जो आज भी भारत वर्ष के असंख्य ग्रामों में विद्यमान है। इन ग्रामों के लोक-गीत, कथा नृत्य आदि साहित्य जन हृदयका स्पन्दन बन कर उसे नित्य नई प्रेरणा, नया संदेश, नया रंग प्रदान करता है।

बंगालकी धरती पर गूंजरित "बांउलेर गान", "मैथिली गान", "सारिगान", "बार मासी" ऐसे गीतोंमें अपूर्व सुन्दरता है। यह गीत कोकिल कण्ठी स्त्रियों के मुख से कोमल और करुणा के मिश्रित स्वरमें गाये जाते हैं।

सोहाग भरी सन्ध्या आकाश से विदा होती है और चांदनी रात जगमगाती अपना आंचल प्रसारित करती गगनांगनमें खेलती है तब बंगाली ग्राम-वधुएं अपने आंगन में बैठी बैठी मधु स्वर में गाती हैं :—

भालो केनो एलो ना ?
भालोवासा आसबे बोले गेयेछी बेल फूलेर माला।
आसिते आसिते से लो रास्ता कि भूलिलो ?
पथ छेड़े भालोवासा विपथे कि गेलो ?

अर्थात् :—

प्रियतम क्यों नहीं आये ?
प्रियतम के आने की आशा में बेला ने फूल की माला गूंथी।
आते-आते क्या वह रास्ता भूल गए ?
पथ छोड़ कर कहीं गलत रास्ते पर तो नहीं गए ?

ऋतु सम्बन्धि गीतों में वसंत के गीत प्रसिद्ध हैं। उनमें बोलोंकी अपेक्षा मादक स्वर लहरी अधिक आकर्षक व मनोहारिणी होती है। लगता है कि वसंत के आगमन पर उसकी रंग-मस्ती में निखिल सृष्टि स्नान कर रही है। यह वसंती गीत जिसमें राग-रंग एवं आनन्द उछलता है जो किसी युवती के भावुक हृदयसे गीत बनकर बहते हैं :—

सखि लो, आवार बूझी बसंत एलो,
एवार बसंतेर हाऊया लेगेछे बीबी देर गाय,
पाका चूल फुर फुर करे
दामाद ऐसे तुले देय,
एवार बीबी देर के मताईलो!
एमन साड़ी के पराईलो
साड़ी आंचला
देखरे रंगीला
हेन साड़ी कोन रंगराज रगांइलो!

अर्थात् :—

सखि लो, फिर से बसंत आया;
इस बार वसंत की हवा वधुओं के शरीर को छू गई
सुन्दर केश हवा में फुर-फुर उड़ रहे हैं।
दामाद (बंगाली में 'दामाद' प्रियतम और पतिको कहते हैं।) आकर उसे तोड़ देता है।
इस बार वधुओं को किसने उन्मत्त किया?

ऐसी साड़ी किसने पहिनाई ?
रंगीले साड़ी का आंचल तो
देखो !

इस साड़ी को किस रंगरेज से रंगा ?

इन बंगाली शब्दों में भावों का कितना सुन्दर निरूपण हुआ है!

प्रसिद्धि चार चीजों से मिल सकती है 'कम बोलने से, कम खाने से, कम मिलने जुलने और कम सोने से।

भिक्षुक और पुजारी

— 'श्रीराम'

अधिक मास की सोमवती अमावस्या। सुप्रभात—पूर्व उदित सूर्य की कोमल रश्मियां—लालिमा लिए—नव- की भांति पृथ्वी पर मण्डित है। पवन के झोकों से ते हुए वृक्ष और लतिकाएं इस सुवेला में आनन्द के गा रही हैं। मार्तण्ड की कोमल किरणें पातों पर र एक सुन्दर दृश्य उपस्थित हो गया है। इस उल्हास- दृश्य को देखकर पक्षी आनन्द से कलरव कर रहे हैं। लग रहा है मानों ये प्रकृति के प्रतिनिधि इस दुनिया मानवोंकी तन्मयता—निद्रादेवी की आराधना — कर इस मनोहर दृश्य के दर्शन कराने के प्रयत्न में हैं।

दान-पुण्य प्राप्त करने का सुअवसर इस अधिक मास की वती अमावस्या ने दुनियावालों को प्रदान किया। अपने घर का ब्राह्मण भोजन कराने की चिन्ता में हैं दीन-दुःखी बंधुओं को दान करने की सोच रहे हैं कोई तो इच्छा होते हुए भी धन की असमर्थता के ण चिन्ताग्रस्त हैं, क्यों कि ऐसा अवसर बार-बार नहीं ता। और कोई तो इन दान-पुण्य करनेवालों की अबोध ता से लाभ उठा आडम्बर, स्वार्थ एवं लालच के में फंस कर अपनी आत्मा रूपी परमात्मा को धोका की चेष्टा में व्यस्त हैं।

* * *

नगर से चार मील दूर एक सुन्दर सरोवर के बीच ल मन्दिर स्थित है। चारों ओर पानी, मन्दिर के पास की भूमि-खण्ड पर लगे सुन्दर वृक्षों, पौधों, और काओंने अपनी असाधारण सुन्दरता से एक मनोहर य उपस्थित कर मन्दिर की सुन्दरता में चार चान्द गा दिए हैं। मंदिर का पीत वर्णीय शिखर प्रभात- लीन सूर्य की किरणों से आलोकित हो रहा है। इसके अतिरिक्त मन्दिर की भित्तियों पर शिवलीला के चित्र—कला के सुन्दर नमूने—भक्तगणों को बरबस अपनी ओर आकर्षित कर रहे हैं।

आज प्रातःकाल से ही मन्दिर के प्रवेश द्वार के दोनों ओर पंक्तियां बनाएं भिक्षुक बैठे हैं, जिन में अधिकतर लूले, लंगड़े एवं अंधे हैं। मन्दिर में आने वाले भक्त-जनों के सम्मुख वे अपनी फटी-पुरानी झोली, टूटे-फूटे बरतन आगे कर करुण स्वर में अपनी दीनता का प्रदर्शन करते हैं। इन की करुण ध्वनि सुननेवालों के हृदय को आर्द्र कर देती है। भक्तजन इनका निराश तथा करुण स्वर सुनते और उनकी आंखों से दया टपकने लगती परन्तु कोई माई का लाल अपनी पूजा-पाठ की सामग्री में से तथा गांठ में लगे पैसों में से कुछ देने तैयार न होता।

अधिक मास की सोमवती अमावस्या होने के कारण आज प्रतिदिन की अपेक्षा भिक्षुओं के साथ-ही-साथ भक्त-जनों का मेला-सा लगा है। आने-जाने वाले भक्तजनों में से कोई दयावान व्यक्ति द्वार के पास बैठे भिक्षुओं के पात्र में पैसा-धेला, रोटी-कपडा डालने की बजाय करुणारूपी दान प्रकट कर भीतर या बाहर चले जाते।

नगर के धनाढ्य सेठ भिखारीदास भी आज ईश्वर के दर्शनार्थ आए हैं। उनके पीछे-पीछे उनका सेवक एक टोकरी में कुछ फल-फूल एवं पूजा की सामग्री लिए चला आ रहा है। सेठजी की असाधारण वेशभूषा को देखकर कुछ भिक्षा मिलेगी, इसी आशा से भिक्षुओं की आशा का फूल खिल उठा। भिक्षुओं के एक बडे समूह ने सेठजी को घेर लिया। सेठजी ने देखा चारों ओर भिक्षु सैनिकों की भांति आक्रमण करने के लिए बढे आ रहे हैं।

भिक्षु एक ही स्वर में पुकार रहे थे— "अन्नदाता! सोमवती अमावस्या है सरकार! भगवान के नाम पर........."

किन्तु भिखारीदास भी कच्चे गुरु के चेले न थे। वे इन भिक्षुओं के आक्रमण से कब डरने वाले थे। उन्होंने भिक्षुओं की ओर क्रुद्ध दृष्टि डालते हुए बढ़ने का उपक्रम किया।

"हटो, हटो! भगवान के नाम पर पैसे मांगने वाले पापियों दूर हो जाओ। तुम्हें दान या भिक्षा देना भगवान की उपेक्षा करना है। भगवान के नाम पर धन्धा बना रखा है यह! जहां देखो फौज़ की फौज़ तैयार रहती है!" किसी तरह वे इन भिक्षुओं की भीड़ को चीरकर लगभग दौड़ते हुए ही मंदिर के भीतर प्रविष्ट हो गए।

भिक्षुओं की रेत की दीवार टूट गई। उनकी आशा धूल में मिल गई। आशा निराशा बन गई।

परमपिता की भव्य मूर्ति के सम्मुख अनगिनत घृत-दीपक जल रहे हैं। अगरबत्तियों से निकली धूप वातावरण में मादकता भर रही है। घंटा-नाद से मंदिर गूंज रहा है। वातावरण से प्रभावित भक्तजन ईश्वर की अगाध लीला पर आश्चर्य प्रकट कर रहे हैं।

सेठजी ने विधिवत पुजारी से—ईश्वर का प्रतिनिधि—पूजा करवाई। कुछ देर ध्यान लगा कर दीन बन्धु से अपनी मनोकामना की पूर्ति के लिए प्रार्थना की कि "हे दाता! विदेश भेजे जाने वाली गौओं और बैलों का कन्ट्रॉक्ट मुझे मिल जाय तो मैं तुम्हारी सेवा में सुवर्ण की मूर्ति भेंट करूंगा।"

सेठजी ने अपनी प्रार्थना पूर्ण की। लौटते समय उन्होंने वास्तविक भगवान के नाम पर धन्धा करने वाले पाखण्डी—ईश्वर की ओर से भेजे हुए प्रतिनिधि—पुजारी को १०१) रुपये दिए।

और......और वे त्रिभुवन के ज्ञाता, रक्षक, परम-ज्ञानी; नीच और पाखण्डी लोगों के संरक्षण में रहकर हेय बना मूर्ख की तरह देखता रहा। *

(शेष पृष्ठ १६ से)

कर्म व भाग्यवाद

"भावी के वश तीन लोक है, सुर, नर देह धरै।
सूरदास प्रभु खीसो ह्वै है को करि सोचम है॥"
"धर्मपुत्र तू देख विचार। कारण करनहार करतार॥
नर के किये कछु नहिं होई। करता हरता आपुहि सोई॥

सूरने निवृत्तिपरक तथा भाग्यवाद के पद भी लिखे हैं।

नारी निंदा

सूरने कई स्थानों पर सुरात आदि बन्धनों का वर्णन किया है। सभी सन्तों के समान सूरदासने भी नारी की निंदा की है। नारी को सूरने सांपनी जैसे भयंकर कहा है—

नारी-नागिन एक स्वभाइ।
नागिन के काटे विष होई। नारी चितवन नर रहै मोहि।
नारीसों नर प्रीत लगावै। पै नारी तिहि मनहि न लावै॥
नारी संग प्रीति जो करै। नारी ताहि तुरत परिहरै॥१॥

वेद निंदा

सूरने कुछ पदों में वेद को भक्ति से नीची कोटि में रखा है—

"धनि शुक मुनि भागवत, बखान्यों"
"बेरस-राग त्ररि किन्हें व दे नहिं ठहरान्यों॥
सूरदास तहां नैन बसायें और न कहूं पत्यान्यों॥५७॥

उपरोक्त विश्लेषण से सूर के आध्यात्मिक दृष्टिकोण का चित्र हमारे सामने आ जाता है। *

सूर का आध्यात्मिक दृष्टिकोण

— 'निर्मम'

सूर के समस्त ग्रन्थों में उन का आध्यात्मिक दृष्टिकोण है। सूर राधाकृष्ण के गुणगान में, रासलीला के वर्णन में व गोपियों, मुरली की महिमा में अपने आध्यात्मिक विचारों की छाप छोड गये हैं। प्रत्येक विषय व पद का गम्भीरता पूर्वक अध्ययन करने पर ही सूर के आध्यात्मिक दृष्टिकोण को मालूम किया तथा समझा जा सकता है।

सूर के 'राधा कृष्ण'

सूर ने कृष्ण को साक्षात ब्रह्म और राधा को ब्रह्म की ह्लादिनी शक्ति माना है। यह ब्रह्म घट-घट में समाया हुआ है। सूर के कृष्ण ही राम, विष्णु तथा हरि हैं। इनका रूप निराकार है, न इनका कोई माता पिता है, न इनका कोई शरीर ही। परन्तु लीला के लिये साकार, निर्गुण से सगुण हो सकते हैं। सूर ने लिखा है:—

विश्वम्भर जगदीश कहावत ते दधि दोना माँझ अघाने
आपुहिं हरता, आपुहि करता, आपु बनावत आपुहि भाने
ऐसे सूर के स्वामी ते गोपिन के हाथ बिकाने॥ ८७॥

कृष्ण हरि या ब्रह्मा के अवतार हैं:—

गोकुल प्रकट भये हरि आई।
अमर उधारन असुर-संहारन अन्तरयामी त्रिभुवन राई
॥१२॥ पृष्ठ १०१.

परात्पर ब्रह्म की तीन शक्तियां मानी है—

विष्णु, विधि, रुद्र ममरूप ए तीनों हूँ... सुनायो
॥५॥ पृष्ठ ४७.

किन्तु अन्य स्थानों पर विष्णु को ही महत्व प्रदान किया है। सूरसागर में सूर ने लिखा है—

शिव बिरंचि सुरपति समेत सब सेवन प्रभु पद चाये
पृष्ठ १७.

कहीं-कहीं सूर ने यशोदा, गोपी आदि से भी नीचे ब्रह्मा व शिव को गिरा दिया है—

सूरदास प्रभु यशुमति के सुख शिव बिरंचो
बौरायौ॥९५॥ पृष्ठ १३९.

ब्रह्मा तो इस लोक में गुलर में भरे हुए कीड़ों के समान हैं। सूर ने लिखा है—

मैं ब्रह्मा इक लोक को ज्यों गूलरि बिच जीव।
पद २९ पृष्ठ १५८.

सूर ने विशिष्टाद्वैतवाद का भी अनुमोदन किया है—

सकल तत्व ब्रह्माण्ड देव पुनि माया सब विधि काल।
प्रकृति पुरुष श्रीपति नारायण सब है अंशगोपाल॥
११०१॥ सूर सारावली.

अन्य सबको हरि का अंश बना दिया है। नारायण को सूर ने हरि से पृथक ही समझा है। हरि या विष्णु तो लोकवासी हैं नारायण वैकुण्ठवासी। नारायण स्वयं हरि का ही ध्यान करते हैं। एक स्थान पर लिखा है—

"रमाकान्त जासु को ध्यायो।
सो सुख नन्द सुवन ब्रज आयो॥ पृष्ठ ३६३॥

सूर की राधा व तुलसी की सीता एक ही हैं—तुलसी की सीता राम वल्लभा है, राधा सूर के जगदीश की प्रिया है। वह उद्भवकारिणी है तो यह जगत-जननी है, वह क्लेशहरणी है तो यह भव भय हरणी है। ब्रह्मा की एक ही शक्ति के राधा व सीता भिन्न-भिन्न नाम हैं। सीता व राम, राधा व कृष्ण दोनों ही शाश्वत रूप से एक दूसरे के साथ सम्बद्ध है। सूर कहते हैं—

"सिंधु मथ्यौ, सागर बल बाँध्यो,
रिपुरण, जीति मिलाई।
अब सो त्रिभुवन नाथ-नेह वश
बन बाँसुरी बजाई॥

प्रकृति पुरुष, श्रीपति, सीतापति
अनुक्रम कथा सुनाई ।
सूर इति रस-रीति श्याम सों
ते ब्रजबासि बिसराई ॥ ६५ ॥ पृष्ठ ४०८.

सूर के राधा व कृष्ण अतिमानव होते हुए भी पूर्ण मानव है, वह भी मूक व कृत्रिम नहीं बल्कि जीवन के सामान्य धरातल पर, बालोचित क्रीड़ा, यौवन सुलभ, हास-परिहास, दुःख सुख का अनुभव करने वाले मानव हैं।

रासलीला

'रास' शब्द 'रस' से बना है। उपनिषद में कहा गया है कि रसरूप ब्रह्म केन्द्र है और उसकी परिधि है ब्रह्म का यह चक्र जिसे उसकी लीला कहा जाता है। कृष्ण परमात्मा है व राधा तथा गोपियां अनेक जीवी वृन्दावन सहस्रदल कमल है। यहीं आत्मा व परमात्मा का मिलन होता है किन्तु सूर के अनुसार आत्मा व परमात्मा मोक्ष से भिन्न हैं। मुक्त जीव परमात्मा के साथ क्रीड़ा करते हैं और उसकी लीला में भाग लेते हैं। राधा को सूर ने स्वकिया रूप माना है। सूर सागर में राधाकृष्ण विवाह वर्णन भी है।

मुरली

सूर ने कई स्थानों पर हृदयहारी 'मुरली' का वर्णन किया है। कुछ विद्वानों ने इसे ब्रह्म का नाम दिया है। जिस प्रकार ब्रह्म सर्वव्यापी है उसी प्रकार उसकी वाणी सर्वव्यापक है। वंशी ध्वनि ब्रह्म का शब्दरूप है। कुछ विद्वानों इसे नामलीला का रूप दिया है। भक्त नाम का जाप करते हुए जिस ध्वनि का अपने अन्तस्तल में श्रवण करता है, वही वंशी की ध्वनि है। हठयोग में कुण्डलिनी शक्ति के जाग्रत होने पर स्फोट और जो नाद होता है, गूंजता है या सुनाई पड़ता है; वही वंशी की ध्वनि है। कहीं कहीं वंशी को माया रूप भी माना गया है, जो प्रभु की अपार शक्ति की वाचक है। वंशी निनाद के सामने अभ्युदय व निःश्रेयस दोनों सुख फिके पड़ जाते हैं। वेणु में तीन अक्षर हैं — व+इ+णु। 'व' = ब्रह्मसुख का द्योतक है, 'इ' सांसारिक सुख का प्रतीक व इन दोनों सुखों को मात करने वाली है, 'णु' अर्थात वेणु है। जब किसी मनुष्य को प्रभु का अनुग्रह प्राप्त हो जाता है तब उसके सामने वंशी बजने लगती है। सूर ने लिखा है—

"अपुन पौ आपुन ही में पायो,
शब्द हि शब्द भयौ उजियारौ, सद्गुरु भेद बतायो ॥"

गोपियाँ

गोपी-ग्वाल कान्ह दुई नाहीं ये कहुं नेक न न्यारे।
एकै देह विहार करि राखे गोपी ग्वाल मुरारी ॥"
सूर सागर पृष्ठ २५०

अर्थात गोपी, गोप व कृष्ण भिन्न भिन्न, दो-दो नहीं अपितु एक ही हैं। कृष्ण आत्मा है तो गोपियां आत्मा की वृत्तियां हैं। आत्मतत्व के एक होते हुए भी अनेक और भिन्न रूपा (वृत्तियां) हैं। सूर सागर में लिखा है—

"यह बानो कहि सूर सुरन को अब कृष्णावतार।
गहयौ सब ब्रज जन्म लेहु संग हमरे करहुं विहार॥

फिर इस पद के आगे लिखा है भगवान ने जिन देवों को आज्ञा दी थी वे गोपी-गोप रूप में ब्रज में उत्पन्न हुए। राधा प्राण हैं तो गोपियां शरीर दोनों का एक दूसरे से घनिष्ट सम्बन्ध है। राधा लक्ष्मी का ही अंश है। कृष्ण की दो शक्तियां मानी गई हैं, बहिरंग व अन्तरङ्ग। बहिरंग शक्ति में माया है व अन्तरंग शक्ति तीन प्रकार की है— संधिनी, संविन और ह्लादिनी। राधा ह्लादिनी शक्ति है और गोपियां उसका प्रतिरूप है।

प्रेम भक्ति

सूर ने प्रेम के विविध रूपों का निरूपण किया है— दास्य, सख्य, वात्सल्य, माधुर्य और प्रमुख हैं। भगवान प्रेममय है प्रेम ही के कारण उन्होंने अवतार लिया है—

"प्रीति के वश्य एहैं मुरारी।
प्रीति के वश्य नटवर वेष धारयौ,
प्रीति-वश गिरीराज धारी। "

प्रीति की परिभाषा सूर ने निम्न प्रकार की है—

"प्रेम प्रेम ते होई प्रेम ते पा रहि पइये;
प्रेम बंध्यौ संसार प्रेम परमारथ लहिये।
एकै निश्चय प्रेम को जीवन मुक्ति रसाल;
सांचौ नियश्च प्रेम को जेहिरे मिले गोपाल ॥

प्रेम में समस्त संसार बंधा पडा है, प्रेम से ही परमार्थ होता है। प्रेम का निश्चय ही सत्य है। सत्य प्रेम विरहानुभव के बिना प्रकट नहीं होता और भगवान के प्रेम, वर्ण, रंग, जाति आदि का भेद नहीं करता।

निर्गुण-भक्ति-प्रभाव

सूर अपने वर्णन में वेद व पुराण की साक्षी देते हैं किन्तु साथ ही शिव ब्रह्मा आदि की कोई जाति न मानते हुए निर्गुण पंथियों की बात भी लिखते हैं —

"निगम ते अहम हरि-कृपा न्यारी।
प्रीतिवश श्याम की, राई कै रंक कोड,
पुरुष कै नारी, नहिं भेद करी॥"

सूर बहिर्मुखी के विरोधी थे। बाहर क्या है? माया का विस्तृत प्रपंच, मृगतृष्णासम मिथ्या। बाहर तो यही भय लगेगा बाजीगर के बंदर की तरह नाचना पड़ेगा। हरि रूपी हीरा तो हृदय में ही रक्खा है। कबीर व सूर में इस विषय में साम्यता है।

पूजा व स्मरण

भगवान का भजन, प्रभु की भक्ति हरि के नाम के स्मरण के बिना भव-सागर पार करना असंभव है। प्रभु ही भक्तों का आश्रय स्थान है, निराश्रितों के लिए आशा-स्रोत अशरण की शरण हैं। भक्त के योग–क्षेम की चिन्ता भगवान को लगी रहती है। भगवत् कृपा प्राप्ति के लिये जप, तप, ध्यान, ज्ञान आवश्यक है।

भक्ति

सूरने भक्ति के दो भेद किये हैं—सकाम व निष्काम। सूर कहते हैं सकाम भक्ति द्वारा भी मनुष्य का उद्धार हो सकता है। धीरे-धीरे वह ब्रह्म (हिरण्यगर्भ) तक पहुंचता है और ब्रह्म के साथ विष्णु पद में लीन हो जाता है। निष्काम भक्ति द्वारा भक्त सीधा वैकुण्ठ में पहुँच जाता है।

त्रिविधि योग

भागवत् के आधार पर कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोग का वर्णन सूर ने इस प्रकार किया है—

"एक कर्म योग को करै। वर्ण-आश्रम धरि निस्तरै॥
अरु अधर्म कबहूं नहिं करै। ते नर याहि विधि नितस्तरै॥
एक भक्ति योग को करै। हरि सुमिरन पूजा विस्तरै॥
हरि-पद-पंकज-प्रीति लगावै। क्रम–क्रम करि हरि पद हि समावै॥
एक ज्ञान योग विस्तरै। ब्रह्म जानि सबसों हित करै॥
तेहरि पद खो या विधि पावै। क्रम-क्रम करि हरि पद ही समावै"

सूर ने तीनों मार्गों द्वारा भगवान प्राप्ति स्वीकार की है, ज्ञान का महत्व उन्होंने विशेष रूप से कहीं–कहीं स्वीकार किया है —

"मनहु ज्ञान घन प्रकास, बीतै सब भव विलास,
आस त्रास तिमिर तोष तरनि तेज जारै॥"

साधना-पथ

सूरने भगवत् प्राप्ति के लिये समत्व बुद्धि, कोमल वाणी, दैन्य मुदिता, वादविवाद से पृथक रहना, कामना का त्याग, करनी–कथनी में समता रखना, विवेक सिद्धि, काम क्रोध शत्रु है, सुत–कलत्र–प्रेम का परिहार, असन–वसन की चिन्ता से दूर रहना तथा अष्टांग योग आदि का भी वर्णन है। सूरने सूरसागर में पूर्ण विवेचन किया है। इस प्रकार की साधना जो करेगा उसे अवश्य भगवत् प्राप्ति होगी। प्रभु की शरण में जाने वाले की भगवान रक्षा करते हैं।

विनय-भक्ति

भक्ति के भाव रस में सूरने विचारणा, भवदर्शन, व्याकुलता, पश्चात्ताप, दैन्य, भर्त्सना, आश्वासन, मनोराज्य, प्रभु की उदारता, पापों का स्मरण, समर्पण दीनता, प्रभु की शरणागत आदि भावनाओं को उनकी विनय भक्ति की भूमिका बनाया है। इनके अभाव में भक्ति की पूर्णता नहीं हो सकती।

"ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं" के स्थान पर सूरने "भक्ति बिना मुक्ति नहीं" सिद्धान्त का प्रतिपादन किया।

"सूरदास भगवन्त भजन बिनु कर्म रेख न कटी।"

सूरमे भक्ति को सर्वोपरी स्थान दिया है। भक्ति के विषय में सूर कहते हैं—

"पुनि दुख पाई, पाइ सो मरै। बिनु हरि भक्ति नरक में परै॥
नरक जाइ पुनि बहु दुःख पावै। पुनि पुनि योंहि आवै-जावै॥
तऊ नहिं हरि सुमिरन करै। ताने बार बार दुःख भरै॥"

पुष्टिमार्गीय भक्ति

सूरने पुष्टि मार्ग का अनुसरण किया है, भगवान के श्रृंगार, राजभोग, संध्या आरती, नैमित्तिकाचार में हिंडोला वसन्त, फाग आदि का वर्णन अपने पदों में किया है। इनके साथ रही गुरु महिमा के भी पद लिखे हैं। उनका वर्णन भी पुष्टिमार्गानुसार ही है। इस में भगवान के अनुग्रह पर सर्वाधिक जोर दिया जाता है, यह अनुग्रह ही भक्त का कल्याण करता है। जिस को प्रभु कृपा प्राप्त नहीं हुई वह कुलीन होते हुए भी नीच, सुन्दर होते हुए भी कुरूप और धनवान होते हुए भी निर्धन है। सूरने इसी भावनाओं को अपने पदों में भी गाया है। पुष्टि मार्ग में लीला सर्व प्रधान थी, व इस में भाग लेना जीवन का चरम आदर्श था। इस के सामने मुक्ति भी तुच्छ थी। सूर की भक्ति प्रवृत्ति मूलक है। नवधा भक्ति में अर्चन व चरण सेवन को छोड कर शेष सात गुण निर्गुण भक्ति के ही हैं; ये सब गुण सूर में हमें मिल जाते हैं। गुण महात्म्यासक्ति, रूपासक्ति, पूजासक्ति, स्मरणासक्ति, दास्यासक्ति, कान्तासक्ति, वात्सल्यासक्ति आत्म-निवेदनासक्ति, तन्मयतासक्ति, परम विहारासक्ति, आदि।

ईशरूप

सूर के निगुण व सगुण दोनों ही ईश्वर के रूप माने हैं। परन्तु कहीं-कहीं वे आचार्य शंकर की भांति प्रभु को निर्विशेष तथा गुणरूप रहित मानकर अवतार रूप में उसका सगुण होना लिखते हैं। सूरने आचार्य शंकर के मतानुसार ही विश्व को स्वप्न तुल्य मिथ्या माना है—

"जागिपरें कछु हाथ न आयौ यह जग की प्रभुताअी॥"

आत्मदर्शन

भारतीय साधना में आत्मत्व की प्रधानता है। आत्म-दर्शन हो जाने पर समस्त संशय छिन्न भिन्न हो जाते हैं। आत्मदर्शन के लिये सूर भक्ति ही को श्रेष्ठ मानते हैं।

जीव

आचार्य शंकर के विरुद्ध सूर जीव को सत्य मानते हैं, पंचमस्कंध के चतुर्थ पद सूरने शरीर स्थूल व कृश होता है, परन्तु जीवात्मा सर्वदा एक ही रहता है; इसे मान है। जीवात्मा कर्म करता है। जीवात्मा व परमात्मा का प्रेम संबन्ध नित्य है।

माया

आचार्य शंकरने माया को अनिर्वचनीय शक्ति माना है। सूरने माया को सांख्य प्रकृति के समान माना है। प्रकृति सत, रज, तम की साम्यावस्था का नाम है। वह त्रिगुणात्मिका है इसी से त्रिगुणात्मक विश्व का जन्म हुआ है। माया जड प्रकृति का ही रूप है। यह माया भगवान के अधीन है, उनकी दासी है।

"सोहरि माया बस माहिं॥ तृतीय स्कन्ध॥"
"माया हरिपद माँही समावै॥" १२ स्कन्ध॥

माया निर्मित संसार की दृश्यावली, प्रपंच प्रसार अपने मोहक एवं मादक रूप से जीवात्मा की ममत्व-पाश में जकड़ देता है। यही वह बन्धन है जहां आत्मा-परमात्मा के श्रेय पथ से दूर हो जाता है। सूरने इसे मोहिनी, भुजंगिनी नटनी संबोधित किया है तथा लोभ, मोह; काम, क्रोध, छल कपट, दम्भ, पाखण्ड आदि इसी के भिन्न रूप बताये हैं। सूर ने अविद्या व तृष्णा को भी माया कहा है।

काल

सूर ने काल को भी ब्याल रूप माना है। सर्प की तरह बिना भगवतानुग्रह के काल भी डस लेता है।

सृष्टि

सूरने सांख्य के पुरुष प्रकृतिवाद को अपनाया है। पुरुष सृष्टि का निमित्त कारण है और प्रकृति उस का उपादान कारण। यह प्रकृति तीन गुणों वाली है सत, रज व तम। प्रलय में इन की अवस्था साम्य होती है किन्तु सृष्टि होने हो ये विषम हो जाते हैं। एक प्रकृति है दूसरी विकृति। मन, बुद्धि, इन्द्रिय, शरीर प्रकृति का ही विकृत रूप है। पुरुष चेतन और तीनों गुणों से रहित है।

हमारा राष्ट्रीय स्वास्थ्य

— नन्दलाल शर्मा

किसी भी राष्ट्र के सर्वांगीण उत्थान में सार्वजनिक स्थ्य का स्थान बहुत महत्त्व पूर्ण समझा जाता है। तुतः तन्दुरुस्त जन बल ही देश की महान शक्ति है। कूल जल, वायु और प्राकृतिक साधन-सम्पन्नता के कारण रकाल से ही भारतीय सबल, सुन्दर, स्वस्थ और सुदीर्घ-जी रहे हैं। तथापि विगत कुछ शताब्दियों की पराधीनता फल-स्वरूप आर्थिकहीनता और पौष्टिक खाद्याभाव के रण सार्वजनिक स्वास्थ्य गिरता ही गया है। स्थिति तक बिगड़ी कि सम्पूर्ण देशों की तुलना में भारत की यु दर सर्वाधिक हो गई। रोगग्रस्त व्यक्तियों की दर में भी त ही सर्वाधिक बदकिस्मत है। आगे हम तुलनात्मक से हमारे जन्म, मृत्यु और जन्म वृद्धि के आंकड़ों की यता से राष्ट्रीय स्वास्थ्य का विवेचन करेंगे।

हमारे जन्म-मृत्यु के आंकड़े

भारत वर्ष में जन्म और मृत्यु संख्या का अनुपात से अधिक है। सन १९४१ में जन्म-संख्या और मृत्यु-ा प्रति सहस्र मनुष्यों के पीछे क्रमशः ३२ और २२ । यदि अन्य देशों में तुलना की जाय तो हमारी स्थिति प्रकार है:—

देश	जन्म-संख्या	मृत्यु संख्या
ब्रिटेन	१५.५	१२.५
फ्रान्स	१६.६	१५.७
जर्मनी	१५.९	११.०
इटली	२३.८	१४.०
संयुक्तराष्ट्र अमेरिका	१७.३	१०.९
जापान	३१.६	१८.१
आस्ट्रेलिया	१९.८	८.५
भारत वर्ष	३४.३	२३.८

सन् १९३८ में तो इंग्लैण्ड और वेल्सकी अपेक्षा भारतवर्ष जन्म संख्या और मृत्यु-संख्या दोनों ही दूनी से भी अधिक थीं। संसार के अन्य देशों में जन्म और मृत्युसंख्या दोनों ही संख्याओं में घटने की प्रवृत्ति पाई जाती है, किन्तु भारतवर्ष में विगत ५०-६० वर्षों से ऐसा कोई सुझाव देखने में नहीं आया। इसके लिए हम नीचे अंक उद्धृत करते हैं।

(प्रति सहस्र में)

सन	जन्म-संख्या	मृत्यु-संख्या
१८८५-१९०१	३५	२८
१९०१- ११	३८	३४
१९११- २१	३७	३४
१९२१- ३१	३५	२६
१९३१- ४१	३५	२४
१९४१- ५१	३०	२०

इन अंकों से तीन बातें स्पष्ट होती हैं:—(१) पाश्चात्य देशों की भांति हमारे देश में जन्म और मृत्यु दोनों के अनुपात में समय के साथ कमी नहीं हो रही है, (२) हमारी जन-संख्या का अनुपात अचल-सा ही बना हुआ है और (३) हमारी मृत्यु के अनुपात में ही घटती अथवा बढती हो रही है जो हमारी जन-संख्या के निर्धारण में मुख्य है। ये बातें वस्तुतः हमारे देश—दुर्भाग्य के चिन्ह हैं।

अन्य प्रगतिशील देशों में जन्म तथा मृत्यु-संख्या किस गति से घटती जा रही है, यह तथ्य निम्न अंकों के देखने से विदित हो जायगा:—

जन्म-संख्या (प्रतिसहस्र)

देश	वर्ष			
	१८७१-९१	१९२१-२५	१९२६-२७	१९४८-४९
ब्रिटेन	३२.५	२०.४	१७.२	१७
फ्रान्स	२३.९	१९.३	१८.२	१८
संयुक्तराष्ट्र अमेरिका		२२.५	१९.७	२४
जर्मनी	३६.६	२२.१	१८.४	१८

मृत्यु-संख्या

ब्रिटेन	१९.२	१२.४	१२.३	११.७
फ्रान्स	२२.१	१७.२	१६.८	१२.२
संयुक्तराष्ट्र अमेरिका		११.८	११.८	९.७
जर्मनी	२५.१	१३.३	११.८	१२.३

भारतवर्ष में जन-संख्या का आधिक्य भिन्न-भिन्न देशों की ० से ५, और ५ से १० वर्ष तक की आयुवालों की तुलना करने पर भी विदित हो जायगा:—

देश	आयु	
	० से ५	५ से १०
ब्रिटेन	७.५	८.३
संयुक्तराष्ट्र अमेरिका	९.३	१०.३
जापान	१४.१	१४.१
भारत	१५.३	१३.०

हमारा स्वास्थ्य

मृत्यु के प्रश्न को गंभीरतापूर्वक समझने के लिए हमें कुछ बातें ध्यान में रखनी चाहिये। सारे यूरोप की जन-संख्या (रूस को छोड कर) सन १९३१ में लगभग ३७ करोड़ ७० लाख थी और उसी काल में भारतवर्ष की जन-संख्या लगभग ३४ करोड थी। भारत में अधिक जन-संख्या वाले यूरोप में १९२३ और १९३१ के बीच में लगभग ४ करोड २५ लाख व्यक्तियों की मृत्यु हुई और इसी समय में भारतवर्ष में मृत्यु-संख्या लगभग ५ लाख से कुछ अधिक थी। डिग्बी और लिली के अनुसार गत शताब्दी में हमारे यहां ३१ दुर्भिक्ष पडे जिन में लगभग ६ करोड २५ लाख व्यक्तियों को जीवन से हाथ धोना पडा। सन १९०१ और १९४३ के दुर्भिक्ष में क्रमशः १० लाख और ३० लाख मौत के मुंह में चले गए। श्री रसल और श्री राजा के कथनानुसार सन् १९०१ से ३१ तक भिन्न-भिन्न रोगों द्वारा जो इस देश में मृत्युएं हुई हैं उनका विवरण इस प्रकार है:—

रोग	मृत्यु-संख्या
हैजा	१ करोड ७ लाख
इन्फ्लुएंजा	१ करोड ४० लाख
महामारी (प्लेग)	१ करोड २५ लाख
मलेरिया	३ करोड

उपरोक्त तथ्यों से हमें यह विदित होता है कि इस देश पर यमराज का राज्य था। यहां समय-समय पर देश के प्रत्येक कोने में छुआछूत आदि की बीमारियां फैलती रहती हैं। यहां जीवन मूल्यहीन हो गया है। मलेरिया तो एक प्रकार से भारतीय जनता का जीवन सहचर बन चुका है और नियमित रूप से जोंक की भांति उनके शक्ति स्रोत को चूसता रहता है। क्षय तथा अन्य बीमारियों द्वारा भी इसी तरह निर्विरोध जन-संहार का क्रम चलता रहता है।

बाल-मृत्यु-संख्या

हमारी अधिक मृत्यु संख्याकी वृद्धि, बचपन में बच्चों की और मातृत्व काल में माताओं की बडे अनुपात में होती है। छोटी आयु में ही विवाह हो जाने के फलस्वरूप यहां की नव दम्पति छोटी अवस्था में ही मां-बाप बन जाती हैं। इस अवस्था के बालक प्राय: निस्तेज और निर्बल होते हैं और शीघ्र ही कुम्हला जाते हैं। भारत सरकार की १९३८ई. की विज्ञप्ति के अनुसार (हेल्थ बुलेटिन नं. २३) सन् १९३५, में १२ लाख ५० हजार बच्चों की मृत्यु हो गई। इन में से अधिकांश बच्चों की मृत्यु उचित खुराक न मिलने से हुई।

हमारे देश में प्रति सहस्र जन्म बच्चों में से औसतन १७९ बच्चे आयु के पहले वर्ष में ही मर जाते हैं। इंग्लैंड और वेल्स में यह संख्या ६० है और जब कि भारतवर्ष में केवल २० प्रतिशत है। नीचे के कोष्टक में भारत के कुछ नगरों के बच्चों की मृत्यु-संख्या का विवरण है—

मृत्यु-संख्या (प्रति सहस्र)

शहर	१९३५
बम्बई	२४८
कलकत्ता	२३९
मद्रास	२२७
लखनऊ	२२४
नागपुर	२६१
दिल्ली	१९६
अहमदाबाद	२८०

अन्य देशों में शिशुओं की मृत्यु के अनुपात से तुलना करने पर हमारी स्थिति निम्न उठती है:—

प्रति सहस्र शिशुओं की मृत्यु-संख्या

संयुक्तराष्ट्र अमेरिका	४६
आस्ट्रेलिया	३८
ब्रिटेन	५५
जर्मनी	६३
जापान	१४८
फ्रान्स	९१
भारत	१५०
न्यूजीलेंड	३१

स्त्रियों की मृत्यु-संख्या

जैसा कि हम ऊपर संकेत कर आये हैं कि इस देश में ...संख्या की अधिक वृद्धिका एक महत्वपूर्ण करण मातृत्व ...में स्त्रियों की अधिक संख्या में मृत्यु है। प्रजनन के ...उचित चिकित्सा तथा अन्य सहायता न मिलने के ...तथा प्रसूतां को अवैज्ञानिक ढंग से जिन दूषित ...स्थितियों में रखा जाता है, ये सब कारण स्त्रियों कीमृत्यु-...ख्या में वृद्धि करते हैं। संसार के अन्य सब राष्ट्रों ...स्त्रियों को प्रसवकाल में उचित सुविधाएं दी जाती हैं, ...चिकित्सा के ढंग उच्च कोटि के रहते हैं। भारतवर्ष ...प्रसूति काल में जच्चाओं की मृत्यु भी सबसे अधिक है। ...जान मेगा के अनुसार यहां प्रति सहस्र जच्चाओं में ...मृत्यु-संख्या का अनुपात लगभग २४०.५ है। इन अंकों ...देखने से विदित हो जाता है कि भारतवासी जीवन के ...उदासीन है। यहां जीवन का कोई मूल्य और महत्व ...है यह समाज का अत्याचार है जो हमारी स्त्रियों को ...अल्पायु में ही गर्भ धारण करने के लिए बाध्य करता है। ...स्त्रियों के प्रसव काल की मृत्यु के निम्न लिखित कारण हैं:- (१) अल्पायु में विवाह (२) अस्वस्थ और दूषित वातावरण (३) अशिक्षित और अयोग्य दाइयां और दवा की कमी। भारत में प्रजनन-काल में स्त्रियों की मृत्यु-संख्या (१५ से ४० वर्ष की आयु के बीच में) १०.७ है। इंग्लैंड में बच्चों की मृत्यु-संख्या का अनुपात ४.११ है। इस देश में जहां स्त्रियों को अल्पायु में ही गर्भ धारण करना पडता है, वहां दूसरी ओर उन्हें बार-बार गर्भ धारण करने का भी अत्याचार सहना पड़ता है जैसे वे कोई सन्तानोत्पत्ति की मशीन हों। इस प्रकार अनेक बच्चों को जन्म देने के बाद उन में अधिक शक्ति शेष नहीं बचती। इस प्रकार के जीवन विनाश का परिणाम यह है कि भारतीय स्त्री औसतन ४.२ बच्चों को जन्म देती है जिन में केवल २.९ बच्चे ही जीवित रह पाते हैं।

उपर्युक्त विवेचन से हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि यद्यपि हमारे देश में जन्म-संख्या का अनुपात संसार के अन्य सभी देशों से अधिक है किन्तु साथ ही मूल्य की संख्या भी किसी देश से कम नहीं है। फलतः जन-संख्या की प्रगति अन्य राष्ट्रों से कम नहीं हुई है। १० वर्ष की अवस्था समाप्त होते-होते लगभग ४५ प्रतिशत भारतवासी संसार छोड चुकते हैं और ३० वर्ष की आयु तक प्रति एक लाख व्यक्तियों में से ३५, ८०० व्यक्ति जीवित रह पाते हैं जब कि ब्रिटेन में इसी संख्या में ७२ हजार व्यक्ति जीवित रहते हैं।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद हमारी लोक-प्रिय राष्ट्रीय सरकार ने जन-स्वास्थ्य को सुधारने के लिए बहुमुखी कार्य-क्रम अपनाएं हैं। हर्ष की बात है कि हमें विविध बीमारियों का मुकाबिला करने अथवा उनके निराकरण करने तथा सार्वजनिक-स्वास्थ्य को सुधार ने में संयुक्त राष्ट्र संघ का भी सक्रिय सहयोग मिल रहा हैं।

एकनाथ-ईश्वर निरूपण

— जगमोहनलाल चतुर्वेदी,

संदर्भानुसार 'धर्म' शब्द के भिन्न-भिन्न अर्थ होते हैं, परन्तु इस शब्द का मुख्य अर्थ है "पारलौकिक परिणाम का विचार"। यहां इसी अर्थ में इस शब्द का प्रयोग किया गया है। सृष्टि में इन्द्रिय गोचर जो पदार्थ हैं उनकी मीमांसा न करते हुए उनके परे जो पदार्थ हैं उन्हें ज्ञान द्वारा समझाने का विचार जिस ग्रन्थ में किया जाता है उसे धर्म ग्रन्थ कहते हैं। इन ग्रन्थों में युक्ति, प्रमाण और अनुभव से समझाने का प्रयत्न किया जाता है। धर्म ग्रन्थों में धर्म के अतिरिक्त नीति संबन्धी विषयों की भी चर्चा की जाती है। सृष्टि में सबसे उत्तम प्राणी मनुष्य है। उसका सृष्टि-कर्ता ईश्वर से क्या सम्बन्ध है और उसके प्रति मनुष्य का कर्तव्य क्या है—यह स्पष्ट करने का काम धर्म का है। उसी प्रकार एक मनुष्य का व्यवहार दूसरे मनुष्य से कैसा होना चाहिए—यह भी धर्मान्तर्गत ही है। मनुष्य के पारस्परिक व्यवहार सदा एक से नहीं होते; पारस्परिक संबन्धानुसार व्यवहार के नियम होते हैं उदाहरणार्थ, राजा-प्रजा, अड़ोसी-पड़ोसी, स्वामी-सेवक, पिता-पुत्र, पति-पत्नी इनके पारस्परिक कर्तव्य उनके विवक्षित सम्बन्ध के अनुसार भिन्न-भिन्न होते हैं। अस्तु, दूसरों को कष्ट न देते हुए जिन नियमों द्वारा मनुष्य मात्र सुख, संपत्ति और शांतता का उपभोग करते हैं उसे ही नीति समझना चाहिए।

श्री एकनाथने अपने ग्रन्थों में धर्म और नीति दोनों का बड़ा सुन्दर विवेचन किया है। एकनाथ के अध्यात्म विषयक ग्रन्थों में 'भागवत' और 'स्वात्मसुख' ये दो ग्रन्थ बड़े महत्व के हैं। भागवत में ईश्वर का निरूपण इस प्रकार किया गया है। श्रीकृष्ण उद्धव से कहते हैं:—

'मेरा स्वरूप अद्वैत समझो। मैं नाम, गुण, वर्ण इत्यादि नाना विभूतियों से रहित हूँ। ये सब मिथ्या है। मैं नित्य हूं और मुझमें किसी प्रकार का विकार नहीं होता। मेरे स्वरूप को पहचानने की गति न बुद्धि, मन और वाणी की है। इन्द्रियां बेचारी तो बुद्धि व मन की चेरी हैं। वे इस प्राणाधार को कैसे समझ सकती हैं।'

माझें स्वरूप अद्वैत जाण। नाहीं नांव गुण वर्ण।
तेथें नाना विभूति लक्षण। मिथ्या जाण वाचिकां॥
माझें स्वरूप नित्य निर्विकार। मन बुद्धि वाचा न कळे पार।
तेथें इन्द्रियें बापडीं किंकर। प्राण निधिकें नेगें॥

ईश्वर सब ब्रह्माण्ड में ओत-प्रोत भरा हुआ है। कोई अणु ऐसा नहीं जिसमें ईश्वर न हो। जीव व ईश्वर, गुण व गुणी, क्षेत्र व क्षेत्रज्ञ मैं ही हूं। मैं ही सबकी आत्मा हूं और सब जगह हूं। चिन्मात्र भी मैं ही हूं।

मज वेगळा अणु प्रमाण। सर्वथा जाण असेना।
जीव आणि ईश्वर। गुणी आणि गुणावतार।
क्षेत्र क्षेत्रज्ञ निर्धार। सर्व ही साचार मीचि मी।
मज वेगळा गा अणु मात्र। उरलें नाहीं स्वतंत्र।
मी सर्वात्मा सर्वीं सर्वत्र। केवळ चिन्मात्र तेंहि मी॥
मज वेगळे गा येथें काहीं। उद्धवा आतां उरलेंचि नाहीं।
सर्व साधारण पाहीं। सर्व देहीं मी असे।

उपरोक्त ओवियों में "एकमेवाद्वितीयं ब्रह्म" इस सिद्धान्त को कैसी सुन्दरता से व्यक्त किया गया है। ईश्वर की सर्व व्यापकता सिद्ध करने के पश्चात श्री एकनाथ ने जीव और ब्रह्म की एकता स्थापित की है। नाथ महाराज कहते हैं कि ब्रह्म माया अथवा अज्ञान के आवरण से आच्छन्न होने के कारण जीव की उपाधि प्राप्त कर लेता है। वास्तव में जीव और ब्रह्म का सम्बन्ध उसी प्रकार का है जिस प्रकार कि लहर और समुद्र के पानी का। हवा के चलने से लहरें उठती हैं। जब हवा का चलना बन्द हो जाता है तो लहरें भी शेष नहीं रहतीं। इसी प्रकार जब माया या अविद्या का आवरण हट जाता है तो जीव व ब्रह्म में कोई भेद नहीं रहता।

सृष्टि में जो जो वस्तुएं हैं वे सब ब्रह्ममय हैं। कोई पदार्थ अथवा स्थान ब्रह्म से खाली नहीं है। वैकुण्ठ, कैलाश,

सब जगह अनन्त ब्रह्म समाया हुआ है। इस ब्रह्म का आदि है, न मध्य और न अन्त ही। ब्रह्म सब काल में रस है। ब्रह्म एक है; एक से अनेक हो जाता है फिर एक है।

कल्पना अविद्या तेणें झाला जीव।
मायोपाधी शीव बोलीजे तो ॥ १ ॥
जीव शीव दोन्हीं हरिरूप तरंग।
सिंधु तो अभंग नेणें हरी ॥ २ ॥
जें जें दृष्टि दीसे तें तें हरि रूप।
तयावीण ठाव रीता कोठें ॥ ३ ॥
वैकुंठ कैलासी तीर्थ क्षेत्रीं देव।
अनंतासी अन्त पाहतां नाहीं ॥ ४ ॥
आदि मध्य अन्ती अवघा हरी एक।
एकचो अनेक एक हरी ॥ ५ ॥

श्री तुलसीदास ने भी इसी प्रकार के भाव प्रकट किए श्रीरामचन्द्रजी के पूछने पर कि, 'कहां रहूँ?' वाल्मीकिने कि, 'तुमने पूछा कि मैं कहां रहूं परन्तु आपको सर्व जान यह कहते में सकुचाता हूं कि आप वहां रहें।'

छेउ मोहिं कि रहौं कहं, मैं कहतेउ सकचाउं।
न होहु तहं देहु कहि, तुमहि दिखावौं ठाउं ॥

जीव व ब्रह्म की एकता का जो दृष्टान्त श्री एकनाथ ने है, राम व सीता की एकता का वही दृष्टान्त श्री तुलसीदास ने भी दिया है। जिस भावको एकनाथ "जीव शीव हरि रूप तरंग। सिंधुतो अभंग नेणे हरी" से किया है उसी भाव को तुलसीदासने इस दोहे से प्रकट है:—

गिरा अर्थ जलबीचि सम, कहियत भिन्न न भिन्न
बन्दौं सीताराम पद, जिनहिं परम प्रिय खिन्न ॥

तुलसीदासने जीवन को अविनाशी, चेतन, शुद्ध, सुखराशी व ईश्वर का अंश माना है। माया के वश होने से उसे जीव की उपाधि प्राप्त हुई है।

ईश्वर अंश जीव अविनाशी। चेतन अमल सहज सुखरासी ॥
सो मायावश भयउ गुसाईं। बंध्यो कीट मरकट की नाईं ॥

जिस भाव की व्यंजना एकनाथ ने कल्पना अविद्या और माया से की है उसे तुलसीदास ने माया से व्यक्त किया है।

श्री एकनाथ ने फिर जगत का मिथ्यापन बतलाने के लिए कुछ दृष्टांत दिए हैं। वे कहते हैं :—

'जैसे अन्धेरे में पड़ी हुई डोरी को देखकर सांप का भ्रम होता है और हृदय भय से धड़कने और शरीर कांपने लगता है। इस डर से बचने के लिए हम भाग जाने का प्रयत्न करते हैं। यदि दीप के प्रकाश में देखा जाय तो यह निश्चय हो जाता है कि यह डोरी है और सांप का भ्रम नष्ट हो जाता है। उसी माया व अज्ञान के योग से हम ब्रह्म की जगह संसार व उसके प्रपंच को सत्य और विषय प्राप्ति को आनन्द समझ बैठते हैं। यदि विषय प्राप्ति में कोई हानि अथवा बाधा हुई तो दुःख अनुभव करते हैं। इस संसर्ग से देहाभिमान उत्पन्न होता है और मेरी स्त्री, मेरा पुत्र, मेरा घर इत्यादि संबन्ध जोड़ लेते हैं; परन्तु आत्मज्ञान रूपी दीप ज्ञानी पुरुष के अन्तःकरण में प्रज्वलित होते ही प्रकाश हो जाता है और अज्ञानांधकार नष्ट हो जाता है फिर उसे सब जगत ब्रह्ममय दिखाई देने लगता है।'

वेद शास्त्र परिनिष्ठित। श्रवण मनन अभ्यास युक्त
ज्यासी ब्रह्म विद्या प्राप्त। सुनिश्चित स्वानुभवें ॥
तोचि अनुभव ऐसा। दोरा अंगी सर्प जैसा।
न मारितां मरे अपैसा। भव भ्रम तैसा ज्या नाहीं ॥

तुलसीदासने भी जगत के मिथ्यापन को व्यक्त करने के लिए डोरी में सांप के भ्रम होने का दृष्टांत दिया है अथवा मृग जल और सीप में चांदी की भांति के दृष्टांत भी दिए हैं।

रजत सीप महं भास जिमि, यथा भानुकर वारि।
यदपि मृषा तिहुं काल सोइ, भ्रम न सकै कोइ टारि ॥

सोवत सपनेहुं सहै संसृति संताप रे।
बूड्यो मृगवारि, खायो जेवरी को सांप रे ॥

जिस प्रकार नट राजा व रानी का अभिनय करता है। वह न राजा ही होता है और न रानी ही। उसी प्रकार पुरुष व प्रकृति दोनों मिथ्या हैं अथवा यह समझो कि स्वप्न में कोई यह देखता है कि मैं राजा हो गया हूं परन्तु जागने पर

वह मनुष्य अपने में कोई परिवर्तन नहीं पाता। इसी प्रकार जीव की हैसियत से जो-जो कर्म किए जाते हैं उनको मिथ्या ही समझना चाहिए।

जेंवि नटाची रावो राणी। दोघें खेळती लटकेपणीं।
तेंवि प्रकृति पुरुष उभउनी। मिथ्यापणीं जो जाणे॥
स्वप्नीं चीं नाना कर्मे जाण। त्यांचें जागृतीं न लगे बंधन।
तेंवि मिथ्या निज कर्माचरण। जीवित्वेंशीं जाण जो देखो॥

तुलसीदास ने इसी भाव को यों स्पष्ट किया है:—

ज्यों सपने सिर काटे कोइ। बिनु जागे दु:ख दूर न होइ॥
सपने होय भिखारि नृप, रंक नाक पति होइ।
जागे लाभ न हानि कछु, तिमि प्रपंच जिय जोइ॥

एकनाथ ने जिस भाव को "नटाची रावो राणी" से व्यक्त किया है उसे तुलसीदासने "सपने होय भिखारि नृप। रंक नाक पति होइ" से प्रकट किया है। जिस भाव की व्यंजना एकनाथ ने "स्वप्नीं चीं नाना कर्मे जाण। त्यांचें जागृतीं न लगे बंधन" से की है उसे तुलसीदास ने "जागे लाभ न हानि कछु, तिमि प्रपंच जिय जोइ" से व्यक्त किया है।

एकनाथ अन्यत्र एक अभंग में कहते हैं कि, 'सर्व व्यापक परमेश्वर अखिल ब्रह्माण्ड में ओत-प्रोत भरा हुआ है। जो परमेश्वर अन्तर्बाह्य व्याप्त है और जो जगत का उत्पादक है उसे तलाश करने के लिए लोग भटकते-फिरते हैं। परमात्मा अत्यन्त निकट है यह न जानकर मनुष्य व्रत और तपस्या करते हैं वे उस परमात्मा की तलाश में तीर्थ यात्रा करके व्यर्थ ही अपने शरीर को कष्ट देते हैं। यह कैसी भूल है! क्या परमेश्वर से रहित कोई भी पदार्थ है? राम तो प्रत्येक वस्तु में रम रहा है उसे ढूंढने के लिए वृन्दावन जाने की जरूरत नहीं है। वह तो तुलसी की मूल, डाल व पत्ते सब में मौजूद है। उसे तलाश करने के लिए कहीं जाने की आवश्यकता नहीं है। भगवान भक्ति से जहाँ चाहो प्रकट हो सकते हैं। यदि भावना हो तो तुलसी में कृष्ण के दर्शन हो सकते हैं।

राम जवळी चूकले। व्रतें तें भावावळे॥
तीर्थीं नाहीं क्षेत्रीं नाहीं। जवळी असतां भ्रांती पाही॥
जया लागी सैरा हिंडे। तोचि तया मागें पुढें॥
असता सबाह्य अंतरीं। नाहीं म्हणोनी दैन्य करी॥
एका जनार्दन योगें। राम होय जगचि अंगें॥
पाहूं गेलों तुळसीवन। वृंदावनीं जनार्दन॥
मूळ डाळ चाहतां पान। तुळसीवास जनार्दन॥
तुळसीवावें कोठें जावों। तुळसी माजी दीसे देवो॥
एका जनार्दनीं भावो। तुळसी झाला कृष्ण रावो॥

अभंग में "यह दृश्यमान जगत ब्रह्म है" इस सिद्धान्त का कितनी युक्ति के साथ प्रतिपादन किया गया है।

तुलसीदास ने भी विनय पत्रिका में इसी भाव को दर्शाया है। वे कहते हैं कि श्री रघुनाथजी हृदय कमल में विराजमान हैं। इनको ढूंढने के लिए बाहर दौड़-धूप करने की आवश्यकता नहीं है। जिस प्रकार मृग की नाभि में कस्तूरी होती है परन्तु वह इस सुगंध को पहाड़ों, वृक्षों, लताओं और बिलों में इधर उधर ढूंढता फिरता है उसी प्रकार जीव ने अपने यथार्थ ज्ञान को खो दिया है और वह ईश्वर को बाहर ढूंढ रहा है।

याहिते मैं हरि! ग्यान गँवायो।
परिहर हृदय कमल रघुनाथहिं,
बाहर फिरत विकल भयो धायो।
ज्यों कुरंग निज अंग रुचिर मद,
अति मति हीन मरम नहिं पायो।
खोजत गिरि, तरु, लता, भूमि,
बिल परम सुगंध कहाँ धौं आयो॥

इसी भाव को कबीर ने एक छोटे से दोहे में बड़ी सुन्दरता से व्यक्त किया है—

तेरा साईं तुझमें, ज्यों पुहपन में बास।
कस्तूरी का मिरग ज्यों, फिर-फिर ढूंढे घास॥

…के साहित्य-संसार के प्रणेता—

श्री बनारसीदास चतुर्वेदी

— भगतशरण चतुर्वेदी 'शरण'

आज जिस पर काँग्रेस सरकार का, एक सहस्त्र वर्ष जिस पर परम वीर क्षत्रिय नृपतियों का और इसी प्रकार …के पाँच सहस्त्र वर्ष के पृष्ठों के परिवर्तित करने जिस आनन्दकंद द्वारिकाधीश श्रीकृष्ण का वरद हस्त था–उसी …भारत की राजधानी नई दिल्ली में मैं था।

इरविन रोड़ पर स्थित विलिंगडन चिकित्सालय से बाएं मार्ग पर राष्ट्रपति भवन, जिस पर लहराता हुआ ध्वज …ही दृष्टिगत हो रहा था एवं वही दक्षिण दिशा की साहित्याकाश में इन्दूवत प्रदीप्त जिनकी आभा से आज साहित्य जगत आलोकित है, महान् आलोचक श्री बनारसीदास जी चतुर्वेदी की पीलिमा लिए हुए कोठी थी।

सायंकाल के सात बजे थे। श्री चतुर्वेदी जी एवं मैं …में बैठे हुए थे। मुझे उसी मार्ग का पथिक जान …की अन्तिम सीमा पर आप स्वयं पहुंच चुके थे। श्री …र्वेदी जी बडी ही सरस वाणी में अपनी अनुभूतियाँ सुनाने …। उसकी प्रशंसा करने के लिए मैं तो स्वयं को नितान्त …मर्थ पाता हूं एवं मेरे पास कोई शब्द कोष में ऐसा शब्द …भी नहीं जिनका आपकी प्रशंसा के हेतु उपयोग हो सके। …तो अत्यन्त गहन एवं अनुभव पर आधारित था तथापि …ति के अनुसार अपने नवीन लेख की प्रगति के लिए …लिपिबद्ध करना अथच उस साहित्य-गगन के शशि …ज्योत्स्ना की शीतलता से सबको शीतल करना मैंने …वश्यकीय एवं उचित समझा।

आदरणीय श्री चतुर्वेदी जी की वार्ता का यह सारांश है– "मैंने सन् १९१२ से साहित्य-क्षेत्र में पदार्पण किया जबकि …अवस्था लगभग १९ अथवा २० वर्ष की थी और तब …निरन्तर ४१ वर्ष से साधना करता आ रहा हूं।

"प्रथम-प्रथम साहित्यकार बनने के हेतु कुछ गुण अनिवार्य …र आवश्यकीय हो जाते है और बिना उनको अपनाये कभी भी एक नवीन साहित्यकार सफल साहित्यिक नहीं बन सकता।

"अतएव सर्व प्रथम किसी भी साहित्यकार को किसी प्रसिद्ध कलाकार की मूल रचना का अनुवाद करना प्रारम्भ करना चाहिये अथवा उसी आधार पर तत्सम्बन्धी कोई ग्रन्थ लिख दे। स्टीफन ज्विग का उदाहरण देते हुए श्री चतुर्वेदी जी ने कहा।"

श्री चतुर्वेदी जी ने इसी प्रसंग को लेते हुए बताया कि 'आजकल के नवीन लेखकों को अधिक लिखने का एक व्यसन-सा है किन्तु यह ठीक नहीं। उन्हें कम किन्तु उत्कृष्ट लिखना चाहिये। श्री हजारी प्रसाद द्विवेदी का उदाहरण देते हुए आपने कहा कि एक बार द्विवेदी जी ने कहा था कि कोई घानवाला किसी नदी के किनारे अपने घान को उस पार ले जाने की इच्छा से नाव की प्रतीक्षा में खड़ा हुआ था। नाव आने पर उसने सारा घान उस पर रखदिया और फिर स्वयं भी चढ़ने लगा। इस पर मल्लाह ने अस्वीकृति देते हुए कहा कि बस मेरी नाव में इतनी ही जगह है इसके अतिरिक्त तुम्हारे लिए कोई स्थान नहीं। इसी प्रकार आज के लेखक गण पहिले तो व्यर्थ की रचना लिखा करते हैं जिनके कारण उनका स्वयं का भी अस्तित्व मिट जाता है और फिर काल भगवान के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि काल भगवान भी व्यर्थ की कोई वस्तु अपने पास नहीं रखते वे केवल उत्कृष्टता ही चाहते हैं इस लिए प्रत्येक रचना उत्कृष्ट होनी चाहिये।'

साहित्यकार के स्वास्थ्य के बारे में भी चतुर्वेदी जी ने कहा कि उसे सर्वदा इस विषय में सतर्क एवं सजग रहना चाहिये। यदि उसका स्वास्थ्य ही ठीक न होगा तब वह देश अथवा समाज की क्या सेवा कर सकेगा?'

नियम पर अधिक जोर देते हुए आपने बताया कि "एक साहित्यकार का जीवन नियम पर आधारित होना चाहिये।

अनियमित जीवन होने से उसकी भविष्य की उन्नति सम्भव नहीं।" निर्धारित विषय पर नियम से लिखने पर भी श्री चतुर्वेदी जी ने जोर दिया और इसी प्रसंग में उन्होंने श्री प्रेमचन्द मुन्शी का उदाहरण देते हुए कहा कि एक बार दिल्ली आने पर चार दिन तक रहने के पश्चात् उन्होंने यह बताया कि इन पचीस वर्षों के समय में यह चार दिन ही ऐसे गये हैं जिनमें मैंने कुछ न लिखा हो। यह स्पष्ट प्रमाण है, उनके नियमित जीवन का एवं साधना का।

चरित्र एवं स्तर के बारे में बताते हुए श्री बनारसी दासजी ने कहा कि साहित्यकार का चरित्र अत्यन्त ही गठित एवं महान होना चाहिये तथा अपना स्तर (Status) बनाने के लिए भी उसे सर्वदा प्रयत्न शील रहना चाहिये।

सम्पर्क के विषय में मेरे पूछने पर आपने कहा कि सर्वदा अपना सम्पर्क ऊंचे लोगों से रखना चाहिये तथा उच्च प्रसिद्ध साहित्यकारों से ही सम्बन्ध बढ़ाना चाहिये।

आजकल लेखक क्यों नहीं उत्कृष्ट रचनायें लिख पाते हैं? पूछने पर श्री चतुर्वेदी जी ने बताया कि इसमें केवल अध्ययन की कमी है। गहन अध्ययन आवश्यकीय है, उच्च रचनाओं के सृजन के लिए।

सबसे मुख्य उन्होंने आहार को बताया। साहित्यकार का आहार सात्विक होना चाहिये। यदि आहार ठीक अथवा सात्विक नहीं है तो कभी भी उत्कृष्ट रचनाएं नहीं बन सकतीं। इसी विषय में आपने बताया कि वे (श्री चतुर्वेदी जी) एक प्रसिद्ध विदेशी कवि को कलकत्ते के स्टेशन पर छोड़ने गये थे। तब वहां किसी उनके परिचितने उस कलाकार को बंगाल की प्रसिद्ध मिठाई 'संदेश' की एक टोकरी दी। इस पर उस टोकरी को लेकर वापिस करते हुए उन्होंने कहा कि 'मुझे कब कविता लिखनी है इस लिए मैं तो केवल संतों का रस ही लूंगा अतएव मेरी तरफ से यह मिठाई तुम बच्चों में वितरित कर देना।'.

इस प्रकार श्री चतुर्वेदी जी ने कहा कि सारा मस्तिष्क का संतुलन एवं रचना का सृजन सब कुछ आहार पर ही अधारित है अतएव कलाकार के लिए सात्विकाहारी होना अत्यन्त आवश्यक है।

लगभग एक घन्टे तक इसी तरह मैं आनन्द के सरोवर में डूबा रहा। अन्त में समय अधिक तथा श्री चतुर्वेदी जी का टहलने का समय हो जाने के कारण इस विषय पर वार्ता स्थगित करनी पड़ी किन्तु यह ऐसी वार्ता है जो कि नवीन तथा चिर नवीन रहेगी, जो नवीन साहित्यकारों को सर्वदा प्रशस्त मार्ग पर आरूढ होने की नवीन प्रेरणा देती रहेगी।

कहानी

हरामखोर

— रामरत्न बडोला

नसें टूटने लगीं। माथे पर पसीने की बूंदें आ गईं। सांस खींचकर अंगड़ाई लेते हुये उसके मुख से ला ओह! उफ! हा भगवान! फिर जम्हाई ली उसने, धम्म से भूमि पर बैठ गया।

आकाश शून्य था। सितारे उसकी ओर देख रहे थे वह सितारों की ओर। दो खिडकियों पर टिमटिमाते दीप जैसे एक दूसरे को देखते हैं, कौन बुझेगा पहिले? तारों की जिन्दगी सुबह तक, दीपों का जीवन कुछ घंटों और उसका जीवन........ अनिश्चित है, आज, परसों, एक वर्ष, दो वर्ष, दस वर्ष, बीस-तीस और पर कब? क्या जिन्दगी की दीमक लगी शाहतीर को इसी तरह घसीटें ले चलेगा।

रात कितनी सुहानी है। सामने रात की रानी के से महक आ रही है। वह लडखड़ाता हुआ उठा और तक गया। अन्धेरे में आंखें फाड़कर एक बार पेड़ को पर काली औरत के छितरे हुए बालों की तरह अन्धेरे पेड़ खड़ा था। न कहीं दिखाई देती थी पत्तों की हरियाली और न फूलों का रंग। उसने सोचा अंधियारा खूब चीज है, जो चाहे अन्धकार की ओट में कर लो देखने वाला है! क्या ओट है, क्या टट्टी है, क्या रा है जिसके भीतर आंखे गड़ाकर भी परछाईं नहीं दिखाई दे सकती।

अंधियारे की ओट में ही तो सब कुछ होता है। बडे बनते हैं, आसमान से होड़ लेने वाले, लाखों का न्यारा-न्यारा, इज्जत, किस्मत, बड़प्पन सब वहीं पलती है। उसके साहब को रात में एक कार वाला नकद दो हजार रुपया दे गया। उसे मालूम है। उसने बन्द किवाड़ों के भीतर दो हजार की बातचीत भी सुनी थी। भर में दो हजार! दो हजार की तस्वीर उसके दिमाग पर खिंच गई। वह एक बार प्रसन्न मुद्रा में पेड़ से लिपटकर मुस्कराने लगा, जैसे मानो दो हजार रुपये उसे ही मिले हों, ठीक पेड़ से उसी भांति लिपट कर जैसे रुपये की खुशी में उसके साहब ने बीवी के गले में बाहें डाली थीं। रात की रानी की खुशबू उसके नाक के भीतर घुसने लगी जैसे मेमसाहिबा के बालों पर चुपडे गोल्डन आयना हेअर आइल की खुशबू आलिंगन लेते हुये साहब की नाक में घुसी होगी।

उसका नाम है जंग-बहादुर। जब वह पैदा हुआ तो बाप ने सोचा कि लड़का बड़ा होकर कप्तान बनेगा। सेना का कप्तान —क्योंकि ज्योतिषी ने उसके ग्रहों को देखकर घोषणा कर दी थी। इसीलिए उसका नाम रखा गया जंग-बहादुर। पर जंग बहादुर ने जंग बहादुर होकर अभी तक युद्ध की तस्वीर भी नहीं देखी थी, असली जंग की तो बात दूर रही। बाप जल्दी मर गया। उस समय जंग बहादुर बारह वर्ष का बच्चा था पर खानदान का भार पड गया उसके कन्धों पर। बाप कोई जायदाद नहीं छोड़ गये थे कि जंगबहादुर नाबालिग होकर भी राजकुमार या वनिक-पुत्रों की भांति चैन की बंसी बजाकर जीता। उसका बाप करता था मेहनत-मजदूरी। गांव में आज किसी का हल चला दिया और कल किसी का—बस मजूरी मिली और नून-गुड चल गया। परन्तु जंगू तो इसके काबिल भी न था, बारह वर्ष का बच्चा क्या किसी का हल चलायेगा! हल लगाने के बजाय बैलों की जोड़ी को गयेल कर देगा। जंगू ने लोगों के गोर चराने का कार्य भार सम्हाल लिया। सेना के कप्तान जंगू डंगरों के कप्तान बन गये, लेकिन मां के दिल में अब भी कप्तानियत के मंसूबे थे। कप्तान होना कोई बड़ी बात नहीं, किस्मत की बात तो है। कल का डबरूनेगी जिसका बाप मिर्च बेचता था, कप्तान से भी बढकर मेजर हो गया है, अब की भर्ती खुली तो वह जंगू को अवश्य भर्ती करवा देगी। जंगू के नव ग्रहों में साफ कप्तान होने के लक्षण हैं। मां ने कई ज्योतिषियों को जंगू का जन्म-पत्र दिखलाया तो

सभी ने यही कहा। जंगू के लिए एक दुलहिन लाना आवश्यक समझ मां ने गांव के बड़े-बूढ़ों की खुशामदें करनी आरंभ कीं। लड़के का काला-मुण्ड करना आवश्यक है, कहीं वह आवारा न हो जाय, एक जाल तो रहेगा जिसमें से उचलकर वह निकल नहीं भाग सकता। तेरह वर्ष की अवस्था को पार करते ही जंगू गृहस्थीवाला हो गया। भावी कप्तानाइन आ गई परन्तु जंगू के कन्धों पर बहुत भार लादकर। पूरे दो हजार रुपये खाये बेटी के बाप ने। बेटी इसीलिये पाली थी उसने। वह तो क्रय-विक्रय की वस्तु थी। गरीब बाप की बेटी रुपया दे गई तो क्या बुरा हुआ। कल उसके बेटे का ब्याह होगा तो उसे भी देना होगा। अगर वह गरीब न होकर अमीर होता तो अपनी बेटी को दहेज देता।

अब जंग बहादुर गांव न रह सकेगा। उसे ब्याह के दो हजार कर्ज चुकाने हैं।

जंगू देश चल पड़ा रुपये कमाने। इन पहाड़ों में धरा ही क्या है जो जंगू को रुपये कमाने के साधन उपलब्ध कर दें। देश में तो बड़े २ शहर हैं, बड़ी २ मिलें हैं, बड़े २ नौकर हैं, बड़े २ साहब हैं, जंगू को आसानी से नौकरी मिल सकती है। जंगू ने मां विदा ली। मां ने बाहों में भरकर जंगू को चिपटाया। उसकी आंखों में आंसू थे। पत्नी से छिपकर जंगू मिला, दुलहिन ने भी आंखों में आंसू लाकर उसे बिदा दी। जंगू जब चला तो उसका जी चलने को न होता था। मां और पत्नी के आंसू एक ओर थे और दूसरी ओर थी सुन्दर-सुन्दर पहाड़ियां दूर तक फैली हुई, उसका गांव, खेत, खलिहान आदि। जंगू ने एक बार प्रेम-पूर्ण दृष्टि से सबकी ओर निहार कर बिदा ली।

पेड़ से लिपटे हुये जंगबहादुर की आंखों में आंसू छलछला आये। आज चार साल से वह घर नहीं गया। घर में नई–नवेली बहू उसकी बाट जोहती होगी। बूढ़ी मां उसे देखने को तरस रही होगी। दो हजार रुपये का बोझ उसके लिए बहुत भारी है, ऐसा बोझ जो जीवन-भर के लिये उसके कन्धों पर पड़ गया है और जिसके नीचे उसकी दुबी कटी कमर दबी रहकर कभी सीधी नहीं हो सकती। पर कल मिनटों में साहब को दो हजार रुपये दे गया कोई सेठ हाथ जोड़कर।

जंगू ने अपनी किस्मत को फटकारा। यह सब किस्मत का ही दोष है, पूर्व-जन्म के किए गये पापों का प्रायश्चित है। नहीं तो कल का डबरूनेगी जिसका बाप मिर्च बेचता था मेजर हो जाता। वह तो भर्ती भी नहीं हो सका। डाक्टरी में अन फिट कर दिया गया। डाक्टर ने कह दिया उसकी आंखें कमजोर हैं। उसे ज्योतिषियों पर क्रोध आने लगा जिन्होंने उसके भाग्य में कप्तान बनने की घोषणा कर दी थी। सब साले बदमाश और झूठे हैं। जंगू सोचने लगा पर वह पुनः अपने ही को कोसने लगा कि बेकार में उसने बेचारे ज्योतिषियों को गाली दी, वह तो भाग्य की बात जो ठहरी।

हां, जंगू इतना अवश्य जानता है कि उसे कर्ज चुकाना ही होगा अतः उसने कई जगह नौकरी की है। हलवाई के यहां, ढाबे में, बाबू लोगों के यहां। कभी बरतन मांजे है उसने, कभी बच्चों को खिलाया है और कभी कुलीगिरी भी की है। इन्जीनियर साहब के पास वह करीब दो साल से है। दिन भर सुबह से शाम, शाम से अर्ध-रात्रि तक वह काम पर ही जुटा रहता है। उसकी तनख्वाह है दस रुपये। इन चार वर्षों में ज्यों-त्यों करके वह केवल सौ रुपया घर भेज सका है, बस!

जंगू के सिर में दर्द था। वह बेहद थक गया था। वैसे तो प्रतिदिन ही जंगू सुबह से लेकर रात्रि के बारह बजे तक काम पर जुटा रहता था पर आज तो काम का हिमालय पर्वत उस के ऊपर टूट पड़ा था। साहब के यहां आज दावत थी। बड़े-बड़े लोग थे, जज, वकील, सेठ, साहब और उनके साथ थी उनकी फूलझड़ी-सी बीवियां, बेटियां और खिलौने से बच्चे। एक गांव की औरतें हैं जो सिर पर घास का गट्ठर लादकर लाती हैं और फिर घर में आकर खाना बनाती हैं। तत्पश्चात् पति के पैर भी दाब देती हैं बच्चों को खिलाती–पिलाती और झाड़ू बुहार चौका बर्तन सब करती है। और एक यह औरतें हैं कि चलते हुए भी जिनकी कमर मटकती है कि टूट ही जायेगी। कमर तो गांव की स्त्रियों की भी लचकती है, परंतु यह तो स्वयं ही जान २ कर ऐसा झटका देती है, मानों जिंदगी में दिखाय लचकाने के इनका और कोई काम न हो। है भी और क्या काम इन्हें, करें भी तो बेचारी क्या करें? जरा होशियार-

कई निकली तो किसी महिला मण्डल को बनाकर नाम रोशन करने लगी। जंगू को सब कुछ मालूम है उसकी साहिबा भी महिला मण्डल की सदस्य है। खूब दावतें होती हैं, बच्चों की प्रदर्शनी होती है और महिलाओं की उन्नति के नारे लगाये जाते हैं। चाय की सोंधी बास, क्राकरी में जेली, मिठाई, केक और न जाने क्या २ फिर देश की औरतों के हक के नारे फिर घर आकर यार और पिया का आलिंगन। दिन और रात ऐसी बीत जाती हैं, जैसे आंधी में फ़र्र से हाथ का कागज उड़ जाता है।

जंगू को उस दिन बहुत हंसी आई जिस दिन वह साहिबा के चमड़े का थैला लेकर महिला-मण्डल को मीटिंग में गया था, कोई मिस साहब जो अभी स्वयं अविवाहित थी बड़े जोर-शोरों में शिशु-पालन विषय पर भाषण दे रही थी। जंगू को जब मालूम हुआ कि लेक्चर देने वाली मेम साहिबा का अभी तक ब्याह नहीं हुआ है तो वह मन ही मन बुदबुदाया था। "वह भी खूब रही, अन्धा चला रास्ता बताने। खुद तो बच्चे का मुंह भी नहीं देखा और लेक्चर बच्चों की रक्षा के ऊपर! उल्लू क्या जाने दिन का प्रकाश, और वही दिन का महात्म्य बखाने, तो बेड़ा पार है समझो।"

जंगू को नींद आने लगी। दिन भर काम की थकान और पहली रात सो न सकने के कारण वह वहीं पेड़ के सहारे लेट गया। रात की रानी की भीनी सुगन्ध मस्त करने वाली थी। दो घड़ी सो लेने से जंगू की थकान मिट जायेगी और सिर का दर्द काफूर बनकर उड़ जायेगा। जंगू की नाक बजने लगी। पर अभी घर का काम पड़ा था। कल की दावत में इस्तेमाल की हुई क्राकरी और कुछ खाने के बर्तन रसोई घर में वैसे ही रखे थे। सोते समय लगभग दस बजे मेम साहिबा और साहब को दूध गर्म करके देना था। जंगू केवल दो मिनट का आराम लेने लगा था।

'जंगबहादुर'! ओ जंग बहादुर।'

बौखलाई हुई मेम साहिबा कमरों के चक्कर लगा रही थी। न जाने बदमाश कहां चला गया। बड़ा कामचोर है सुसरा। यहां कब से बैठे हैं और दूध नहीं दे गया।

पलंग पर साहब बैठे हुए फिल्म मैगजीन से एक्ट्रेसस की तस्वीरें देख रहे थे—कुछ नंगी, कुछ अधनंगी, कुछों के उरोज एवरेस्ट पहाड़ की तरह उठे हुये, कुछों के भाले के नोक की तरह पैने, कुछों की कमर का मरोड़ा इन्द्र धनुष-सा और किसी की आंखें दिल को बेध कर कटार की तरह शरीर के भीतर घुस जाने वाली।

'डार्लिंग!' श्रीमति को आवाज देते हुये साहबने पुकारा। "कितना फास्नीन पोज़ है। कितना जोरका किस देरही है हीरोइन। कमआन लेट भी हैव द सेम।

लेकिन डार्लिंग तो आस्ट्रेलिया की डार्लिंग नदी की तरह बाढ़ में थी। उसके दिमाग में था साला जंगबहादुर, कमीना जंग बहादुर जो मेमसाहिबा को बिना दूध पिलाये ही गायब हो गया था।

लेकिन तस्वीरों में मस्त इंजिनीयर साहब तो अपनी धुन में थे। वह श्रीमतिजी को पुकारते रहे "अरे सुनो भी तो, केवल इस पोज़ से ही तीन रुपये वसूल हो गये। इतना सुन्दर मैगज़ीन केवल तीन रुपये में।" यह है जनरलिज्म, यह है रिक्रिएशन का सर्वोच्च साधन।"

"साला न जाने कहां भाग गया। मुफ्त की रोटियां तोड़ता है और कहता है तनख्वाह बढ़ा दो। दस रुपये कम नहीं हैं तनख्वाह के और ऊपर से खाना कपड़ा मुफ्त, तब भी यह हालत है!"

मेमसाहिबा क्रोधित रसोईघर में घुसी। देखा, एक कुत्ता रसोई घर में घुस आया है। द्वार खुले थे तो वह घुस आया था और बड़े शौक से तश्तरियां चाट रहा था। मेमसाहिबा को देखकर कुत्ते की भोज में खलल पड़ गया और वह हड़बड़ा कर जान बचाने के लिए द्वार की ओर भाग पर द्वार पर मेमसाहब दुर्गा सी खड़ी थी। विपरीत दिशा में कुत्ता मुड़ा। सींखचें लगी खुली खिड़की से भाग निकलने के लिये उसने टेबल पर छलांग मारी। तड़ तड़ जमीन सब प्लेटें, प्याले, गिलासादि धाराशयी हो कर चूर २ होगये। मार्ग न निकलने पर कुत्ता पुनः द्वार की ओर मुड़ा और मेमसाहिबा के हाथ में डंडा देखकर इस बार और भी घबराया। उसने आव देखा न ताव और मेमसाहिबा के सिर के ऊपर से छलांग मार कर द्वार से

निकल गया। मेमसाहिबा ने डंडा घुमाया पर वह कुत्ते से टकराकर उन्हीं के सिर पर आ गिरा। हल्की चोट, बहुत थोड़ी सी, मामूली लगी मेमसाहिबा के सिर पर. परन्तु मेम साहब क्रोध में साड़ी से बाहर ही गई। एक करुणमयी चीत्कार निकली उनके मुख से। साहब के फिल्म मैगजिन का कापेडियन पोज ट्रेजिक हो गया। कीमती क्राकरी और डार्लिंग की यह दशा देखकर आंखों में खून उतर आया। कहीं भी वह हरामजादा जंगबहादुर नजर आयेगा तो वह उसका खून पी लेंगे। टार्च लेकर साहब बाहर निकल गये।

जंगबहादुर स्वप्न देख रहा था। वह अपने गांव गया हुआ है, वही ममतामयी मां, वही लज्जाशील बहू, वही पहाड़, वही खेत, वही खलिहान। पत्नी उसका सिर दाब रही है। उसने पत्नी की आंखों को चूमते हुए उसे एक सोने का हार पहना दिया है। मां के चरणों पर दो हजार रुपये रख दिये और मां निहाल हो गई हैं। खून पसीना एक करके कमाया होगा मेरे बेटे ने। मां ने प्यार से जंगू के सिर पर हाथ फेरा।

'तडाक' जंगू का सिर डंडे की चोट से घूम गया। इन्जीनियर साहब खड़े थे। नींद हवा हो गई। वह रात की रानी के वृक्ष के नीचे सो गया था। इन्जीनियर के नेत्रों में आग बरस रही थी उन्होंने बूटों से एक ठोकर जंगू को दी। "कमीना, हरामजादा, धोखेबाज, आनन्द से यहां आकर लेटा है। सूअर के बच्चे को कामकाज कुछ है नहीं और पड़ा २ मुफ्त की रोटियां तोड़ता है। आज कल की दुनिया से स्वामिभक्ति तो धुंए की तरह उड़ गई। पहले जमाने में तो स्वामी के नमक को हलाल साबित करने के लिये सेवक प्राण तक दे देते थे।"

थर्राता हुआ जंग बहादुर उठा। थकान और अनिद्रा से उसकी नसें अब भी अकड़ रही थी। सिर का दर्द डंडे की चोट से असह्य हो गया था और कमर का दर्द बूटों की ठोकर से द्विगुणित परन्तु साहब के सामने वह ऐसे खड़ा था मानों किसीका खून करते समय पकड लिया हो। साहब का काम अभी बाकी पड़ा था। साहब ठीक ही तो कह रहे हैं? उसने उन्हें दूध ठीक समय पर क्यों नहीं पिलाया। मेम साहब का बिस्तर क्यों नहीं झाडा। चौका बर्तन क्यों नहीं किया। प्लेटों को हिफाजत से क्यों नहीं रखा। दरवाजा बन्द क्यों नहीं किया रसोई घर का। इसे यह सब करके तब सोना चाहिये था। अनिद्रा और थकान की तो क्या, दो एक घंटे और जागकर क्या वह घिस जाता। साहब का कितना बडा नुकसान किया है इसने। एक दो घंटे की नीन्द भी खराब करदी। जंगू मासूम बच्चे की तरह रोने लगा। "साहब! माफ करो गलती हो गई आगे से न होगी।" उसके आंसुओं के साथ सिरसे बहता खून मिलकर कपोलों पर चू रहा था। खून के आंसू कुर्ते की बांह से जंगू ने पोंछने का प्रयत्न किया।

लेकिन साहब का पारा कम न हुआ। वे जंगू को गाली देते हुये चले जा रहे थे। "सुव्वर का बच्चा। नमक-हराम! लुच्चा! कमीना! बदमाश! निकल जा मेरे घर से। यहां हरामखोरों के लिये स्थान नहीं है!" पर जंगू साहब के पांव पर लोट गया क्यों कि वह हरामजादा और हरामखोर था साहब अकडते रहे जंगू के मालिक और समाज के प्रथम श्रेणी के इन्सान थे जब कि बेचारा जंगू समाज के सबसे निम्न वर्ग का मानव था—केवल एक बर्तन मांजने वाला नौकर!

कृष्णाकुमारी

लेखकः— " कौंडिन्य " अनुवादकः— " प्रशांत " पांडेय

(श्री डा. ए. वीरभद्रराव ' कौंडिन्य ' आंध्र प्रांत के प्रतिभासंपन्न व्यक्ति हैं । आप विजयवाडा रेडियो केन्द्र के डायरेक्टर हैं । यह एकांकी २४-४-५३ को विजयवाडा से प्रसारित हुई है । —सम्पादक)

(उदयपुर का राजमहल । राजकुमारी कृष्णा और सहेली कल्याणी आपस में वार्तालाप कर रही हैं ।)

कृष्णा : नारी जन्म कितना दुखदायी, कितनी आपदाओं से भरा हुआ है कल्याणी। क्या ही अच्छा होता राजकुल में न उत्पन्न हो कर मैं किसी सामान्य कुल में पैदा होती । जाति और कुल का अहंकार ही जीवन के आनन्द को नष्ट कर देता है ।

कल्याणी : ये क्या ? आज सुबह-सुबह तुम इतनी वेदांती क्यों बन गई हो ? आखिर तुम्हें यहां कमी किस बात की है ? तुम एक संपन्न कुल में जन्मी हो और इतना ही नहीं तुम तो राजस्थान के मुकुटमणि मेवाड के अधिपति राणा भीमसिंह की पुत्री हो । आखिर कमी ही क्या है ?......फिर भला यह दीनता क्यों ?

कृष्णा : क्या पिता के ऐश्वर्य, सम्पत्ति और प्रतिष्ठा पर ही हमारे सन्तोष और गौरव की बुनियाद है ? क्या इसके सिवा नारीका अपना कोई ऐश्वर्य नहीं ?

कल्याणी : क्यों नहीं ? इस में भी तुम्हें कौनसी कमी है ? तुम जैसी लावण्यमयी सुन्दरी है भी कोई भारत वर्ष में ? तुम्हारा पाणिग्रहण करने के लिये कितने ही राज-कुमार......

कृष्णा : बस; उन बातों की याद न दिलाओ । इस बारेमें मुझ जैसी अभागिन और कोई न होगी । मेरा सौन्दर्य ही मेरा अभिशाप है । सारे राजकुल के लिये धूमकेतु बने इस लावण्य को, भगवान मुझे न देते तो कितना अच्छा होता । ये आपसी कलह....केवल राजवंश ही नहीं, सारी राजपूत जाति के कितने पतन के कारण बने हैं । देख-रही हो न, इन तीन वर्षों में हमारी भूमि पर पलभर—पलभर के लिये भी शांति नहीं । यह सस्य शामला आज मरुभूमि बन गई है और इस सबका कारण कौन है ?

कल्याणी : कारण ? पीढ़ियों से चली आने वाली जलन, बगावत और नमक-हरामी, यही तो कारण है ।

कृष्णा : भोली कहीं की । भूल गई, जिस दिन पिताजी ने उदयपुर नरेश जगतसिंह से मेरा विवाह तय किया उसी दिन इस अशांति का जन्म हुआ ।

कल्याणी : कृष्णा, तुम्हारा विवाह तो केवल एक निमित्त मात्र था । सच्चा कारण तो कुछ और ही है । क्या तुम समझती हो कि तुम्हें पाने के लिए बवण्डर खडा हुआ है ? नहीं, सच तो यह है कि राजा मानसिंह के राज्यारोहण से असंतुष्ट शत्रुओंने ही यह षड्यन्त्र रचा है जो इस अशांति का कारण है ।

कृष्णा : जो भी हो कल्याणी; सारा अपयश तो मेरे ही पल्ले पडेगा । लोग कहेंगे...मेवाड की राजकुमारी के लिये उदयपुर और मारवाड नरेशोंने अपनी तलवारें तानी और दोनों धूल में मिल गए ।

कल्याणी : लेकिन बीती बातों की याद में अपने आपको परेशान करने से क्या फायदा ? जो हो गया सो हो गया । लड़ाई समाप्त हुए कुछ महीने बीत गये । छल-कपट से जगतसिंह पराजित किये गये और उन्हें भाग जाना पडा और अब तो राजा मानसिंह मारवाड के सिंहासन पर आरूढ़ हो

गये हैं। भूल जाओ उन पुरानी बातों को, बुरे दिन चले गए और राजस्थान में सुख-शान्ति का अरुणोदय हो रहा है। इस अरुणोदय के साथ ही तुम्हारी जीवन बेल पर भी नए पत्ते और फूल खिलेंगे। एक नया पर्व।

कृष्णा : कौन जाने इस ऊपरी शांति का वातावरण कब तक बना रहेगा। अभी-अभी पता चला है कि इस सारी चालबाज़ी, इस सारे कुचक्र की जड़ अमीरखां आज ही पिताजी से मिलने आया है। और जहां भी इसने कदम रखा है वहां सब कुछ तबाह हो गया है। यही मेरी बेचैनी का कारण है।

कल्याणी : कौन अमीरखां, मारवाड के मंत्री ?

कृष्णा : वह केवल मंत्री ही नहीं राज निर्माता भी है। इसी की कुमंत्रणा से आज मानसिंह मारवाड़ के राजा बन बैठे हैं। इसी लिए मुझे उसका आगमन इतना खल रहा है। मुझे डर है, यह शान्ति दूत बन कर आया है या प्रणय दूत।

— दूसरा दृश्य —

(राणा भीमसिंह का दरबार)

भीमसिंह : मारवाड के मन्त्री नवाब अमीरखां और युवराज अजीतसिंह हम आपका स्वागत करते हैं। जोधपुर केसरी राजा मानसिंह कुशल तो हैं ?

अमीरखां : खुदा-वन्दे-करीम की दुआ से वे राजी खुशी हैं। आपकी राजी खुशी जानने के बाद आप की खिदमत में यह संदेशा पहुंचाने का राजा साहब का हमें हुक्म हुआ है। पीढ़ियों से मेवाड और मारवाड में मित्रता चली आरही है। इसी मित्रता को अधिक निकट और दृढ बनाये रखने के लिए उदयपुर और जोधपुर राज घराने हमेशा रिश्तेदारी से अपना संबन्ध निभाते आये हैं। और इस पीढ़ी में यह टूट जाये ऐसी हमारी इच्छा नहीं है, उसी हेतु से हमने आपकी पुत्री कृष्णाकुमारी से विवाह कर उन्हें अपनी महारानी बनाने का निश्चय किया है। हमें आशा है, आप इस कार्य में अपनी स्वीकृति देंगे और इस आयोजन को शीघ्र संपन्न करेंगे।

भीमसिंह : खां साहब, क्या ये राजा मानसिंह के शब्द हैं ?

दौलतसिंह : यह संदेश है या आदेश ?

भीम : दौलतसिंह !...खां साहब, राजा मानसिंह की मित्रता हमारे लिए बहुमूल्य हो सकती है किन्तु इस प्रकार राज मर्यादा का उल्लंघन कर जबरदस्ती हम पर अपना संबंध लादने वाले राजा मानसिंह का यह सन्देश हमारे लिए प्रसन्नता की बात नहीं।

अजीत : प्रसन्नता और अप्रसन्नता तो जोधपुर नरेश को ही शोभा देती है।

अमीर : अजीत, फिजूल बहस करना हमारा काम नहीं। महाराज का संदेसा पहुंचाना ही राजदूत का फ़र्ज़ है। उसे ये चाहे मानें या न मान कर उसका फल भुगतें, इनकी मर्जी।

भीम : खां साहब मेरी पुत्री के विवाह की बातों से आप अपरिचित नहीं। और आप यह भी जानते हैं कि तीन वर्ष पूर्व जयपुर नरेश जगतसिंह से मेरी पुत्री का सम्बंध निश्चित हो चुका है।

अजीत : अच्छा ! जयपुर नरेश ? इन्हीं नाममात्र नरेश को अपना दामाद बनाने की राजा भीमसिंह की अभिलाषा थी।

भीम : अजीतसिंहजी, भाग्य और दुर्भाग्य संयोग की बात है। कुलीनता संपत्ति से श्रेष्ठ होती है। मेरी दृष्टि में धन-सम्पदा का इतना महत्व नहीं जितना कुलीनता का। और फिर कन्या का विवाह किसी राजकुमार से एक बार निश्चित हो जाने पर क्या दूसरे राजकुमार से विवाह सम्पन्न करना धर्मानुकूल होगा ? मैं समझता हूं, मेरी पुत्री पराया धन हो चुकी है।

राणा भीमसिंह सत्यशील है, दृढ़ प्रतिज्ञ है, दिया हुआ वचन हम कभी नहीं तोड़ते। मारवाड़ नरेश महाराज मानसिंह के इस आदर का पात्र होना मेरी पुत्री का सौभाग्य है।

महाराज, हम आप के जवाब का इंतज़ार कर रहे हैं।

इंतज़ार करने की आवश्यकता ही क्या है? एक बार विवाह निश्चित हो जाने पर उसके टूटने की बात ही नहीं। हमारे महाराणा की दृढ है कि राजकुमारी जयपुर की महारानी बनेगी।

तो क्या हम समझें, यही आपका फैसला है? राणा भीमसिंहजी। मैं आपके भले के लिए कह रहा हूं। जोधपुर केसरी से अपनी दोस्ती बिगड़ने न दीजिए। कुछ महीनों से इस शांत राजपूत भूमि पर छाए हुए अमन को तोड़कर फिर से खून की नदी न बहाइए। मारवाड़ का दुश्मन होना आप के लिए अच्छा नहीं है, सोच लीजिए।

खां साहब, ज़रा सोचिए तो सही, तीन वर्ष के भयानक युद्ध परिणामों से त्रस्त यह भूमि अभी-अभी शांति की सांस ले रही है। और ऐसे समय मैं नहीं चाहता कि फिर रक्त की नदी बहे।

तो आपको हमारे स्वामी की शर्तें स्वीकृत हैं।

असंभव। मैं अपना वचन भंग कर राजकुल को कलंक नहीं लगाऊंगा।

राणा भीमसिंहजी, हमें एक ही जवाब चाहिए। आप अपनी पुत्री जोधपुर नरेश को देने के लिए तैयार हैं या मारवाड़ से दुश्मनी मोल लेना चाहते हैं?

महाराणा, इन धमकियों से दब कर उदयपुर के राजकुल को कलंकित करने के लिये हम में से कोई भी तैयार नहीं। रणभूमि में विजय या मृत्यु तक लड़ने वाले शूरवीरों से वंचित नहीं है हमारी पवित्र भूमि।

भीम : दौलत, उत्तेजित न हो। खां साहब, क्या इसके सिवा दूसरा मार्ग नहीं है?

अजीत : नहीं! सिवा जोधपुर के मेवाड़ की राजकुमारी किसी भी अन्य रनिवास में रहे, यह जोधपुर केसरी कभी नहीं सह सकते।

अमीर : राणाजी, अगर आप राजस्थान में अमन चाहते हैं और चाहते हैं कि इन दो राज परिवारों में दोस्ती बनी रहे तो इसके दो ही रास्ते हैं...... राजकुमारी की शादी या उसकी मौत।

भीम : (विस्मय) खां साहब।

दौलत और दरबारी : पापी! (तलवार की ध्वनि)

अमीर : राणा!

भीम : असंभव। मेरी लाड़ली पुत्री......नहीं......नहीं, असंभव लेकिन और कोई उपाय?

दौलत : महाराणा, एक ही उपाय है, युद्ध।

अमीर : दौलत, तुम जानते नहीं होगे मारवाड़ से युद्ध का मतलब।

भीम : नहीं दौलत, नहीं। हम अपनी मातृभूमि पर फिर से रक्त की धारा प्रवाहित नहीं करना चाहते और अपने सूर्यकुल की कुलीनता को कलंकित नहीं करना चाहते। पवित्र उदयपुर राजवंश; नहीं, उसपर कलंक! नहीं!! कर्त्तव्य!!! बलिदान.... हां......बलिदान। मेरी प्यारी बच्ची ही मुझे समझ सकेगी। मेरे इस पवित्र कार्य में सहायक होगी। हाँ...अवश्य! खां साहब आपने अपने कर्त्तव्य का भली भांति पालन किया। अब आप अपने स्वामी के पास जा सकते हैं। कल सूर्योदय के पूर्व आपकी कामना पूर्ण होगी। उदयपुर नरेश स्वाभिमानी हैं... भीरु नहीं।

—: तीसरा दृश्य :—

(राणाजी का रणवास)

रानी : कितना भयंकर! अपने खून से आपको अपने

सिद्धान्त अधिक मूल्यवान लगते हैं ? आपका मन इतना कठोर है ?

भीम : महारानी, तुम ऐसी बातें कह रही हो ! मां की ममता को कर्त्तव्य पर मत छाने दो। क्या अपने पवित्र राजवंशपर कलंक का टीका लगाने से मृत्यु का स्वागत करना युक्त नहीं ? राजकुमारी के लिये स्वाभिमान से उत्तम और क्या है ? अपनी मान रक्षा के लिये हमारे कुल की कितनी नारियों ने जौहर में अपना आत्म समर्पण कर दिया ? क्या यह तुम्हारे लिये नई बात है ?

रानी : किंतु मां के हृदय की वेदनाओं को आप क्या जानें ?

दासी : (प्रवेश कर) महाराणा, राजा जीवनदास पधारे हैं।

भीम : आने दो। महारानी धीरज धरो। अंतःपुर में जाओ। जीवनदास !

जीवनदास : (चुप)

भीम : जीवनदास, कार्य सम्पन्न नहीं हुआ ? क्या राजाज्ञा का पालन नहीं किया आपने ? कहते क्यों नहीं ?

जीवन : महाराणा। मैं अपराधी हूं। क्षमा प्रार्थी। मैं आपकी आज्ञाओं का पालन न कर सका। लावण्यमयी...निरपराधी...नव विकसित कली... ...आपकी इकलौती बेटी। उसकी हत्या मुझ दीन के हाथों...... नहीं महाराज, मेरे हाथ इतने कठोर न बन सके। यह मेरी शक्ति के बाहर है, मैं नहीं कर सकता......नहीं......।

भीम : (क्रुद्ध हो कर) जीवनदास, भूलते हो कि ये राजाज्ञा का अतिक्रमण होगा।

जीवन : जी नहीं। मैं अच्छी तरह समझता हूं। मैं अपराधी हूं। आप जो भी दंड दें मैं उसका स्वागत करूंगा, किंतु इतनी लावण्यमयी राजकुमारी की हत्या.....

भीम : बस कौन है ?

दासी : आज्ञा महाराज।

भीम : चंडिका, इस रनिवास में तुम कितने वर्षों से सेवा कर रही हो ?

दासी : क्या हम कल परसों के हैं महाप्रभु ? पीढ़ियों से इस राजवंश की सेवा में हमारा जन्म सार्थक हुआ है न ? क्या हम आपके नमक पर नहीं पले महाप्रभु ?

भीम : चंडिका, राजपूतों को स्वाभिमान प्राणों से भी प्रिय होता है। राजपूत जाति अपने सम्मान की रक्षा के लिये अपने प्राणों की भी बाजी लगाने से पीछे नहीं हटती और इसमें उदयपुर सदैव ही अग्रगण्य रहा है। है न चंडिका ?

दासी : हां महाराज !

भीम : आज इस राजवंश की कसौटी का दिन है। अपने आत्म गौरव को प्राणों से श्रेष्ठ माना जाय या प्राणों के मोह से अपने आत्माभिमान का त्याग किया जाय ? दूसरी बात कभी संभव नहीं। चंडिका हमें तुम्हारी सहायता की आवश्यकता है। यह रजत पात्र और यह पत्र राजकुमारी को दे आओ। सतर्क रहना... इसमें कालकूट विष है। जा सकती हो ?

चंडिका : स्वामी !

भीम : जाओ। यह कालकूट विष और यह पत्र राज-कुमारी को दे दो। हम कहते हैं, जाओ यह महाराणा की आज्ञा है।

चंडिका : जो आज्ञा महाराज !

जीवन : महाराणा !

भीम : जीवनदास तुम भी जा सकते हो। कृष्णा.....

रानी : महाराणा, क्या कृष्णा हमें छोड़ गई ? क्या जीवनदास यह निर्मम हत्या करके आ गया ?

भीम : नहीं !

रानी : (खुशी से) नहीं ? मेरी बेटी जीवित है ! कहां है ?

महारानी, पागल न बनो। कुछ ही क्षणों में हमारी बेटी यह संसार छोड़ देगी। उसे शांति से अपने कर्तव्य का पालन करने दो।

हे भगवान्...... !!

दृश्य परिवर्तन

—चौथा दृश्य—

कल्याणी, न जाने क्यों आज सवेरे जब से उठी हूं, मैं अशांत हूं। कल रात का स्वप्न कभी कभी फिर दिखाई पड़ता है। ओफ़...वह दृश्य बिलकुल आंखों के आगे झूल रहा है। ......वह कटार! हां......आधी रात के धुंधले प्रकाश में......! वह राजपूत ही होगा, मुझे मारने आया था।

ाणी : ये कहां की बातें हैं ? सुबह से कितनी बार कह चुकी हो! दो-तीन दिन से तुम्हारे मन में उठनेवाला आन्दोलन ही इस स्वप्न का कारण है। नहीं तो भला तुम्हारे अनिष्ट का कोई सोच भी सकता है इस राज में? ......राज में ही नहीं, संसार में?

: कौन जानें ?

का : (प्रवेश कर) बेटी!

ा : कौन, चंडिका ? आज सवेरे ही कैसे आई ? क्या माताजीने मुझे याद किया है ? ......यह हाथ में क्या है रजत-पात्र में? चुप क्यों हो चंडिका ?

का : बेटी, महाराणा........आपके पिताने यह रजत-पात्र और पत्र आप को देने के लिये कहा है।

ा : ले लो कल्याणी। पिताजी का सन्देश पढो।

याणी : "बेटी कृष्णा, प्रख्यात उदयपुर राजवंश के लिए कठिन परीक्षा का समय आ गया है। समस्या यह है कि उदयपुर नरेश को दिया हुआ वचन तोड़ कर राजा मानसिंह से तुम्हारा विवाह करना या लगातार तीन वर्षों के भीषण संग्राम से युद्ध पीड़ित भूमि को फिर से डुबा देना, इन दो के सिवा अपनी ममता को ठुकरा कर राजपूत जाति के गौरव तथा प्रजा की शांति के लिए तुम्हारा बलिदान करना.......

कृष्णा : पढो कल्याणी, आगे पढो!

कल्याणी : "इन तीनों में से मुझे तीसरी बात ठीक जंचती है और वही मेरा कर्तव्य है। तुम मेरी बेटी हो और तुम ही मेरे विचारों को ठीक तरह समझ सकती हो। इस रजत-पात्र में भरा हुआ विष ही तुम्हारी सहायता करेगा।" ओह... मैं आगे नहीं पढ सकती कृष्णा......

कृष्णा : कल्याणी......चंडिका......पिताजी से जाकर कहो कि इस दिव्यामृत का मैं सहर्ष स्वागत करती हूं। पवित्र उदयपुर राजवंश के उदित महाराणा भीमसिंह की पुत्री के योग्य मैं मनःपूर्वक सगर्व इसको स्वीकार करती हूँ......मेरे माता पिता को मेरा अन्तिम नमस्कार कहो....... जाओ चंडिका, जाओ......कल्याणी, अपने इस पवित्र कार्य को पूर्ण करने से पहले मुझे तुम्हें हृदय से लगा लेने दो। ......अंतिम आलिंगन...यदि कोई मुझसे पूछे कि विश्व में मुझसे कोई अधिक भाग्यवान है, तो मैं निश्चय यह कह सकती हूं......नहीं! पिछले जन्म का पुण्य है, जो मुझे अपना कर्तव्य पूरा करने का सुअवसर मिला है।

महारानी : (दूरसे) कृष्णा......कृष्णा!

कृष्णा : कल्याणी, अब देर न करो......

कल्याणी : कृष्णा......

कृष्णा : अच्छा, बिदा...कल्याणी...जय भवानी...

कल्याणी : कृष्णा...

महारानी : (प्रवेश कर) कृष्णा......कृष्णा.........

भीमसिंह (प्रवेश कर) कृष्णा,...तुम धन्य हो!...... देश की मर्यादा के लिए, प्रजा की शांति के लिए तुमने अपने प्राणों को निछावर कर दिया। तुम्हारा यह बलिदान अमर हो! भगवान तुम्हें आत्म-शांति दे!!

सेवाग्राम का मेरा अनुभव

— नई तालीम की एक विद्यार्थिनी

संसृतिका नाम संसार है। इसमें विचार पूर्वक विचरण करने वाला जीव ही मनुष्य कहलाता है वैसे तो सभी चेतन प्राणी विचार रखते हैं परन्तु वह भोग योनि होने के कारण अपने जीवन में परिवर्तन नहीं ला सकते, पर मनुष्य मननशील प्राणी होने के कारण रचनात्मक कार्यों की सृष्टि करके अपने जीवन में परिवर्तन ला सकता है। इसी नियम के अनुसार मानव मात्र सम्पूर्ण जीवन, शिक्षा तथा अनुभवों द्वारा अपने जीवन को उन्नति के पथ का पथिक बनाता है। उन्नत अवस्था तक पहुंचने के लिए, अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए मनुष्य अपने लिए कुछ उद्देश्य निश्चित करता है। प्रत्येक प्राणी का उद्देश्य भिन्न भिन्न इच्छा और बुद्धि के अनुसार होता है। यदि एक का उद्देश्य त्याग और तपस्या है तो अन्य भोग को ही प्रधानता देता है। यदि एक सत्य पथ का पथिक है तो दूसरा झूठ और छलको ही ग्रहण करता है। एक सेवक बनकर सेवा-मार्ग अपनाता है तो दूसरा स्वामित्व में ही अपने जीवन की सार्थकता समझता है। उद्देश्य कि भिन्नता के कारण मार्ग और साधन भी भिन्न होते हैं, अब प्रश्न यह है कि मेरा क्या उद्देश्य है, और मैं उस के लिए कौन सा मार्ग या साधन ग्रहण करूंगी। वर्तमान और भूत में मैंने उसमें कहांतक सफल होने का प्रयत्न किया है।

बचपन से ही मेरा मन सादगी और खादी की तरफ आकर्षित हुआ। मैंने उस मार्ग पर चलने का प्रयत्न किया। अनेक कठिनाइयों और रुकावटों के उत्पन्न होने पर भी मैंने अपने विचारों पर संयम किया। मुझे अपने विचारों पर दृढ़ देखकर सभी संतुष्ट और मौन हो गये। कुछ अनुभव और ज्ञान प्राप्त करने के बाद मैंने गांधीजी की विचार धारा को यत्किंचित् समझने का प्रयास किया उसमें पूर्णरूपेण सफल रही यह तो नहीं कह सकती क्यों कि मनुष्य अपूर्ण है। हां, थोड़ा बहुत उसे समझा! सद्भाग्य से मुझे परिस्थितियों भी ऐसी मिली कि मैं उस मार्ग का अनुसरण कर सकूं;

अतः सन् १९४५ में मैंने पंजाब के एक गांव में जाकर गांधीजी के विचारानुसार एक छोटी सी शाला खोली, उस शाला में मैंने बुनियादी शाला के सिद्धान्तानुसार वस्त्र उद्योग को स्थान दिया। उसमें मुझे काफी सफलता भी प्राप्त हुई परन्तु मेरी शिक्षा प्राचीन पद्धति के अनुसार होने के कारण उस शाला को पूर्णरूपेण उद्योग प्रधान न बना सकी और न ही समवाय पद्धति का अनुसरण ही कर सकी। दो साल के प्रयत्न के बाद शाला में बहुत परिवर्तन हो चुका था पर दुर्भाग्य से पाकिस्तान भी बन गया और हमारी सब आशाओं पर तुषारापात हो गया, खैर प्रभु की इच्छा और अपने कर्मों का फल समझ कर संतोष करना पड़ा। पाकिस्तान बनने के उपरान्त भी मैंने हिम्मत को न छोड़ा तथा दो तीन ग्राम केंद्रों में काम किया पर अनुभव और ज्ञान की कमी के कारण उनको भी पूर्ण रूप से नई तालीम की पद्धति पर न चला सकी। इन्हीं सब त्रुटियों को अनुभव करते हुए मैंने सेवाग्राम आने का निश्चय किया तथा सन् १९५२ की जुलाई को मैं सेवाग्राम पहुंच गई।

सेवाग्राम में एक नवीन और सुन्दर वातावरण का दर्शन किया;मन में पर्याप्त संतोष प्राप्त हुआ। यहां पर दो मुख्य उद्योग स्वावलम्बन को लिए अपनाये गये हैं १. खेती २. वस्त्र उद्योग। वस्त्र उद्योग की जानकारी थोड़ी बहुत पहले भी थी अर्थात् कताई, धुनाई, औटाई इत्यादि का ज्ञान था पर कपास उत्पन्न करने और बुनाई से एकदम अनभिज्ञ थी। यहां पर आकर जहां कताई, धुनाई इत्यादि की त्रुटियां को दूर किया वहां कपास की पूर्ण जानकारी तथा आसामी बुनाई का भी ज्ञान प्राप्त किया। आशा है मैं शाला के बच्चों को कपास बोनेसे लेकर आसामी बुनाई के खड्डु तौलिया, सादा कपड़ा, थैले, चैक, डिजाइन दार छोटे आसन तथा गलीचा इत्यादि सिखा सकती हूं। यह ठीक है कि इस काम को सिखाने के समय अनेक रुकावटों का सामना करना पड़ेगा, पर "मनुष्य गिर कर ही उठना सीखता है" इस कहावत के

अनुसार मैं भी बाधाओं पर विजय प्राप्त करने का प्रयास करूंगी। उसी समय मेरे साहस और धैर्य की सच्ची परीक्षा होगी, मैं प्रभु से प्रार्थना करती हूँ कि वह मुझे असीम धैर्य और अद्भुत शक्ति प्रदान करें ताकि मैं अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकूं।

मेरी शाला में दूसरा उद्योग कृषि हो, ऐसी ही मेरी अभिलाषा है पर यह तो गांव की परिस्थिति देखकर ही प्रण किया जासकता है कि, मैं खेती का उद्योग रखूंगी या नहीं? अपनी तरफ से मैं तन और मन से पूर्ण प्रयत्न करूंगी कि शाला के साथ भूमि भी मिले ताकि मैं कृषि द्वारा स्वावलम्बी बन सकूं।

खेती का ज्ञान भी मैंने सेवाग्राम में ही प्राप्त किया है। बीज बोने से लेकर कटाई तक का कार्य, खाद देना, जमीन तैयार करना, निंदाई, गोड़ाई इत्यादि कार्य बच्चों की शक्ति और बुद्धि के अनुसार करवाने का प्रयत्न करूंगी। इसके अतिरिक्त छोटे प्लाट बनाकर टमाटर, बैंगन, मूलि, कद्दू, धनिया, प्याज, गाजर इत्यादि उत्पादनों की शिक्षा देकर बच्चों में स्वावलम्बन और श्रम की भावना पैदा करने का प्रयत्न करूंगी। मैं यह विश्वास नहीं दिला सकती कि वह शाला पूर्ण स्वावलम्बी बन जायगी क्यों कि चार पांच कक्षा तक के बच्चे अपने पैरों पर खडे हो जाएं यह कुछ कठिन ही दिखाई देता है; फिर भी मैं ग्रामवासियों की सेवा, सुश्रुषा द्वारा ग्रामीण जनता के हृदय परिवर्तन करूंगी तथा उन के सहयोग और सहानुभूति प्राप्त कर शाला को स्वावलम्बी बनाने का प्रयत्न करूंगी। सफलता कहांतक होगी कह नहीं सकती? क्यों कि कर्म करना मेरे बस है पर फल देना ईश्वराधीन है, पर प्रयास करने से कभी भी मुख नहीं मोड़ूंगी। बार बार और हर प्रकार से शाला की उन्नति करने का प्रयास करूंगी। इन दो मूल उद्योगों के अतिरिक्त सहायक रूप में कपड़े सीना ऊनी वस्त्र अर्थात् स्वेटर, जुराब, रुमाल, चटाई, पंखे इत्यादि कार्य भी सिखाऊंगी।

गांवशालाओं की दूसरी प्रधान समस्या गंदगी है। इसी के कारण गांव में असुन्दरता का प्रसार होता है। ग्रामवासी आये दिन मौत के मुख में पहुंच जाते हैं। हमारा मुख्य कर्तव्य गांव सफाई का है। सच्ची सफाई तभी हो सकती है जब गांव शाला तथा गांव में संडास, पेशाब घर खाद के गढ़े इत्यादि का प्रबन्ध सुचारू रूप से किया जाय, कुंआ और नालियों का ठीक उपयोग होता हो गन्दे पानी के लिए अलग गढ़े बने हों, चारों तरफ पवित्रता तथा शुद्धता का साम्राज्य हो। खाद के गढ़े, पेशाबघर, संडास इत्यादि बनाने की पद्धति भी मैंने सेवाग्राम में ही सीखी है, इसके साथ खाद के भिन्न रूप, उनका उपयोग, कच्ची, पक्की खाद की पहचान का ज्ञान भी प्राप्त किया। इसका प्रयोग भी शाला गांव में क्रियात्मक रूप से करूंगी। साथ ही इसके आर्थिक की दृष्टिकोण को भी समझाने का प्रयत्न करूंगी मुझे आशा है कि मैं इस कार्य में सफल भी हो सकूंगी। जहां सामाजिक सफाई आवश्यक है, वहां शारीरिक सफाई भी करनी जरूरी है, क्यों कि शरीर गन्दा रहने से भी अनेक बीमारियां उत्पन्न हो सकती हैं अत: बच्चों की शारीरिक शुद्धता की तरफ भी खूब ध्यान दूंगी और उन को अधिक से अधिक स्वच्छ रखूंगी। साथ ही इसके शास्त्रीय पहलू पर भी बच्चों को और गांव वालों को समझाने का प्रयत्न करूंगी। इतना सब होने पर भी यदि गांव में कोई मामूली रोग बच्चों को होगा तो उसका साधारण उपचार भी कर सकूंगी। जैसे खाज, फोड़ा, आंख दुखना, कान दुखना, पेट का दर्द, मामूली बुखार, पेचीश इत्याद का अनुभव रखती हूँ तथा इनका साधारण उपचार भी जानती हूं।

शारीरिक और सामाजिक शुद्धता के साथ मानसिक और आत्मिक शुद्धता भी आवश्यक है। मानसिक शुद्धता के लिए सामाजिक जीवन में सहयोग होना आवश्यक है, अत: बच्चों में सम्मिलित कार्य का वातावरण उत्पन्न करूंगी। ता कि वह बचपन से ही मिल कर रहना और परस्पर सहायता करना सीखें। इसके साथ ही मन्त्रि मण्डल के चुनाव द्वारा नागरिक शास्त्र और अपना कर्तव्य समझने का पाठ भी पढाऊंगी। मन्त्री पद सम्भालने पर बच्चे यदि अपना कर्तव्य पूर्ण रूप से निभा सकेंगे तो वह भविष्य में अपने देश की बागडोर भी सम्भालने के योग्य हो जावेंगे। मन्त्रि-मण्डल का मासिक विवरण सुन कर बच्चों में जो कमी होगी वह भी दूर कर सकूंगी। सूत्र यज्ञ और प्रार्थना

के द्वारा आध्यात्मिक जीवन में भी परिवर्तन ला सकूंगी। ग्रामवासियों में रामायण, गीता आदि के प्रवचन द्वारा तथा बच्चों को महापुरुषों के जीवन वृत्त सुनाकर चरित्र सुधारने का प्रयत्न करूंगी।

शिक्षा क्रम में पर्यटन और उत्सव त्यौहार भी विशेष महत्व रखते हैं। इसके द्वारा मैं बच्चों को प्राकृतिक जीवन के प्रति उत्सुकता उत्पन्न कर उनमें प्रकृति से प्रेम करने का पाठ पढ़ा सकती हूं। साथ ही प्रभु की अद्भुत शक्ति का परिचय भी प्रकृति द्वारा ही दिया जासकता है। भूगोल और इतिहास को भी मैं ने इसी प्रकार पढ़ाने का निश्चय किया है।

किसी देश का उत्थान और पतन का कारण उस देश की संस्कृति और सभ्यता के द्वारा ही मिलता है, अतः बच्चों में संस्कृति का ज्ञान होना अति आवश्यक है, इस कारण मैं पाठशाला में सांस्कृतिक उत्सव को तो आवश्य ही स्थान दूंगी। यह ठीक है कि अभिनयात्मक रूप में उनको परिणित करने की योग्यता कम रखती हूँ, परन्तु फिर भी कुछ तो साधारण अभिनय द्वारा और कुछ कथा, वार्ता तथा उत्सवों द्वारा भिन्न २ संस्कृतियों का ज्ञान अवश्य ही बच्चों को दे सकती हूं।

बच्चों के लिए नृत्य और संगीत भी आवश्यक है। इसके द्वारा उन के शरीर का संतुलित विकास होता है तथा मनोरंजन भी। संगीत द्वारा सुरुचि का विकास भी होता है, पर खेद के साथ कहना पड़ता है कि मैं नृत्य कला से एकदम अनभिज्ञ हूँ, और शास्त्रीय संगीत का ज्ञान भी नहीं रखती हां प्रभु भक्ति के तथा साधारण राष्ट्रीयगीत सरल लय द्वारा मैं बच्चों को सिखा सकती हूं, इस के साथ ही पांच सात मामूली खेलों के अतिरिक्त मैं अधिक खेलों का भी ज्ञान नहीं रखती, अतः शिक्षकों से प्रार्थना है कि वह हमें बच्चों के योग्य खेल और साधारण ड्रिल सिखाने का प्रबन्ध करने की कृपा करें।

इन सब विषयों के साथ भाषा साहित्य गणित, भूगोल, इतिहास इत्यादि विषय भी मैं पांचवीं कक्षा तक बहुत अच्छी प्रकार सिखा सकती हूं। मैं बच्चों शक्ति और प्रवृत्ति अनुसार ही कार्य करवाऊंगी।

मेरी हार्दिक अभिलाषा है कि मैं इस जीवन में कुछ शुभ कार्य कर सकूं, इस के लिए मैं बार-बार प्रयत्न भी करती रही हूं पर न जाने क्यों मेरे मार्ग में रुकावट और असफलता ही मिलती है, फिर भी हिम्मत नहीं हारी हूं प्रभु कभी भी सच्ची इच्छा को अपूर्ण नहीं रहने देते अतः मुझे पूर्ण विश्वास है मैं अवश्य ही सफल होऊंगी।

— —

हिन्दी प्रचार के नाम पर- सं. ५

सभा की परीक्षाएं

— श्री चतुर्वेदी श्रीराम शर्मा

हिन्दी प्रचार के नाम पर जितना अहित हिन्दी प्रचार सभा अपने शालोपयोगी प्रकाशनों को शिक्षा विभाग द्वारा मान्यता दिलाकर कर रही है, उससे किसी भी प्रकार कम अहित सभा द्वारा संचालित परीक्षाओं द्वारा नहीं हो रहा। हर्ष का विषय है कि सभा की परीक्षाओं का व्यवसाय अब अपने चरम शिखर पर पहुंच कर नीचे की ओर चलने लगा है अन्यथा हिन्दी प्रेमियों के लिए यह आवश्यक हो जाता कि वे प्रान्तीय धारा सभा में एक क़ानून बनवा कर ऐसी संस्थाओं द्वारा संचालित परीक्षाओं पर प्रतिबन्ध लगवाते।

हैदराबाद राज्य हिन्दी प्रचार सभा की परीक्षाओं का एक विचित्र इतिहास है। जब इस सभा की स्थापना हुई थी तब तक यह निश्चित न था कि देश की राज्य-भाषा क्या हो। कांग्रेस और अन्य राजनीतिक दल यह मान चुके थे कि हिन्दी ही देश की राष्ट्र-भाषा और राज्य भाषा होगी। यह प्रमाणित करने के लिए कि हिन्दी घर-घर में पहुंच चुकी है। देश में दो संस्थाओं ने (दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा मद्रास तथा राष्ट्रभाषा प्रचार सभा वर्धा) ऐसी परीक्षाएं चलाना प्रारम्भ किया जिनके सरल पाठ्यक्रमों को तैयार कर कोई भी बालक अथवा प्रौढ़ प्रमाण-पत्र प्राप्त कर कह सके कि वह भी हिन्दी जानता है। हैदराबाद राज्य में भी हिन्दी प्रचार सभाने इन्हीं संस्थाओं की परीक्षाओं का संचालन आरम्भ किया था।

उन दिनों हैदराबाद का वातावरण कुछ ऐसा था कि लोग अखिल भारतीय संस्थाओं के सम्पर्क में आने से घबड़ाते थे। 'आजाद हैदराबाद' की चर्चा उन दिनों स्वप्न से अधिक वास्तविक थी। हर बात में लोग राज्य की सीमाओं में सुसंगठित व्यवस्था के अधिक पक्षपाती थे। इसी कारण हैदराबाद राज्य हिन्दी प्रचार सभा ने अपनी निजी परीक्षाएं चलाने का निश्चय किया और उनकी समुचित व्यवस्था भी की। इस व्यवस्था में श्री गोपालराव अपसिंगीकर के परीक्षा-मंत्री होजाने के बाद और भी चार चांद लग गये तथा परीक्षा के नवीन केन्द्र खुले और परीक्षार्थियों की संख्या आशातीत वृद्धि भी हुई।

सन १९४५ ई० के आस-पास 'आज़ाद हैदराबाद' की चर्चा राष्ट्रीय हित के प्रतिकूल प्रतीत होने लगी। उस समय वर्धा के हिंदी प्रचारकों ने सभा से गठबंधन कर सभा को अपनी उच्च परीक्षाओं की व्यवस्था सौंप दी। हैदराबाद की विशेष परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए यह भी तय हुआ कि सभा अपनी प्रारम्भिक परीक्षाएं चलाती रहें।

यह वह युग था कि हैदराबाद राज्य के सरकारी पाठ्य-क्रम में हिन्दी का कोई स्थान न था। सभा उन दिनों हिंदी की इन परीक्षाओं का संचालन कर सचमुच लोगों में हिंदी का प्रचार कर रही थी। सौभाग्यवश सभा तब तक प्रकाशक नहीं बन पाई थी– इस लिए समस्त देश में प्रकाशित उत्तमोत्तम पुस्तकों का सभा के पाठ्य-क्रम में आजाना आसान था और सभा की परीक्षाओं में भाग लेने वाले वास्तव में हिंदी भाषा सीख कर राष्ट्रीयता के पोषक और समर्थक बन जाते थे।

परन्तु हमारे विधान के स्वीकृत होजाने पर परिस्थितियां बहुत कुछ बदल चुकी हैं। हिन्दी राज्य-भाषा हो चुकी है और अब १०-१२ वर्षों में राष्ट्र-भाषा भी बन जायगी। इस के लिए सरकार की ओर से प्रयास प्रारम्भ हो चुके हैं। पाठशालाओं में पढ़ने वाले प्रत्येक छात्र के लिए हिन्दी पढ़ना अनिवार्य बन चुका है। ऐसी दशा में सभा को इन परीक्षाओं का क्या प्रयोजन हो सकता? प्रत्येक विद्यार्थी जब अपनी पाठशाला में हिन्दी सीख कर प्रतिमास तथा प्रति वर्ष हिन्दी की परीक्षाएं देता रहता है, तब वह क्यों इन

बेकार की परीक्षाओं में बैठने के लिए प्रोत्साहित किया जाए ?

सभा के पास यह सब सोचने का समय नहीं है। सभा के दलाल अब तक पर्याप्त स्थानों में फैल चुके हैं। वे अल्पायु विद्यार्थियों के सामने अब भी सभा की इन परीक्षाओं के महत्व की चर्चा चलाते रहते हैं और अब भी राज्य के २०० केन्द्रों से लगभग दस हजार विद्यार्थी सभा की विभिन्न परीक्षाओं में सम्मिलित होते हैं। सभा के लिए तो ये परीक्षाएं जीवन-मरण का प्रश्न हैं क्यों कि परीक्षा की आमदनी से न जाने कौन-कौन से मदों के व्यय की व्यवस्था होती है। सभा की सेवा के लिए भोले विद्यार्थियों के धन और समय के निष्प्रयोजन बलिदान का श्रेय अब इन परीक्षाओं को है।

निस्संदेह सभा की परीक्षाएं सभा की आर्थिक समस्या का सुन्दर सुलझाव है। परीक्षा शुल्क से जो सभा को आय होती है उसके अतिरिक्त एक अच्छी आय प्रकाशनों को पाठ्य पुस्तक के रूप में स्वीकार करा लेने से भी हो जाती है। साथ ही साथ ये परीक्षाएं चुनाव जीतने का भी एक उत्तम साधन बनी हुई हैं। सभा के परीक्षक और केन्द्र व्यवस्थापक हिन्दी के प्रचार के स्तम्भ माने जाते हैं। उनकी सेवाएं चाहे वैतनिक हों चाहे अवैतनिक और चाहे उन्हें कुछ अल्प वेतन भी दिया जाता हो, उनके द्वारा प्रचार की शृंखला अविच्छिन्न रहती है और बार-बार विजयी दल को चुनाव में पुनः विजय प्राप्त करने की सुगमता रहती है। अतएव हर प्रकार से ये परीक्षाएं सभा का हित संपादन करने में सहायक हैं।

अब प्रश्न यह है कि इन परीक्षाओं द्वारा हिन्दी का प्रचार किस सीमा तक हो रहा है। पाठशालाओं में अब हिन्दी पढ़ाई जाती है और परीक्षाएं भी होती हैं फिर छात्रों के लिए इन परीक्षाओं से क्या लाभ है ? सभी स्थानों में विश्व विद्यालय पठन-पाठन की व्यवस्था पहले करते हैं परीक्षाओं की बाद में। हमारे हिन्दी प्रचार के क्षेत्र में पठन-पाठन की व्यवस्था गौण है, परीक्षाएं प्रधान हैं। परिणाम स्वरूप जैसे तैसे येन केन प्रकारेण विद्यार्थी के गले हिन्दी की उत्तमा उत्तीर्ण होने का प्रमाणपत्र मढ़ ही दिया जाता है। और यदि विद्यार्थी ने और जोर लगाया तो उसे 'हिन्दी-भूषण' की उपाधि से विभूषित कर दिया जाता है। अब वह विद्यालयों में हिन्दी का अध्यापक बन मैट्रिक की ग्रेड पा सकता है, चाहे उस के लिखे हुए एक अनुच्छेद में मात्राओं की ८-१० भूलें भले ही रहती हों।

यह है सभा की परीक्षाओं की वास्तविकता और यह उनके द्वारा होने वाले अहित का रहस्य।

क्या सभा के अनुभवी सभापति और नये परीक्षा मंत्री इस समस्या पर कुछ विचार करना पसन्द करेंगे ? यदि हां तो मैं उनके लिए कुछ व्यावहारिक सुझाव रखना पसंद करता हूं।

(१) सभा की परीक्षाओं के ध्येय के सम्बन्ध में बहुत कुछ विचार कर किसी निश्चय पर पहुंचा जाए ?

(२) स्कूलों के विद्यार्थियों को इन परीक्षाओं से बिल्कुल अलग रखा जाए।

(३) अखिल भारतीय अन्य संस्थाओं की परीक्षाओं या विश्व विद्यालय की विभिन्न परीक्षाओं के समान ही स्तर वाली कोई एकाध परीक्षा सभा भी चला सकती है, जिस से वयप्राप्त महानुभावों को हिन्दी सीखने का अवसर मिलता रहे। अखिल भारतीय संस्थाओं की परीक्षाओं की समुचित व्यवस्था करने से भी यह लाभ मिल सकता है।

(४) सभा की आमदनी के लिए नये साधन खोजना आवश्यक है। परीक्षा का व्यवसाय हमेशा ही ऐसा चल सकेगा यह एक भ्रम है। उसे जितने ही शीघ्र भुलाया जा सके अच्छा है।

क्या आप जानते हैं ?

— संसार में राष्ट्रों की कुल संख्या २१६ है। इनमें से अफ्रीका में ६२, उत्तर और दक्षिण अमेरिका में ४५, एशिया में ४७, यूरोप में ३८ और अन्यत्र २० राष्ट्र हैं।

आज हम स्वतन्त्र हैं। पहले की अपेक्षा आज हम पर देश का अधिक उत्तरदायित्व है। किसी भी जनतंत्रात्मक राष्ट्र की नर-नारियों का, अपने दायित्व का मूल्य समझ, देश की उन्नति में प्रयत्नशील रहना, मुख्य कर्तव्य है। अपना, देश तथा देशवासियों का भविष्य इस विज्ञान की दौड़ में उन्नतिशील बनाना है, तब हमारा—देश की माताओं का यह परम कर्तव्य बन जाता है कि देश के धरोहरकी, भावी आधारस्तम्भ की देखभाल, शिक्षा-दीक्षा तथा विचार-आचार आदि पर ध्यान दें। देश के पिताओं की अपेक्षा माताओं का यह प्रमुख कर्तव्य है। बालकों की उन्नति में पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों का अधिक हाथ है क्योंकि बालक की शिक्षा आदि अधिकतर स्त्रियों के हाथों में होती है। बचपन में बालक पर जितना प्रभाव माता का हो सकता है, किसी अन्य का नहीं। यह तो निर्विवाद है कि सुयोग्य, सुशील, एवं शिक्षित माता अपने बालक को अवश्य ही सुशील, सदाचारी, विचारक एवं देश का आधारस्तम्भ बना सकती है।

देश की धरोहर

बालकों की प्रवृत्ति प्रायः ज्ञातव्यपूर्ण होती है। बालक की इस प्रवृत्ति की महत्ता को जानते हुए उनके ज्ञातव्य-समस्या की पूर्ति एवं उसका यथोचित समाधान करना बालकों की उन्नति का प्रमुख राज़ है। जैसे बालकों की हड्डी प्रायः कोमल एवं लचकदार होती है, उसे हम जैसे चाहे मोड़ एवं बल दे सकती हैं; वैसे ही बालकों के स्वभाव को हम अपनी इच्छानुसार मोड़ एवं बल दे सकती हैं। उनकी क्या रुचि है, क्या इच्छा है, कैसी प्रवृत्ति है आदि बातों को सोच लें और उनके उपरोक्त गुणों के अनुसार उन्हें अच्छे गुणों की ओर प्रवृत्त कराती रहें तो वे अवश्य गुणवान, नीतिमान एवं उन्नतशील बन सकते हैं। आप उन्हें अच्छी शिक्षा दीजिए; वे अच्छे बनेंगे। इसके विपरीत बुरी शिक्षा दीजिए, तो वे बुरी आदतों के शिकार बनेंगे। इनकी उन्नति का रास्ता ढूंढों और बताओ—निडर बनाओ—वे इस मार्ग से आगे बढ़ेंगे शायद उन्नति के एवरेस्ट-शिखर पर भी पहुंच जायं। इनका अनावश्यक लाड़ करना—अवनति का मार्ग दिखाना, डरपोक बनाना—वे इस दुर्बलता एवं लाड के कारण अवनति के गर्त में गिरते जाएंगे, जिस में से निकलना तो क्या रहना भी कठिन हो जायगा! इसका प्रभाव केवल उन पर या उनके परिवार पर ही नहीं पड़ेगा बल्कि देश, समाज व जाति पर भी! अतः माताओं को चाहिए कि वे अपनी दृष्टि को विशाल एवं सूक्ष्म बनाएं। जो माताएं अपनी दृष्टि को संकुचित बनाई हुई हैं, वे भविष्य में पछताएंगी।

बच्चों को शिक्षा-दीक्षा तथा अच्छे आचार-विचार नीतिपूर्ण एवं सुदृढ बनाने का महत्वपूर्ण समय उनका

बचपन है अतः इस काल में उनकी ओर अधिक ध्यान देना देश के तथा बालक के भविष्य को सुदृढ एवं उज्वल बनाना है। जो माताएं इस महत्वपूर्ण समय की उपेक्षा करती हैं, वे स्वयं अपने आपको माता कहने में संकोच करें।

प्रायः देखा जाता है कि हमारे देश की माताएं बालक के भविष्य एवं देश के महान धरोहर की उपेक्षा कर अपने मातृत्व को लजा रही हैं। कुछ दिनों पूर्व में मेरी सहेली की पुत्री के विवाह में गई थी। वहां मेरी तरह और भी कई मेहमान आए थे। इन मेहमानों में मैंने एक ऐसी

—सुश्री चन्द्रकला देवी नोगजा

माता को देखा; दिल में यह भावना दृढ हो गई कि बच्चों को बिगाड़ने एवं बनाने में माँ ही कारण है। वह स्त्री—सुशीलारानी—शायद यही उसका नाम था— दिन में पाँच–छः बार बच्चों को ठूंस-ठूंस कर जबरदस्ती खिलाती। हालाँकि बच्चे 'ना, ना' कहते परन्तु वह न जाने मुफ्त का माल समझकर स्वयं तो ठूंसती ही और उन मासूम बच्चों पर भी यह जुल्म करती। उस स्त्री के बालक निर्बल, एवं रोगी थे, परन्तु वह स्त्री तो हर समय कहा करती कि, "मैं खिला तो बहुत रही हूँ पर न जाने ये क्यों दुर्बल और बीमार रहते हैं!"

इस प्रकार माताओं का बालक की शिक्षा के साथ ही उनके स्वास्थ्य का भी ध्यान रखना परम कर्तव्य है। बालकों को दिन भर कई बार खिलाने के बजाय दो बार ही खिलाएं परन्तु वह रहे पौष्टिक। उनके खाद्य में दूध की मात्रा अधिक रहे। चीनी का लाड बच्चों को नहीं के बराबर रखना चाहिए। जो माताएं इस प्रकार बालकों के स्वास्थ्य की ओर ध्यान नहीं देती वे स्वयं अपने हाथों से अपनी सन्तान का गला घोटती हैं, और साथ ही साथ अपने देश को बहुत बड़ी हानि पहुँचाती हैं।

यह खाने-पीने की बात हुई। अब माताओं को चाहिए कि वे बालकों की शिक्षा-दीक्षा, रहन-सहन, आचार विचार आदि पर भी ध्यान दें। प्रायः बालक नासमझ होने के कारण अपने भले-बुरे, स्वच्छास्वच्छ आदि बातों का विचार नहीं कर सकते। कपड़े मैले हो गए हैं, रहन-सहन किसी अच्छे लड़के-सा नहीं है, बड़ों-छोटों का ध्यान नहीं है, किन से किस प्रकार बातें करनी चाहिए आदि बातों की उलाहना उन्हें समय-समय पर देनी चाहिए। यथा समय रहन-सहन आदि की महत्ता पर भी प्रकाश पड़ता रहे तो निश्चिन्त ही बालक अपनी गलतियों एवं भूलों को दूर कर सकता है। जैसे हमारी बुरी आदत को दूर करने के लिए, हमें अपने बुजुर्ग समय-समय पर टोकते हैं, तब हम भी अपनी बुरी आदत को दूर करने का प्रयत्न करते हैं! उसी प्रकार बालक को भी समय-समय पर समझा कर उसकी बुराई बताकर टोकते रहें तो वे अवश्य ही अपनी भूलों को दूर कर सकेंगे।

मैं देश भर की माताओं से प्रार्थना करती हूं कि वे अपनी एवं देश की अमूल्य धरोहर की रक्षा में सतर्क रहें और अपने कर्तव्य को समझें तभी वे आदर्श माता कहलाएंगी! देश व अपने सन्तान के भविष्य की ओर दृष्टिपात कर हम कार्य करती रहेंगी तो अवश्य ही हम आज से हजारों साल के पिछले उन्नतशील भारत का फिर से निर्माण कर सकेंगी। साथ ही अन्य देशों को कह सकेंगी कि आज भी हिन्दुस्तान में शकुंतला व जीजाबाई जैसी स्त्रियाँ हैं जिन से हमारा इतिहास गौरवान्वित बना है।

——

क्या आप जानते हैं?

— संसार की कुल जन संख्या २ अरब ४० करोड़ है। जिसमें से चीन में ५० करोड़, भारत में ३७ करोड़, रूस में २० करोड़, तथा अमेरिका में १५॥ करोड़ लोग रहते हैं।

— ४ से ८ करोड़ तक की जन संख्या वाले राष्ट्र आठ हैं (१) पाकिस्तान ८ करोड़, (२) जापान ७ करोड़ (३) हिन्देशिया ८ करोड़ (४) ब्राजील ५॥ करोड़ (५) ब्रिटेन ५ करोड़ (६) प. जर्मनी ५ करोड़ (७) इटली ४॥ करोड़ तथा (८) फ्रांस ४॥ करोड़।

— १ से ४ करोड़ तक की संख्यावाले राष्ट्र २३ हैं जिनकी कुल जनसंख्या ४२ करोड़ है।

— १ करोड़ से कम जनसंख्या वाले राष्ट्र ५० हैं।

— ५ लाख से कम जनसंख्या वाले राष्ट्र १२० हैं।

— १० हजार से कम जनसंख्या वाले राष्ट्र ४ हैं — (१) मोनाको (२) सानमैरीनो (३) अंडोरा (४) लीचटैन्सटीन।

मजदूर आन्दोलन

— बालकृष्ण लाहोटी, 'कृष्ण'

१

प्रातः काल का समय था। दुनिया के लोग जाग रहे थे। ने अपनी किरणें आकाश में छिपा रक्खी थीं। कई थी दन्त मंजन, मुखमार्जन, व्यायाम आदि कर रहे थे। स्नान को बैठे थे और कई धर्मात्मा लोगों ने पूजा भी प्रारंभ कर दिया था। स्त्रियां सड़कों पर पानी भरने पर जा रही थीं कि सैकड़ों आदमियों का एक चला आ रहा था। जुलूस "दुनियां के मजदूर हैं", "दुनियां के मजदूर एक हैं" के नारे लगाता जा रहा था। मुहल्ले के लोग एकदम चमके ने २ नित्य क्रिया कर्म छोड़ कर घरों के बाहर आने। मजदूरों का झुण्ड इनको देख देख कर और भी क चिल्लाने लगा।

फिर वही नारा "दुनियां के मजदूर एक हैं" यां के मजदूर एक हैं" "हमारी मांगें लेकर रहेंगे" रमाएदारी खत्म करो!"

मालिकों को गालियां देते २ नाम लेकर मुर्दाबाद के नारे लगाने लगे। मालिक कहते थे काम पर तनखा क्षत की जायगी। मजदूर कहते थे सबको एकसा दें, कम म २ रु. रोज होना चाहिए। प्रत्येक मजदूर की २) से कम न होने की सरकार से मांग भी की गई और कार ने मान भी ली, परन्तु प्रयोग में बहुत कम आ थी। कारखानेदारों को कारखाने में दाखल होते ही ना २ रु. देकर काम करवाना कठिन सा हो गया। उनका कहना था कि नए नवाडे को लेकर इतनी दूरी नहीं दी जासकती। हम मारकेट में दूसरे देशों के मुकाबिले में टिक नहीं सकते। मालिकों का निर्णय अमुक लीजिए और फायदे पर कुछ प्रतिशत तकसीम देंगे परन्तु वे कहते हम मजदूर हैं, 'कल की मुर्गी से आज अण्डा अच्छा।' मालिक फायदे में हों या नुकसान में हमको हमारी मांग के माफक तनखा देदी जाय।

यह झगड़ा कई महीनों से चल रहा था। बहुत कुछ मालिक मजदूरों की मिटिंगें हुईं परन्तु सुपरिणाम न निकला। अंत में केस लेबर आफिस में गया। जहां विभिन्न प्रवृत्तियों वाले मजदूर थे सबकी एक आवाज न थी। उनमें गुत्ते पर काम करने के लिए भी आमादा थे। कई मजदूरगण यथा काम तथा दाम के पक्ष में थे परन्तु उनमें कुछ कम काम अधिक दाम के प्रवृत्ति के थे। वे ही प्रत्येक समझौते में गड़बड़ करते और रोडे अटकाते। एक बार तो मालिक ने सब मुख्य-मुख्य कार्यकर्त्ताओं को एकांत में २ घंटे तक समझाया। सारे कारखाने की हालत बताई, परन्तु पहले समझ में नहीं आई, अन्त में उनमें से एक के बाद दूसरे सब मुख्य २ कार्यकर्त्ता ने मालिक के खुले दिल की बातों पर विश्वास कर लिया और वे समझ गए उनमें १-२ नवयुवक जो शिक्षा पा रहे थे बड़े शरारती थे। काम भी दिलचस्पी के साथ नहीं करते थे और बड़े कारीगरों के बराबर तनखा चाहते थे। किसी प्रकार कारखाने में समय टालकर चले जाते। वे वह काम कम करते थे, जिसके लिए तनखा पाते थे। साथ में अभ्यास की पुस्तकें लाते थे और पढ़ते थे परन्तु मालक नहीं रोकता था। परीक्षा के दिनों में काम अधिक होने पर भी छुट्टियां स्वीकृत करते किन्तु वे महाशय अगवा निकले।

२

प्रेस वर्कर्स यूनियन को एक संस्था थी। जो अपने चन्दे के लिए मजदूरों के हितों की बातें करती थीं और व्याख्यान पर व्याख्यान दिला कर सबको सब्ज बाग दिखा रही थी। कारखाने वालों के आंखों में धूल झोंकर वह अपना उल्लू सीधा करने का प्रयत्न कर रही थी। इस यूनियन काम था कि प्रत्येक कारखाने में छिपे २ जाना और उनको किसी प्रकार मेम्बर बना कर नई-नई मांगों पर उसकाना। एक दिन एक होटल में बैठे हुए युनियन के मन्त्री एक मजदूर से पूछ रहे थे तुम्हारी क्या तनख्वाह है जी?

मजदूर – मेरी तनखा बहुत अच्छी है साहब !

मन्त्री – आखिर क्या है ?

मजदूर – मैं साठ रुपये मासिक पाता हूं परन्तु ओवर-टाईम मिलाकर ७५-८० भी पड़ जाते हैं ।

मन्त्री – तो तनख्वा सिर्फ ६० है ?

मजदूर – जी हां, ठीक है । यह आज कल तो लिखे पढ़ों को भी मिलना कठिन है ।

मन्त्री – देखो जी, लिखे पढे कम में मिल जाएंगे, परन्तु मजदूर की ज्यादा कीमत है । तुम्हारी क्या तनखा है अदना झाड़नेवाली को मिलती है ६०)। तुम्हारी तनख्वा, अलौंस, भत्ता आदि मिलाकर रु. १०० मासिक पड़ना ही चाहिए ।

मजदूर – मन्त्री जी मैं इतना ज्यादा काम नहीं करता । मेरी जो कुछ तनख्वाह है ठीक है ।

मन्त्री – तुमने जब यूनियन में नाम दे दिया तो इतनी कम तनख्वाह पर कभी काम नहीं करना चाहिए ।

मजदूर – देखिए ! मैं १५ रुपये मास्कि से ३ वर्ष में ही रु. ६० मासिक पाता हूं । मेरे मालिक मेरी तनख्वाह खुद ही बढ़ा देते हैं. फिर यदि कुछ मांग करूंगा तो क्या समझेंगे ? शायद नाराज भी होजायं और बढ़ाने के बजाय निकाल न दें ।

मन्त्री जी ने गर्व के साथ कहा– देखो, कोई मालिक किसी मजदूर को नहीं निकाल सकता । अब मांग करना अपनी २ होशियारी है । आप अच्छा काम करते होंगे तब ही तनख्वाह मालिक बढ़ाता होगा ।इस मजदूर का नाम था रामा – एक दूसरा मजदूर श्यामूने भी इस के पास आकर कहा–" रामा क्या कर रहे हो ? " रामा ने मन्त्री को बताते हुए "यह प्रेस वर्कर्स युनियन के मन्त्री हैं । बेचारे हम मजदूरों के बड़े हमदर्द हैं ।" श्यामूने मन्त्री जी को खूब गौर से देखा और नमस्ते किया । मन्त्री ने पूछा—" श्यामू तुम क्या वेतन पाते हो ? श्यामू ने उत्तर दिया" जो किस्मत में है मिल जाता है । जिन्दगी चैन से गुजर रही है । कुछ महंगाई सताती है ।

मन्त्रीने कहा —फिर तुम महंगाई भत्ता क्यों नहीं मांगते ?

श्यामू—. हम झूठ कहकर नहीं मांग सकते ।

मन्त्री— सच बोलने से पेट नहीं भरता । (बात को पलटा कर) अच्छा तो तुम कमेटी में आएंगे या नहीं ।

रामू— हम क्या जाने कमेटी-वमेटी को ।

मन्त्री – याद रक्खो, तुम को अलौंस मिलेगा, महंगाई भत्ता आदि दिलाया जायगा । साल में ४॥-५ महीने की छुट्टियां लेना हमारा अधिकार है । यदि हम अड़ जाएं तो और भी अधिक ले सकते हैं तुम अपने आपको नहीं समझते, अफ़सोस !

श्यामू – जी, हम कारखाने की हालत को देखते हुए क्या करें ?

मन्त्री – तुम अपना देखो, कारखाने का तुम्हें क्या करना है ? हमारे लिए सरकार ने जो क़ानून बना रक्खे हैं उनसे फायदा उठाओ ।

३

नारायणरेड्डी सीधे-सीधे विचारों के मनुष्य थे। इनको यह मालूम ही नहीं था कि लेबर कानून भी है। वे तो जिस आदमी को नौकर रखते बातचीत करके रख लेते ऐसे पचासों कर्मचारी रख लिये थे। वर्षों से इसी प्रकार निभाते चले आरहे थे। हां इनको यह अनुभव जरूर था कि २-४ रुपये भी अधिक मिलने पर नौकर दूसरी जगह चला जाता है। इसलिए नौकर का वेतन खुद बढ़ा देते थे।यों तो हर एक से ठहराव कर लिया जाता कि "नौकरी से निकलना है तो एक मासपूर्व सूचना देकर जाय या नौकरी से बरखास्त करना हो तो उसे एक मास पूर्व कह देते" इसी प्रकार वर्षों से चल रहा था कई नौकर बिना सूचना दिये दूसरी नौकरी पर चले गए तो हाथ मसलकर रह गये उन्होंनें कुछ ध्यान न दिया। वे समझ गए यह तो एक सौदा है जो न पटे तो चला जाता है, परन्तु इनको इतना ही दुःख होता था कि लोग एकरार के माफ़क क्यों नहीं चलते। जो टिक कर रहता और काम ध्यानपूर्वक करता उसकी साल में १२ बार तरक्की भी की जाती। सारांश मालिक मजदूर बड़े आनंद में चल रहे थे परन्तु वर्कर्स यूनियन के सेक्रेटरी साहबने आकर फूट का बीज बोने का प्रयत्न किया। किसी वस्तु को एक दो बार मारने से कुछ नहीं होता, परन्तु बार २ मारने से तो वह टूट

...ती है। मालक मजदूर के अच्छे सम्बन्धों को खराब ...का बीड़ा सेक्रेटरी साहब ने उठा रखा था। ...चारियों के घरों पर जा जा कर बहकाते और अपने ...कारों के सम्बन्ध में बार बार कहते। इसपर भी रामू, ...दोनों ने एक बार झुंझलाकर कह ही दिया "महाशय जी! ...पीछे क्यों पड़े हैं, हमको चैन से रहने दोगे या ...हमको कुछ नहीं चाहिए। हम मालिक के सामने ...नहीं हिला सकते।" परन्तु फिर भी सेक्रेटरी ने पीछा ...छोड़ा। आखिरकार एक दिन कमेटी में जाना पड़ा। ...के भूखे सक्रेटरी साहब फरमाने लगे "मेरे प्यारे ...भाइयो! आप लोग भयंकर अन्धकार में हैं मैं ...ता हूँ आप सब उजाले में चले आएं। याद रखो मजदूरी ...सब कुछ है, मजदूरी नहीं तो कुछ नहीं। दुनिया के बड़े ...काम मजदूरों से ही बने हैं। ये बड़ी २ इमारतें बंगले, ...यां हमारी मेहनत से खड़ी हुई हैं। दुनिया की हर चीज़ हम ही तैयार करते हैं। यह बड़े पेट वाले, हमारी बदौलत बने हैं। लाखों करोड़ों का सरमाया ...कर बैठे हैं उस में हमारा खून पसीना एक हुआ है, ...आज हम और हमारे बच्चे रोटी कपड़े के लिए ...ते हैं और सरमाएदार मोटरों में मजे करते हुए ...ते हैं। नरम २ गद्दियों पर सोते हैं क्या यह इन्साफ ... हमको बगावत का झंडा खड़ा करना चाहिए यह सब ...हमारी है, हम में तकसीम करदो। यह हमारी मांग ...सरमायेदारी खत्म हो। नारायणरेड्डी हमारी-तुम्हारी ...मामूली मनुष्य था आज एक बड़ा सरमाएदार बना ...है। दर असलमें हमने उसे बनाया है। छीन लो ...की दौलत और मजदूरों में तकसीम करदो ता कि हम ...चंद रोज आराम से काट सकें।"

...व्याख्यान लच्छेदार हो रहा था मामूली समझ के ...तालियों पर तालियां बजा रहे थे। और वाह वाह ...नारे बुलन्द हो रहे थे। रामू, श्यामू के साथी पोचैया, ...ैया खुशी में उछल रहे थे और "माले मुफ्त दिले बे...रहम" वाली बात हो रही थी। मल्लैया ने उठकर कहा— "...हम अपनी मांगें पेश करेंगे। हमारी तनख्वाहें नहीं के ...बराबर हैं। पोचैया ने कहा— "आज का व्याख्यान ...सुनकर तो मेरा दिमाग खुल गया। अब हम बराबर लड़ेंगे।"

रामू ने कहा- "इस व्याख्यान में कुछ ऐसी बेतुकी बातें कही गई कि समझ में नहीं आती, क्या हम ऐसी बातों पर अमल कर सकते हैं?

मलैया ने कहा – "हाँ बराबर कर सकते हैं।

रामू – "मुझे तो आश्चर्य मालूम होता है। मालिक नौकर का दर्जा क्या है?"

पोचैया-"मालक से नौकर बड़ा है। यदि नौकर नहीं तो मालिक ही नहीं बन सकता। मालक समझते हैं कि हमको वे पालते हैं किन्तु वास्तव में मालकों को हम पालते हैं।

सेक्रेटरी – "शाबाश! हां भाई साहब जमाना बदल गया है। नौकर मालिक से नहीं जीते बल्कि मालक नौकरों से जीते हैं। वे हमको नहीं पालते हम उनको पालते हैं।

रामू, श्यामू को सेक्रटरी साहब की बातें समझ में नहीं आई परन्तु पोचैया, मलैया सेक्रेटरी की बहक में आगए और कारखाने में बगावत का झंडा उठाया। कारखाने में आना और एक २ को बहकाना कि "क्यों इतनी दिलचस्पी से काम करते हो। यह सेठ हमको क्या अधिक दे देगा। किसी प्रकार ८ घण्टे काटकर चला जाना चाहिए।"

रामू ने कहा – "यदि मैनेजर साहब ने काम पूछा तो?

मल्लय्या – "अरे कौन पूछता है!"

रामू – "किन्तु इस में अपना क्या फायदा है? हमारा क्या नुकसान है? मालिकों को सीधा करने का यही तरीका है।"

ये बातें हो रही थीं कि मैनेजर साहब आगये। लोग जहां के तहां काम करने लगे। काना फूसी बन्द हुई। मैनेजर ने कहा – "काम करना है तो काम करो, यदि बातें करनी हो तो एक तरफ बैठकर खूब बातें कर लो।"

४

जिस कारखाने में शांति पूर्ण ढंग से काम चलता था उस कारखाने में अशांति छा गई। जब मालिक मैनेजर को मालूम हो गया कि यह मजदूर आन्दोलन की बीमारी कारखाने में आगई है तब ये भी चौंके और नई २ व्यवस्था करने लगे। प्रत्येक का वर्क फार्म बना।

काम कम होने पर डांटनी दी जाने लगी। जो शरीफ थे शराफ़त से काम करते। जो गुण्डे थे गुण्डापन करते; उन पर फाईन होना प्रारंभ हुआ। मुअत्तली होने लगी। दिनभर मैनेजर इसी उधेड़बुन में रहते। काम बराबर न होने से कई काम ग्राहकों को समय पर नहीं दिए जा सकने लगे। ग्राहक टूटने लगा और ग्राहकों का काम आना बंद हो गया। सारांश कारखाने में कुछ काम न होकर फिजूल चर्चा होती रहती।

मैनेजर पूछता तुम्हारी क्या मांगे हैं? कोई उत्तर न देता बल्कि यह होता जो भी जी में आता लिखकर लेबर आफिसर के पास भेज दिया जाता। पचासों कर्मचारियों में से ५–१० ही ऐसे वर्कर थे कि कोई भी शिकायत लिखना और चमकाकर अथवा लालच और आश्वासन देकर शिकायतपत्र पर हस्ताक्षर ले लेना। गुण्डे कर्मचारी सबको डरा धमकाकर अपने काबू में रखते थे। और शरीफ कर्मचारी डरते हुए अपनी दिल की बात भी बोल नहीं सकते थे। सबसे ज्यादा पोचैया और मलय्या शरारत पसन्द थे। अब तो ये अपने आपको लीडर भी कहने लगे। कभी किसी कर्मचारी पर पदाधिकारी कर्मचारी काम के लिए कहता तो गांठे पर्ने से सुनी अनसुनी की जाती। पाव घंटे के काम को १ घंटा लगाया जाता क्यों कि किसी का ध्यान काम में ही न रहता। जरा कुछ चर्चा होती कि सब कर्मचारियों के कान खड़े हो जाते। फिर चारों तरफ मिटिंग की बातें होतीं। पहले काम ही कम था यदि कभी आया तो काम कराने वाले ग्राहक फिर २ कर चले जाते। मैनेजरने कभी किसी कर्मचारी को डांटता तो लीडर साहब बीच में आ जाते। एक बार मैनेजर ने कहा—"इस दुरावस्था में तो कारखाने को बन्द कर देना पडेगा" इस पर मलय्या ने बड़े गर्व से कहा—"कारखाना बंद नहीं कर सकते, यदि आप बन्द कर देंगे, तो हम उसे खोल देंगे और बडी जिम्मेदारी से चलाएंगे। कारखाना हमारा है, बन्द करना तुम्हारे हाथ की बात नहीं हैं।"

यह सुन कर तो मैनेजर और मालिक सोख्त हो गए। होश कायम न रहा। जिस को हम नौकर रखते हैं वह ऐसा मुंह फट बोलेगा यह स्वप्न में भी कल्पना न थी। परन्तु यह सब कारगुजारी वर्कर्स युनियन की थी। मैनेजर तो मालिक से कहा—"देखिए सेठ साहब! सरपर चढ़ाने का परिणाम!"

इस बात पर मलय्या को मैनेजर पर बडा क्रोध आया। कुछ और कहने को ही था कि रामू ने कहा—"बस करो। अपनी जबान को रोको। श्याम ने भी कहा अब हम इस आंदोलन का साथ नहीं दे सकते और कर्मचारी गण भी इस तमाशे को देख रहे थे परन्तु किसीने कुछ भी नहीं कहा—जैसे उस मलय्या का समर्थन कर रहे थे।

मालिक और मैनेजर अपने कमरे में गए। विचार करने लगे कि क्या किया जाय? मैनेजर ने कहा—"इस परिस्थिति में कारखाना चलाना असंभव है। जब हमारा डर किसी को नहीं है तो कारखाना चल ही नहीं सकता; इस लिए अब तो इस काम को बन्द ही कर देना चाहिए।"

मालिक ने उत्तर दिया—"अजीब परिस्थिति निर्माण हो गई है। रामू–श्याम को छोडकर सब के सब चुप थे। यदि हम मलैया को अभी गेट के बाहर करदें तो क्या होगा?"

मैनेजर ने कहा—"यह तो मालूम नहीं क्या होगा। कानून किस तरफ ले जाता है यह तो बाद की बात है। अभी यदि हम जबान से मलैया पोचैया आदि को बाहर करते हैं तो गड़बड हो जायगी। इस लिए कल प्रातः काल कारखाने को ताला लगाकर कारखाने को बन्द करने की नोटिस लगा दें।"

यह एक मत से निर्णय हो गया कि कल से कारखाना बन्द होगा। शाम की छुट्टी की घंटी हुई। सब लोग कारखाने से बाहर निकले कि कारखाने को ताला पड़ गया। नोटिस लग गई। अखबार में दे दिया कि लेबर आंदोलन से मजबूर होकर हम कारखाने को अनिश्चित कालतक बंद कर रहे हैं।

५

कारखाना बन्द हो गया ५०–६० लोग बेकार हो गए। लेबर आफीसरने मालिक और मैनेजर को बुलाया व समझाया बुझाया, परंतु यह आग ऐसी लगी हुई थी कि उन से बुझ नहीं सकी। वर्कर्स लोग आए और कारखाने के सामने बैठ गए कि अभी घंटे आध घंटे में

कारखाना खुल जायगा। ६ बजे का समय था १० बजे, ११ बजे इसके बाद २ बजे किन्तु कारखाना बन्द ही रहा। लेबर आफीसर कोशिश करके थक गए। सब वर्करों को निराश होना पड़ा। शाम के ४ बजे पार्क में मिटिंग हुई। उस में यूनियन के सेक्रेटरी साहब भी पधारे थे। बड़े जोरों से मिटिंग हुई। किसीने कहा कल कारखाने के दरवाजे को तोड कर अन्दर घुस जांय और कारखाने का काम चलाएं। कारखाना हमारा है, हमारी मेहनत से बना है। किसी ने कहा दरवाजे तोड़ने के बाद कदाचित हवालात की हवा खाना पड़े। एक मन चले ने कहा, हम तो थोड़े ही कर रहे हैं। चलो पहले थाने में सूचना दे दें। मन्त्रीजी ने भी व्याख्यान झाडना प्रारंभ किया।

यह नारायणरेड्डी का अत्याचार है कि बिना सूचना कारखाने को एक दम बन्द कर दिया। यदि बन्द ही करना था तो हम से पहले कहा जाता। हम कुछ समझौते पर आ जाते। उन को तो क्या घर में कई साल का दाना-पानी भरा होगा। हम गरीबों के घर में १ सप्ताह का भी अन्न नहीं रहता। इस तरह गरीबों को परेशान करना कहां तक न्याय संगत है। क्या सरकार यह अन्याय देखकर चुप रह जायगी। मालक लोग अब भी मजदूरों को अभी भी नहीं समझ रहे हैं। हमारे साथ खिलवाड खेल रहे हैं। क्या मैं पूछता हूं उनका कारखाने को बन्द कर देना मजदूरों को परेशान नहीं है? परंतु मजदूर भाइयो! मत डरो मैं तुम्हें घर बैठे तनख्वाह दिला दूँगा। तुम यह समझलो हम काम पर ही है। सरकार हमारा साथ देगी। और कारखाने को खोलने पर नारायण रेड्डीजी को मजबूर करेगी। कहो "मजदूर आंदोलन जिन्दाबाद" सभी ने साथ २ नारे लगाएं। हमारी मांगे लेकर रहेंगे। दुनिया के मजदूर एक हैं। सरमाएदारी मुर्दाबाद आदि कई नारे जोश खरोश के साथ लगाने लगे। मलय्या पोचैया ने कहा--"नारायण रेड्डी मुर्दाबाद ऐसा जुल्म नहीं चलेगा।"

जब रेड्डी मुर्दाबाद के नारे लगने लगे तो कई मजदूरों की जबानें रुक गईं और रामू ने कहा- "हम बहुत ज्यादा आगे बढ़ रहे हैं और बोल रहे हैं। उनका खाकर उनको गालियाँ दें और मुर्दाबाद कहें ठीक नहीं है। इसपर मलैया ने कहा- "तुम गद्दार हो मालिक के हिमायती हो। बस चुप रहो। हमारा साथ न देना है तो अलग हो जाओ।"

श्यामू ने कहा--"देखिए हमको आखिर उस कारखाने में काम करना है फिर इस प्रकार मालिक को मुर्दाबाद कहकर हम जिन्दाबाद कैसे रह सकते हैं? सारांश २ घंटे तक खूब शोर गुल हुआ और अन्त में एक प्रस्ताव पास हुआ कि यदि २ दिन में कारखाना नहीं खुलेगा तो हम कारखाने को जबरदस्ती खोलकर चलाएंगे सरकार इस का प्रबन्ध करें।

जब सरकारने देखा मजदूर आंदोलन इस प्रकार चल रहा है तो कोतवाली का प्रबंध कर दिया। लेबर अफिसरनें केस कोर्ट में भेज दिया। २ दिन हुए, २ सप्ताह हुए और २ महीने व्यतीत हो गए मजदूर लोग रोजाना आंदोलन चलाते २ तथा नारे लगाते २ थक गए। बेजार हो गए। अधिकांश मजदूरोंने बेजार होकर सेठ साहब के पास पहुंचना प्रारंभ किया। अपनी मुसीबतें बयान करने लगे। फाका कशी का हाल बताया, बाल बच्चों की परिस्थिति सामने रक्खी, परंतु सेठ साहब टस से मस न हुए। उन्होंने उत्तर दिया, "मामला कोर्ट में चल रहा है देखो क्या होता है?" इतने में ४-५ ने --"कहा साहब वह तो ४-६ महीने चलेगा और फिर आप आगे बढें तो कदाचित साल भर भी लग जाय; आप अब दया कीजिए।"

अब मलैया पोचैया का पानी भी उतर गया। वे भी अब निराश होकर अपनी करनी पर पछताने लगे। सारांश किसी का कहा हुआ सेठ के दिल पर कुछ असर न हुआ।

एक दिन रात को रामू, श्यामू मालिक के मकान पर पहुंचे और -- 'कहा मालिक सब मजदूर हार गए हैं अब आपको रहम करना चाहिए।' सेठ ने कहा 'देखो रामू श्यामू तुम दोनों मुझसे कुछ ले जाओ, किन्तु अब कारखाना खोलकर झंझट मोल नहीं लेना चाहता। अब यह कारखाना बेच दूँगा। अब कारखाने चलाने का जमाना न रहा, कारखाने बंद होने का जमाना ही है।'

श्यामू--'मालिक ऐसान कहो सब मजदूर यह मामला यानी अपनी हड़ताल वापिस लेकर पश्चात्ताप करने को तैयार

है। अब आपकी उदारता की आवश्यकता है। बहुत कुछ हो चुका है। सब की नजरें नीची हो गई हैं। पहले मैं बहुत कुछ समझाया तो मुझे गद्दार कहा गया, परंतु आज सबके सब मेरे पास आकर गिड़गिड़ाते हैं। मैं उन्हीं सबका भेजा हुआ आया हूं अतः अब तो आपको हमारी इस मांग को स्वीकार कर लेना चाहिए।'

नारायण रेड्डी ने खूब विचार किया और कहा— 'अपनी हड़ताल वापिस ले रहे हैं। युनियन के सेक्रेटरी का पता ही नहीं है कहां चला गया।'

सब मजदूर—जी हां। हम सब राजी हैं। यदि कुछ नई शर्तें भी रक्खे तो हम हम मान लेंगे। सेठ ने देखा अब अब यह झुक गए हैं; तो उन्होंने कहा अच्छा तो जाओ बिला शर्त जैसे का तैसा वापिस कारखाने को खोल देता हूं। तुम्हारा दिल साफ है तो कोई शर्त नहीं है।

फिर क्या था सब मजदूर खुश हो गए और वापिस कारखाना जैसे का तैसा चलने लगा। अब इन मजदूरों की कोई बहका नहीं सकता। पुनः मालिक मजदूर-प्रेम उत्पन्न हो गया। लेबर आंदोलन खतम हो गया।

पांच भाषाएं एक साथ सीखिए

हिन्दी

श्रीमती सरोजनी नायडू का जन्म १८७९ हैदराबाद में हुआ। इनके पिता का नाम डॉ. अघोरनाथ चटोपाध्यायं था। बारह वर्ष की आयु में मैट्रिक पास करने के बाद आप इंग्लैण्ड गईं और लन्दन व केम्ब्रिज विश्व विद्यालयों में अध्ययन किया। वापिस लौटने पर आपने कविताएं लिखनी शुरू कीं; परन्तु शीघ्र ही राजनीति व समाज कार्य के कारण इसे छोड़ दिया। इसलिए इनकी कविताएं अधिक नहीं हैं; पर जो हैं वे उच्च कोटि की हैं। इन्हीं के कारण आप 'बुलबुले हिंद' कहलवाईं।

मराठी

श्रीमती सरोजनी नायडूंचा जन्म १८७९ ई. हैदराबादीं झाला. यांच्या वडीलांचे नांव डॉ. अघोरनाथ चटोपाध्याय हें. १२ वर्षांच्या वयांत मॅट्रिक पास झाल्यानंतर ह्यांनी इंग्लण्डला जाऊन लंडन व कॅम्ब्रिज विश्व विद्यापिठांत शिक्षण घेतलें. परत आल्यानंतर यांनी कविता लिहिण्यास सुरवात केली पण लवकरच राजकारणांत आणि समाजकार्यांत भाग घेऊ लागल्या कारणांनी यांस लेखन सोडावे लागलें. ह्यामुळें यांच्या कविता फार कमी आहेत, पण ज्या आहेत त्या उच्च कोटींच्या. या मुळेंच त्या 'बुलबुले हिन्द' म्हणून प्रसिद्ध झाल्या.

कन्नड

श्रीमती सरोजनी नायडू रवरू १८७९ में तिंगलदल्लि हैदराबाददल्लि हुट्टिदरू। इवर तंदेय हेसरु डॉ. अघोरनाथ चटोपाध्याय वेंदित्तु। १२ ने वयस्सिनल्लि मेट्रिक पासाद नंतर इवरु इंग्लैण्डक्के तेरळिदरू मत्तु लंडन् हागू केम्ब्रिज विश्व विद्यालयगळल्लि ओदिदरू। हिंतिरुगिद नंतर इवरू कवितेगलन्नु बरियलु प्रारंभिसिदरू; आदरे तीव्रदल्लिये राजनीति मत्तु समाज कार्यद सलुवागी इदन्नू बिट्टगोट्टरू। इदक्कागि ईवर कवितेगलु विशेषवागि इल्ला; आदरे इद्दुउ उच्चकोटिय वागि इवे। ई कारणगलिंद इवरू बुलबुले हिन्द येंदु अनिसि कोंडरू।

तेलुगु

श्रीमती सरोजनी नाइडू १८७१ ई. हैदराबादलो जन्मिंचिनारु। वीरि तन्ड्री पेरु डॉ. अघोरनाथ चटोपाध्याय उंडेनु। १२ व वयस्सुलोने मेट्रिक प्यासैना तर्वाता वीरू इंग्लंड देशमुनकु पोयिनारु, लंडन मरियु केम्ब्रिज विश्व विद्यालयमुलो अभ्यासमु चेसिनारु। तिरिगि वच्चिना पिम्मटा वीरू कवितालु व्रायडमु प्रारंभिंचिनारु कानि तोंदरगा समाज सेवा कोरकै विडिचिनारु। काबट्टि वीरि कवितालु विशेषमुगा लेवु; एवैना उंडिना उच्च तरगतीयवैनवी। ई कारणमुनकै वीरु 'बुलबुले हिन्द' अनि प्रसिद्धि जेंदिरी।

अंग्रेजी

Srimati Sarojini Naidu was born in 1879 in Hyderrbad. Her father's name was Dr. Aghornath Chatopadhyaya. After matriculating at the age of twelve, she went to England and studied at London and Cambridge Universities. After return, she started her career as a poet but soon gave it up for politics and social service. The volume of her poetical work is therefore not very great but it is of a very high standard, which caused her to be described as "The Nightingale of India."

उर्दू

سری متی سروجنی نائڈو سنہ ۱۸۷۹ ع میں حیدرآباد میں پیدا ہوئی
آپ کے والد کا نام ڈاکٹر اگھورناتھ چٹوپادھیائے تھا - بارہ سال کی عمر میں
میٹرک پاس کرنے کے بعد آپ انگلینڈ گئیں اور لندن و کیمبرج یونیورسٹیوں میں
تعلیم حاصل کی - واپس لوٹنے پر اپنے شاعری کرنا شروع کیا - لیکن سیاسی اور
سماجی کاموں کی بدولت اسے جلدی چھوڑنا پڑا - اس وجہ سے آپکی نظمیں
زیادہ نہیں ہیں پر جو بھی ہیں اعلیٰ درجہ کی ہیں - جنکی بدولت آپ بلبل ہند کہلوائیں

मासिक मुख पत्रिका

वार्षिक मूल्य ५)] वीणा [एक प्रति ।।) आना

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, मध्यभारत, मध्यप्रदेश और बरार, संयुक्त राजस्थान, बिहार, उत्तर प्रदेश और बड़ौदा की शिक्षा संस्थाओं के लिए स्वीकृत।

जो पिछले पचीस वर्षों से नियमित रूप से प्रकाशित होकर हिन्दी साहित्य की अपूर्व सेवा कर रही है। भारत के प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में इसका उच्च स्थान है।

साहित्य के विभिन्न अंगों पर तथ्यपूर्ण एवम् गंभीर प्रकाश डालने वाले लेख तथा परीक्षोपयोगी विषयों पर आलोचनात्मक समीक्षाएं प्रकाशित करना इसकी प्रमुख विशेषता है।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन की प्रथमा, मध्यमा एवं उत्तमा (रत्न) तथा बी. ए. और बी. ए. के छात्रों के लिए इसके निवन्ध अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुए हैं।

वीणा का भारत में सर्वत्र प्रचार है !

संस्थापक :-
बरार केसरी श्री ब्रिजलाल बियाणी
(वित्त मन्त्री मध्यप्रदेश)

प्रवाह

राजस्थान भवन, अकोला

राष्ट्रभाषा का उत्कृष्ट सचित्र मासिक
प्रत्येक मास की १५ तारीख को
प्रकाशित होता है।

★

लक्ष प्रवाह का और साधनाः—

१ "प्रवाह" साहित्य क्षेत्र में प्रवाहित होकर जीवन की हर धारा में बहना चाहता है। जीवन के सारे छोटे मोटे हिस्सों को वह स्पर्श करना चाहता है।

२ "प्रवाह" ने साहित्य एवं समाज की ठोस सेवा करने के लिए जन्म लिया है।

३ "प्रवाह" जीवन के स्थायी निर्माण की ओर प्रयत्नशील एवं जागरूक है-वह ऐसे निर्माण के लिए प्रयत्नशील है, जो सत्यं, शिवं, सुंदरम् की ओर गतिशील हो।

४ "प्रवाह" बीते का निरीक्षण करता है, वर्तमान को व्यवस्थित करता है और भविष्य को गढता है।

५ "प्रवाह" अपनी कीमती विरासत का अनमोल धरोहर को अपनी संस्कृति का स्मरण रखता है खुदको नहीं भूलता।

★

कुछ विशेष स्थायी स्तंभः—

१ सम्पादकीय विचारधारा-महीनेकी महत्वपूर्ण घटनाओं का निष्पक्षता और निर्भीकतापूर्वक विवेचन और उन पर सम्पादकीय विचार।

२ समयचक्र- इस स्तंभ में महीने के एक एक दिन की विशिष्ट एवं मार्केट की घटना का संकलन।

३ साहित्य परिचय-इस स्तंभ से पत्र-पत्रिकाओं और नवीन पुस्तकों की निष्पक्ष समालोचना की जाती है।

आजही प्रवाह का वार्षिक चंदा ६) रु. भेजकर इसके ग्राहक बन जाइये।

न्यूजएजेंट इसकी एजेंसी लेकर लाभ उठा सकते हैं।

व्यवस्थापक—
'प्रवाह' राजस्थान भवन, अकोला

दादा भाई नौरोजी

वर्तमान स्वराज्य सृष्टि के विधाता दादा भाई नौरोजी का जन्म बम्बई में १८२५ ई. में एक प्रसिद्ध पारसी पुरोहित के घरमें हुआ। इनके जन्म के चार वर्ष बाद ही इनके पिताजी का स्वर्गवास हो जाने से इनके शिक्षा-दीक्षा तथा पालन पोषण के क्षेत्र में पिता का सहयोग न मिल सका। लेकिन माता पढी लिखी न असाधारण स्त्री न होते हुए भी एक बुद्धि मान थी इस लिए उसने इनके पढाई आदि का उत्तम प्रबन्ध किया। इस कार्य में नौरोजी के मामा ने इनके माता को काफी सहयोग दिया था।

सरल स्वभाव तीव्र, बुद्धि तथा मलनसार तबियत ने नौरोजी की अध्ययन की ओर भी उत्साहित किया। सहपाठी तथा अध्यापक वर्ग सदा इन से प्रसन्न रहते। इस तरह अनुकूल वातावरण मिल जाने

से सदा यह अपने सहपाठियों में अव्वल रहें। कई बार इन्हों ने अच्छे २ पारितोषिक प्राप्त कीजिए और पुरस्कार भी।

कुशाग्र बुद्धि के कारण नौरोजी ने २० वर्ष की अवस्था में ही अपनी सारी पढाइ समाप्त करली और तत्न चार वर्ष बाद "रास्तगुफ्तार" नामक पत्र निकाल कर देश सेवा का परिचय दिया। थोडे ही दिनों के बाद एल्फिन्स्टन कालेज में, जहां पर आपने अपनी पढाई समाप्त की थी, गणित के मुख्याध्यापक नियुक्त हुए; फिर भी देश सेवा का भूत दिमाग में सवार था हीं। पढाते-पढाते आपने अन्य सामाजिक संस्थाओं को जन्म देना प्रारंभ किया। कन्या पाठशाला, बम्बई असोसिएशन, पुनर्विवाह सभा, साहित्य और विज्ञान सभा, पारसी व्यायाम गृह, ईरानी फंड आदि कई संस्थाओं की स्थापना कीं। इन संस्थाओं की आपने केवल स्थापना ही नहीं की वरन् अपने अथम्य उत्साह, अथक परिश्रम, अद्भुत दृढता, देश हित की उत्कट अभिलाषा तथा एकनिष्ट देश सेवा व्रत के बलपर सफल भी बना दिया।

दादा भाई अपने जीवन काल में पांच बार विलायत जाकर आये। पहली ही बार जब वह विलायत गये तो इन्हों ने वहां वालों को भारत की कई बातों से अनभिज्ञ पाया। इन्हें यह अखरने लगा। इसे दूर करने के लिए आपने वहां इंडियन असोसिएशन, ईस्ट इण्डिया असोसिएशन जैसी कई संस्थाओं को जन्म दिया और इनकी ओर से सारे देश में घूम २ कर सभाएं करते और विद्वतापूर्ण भाषण देकर लोगों को भारत संबंधी जानकारी देते। इनकी कायम की हुई उपरोक्त सभाओं में भारत का हित चाहने वाले सभी देशी-विदेशी सज्जन सम्मिलित होने लगें। इस दिशा में बढी हुई मांग को देख कर दादा भाई ने समिति की ओर से एक सामयिक पुस्तक प्रकाशित की। साथ ही साथ और समाचार पत्रों में भी लेख लिख कर लोगों को भारत संबंधी ज्ञान प्राप्त करा दिया।

देश सेवा की भावना ने इन्हें इतने पर ही शांत न रहने दिया। आपने विलायत की पार्लमेंट का सदस्य बन आन्तरिक बातों को जान कर उचित कारवाई करने की ठानी। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए आप वहां के उदार दल का समर्थन प्राप्त कर आगे बढने में प्रयत्न शील रहे पर उदार दलवालों की अन्त में हार हुई और आप पार्लमेंट के सदस्य न बन सके। पर इस से इन्हें चैन न मिला पार्लमेंट का सदस्य बनने की धुन दिमाग में सवार थी ही। वहाँ से सीधे भारत पहुंचे यहां खूब काम किया और जब अनुकूल

वातावरण मिल गया तो फिर सीधे इंग्लैंड पहुंचे और अपने मन-पूर्ति में लगे रहे। इस तरह से अन्त में वे पार्लमेंट के सदस्य बन कर ही रहे। इस सफलताने निश्चित ही भारत के गौरव को और भी बढ़ा दिया कारण आप पहले भारतवासी थे जिन्होंने ब्रिटिश पार्लमेंट की सदस्यता प्राप्त की और वह भी अपने अथक परिश्रम और अपूर्व साहसके बलपर।

पार्लमेंट की सदस्यता मिलने की देर थी, फिर क्या था? आपने अपनी अगली कारवाही धीरे धीरे प्रारंभ की। दो-एक मित्रों को अपना बना कर हिंदुस्तान की आर्थिक दशापर विचार करने के लिए जोरदार शब्दों में भारत सुधार की आवश्यकता प्रकट की और हिन्दुस्थान की आर्थिक दशापर विचार करने के लिए पार्लमेंट कमेटी नियुक्त करवाई। जब आप इसके बाद भारत वापिस लौटे तो देश के प्रति इस अपूर्व त्याग को देखकर देशवासियोंने आपका खूब स्वागत किया और सम्मान प्रदर्शनार्थ ३० हजार की थैली आपको भेंट की, पर यह त्यागमूर्ति उसे कब अपने लिए स्वीकार करती इसे आपने देश सेवार्थ समर्पित कर दिया।

इन्हीं दिनों बडौदा रियासत की आन्तरिक स्थिति बहुत ही खराब होगई थी। वहां के राज्य प्रबन्ध को ठीक करना मौत से खेलना था! दादाभाईने इस काम को पूर्ण करने की ठानी और कठिन से कठिन परिस्थितियों का सामना करते हुए भी, मंत्री बनकर' आपने दो ही वर्ष में परिस्थिति पर काबू कर लिया। इस साहस पूर्ण कार्य से प्रजा प्रसन्न होगई और भारतमंत्री ने प्रसन्न होकर आपकी खूब प्रशंसा की और कहा कि 'आपने मंत्रित्व काल में यह चरितार्थ कर दिखाया कि राज्योन्नति का विशेषदायित्व मंत्रीपर ही होता है।'

अखिल भारतीय राष्ट्रीय महासभाने तीन बार आपको सभापति बनाया। दो बार आप कलकत्ता कांग्रेस के और एक बार लाहोर कांग्रेस अधिवेशन के सभापति हुए।

एक पारसी सज्जन ने, जो इनके अति निकट संसर्ग में रहे हैं, लिखा है कि, 'दादाभाई का स्वभाव बहुत ही सरल और शान्त था। बातचीत में आपके स्वभाव की सरलता टपकती थी आप सब के साथ उचित व्यवहार करते थे। बच्चों के साथ बच्चे बन जाते थे। अभिमान तो आपके छू तक नहीं गया था। आप की बातचीत सुनने वाले मुग्ध हो जाते आप परिश्रम करते हुए भी थकते न थे। जब किसी काम में लग जाते तो उसे पूरा किये बिना छोड़ते ही नहीं। वे मनोविनोद करना भी खूब जानते थे मित्रता भी आप खूब निभाते। ९२ वर्ष की अवस्था में आप स्वर्गवास को चले गये। आज आप हमारे बीच नहीं है पर इनकी कीर्ति अमर है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में आपका नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा जायगा यह बात निःसंदेह। अतः हमें इनसे देश सेवा में रत रहने तथा परिश्रम करने की शिक्षा लेनी चाहिए।
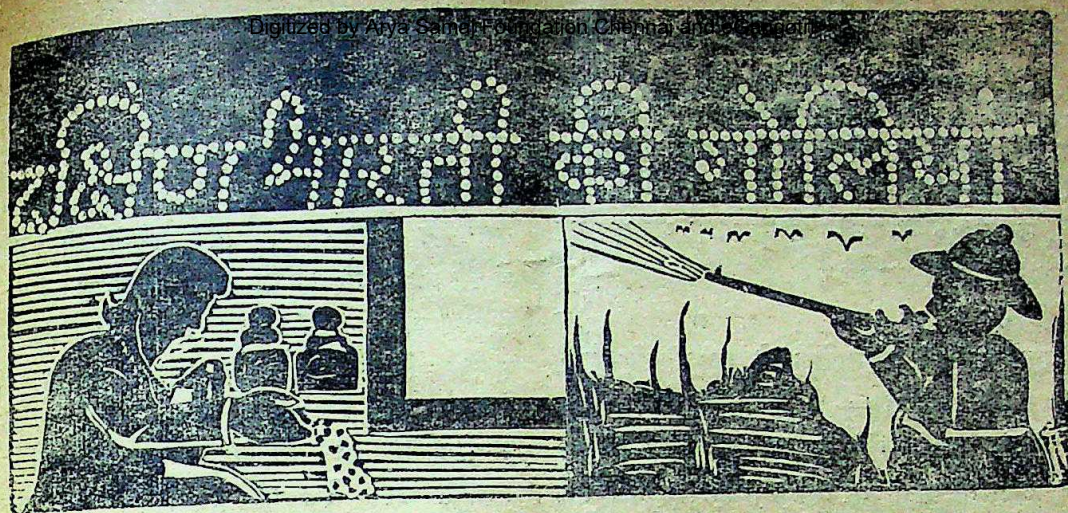
—गोलीबाज

१ हैदराबाद के आर. टी. डी. विभाग की हड़ताल ता. १०-८-५३ को प्रारम्भ होकर ता. २२-८-५३ को समाप्त हो गई। बराबर १२ दिन तक पुलिस को हैरान होना पड़ा। जनता का आना-जाना रुक गया और अन्त में हड़ताल का बारहवां-तेरहवां हो गया। हम देखते हैं कि जहां-तहां हड़तालों की अकसर ऐसी ही बारहवीं-तेरहवीं हुआ करती हैं। इस में तो कुछ न हुआ अन्यथा खामखा गोलियों का प्रयोग हो जाता। इस लिए हड़तालियों को जरा सोच समझ कर हड़ताल करनी चाहिए।

0 0 0

२ भारत वर्ष में ही क्यों सारे संसार में एक प्लेग या महामारी-सी हड़ताल की हवा चल रही है जो आए दिन शांतिप्रिय जनता को परेशान करती रहती है। सरकार को चाहिए कि इसके भी टीके निकाल दें। जिस मुहल्ले या जिस कारखाने में यह रोग फैला हो जबरदस्ती टीके दिये जायं या कोई गोलियां दिलादी जायं। कदाचित इस प्रयत्न से यह हड़ताल की बीमारी खत्म हो जाय और इसके कीड़े या पिस्सू जो कुछ भी हो नष्ट-भ्रष्ट हो कर हर एक को अमन की जिन्दगी नसीब हो।

0 0 0

३ एक अत्यन्त अनुभवी वृद्ध महाशय ने कहा, '८० प्रतिशत हड़तालें अपनी आय बढ़ाने की गरज से होती हैं। हां, २० प्रतिशत हड़तालें वास्तव में महंगाई के कारण लाचार होकर की जाती हैं। सरकार को चाहिए कि इन हड़तालों को रोकने का वास्तविक प्रबन्ध करे। यानी नाज की महंगाई को कम करने के लिए राशनिंग दफ्तर उठादें क्यों कि सरकार अलानिया ३०) की लेवी लेकर ४०) को बेचती है।' मैंने उत्तर दिया—'राशनिंग दफ्तर यदि उठ जाय तो उनके हजारों कर्मचारियों का क्या होगा? उनको तो फिर अफ़यून की गोलियां खानी पड़ेंगी।'

0 0 0

४ परमिट सिस्टम एक ऐसा सिस्टम है जिससे सैकड़ों आदमी मजे करते हैं, परन्तु लाखों करोड़ों को नुकसान उठाना पड़ता है। जिस किसी को परमिट मिला उसकी पांचों उंगलियां घी में हैं। मन माना भाव बेचता है। सरकार नफे पर भी कंट्रोल नहीं रखती। रखती है तो चोरी से काम होता है। खरीदी-बिक्री का हिसाब साफ़ तौर पर नहीं पूछती। बीच में रुश्वत की गोलियां चलने लगती हैं। हम तो सुनते हैं ऐसी गोलियां सारे दफ्तरों में बंटा करती हैं। सच-झूठ तो भगवान ही जानता है!

0 0 0

५ एक लेबर आफीसर ने एक मालिक से पूछा—'तुम इन मजदूरों को क्या वेतन देते हो?' मालिकने कहा—'उनसे ही पूछिए।' आफीसर ने मजदूर से दरियाफ़्त किया तो मजदूर ने कहा, 'मुझे ६०) मिलते हैं।' लेबर आफीसर

ने आंखें निकालकर मालिक से कहा— '६० रुपए तो सड़क झाडने वाली औरत को मिलते हैं।' इसपर मालिक ने उत्तर दिया —' सरकार बहुत से बी. ए. भी मारे २ फिरते हैं, उनको ५० वेतन भी नहीं मिलते।' यह सुन कर आफीसर को जैसे गोली लग गई।

0 0 0

६ एक कारखाने में मालिक से मजदूरों ने नई २ मांगे कीं। मालिक ने कहा— 'देखो भाइयो, जैसा चलता है चलने दीजिए, नई मांगें नई आमदनी होने पर पेश करें, इस समय तो घाटा पड़ रहा है।' इस पर मजदूरोंने कहा, 'यह तुम्हारी अयोग्यता है यदि हमारे ८ घंटे में कमी हो तो बोलो। तुम चाहे कुछ भी करो हमको बोनस दो, ग्रेच्युएटी दो, अलौंस दो, भत्ता दो, सिक़लिव, केज्युएल लिव, फारलिव दो और वेतन तो देना पडेगा ही।' मालिकने कहा— 'वेतनके साथ कितनो दुमें लग गई हैं, यह निभेगी या नहीं।

0 0 0

७ जब से दुनियां बनी तब से आदमी धन्धा या मजदूरी करता आया है। पहले वार्षिक वेतन चला, बाद मासिक वेतन निकला, साप्ताहिक, दैनिक भी चलने लगा है परन्तु किसी के साथ कुछ न था। अब सरकार मजदूरों की हमदर्दी में कानून बना दिया है और तनख्वा या वेतन के साथ हथियार बांध दिए हैं। भला, सरकार तो इस भार को उठा सकती है क्यों कि उसके आदेश मात्र से पैसा जनता से टैक्स रूप में आ जाता है परन्तु धन्धे वाले क्या करें? यह कानून कारखानों को मिटाने पर तुला हुआ है यदि इस तरफ समय पर ध्यान न दिया गया तो देश का बड़ा भारी नुकसान हो सकता है। यह कानून राक्षस ऐसा बन जायगा कि इसपर हजारों गोलियां झाडनेपर भी कुछ न होगा।

0 0 0

८ एक लेबर आफीसर से एक मालिक ने कहा— 'आप लेबर आफीसर हो बन कर न सोचिए ऑनर आफीसर बनकर भी सोचिए' इस पर आफीसर ने कहा— 'हम दोनों की भलाई सोचते हैं। हम दोनों के झगडे मिटाकर दोनों को मिलाना चाहते हैं। हमारे पास मालिक-मजदूर एक हैं। हम कानून के माफिक सोचते हैं।' मालिक ने मुंह पर ही कह सुनाई कि, 'यदि आप ऐसे होते तो आपका नाम लेबर आफीसर न होता और ही कुछ होता', आफीसरने उत्तर न दिया।

९ किसी सज्जन ने कहा —'लेबर विभाग कायम होने से मालिक-मजदूरों के सम्बन्ध बिगड़ गए हैं। न नौकर दिलसे काम करते हैं न मालिक ही नौकर की भलाई की सोचते हैं। कम काम करके ज्यादा वेतन उठाने की प्रवृत्ति नौकरों में आ गई है तो ज्यादा काम लेकर कम वेतन देने के विचार मालिकों के हो गए हैं। मालिक मजदूरों में प्रेम न रहा। लेबर विभाग इन दोनों की बीच खाई बन गया है। इस लिए इस विभाग को उठा देना चाहिए इस की आवश्यकता ही नहीं है। मालिक-मजदूरों में प्रेम स्थापित करके देश की संपत्ति को बढाना है तो लेबर विभाग बन्द कर दिया जाय।' बहुत अच्छा है यदि यह गोली सरकार पर लग जाय।

0 0 0

१० बहुत से नेता गण ऐसे हैं जो अपने को पुजवाने के लिए बड़े २ पाप करते रहते हैं। मजदूरों को बहका कर अपने पक्ष को बढाना तो साधारण बात है। अछूतोद्धार का कानून हो गया, परन्तु स्वभावतः अभी भी आदि जाति के लोग उन से दूर रहते हैं। वे यह समझते हैं कि हम सेवा करने के लिए पैदा हुए हैं, परन्तु नेता गण उन्हें पथभ्रष्ट करके उभारते हैं। सनातन धर्मियों के खिलाफ बगावत का झण्डा ऊंचा करके अपने आपको सुर्खरू बनाते हैं। नेता लोग ऐसी बे निशाने की गोलियां मारते हैं कि जिससे लाभ के स्थान पर हानि अधिक होती है। ऐसे नेताओं से मजदूर तथा हरिजन भाइयों को सावधान रहना चाहिए।

0 0 0

११ कम्युनिस्टों के कई उद्देश्य बड़े अच्छे हैं परन्तु क्या वे हमारे पूज्य ऋषि मुनियों के उद्देश्यों से बढकर हैं? ऐसा अगर समझते हैं तो यह बड़ी भारी गल्ती है, उन्हें ज्ञान की गोलियां खानी चाहिए और केवल कम्युनिस्ट साहित्य ही न पढकर हमारे अपने ऋषि-मुनियों के उपदेश पढना चाहिए। भारतमाता के सपूत भारत का अन्न खाकर, भारत का कपडा पहन कर, दूसरे देशों की गाना बेकार है। यह देश के प्रति नमकहरामी भी कहला सकती है। जिसका खाना उसका गाना यह समझ में आता है, परन्तु जिसका खाना उसी को बुरा बतलाना सर्वथा गद्दारी है। हम यहां पैदा हुए हैं यहीं मरेंगे, यहीं पर आदि अन्त है। दूसरे देश हमारे लिए तीर्थ स्थान नहीं हो सकते।
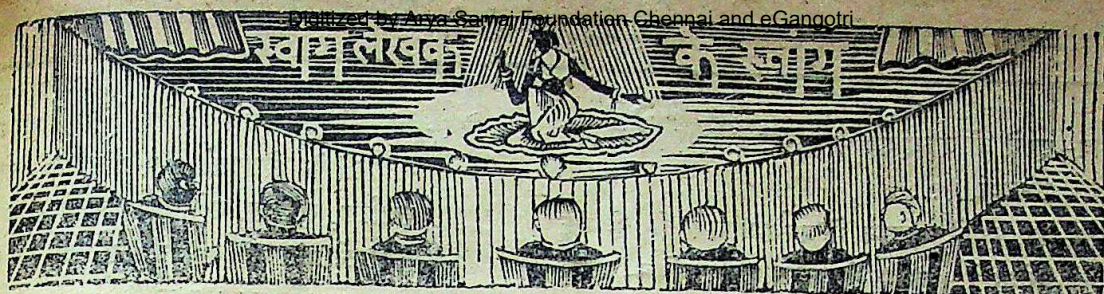
स्वांग लेखक

बेकारी

मित्र– श्रम का मूल्य बहुत बढ़ गया है।

मित्र– श्रम तो थेट से ही मूल्यवान है।

मित्र– परन्तु सरकार के नए कानून किधर जारहे हैं।

मित्र– मौजूदा लेबर कानून को देखते हुए तो नए कारखाने कायम ही नहीं हो सकते।

मित्र– फिर देश में तरक्की कैसे होगी?

मित्र– यह तो सरकार को मालूम है।

मित्र– आज कल कोई नया काम करने पर असलसे मजदूरी बढ़ जाती है। इसलिए धन्धे वाले लोगोंने इसमें पैसे डालना छोड़ दिया है।

मित्र– पंच वर्षीययोजना की क्या दशा होगी?

मित्र– यह श्रम दानों से हो जायगा।

मित्र– भाई साहब, अब जनतन्त्र राज हो गया है कोई किसी से बेगारी नहीं ले सकता।

मित्र– अब तो सब धन्धे सरकार चलाए तो ठीक है।

मित्र– हां, ठीक है परन्तु ऐसे-वैसे धन्धे सरकार हाथ में लेकर पछता चुकी है। यह ट्रान्सपोर्ट, रेल्वे या एयरवेज नहीं है जो आपोआप चल जाएंगे।

मित्र– इंडस्ट्री चलाने में सरकार सफल नहीं हो सकती। यदि लेबर कानून में संशोधन न हो तो नए २ कारखाने खुल नहीं सकते हैं और मौजूदा बेकारी दूर नहीं हो सकती।

मित्र– बेकारी बढ़ रही है सरकार को सावधान होकर अनावश्यक कानून रद्द कर देना चाहिए।

१५ अगस्त १९५३

मित्र– आए साल, १५ अगस्त आती है और चली जाती है। हमको क्या प्रेरणा मिलती है इस पर बहुत कम लोग सोचते हैं।

२ मित्र– ६ वर्ष हुए आज अंग्रेजोंने भारतीयों को शासन सत्ता सौंप दी थी। आज का दिन भारत की स्वतन्त्रता का दिन है, आजादी का दिन है। आज ही के दिन भारत स्वतन्त्र हुआ।

१ मित्र– आज का दिन आजादी, शान्ति, सुख समृद्धि, सांस्कृतिक विकास तथा गौरव का दिन है। ६ साल हुए यह दिन हम मना रहे हैं।

२ मित्र– आज के दिन समस्त देश के नगरों तथा उपनगरों तथा ग्रामों में स्वतन्त्र-दिवस मनाया गया और झंडा फहराया गया।

१ मित्र– आज के दिन हमको कुछ न कुछ प्रण लेना चाहिए कि देश के लिए हम कुछ न कुछ करेंगे या मरेंगे?

३ मित्र– अच्छा, मित्र कहो हम क्या प्रण लें?

१ मित्र– कम से कम पंचवर्षीय-योजना में कुछ काम करें। गांव में जाकर खेती बाड़ी संभालें। उपदेशक या शिक्षक बनकर जनता को लाभ पहुंचाएं। तब ही १५ अगस्त मनाना सफल होगा।

जापान–जर्मन

१ मित्र– जापान बड़ा होशियार देश है।

२ मित्र– सुनते हैं वहां औरतें, बच्चे, बूढ़े सब काम करते हैं। १२–१४ घंटे श्रम में डूबे हुए रहते हैं। उन में देश प्रेम कूट-कूट कर भरा हुआ है।

१ मित्र– घर घर में कारखाना है।

३ मित्र– उनकी कला भी अचम्बे की है। बैठे २ रंग-बिरंगी चीजें बना डालते हैं। एशिया ने सब से पहले नाना प्रकार की मशिनरियां बनाईं और युद्ध किया।

४ मित्र– इसने तो एटम बम के कारण हथियार डाल दिए अन्यथा......

१ मित्र– हां, हमारे बचपन में जर्मन-जापान दो ही राष्ट्र प्रसिद्ध थे। जर्मन भी कई राष्ट्रों पर विजय पाकर हार गया और जापान भी।

२ मित्र– अब फिर कुछ हलचल हो रही है।

१ मित्र– यदि फिर जापान-जर्मन स्वतन्त्र हो गए, तो दुनिया को खतरा है।

४ मित्र– जापान ने तो रूस और चीन को भी दांतों चने चबा दिए थे।

२ मित्र– अब भी उत्पादन प्रतियोगिता में जापान आगे बढ़ रहा है।

३ मित्र– जर्मन टुकडे २ होकर एक होने का प्रयत्न कर रहा है।

यही तो तारीफ है!

१ मित्र– अखंड भारत किसे कहते हैं?

२ मित्र– हां, उत्तर भारत दक्षिण भारत तो सुनते थे परन्तु यह अखंड भारत क्या है?

३ मित्र– जिसका खंड न हो। पहले हमारा देश बहुत लंबा-चौडा था, जिसे दक्षिणभारत उत्तरभारत के अलावा पश्चिम भारत और पूर्व भारत भी कहते थे। पश्चिम भारत में सिंध, पंजाब, सीमा प्रांत तथा अफगानिस्तान तक प्रांत थे पूर्व में बंगाल आसाम के आगेका ब्रह्मदेश था परन्तु राजनीतिज्ञों ने इसे काट छांट दिया

१ मित्र– हम जिस में रहते हैं यह तो दक्षिण भारत ही है न?

३ मित्र– हां, किन्तु इसमें भी भेद हैं, दक्षिण भारत में भाषाओं के लिहाजसे ४-५ प्रांत हैं जिसे आन्ध्र कर्नाटक, तामिल, मलियालम कहते हैं। मराठी गुजराती प्रांत भी अर्ध दक्षिणी हैं इन सब को मिलाकर दक्षिण भारत कहते हैं।

२ मित्र– अब पूर्व पश्चिम भारत भी है किन्तु कुछ कट-छट गया है जिसे अब पाकिस्तान कहते हैं।

१ मित्र– अच्छा तो पाकिस्तान भारत से ही पैदा हुआ है

२ मित्र– और हमसे ही काश्मीर छीनना चाहता है।

३ मित्र– यही तो तारीफ है।

कोरिया

१ मित्र– कोरिया का युद्ध समाप्त होगया।

२ मित्र– सुनते तो ऐसा ही है।

१ मित्र– सुनते हैं कोरिया युद्ध के नाटक में भारत का बड़ा अच्छा पार्ट रहा।

२ मित्र– हां, इसमें क्या शक है, जब उत्तर कोरिया ने हमला किया तब भारत ने गैर वाजिब बताया।

३ मित्र– अमेरिकाने जब दक्षिण कोरिया को मदद देकर उत्तर कोरिया को पीछे हटाया तब भी भारत ने कहा–आगे न बढें युद्ध को यही समाप्त कर दें परन्तु न मानकर कई बार आगे बढ़ें और पीछे हटे।

२ मित्र– इस प्रकार कई बार उत्तर दक्षिण कोरिया जीते-हारे अन्त में दोनों पहलवान पस्त हिम्मत होगये।

३ मित्र– अब जो भारत ५ हजार सहायक सैनिक कोरिया जारहे हैं वह हमारे देशकी परम्परा के द्योतक हैं पर उपकार करना हमारी संस्कृति का पहला लक्षण है। आशा है यह निष्पक्षता से सहायता करके भारत का नाम और भी उजागर करेंगे।

विश्व-साहित्य

(संसार की समस्त भाषाओं के साहित्य को राष्ट्रभाषा हिन्दी में परिवेशित करने वाली एकमात्र त्रैमासिक पत्रिका ।)

'विश्व-साहित्य' का ध्येय अन्य भाषाओं के साहित्य को हिन्दी में प्रस्तुत करना है।

'विश्व-साहित्य' एक पुस्तक माला है जो त्रैमासिक पत्रिका के रूप में प्रति वर्ष जनवरी, अप्रेल जुलाई और अक्तूबर में प्रकाशित होगी।

'विश्वसाहित्य' का एक विशेषांक भी प्रतिवर्ष प्रकाशित होगा, जिस में लब्ध प्रतिष्ठित विदेशी साहित्यकारों की किसी एक ख्यातिपूर्ण रचना का अनुवाद होगा।

'विश्व साहित्य' की साधारण प्रति का मूल्य १) रु. होगा, विशेषांक का २) रु. । विश्व-साहित्य के ग्राहकों को विशेषांक केवल १) रु. में मिलेगा। इस प्रकार विश्व-साहित्य का वार्षिक मूल्य ५) रु. होगा।

'विश्व-साहित्य के विषय में सब प्रकार के पत्र-व्यवहार निम्न पते से करें।

सम्पादक, 'विश्व-साहित्य', विष्णुपुरी, अलीगढ

दक्षिण भारती साहित्य प्रकाशन समिति

८६, अफ़ज़लगंज, हैदराबाद दक्षिण

का

पहला—पुष्प

सरदार पटेल

ले. पं. भीष्मदेवजी शास्त्री

प्रकाशित हो चुका है

मूल्य	साधारण	१)
	राजसंस्करण	१॥)

दूसरा पुष्प

हिन्दी, मराठी, कन्नड़ और तेलुगु साहित्य का

प्रारम्भ-युग

प्रकाशित हो चुका है

इसमें

चारों भाषाओं के श्रेष्ठ विद्वानों के लिखे हुए चार तुलनात्मक खोजपूर्ण लेख मिलेंगे।

साहित्य—परिचय

'उद्योग-व्यापार-पत्रिका'

प्रकाशक—भारत सरकार का व्यापार और उद्योग मंत्रालय, नई दिल्ली।

वार्षिक चन्दा—छः रुपये एक प्रति—आठ आना।

'उद्योग – व्यापार – पत्रिका' का प्रकाशन हिन्दी जगत के लिए महत्वपूर्ण है। उद्योग व्यापार में लगी हुई देश की जनता अंग्रेजी से बहुत कम परिचित थी; हिन्दी से सभी सुपरिचित थे। परन्तु उद्योग-व्यापार की दृष्टि से सरकार द्वारा प्रकाशित जानकारी के लिये इन्हें अंग्रेजी जाननेवालों का मुंह ताकना पड़ता था। सारी जानकारी पत्रों में तथा अंग्रेजी भाषा में ही प्रकाशित होती। प्रामाणिक रूप से इनका प्रकाशन हिन्दी के अन्य पत्रों में यथा समय बहुत कम छपता था, और जो छपता वह भी जरूरत मन्द लोगों के पास बहुत कम पहुंचता। ऐसी अवस्था में उद्योग-व्यापार में लगी हुई या इस से सम्बन्धित जनता आवश्यक जानकारी से कोसों दूर रहती। जानकारी के अभाव में बहुतों को हानि भी उठानी पड़ती। इतना ही नहीं बल्कि देश की वास्तविक स्थिति की जानकारी के अभाव में बहुतों के मन में देश की प्रगति के सम्बन्ध में शंका-सी बनी रहती। "उद्योग व्यापार पत्रिका" इस कमी को दूर करने में सफल सिद्ध होगी।

लेखों के साथ लेखकों के नाम भी प्रकाशित होते रहे तो ठीक होगा। सरकार के उद्योग व्यापार मंत्रालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका में लिखने वाले अधिकारी लेखकों के विचारों को पढ़कर, उनके विचारों का उद्योग व्यापार पर क्या असर पड़ सकता है, इसका निकटतम अनुमान लगाते हुए अपने उद्योग व्यापार को बढ़ाने घटाने में व्यवसाइयों को सुविधा हो सकती है।

पत्रिका में देश के उद्योग व्यापार की प्रगति संबन्धी पर्याप्त जानकारी है। परन्तु यह जानकारी समूचे देश की है। इसके साथ यदि प्रान्तीय सरकारों तथा देश के विभिन्न राज्यों संबन्धी अलग-अलग जानकारी भी दी जाय तो विभिन्न प्रान्तों एवं राज्यों की उद्योग व्यापार में लगी जनता को और भी सुविधा हो सकती है।

विद्यार्थियों की दृष्टि से पत्रिका का स्थान बहुत ऊंचा है। उनके लिए पत्रिका बहुत लाभ प्रद है। आशा है कि इससे संबन्ध रखने वाली जनता इसे अधिक से अधिक अपना कर लाभ उठाएगी और साथ ही पत्रिका का सम्पादन विभाग इसे और भी उपयोगी बनाने का प्रयत्न करेगा।

'पांचजन्य'

प्रकाशक—राष्ट्रधर्म कार्यालय, सदर बाजार, लखनऊ

"पांचजन्य" का "राजनीति-अंक" हमारे सामने है। इस में वाद, विधान और व्यवहार की सुन्दर एवं विस्तृत विवेचना की गई है। वाद, विधान और व्यवहार इन तीनों को स्पष्ट करने के लिए अन्य भाषाओं में कई स्वतन्त्र पुस्तकें लिखी गई हैं, फिर भी इन तीनों का अर्थ अभी अस्पष्ट-सा ही है। हर्ष की बात है कि पाञ्चजन्य के विद्वान लेखकों ने इन तीनों विषयों को भारतीय सिद्धान्तों के आधार पर बहुत ही सरलता पूर्ण रीति से स्पष्ट किया है। तीनों विषय गहन होने पर भी यदि व्यक्ति रुचि से "पाञ्चजन्य" के इस "राजनीति-अंक" को आदि से अन्त तक पढ़ ले तो वह इन तीनों विषयों की रूप रेखा का दर्शन प्राप्त कर सकता है। इस लिए यह कहा जा सकता है कि "पाञ्चजन्य" का यह "राजनीति-अंक" पूर्णतया अपने उद्देश्य में सफल हो सका है। पाञ्चजन्य का अर्थ है समाज का क्रान्तिकारी नेता। इस अर्थ को लेकर हम यह कह सकते हैं कि "पाञ्चजन्य" के इस "राजनीति अंक" ने भारतीय समाज का वास्तव में नेतृत्व किया है और वह भी सफलता के साथ। क्यों कि इस नेतृत्व में क्रान्ति की ज्योति विद्यमान है, भारतीय सिद्धान्तों का प्रकाश प्रकाशमान है। इस पर भी पत्रिका के विद्वान संपादक महोदय ने अपने सम्पादकीय में यह स्पष्ट किया है कि यह प्रयत्न इस दिशा में एक मात्र प्रयत्न न होकर उस प्रयत्न का यह श्री गणेश है। हम इस बात का स्वागत करते हैं और साथ ही कामना करते हैं कि "पाञ्चजन्य" के इस दिशा में प्रकाशित होने वाले अगले अंक और भी अधिक प्रकाश को लेकर जनता के सामने विद्यमान हो और उनको उचित मार्गदर्शन कराता रहें साथ ही जनता से हम आशा करते हैं कि इस महत्वपूर्ण प्रकाशन से वह पूरा-पूरा लाभ उठाते हुए इसे प्रोत्साहित करें।

मुद्रक तथा प्रकाशक

बालकृष्ण लाहोटी

मैनेजिंग डायरेक्टर,

दी मारवाड़ी प्रेस लि. २७० अफजलगंज हैदराबाद दक्षिण

तारीखवार जुलाई और अगस्त मास के समाचार

विश्व

जुलाई १९५३

ता. १ पाक द्वारा मिश्र को पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन।

ता. २ हिन्द चीन की स्थिति के बिगड़ने की आशंका।

ता. ४ पेरिस में एक मुलाकात में नेहरूने कहा कि चीन सदा के लिए दूसरे राष्ट्र की कठपुतली नहीं रह सकता।

ता. ५ बर्मी व्यापार प्रतिनिधि मण्डल बम्बई में।

ता. ९ ब्रिटेन के विश्वसनीय पत्र 'लिवर पुल पोस्ट' ने आज घोषणा की कि प्रधान मंत्री सर चर्चिल ३ माह के भीतर अपने मंत्री पद का त्याग करेंगे।

ता. १० सोवियत स्वराष्ट्र मंत्री बेरिया के विरुद्ध देशद्रोह का आरोप।

ता. ११ पूर्व बर्लिन में १७ जून को लगाया गया मार्शल ला उठाने की घोषणा।

ता. १२ तेहरान के प्रधान मंत्री डा. मुसद्दिक की रूस के साथ व्यापारिक और आर्थिक वार्ता।

ता. १३ स्वेज नहर क्षेत्र में पुनः रक्तपात की आशंका। इस्मालिया पर ब्रिटेन की फौजों का कब्जा।

ता. १५ अमेरिका के विदेश मंत्री ने कहा की आज की दुनिया में कोई भी राष्ट्र अकेला नहीं रह सकता।

भारत

ता. १ तुंगभद्रा योजना का उद्घाटन समारोह सम्पन्न।

ता. २ जबलपुर में एशियाभर में अनुपम डाक-तार विभाग के विशाल भवन का निर्माण।

ता. ४ कलकत्ता में ट्राम-भाडा वृद्धि के विरोध में ट्रेन यातायात भंग करने की चेष्टा।

ता. ५ आगरा में आज से कांग्रेस अधिवेशन प्रारंभ। कांग्रेस के आर्थिक एवं सामाजिक कार्यक्रम में परिवर्तन।

ता. ८ आन्ध्र राज्य विधेयक के अनुसार आगामी १ अक्तूबर से आन्ध्र राज्य का निर्माण निश्चित।

ता. ९ कोचीन के मंत्री को मास्को जानेकी अनुमति नहीं दी गई।

ता. १० भारत सरकार ने घोषणा की कि सब प्रकार के वस्त्र व सूत्र पर नियंत्रक नहीं रहेगा।

ता. ११ राजस्थान के जागीरदारों की ५० प्रतिशत नकद मुआवजे की मांग ठुकरा दी गई।

ता. १२ रत्नागिरि जिले में बाढ़ के कारण कंकावली तालुके में ३ हजार एकड कृषि-भूमि रेत से पट गई।

ता. १३ गोहाटी के सर्वदलीय सभाने एक प्रस्ताव द्वारा मांग की कि आसाम के राज्य को तत्काल बर्खास्त करें।

घर

ता. १ सीमान्त गांधी अब्दुल गफ्फार खां की मुक्ति की मांग की तथा राज्य में हस्ताक्षर आंदोलन प्रारम्भ।

ता. २ इण्डियन सायन्स कांग्रेस असोसिएशन का ४१ वां अधिवेशन आगामी जनवरी में हैदराबाद में सम्पन्न होगा।

ता. ५ कोयला खानों के मजदूरों की मांगे, समझौते की बातचीत अनिश्चितावस्था में।

ता. ६ सिरपुर पेपर मिल्स के मजदूरों पर फायरिंग की जांच करने की डा. जयसूर्य द्वारा सरकार से मांग।

ता. ८ श्री नरेन्द्रजी द्वारा निजाम को विशाल आन्ध्र राज्य का प्रमुख बनाने का विरोध।

ता. १० एक माह बाद बेल्लमपल्ली कोयला खानों के मजदूरों की हड़ताल समाप्त।

ता. ११ कुछ दिन पहले नान्देड़ के गुरुद्वारे में हुई चोरी में ६ नहीं बल्कि ३६ हीरे गायब हैं।

ता. १२ हैदराबाद मजदूर संघ ने निर्णय किया कि गांधी-जन्म-दिवस (२ अक्तूबर) पर राज्य में सत्याग्रह करेंगे।

विश्व

ता. १६ बेरिया के गृह-प्रा[illegible] में उच्चाधिकारियों की बरखास्तगी।

ता. १७ हिन्द चीन युद्ध का चीन सीमा तक विस्तार।

ता. १८ रूसी शासित देशों में विद्रोह से अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति खतरे में।

ता. १९ ज्ञात हुआ कि ब्रिटेन के विदेश मंत्री इस वर्षान्त तक सर विंस्टन चर्चिल के उत्तराधिकारी बन जायेंगे।

ता. २० तुंग शान पर हमला करने वाली चीनी फौजों का सफाया।

ता. २१ नैरोबी के उन महल्लों में जहां भारतीय एवं आफ्रिकन रहते हैं, अज्ञात बन्दूक धारियों द्वारा आफ्रिकनों की हत्याएं।

ता. २२ दक्षिण कोरियाई विदेश मन्त्री ने आरोप किया कि अमेरीका दिए गए वचनों का उल्लंघन कर रहा है।

ता. २३ मिश्र के राष्ट्रपतिने कहा कि सेवा, श्रम-कण एवं अश्रुओं के प्रवाह से मिश्र का निर्माण हुआ है।

ता. २६ कोरिया में आज से युद्ध स्थगिति पानमुनजोन में शस्त्र संधि समासंपन्न।

ता. २७ पूर्व बर्लिन सरकार द्वारा अमरीकी सहायता ठुकरा दी गई।

ता. २८ अमेरीकी विदेश मन्त्री द्वारा चीन को संयुक्त राष्ट्र संघ में लेने का विरोध।

ता. २९ ब्रिटिश मन्त्री मण्डल का पुनर्गठन प्रायः अनिवार्य।

ता. ३० आस्ट्रिया स्थित रूसी सेना का खर्चभार एक अगस्त से रूस

भारत

ता. १४ भारी वर्षा के कारण बम्बई शहर के कई भाग जलमग्न।

बम्बई के भूत पूर्व स्वायत्त मंत्री श्री वर्त्तक का देहावसान।

ता. १५ पश्चिमी नेपाल में उपद्रवों का रूप अत्यन्त गम्भीर। सेना भेजने का निर्णय।

ता. १६ बरेली एक मेडिकल आफिसर डा. पेरिल द्वारा आप्रेशन किए जाने पर उन्नीस वर्षीय लड़की लड़का बन गया।

ता. १७ राजकोट में पुलिस ने एक जाली सिक्का बनाने की फैक्टरी पर छापा मारा।

ता. १८ पाठ्य पुस्तकों के परिवर्तन से जबलपुर के विद्यार्थी क्षुब्ध।

ता. १९ फीजी द्वीप के ३॥ लाख भारतीयों की व्यापारिक भाषा हिन्दी।

ता. २० पौण्ड पावने के सम्बन्ध में भारत ब्रिटेन में आर्थिक समझौता।

ता. २१ पश्चिमी नेपाल में विद्रोहियों के साथ सशस्त्र पुलिस की मुठभेड़।

ता. २२ कलकत्ता में पत्रकारों पर पुलिस का हमला। फलस्वरूप १८ व्यक्ति जख्मी।

ता. २३ कलकत्ता की स्थिति को सुधारने के लिए आंदोलन के नेताओं की रिहाई का आदेश।

ता. २५ बम्बई के पत्रकारों द्वारा कलकत्ता पुलिस की निन्दा।

ता. २६ त्रिवेंद्रम में भूखमरी से बचाने के लिए पुत्र की हत्या।

ता. २७ श्रममन्त्री श्री गिरिने घोषणा की कि देश में बढती हुई बेकारी के समय छटनी करना देश द्रोह है।

ता. २८ बडौदा के एक ग्राम में १२१ वर्षीय वृद्ध को चार नए दांत

घर

ता. १३ विधान सभा विरोधी-दलीय नेता ने सरकार पर आरोप लगाया कि आदिलाबाद जिला के कई तालुकों में तीन माह से कर्मचारियों को वेतन अप्राप्त।

ता. १४ बेकारी दूर करने के लिए सरकार तथा सोशलिस्टों का प्रयत्न।

ता. १५ परिगणित जाति ने यह प्रस्ताव रखा कि हैदराबाद आंध्र की राजधानी बने।

ता. १६ भारत सरकार द्वारा हैदराबाद को शिक्षा के लिए आर्थिक सहायता।

ता. १७ हैदराबाद मन्त्रीमण्डल का विभागीय गठन सम्भव।

ता. १८ कोत्तागुडम के खनिक हड़ताली श्रमिकों पर अश्रु गैस। २५ मजदूर गिरफ्तार।

ता. २० कोत्तागुडम कोयला खनिकों की हड़ताल समाप्त। उभय पक्ष में पूर्ण समझौता।

ता. २१ गुलबर्गा जेल में कैदियों द्वारा वनमहोत्सव व समारोह में भाग।

ता. २२ हायकोर्ट का जाली पत्र अधिकारियों को दिखा कर हैदराबाद सेन्ट्रल जेल से दो डाकू भगाए गए। यथार्थता कई दिन बाद प्रकट।

ता. २३ सिरपूर गोलीकांड की रिपोर्ट श्री रामानंद तीर्थ द्वारा तैयार।

ता. २४ हैदराबाद नगरपालिका की मांग, कर्मचारियों की वेतन-वृद्धि हो, राज्य सरकार को अमान्य।

ता. २५ बांसवाडा की विद्युत् योजना का गृह मन्त्री द्वारा उद्घाटन।

ता. २६ इन्फ्रीमेशन एण्ड पब्लिक रिलेशन द्वारा अंग्रेजी लघुकथा प्रतियोगिता का निर्णय।

ता. ३१ अमेरीकी बम वर्षक पर रूसी प्रहार का प्रबल प्रतिवाद।

---

* औद्योगिक न्यायालय।

ता. ३० हिन्दी प्रचार सभा, खैरताबाद के सब हास्टेल में छात्र द्वारा रसोइए की हत्या।

अगस्त १९५३

ता. १ कोरियाई वापसी कमीशन की अध्यक्षता भारत अत्यन्त निष्पक्षता पूर्वक सम्पन्न करेगा।

२. कल रात इरानी मजलिस के भूतपूर्व अध्यक्ष काशानी और मुसादिक के समर्थकों में संघर्ष, फलस्वरूप एक की मृत्यु और पचास से अधिक घायल।

ता. ३ जर्मन के सोवियत क्षेत्र में पुनः विद्रोहियों द्वारा पुलिस में भीषण संघर्ष।

ता. ४ अमरीकी विदेश मंत्री श्री डलेस का सिओल में आगमन तथा डा. री से वार्तालाप।

ता. ५ अक्तूबर के प्रारम्भ में कोरियाई शान्ति सम्मेलन का आयोजन।

ता. ६ टोकियो में भारतीय अग्रिम दल का भव्य स्वागत।

—अमरीका द्वारा रूस से क्षति पूर्ति की मांग।

ता. ७ बर्मा में विद्रोहियों की शक्ति मतभेद के कारण क्षीण प्राय।

—९० दिन के बाद कोरियाई सम्मेलन के बहिष्कार का निर्णय।

ता. ८ सुप्रीम सोवियत के अधिवेशन में मोलेनकव ने घोषणा की कि रूस के पास भी हाइड्रोजन बम है।

ता. ९ डा. मुसादिक के विरुद्ध संयुक्त राष्ट्र संघ से शिकायत।

निकले।

ता. ३० देवनागरी तथा चीनी लिपि अनुसन्धान कार्य के लिए कर्नेजी फाउन्डेशन नामक संस्था द्वारा ३० डालर का अनुदान।

ता. १ कलकत्ता में ट्राम-यातायात पुनरारम्भ।

भारतीय हवाई यातायात का राष्ट्रियकरण सम्पन्न।

ता. २ कराची-वार्ता से भारत-पाक के सम्बन्धों में सुधार की सम्भावना।

ता. ३ उत्तर बिहार में अभूतपूर्व बाढ़ा पच्चीस लाख से भी अधिक व्यक्ति संकट में।

—प. नेपाल में विद्रोहियों का नेता भीमदत्त पंत गोली का शिकार।

ता. ४ बम्बई श्रम-कल्याण-निधि द्वारा कानून को चुनौती।

ता. ५ कोरिया के लिए अग्रिमदल कोरिया को आज रवाना।

ता. ६ बम्बई में मिल मजदूरों की हड़ताल के विरुद्ध पुलिस की कार्यवाही। सभाओं व जुलूसों पर २४ घंटे का प्रतिबन्ध।

ता. ७ बेंगलोर-पूना एक्सप्रेस उड़ाने की चेष्टा।

ता. ८ आगामी छः वर्षों में सभी राज्यों के मोटर-यातायात का राष्ट्रीय-करण होगा।

ता. ९ विदेशियों के साथ घातक सम्बन्ध रखने के परिणाम स्वरूप काश्मीर के प्रधान मंत्री शेख अब्दुल्ला

ता. २७. कुछ दिन पूर्व धोके से भगाए गए दो डाकू पुनः गिरफ़्तार।

ता. २८ नेहरू को धमकी दी गई कि राज्य विधान सभा से बीस कांग्रेसी-प्रथक होंगे।

ता. २९ पी. डब्ल्यू. डी का विवाद

ता १ समाज में पिछड़ी हुई महिलाओं को फिर से समाज में बसाने के लिए आसफ नगर में एक महिला आश्रम की स्थापना।

ता. २ हैदराबाद में १५ अगस्त को मांग-दिवस, का आयोजन।

ता. ४ हैदराबाद के बीस विधायकों की धमकी के प्रश्न पर नेहरू तथा तीर्थ में मन्त्रणा, अभी निर्णय असम्भव।

ता. ५ राज्य मन्त्रि-मण्डल में उपमंत्री नियुक्त किए जाने की दृढ़ सम्भावना।

—जिला बीड़ के केसरनी गांव में वासना की वेदी पर पति द्वारा पत्नी की हत्या।

ता. ६ राज्य में भूमिगणना योजना का कार्य आरम्भ।

— सिरपुर में हैजे के प्रकोप से २० व्यक्तियों की मृत्यु।

ता. ७ राज्य में एक हजार से अधिक वेतन पाने वाले अधिकारियों का भत्ता बन्द करने का निर्णय।

— गुलबर्गा का कुख्यात डाकू लाइले पटेल गिरफ़्तार।

— आ. टी. डी. की प्रस्तावित हड़ताल गैर कानूनी करार दी जाएगी।

ता. ९ लातूर में दिन दहाड़े छुरे से हत्या, हत्यारा फरार।

विश्व भारत घर

ता. १० पूर्व जर्मनी की कम्युनिस्ट र्टी में तीव्र मतभेद।

ता. ११ कराची में भारत विरोधी र्शन।

—उत्तरी कोरिया के उपप्रधान मंत्री रा आत्म हत्या।

ता. १२ श्री डलेस ने कहा कि म्युनिस्ट का सभी युद्ध बन्दियों को न लौटाना शस्त्रसंधि का उल्लंघन है।

ता. १३ फ्रान्स में चालीस लाख दूरों की भीषण हड़ताल, सरकारी ारोबार ठप्प।

ता. १४ कोरियाई युद्धबन्दियों वापसी के लिए कन्युनिस्टों से श्वासन की मांग।

ता. १५. पाकिस्तान में स्वतंत्रता वस नहीं मनाया गया। कल श्मीर दिवस ' मनाने का निश्चय।

ता. १६ ईरान में सरकार के द्ध सैनिक विद्रोह का षड़यंत्र विफल। शाही महल पर सरकारी जों का अधिकार।

ता. १७ शाह के चले जानेपर भी ान गणतंत्र नहीं बनेगा।

ता. १८ ब्रिटेन और अमरीका की कलबाजियां, भारत के प्रश्न पर न्तरिक कूटनीतिक संघर्ष पर प्रकाश।

ता. १६ सन् १९३८ के बाद ैण्ड-आस्ट्रेलिया की टैस्टमैच ग्लैण्ड को प्रथम विजय।

ईरान में मुसादिक शासन का न्त।

ता. २० फ्रान्स द्वारा मोरक्को सुल्तान पदच्युत और सपुत्र देश र्वासित।

ता. २१ राजनीतिक सम्मेलन में त को आमंत्रित करने के प्रस्ताव का गुलमार्ग में गिरफ्तार।

ता. १० काश्मीर के नए प्रधान मंत्री श्री गुलाम मुहम्मद।

– ता ११ अवैध शराब का व्यापार करने वाले दल का नेता दण्डित।

ता. १२ चावल के यातायात भाडे में वृद्धि का तीव्र विरोधस्वरूप संकट कालीन स्थिति की घोषणा।

ता. १३ बेकारी दूर करने के लिए कई योजनाएं सरकार के विचाराधीन।

ता. १४ आचार्य विनोबा ने कहा कि भूदान ही भूमि की समस्या का हल है।

ता. १५ देश भर में स्वतंत्रता दिवस धूमधाम से मनाया गया।

–गोदावरी नदी की बाढ़ से राजमहेन्द्री नगर जलमग्न हो जाने का डर।

ता. १६ भारतीय जन संघ ने मांग की कि अब्दुला पर मुकदमा चलाया जाय।

ता. १७ नेहरू अली वार्ता, ठोस प्रगति की आशा। राजधानी में पाक प्रधान मंत्री का शानदार एवं हार्दिक स्वागत।

ता. १८ बताया गया कि बम्बई राज्य में बहुसूत्री विक्री करके स्थान पर द्वि-सूत्री कर लागू होगा।

ता. १९ गोवध बन्दी के प्रश्न पर बर्मी प्रधान मंत्री का अनशन।

ता. २० काश्मीर में आगामी अप्रैल तक जनमत प्रशास की नियुक्त मतदान का परिणाम सम्पूर्ण राज्य के आधार पर नहीं होगा।

ता. २१ बम्बई के गिरगांव स्थित गायवाड़ी में भीषण अग्निकाण्ड।

ता. १० आर. टी. डी हड़ताल आजसे प्रारम्भ। कुछ व्यक्ति गिरफ्तार एवं रिहा।

—हैदराबाद में एशियाई समाजवादी ब्यूरो के सम्मेलन में अनेक राष्ट्रों के प्रतिनिधि शामिल।

ता. ११ हैदराबाद के स्कूलों से छंटनी के परिणाम स्वरूप २५०० चपरासी बेरोजगार होंगे।

— समाजवादी-मण्डल में अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्नोंपर प्रतिनिधियों द्वारा विचार।

ता. १५ राज्य भर में स्वतंत्रता-दिवस उत्साह एवं आनन्द से मनाया गया।

ता. १६ पंचवर्षीय योजना के अनुसार भूमि संरक्षण सम्बन्धी गवेषणा के लिए ६ केन्द्र खोले जाएंगे।

ता. १७ मुख्य मंत्री बी. रामकृष्णराव की बीस विधायकों से स्तीफे करण की मांग। सीधे नेहरू के पास धमकी पत्र भिजवाने पर खेद प्रकट।

ता. १८ गोदावरी की भीषण बाढ़ से हैदराबाद राज्य के ५० ग्राम जलमग्न।

—उस्मानिया विश्व विद्यालय कालेजों के करीब ७०० मजदूरों द्वारा हड़ताल की धमकी।

ता. १९ सितम्बर दो से ९ तक जनकल्याण कोष में चन्दा एकत्रित करने के लिए समिति की स्थापना।

— कल से ताज काँच फैक्टरी शुरू।

ता. २० निजाम द्वारा भूदान-यज्ञ में दी गई भूमि का कुछ हिस्सा चरागाह के लिए नीलाम किया गया।

ता. २२. २५ अगस्त से आठ सितम्बर तक हैदराबाद तथा सिकन्द्राबाद नगर में १४४ धारा लागू।

विश्व

मिश्र तथा इस्राईल का खुला समर्थन यह सम्मेलन कोरिया में होगा।

ता. २२ तेहारान की मदान्ध जनता द्वारा शाह का अपूर्व स्वागत।

—अफ्रीकी नेता जेमो केन्याता को रिहा करने का घोषित आदेश रद्द।

¶ आर्थिक वर्ष से तमाम टैक्स वसूल किए जाने की केन्द्र द्वारा आवश्यक सूचना दे दी गई।

भारत

—गोदावरी बाढ़ से करोड़ों की क्षति का अनुमान। पीडितों की सहायता के लिए अपील।

ता. २२ विश्व के गेहूं बाजार में मूल्य की निरन्तर गिरावट की आशा। रफ़ी अहमद किदवई की घोषणा।

|| विधायक श्री एस. प्रतापरेड्डी का देहान्त। आप प्रसिद्ध पत्रकार एवं साहित्यिक थे।

— राजप्रमुख निजाम से नए ¶

घर

ता. २३ आर. टी. डी. हड़ताल समाप्त। आज से कार्यारंभ।

— राजप्रमुख द्वारा आसिफाबाद जेल बन्द कर देने की आज्ञा।

ता. २४ जिला वरंगल में बाढ़ १० लाख की लकड़ी बहा ले गई।

— औरंगाबाद रेडियो केन्द्र न निकाला जाय इसके लिए हस्ताक्षर आन्दोलन प्रारम्भ।

ता. २६ हैदराबाद के कांग्रेसी ||

महामानव बापू

युग परिवर्तक, युग संस्थापक, युग संचालक, हे युगाधार ।
युग निर्माता, युगमूर्ति तुम्हें, युग-युग तक युग का नमस्कार ।

अक्तूबर १९५३

युगद्रष्टा महात्मा गान्धी

२ अक्तूबर बापू की "पुण्य जन्मतिथि" है। इसी दिन विशाल सृष्टि में, असंख्य मानवों के बीच इस महामानव की प्रखर ज्योति से सारा विश्व देदीप्यमान हो उठा था।

"मैं संसार के समस्त धर्मों की सैद्धांतिक सचाई में विश्वास करता हूँ। मेरी मान्यता है कि वे सभी ईश्वर प्रदत्त हैं और मेरा यह विश्वास है कि ये धर्म उन लोगोंके लिए जरूरी हैं, जिनके लिए ये अवतरित हुए हैं। मेरा दृढ़ विश्वास है कि यदि हम 'धर्म ग्रंथ' का उस विशेष धर्म के अनुयायियों की आस्था के अनुरूप पाठ करें तो हमें ज्ञात होगा कि सब धर्मों का मूल एक है और सब पारस्परिक सहायता के स्रोत हैं।"

"विचारों में सत्य हो। वाणी में सत्य हो। कर्म में सत्य हो। जिस मानव ने सत्य को पूर्णरूप से जान लिया, उसके लिए दूसरा कुछ जानने को शेष नहीं रहता क्यों कि सत्य में समाज ज्ञान निहित है। सच्चे ज्ञान के बिना आन्तरिक शान्ति असंभव है प्रकृति ने हमें इस प्रकार गढ़ दिया है कि हम अपनी ही पीठ नहीं देख सकते, यह दूसरों के लिए है कि वे उसे देखें। अतएव, दूसरों के देखने का लाभ लेना बुद्धिमानी है।"

— महात्मा गांधी

हैदराबाद सरकार द्वारा स्कूलों, कालिजों तथा वाचनालयों के लिए स्वीकृत

आवश्यक–निवेदन

'दक्षिण भारती' गत तीन वर्षों से बराबर प्रकाशित हो रही है फिर भी आज यह घाटे में चल रही है, इस क कारण जनता की अरुचि या सूक्ष्म प्रवृत्ति ही हो सकती है। पत्र न खरीदने वाले न खरीदे परन्तु हिन्दी का द भरने वालों को यह मुफ्त पढ़ने की नीति त्यागनी चाहिए।

हमारे पास रोज कोई न कोई लेटर नमूनांक भेजने के लिए लिखा हुआ आता है। हमने पहले तो पच्चीसों अ भेजे परन्तु कोई ग्राहक न हुआ अतः अब हम नमूने की कापी नौ आने के टिकट आने पर ही भेजते हैं।

हम 'दक्षिण भारती' के उन ग्राहकों व पाठकों से प्रार्थना करते हैं कि जिन से चन्दा आएगा इस आशा 'दक्षिण भारती' भेजते रहें वे अपना चन्दा भेज दें या पत्र द्वारा सूचित कर दें कि 'दक्षिण भारती' चालू रखें या व करदें। इस के साथ ही वे इस पूर्व आए अंकों का मूल्य भेजदें।

जिस प्रकार कोई भी वस्तु खरीद कर ही खाई जा सकती है उसी प्रकार खरीद कर ही पढ़ें न कि मुफ्त! भावना सब पाठकों के दिल में आनी चाहिए।

हम अपने ग्राहकों से प्रार्थना करते हैं कि वे 'दक्षिण भारती' का चन्दा भेजदें ताकि 'दक्षिण भारती' आप और भी सेवाएं कर सके।

...संचालक 'दक्षिण भारती'

अक्तूबर १९५३ } ८६, अफ़ज़लगंज, हैदराबाद { वार्षिक ६) एकका ॥) }-भारती

हैदराबाद सरकार द्वारा स्कूलों, कालिजों तथा वाचनालयों के लिए स्वीकृत

सचित्र हिन्दी मासिक पत्रिका

卐

अक्तूबर १९५३

८६, अफ़ज़लगंज, हैदराबाद

वार्षिक ६) एकका ॥) —भारती

विषय-सूची

वर्ष ३] हैदराबाद, अक्तूबर १९५३ [अंक ९

सम्पादकीय

आन्ध्र-राज्य के नाम

मराठी में एक कहावत है "प्रयत्नान्ती परमेश्वर" इसका अर्थ है प्रयत्न करने के बाद परमेश्वर को भी प्राप्त किया किया जा सकता है—प्रयत्नों के अन्त में ही परमेश्वर विद्यमान है। इस कहावत के अनुसार जब हम प्रयत्नोंसे परमेश्वर को पा सकते हैं तो आन्ध्र राज्य के निर्माण की बात कौन कठिन है? आन्ध्र-भाषियों ने भाषा के आधारपर प्रान्त के निर्माण की मांग करीब चालीस वर्षों से चलाई है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पहले तक इस मांग में कुछ शिथिलता रही। इसका कारण स्वतंत्रता संग्राम में सब का मिलजुल कर जूझना था। राष्ट्र के हित के सामने प्रान्त की बात का गौण होना स्वाभाविक था, परन्तु स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भाषा के आधार पर आन्ध्र प्रान्त के निर्माण की बात उग्रता के साथ उठाई गई। इस मांग की पूर्ति के लिए उचित अनुचित सभी तरह के प्रयत्न किए गये। अन्त में आन्ध्र प्रान्त की मांग पूरी की गई। आन्ध्र भाषियों का अलग राज्य बनाना केन्द्र ने स्वीकार कर लिया और आज उस स्वीकृति को साकार रूप मिला। आन्ध्र राज्य का भारत के प्रधान मंत्री श्री जवाहरलालजी के हाथों उद्घाटन हुआ। इस दिन का महत्व आन्ध्रवासियों के लिए उतना ही अधिक है जितना कि भारतवासियों के लिए स्वतंत्रता दिन का है। इस शुभावसर पर आन्ध्र प्रान्त के नेताओं के पास हजारों शुभकामनाएं प्रकट करने वाले अभिनन्दन पत्र आए हैं। यह समय भी ऐसा ही है। हमारी भी शुभकामना आन्ध्र राज्य के साथ है, परन्तु हम आन्ध्र राज्य को बधाई तभी देंगें जब कि इस राज्य की स्थापना का मुख्य उद्देश्य पूरा होगा— जनता का दारिद्र्य, राज्य भर में फैली हुई बेकारी तथा इसी तरह के अन्य अभाव दूर होंगे। इन अभावों के दूर होने में ही आन्ध्र राज्य की सफलता निहित है। इतना ही नहीं बल्कि इसमें उन भाषावार प्रान्तों के निर्माण का भविष्य छिपा है, जो आन्ध्र की भाँति ही वर्षों से प्रयत्नशील हैं। प्रयोगात्मक रूप से आन्ध्र का निर्माण हुआ है। यदि इस में सफलता मिलेगी तो अन्य प्रान्त भी सरलता से बन जाएंगे। इस लिए आन्ध्र राज्य के नेताओं पर केवल आन्ध्र प्रान्त में बसने वाली जनता का ही भार नहीं बल्कि समूचे भारत में बसने वाली तथा भाषावार प्रान्त रचना की मांग

करनेवाली जनता का उत्तरदायित्व है। हम आशा और कामना करते हैं कि कर्मठ नेता आन्ध्र केसरी श्री टी. प्रकाशम समय की मांग को समझ कर अपने सहयोगियों के सहयोग से आन्ध्र प्रान्त का निर्माण उचित रीति से करेंगे। प्रान्त में बसने वाले अन्य अल्प संख्यक भाषा भाषियों को प्रगति करने तथा सच्चे अर्थ में जीवित रहने का अवसर देंगे।

आन्ध्र राज्य का अस्तित्व मद्रास प्रांत के उन ग्यारह जिलों से हुआ है, जिन में बसने वाली अधिकांश जनता तेलुगु भाषी है। इन ग्यारह जिलों का कुल क्षेत्रफल ६३, ६०० वर्ग मील है। इस प्रान्त की जनसंख्या दो करोड पांच लाख है। दक्षिण की बड़ी बड़ी नदियां गोदावरी, कृष्णा, नामावती, पेन्नार आदि इसमें प्रवाहित हैं। इस के उत्तर पश्चिम में उड़ीसा तथा मध्य प्रदेश हैं। पश्चिम में हैदराबाद राज्य स्थित है। दक्षिण में मैसूर राज्य तथा मद्रास प्रांत हैं। निसर्ग ने भी इस प्रांत को समुद्री किनारा तथा प्रांत भर में फैली हुई खदानों तथा जंगलों से मालामाल किया है। राज्य भर में फैले हुए धार्मिक देवस्थान, ऐतिहासिक दुर्ग प्राचीन संस्कृति के द्योतक हैं। मद्रास प्रांत का आज तक का आय-व्यय विवरण देखने से अनुमान लगाया जा सकता है कि इस राज्य का वार्षिक व्यय करीब पचीस करोड रुपये है तथा साथ ही यहां की आय भी करीब इतनी ही है। सिंचाई की सुविधाओं को बढाकर तथा राज्य में फैले हुए नैसर्गिक साधनों का अधिकाधिक उपयोग कर यहां की आय में और भी वृद्धि की जा सकती हैं। मद्रास प्रांत की कुल चौदह सौ करोड़ की सम्पत्ति का २० प्रतिशत भाग आन्ध्र राज्य को मिला है। इस के साथ कुल ऋण की ३६ % जिम्मेवारी भी इस नए राज्य पर आ पड़ी है। परन्तु गोदावरी और कृष्णा के पठार में स्थित इन राज्य के लिए इस जिम्मेदारियों को पूरा करना कठिन नहीं है। दक्षिण में प्रवाहित होनेवाली इन बड़ी-बड़ी नदियोंका पानी अन्त में आन्ध्र राज्य में होकर ही प्रवाहित होता है। इसका उपयोग राज्य के उत्थान में किया जा सकता है। इस समय जो सिंचाई और बान्ध योजना आंध्र राज्य को लेकर बनाई गई है, इस की पूर्ति में १५ से २० करोड़ तक की धन राशि आवश्यक है। यह रकम आन्ध्र राज्य आसानी से जुटा सकता है। केन्द्रीय सरकार इस नए राज्य को पूर्ण योग देने के लिए तैयार है। फिर आन्ध्र के निवासी भी बहुत बड़ी संख्या में धनवान हैं। चाहे तो राज्य के निर्माण में योग देकर ये स्वयं ही इस रकम को इकट्ठा कर सकते हैं। इन धनी मानी लोगों से राज्य सरकार दस बीस वर्षों की अवधि के लिए इतनी रकम ऋण के रूप में ले सकती है। तुंगभद्रा बांध योजना तो पूरी हो चुकी है। बड़ी-बड़ी नदियों के कारण प्रांत भर की सारी भूमि उपजाऊ है, इस में सिंचाई का प्रबन्ध कर इसे और भी उपजाऊ बनाया जा सकता है। प्रान्त में समुद्री किनारे के साथ साथ पूर्वी घाट की पर्वत श्रेणियां फैली हुई हैं। इन में उपयोगी खनिज सम्पत्ति का विपुल भण्डार भरा पड़ा है। पूर्वी तट पर बनी हुई विजिगापट्टम आदि की बन्दरगाहें महत्वपूर्ण हैं। आन्ध्रवासी इनके उपयोग में नए नहीं हैं। इतिहास इस बात का साक्षी है कि समुद्री व्यापार में आन्ध्रवासी काफी आगे बढे हुए थे। आज भी उन्हीं पूर्वजों की सन्तान इस उपलब्ध समुद्री तट से लाभ उठा सकती है। इससे महत्वपूर्ण बात तो आन्ध्रवासियों की श्रमशक्ति तथा लगनशील वृत्ति है। सादा रहन सहन और हल्का भोजन इस विशेषता में और भी सहायक सिद्ध होता है। इन सब बातों से आन्ध्र राज्य को सफल बनाने में लाभ उठाना चाहिए। इतना होते हुए भी यदि आन्ध्र राज्य यथोचित प्रगति न कर सका तो अन्य साधन रहित भाषावार प्रान्तों के निर्माण में यह निःसन्देह बाधा बन कर उपस्थित होगा। हम आशा करते हैं कि यह प्रयोगात्मक नया आन्ध्र-राज्य यथा शीघ्र अन्य भाषावार प्रान्तों के निर्माण में अपनी सफलता का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए यथेष्ट योग देगा।

——

गीत

जीवन की अस्थिर लहरों में —
बिखर गये वे स्वप्न हमारे ॥

आशाओं के दीप संजोये, सुन्दर सी होगी उजियारी
किन्तु प्रबल झकोरों से छाई भीषण अंधियारी ।
निबिड कालिमा में, कम्पित हैं दुर्बल, जर्जर हाथ हमारे ॥
बिखर गये वे स्वप्न हमारे ॥ १ ॥

अवनि के शुचि रंग-मंच पर
खींची थी इक स्वर्णिम रेखा ।
किन्तु सभी छलना था वह तो,
नग्न रूप जग का अब देखा ॥
जो अपने थे हुए पराये
प्रेमी कपट वेश थे धारे ।
बिखर गये वे स्वप्न हमारे ॥ २ ॥

प्रबल तरंगी बीच काल की,
जल कण सम मानव उतराता ।
जटिल कर्म बंधन में जकड़ा;
घोर भंवर में गोते खाता ।
निर्बल, निर अवलम्ब; तरंगों में—
उतराता हाथ पसारे ।
बिखर गये वे स्वप्न हमारे ॥ ३ ॥

झूठी है जग की प्रवंचना;
यहां न कोई मीत किसी का ।
भग्न हुई हृद वीणा मन की;
क्या गाऊं गीत किसी का ।
स्वप्न सदृश जीवन, धुंधला सा--
केवल क्षण भंगुरता है धारे ।
बिखर गये वे स्वप्न हमारे ॥ ४ ॥

— रामसिया 'रमेश', साहित्यरत्न, हिंगोली

प्रातः–प्रदीप के प्रति

मलय की वायु में तू भी उषा के संग तिरता चल।
सनेही दीप जलता चल।

पतंगे अधजले कितने
सँजोये ही रहे सपने;
विकम्पित आश की लौ में अमर विश्वास भरता चल।
सनेही दीप जलता चल।

जलन में प्रीति का परिचय
छिपाए कोटि जीवन लय;
जवानी की उमंगों में तृषा के गीत गा प्रति पल।
सनेही दीप जलता चल।

जहाँ तूफान चलते हैं
वहीं अरमान पलते हैं;
न आये सांझ जब तक फिर किरण को प्यार करता चल।
सनेही दीप जलता चल।

— योगेन्द्रनाथ शर्मा, बारचकिया (बिहार)
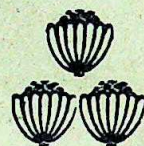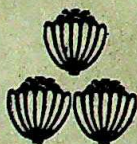
वर्षा ऋतु

आगई वर्षा सुहानी आगई ॥
आज धरती का नया शृंगार है।
आज कण–कण में समाया प्यार है।
धरा को चूनर हरी पहना गई ॥

बादलों के दल उमडते आ रहे।
गर्जना विक्राल कर टकरा रहे।
दामिनी नभ पर चमक दिखला गई ॥

प्रकृति मुक्ताकण लुटाती जा रही।
भूमि में नव प्राण भर मुसका रही।
झूम कर आई जगत सरसा गई ॥

आज पृथ्वी को नया जीवन मिला।
आज आशा का मधुर दीपक जला।
विश्व में नवचेतना एक छा गई ॥

— रामेश्वर गुप्त 'रसिक', हिंगोली

——

(गतांक से आगे)

नारायण प्रसाद सिन्हा 'जहानाबादी', झरिया, (बिहार)

पाँचवा सर्ग

आई मुस्काती ऊषा
छलकाती यौवन हाला
खुली अचानक अलसित आंखें
ढाल चुकीं स्वपनिल प्याला
बीण बजाने लगे विहग,
गाने लग गये गान सुन्दर
लगा थिरकने नव जीवन--
जड़-जंगम-चेतन के अन्दर
सरजा-स्वामी औ सम्भा ये,
हो निवृत्त नित कर्मों से
अश्वों पर प्रस्थान किया,
आवश्यक उपकरणों को ले
पहुंच गये तोरण दो क्षण में,
सोम चला लख उपवन से
अभिवादन कर उन्हें बिठाया
उपवन में ही स्वागत से
चलती थी मधुमय बयार,
मंथर गति से, मुस्काती-सी
झांक रही थीं नववधुओं-सी
कलियाँ अह ! शर्माती-सी
फेर रहा था हौले हौले,
कर बसन्त अतिशय कोमल
हंसती थी कुछ मतवाली-सी,
सुध-बुध खो होकर विह्वल
मादक सौरभ बिखर रहा था,
नवजीवन देता उनको
मतवाले तरु झूम रहे थे,
गले लगा लतिकाओं को
कभी प्राण-सी कूकें उठतीं
थी मतवाली कोयलियां
तंत्री के तारों को झंकृत
करते थे सुन्दर अलियाँ
श्रान्ति मिटी सारी पल भरमें,
पी नव जीवन का प्याला
नवस्फूर्ति आ गई नसों में,
पिला रही प्रकृति—बाला
मादकता छा गई सभी पर,
सभी हो गये मतवाले
मौन शान्ति मुस्करा रही थी,
सहसा शिवाजी बोले—
"आबाजी ! क्या हाल यहां का
है बतलाओ तो हमको ?
कुमुद आदि का है प्रबन्ध--
कैसा दिखलाओ तो हमको ?
राघोजी हैं कहां ? भला,
अब तक न मिली क्या उन्हें खबर ?
सभी साथियों को बुलवा लो,
कार्यारम्भ करें सत्वर"
"तात ! कुशल है सभी यहां पर
सैन्य संगठन हैं सुन्दर
अस्त्र-शस्त्र का भी प्रबन्ध—
हो गया, न है त्रुटि अब रत्ती भर
चाकन का मिल गया किला,
बस, सिर्फ लक्ष मुद्रा ही में
गोयन्दान का भी विशाल गढ़—
हाथ लगा इतने ही में
राघोजी करते हैं रक्षा—
दोनों की, सेना लेकर"
हो प्रसन्न बोले शिवाजी—
"आभारी मैं जीवन भर—
तात ! रहूंगा, कहता हूं सच,
तुमने काम किया जैसा
सपने में भी था न कभी
मैं ने विश्वास किया ऐसा
गोयन्दान गढ़ है मौके पर,
काम बहुत देगा हमको
शेरों का अधिकार हुआ अब,
'सिंहगढ़' क्यों न कहें उसको ?"
इतने में आ पहुंचा चर
कर नमस्कार बोला तत्क्षण--
"सेनापति ! सम्भाजी मोहिते—
प्रस्तुत हैं करने को रण
कहते हैं—'मैं बिना युद्ध के—
सूण की तिल भर भी भूमि—
दे न सकूंगा, सरजाने क्या
समझ लिया तोरण रण-भूमि
बुजदिल बकरा नहीं हूं कि मैं—
चीते का सुन कर हुंकार
आत्म-समर्पण कर दूं जाकर
कह दो नाहर है तैयार"
चर की बातें सुनते ही,
सरजा का मुख हो गया लाल
आंखों से लग गई निकलने—
चिनगारियां अग्नि की ज्वाल
यों होता था ज्ञात पड़ेगी—
जहां दृष्टि होवेगा क्षार
गरज उठा भूखा नाहर-सा,
करते प्रलयंकर हुंकार—
"सोम ! अभी जाओ, क्षण भरमें
कर दो तो सेना तैयार

चीता नाहर को दे आवे
देशद्रोह का वर उपहार
अतिशय स्तुति भी करना
होता है घातक जीवन का
दुष्ट अन्त में ही रहता है
निहित बीज जग-जीवन का"

कहने की भी देर सज गई—
सेना, बस दो ही क्षण में
नवस्फूर्ति आ गई, दौड़ने—
लगा रक्त नव नस-नस में
मारु की आवाज भर रही थी—
वीरों में नव जीवन
फड़क रहे थे भुज विशाल—
अति उत्सुक-से करने को रण
रणभेरी के शब्द पड़े—
कानोंमें, दिनकर भाग चला,
सहता कैसे वीर केसरी—
सरजा का वह तेज भला!
अब क्या था प्रस्थान किया—
सूरा को लेकर वीरों को
बढ़ते थे सरि - लहरों - से,
चमकाते भाले तीरों को
उत्सुक शशि भी बढ़ा रहा था,
अपना रथ उनके संग—संग
मिला रहा था मादकता वह,
नवयुवकों को चल पग-पग
पहुंच गये सूरा जवान सब,
बोल उठे—' सरजा की जय '
गूंज उठा वह प्रान्त अचानक,
मानों आया महा प्रलय
'शिव हर-हर-बम-बम' की ध्वनि
सर्वत्र सुनाई पड़ती थी
' बढ़े चलो वीरों! संगर में '
रण भेरी बज कहती थी

वहीं पार्श्व में सम्भा भी—
अपनी छोटी सेना लेकर
इंतजार करता सरजा का,
उससे अति भय भी खाकर
ज्यों ही पड़ी नजर सरजा की,
सम्भा की लघु टुकड़ी पर
वह ललकार उठा— "चीता—
आया, तैयार रहो नाहर!"
फिर क्या था ले सेना अपनी
टूट पड़ा उस पर सत्वर
लगे काटने वीर, कृषक ज्यों
खेत काटते बढ़ - बढ़ कर
चन्द्र-किरण धारों पर हंसती,
बनती थी गल की माला
किन्तु शीघ्र निर्जीव बना—
देती थी बन विद्युद् धारा
मतवाली-सी ढाल रही थी,
मनुज - रक्त - आसव - प्याला
साकी थे उसके अलबेले
खड्ग, शूल, तीर, भाला
करती थीं तलवारें छप-छप
करते थे खच-खच भाले,
रहती थी न शक्ति उठने की,
पड़ जाते थे जो पाले
मानो थे सब जीभ काल की,
विष की बुझी जहरीली
छूते ही चल देते थे अरि,
पता न था कब धार हिली
जो थी संध्या समय स्वच्छ भू,
लोथों से वह पाट चली
चन्द्र—किरण संग बल खाती-सी
रक्तों की वह धार चली
मचा घोर संग्राम हो गये
मतवाले — से अलबेले

उखड़ गए संभाजी के पग
कायर सैनिक भाग चले
"पकड़ो—पकड़ो रे, सम्भा को,
भाग नहीं जाये पामर"
शिवाजी ललकार उठे—
'क्यों भाग चला रण से नाहर?'
सुनते ही ललकार रुका वह,
किन्तु न सैनिक रुक पाये
इतने में सरजाने सबको—
घेर—घेर कर धरवाये
अब क्या था, सब बोल उठे—
' सरजा की जय, सरजा की जय!'
किया प्रवेश सभी ने गढ़ में—
चिल्लाते—' भारत की जय '
' जय ' की ध्वनि सुनते ही ऊषा,
प्राची-प्रांगण से सज कर,
लगी झांकने अति उत्सुकती,
पीछे से आया दिनकर
शान्त वीर हो गये सभी
शिवाजी की आज्ञा पाकर
लगे बधाई देने सरजा,
नवोत्साह से बढ़—बढ़ कर
इतने में आये सम्भाजी,
बोले उन्हें दण्डवत कर
"जीत लिया कल्याण सोम ने,
वर! अहमद को बन्दी कर"
बोल उठे सरजा—" सचमुच!
या करते हो मजाक आकर?"
"तात! अगर विश्वास न हो, तो-
देख लीजिये चट चल कर
आया हूं मैं इसी हेतु,
करके प्रबन्ध चलिये सत्वर"
"अच्छा, अभी-अभी चलता हूं,
ठहरो तात! सिर्फ क्षण भर"

औ' दो क्षण में ठीक कर लिया,
सब कुछ उसने हो तत्पर
सौंप दिया सब भार वहां का,
सम्भाजी को समझा कर
और कहा-' जब तक न लौट आऊं
तू सावधान रहना
नया प्रान्त है, समझाऊं क्या ?
सब कुछ समझ—समझ करना ''
सम्भाजी मोहिते को सैनिक—
संग कर्नाटक भेज दिया
औ' कुछ सैनिक लेकर उसने—
अपने भी प्रस्थान किया
पहुंचे वे कल्याण शीघ्र ही—
देखा—बजती थी नौबत
सोमदेव था अति प्रसन्न,
औ' अहमद बैठा था जड़वत्

हंसती थीं बेडी पैरों में,
औ' हाथों में हथकडियां
दिखलाती थीं नर्तन प्रतिपल,
उसके दुर्दिन की घडियां
दौड़ा सोम शिव को लख कर,
अति प्रसन्न होकर विह्वल
स्वागत किया नमस्ते कर,
चल पड़े शिवाजी संग ले दल
सभी हो गये खडे अचानक
वीर केसरी को लखकर
सब को बिठलाया आवाने,
दे उनको आसन सुन्दर
विश्रोमोपरान्त सरजा ने-
कहा—"कहो सब कुछ सत्वर
करो विलम्ब न तात ! जरा,
सुनने को अति उत्सुक अन्तर''

"तात ! गये सूना तोरण से,
तब तक आ पहुंचा एकचर
कहा न देंगे अहमद गढ़,
प्रस्तुत रण-हेतु सेन सज कर
उसी समय में चढ़ आया,
एक छोटी-सी टुकड़ी लेकर
जमा लिया अधिकार किलेपर,
गढ़-पति को चट बन्दी कर''
" क्या मैं दूँ उपहार तुम्हें,
कुछ ज्ञात नहीं होता मुझको
शासक रहो तुम्ही गढ़ के,
कर दया छोड़ दो गढ़ पति को
यही कामना है मेरी-
हर रण में तुमको मिले विजय
आओ, बोलें वीरो ! हम सब,
' अब स्वतन्त्र भारत की जय

(क्रमशः)

—:o:—

प्यार का गीत

बहुत दूर मुझसे बसे प्राण, क्यों तुम
बहुत दिन हुए प्यार के गीत गाये !

बहुत गीत गाये कभी अर्चना के
मगर तुम न पिघले; कभी मुस्कराये
बहुत गीत गाये विफल वन्दना के
मगर तुम न बोले, नहीं पास आये

वृथा है सुनाना तुम्हें गीत अपना,
बहुत दिन हुए प्यार के गीत गाये !

बहुत दूर तुम हो, बहुत दूर मैं भी
बहुत दूर लगते यहां से सितारे

हमारी अंगुलियां उन्हें छू न सकतीं
उन्हें पा सकूंगा न बांहें पसारे

मरूंगा मगर प्यार की आह लेकर
बहुत दिन हुए प्यार के गीत गाये !

यही एक अंतिम मधुर कामना है
तुम्हें पा सकूं मैं मरण के समय में
तुम्हारे मधुर गीत सुनता रहूं मैं
सुनूं पग ध्वनि मैं तुम्हारी मलय में

सजल व्योम में मैं फिरूं बन विमल घन
बहुत दिन हुए प्यार के गीत गाये !

— कृष्णनन्दन 'पीयूष', मुजफ्फरपुर (बिहार)

अज्ञ पांखरास

चल उंच मार भरारी
गगनीं— शिवमंदिरीं ॥
कितितरि योनी फिरुनी फिरुनी
दमला; कण न सुखाचा दिसला
क्षणभर या संसारीं
अज्ञ पांखरा हो सावध बघ
काल-भिल्ल चवताळुन येइल
मारिल बाण जिव्हारीं ॥

मराठी कविता का हिन्दी गद्यानुवाद

हे अज्ञान पक्षी ! तूने सुख की प्राप्ति के लिए अनगिनत जन्म लिए और सुख की खोज में फिरता रहा; थक गया परन्तु तुझे वह सुख किंचित मात्र भी इस संसार में क्षणभर के लिए न प्राप्त हो सका; इसलिए हे पंछी ! तू ऊंचा उडता हुआ आसमान तक पहुंच जा, जहां शिव का हो, वहां तुझे चिर सुख की प्राप्ति होगी।

हे भोले पंछी ! सावधान रह, कालरूपी भिल किसी समय तेरे हृदय पर तीर छोडेगा।

—बालसुत, कुंथलगिरि

—:*:—

कन्नड कविता

हृदयक्षेत्रद कृषि

नारायण नेंब नामव निम्म
नालिगे तुदियिंद बित्तिरया ॥
हृदय होलव माडि मनव नेगिल माडि।
श्वासोच्छ्वास येरडेत्तु माडि ॥
ज्ञानवेंब हग्ग कणिणय माडी।
निर्मम वेंब गुंटेयल्लि हरगिरया ॥ १ ॥
मद मत्सर वेंब मरगळने तरिदु।
काम क्रोध गळेंब कळेय कित्ति ॥
पंचेंद्रिय वेंब मंचिकेयने हाकि।
चंचल वेंब हक्किय होडेयिरया ॥ २ ॥

कन्नड कविता का हिन्दी गद्यानुवाद

नारायण के नाम का अपनी जिह्वा से बीजारोपण कर और हृदय की खेती में अपने मन का हल चला। इस मन रूपी हल को श्वासोच्छ्वास के दो बैल बांध तथा इन बैलों को संभालने के लिए ज्ञान की बागडोर को अपना और निर्ममता के हल से बीज बो।

खेती में पैदा हुए मद और मत्सर के झाडों को काट दें और काम क्रोधादि के कचरे को निकाल फेंक दें। पंचेन्द्रिय का मंच बनाकर उस पर से तू चंचलता के परिंदों को उडा दे।

—दासवर्य श्री पुरंदरदास

चिन्ता

—राम कृष्ण पाराशर, साहित्यालंकार, दिल्ली

आज हमारे समाज के प्रत्येक व्यक्ति के सिर पर चिन्ताओं का भूत सवार है। बुभूक्षित नर कंकाल की टूटी-फूटी झोंपडी से लेकर लक्ष्मी के वरद पुत्रों के भव्य प्रासादों तक सब कहीं चिन्ता रानी का एक छत्र राज्य है। आज के मानव का जीवन अपनी परिस्थिति की चिन्ताओं में बुरी तरह उलझा हुआ है। आज वह प्रसन्नता और आनंद के वातावरण में सन्तोष की सांस लेने में असमर्थ हो चुका है। आज वह चिन्ता के घातक अभिशापों से मुक्ति पाने के लिए त्राहि-त्राहि कर रहा है। 'इस लिये आइए पहले सोचे कि 'चिन्ता' क्या है? कैसे उत्पन्न होती है? और उस से मुक्त होने के क्या उपाय हैं?

किसी भी विषम परिस्थिति से उत्पन्न मानसिक दुर्बलता का ही नाम चिन्ता है। यह मनुष्य के अपने बीते हुए जीवन के हाहाकारों, प्रिय व्यक्ति के विछोह की आकुलता, हजारों रुपये की हानि की कसक और समाज में दूसरों द्वारा अपनी मानहानि की जलन आदि की प्रतिकूल परिस्थितियों से पराजित होने पर उत्पन्न होती है। यह मस्तिष्क की वह अवस्था है जब कि शक्तिशाली व्यक्ति अपनी सृजनात्मक शक्ति के स्थान पर विध्वंसात्मक शक्तियों को अपने विरुद्ध जाग्रत कर लेता है। लाभ और उन्नति के स्थान पर भय, मिथ्या कल्पना, कुढ़न, शक्तिहीनता, परिस्थिति की विषमता और मानसिक दैन्य का अनुभव करता है। वास्तव में 'चिन्ता' मानसिक जगत की दुःखद स्मृतियों तथा भावी भय की आशंका से उत्पन्न विनाशकारी मनोविकार है जिसके द्वारा मानव की शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक शक्तियों का ह्रास निश्चित है।

चिन्ता का जन्म 'आज' अर्थात वर्तमान के क्षणों का समुचित उपयोग करने की निरन्तर स्मृति और कोरी आशा के झुले में झुलते रहनेसे होता है। तथ्यों की गड़बड़, सब कुछ मिला-जुला अन्धकार पूर्ण रहने से मन में एक मिथ्या भय उत्पन्न हो जाता है जिस में हमें कुछ भी स्पष्ट नहीं दिखाई देता और हम ऐसी विषम बातें सोचने लगते हैं, ऐसी कल्पनाएं करने लगते हैं; जिनका हमारी समस्या से कोई सम्बन्ध नहीं होता। इसी मिथ्या भय से चिन्ता का जन्म होता है। इस कारण चिन्ता को हम मनुष्य के तर्क का कुण्ठित तथा विकारमय रूप से उत्पन्न 'मैल' या बुद्धि के अन्धकारमय पक्ष की संज्ञा दे तो अतिशयोक्ति न होगी। संक्षिप्ततः चिन्ता के हम मतीमूल कारण मानते हैं—भय, अभाव और अज्ञान।

चिन्ताओं से हमारे मन, मस्तिष्क, शरीर और आत्मा-आदि सभी सम्बन्धित हैं। साथ ही हमें अपने इष्ट-मित्रों, सगे-सम्बन्धिओं तथा मालिकों-नौकरों आदि सभी की चिन्तायें सताया करती हैं, जिनमें से अधिकांश स्वास्थ्य, सहयोग, सम्मान तथा धन आदि से जुड़ी होती है। मोटे तौर पर अपनी चिन्ताओं को हम तीन भागों में बाँट सकते हैं:—

शारीरिक चिन्तायें—

इस श्रेणी में हमारे शारीरिक स्वास्थ्य सम्बन्धी चिन्तायें आती हैं। जिन का जन्म साधारण रोग को बढा-चढ़ा कर समझने से उत्पन्न मिथ्या भय से होता है। अनिष्ट की आशंका से उनके मस्तिष्क के पटल पर अशुभ काल्पनिक चित्र अंकित हो जाते हैं जो शरीर पर घातक प्रभाव रोग के रूप में डालते हैं। आज विज्ञान ने सिद्धकर दिया है कि अधिकांश शारीरिक रोग 'चिन्ता' आदि मानसिक विकारों के परिणाम हैं। शारीरिक चिन्ताओं से मुक्ति पाने के लिये हमें अपनी सन्देहात्मक प्रवृति को छोडना पडेगा। योजना बनाकर चिन्ता के कारणों को दूर करना ही इससे मुक्ति पाने का उपाय है। साधारण व्यायाम, संयमित जीवन तथा आहार-विहार में सावधान रहने से अनेक शारीरिक चिन्तायें दूर हो सकती हैं।

सामाजिक चिन्तायें—

इस श्रेणी में सामाजिक रीति-रिवाजों द्वारा उत्पन्न

चिन्ताओं के साथ-साथ आर्थिक तथा राजनैतिक विषम परिस्थितियों द्वारा उत्पन्न चिन्तायें आजाती हैं। आज के जीवन में दो तत्व मुख्य रूप से महत्वपूर्ण बन गये हैं--- एक तो धन का, दूसरा वासना का। अधिकांश व्यक्तियों की चिन्ता वासना से सम्बन्धित है। साधारण स्तर से रहने रहने वाले निम्न कोटि के व्यक्ति के लिये इन्द्रिय सुख चाहिये ? आज उसे चिन्ता है कि उसका विवाह अमुक स्त्री से कैसे हो ? अमुक कन्या कैसी सुन्दर है ? अमुक अभिनेत्री का स्नेह कैसे प्राप्त हो ? अमुक व्यक्ति की स्त्री कैसी व्यावहारिक कुशल है ? इस प्रकार की चिन्तायें साधारण माननीय स्तर के लोगों के हृदय- सरोवर में उठा करती हैं। वे स्त्री को अतृप्त वासनात्मक भावों भरी ललचाई दृष्टि से देखते हैं और अन्तकरण में एक प्रकार की दलित भावना का अनुभव करते हैं। अपनी यौन सम्बन्धी (Sexual) मानसिक दुर्बलता के कारण समाज के अधिकांश लोग भयंकर गुप्तांगों सम्बन्धी रोगों के शिकार बन जाते हैं। वासना का क्षणिक सुख दूर से आकर्षक होता है; पर समीप आनेपर अनर्थकारी ही परिणाम देकर जाता है। इस कारण वासनाजन्य चिन्ताओं से हमें सदैव अपने को मुक्त करने का प्रयत्न करना चाहिये। प्रत्येक अभिनेत्री को अपने सात्विक आदर्श से नीचा समझिये, अपने पड़ौसी की पत्नी में माता अथवा बहिन के दर्शन करने की आदत डालिए, अपने आयु से छोटी बालिकाओं के प्रति अपनी छोटी बहिन अथवा पुत्री का भाव रखिए। वासना उत्तेजित करने वाले अर्धनग्न चित्रों, अश्लील साहित्य तथा कुसंगति को त्याग कर इन महान अनर्थकारी चिन्ताओं से मुक्ति पाई जा सकती है।

आर्थिक चिन्तायें—

आज के मानव को सबसे बड़ी 'पैसे' के चिन्ता है। जिसे देखिए वही पैसा पाने के लिए चिल्ला रहा है। आज वह पेट की पूर्ति के लिए 'पैसा' कमाने की चिन्ताओं में पिसा जारहा है। धनी, निर्धन आर्थिक चिन्ताओं में डुबे हुये हैं। इन चिन्ताओं का जन्म निम्न कारणों से होता है :-

१. व्यय आय के अनुसार न होने से—हमको अपनी आयके अनुसार व्यय न करने वाले कारणों में हमारी कुछ मानसिक दुर्बलतायें आदि ये हैं:—

(अ) कृत्रिम आवश्यकताओं की अभिवृद्धि।

(ब) अपने को समाज में बढ़ा-चढ़ा कर दिखाने की आदत।

(क) बुरी लतें—शराब पीने की, वेश्या गमन, मुकदमे बाजी, नशेबाजी आदि।

(ड) दूसरों की चापलूसी में व्यर्थ के व्यय की आदत।

(स) अधिक सन्तान उत्पत्ति की प्रवृति को प्रोत्साहन देना।

२. आय खर्च के अनुसार न बढ़ने से—कुछ हमारी दुर्बलताओं से, कुछ अन्य आकस्मिक परिस्थितियों के कारण व्यय बढ़ जाता है परन्तु आय में उसी अनुपात में वृद्धि नहीं होती, जिस से अनेक आर्थिक चिन्तायें उत्पन्न हो जाती हैं।

३. मितव्ययता की आदत न होने से—संक्षेपतः झूठी वाह-वाह और कुछ बुरी आदतों के शिकार बनकर हम अपनी आय से अधिक खर्च कर बैठते हैं फिर ऋण लेकर नई-नई चिताओं को पाल लेते हैं, जो हमारे मन, मस्तिष्क तथा शरीर को सदा जर्जरित किया करती हैं। इनसे छुटकारा पाने के लिए हमें व्यर्थ शौक और दिखावे को छोड़ना पड़ेगा। आय का कम होना उतना हानिकारक नहीं होता जितना खर्च को ढंगसे न करना। वास्तव में यदि हम आर्थिक चिन्ताओं से मुक्ति पाने का मूल उपाय 'व्यय करने की कला' को सीखना है। कर्ज लेकर चिन्तित रहने की अपेक्षा धनाभाव में फाकामस्ती करना अधिक श्रेयस्कर है।

सामाजिक व्यवहार सम्बन्धी चिन्तायें—

इस वर्ग में व्यक्तिगत अव्यावहारिकता, अशिष्टता, अपरिपक्वता द्वारा उत्पन्न सामाजिक व्यवहार सम्बन्धी असफलता पर निर्भर रहने वाली चिन्तायें आती हैं। कोई अपने मालिक को सन्तुष्ट न कर पाने के कारण चिन्तित है, कोई अपने नौकर के व्यवहार से परेशान है, कोई अपने ग्राहक को प्रसन्न न करने के कारण बेचैन है। इस प्रकार की सारी चिन्ताओं से मुक्ति पाने के लिये हमें लौकिक व्यवहार कुशलता सीखनी पड़ेगी। हमें दूसरे को परख कर व्यवहार करना चाहिए। मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करके उसके

गुप्त रहस्यों की जानकारी प्राप्त करनी पड़ेगी। स्त्री-पुरुष ग्राहक, श्रोता, बालक-वृद्ध तथा अफसर के मन में रहने वाले 'अहम्' के भाव को समझ लेना बड़ा आवश्यक है। जब उनके 'अहम्' भाव पर चोट लगती है, तब ही ये क्रोधित हो उठते हैं। 'अहम्' को या उभारने से प्रत्येक व्यक्ति प्रसन्न हो सकता है। प्रत्येक व्यक्ति का जीवन एक बन्द पुस्तक की तरह है, उस में नाना प्रकार की दलित वासनाएं तथा स्वाभाविक कमजोरियां भरी पड़ी हैं। इन्हीं का मनोवैज्ञानिक अध्ययन हमें इस प्रकार की चिन्ताओं से मुक्ति प्रदान करता है।

मानसिक चिन्तायें—

इन का जन्म, संवेदनशीलता, भावुकता तथा अति-विचारशीलता के कारण होता है। तनिक मानसिक चोट को भी सहन न कर पाना, टीका-टिप्पणी, मजाक, आलोचना या अपने विषय में अप्रिय बातें सुनकर आवेश में आजाते हैं। साधारण-सी असफलता उन्हें तरह-तरह की चिन्ताओं में डाल देती है। भविष्य में क्या होगा? हमारी शिक्षा कैसे चलेगी? लड़कियों का विवाह कैसे होगा? आदि प्रकार की चिन्तायें मानसिक दुर्बलता के कारण उत्पन्न होती हैं। इस प्रकार की चिन्ताओं में फंसे हुए व्यक्तियों को इस प्रकार की सारी समस्याओं के बारे में सोचना छोड़कर प्रयत्न करना चाहिए तथा अपने आत्मविश्वास को बढाने के लिये प्रयत्नशील रहना चाहिए। अपने विषय में अधिक चिन्तन कर हम अपनी समस्याओं को हल नहीं कर पाते। उल्टे कठिनाइयों से संघर्ष करने वाली इच्छा शक्ति को ही खो बैठते हैं। आनेवाली कठिनाइयों के विषय में चिन्ता कर, रही-सही शक्तियों को भी क्षय करने की अपेक्षा यह उत्तम रहेगा कि हम उन को दूर करने का उपाय चित्त को शान्त और स्थिर करके सोचें।

पारलौकिक जगत सम्बन्धी चिन्तायें—

'मरने के बाद क्या होगा?' मरने पर बड़ा कष्ट होता है; माता के गर्भ-जीव को कैसे कैसे कष्ट उठाने पड़ते हैं? ईश्वर क्या है? कहां है? आत्मा तथा ईश्वर का क्या संबन्ध है?—आदि प्रश्न बड़े महत्व पूर्ण हैं। इनसे मन में सद्-प्रकाश उत्पन्न होता है। इन प्रश्नों के सन्तोषजनक उत्तर न पाकर हमें अपने मस्तिष्क को इन से उलझाना नहीं चाहिए। इसी उलझन से चिन्ता का जन्म होता है। इस विषय का ज्ञान अनुभव तथा गम्भीर अध्ययन की वस्तु है। इस प्रकार की चिन्ताओं से मुक्ति हमें अपने अनुभव के उपयोग से मिल सकती है।

समाज हँसता ही रहा

—भगवतशरण चतुर्वेदी 'शरण', वृन्दावन

उस बिचारे पर कष्ट पर कष्ट, शोक पर शोक, चिन्ता पर चिन्ता आती रहीं—वह डगमगाता हुआ, सिसकता हुआ, सबको पार करता हुआ बढ़ता ही रहा। पर...पर इतना होने पर भी उस विधि को विश्राम न मिल सका...... ।

उसकी षोडश वर्षीय पुत्री अपने पिता की चिन्ता का केन्द्र बिन्दु बन गयी। उसका मदमाता यौवन, चंचल आंखें, सुडौल शरीर और अद्वितीय रूप कहीं निर्धनता पर कलंक न लगा दे—उसके मन में उथल-पुथल पैदा हो गई। गरीबी पर वह रो उठा—उसका मन, उसकी आंखें, उसकी आत्मा रो उठी, किन्तु वह निस्सहाय करता भी क्या ? उसके पास उन अमूल्य मोतियों के अतिरिक्त था ही क्या जिसे कि वह कन्या के दहेज-रूप में दे सकता किन्तु समाज ने उस अमूल्यता को न पहचाना—समाज ने उसे ठुकरा दिया।

वह एक बार फिर रो उठा !

काश ! वह समाज, निर्दय समाज उसकी पीड़ा का अनुभव कर पाता किन्तु उसे अवकाश ही कहां था रंगरेलियों को छोड़ इस ओर मुड़कर देखने का।

* * * *

उसने अपनी बेटी को पास बुलाकर समझाया कि हम निर्धन हैं पर हैं स्वाभिमानी; कहीं पुत्री तुम्हारे पिता की इज्जत न लुट जाय और इतना कहते-कहते उसकी आँखों में आँसू आगये। उसकी पुत्री से वह रहस्य छिपा न रह सका उसकी आँखों में उसकी (उसके पिता की) सारी पीड़ा झलक उठी और उसकी आँखें भी छलछला आईं। उसने दृढ़ हो अपना कर्तव्य निश्चित कर लिया और·······और वह सर्वदा के लिये इस असार संसार को छोड़ चली गई। उसने अपने पिता के मान को जीवन से उत्कृष्ट समझा और पिता के मान की रक्षा हेतु उसने अपने जीवन का बलिदान कर दिया।

उसका पिता चीत्कार कर उठा—उसका रोम-रोम रो उठा—गरीबी रो उठी पर मानवता चुप सोती रही और वह निष्ठुर समाज हँसता ही रहा !!

'समाज हँसता ही रहा' रेखा-चित्र पर कुछ सम्मतियां—

— दहेज पर अनेक ग्रन्थ लिखे गये किन्तु यह श्री 'शरण' की परिमार्जित लेखनी से निकला हुआ, सूक्ष्म में ही दहेज समस्या पर पूर्ण रूपेण प्रकाश डालने वाला अद्वितीय रेखाचित्र है।

—'कमलेश'

— 'समाज हंसता ही रहा' गागर में सागर है।

'कुसुम'

— यह रेखाचित्र क्या दहेज का वास्तविक रूप है ?

—'अरुण'

— भाई 'शरण' की लेखनी से निकली हुई पंक्तियां भी अपना स्वयं व्यक्तित्व रखती हैं। रेखाचित्र उत्कृष्ट कृति है।

—प्रो. राकेश (राज.)

— श्री भगवत शरण की कृति मनोवैज्ञानिक तत्व की अंतिम गहराई तक पहुंच जाती है।

—माखनलाल चतुर्वेदी

लिखूँ या रोऊँ ?

— रामाधार शर्मा 'व्याकुल', नांदेड़

रूप, गुण, रस, विद्या, स्नेह और सौजन्य से परिपूर्ण जो धन पुत्र के रूप में किसी पिता को बिना याचना के ही मिल जाता है—उसकी संसार भर की किसी वस्तु से तुलना नहीं की जा सकती। वास्तव में इस नामराशि का ही संस्कारी प्रभाव था। कितना सुन्दर और प्रभावोत्पादक नाम था उसका—नरेन्द्रमोहन! वह केवल अपने माता-पिता का ही प्यारा था—अपितु अपने स्वाभाविक शीलगुण से सभी के चित्त को आकर्षित एवं अभिषिक्त कर लिया करता था। हजारों में एक-सी दिखने वाली उसकी आकृति-प्रकृति ऐसी जान पड़ती थी—जैसे होनहार नौजवान के चिकने पात हों। गोरारंग, गोल मुंह, आंखों पर ऐनक, शांत स्वभाव, सचमुच मोहन था वह! पंद्रह वर्ष का वह किशोर मानो अपने पवित्र सौन्दर्य से "यथा नाम तथा गुण" वाली कहावत हो चरितार्थ कर देता था। अपना कक्षा में वह अंग्रेजी तो इतनी साफ और सही बोल लेता था कि अंग्रेजी पढ़ाने वाले अध्यापकों को भी उस पर आश्चर्य हुए बिना नहीं रहता था। कुछ गुण तो उस में ऐसे थे जिससे मैं आज भी उसे नहीं भूला हूं और सारी जिन्दगी नहीं भुलूंगा। मेरे घर प्राय: प्रतिदिन ही वह मुझसे कुछ न कुछ सुनने-सुनाने के लिये आ जाया करता था। छोटी सी मेरी बालिका को गोद में लेकर जब वह सुकुमार-भाव दर्शाने लगता तो ऐसा जी चाहता कि मैं भी उसे अपनी गोद में उठालूं और कहूं कि साड़े-सात सौ रुपये मासिक वेतन पाने वाले बड़े आदमी के लाड़ले बेटे! तेरे इस निराभिमानी-स्वभाव पर मैं अपने भावुक हृदय को निछावर कर दूं। आह! कितना सहृदय और सुकुमार था वह! जब कभी कक्षा में पाठ याद न होने पर मैं अप्रसन्न हो जाता तो वह मुझसे एकान्त में आकर पूछता—"क्यों गुरुजी! अब तो आप मुझसे नाराज हो गये हैं—शायद शाम को आज घर पर पढाने नहीं आएंगे? अच्छी बात है। भले न आयें। फेल तो होने कक्षा में हूं ही।" उसकी ऐसी बात सुनकर मुझे हंसी आये बिना नहीं रहती। अनायास मेरे मुंह से निकल पड़ता—"आऊंगा क्यों नहीं रे! आऊंगा नरेन्द्र! मैं अवश्य आऊंगा।"

मैं सच कहता हूं—जिसने भी एक बार उसे देखा होगा—अथवा आसाढ़ मास की पूर्णिमा के दिन चंद्रग्रहण के उपलक्ष में गोदावरी गंगा में स्नान करते समय नांदेड़ नगर के इंपीरियल-बैंक के मैनेजर के लड़के के डूब जाने का अप्रिय एवं दुःखद समाचार सुना होगा—वह निःसंदेह यह अनुभव करेगा कि क्रूर काल के लिये तो डूबने का एक साधारण बहाना ही काफी हो सकता है। किसी दार्शनिक या आध्यात्मिक व्यक्ति के गम्भीरतम शब्दों में मृत्यु तो जीवन पर चन्द्रग्रहण के समान पड़ने वाली एक अनिवार्यत: छाया ही हो सकती है, किन्तु हम सांसारिक अबोध प्राणियों के विचार से अकारण एवं अचानक मृत्यु का शोक अत्यधिक हृदय-विदारक हुआ करता है। नरेन्द्रमोहन का यह निधन सचमुच मिठाई के दोने पर आकस्मिक चील का झपटा ही था। प्राणों की प्यासी नदी इसे पी गई।

पिछले आसाढ मास का मनहूस महीना था—पूर्णिमा को पृथ्वी की छाया चन्द्रमा पर पड़ने जा रही थी अथवा राहु-केतु चन्द्रग्रह को ग्रसने जा रहे थे। भगवान ही जाने प्रात:काल से ही नरेन्द्र मोहन के उज्ज्वल मस्तक पर मृत्यु की काली-छाया पड़ने लग गई। अपने संगियों-साथियों को लेकर उसने गोदावरी स्नान का प्लान बनाना शुरू कर दिया। उधर गोदावरी गंगा में बाढ़ ऐसी आई हुई थी, जैसे पुत्र शोक में किसी दुःखिया मां की आंखें भर आई हों। लोग दूर-दूर से चल कर गोदावरी स्नान का महात्म्य द्विगुणित कर रहे थे। नांदेड़ जो प्राचीन काल में नन्दीग्राम भी कहा करते थे एक ऐतिहासिक-महत्व रखने वाला पवित्रतम स्थान है। आज भी वह गोदावरी तट पर स्थित सिक्खधर्म के प्रवर्तक गुरु गोविंद सिंह पुण्य-समाधि को अपनी गोद में

लिये हुये महिमान्वित हो रहा है। नगीनाघाट इस नगर के मुमताज हिस्से में अपनी रौनक दिखा रहा है। ठीक इसी घाट पर—हां, हां, पत्थर की अनगिनत सीढियों वाला वही नगीनाघाट जो हर साल गोदावरी में बाढ आने पर दो चार प्राणों को अपनी अमिट एवं अमित क्षुधा को शान्त करने के लिए आहार का उपयुक्त-साधन बना लिया करता है — इस वर्ष भी नगर के असंख्य नर-नारियां दल बांध कर गोदावरी स्नान का स्वर्गीय-पुण्य लूटने इस नगीनाघाट पर चले आ रहे थे। आज नरेन्द्रमोहन ने भी ज़िद की—

"मां, हम भी गोदावरी स्नान करने के नगीनाघाट चलेंगे!"

यद्यपि मां ने उसे बहुत समझाया—"गोदवरी में अति वर्षा के कारण बहुत बाढ़ आई हुई है। पानी भी बहुत गन्दा है। बेटा! हम आज नहीं फिर कभी चलेंगे।"

फिर भी नरेन्द्रमोहन ने एक भी न सुनी—और सुनता भी कैसे, उसे तो अपने आत्मीयजनों के कलेजे में छुरी भोंककर सीधा स्वर्ग लोक को प्रस्थान कर जाना था। अन्त में धार्मिक संस्कारों एवं प्राचीन रूढ़ियों से अत्यधिक प्रभावित होने के कारण उसने कहा—"मां, जहां आज चंद्रग्रहण के समय दूर-दूर के लोग पैदल चलकर गोदावरी स्नान के लिये आये हुए हैं—वहां हम गोदावरी न जाकर नल के पानी से स्नान करलें—ठीक नहीं। हम तो गोदावरी स्नान की जरूर जाएंगे।"

दिन में गवर्नमेंट हाईस्कूल को छुट्टी होने के कारण खूब मैच होती रही। सारे दिन मैच का कप्तान बना नरेन्द्रमोहन हमजोलियों के साथ खेलता कूदता रहा। संध्या का सन्नाटा वृक्षों पर छाने लगा। सूर्य भगवान किसी हारे हुए सैनिक की भांति पश्चिम दिशा में छिपने के लिये तेजी से आगे चले जा रहे थे। नरेन्द्र भी खेल से लौटकर घर आया। मां के साथ छोटे-छोटे भाइयों और बहनों को तथा अपने प्रिय सखा मिस्टर राजा को भी लिये हुए सीधा पहुंचा नगीनाघाट। नगीनाघाट पर पहुंच कर देखा—हजारों आदमी घुटने भर जल में ही स्नान कर रहे थे। क्यों कि गोदावरी में बाढ़ आई हुई थी। जल-प्रवाह रेलगाड़ी की तरह भागा जा रहा था। सीढ़ियों पर पांव जमाये लोग डरते-डरते स्नान कर रहे थे। जिन्हें भली भांति तैरना आता था वे तो खूब दिल खोलकर डुबकी लगा रहे थे। गहरे पानी में तैरकर दूर तक चले जाते—थोडी ही देर में पानी के तांड़ से जूझकर वे पुनः किनारे आ लगते। नरेन्द्रमोहन ने भी डुबकी लगाने का निश्चय किया। नहाने वालों की भीड़ से अलग दूर जाकर उसने एक डुबकी लगाई। पानी का बहता हुआ एक तेज रेला आया, उसे धक्का लगा। वह उस प्रवाह के साथ बहने लगा। बीच में एक सीढ़ी पर पर पांव टिकते ही उसे भरोसा हो गया कि अब मैं किनारे पर हूं। लोग मुझे बचा लेंगे। किन्तु उसे जल क्रीड़ा समझकर लोगों ने उसपर ध्यान नहीं दिया। पांव फिर फिसल गया। उस के मुंह से एक चीख निकली। अस्पष्ट स्वर पानी की लहरों पर ही तैरता रह गया। उसको डूबते हुए देखकर उसका साथी, उसके मृत्यु का संगी, राजा घबरा कर आगे बढ़ा। नरेन्द्रमोहन का हाथ पकड़ कर वह उसे निकाल लेना चाहता था किन्तु भाग्य ने बिलकुल साथ न दिया। वह भी आगे गहरे पानी में बढ़ता गया। दोनों ही एक दूसरे का हाथ पकडे हुए गोदावरी के गहरे जल में समा गये। आकाश में चंद्रमा पर पड़ा हुआ ग्रहण तो छूट गया था, किन्तु पानी की तेज धारा और भंवर में पड़े हुए दोनों किशोर न छूट सके। डूबते हुये उन मरण सन्न-बालकों को घाट पर खडे हजारों आदमियों में से किसी एक ने भी सहायता नहीं पहुंचाई। किनारे से दूर हट कर अन्य बच्चों के साथ बैठी माता को जब सन्देह हुआ तो धुन्धली सन्ध्या में आंखें फाड़-फाड़कर उसने जल प्रवाह को देखा। कहीं नरेन्द्र और राजा का पता नहीं था। घबराकर नरेन्द्र मोहन की अभागिन मां ने चिल्लाना शुरू किया कोई लाभ नहीं हुआ। सभी के सभी गुम-सुम खड़े रह गये। मां रोने लगी—"हाय बेटा! अपने हाथों से ही अपनी मृत्यु का कूट कौशल तूने रचा था—तभी तो मना करने पर भी न माना।"

नरेन्द्र मोहन के पिता को खबर मिली। नरेन्द्र गोदावरी में डूब गया। पैरों के नीचे से मानों जमीन ही खिसक गई। विचारों के हाथ से तोता उड़ गया। दौड़े हुये घाट पर आये। सुनसान घाट मानव हृदय की व्यथा को भला क्या

समझ सकता था। पत्थर की सीढ़ियों से भी कठोर वहां के बड़े आदमियों का उन हृदय शून्य व्यक्तियों का अन्तराल न पसीज सका। इसके बाद बहुत प्रयत्न किये जाने पर भी नरेन्द्र की मृत देह न मिल सकी। निराश, विपन्न और दुःखी होकर सारा घर आंसू का घूंट पीकर रह गया।

आज भी मैं मैनेजर साहब के घर जाता हूं। घर की प्रत्येक वस्तु को रोती हुई पाता हूं। नरेन्द्र के माता–पिता और भाई-बहिन को समझाने के लिये मुझे ढूंढने से भी शब्द नहीं मिलते। नरेन्द्र का जूता, चश्मा, छाता और उसकी साइकिल तो आज भी उसके वियोग में मूक रुदन करती हैं। मैं स्कूल पढ़ाने जाता हूं–नरेन्द्रमोहन के छोटे भाई को जब अकेले देखता हूँ तो ऐसा विदित होता है कि राम-लक्ष्मण की जोड़ी ही खंडित हो गई। राम का इंगितज्ञ लक्ष्मण अकेला ही रह गया है। शोक! महाशोक!!

बहुत से लड़के आते हैं—कोई शिकायत लेकर आता है—कोई शंकाओं के समाधानार्थ–किन्तु चश्मे के अन्दर ढंकी हुई गोल गोल करुणामय में और चिर–परिचित सदय वे आंखें कहीं नजर नहीं आतीं।

परम पिता परमात्मा नरेन्द्रमोहन के दुःखी परिवार को इस असह्य दुःख को सहन करने की अलौकिक सहिष्णुता प्रदान करे। यही प्रार्थना है!

——

क़ानून

— बालकृष्ण लाहोटी, "कृष्ण", हैदराबाद

क़ानून से क़ानून कटता है। एक वकील एक चीज़ को सत्य करता है, तो दूसरा उसे नजीरों द्वारा झूठ बना देता है। और न्यायाधीश के जो समझ में आता है, न्याय मिल जाता है। यह मसला यहीं खत्म नहीं होता, उसकी अपील होती है। इसके बाद भी कई कोर्ट हैं। प्रमुख न्यायालय में भी जो न्याय होता है उसे भी दूसरे देशों को भागकर बच सकता है। यह क़ानून जाकर कहां ठहरता है यह तो क़ानूनदां ही बता सकते हैं, परन्तु क़ानून है बुरी बला।

क़ानून अच्छी चीज़ है, क़ानून से चलना चाहिए परन्तु पांच प्रतिशत जनता भी उसका ठीक तौर पर पालन नहीं करती। क़ानून की बला प्रत्येक को लगती है और नहीं भी। क़ानून मनुष्य के सर में जुनून पैदा करता है। हिन्दी में इसे विधान कहते हैं लेकिन क़ानून शब्द ही अधिक प्रचलित है।

भारतीय गणराज्य (जनतन्त्र) का संविधान है। उसके कई भाग हैं। उसके कई प्रकार के राज्य हैं। कई प्रकार के न्यायालय जैसे उच्च न्यायालय, अभिलेख न्यायालय, साधारण न्यायालय। फिर मज़ा यह कि प्रांत २ के क़ानूनों में अन्तर है। एक चीज़ एक राज्य में चलती है दूसरे राज्य में नहीं चलती। जैसे गोवध किसी राज्य में होता है तो किसी राज्य में नहीं होता। क्या यह मजाक नहीं? कि विधान के एक राज्य में गोवध या और कोई चीज़ है तथा एक राज्य में नहीं।

यह कानून मालिक—मजदूर, जोरू–मर्द, भाई–भाई तथा बाप–बेटे में लडा देता है। कई उदाहरण आपको मिलेंगे कि अदालतों की चक्कर ऐसे लोग काटा करते हैं। भाई २ लडते हैं, पुरुष–स्त्री लड़ते हैं। छोटी अदालत से बडी अदालत और बडी अदालत से हायकोर्ट में जाते हैं। इस प्रकार हाय हाय मच जाती है। रात दिन मस्तिष्क की शक्ति उधर ही लग जाती है। न वादी को चैन रहता है न प्रतिवादी को।

अमोल चन्द बडा योग्य पुरुष था। ऐसा धन्धा करता था कि लोगों को हसरत (ईर्ष्या) होती थी। व्यापार में हजारों कमाता था और हजारों ही गमाता था। एक बार तो ४ लाख को पूंजी वाला हो गया था, परन्तु एक मंदी में ३॥ लाख लग गए। एकदम चौंका और सावधान हो गया। उसके पैर के तले धरती सरक गई। वह २–४ दिन तक असुध–सा रहा और ८–१० दिन चिन्ता में रोटी न खाई। रातों को जाकर अपना भविष्य विचारने लगा। ४ लाख की पूंजी से ३॥ लाख चला जाना; शेष क्या रह जाता है। रहने का मकान पहनने के गहने तक रहन हो गए। अब कपडा लत्ता और बाकी साकी रह गए। यों तो व्यापारी बचा था परन्तु जरा घबरा गया। उसने बहुत विचार पूर्ण ढंग से यह निर्णय किया कि अब तेजी मंदी की जोखम उठाना छोड देना चाहिए। सट्टा तो भूल कर भी न खेला जाय। वायदे के सौदे भी बेकार हैं। अब तो १५–२० हजार या २५–३० हजार रुपया नकद जमा होने पर किसी किसम का एक कारखाना खोल दूं।

कारखाना खोलने का यह विचार दिमाग में जम गया और ईश्वर की कृपा हुई और वाणिज व्यापार में कुछ पैसा कमा लिया और एक कारखाना खोल दिया। जिस में प्रारम्भ में १० आदमी रखे गये थे। साल छः महीने में १५–२० आदमी हो गए १–२ साल अपने ढंग से चलाया गया परन्तु जब लेबर आफीसर को मालूम हुआ कि अमुक कारखाने में २० आदमी काम कर रहे हैं तब से उस कारखाने पर ग्रह मण्डराने लगे। कारखाना फयाक्टरी में आगया। सब काम परतंत्र हो गए।

अमोलचंद स्वतंत्र व्यापार करने वाला साधा सीधा व्यक्ति था। इस कारखाने की दलदल में फंस गया। फ्याक्टरी एक्ट की बीमारी ऐसी बढ़ी कि वह तिलमिला गया। कई प्रकार के नए २ कर लगने लग गए। फ्याक्टरी अफसर आकर अलग पूछते हैं; तो लेबर अफसर साहब अलग आंखें दिखाते हैं। हेल्थ इन्स्पेक्टर साहब का

दौरा होता ही रहता है। म्युनिसिपल वाले साफ सफाई के लिए डाँटनी लगाते हैं।

कारखाना जिल्दसाजी का था लोगों से कागज लेलिया जाता और हस्ब ख्वाहिश कापियां नोटबुक या रजिस्टर बनाकर देदिए जाते। इस में रोजाना खर्च जाते बाकी १५-२० मिल जाते थे, परंतु उसी में सन्तोष मान कर बड़े २ व्यापार छोड दिए थे। किन्तु फैक्टरी एक्ट की बला से यह बडा विचलित हो गया और पछताने लगा कि मैं किस व्यापार से किस में पड़ गया। मैं यह क्या कर बैठा। अन्त में लाचार हुआ और फ़्याक्टरी को बन्द कर देने का निर्णय किया किन्तु मालूम हुआ कि बन्द भी नहीं कर सकते। यह कानून के खिलाफ है। इसपर सरकार जुरमाना भी कर सकती है, दण्ड भी दे सकती है और फ़्याक्टरी चलाने पर मजबूर कर सकती है। अमोलचंद कारखाना खोलकर बड़ी दुविधा में पड़ गया।

(२)

करणदेवी भोजन बना रही थी। बाल बच्चे खेल रहे थे। अमोलचन्द स्नान गृह में गंगा जमना सरस्वती की रट लगाते हुए स्नान कर रहे थे। मजदूरनी दरवाजे के बाहर झाड रही थी और छिड़का लगा रही थी। इतने में म्युनिसिपल कमेटी के एक सिपाहीने आकर पूछा—

"क्या घर में सेठ साहब हैं ?"

मजदूरनी—स्नान कर रहे हैं, कहो क्या बात है ?

सिपाही—उनसे कहोकि महकमे बल्दिय से टैक्स वसूल करने वाला आया है।

मजदूरनी—अभी तो सुबह नहीं हुई ?

सिपाही—क्या कहा सुबह नहीं हुई। देखती नहीं कितनी धूप आगई है। आठ बज गए हैं, नौ बजने वाले हैं।

मजदूरनी—अच्छा जाती हूं तुम यहीं ठहरो।

सिपाही—मैं कौनसा अन्दर घुसा आ रहा हूं।

मजदूरनीने अमोलचन्द को सूचना दी तो बेचारा पूजा करते हुए बाहर आया। कहा—"क्या है ?"

सिपाही—टैक्स के रुपए दीजिए।

अमोलचंद—किन्तु इतने सुबह कैसे दूं जाओ ४ बजे दुकान पर आना।

सिपाही—सेठ जी मैं आपका नौकर नहीं हूं सरकारी नौकर हूं।

अमोलचंद—तो मैं पूजापाठ नित्य नियम छोडकर तुमको पहले पैसे दूँ ?

सिपाही—यदि नहीं देते हैं तो मैं रिपोर्ट कर दूंगा।

अमोलचंद—"अच्छा जाओ" कह कर घरमें चला गया। अब क्रोध में पति को देखा तो करनदेवी ने पूछा—"क्या है जी ?"

अमोलचन्द—क्या कहूं। मैं तो बेजार होगया। जब देखो टेक्स, टेक्स की आवाज सुनाई देती है। सरकारी कानून कायदे तो चैन नहीं लेने देते। चारों तरफ पकडते हैं।

करणदेवी—कल बच्चे स्कूल की फीस भी मांग रहे थे।

अमोल—ठीक है दूँगा। सब मांगनेवाले ही है।

करणदेवी—आप चिड़चिड़े क्यों हो गए हैं ? साल भर से प्रत्येक खर्चा घटाए जा रहे हैं फिर भी आप...... ।

अमोल—क्या खर्चा घटाया ?

करण—देखिए न पहले चौके पर रसोइया अलग था। पानी भरने पांड्या जी थे। अब चाहे तो मजदूरनी भी निकाल दें।

अमोल—अच्छा बाबा ! राम राम के वक्त कलह न करो। पूजा कर लेने दो। ताकि फिर खा पी कर बैल की तरह अपने धंधे में धूत जायं।

अमोल वापिस पूजा में बैठ कर गीता का एक अध्याय पढा। कुछ देर ध्यान पूर्वक पूजा अर्चना की और एक लोटा पानी का तुलसी पर चढाया। सूर्य नारायण को नमस्कार किया और मन्दिर चले गए। वापिस आये तक रसोई तैयार थी भोजन करके पान खाया। कपड़े पहने और कारखाने की कुंजियां लेकर बाहर निकले। देखा कि कोई बद सुगन तो नहीं हो रहे हैं ! थोडी देर खडे रहे और एक दाढी वाले वृद्ध को सामने आते देख, नमस्ते कहकर आगे बढ़ गए।

इधर करणदेवी ने बच्चों से कहा—पिताजी दुकान चले गए हैं अब तुम भी स्कूल जल्दी जाओ। चलो भोजन करलो।

कमल और किशोर दोनों ने भोजन करके स्कूल को जाने की तैयारी की। कपडे पहने और पैरों में जूते डालते हुए कमल ने कहा—माताजी स्कूल की फीस दो अन्यथा मास्टर साहब खफा होंगे।

माताने कहा—फीस तुम्हीं अपने पिता से मांगलो मैं नहीं मांगती।

कमल—अच्छा तो फिर मास्टर साहब को क्या कहें?

करणदेवी—कमल तू भी बड़ा बुद्दू है, अरे कह देना कल लादूंगा।

किशोर—माताजी हमने कल भी उनसे कल कहा था। फिर आज कहे कल तो क्या रोज २ कल।

करणदेवी—अरे तू तो बडा वाचाल है। जा कह देना पिताजी नहीं मिले थे। लेजाना कल फीस कहीं भागी जाती है।

किशोर—अच्छा चलो भाई कल कल करते रहेंगे।

करणदेवी—दुपहरी लेली है न?

किशोर हाथ से दुपहरी को बताते हुए दोनों भाई स्कूल को रवाना हो गए। करणदेवी भोजन को बैठने वाली थी कि यशोदादेवी पडोसन आगई। बोली अभी भोजन हुआ या नहीं।

करणदेवी—अब होगा। आओ आप भी भोजन करो।

यशोदा—मैं तो अभी २ भोजन करके आई हूं। रसोइया आदमियों को परोसता होगा।

करणदेवी—आइए बैठ जाइए। आपसे बातें करती हुई दो कौर ज्यादा खालूंगी।

यशोदा—आजकल सब काम हाथ से ही करती हो?

करणदेवी—हां बहन जबसे ३॥ लाख का घाटा लगा, सब खर्चे कम कर दिए और जोखम का धन्धा करना छोड दिया। अब मामूली कारखाना कर लिया है उस में भी सैकड़ों झगडे हो रहे हैं। घरवालों को न उठते चैन है न बैठते चैन है। टेक्सों के बोझ इतने आकर पड गए हैं कि सहन करना मुश्किल हो गया है रात दिन चिन्ता रहती है। जब देखो कानून टेक्स की चर्चा सुनती रहती हूं।

यशोदा—तो क्या पतिदेव नींद में भी यही बड़बड़ाते हैं?

करण—हां बहन क्या कहूं। करीब करीब ऐसा ही होरहा है।

यशोदा—हां हमारे घर में भी यही चर्चा होती है। नित्य नए टेक्स, नित्य नए क़ानून। अब तो सुनती हूं बाप की जायदाद पूरी बेटे को नहीं मिलेगी। उसमें सरकार भी भागीदार बन जायगी।

करण—देखे बहन क्या २ होता है। हमको तुमको क्या? पुरुषों की सेवा करना और रोटियां खाना। दूसरा काम क्या है?

यशोदा—हमारा काम भी मामूली न समझो। घर ही हम नारियों से है। पुरुष तो मारे २ किधर से किधर फिरते हैं घर को तो हमको ही संभालना पडता है।

करणदेवी और यशोदादेवी दोनों वार्तालाप कर रहे थे। इतने में एक भिखारी ने बाहर से पुकारा—"अम्मा भूखा हूं" करणदेवी ने कहा "लो यह भी गृहस्थियों के लिए टेक्स ही है। सरकार इतने टेक्स जमा करती है परन्तु भिखारियों की अभी व्यवस्था नहीं।"

यह कहती हुई यशोदा अपने घर गई और करणदेवी अपने काम में लगी रही।

(३)

अमोलचंद—मैं कारखाना खोलकर पछता रहा हूं। मुझे कोई फायदा नहीं मैं इसे बंद करना चाहता हूँ।

मैनेजर—किन्तु सेठ साहब क़ानून तो कारखाने को बन्द करने देता नहीं। मजदूर कहते हैं, हम चलाएंगे।

अमोलचन्द—अच्छा चलाने दो। हमको क्या नफा देते हैं? जिम्मेदारी कौन ले रहा है।

मैनेजर—जिम्मेदारी कौन लेगा। मेरी मैनेजरी की तनखा कौन देगा इसका विचार तो अवश्य होना चाहिए।

साथ ही पूंजी लगाना, सब को समय पर वेतन देना आदि बहुत से कर्तव्य हैं।

कुछ ऐसी ही कारखाने संबन्धी वार्तालाप हो रही थी इतने में एक कर्मचारी आकर बोला—मालिक रु. ५ दो मेरी सायकल पकडली गई। मेरा कोई कसूर न था बराबर साइड से आ रहा था। कमबख्त सिपाही ने अपनी कारगुजारी के लिए पकड़ लिया। अब रु. ५) दिए बिना सैकल वापिस नहीं मिलती? मालूम नहीं जुरमाना भी क्या होगा।

अमोल—सरकार जिधर देखो आमदनी बढ़ाती है।

कर्मचारी—क्या कहें सेठ साहब। अब बालबच्चों का पेट काटकर जुर्माना भरना पडेगा। पहले ही महंगाई ने खाकर रक्खा है इस पर फिर भी सताए जाते हैं। क्या भगवान सोगया है। हम गरीबों पर जुल्म होते देखता है।

अमोल—कानून न गरीब को देखता है न अमीर को यह तो प्रत्येक का गला पकडता है। गरीबों को नोचता है तो धन्धे वालों से जबरदस्ती अपने हक छीनता है।

कर्म—अच्छा तो मुझे रु. ५) दिला दो न मुझ पर भी बड़ी आफत आई है। इस महीने में राशन को कम पड जाएंगे। दूर का रास्ता है बिना सैकल समय पर नहीं पहुंच सकता। सेठने रु. ५) की चिट्ठी लिख दी। वह रुपये लेकर भागा नौकरी पर नागा पड गया दूसरा कर्मचारी आया और सेठ से कहा—एक किराएदार रेन कंट्रोल में दाखल हो गया। कहता है किराया कम किया जाय।

सेठ अमोलचन्द—ठीक है यह भी कानून का प्रभाव है। देख लेंगे जो होगा। यह कारवाई वकील को दे दीजिए। इतने में टप्पा लेकर एक चपरासी आया और एक लेटर देकर मैनेजर से दस्तखत लेकर चला गया। टपाल खोलने पर मालूम हुआ कि यह सेलटेक्स की नोटिस हैं। मैनेजर साहब ने सेठ साहब से कहा यह सेलटेक्स की नोटिस है। हम जो भी तैयार माल बेचते हैं, उसका सेलटेक्स ग्राहक से लेकर सरकार को देना चाहिए।

अमोल—इस का भी हिसाब रखना चाहिए क्यों?

मैनेजर—हां रखना होगा। यह तो राज दंड है। करना ही पड़ता है। कानून निकल गया है।

अमोल—हाय रे कानून। यदि न रखे तो?

मैनेजर—तुम्हारी साल भरकी बिक्री देखकर तुम से १॥-) सेकड़ा वसूल कर लेंगे। वह घर से देना पड़ेगा।

अमोल—सेल टेक्स किस २ पर है

मैनेजर—जिस चीज पर है लेना। जिस पर नहीं है नहीं लेना मगर हा अलग २ लेसन लेने पडेंगे।

अमोल—क्यों? उसके भी पैसे देने पड़ेंगे।

मैनेजर—हां सेल टेक्स और बिना सेल टेक्स के माल बेचने के लिए ५०) और ७५) इस प्रकार १२५) वार्षिक भरने पडेंगे।

अमोल—हिसाब भी रखना और लेसन फीस भी भरना। वाह भाई वाह कानून इंकम टेक्स की बात तो समझ में आती है। परन्तु यह क्या! लाद दो और फिर उसका साथ दो।

मैनेजर—सेठ साहब सरकार की बातें सरकार को मालूम। और भी नए नए कानून क्या होंगे मालूम नहीं सेठ अमोलचंद विचार में बैठे थे कि कारखाने में इंटरवेल की घंटी हुई। सेठ साहब के पास मजदूर लोग आना चाहते थे, किन्तु मैनेजर ने कहा—अभी नहीं मिल सकते! तुम को क्या कहना मुझे कहो—क्रमशः कर्मचारियों ने कहना प्रारम्भ किया।

१ कर्मचारी—मंहगाई बहुत तंग कर रही है। कुछ तनखा बढानी चाहिए।

२ बिना बढाए नहीं चलेगा। घर में खाने वाले चार हैं।। कमाने वाला मैं एक हूं।

३ मुझे १०) चाहिए घर में राशन नहीं है।

४ घर का किराया देना है।

५ मेरा बच्चा ४ दिन से बुखार में पड़ा है। दवा के लिए कुछ पैसे कर्ज दो।

मैनेजर—बस भई अब बोलना बन्द कर दो। मेरे सिर में दर्द हो रहा है। रोजाना, मांगों की बौछार होते रहती है।

सब कर्मचारी—क्या करे मालिक, महंगाई बड़ी संता रही है।

मैनेजर—अच्छा भाई तुम्हारी मांगें सेठ साहब के सामने रखता हूं जो जवाब देंगे, आकर बोल दूंगा।

फिर वापिस काम पर चढ़ने की घंटी हुई। कर्मचारी अपने २ काम पर चले गए। सेठ साहब के पास दो नोटिस और आए। एक तो था फेक्टरी लेसन भरने का दूसरा था। पेशेवारी टेक्स का। अमोलचन्द को इन दोनों नोटिसों को देख कर एक हलकी हंसी आई और हृदय पर असर हुआ। फिर आश्चर्य में डूबे हुये १ घंटे तक किसी से न बातें कीं। थोक धन्धे में घाटे नफे से भयभीत होकर मजदूरी का धन्धा किया तो यह सब झंझटें सता रही हैं। अब क्या किया जाय। जो काम करो नफे के पहले सरकार कर मांगती है। मेरे कारखाने को जबरदस्ती फ्याक्टरी बना दिया है। मेरे पास परमन्ट १० ही स्थायी १० ही नौकर हैं। बाकी १०.१५ दूसरे हैं सो मजदूरी पर या कन्ट्रांक्ट से काम करते हैं।

मैनेजर—सेठ साहब जमाना बड़ा तेजी से बदल रहा है। आपको बहुत ही सहनशील बनने की आवश्यकता है। अब आप इस धन्धे से लखपति नहीं बन सकते।

अमोल—यदि लखपति बनने की इच्छा होती तो यह छोटा मजदूरी का धन्धा क्यों करता।

मैनेजर—अब मजदूरी में से मजदूरी निकलना कठिन हो गया है।

अमोल—इसीलिए तो इसको बन्द करना चाहता हूं किन्तु लेबर महकमा अलग तंग करता है तो मजदूर लोग अलग गिड़गिड़ाते हैं और अधिकाधिक मांग करते हैं।

मैनेजर—हां यह ठीक है। यही मजदूर अपना रंग बताने में भी कम न करेंगे। क्यों कि दुनिया की हवा का असर इन पर भी हो सकता है।

अमोल—अच्छा देखेंगे। मैं घर जा रहा हूं। तुम कारखाना देखो।

मैनेजर—बहुत अच्छा।

४

अमोलचंद जिन दिनों दिया, लिया, करता था यानीसट्टा खेलता था। घर में ही ५-७ आदमी टहल बन्दी में रहते थे। घर पर घोड़े बग्गी की सवारी अलग थी और मोटर कार भी घर में कई गाएं पाली जाती। साथ मे सदैव एक आदमी रहता। सेठ साहूकार तथा अमीर उमरावों में भी बड़ा मान था। साल में दो चार वार ब्राह्मण भोजन भी हो जाता। और हर शनिवार को कई प्रकार के दान बंटते गरज जो भी आता खाली न जाता कारण महीना हजारों ही कमाते और हजारों ही खर्चते।

घर में खाने पीने में भी बेहिसाब चलता था। ५.६ मित्र यार यदि साथ में भोजन को न बैठते तो भोजन ही अच्छा मालूम नहीं होता था। फिर मेवाखोरी अलग होती थी। मेवा कलकत्ता बम्बई से उम्दा से उम्दा आता और बड़ी रुचि के साथ आरोगा जाता। कभी २ तो कलकत्ते के रसगुल्ले और मथरा से पेठे भी आते परन्तु अब वह थाट बाट न रहा। अब तो बच्चों को भी खाने को अच्छा नहीं मिलता। जो चौके में बनता है। खा लेना पड़ता है। पहले बनाने वाला रसोइया अलग था परन्तु अब सेठाणीजी पकाती है। यह सब परिस्थिति देखकर घर में एकांत में अमोलचन्द ईश्वर का ध्यान लगाकर बैठ गये और सोंचने लगे कि परिस्थितिका सामना किस प्रकार किया जाय। हे भगवान क्या मनुष्य संसार में अधर्म करके ही अच्छा रह सकता है? मैं जब झूठ बोल कर हजारों कमाता था। तू देखता है अब मैं किस प्रकार कमाना चाहता हूँ। क्या यही तेरा इंनसाफ है कि सत्य-वादियों को भूखा और झूठों को पेट भर कर देता है। किन्तु अब मैं पीछे न लौटूंगा। जिसको दुनिया और कानून ठीक कहेगा उसीको मानूंगा।

ईश्वर प्रार्थना में व्यस्त थे कि करुणादेवी आकर पास बैठ गई। जब वह प्रार्थना से निपट गए तो करुण देवी ने कहा—आप इस प्रकार उदास क्यों रहते हैं। मैं एक धृष्टता पूर्ण वार्ता आपसे करना चाहती हूं यदि क्षमा हो तो।

अमोलचन्द ही कहा—कहो देवी। तुम मेरी अर्धांगिनी हो। तुम्हें मुझे कहने का पूर्ण अधिकार है। जब मैं तुम्हें ब्याह के लाया था तो ४-५ लाख का आसामी था परन्तु भगवान की मर्जी ऐसी हुई कि अब तुम्हें चौके में घंटों अग्नि के सामने तपना पड़ता है।

करणदेवी ने कहा—यह तो मेरा कर्तव्य है कि भोजन बनाऊं और सबको खिलाऊं परन्तु ......।

अमोलचन्द ने कहा—क्यों रुकीं ? कहो ना दिल खोल मैं सुनने को तैयार हूं।

करणदेवी आपने अपना पहले का धन्धा क्यों छोड़ दिया। क्या कारण था ?

अमोलचन्द ने कहा देवी वह धन्धा नैतिकता तथा कानून के विरुद्ध था। लोग मुझे सटोरिया कहते थे। मैं चलते ही २० हजार कमा लेता तो कभी गमा भी देता। अब से एक दम ३॥ लाख रुपया लगा। कसम खा गया हूं कि अब सट्टा न खेलूंगा।

करणदेवी—यह तो ठीक है। मनुष्य को आपत्ति से घबराने की आवश्यकता नहीं। भूखे मरना चाहिए परन्तु नैतिकता नहीं खोनी चाहिए।

दंपति में बातें हो रही थीं कमल और किशोर स्कूल से आए। माता पिता को एक जगह बैठा देख कर कमल ने कहा—पिताजी हमको कुल ५ पुस्तकें चाहिए।

किशोर—कुल १०-११ रुपये का सामान है।

करणदेवी—किशोर तुम अपना पढना बन्द करदो किशोर और कमल दोनों ने पूछा—क्यों माताजी ?

करण—पैसे की तंगी है। पिताजी को तंग करो उधर कारखाने के नौकर जान खाते हैं इधर सरकारी टेक्स वाले चैन नहीं लेने देते। आखिर यह सब कहां से आयगा। व्यापार भी दिन पर दिन मन्दा हो रहा है।

अमोलचंद—देवी तुम ये बातें बच्चों को मत बोलो। उनके तो खेलने कूदने के दिन है। पुस्तकें कल मंगवा दूंगा।

बच्चों को समझा बुझाकर टाल रहे थे इतने में कमल मैनेजर को देखकर पुकारने लगा कि मैनेजर आ गए, मैनेजर आगए।

मैनेजर ने बैठकर एक लिफाफा हाथ में दिया जो कि इन्श्युरंस कम्पनी का एक पत्र था। उस में लिखा था साल भर जो नौकरों को वेतन दिया जाता है उसका ।॥) सैकड़ा बांधना पड़ेगा।

अमोलचन्द—यानी यह भी एक प्रकार का टेक्स ही है

मैनेजर—जी हां !

अमोल—अच्छाजी और कौनसे २ टेक्स चुकाने पड़ेंगे, एकदम मालूम हो तो अच्छा है। जैसे २ तुम टेक्स सम्बन्धी सूचना लाते हो दिल पर चोट सी होती है।

मैनेजर—बात ठीक है परन्तु मैं भी क्या बता सकता हूं कि और कौनसे २ टेक्स आने वाले हैं।

अमोल—हां जी ठीक ही कहते हो। यह तो शायद वकील लोग भी नहीं बता सकेंगे। देख लेंगे मैं तो बड़ी हिम्मत से काम लूंगा परन्तु अभी कितने टेक्स बाकी है यह सोच रहा हूं।

मैनेजर—अगर आप कहें तो वकील से पूछ आऊं।

अमोल—जाने दो देखा जायगा। जब तक टेक्स दे सकूंगा दूंगा जिस रोज टेक्स देने को न मिलेगा आपोआप रुक जायगा।

करणदेवी—मालूम नहीं सरकार को इतनी क्या भूख है जो टेक्स पर टेक्स लगा रखी है। इसका अन्त भी कहीं है या नहीं ?

अमोल—अच्छा जाओ मैनेजर जब तक कारखाना संभले संभालो। अन्यथा बन्द करके दूसरा कोई काम करेंगे। ईश्वर सबको भूखा उठा देता है किन्तु सुलाता नहीं। इस समय देश में टेक्स बाजी चल रही है। देखो यह बाजी हारी जाती है या जीती जाती है। यह तो समय बताएगा।

मैनेजर—अच्छा मैं जाता हूं नमस्ते।

अमोल—अच्छा नमस्ते।

५

सेठ अमोलचन्द की उदासी देखकर मैनेजर भी सुस्त हो गया। वह विचार में लगा कि सेठ साहब की चिन्ता किस तरह मिटाई जाय। आपत्ति देखकर भाग जाना यह कायरों का काम है। टेक्सों के नोटिस पर नोटिस आ रहे थे और मैनेजर उन्हें सेठ साहब के सम्मुख विचारार्थ लेजा रहे थे। इंकम टैक्स का नोटिस आया उसका भी जवाब दिया गया। मैनेजर को रोजाना वकील के पास जाना पड़ता था। और नित्य नए कानून के सम्बन्ध में पूछ ताछ करनी पड़ती थी। मैनेजर भी बेजार हो गया था। नित्य नए सरकारी झगड़े आते और नित्य घंटों विचार करना पड़ता। एक तिहाई शक्ति इस प्रकार नष्ट होती। कारखाने में दिल लगाकर काम ही नहं होता था। ग्राहकों से अच्छी तरह वार्तालाप न करो तो दूसरा ग्राहक भटकता ही नहीं। ग्राहक की तो हर बार खातर तवाजो करनी पड़ती है। जरा बेदिली बताई कि ग्राहक पलटा। सेठ साहब तो चिन्ताओं के चिता में जल भुन रहे थे। वे उसमें से निकल जाने का मार्ग ढूंढ रहे थे परन्तु उन्हें मार्ग न मिलता।

मैनेजर ने कहा--सेठ साहब आपने कारखाने को आना क्यों बंद कर दिया? इस तरह कार्य किस प्रकार चलेगा?

अमोल—मुझे कारखाना काटने आ रहा है। अब मैं कारखाने में आकर क्या करूं? अब तुम्हीं चलाओ। और कुछ खाने को हम को भी दो।

करणदेवी--मैनेजर साहब सेठ साहब को रात भर बुखार था। और बुखार में बड़बड़ा रहे थे। मालूम नहीं इन्हें क्या हो गया है टेक्स २ चिल्लाते रहते हैं।

मैनेजर—हां कुछ ऐसी बात है। सेठ साहब घबरा गए हैं। परन्तु घबराने की जरूरत नहीं। टैक्स खाने पीने से बचने पर देंगे। अन्यथा जो कुछ होगा देखा जायगा।

करणदेवी—मैनेजर साहब जरा सेठ साहब को इसी प्रकार से हिम्मत दो। व्यर्थ की चिन्ता क्यों? चिन्ता से तो चतुराई घटती है।

अमोलचन्द—तुमको क्या मालूम कि इस कारखाने के पीछे कितना कर्जदार हो गया हूं। फिर भी मुझे कारखाना खाने को दौड रहा है।

मैनेजर—सेठ साहब आप कुछ भी दिल पर असर न लें जो कुछ होगा हो जायगा। कानून से कानून कटता है। बस हम को हिम्मत से कार्य करना चाहिए। कानून चतुराई की परीक्षा लेता है। जब हम परीक्षा में बैठे ही हैं तो हमें उत्तीर्ण होने के प्रयत्न करने चाहिए।

अमोल--क्या इस महीने की तनखा बट गई?

मैनेजर--नहीं बटी है। मन्दी चल रही है। वर्कर लोग भी बहुत धैर्यता धारण किए हुए....

अमोल--मैनेजर माल बेच कर उनकी तनखा तो चुका दो।

मैनेजर—अच्छी बात है परन्तु कोई ग्राहक तो आए।

अमोल--वर्कर लोग गडबड़ करते होंगे।

मैनेजर—सेठ साहब हमारे वर्कर मूर्ख नहीं हैं वे भी समझदारी से काम लेते हैं।

अमोल—बेचारे वे तो बहुत सीधे हैं परन्तु सरकार उनकी आदत को भी बिगाड़ रही हैं। सब एक खियाल के तो होते नहीं। बाज वर्कर शरारत पसंद भी निकल जाते हैं।

मैनेजर—किन्तु उसको भी कारखाने की असली हालत बताने पर समझ जाता है। हम एक परिवार के सरीखे रहते थे और रहेंगे। यह तो थोड़ी-सी उलटी हवा तूफान बनकर चल रही है। समय इसे मिटा देगा।

अमोल—अच्छा तो हमारे वर्कर हमारे माफक है?

मैनेजर—जी हां।

अमोल--कोई यूनियन वाले उनको सिखा पढ़ा तो रहे थे कि तुम तो यह मांगो और वह मांगो।

मैनेजर—परन्तु हमारे वर्कर उनको वापिस पढा सकते हैं। क्योंकि वे बहुत ठोकरें खाकर आए हुए हैं। यदि नए नवाड़े वर्कर हमारे पास रहते तो शायद कुछ नयापन बताते परन्तु वे कई कारखानों की खाक छान आए हैं। वे ऐसे वैसे फन्दे में नहीं जाते। वे गिड़गिड़ाना जानते हैं,

काना नहीं। वे स्वयं कुछ अपने बल पर बोलना चाहते हैं किन्तु दूसरों के बल पर नहीं।

अमोलचंद—(खुश होकर) फिर तो ईश्वर का लाख २ धन्यवाद है कि हमारे साथी सब समझदार हैं।

६

वर्कर युनियन का सेक्रेटरी वर्करों में प्रचार कर रहा था कि तुम अपनी मांगें अधिकाधिक मालिकों के सामने रखें, तो कम से कम मंजूर होंगी। यदि वह इस तरह न माने तो लेबर आफिस में दरख्वास्त दे दो। वहां यदि निर्णय न होगा तो इंडस्ट्रियल कोर्ट में जायगा और वहां तो मालिकों को झुकना पड़ेगा और हमारी मांगों को स्वीकार करना पड़ेगा। एक कर्मचारी ने सेक्रेटरी से कहा—"भाई इस में शक नहीं तुम हमारे हमदर्द हैं परन्तु मालिक के विरुद्ध होकर हम पनप सकेंगे इस में तो मुझे शक है। मालिक मालिक है हमारी रोजी का जरिया है।

सेक्रेटरी ने एक प्रकार की हंसी हंसकर कहा—भाई तुम भोले हो हमारा जरिया वह नहीं है उनका जरिया हम है। हम यदि काम न करें तो कारखाना ही सारा ठप हो जाय। कर्मचारी ने कहा—फिर भी एक दूसरे के संबन्ध से ही कार्य चलता है। काम करते हैं तब तो उनके ज़रिए से मिलता है।

सेक्रेटरी—बसजी तुम बिल्कुल पुराने खियाल के वर्कर हो। दुनिया किधर जा रही है। देखो, कितनी हड़तालों पर हड़तालें हो रहीं हैं।

वर्कर—परन्तु परिणाम क्या हो रहा है? बस महाशय जी हम को न भड़काएं। अपना उपदेश अपने पास रखो। हम कुछ मांगेंगे मालिक से मांगेंगे। देगा तो लेंगे अन्यथा सूखे टुकड़ों पर भी गुजर बसर कर लेंगे, परन्तु तुम्हारे फंदे में न आएंगे।

दोनों में बहस होरही थी कि इतने में ३-४ वर्कर और आगए। उनके भी सेक्रेटरी साहब ने नीचे ऊपर किया, किन्तु ये भी टस से मस न हुए। एक वर्कर ने कहा—हमारा मालिक देवता आदमी है, तनखा कम रही वो चिन्ता नहीं परन्तु हम नौकरी तो उन्हीं की करेंगे।

दूसरे ने कहा—"वह तो मालिक की तरह पेश ही नहीं आते वे तो मालूम होते हैं हमारे बड़े भाई या पिता हैं। कभी किसी समय किसी तरह की सख्ती न की। (सेक्रेटरी को बताकर) ऐसे लोग आकर सुलगा देते हैं जिससे मालिक मजदूर दोनों परेशान होते हैं। तीसरे ने कहा—"इनका क्या वे तो एक बार मालिक के विरुद्ध कर देते हैं फिर मुंह तक नहीं दिखाते। हम को काम करने पर सब कुछ मिल सकता है। विरोध से कुछ नहीं प्राप्त होता। चौथे ने कहा—भाई वर्करों के सेक्रेटरी हम तुम्हारा शुक्रिया अदा करते हैं परन्तु आप यहां से चले जायं। हम और हैं हमारे खियालात अलग हैं। आप के खियालात अलग हैं। आप अधिक होशियार हैं हम दीवाने पुराने खियाल के। नौकरी पर जान देने वाले। कृपाकर के आपका उपदेश आप के पास रहने दीजिए हम बुरे या भले जैसे कुछ हैं; हैं। आप हम से न तो मासिक चन्दा पा सकते हैं न आपका मेम्बर बना सकते हैं। हमको हमारे हाल में मस्त रहने दो, क्यों परेशान करते हैं?

इन वर्करों की वार्तालाप सुनकर तो युनियन का सेक्रेटरी खिज गया। और कहने लगा—तुम कुछ नहीं समझते सब बैल हो?

मुखिया वर्कर ने कहा—ठीक है ठीक है हम बैल हैं। राबेंगे तब ही तो मिलेगा आपको मिलता होगा बिला मेहनत। आप बैल नहीं घोड़े होंगे?

सब वर्कर—या गधे होंगे। भाई साहब आप यहां से चले जायं।

सेक्रेटरी बदली हुई तिवरियों को देखकर पीछे देखते हुए यहां से दो और दो चार हो गया। उधर से मैनेजर आया कहा- क्या गड़बड़ है जी?

वर्कर—कुछ नहीं मैनेजर साहब! एक बेवकूफ आया था हमारे कारखाने की परिस्थिति भी नहीं समझता और बहकाने लग गया। क्या इनको कोई पूछने वाला नहीं है। मालूम नहीं इस पेशे में इन्हें क्या मिल जाता है। सिवाय चिनगारी डालने के दूसरी बात नहीं।

मैनेजर—यदि नेतागिरी की भूख ऐसी होती है। बिना इस प्रकार बहकाए कुछ नहीं चलता। आपको हमदर्दी

करेंगे तब तो उन्हें आप नेता बनायेंगे बाद परिणाम चाहे कुछ भी हो अरे हां, सेठ साहब आ रहे हैं ।

सेठ साहब का आना था कि वर्करों ने उठ कर नमस्ते किया। सेठ ने कहा भाई तुम मेरा आना अनावश्यक आदर न करें मैं भी एक तुमसा ही मनुष्य हूँ।

१ वर्कर-फिर भी हमारे मालिक हैं । हमारी सभ्यता है कि तुम्हारा मान करें । सेठजी—धन्य हो तुम फिर भी भारत का नाम रखा। सब धर्मों के लोग अदब कायदे को मानते आए हैं परन्तु कुछ ही वर्षों से चन्द लोग न मालूम किस देश के विचारों को लाकर कारखानों के परिवारोंमें संघर्ष पैदा कर देते हैं।

हमारे सेठ साहब कुछ भी तनखा दे परन्तु इनका बरताव हमारे हृदय को फुला देता है ।

सेठजी—भाई कर्मचारियों यह छोटा सा कारखाना आप लोगों के सुपुर्द है। इस में काम करके तुम खाओ और मुझे भी कुछ दो। मैं अनावश्यक लाभ नहीं चाहता। मैं चाहता हूँ कुशल व्यवहार और प्रेम।

सब वर्कर-तो क्या आप का विचार अब कारखाने को बन्द करने का नहीं है ?

सेठजी-हां नहीं है। सरकार के बेजा दखल अन्दाजी से तो मेरा विचार कारखाना बन्द करने का हो गया था, परन्तु आप समझदार वर्करों को पाकर मेरा खियाल ठीक हो गया। अब हमारा कारखाना सब कारखानों के बीच उदाहरण स्वरूप रहेगा। हम में कोई लड़ाई झगड़ा या संघर्ष नहीं है।

मैनेजर—मनुष्य वही है जो एक दूसरे को समझें। कानून कायदे नैतिकता के सामने कुछ नहीं हैं। यदि हममें नैतिक बल है तो ऐसे कानून को कचरे की टोकरी में डाल सकते हैं। संसार में त्याग का महत्व है। जब हम त्याग करते हैं तो सामने वाला भी त्याग करने को तैयार हो जाता है। कानून बदकारों के लिए है। सरकारी कानून से दिलका कानून सदैव बढा चढा रहता।

सब वर्कर—कानून का कानून खून करता है।

सेठ-हमारा कानून सत्य, न्याय और धर्म है।

—:*:—

सरकार को लेबर महकमा उठा देना चाहिए

—बालकृष्ण लाहोटी 'कृष्ण', हैदराबाद

गणराज्य का जमाना है। स्वराज्य का स्वर्ण काल है। प्रत्येक मामूली से मामूली आदमी को अपने विचार जनता के सामने रखने का अधिकार है अतः मैं अपना २५-३० वर्षों के अनुभवों को दृष्टि में रखकर कुछ विचार प्रकट कर रहा हूं। मैं न मालिक हूं, न नौकर हूं, एक कम्पनी का मैनेजिंग डायरेक्टर हूं। मैंने इस में मालिक, मजदूर तथा तत्सम्बन्धी सरकार पर भी टीका की है। मैं यह जानता हूं कि मालिक नेक बनेंगे तो नौकर भी नेक बनेंगे और नौकर नेक बनेंगे तो मालिक नेक बनेंगे। सरकार तब हावी होती है जब कोई आपस में तनाज़ा होता है।

इस समय भी पंच वर्षीय योजना के कारण विविध प्रकार के टेक्स लगे हुए हैं जिस से व्यापारी मार परेशान हैं। वह अपने आपको इज्जत से गुजर बसर करना कठिन समझ रहे हैं। जिधर देखो आर्थिक संकट दबोच रहा है। महंगाई कम नहीं होती बल्कि बाज वस्तुएं तो और तेज हो गई हैं।

सरकार का नाज को कंट्रोल में रखने का कारण ही ब्लाक मार्केटिंग करना तथा बेजा नफा उठाना है। जिसका नतीजा आम जनता को भोगना पड रहा है। रेशनिंग आफिस या उसके कर्मचारी अलानिया ३०) की लेवी लेकर ४०) को बेचते हैं। जो महज़ चन्द ग्रेज्युएटों को पालने के सिवा कुछ नहीं। व्यापारी रुपया आठ आने के फरक से बेचते थे क्यों कि उन को खर्च बहुत कम आता था। अब सरकार को हजारों आदमियों को रखकर यह कार्य संचालन करना पडता है। खैर यह दूसरी बात है। विषयान्तर जाना व्यर्थ है। मेरा तात्पर्य है महकमों की उपयोगिता पर प्रकाश डालना। यदि मालिक लालची न होते तो लेबर का महकमा ही नहीं होता।

लेबर का महकमा एक फिजूल खर्ची है। यह नौकरों–मालिकों के बीच द्वेष उत्पन्न करने के सिवाय कुछ नहीं करता। सरकार यों तो बेरोजगारी मिटाने का सोचती है परन्तु लेबर का महकमा बेरोजगारी बढ़ाने का कार्य करता है। देश का उत्पादन बढ़ने के स्थान पर कम हो रहा है। देश में इंडिस्ट्री बढ़ने के स्थान पर घट रही है। हर धन्धेवाला मायूस हो रहा है। कई इंडस्ट्रीज खत्म हो रही हैं। देखते-देखते हैदराबाद का बटन उद्योग खत्म हो गया। इस में निकट ५–७ हजार मजदूर काम करते थे, परन्तु लेबर आन्दोलन और बीच में सरकार का दखल होने से इस समय ५००–७०० वर्कर भी बटन फ्याक्टरियों में काम नहीं करते। इधर परसों असेम्बली में भी जिक्र आया था कि ५०–६० कारखाने बन्द हो गए। यह है लेबर आन्दोलन का परिणाम।

इधर फ्याक्टरी एक्ट भी व्यापारियों को परेशान करता है और लेबर डिपार्टमेंट लेबर वर्ग को सरपर चढाया हुआ है। यदि किसी एक मजदूर ने दी तो किसी किसम की झूठी शिकायत भी मालिक के विरुद्ध कर लेबर आफिसर मालिक को तलब करता है, चाहे कितना ही काम खराब क्यों न हो; लेबर आफिसर साहब के पास हाज़िर होना पड़ता है, जैसे कुछ सरकार का गुनाह किया है फिर मालिक पर डांट दपट होती है, मालिक नाराज होता है। बिच्छू का डंक लगने से आदमी तड़पता है, मालिक कर्मचारी के विरुद्ध होकर उसको निकालने की फिक्र में रहता है। मजदूर काम नहीं करता। फैक्टरी में आकर घंटों मंतक में गुजारता हुआ, ८ घंटे होते ही नमस्ते करता है। मालिक का समय धन्धे में सोचने के स्थान पर नौकरों के छिद्र देखने में लगता है। नौकरों का भी ध्यान काम में न रहकर उसी आन्दोलन में रहता है और एक संघर्ष होता है। नौकर को अपने काम पर घमंड रहता है तो मालिक को अपने पैसे पर।

लेबर का महकमा कहता है कि तुम्हारा कारखाना चले या न चले तुम्हें कुछ मिलता है या नहीं? परन्तु मज़दूर को तो निश्चित तनखा, अलौंस, भत्ता आदि सब कुछ दे दो। बेचारा मालिक जब नहीं दे सकता तो लाचार अपने काम को समेट लेता है और दूसरा कार्य करने लगता है।

मालिक चाहे २४ घंटे मरे, परन्तु मजदूर ८ घंटे भी बराबर काम नहीं कर सकते मालिक १ दिन का चैन न ले परन्तु मजदूर को सालभर में रविवार त्यौहार बीमारी आदि २ मिलाकर करीब साल में ४–५ मास छुट्टियांचाहिए। बोनस का तकाजा अलग रहता है। सारांश कारखानों की दशा शोचनीय हो गई है। व्यापार घट रहा है मजदूरी बढ़ रही है। इधर मजदूरों की मांगें दिन-दिन बढ़ रही हैं और उधर व्यापार दिन-दिन घट रहा है।

पहले यानी ५–६ वर्ष पूर्व लेबर का महकमा नहीं था। तब मालिक-नौकरों का कारोबार बड़े अच्छे ढंग से प्रेम-पूर्वक चलता था। लेबर खुद अपना आप हित अहित सोचता था। उसको जहां और जैसे दो पैसे अधिक मिलते थे कार्य करता था। कई नौकर वर्षों टिककर ईमानदारी से कार्य करके लेबर कानून से बहुत कुछ अधिक पा जाते थे। अब भी ऐसे नौकर मौजूद हैं जो मालिक को लखपति बनाकर खुश होते हैं। मालिक भी नौकर को मालिक समझता हुआ उनके अधीन रहता है यह है हमारी सभ्यता। परंतु विदेशी सभ्यता की नकल करके हमारी सरकार लेबर अफिसरों द्वारा देश का भला करना चाहती है यह कभी न होगा।

आश्चर्य है कि हमारे ही कई भाई विदेशी शासन को अच्छा बताने लगे हैं, यह क्यों? वैसे ही परतन्त्रता के जमाने में स्वतंत्रता थी परन्तु आजकल स्वतंत्रता के जमाने में परतन्त्रता हो रही है। मालिक जिसको चाहे रख सकता था, जिसको चाहे निकाल सकता था और नौकर भी जहां कहीं पैसे ज्यादा मिलते, वहां जाकर नौकरी या मजदूरी करता था। कांट्राक्ट से भी काम लेता था, परन्तु लेबर का कानून कहता है कि फ़्याक्टरी में नौकर पांव रखते ही वह मजदूरी पाने का हकदार हो जाता है, जिसे लेबर आफिसर तय करता है। हजारों मजदूर बेकार फिरें परन्तु कम दाम में काम न करें। इस तरह उत्पादन महंगा हो कर दूसरे देशों का मुकाबिला भी नहीं हो सकता। जापान की वस्तुएं क्यों सस्ती पड़ती हैं? इस पर सरकार को विचार करना चाहिए।

३-४ साल के पहले मजदूरों की जो परिस्थिति थी, आज नहीं है। उन दिनों जिस मालिक ने दो रुपए ज्यादा दिए नौकर बिना सूचना पांच पचास या सेकड़ों रुपये कर्जा रखता हुआ, धोखा देकर चला जाता था। शरीफ नौकर हिसाब करके भी बोल बता कर जाते और मालिक हाथ मसलते ही रह जाता था। क्योंकि उस जमाने में काम अधिक रहता था कारीगर कम मिलते थे। आज कारीगर अधिक पैदा हो गए हैं और काम कम हो रहा है। पहले मालिक कारीगरों को नहीं छोड़ते थे बल्कि कई बंधनों पर बांधकर रखते परन्तु फिर भी मजदूर भटकते। अब उसके विरुद्ध बात हो गई है। अब मजदूर उल्टे मालिक के गले पड़ते हैं। अपने रहने का हक जतलाते हैं। पहले मजदूर बात बात पर तन जाता था और निकल जाने की धमकी देता, आज जमे रहने का अधिकार बताता है। यह क्या तमाशा है। इस लिए ऐसी बातों में यानी मालिक-मजदूरों के मामले में सरकार दखल देकर मालूम नहीं कौनसा भला करने वाली है। इस तरह तो लेबर महकमा न तो मजदूरों का भला कर सकता है न मालिकों का ही।

यदि लेबर कानून पर मालिक-मजदूर चलें तो एक दिन भी नहीं चल सकते नौकर दिन में कई बार कसूर करते रहते हैं, उसके हाथ से नुकसान भी हो जाता है, यदि मालिक कानून से चले तो आधी तनखा घर जाना मुश्किल होजायगा। बस कानून बना दिया गया कि मजदूर छः मास लगातार काम करने पर कारखाने का बहुत कुछ हकदार हो जाता है। मालिक लोग ६ मास एकरार से नए नौकर रखने लगे। जो मालिक दिलसे तनखा बढ़ाता था या किसी तरह कुछ देता था अब वह बात बाकी नहीं रही। आज नौकर या मजदूर मालिक के सामने तन कर बातें करता है मालिक को कुछ नहीं समझता, क्यों कि लेबर अफिसर उसकी बेजा तौर पर तरफदारी करता है। मालिक को अब तो काम करने के काबिल भी न रखा गया। इसके परिणाम अच्छे नहीं निकलते।

फिर तारीफ यह है कि कोई भलती ही यूनियन किसी कारखाने में जाती है और १-२ आदमियों को मेम्बर बनाकर सारे वर्करों का दावा करती है। यदि सरकार वास्तव में न्याय करना चाहती है तो कारखाने के

कर्मचारियों की यूनियन को माने, भलती यूनियन को क्यों मानती है ? यदि किसी कारखाने की मजदूर यूनियन नहीं है तो उस पर ध्यान न दें। यदि सच्ची और अच्छी यूनियन है तो अपने मेम्बरों को ही क्यों राय नहीं देती कि अमुक तनखा से कम नौकर न हों। बस खत्म, परन्तु नौकर हो जाने के बाद उसको बहकाया जाता है यह यह क्या तमाशा है ! यूनियन अपने मेम्बरों को निश्चित तनखा अलौंस आदि मिले बिना नौकरी न करने की हिदायत क्यों नहीं देतीं। इस प्रकार यदि उनकी माँग सच्ची होगी तो मालिक लोग झुक कर यूनियन के पास जाएंगे। यों खामखा सरकार के कानून से बेजा फायदा उठाना व्यर्थ है। यह ज्यादा दिन चलने वाली नहीं है। पेशा आज कल की रजिस्टर्ड यूनियन का हो गया है कि जमे जमाए कारखाने में उथल पुथल करके अपना उल्लू सीधा करे। न मजदूरों को चैन से रहने देना न मालिकों को आराम से जीने देना। सरकार भी ऐसी बातों पर ध्यान नहीं देती कि कौन किधर जा रहा है। हड़ताल की धमकी देते हैं फिर रोक देते हैं। फिर हड़ताल पर जाते हैं। जब टट्टू नहीं चलता, सीधे हो जाते हैं। देश में कितनी हड़तालें हुईं और असफलता से समाप्त हो गईं। जब हड़ताल से काम न चला तो दूसरी चाल अख्त्यार करली।

सरकारने लेबर ट्रिब्युनल स्थापित किया है और वह समझती है जिस प्रकार सरकारी तनखाएं अलौंस भत्ते ग्रेच्युएटी पेंशन मिले, पैसे प्रत्येक कारखाने से मिलें; यह असंभव है। सरकार जो तनखाएं अपने कर्मचारियों को को देती है उतना मासिक बहुत से मालिकों को भी नहीं पड़ता। आज कल तो अधिकांश कारखाने समय पर वेतन भी नहीं बाट सकते। इस हालत में लेबर महकमे को सीमित अधिकार देना चाहिए या लेबर महकमे को उठा देना चाहिए। कम से कम नौकर मालिक राजी हैं तो उसमें दखल नहीं देना चाहिए।

लेबरों का कहना है कि हमारे खून पसीने से कारखाने बढे हैं परन्तु उसमें कुछ संचालकों का भी भाग है। वह सारा भार बोझ उठाकर कार्य करता है।

उसके सामने कितनी कठिनाइयां आती हैं। इसका अन्यथा एक बार सब भी सरकार को विचार करना चाहिए कारखानों को अपने कब्जे में रख कर चलाना चाहिए। मैं एक कारखाने के संचालक की हैसियत से कहता हूं कि कारखानों का राष्ट्रीयकरण करके संचालक को भी वेतनधारी कर देना चाहिए या समय को देखकर आवश्यक लेबर आफिस को उठा देना चाहिए। यदि मामूली मामूली बात पर संचालकों को तंग किया जायगा तो देशोन्नत्ति होने के स्थान पर देश की अवनति होने के साथ साथ मजदूरों को भी परेशानी होगी। बेकारी बढेगी अतः जिसको जो किस्मत का मिलता है मिलने देना चाहिए और मालिक मजदूर को स्वतंत्रता दे देनी चाहिए। यदि मालिक मजदूर को स्वतंत्रता को नहीं दी जायगी तो उद्योग धंधों सफल होना कठिन हो जायगा। सरकार यदि सच्चे अर्थों में बेकारी मिटाना चाहती है तो ऐसे खिलवाड न करें।

इधर रकम का ब्याज बढ रहा है उधर सरकार बात २ पर विविध टेक्सों से चूस रही है। कई प्रकार के कर भारों से व्यापारियों को दबा रही है। सरकार की व्यवस्था ही कुछ ऐसी चल रही है कि बडे व्यापारी बैठे २ लाखों रुपये कमा लेते हैं और छोटे व्यापारी मर रहे हैं। ब्लाक मार्केटिंग और घूसखोरी तो दरारों पर दरारें डाल रही हैं।

हमारे देश के नेता इस ओर ध्यान दें और उद्योग? पतियों को भी चाहिए कि संघटना द्वारा इस लेबर आन्दोलन का रूप बदलवाने के लिए सरकार का ध्यान आकर्षित करें। यह लेख तो क्या ? नक्कारखाने में तूती की आवाज है। यदि सरकार लाखों बेरोजगारों सेके लिए कुछ न करके रोजी पर लगे हुए लगों के पीछे पडेगी तो लाभ के स्थान पर हानि होगी। हां फायदा होने पर मालिकों को तंग किया जा सकता है। मालक ही घाटे में है और मनमानी नादर शाही हुक्म छोडना सर्वथा अनुचित है। ये मेरे व्यक्तिगत विचार हैं।

धोखे की टट्टी

—चतुर्वेदी श्रीराम शर्मा

हैदराबाद राज्य हिन्दी प्रचार सभा की कुछ पुस्तकों का प्रचार अच्छा हुआ क्योंकि वे उनकी निजी परीक्षाओं के अतिरिक्त सरकारी पाठ्यक्रम में भी स्वीकृत हुईं। सभा के प्रदीप जब घर-घर में पहुँच गये तो व्यापारी सभा को अपनी बिक्री बढ़ाने के लिए नये उपाय खोजने पड़े, और इसीलिए सभा को एक नयी धोखे की टट्टी खड़ा करना आवश्यक हो गया।

सभा के प्रदीपों के प्रचार के आंकड़े नीचे दिये जा रहे हैं।

हिन्दी प्रदीप भाग २ — २०,००० नवंबर १९५०
— २०,००० जुलाई १९५२
हिन्दी प्रदीप भाग ३ — २०,००० प्रथम संस्करण
— २२,००० द्वितीय ,,
१५-१-५२

हिन्दी-प्रेमी परिवारों की संख्या भी राज्य में लगभग इतनी ही होगी--इसलिए सभा ने अनुमान लगा लिया कि अब उनके प्रदीप घर-घर में प्रकाश भर चुके हैं और उनकी बिक्री से सभा का आर्थिक संकट अब और अधिक दूर न हो सकेगा। परिणाम-स्वरूप सभा को अपने प्रदीपों का नाम बदल देना पड़ा। अब वह पुरानी मदिरा नयी बोतलों में भर-भर कर हमारे सामने उपस्थित की गयी है। प्रदीप अन्दर से तो प्रदीप ही हैं परन्तु उनका नाम अब प्रदीप नहीं रहा और दाम भी अब पहले जैसा सस्ता (!) नहीं रहा। मेरा मतलब यह नहीं है कि पहले वह पुस्तकें कुछ सस्ती बिकतीं थी, अब कुछ महंगी हो गयी हैं। सभा के प्रकाशनों की कीमतें तो सदैव ही मनमानी रखी जाती हैं, लेकिन इस बार प्रदीप की काया-पलट होने से दामों में ३३०/० वृद्धि और भी संभव हो सकी है।

इस वर्ष जो सभा के नये प्रकाशन सरकारी परीक्षाओं में स्वीकृत हुए हैं, उनका नाम सभाने "हिन्दी-बोध" रखा है। आज हमें यही देखना है कि इस नये नाम के द्वारा सभा ने किस सीमा तक जनता को, सरकार को और विद्यार्थियों को धोखा देकर अपना उल्लू सीधा किया है। हम अपनी बात को प्रमाणित करने के लिए सभा के 'प्रदीप' और 'बोध' भाग १ व २ की विस्तृत तुलना करेंगे ताकि हम अपनी बात जन-साधारण को भली भांति समझा सकें। पहले हिन्दी-प्रदीप भाग १ को लीजिए। इस में पाठों की संख्या १५ है, पृ. सं. २७ है और मूल्य ६ आना है। अब इसी के नवीन रूप हिन्दी बोध भाग १ को देखिए। इस में पाठों की संख्या १६ है। पृ० सं० ४५ है और मूल्य ८ आना है। पाठों के शीर्षक देखने से इस परिवर्तन का रहस्य बिल्कुल उधर जायगा।

हिन्दी प्रदीप भाग १	हिन्दी-बोध भाग १
१. जय भारत	१. वीर सिपाही
२. स्वच्छता	२. स्वच्छता
३. रुपया	३. रुपया
४. कमल	४. कमल
५. अमरूद	५. अमरूद
६. कुआँ	६. कुआँ
७. केला	७. केला
८. फूल	८. फूल
९. शेर और बिल्ली	९. शेर बिल्ली
१०. लट्टू	१०. लट्टू
११. गोलकुण्डा	११. गोलकुण्डा
१२. छूमन्तर	१२. घड़ी
	१३. छूमन्तर
१३. अंगूर और लोमड़ी	१४. अंगूर और लोमड़ी
१४. वार	१५. सीताफल
	१६. वार
	१७. हैदराबाद में दशहरा

१५. बाग में चलें	१८. बाग में चलें
	१९. पशुओं की बोली

इस प्रकार यदि हम ध्यानपूर्वक देखें तो पता चलेगा कि हिन्दी-प्रदीप का "जय-भारत" "वीर-सिपाही" में बदल गया है। और 'घड़ी', 'सीताफल', 'हैदराबाद में दशहरा' और 'पशुओं की बोली' ये नये पाठ इस में जोड़े गए हैं। वास्तव में यह 'हिन्दी-प्रदीप' का ही परिवर्द्धित और अत्यंत ही नाम मात्र को संशोधित संस्करण है, मगर सभा ने इसी को 'हिन्दी-बोध' ऐसा नया नाम दिया है।

यदि इसी प्रकार सभा के हिन्दी-बोध भाग २ और हिन्दी प्रदीप भाग २ की तुलना की जाए, तो हमारे कथन की सत्यता में पाठक का विश्वास बहुत अधिक बढ़ जाएगा। हिन्दी प्रदीप भाग २ में १६ पाठ थे—पृ० सं० ५६ थी और मूल्य आठ आना था। हिन्दी-बोध भाग २ में पाठों की संख्या २१ है, पृ० सं० ६८ है और पुस्तक का मूल्य १२ आना है। मूल्य में ५० प्रतिशत वृद्धि अच्छे व्यापार के लिए कितनी आवश्यक है, सभा के वर्तमान संचालक इसे भली भांति समझते हैं—अतएव पुराने माल पर नया आवरण डाल कर वह उसे नये रूप में बाज़ार में ला सकते हैं। हिन्दी-बोध भाग दो और हिन्दी-प्रदीप भाग २ में क्या अन्तर है—वह आप को दोनों के शीर्षक देखने से ज्ञात हो सकेगा।

हिन्दी-प्रदीप भाग २	हिन्दी बोध भाग २
१. नया दिन	१. नया दिन
२. ॠतु	२. ॠतु
३. गोपाल	३. गोपाल
	४. धत्तेरेकी धत्तेरेकी
	५. यही चाहिए—यही चाहिए
४. शहर	६. शहर
५. मेरा घर	७. मेरा घर
६. कबूतर की चतुराई	८. कबूतर की चतुराई
७. भाई—बहन	९. भाई—बहन
८. किसान	१०. किसान
	११. अपना काम करो
९. श्रवण कुमार	१२. श्रवण कुमार
१०. मीरा	१३. मीरा
११. कौए का गाना	१४. कव्वे का गाना
१२. नाम्री	१५. नाम्री
	१६. दांतों की सफाई
१३. युवक की वीरता	१७. युवक की वीरता
१४. पुस्तक	१८. पुस्तक
१५. बापू और बच्चा	१९. बापू और बच्चा
१६. मेरा घर	२०. मेरा घर
	२१. डाकिया

'हिन्दी-बोध' भाग २ में ५ पाठ नये जोडे गए हैं—"धत्तेरेकी", "यही चाहिए", "अपना काम करो", "दांतों की सफाई" और "डाकिया"। "कौए" को कव्वे बनाकर जो संस्कार किया गया है, वह क्यों आवश्यक माना गया—यह समझना कठिन है।

"दक्षिण-भारती" के पिछले अंकों में हम सभा को अपने इन प्रकाशनों में परिवर्तन और परिवर्द्धन की नेक सलाह लगातार देते रहे हैं मगर सभा ने उनके प्रति वैसी ही उपेक्षा दिखलाई है जैसे साम्राज्यवादी सर सैम्युअल होर ने भारत के देश-व्यापी राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रति दिखलाई थी। उन्होंने कह दिया था—"Let the dogs bark, our carvan passes on"—"कुत्तों को भूंकने दो, हमारा कारवां तो आगे बढ़ता ही रहेगा।" हिन्दी प्रचार सभा से कर्णधारों का भी रुख कुछ इसी प्रकार का हो रहा है। अन्यथा 'हिन्दी-प्रदीप' का 'हिन्दी-बोध', में बदलते समय कम से कम कुछ ऐसे स्पष्ट दोषों को तो पुस्तकों में से निकाल ही देना चाहिए था, जिनके संबंध में दो मत नहीं हो सकते।

सभा का व्यापार खूब बढ़े-खूब चमके—इस से हमें सतत प्रसन्नता होगी—परन्तु व्यापार ईमानदारी का ही ठीक होता है। जनता के 'सामने धोके के टट्टी' खड़ी करना एक सार्वजनिक संस्था के यश में कलंक है। हिन्दी-बोध भाग ३ व ४ में भी कहा जाता है सभा ने इसी कौशल को अपनाया है। स्थानाभाव से हम यहां उनकी विस्तृत चर्चा करने में असमर्थ हैं। विज्ञ पाठक स्वयं हिन्दी-प्रदीप भाग ३ व ४ की हिन्दी-बोध भाग ३ व ४ से तुलना करके देखें और सभा की धोखा-टट्टी का नवीन परिचय प्राप्त करलें।

——

मुद्रक तथा प्रकाशक
बालकृष्ण लाहोटी
मैनेजिंग डायरेक्टर,
दी मारवाड़ी प्रेस लि. २७० अफजलगंज हैदराबाद दक्षिण

सन्त विनोबा

१ मित्र—जानते हो सन्त विनोबा कौन हैं ?

२ मित्र—कौन हैं ?

१ मित्र—वर्तमान समय के महर्षि जिन्होंने भूदान यज्ञ चलाकर दुनिया को चकित किया और अब सम्पत्तिदान, श्रमदान पर भी जोर दे रहे हैं।

३ मित्र—इनकी सूझबूझ तो निराली ही निकली।

१ मित्र—ऐसे सन्त को बिहार के पंडों ने मन्दिर में हरिजनों को साथ ले जाने से रोक दिया। रोका ही नहीं बल्कि सन्त की कुछ मरम्मत भी की !

२ मित्र—यानी पीटा—मारा ?

१ मित्र—हां हां !

मित्र—सरकार क्या तमाशा देख रही थी ?

१ मित्र—५-७ पंडों को गिरफ्तार कर लिया है। अब देखना क्या सजा होती है ?

३ मित्र—सन्त ने तो कह दिया कि वैद्यनाथ धाम की घटनाओं के सम्बन्ध में किसी को सजा न दी जाय बल्कि ऐसी घटना को रोकने के लिए आवश्यक कार्यवाही की जाय। सरकार द्वारा इन मन्दिरों को कब्जे में लेने का सुझाव रखा। देखना अब सरकार क्या करेगी।

२ मित्र—ऐसे पापी पण्डों को सजा भी न दी जाय। यह तो अन्याय है।

१ मित्र—नहीं, यह सन्तों की उदारता का नमूना और न्याय है !

पाकिस्तान-हिन्दुस्तान वार्ता

१ मित्र—पाक प्रधान मन्त्री कहां तक आगे आए हैं ?

२ मित्र—बेचारे जिहाद की आवाज से पीछे ही हट रहे हैं।

३ मित्र—पाकिस्तानियों का विश्वास लड़ाई में है।

४ मित्र—हिन्दुस्तानियों का विश्वास भलाई में है यानी शांति में।

१ मित्र—कराची के पत्र भी अजब बड़बड़ाते हैं।

२ मित्र—और पत्रकारिता को बट्टा लगाते है।

१ मित्र—नेहरुजी का स्वागत कराची में और अली का स्वागत दिल्ली में क्या था ?

२ मित्र—परन्तु पाकिस्तानियों के पाक विचारों ने सब पाक-साफ कर दिया।

५ मित्र—हायरे काश्मीर तू दोनों देशों की शत्रुता का कारण बना हुआ है।

३ मित्र क्यों और भी कई प्रकार की मित्रता प्रकट होती है। भारतीय फिल्मों का बायकाट, सीमाओं पर काट छांट, नेताओं पर दबटदाट। और भी है कई पार्ट, जिसका बड़ा बन सकता है चार्ट।

विजयलक्ष्मी पण्डित

१ मित्र—प्रसन्नता, महा प्रसन्नता, अत्यन्त प्रसन्नता।

२ मित्र—किस बात की प्रसन्नता ? काहेकी प्रसन्नता ?

१ मित्र—दुनिया इतनी बड़ी है और उस में कई राष्ट्र हैं।

२ मित्र—हाँ, तो है !

१ मित्र—उन समस्त राष्ट्रों की महासभा होती है।

२ मित्र—हां होती है !

१ मित्र—उस का एक सभापति होता है।

२ मित्र—हां होता है।

१ मित्र—उस को सभापति आज तक पुरुष ही होते आए हैं।

३ मित्र—और अब !

१ मित्र—हमारे भारत देश की सुपुत्री विजयलक्ष्मी पंडित सभापति हो गई।

२ मित्र—जब तो समझना चाहिए दुनियाके सब राष्ट्रोंको हमारी नीति पसन्द आगई।

१ मित्र—हां फिर ब्रिटेन, अमेरिका, रूस सबों ने इसे सब एक स्वर से चुना है।

२ मित्र—धन्य है, हम और हमारा देश—पहले सबका गुरु था, फिर अब बन रहा है।
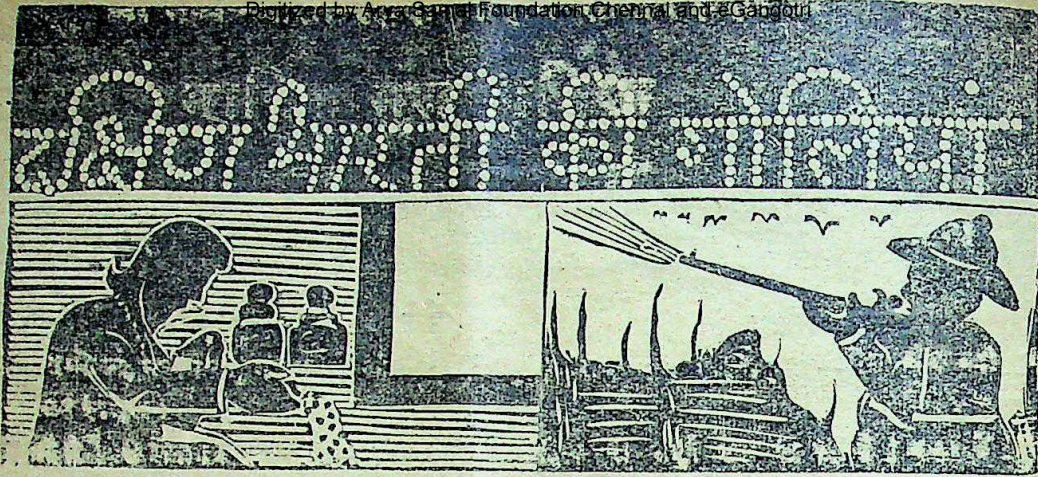
व्यापारियों पर टेक्सों की गोलियां पर गोलियां लग रही हैं, इस से व्यापारी धड़ाधड आड़े पड़ कर तड़प रहे हैं। सरकार को चाहिए कि गोलियां ताक कर ऐसी मारें कि व्यापारी फौरन खत्म हो जाय। अन्यथा नीमजां मिस्ल बिसमिल तड़पाना ठीक नहीं

o o o

२ व्यापारी कहते हैं कोई धन्धे में कस नहीं है। वस्तुएं बिकती नहीं, उलटा घाटा पड़ रहा है। साहूकारों का सूद चढ़ रहा है। जिधर देखो, रोते ही रोते हैं। मैं कहता हूं बेचैन क्यों होते हैं खालो कोई गोलियां ताकि न फिक्र रहे, जिक्र मस्त पड़े रहे।

o o o

३ मनुष्य को मास दो मास में जुलाब की गोलियां आवश्य खानी चाहिए। क्यों कि मल साफ तो सब साफ है। जो सज्जन गोलियां की उपयोगिता को जानते हैं वही हमारी दक्षिण भारती की गोलियों की उपयोगिता को जानते होंगे।

o o o

४ सम्पदा कर की स्वीकृति संसद से मिल चुकी है। इसे सरकार को १५ करोड़ वार्षिक की आय होगी। चलो इस तरह साहूकारों को घटाने का जरिया कायम हुआ। किन्तु समझ में नहीं आता साम्यवादियों के कहने के माफक एकदम संपत्ति क्यों नहीं छीन ली जाती। बस केवल रोटी कपड़ा दो और राष्ट्रीयकरण, कर दो ताकि सम्पदा का कोई मूल्य ही न रहे।

o o o

५ सूर्य की गर्मी को जमा करके उसका प्रयोग किया जा सकता है। यह वैज्ञानिकों ने निर्णय दे दिया, किन्तु यह ईंधन महंगा पडेगा। प्रत्येक व्यक्ति उपयोग न ले सकेगा। इससे आम जनता को लाभ नहीं है। वैज्ञानिकों को चाहिए कि हवा पानी की तरह इस सूर्य की गर्मी को प्राप्त करने का प्रबंध करें।

o o o

६ ईरानी संसद ने डाक्टर घर मुसद्दिक को मृत्युदंड देने का निर्णय दे दिया है। उनका कसूर शाह को निकाल कर शासन में परिवर्तन करना था। सब देश के शाह खत्म हो गए परन्तु वहाँ की जनता ने शाही को तथा शाह को कायम रख कर संसार में उदाहरण रख दिया इस मामिले में बहुत कुछ गोलियों का भी प्रयोग हुआ है।

o o o

७ भूदान यज्ञ चालू करने वाले सन्त विनोबा को हरिजनों को मन्दिर प्रवेश कराने पर पंडों ने मारा–पीटा और मरम्मत की। जिस से पंडों का नाम रोशन हो गया। पंडों को चाहिए कि सदैव ऐसे ही कर्तव्यों से सनातन धर्म की नाक लम्बी करें। मैं पंडों से प्रार्थना करूंगा कि वे भांग की गोलियां लगाकर यह धर्म कार्य करें तो और अच्छा होगा।

o o o

८ विनोबाजी कहते हैं कि मैं बुलाने पर शंकर के दर्शन करने आया। यह तो निमंत्रण देने वाले की चाल थी। पंडों से मिलकर ही निमंत्रता दिया गया होगा। अज्ञानता के वश यह कार्य होने का दुःख दूसरे पंडों को तथा अधिकांश सनातियों को हो गया परन्तु इतिहास में यह घटना सुवर्ण अक्षरों में लिखने योग्य तो हुई।

मासिक भविष्य

अक्तूबर मास का भविष्य

— काशीनाथ शर्मा शास्त्री;
खिरकिया, (म. प्र.)

मेष—ता. १४ से आपसे मिलने जुलने वाले मित्र और बन्धुजनों द्वारा व्यर्थ विरोध और उग्रवाद विवाद के अवसर लाये जाएंगे। ता. २४ के पश्चात विरोधियों की विरोधवृत्ति समाप्त होकर सुख सुविधा मिलेगी और संतोषजनक सफलता और लाभ मिलेगा।

वृषभ—ता. ६ से शनि के अस्त होते ही सब कष्टों का भी अन्त हो जायगा और सुख सुविधा मिलेगी। ता १२ के पश्चात निकटस्थ मित्रों द्वारा विरोधात्मक प्रदर्शन संभवित होंगे। ता. २३ से विश्वास पात्र मित्रों के सहयोग से रुकी हुई गाड़ी आगे बढ़ेंगी, मान सम्मान, पद प्रतिष्ठा और धन लाभ के सुअवसरा प्राप्त होंगे।

मिथुन—आप को जैसा चाहिए वैसा सहयोग ठीक समय पर नहीं मिल पाता इसी लिए बहुत से लाभदायी कार्यों में भी अकारण विलम्ब और असफलता दिखाई देने लगती है। ता. १७ से आकस्मिक सफलता धन लाभ मिलेगा और उत्साह बढेगा। ता. २३ से निकट के मित्रों द्वारा आकस्मिक विचार परिवर्तन के कारण व्यर्थ विरोध और और वाद विवाद की कटुता उत्पन्न होगी।

कर्क—ता ६ से शनि का अस्त होरहा है विरोधियों और वि.ध. कारक तत्वों का विनाश अवश्य होगा। नई नई आशाएं बनेंगी। उत्तम सफलता यश प्राप्ति और धन लाभ के मार्ग खुलेंगे। ता. १७ से आने वाले चतुर्थ सूर्य प्रेमी जनों से व्यर्थ वादविवाद विग्रह उपस्थित करेंगे। फलस्वरूप ठीक ठीक चलने वाली लाभकारो योजना भी डगमगा जायगी। मास के अन्तिम सप्ताह में शिथिल और अपूर्ण कार्यों में बन्धुजनों के सहयोग से उत्तम प्रगति और लाभ मिलेगा।

सिंह—ता. ६ से शनि का अस्त होगा एक बार फिर किंकर्तव्यता उत्पन्न कर सकता है अतः षड़यंत्र पूर्ण कार्यों से बचते रहना आवश्यक है। ता. १७ और २४ के पश्चात काम प्रोत्साहन और सहयोग के द्वारा रुकी हुई गाड़ी आगे बढेगी लाभ और सफलता के कार्य खुलेंगे। नवीन योजनाओं द्वारा भविष्य में अधिक लाभ प्राप्त करने की सम्भावना बनेगी।

कन्या—मानसिक व्यथाएं और अड़चनें ता. १७ तक बिल्कुल ठीक हो जावेंगी और सफलता पूर्वक आगे बढ़ने और लाभ प्राप्त करने के अवसर प्राप्त होंगे। सहयोग उत्तम यश-मान सम्मान और धन लाभ के सुयोगों को बढ़ावेगा।

तुला—शिथिल और रुके हुए कार्यों में फ़िर से पूर्ण प्रगति और लाभ प्राप्त होने लगेगा। रही सही शिथिल और धन मिलने का अवसर उपस्थित होगा। ता. २३ तक परिस्थिति बहुत कुछ सुधार जावेगी।

वृश्चिक—ता. १२ से शुक्र और ता. २४ से मंगल लाभ स्थान में प्रभा व पूर्ण चमत्कार दिखावेंगे और नई सफलताओं एवं धन लाभ के सुयोग बढ़ावेंगे। आर्थिक स्थिति में अच्छा सुधार संभवित होगा।

धन—दूर के स्नेही जनों के सहयोग से उत्साह बढ़ेगा। ता. १२ के पश्चात स्थान और पद सम्बन्धी समस्त चिंताएं कम होने लगेंगी। ता. १४ के गुरु व वक्रत्व के कारण साधारण मन मुटाव वादविवाद जन्य चिन्ता समुद्भव होगी। ता. २३ से अति व्यय और अनावश्यक व्यय भार का कष्ट उठाना पडे।

मकर—ता. १२ से भाग्यस्थ शुक्र की अनुकम्पा से सफलता यश धन लाभ और लाभप्रद योजनाओं का श्रीगणेश होगा। भाग्योदय के चमत्कारिक सुयोग मिलेंगे। इसी प्रकार ता. २३ से बुध और ता. २४ से मंगल और भी अधिक सफलता और धनप्रद सिद्ध होंगे।

कुंभ—ता. १२ से अष्टम शुक्र स्वास्थ्य सम्बन्धी चिन्ताएं बढ़ावेगा। ता. १७ भाग्योदयकारी संयोग सभी प्रकार की चिन्ताएं मिटावेंगे। ता. २३ रही सही स्थान चिन्ता भी दूर होगी।

मीन—ता. १२ से मानसिक और आर्थिक उन्नति के सुअवसर बढेंगे। यशस्विता सफलता और धन लाभ मिलेगा। ता. २४ से विवाद जन्य मामलों में विजय लाभ मिलेगा।

तारीखवार
सितम्बर मास
के
समाचार

विश्व

ता. १ अमरीकी अणु-कमीशन ने घोषणा की कि २३ अगस्त को रूस में एक और आणविक विस्फोट हुआ।

ता. ३ अमरीका और रूस हिन्द-चीन के युद्ध के अन्त के इच्छुक।

—उत्तर अफ्रीको सम्बन्धी वर्तमान नीति के विरोध स्वरूप फ्रान्सीसी मन्त्री का त्याग पत्र।

ता. ४ ईरान के तेल-विषयक गतिरोध का अन्त करने के प्रश्नपर विचार।

ता. ५ काश्मीर जनमत गणना-प्रशासक पद से एडमिरल चेस्टर निमित्ज द्वारा त्याग पत्र का हिन्द-पाक सम्बन्धों पर विपरित प्रभाव की आशंका।

ता. ६ पश्चिमी जर्मनी के आम चुनावों में अदेनावर का जोर। मतदान में ९० प्रतिशत जनता का सहयोग।

—इटली से समझौता वार्ता के लिये मार्शल टिटोने सुझाव दिया कि ट्रीस्ट को अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र बना दिया जाय।

ता. ७ अफगानिस्तान में फख्तून-समर्थक सरकार का गठन। महमूद गाजी द्वारा त्याग-पत्र। दाऊदखां प्रधान मन्त्री बने।

ता. ८ डा. मुसाद्दिक द्वारा जनता का प्रधान मन्त्री होने का दावा।

भारत

ता.१पार्डी मेंआज प्रजा सोशलिस्ट के नेता श्री अशोक मेहता तथा एक हजार किसान गिरफ्तार।

ता. ३ बागमती व गण्डक नदी के भीषण बाढ के कारण दरभंगा जिले के २२४ ग्राम जलमग्न।

ता. ४ शिक्षित बेकारों काम देने के लिए विशेष शिक्षा विस्तार योजना। १४ करोड़ खर्च का अनुमान।

ता. ५ तामिलनाड़ कांग्रेस द्वारा राजाजी मंत्रिमण्डल से त्यागपत्र की मांग।

ता. ६. पूना शहरको,भत्ता लगाने के हिसाब से बो क्षेत्र, के लाभ से वंचित किए जाने के कारण सरकारी कर्मचारियों में व्यापक असन्तोष।

ता. ७ श्री क्षेत्र माहूर में दो लाख की चोरी।

—राजस्थान विधान सभा के कांग्रेसी सदस्य श्री वीरेन्द्रसिंह चौहान ने आज कांग्रेस से त्याग-पत्र देने की घोषणा की।

ता. ८ राजस्थान के विरोधी दल द्वारा मंत्रियों की संख्या में कमी करने की मांग।

ता. ९ बम्बई में श्रीमती विजयालक्ष्मी पंडित ने कहा कि द. अफ्रीका के भारतीयों का प्रश्न राष्ट्र संघ में हल न होगा।

घर

ता. १ कांग्रेसी सदस्यों को कांग्रेस के महामन्त्री ने आदेश दिया कि 'तिब्बत-दिवस' में भाग न लें।

— भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का नगर में २३ वे अधिवेशन का प्रबन्ध। यह अधिवेशन दिसम्बर के तृतीय सप्ताह में होगा।

ता. ३ कोत्तागुडम के १२००० मजदूर सांकेतिक हड़ताल करेंगे।

—हैदराबाद नगर की सड़कों के नाम नए रखने का नगरपालिका द्वारा प्रस्तावित निर्णय।

ता. ४ हैदराबाद मन्त्रिमण्डल के विरुद्ध जांच करने के लिए नेहरू द्वारा कमीशन की नियुक्ति।

— नामपल्ली क्षेत्र में रहस्यमय शव पर पुलिस तथा अन्य परेशान। शव एक बन्द कमरे से बरामद हुआ।

ता. ६. पंडित नरेन्द्र द्वारा हैदराबाद के गोदावरी पीड़ित क्षेत्रों को सहायता की अपील।

ता. ७ मद्रास के मंत्रीने आज यहां पत्रकारों को बताया कि निजाम विशाल आन्ध्र का राजप्रमुख स्वीकार हुआ।

ता. ८ सम्पत्ति-कर को सम स्तर पर लाने के लिए हैदराबाद नगर में मकानों का नए सिरे से पुनः मूल्यांकन होगा।

ता. ९ आज एक सरकारी विज्ञप्ति में कहा गया कि नान्देड़ के गुरु द्वार

विश्व भारत घर

— मिस्री मन्त्रि मण्डल में परिवर्तन होने की सम्भावना।

ता. ९ पाकिस्तान के वित्तमन्त्री ने अमरीका से अनुरोध किया कि अमरीका उदार आयात नीति अपनाए।

ता. १० राष्ट्रसंघीय बृहत्सभा के अध्यक्ष पद का चुनाव। श्रीमती विजयलक्ष्मी का पूर्ण समर्थन।

ता. ११ मोरक्को के नए सुल्तान की हत्या का विफल प्रयास। एक आतंकवादी गोली का शिकार और एक गिरफ्तार।

— आज फ्रेंच सूत्रों ने विचार प्रकट किया कि भारत की फ्रेंच बस्तियोंका प्रश्न विश्व अदालत में पेश हो।

ता. १२ काहरा की भूतपूर्व रानी नरीमन द्वारा शाह फारूख को समन।

— बर्मा में नए भू-राष्ट्रीयकरण कानून से भारतीयों को हानि।

ता. १३ ब्रिटिश के सोशलिस्ट नेता एटली ने अभिमत दिया कि कोरियाई सम्मेलन से भारत को वंचित करना खेदजनक है।

ता. १४ रूमानिया और यूगोस्लाविया के बीच समझौता।

ता. १५ कोरियाई राजनीतिक सम्मेलन में भारत को न लेने का निर्णय।

— पाकिस्तान का संविधान बनाने की समस्या गम्भीर।

ता. १६ कम्बोडिया के प्रधान मन्त्री द्वारा फ्रांस और अमरीका की निन्दा।

— तेहरान के विदेश मंत्री श्री हुसेनफातमी के पलायन को लेकर अरब-ईरानी सम्बन्ध बिगड़ने की सम्भावना।

—छोटी सिंचाई योजना के लिए बम्बई राज्य को चार करोड़ का अनुदान।

ता. १० सूरत से लगभग ६५ मील दूर एक गांव में तीन हजार किसानों का सत्याग्रह। पुलिस द्वारा १४ अग्रणी गिरफ्तार।

ता. ११ अहमदनगर तथा पूना के चार तालुकों में रहस्यमय रोग। डाक्टरी परीक्षण असफल।

ता. १२ नेपाल के मंत्रि-मण्डल में विस्तार की सम्भावना।

—काश्मीर में होने वाले नेशनल कान्फ्रेंस अधिवेशन की तैयारी सम्पन्न।

ता. १३ आज त्रावणकोर-तामिलनाड कांग्रेस ने दो पार्टीवाली संयुक्त मिनिस्ट्री से 'वाक-आउट' कर दिया।

—लखनऊ विश्व विद्यालय धीरे-धीरे खुलेगा।

ता. १४ डा. अम्बेडकर ने सरकार पर आरोप लगाया कि दलगत स्वार्थों के लिए संविधान की धारा ३५६ का दुरुपयोग किया जारहा है।

ता. १५ लोक सभा में सम्पत्ति-कर विधेयक स्वीकृत।

इलाहाबाद युनिवर्सिटी की हड़ताल समाप्त। यह हड़ताल युनिवर्सिटी की यूनियन के स्वायत अधिकार से सम्बन्धित थी।

ता. १६ राष्ट्र-निर्माण कार्यों के प्रति मध्यप्रदेश सरकार की उदासीनता।

—नागपुर के वकीलोंने मध्य प्रदेश शासन के मुख्य मंत्री से मांग की कि हिन्दी-मराठी अदालती भाषा घोषित करने की आज्ञा वापस लें।

में हारे चले जाने का समाचार मिथ्या प्रचार था।

—उस्मानाबाद जिले के गुंजोटी निवासी मुस्लिमों द्वारा गोरक्षा का प्रबल समर्थन।

ता. १० नांदेड़ की तानसी नदी की बाढ से भी अपार हानि का अनुमान।

ता. ११ नान्देड़ में औरंगाबाद रेडियो बन्द करने के विरोध स्वरूप दुकानों की हड़ताल।

ता. १२ हिन्दी के महान संगीतज्ञ श्री ठाकुर ओंकारनाथ का हिन्दी प्रचार सभा में विद्यार्थियों को दीक्षान्त भाषण।

ता. १३ बीदर के समीप रेलगाड़ी के उलटने से १ मृत्यु और ५ घायल।

—भारत सेवक समाज की ओर से राष्ट्रीय कल्याणकारी फण्ड में २५ हजार रुपया जमा।

ता. १४ आन्ध्र सारस्वत परिषद के प्रधान ने अपना मत प्रकट किया सरकार अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा की ओर ध्यान दे।

—बाढ पीड़ितों की सहायता के लिए हैदराबाद के विधेयक मैच भी खेलेंगे।

ता.१५ निजाम को विशाल आन्ध्र का राज प्रमुख बनाने का विरोध।

—राज्य प्रजासोशलिस्ट पार्टी ने मांग की कि से प्रकाशम को पार्टी से मुक्त नहीं वरन निकाल दिया जाय।

ता. १६ सिकन्द्राबाद में सोलह व्यक्तियों की हैजे से मृत्यु प्रभावित भाग के स्कूल बन्द।

ता. १७ कांग्रेसी नेता श्री रामाचारी ने चेतावनी देते हुए कहा कि हैदराबाद का विलियन और ज्यादा नई समस्याएं उत्पन्न कर देगा।

विश्व

ता. १७. ब्रिटिश तथा फ्रान्स में बैंक दर में कमी।

—मालद्वीप के भूतपूर्व राष्ट्रपति अपने साथियों सहित निर्वासित।

ता. १८. उत्तर कोरियाई और चीनी बन्दियों का सब से बड़ा कम्युनिस्ट-विरोधी प्रदर्शन। कम्युनिस्ट प्रेक्षकों पर गोलियों और पत्थरों की बौछार।

—ईरान के सबसे बड़े कबीले के एक प्रवक्ता द्वारा आज डा. मुसदिक की रिहाई के लिए जसेदी-सरकार को अल्टिमेटम।

ता. १९. ईरान के सम्मुख अत्यन्त विकट आर्थिक परिस्थिति।

—पद का दुरुपयोग करने के फलस्वरूप आज़ाद काश्मीर सरकार के वित्त मंत्री चौधरी हमीदुल्ला बरखास्त।

ता. २०. कम्युनिस्ट चीन के वित्त मंत्री श्री पो मंत्रि मण्डल से पदच्युत।

—अजन्ता के भित्ति चित्रों का अलबम प्रकाशन करने की इटली की योजना।

ता. २१. रूसी क्षेत्र के समस्त आन्दोलन को कुचलने के लिए आदेश जारी।

—लंका के प्रधान मंत्री त्याग-पत्र देंगे।

ता. २२. तेहरान रेडियो ने घोषणा की कि डा. मुसादिक को मृत्यु दण्ड दिया जायगा।

—जार्जिया के प्रधान मंत्री व साथी बरखास्त।

ता. २३. फामासा-सरकार बर्मा से सेनाएं हटाने को तैयार नहीं। यह मामला शीघ्र ही संयुक्त राष्ट्र संघ में पेश किया जायगा।

भारत

ता. १७ वित्तमंत्री ने कहा कि सम्पदा-कर कानून में परिवर्तन नहीं होगा।

—सिन्ध सभा में विरोधी दल के नेता श्री गुलाम महम्मद सैयद ने प्रार्थना-पत्र द्वारा मांग की कि सिन्ध को एक स्वतंत्र राजनीतिक इकाई बनाए।

ता. १८ लोक सभा का अधिवेशन अनिश्चित काल के लिए स्थगित।

—आंध्रप्रांत अधिवेशन के पश्चात् बेल्लारी को मैसूर में शामिल करने की तैयारी। मैसूर सरकार सचेष्ट।

ता. १९ देवघर (पटना) के वैद्यनाथ मन्दिर में हरिजनों को प्रवेश कराने के फलस्वरूप विनोबा भावे पर आक्रमण।

ता. २० नए राज्यों के निर्माण के लिए आन्दोलन अवांछनीय। इस समस्या पर विचार करने के लिए शान्त वातावरण आवश्यक।

ता. २१ राजस्व-मंत्री श्री हिरे द्वारा बम्बई विधान-सभा में विधेयक बताया कि विलीनीकृत क्षेत्रों की जागीरों के उन्मूलन के लिए कार्यवाही हो।

ता. २२ उत्तर भारतप्रदेश राम-राज्य परिषद द्वारा १४ नवम्बर को गोहत्या विरोधी सत्याग्रह करने का निश्चय।

ता. २३ राजप्रमुख द्वारा केरल राज्य विधान सभा भंग।

—आन्ध्र में राष्ट्रपति का शासन न होने के लिए टी. प्रकाशम् के प्रयत्न।

ता. २५ श्री टी. प्रकाशम् का प्रजा सोशलिस्ट पार्टी से त्यागपत्र।

ता, २६ श्री टी. प्रकाशम् पुनः कांग्रेस में शामिल।

घर

ता. १८ राज्य के विकास खंडों का २ अक्तूबर को उद्घाटन।

इंडस्ट्रीयल ट्रस्ट फण्ड तैंतीस लाख की राशि अप्राप्य घोषित करेगा।

ता. १९ नान्देड में हिन्दुनमुस्लिम साम्प्रदायिकता का जोर।

ता. २१ बी. रामकृष्ण राव ने दिल्ली-लौटकर आज बताया कि राज्य मंत्रि मण्डल में कोई परिवर्तन नहीं होगा।

ता. २२ राज्य मंत्रि-मण्डल पर लगाए गए आरोपों की डा. काटजू द्वारा छानबीन होगी। डा. काटजू दो अक्तूबर को आएंगे।

योजना आयोग ने मराठवाड़ा में सिंचन योजना के लिए केन्द्र से तीन करोड़ रुपये देने की सिफारिश की।

ता. २३ हैदराबाद राज्य विधान सभा द्वारा जमीन सुधार बिल ३ व ४ पास।

ता. २४ आर टी. डी. कर्मचारियों को १६ दिन के वेतन की रकम कर्ज देने का निर्णय कर्ज की वसूली किस्तों में होगी।

—राजप्रमुख का कार्यकाल निश्चित किया जाए अखिल भारतीय कांग्रेस कार्यकारिणी की राय।

ता. २५ श्री बी. रामकृष्ण राव द्वारा नेशनल कैडेट कोर के शिविर का उद्घाटन।

ता. २६ औरंगाबाद में बेदखली के विरोध स्वरूप भूमि सत्याग्रह।

ता. २७ गोदावरी बाढ के सहायतार्थ ३ अक्तूबर को फुटबाल मैच खेला जाएगा।

ता. २५. कल मिस्र के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री इब्राहिम अब्दुल हादी को सबूत पक्ष की ओर से फांसी की सजा देने की मांग।

ता. २६. भारत और पाकिस्तान में समझौते के लिए ब्रिटेन का प्रयत्न का पार्लमेंट में श्री जफरुल्लाखां द्वारा खण्डन।

ता. २७. ब्रिटेन और मिस्र की समझौता वार्ता में प्रगति। डेढ़ वर्ष में ब्रिटिश सेना हटा दी जाएगी।

ता. २८. भारतीय स्त्रियों, बच्चों* के दक्षिण अफ्रीका में प्रवेश पर प्रतिबन्ध।

—श्री अशोक मेहता ने मोरारजी देसाई के आरोपों को खण्डन करते हुए कहा कि पार्टी सत्याग्रह हमारी आर्थिक योजना की कसौटी है।

ता. २७ बम्बई में जाली सिक्का बनाने वाली एक टकसाल बरामद।

बम्बई राज्य के प्रमुख नगरों में सरकारी रंगशालाएं बनाने की योजना।

ता. २८ पश्चिम बंगाल में जनता को खाद्य सम्बन्धी रियायतें। अनाज के भाव कम करने का निश्चय।

कांग्रेसियों को 'टिनेन्सी-बिल' में बिना अनुमति संशोधन पेश न करने का कांग्रेस विधायक पार्टी के नेता का आदेश।

ता. २८ मुख्य मंत्री श्री बी. रामकृष्णराव ने कहा कि भूमि सुधार बिल पर विरोध की गुंजाइश नहीं।

हैदराबाद में ६ हजार से अधिक प्रायमरी टीचरों की नियुक्ति की आशा।

दक्षिण भारती के एजन्सी के नियम

१. दक्षिण भारती का वार्षिक चन्दा ६) रु. है। एक प्रति का मूल्य ८ आने है।

२. एजन्टों को २५ % कमीशन दिया जायगा।

३. कम से कम पांच प्रतियां मंगवाने पर ही एजन्सी दी जायगी।

४. जितनी प्रतियां एजन्ट मंगवाना चाहते हैं उनका मूल्य पहले डिपाजिट के रूप में भेजने पर ही प्रतियां भेजी जायेंगी। उसके बाद नहीं।

५. एजन्सी लेने के बाद तीन मास तक ही प्रतियां वापिस ली जा सकेंगी।

६. हर महीने के पहली तारीख को पत्रिका प्रकाशित होगी।

७. प्रति मास २५ तारीख तक एजन्ट को उस महीने का हिसाब व्यवस्थापक दक्षिण भारती के नाम भेज कर ठीक कर लेना होगा।

दी मारवाडी प्रेस लि.

का

दीपावली सेल

१ रोजमेल	नं.	१	क्रीमलेड	५)
,,	,,	२	ओरिएंट	५।।)
,,	,,	३	सिरपुर	५।।)
,,	,,	४	नारवा १८	५।।)
,,	,,	५	,, २४	७)
,,	,,	६	लेजर २४	७)
,,	,,	७	,, २८	८)
,,	,,	८	वही सफेद	८)
,,	,,	९	,, पीला	८।।)
२ डबल रोजमेल	,,	१	क्रीम	१०)
,,	,,	२	ओरिएंट	११)
,,	,,	३	सिरपुर	११)
,,	,,	४	नारवा १८	११)
,,	,,	५	,, २४	१४)
,,	,,	६	लेजर २४	१४)
,,	,,	७	,, २८	१६)
,,	,,	८	वही सफेद	१६)
,,	,,	९	,, पीला	१६।।)
३ अधिया रोज.	,,	१	क्रीमलेड	२।।)
,,	,,	२	ओरिएंट	२।।।)
,,	,,	३	सिरपुर	३)
,,	,,	४	नारवा १८	३।)
,,	,,	५	,, २४	३।।।)
,,	,,	६	लेजर २४	३।।।)
,,	,,	७	,, २८	४।)
,,	,,	८	वही सफेद	४।।)
,,	,,	९	,, पीला	५)

४ पावा रोजमेल	न.	१	१।।)
,,	,,	२	१।।।)
,,	,,	३	२)
५ डायरी रायल	,,	१	१) डजन १०।।) सैकडा ७५)
,,	,,	२	१) ,, १२) ,, ९५)
६ डायरी जेबी	,,	१	।।।) ,, ८।) ,, ६२।)
,,	,,	२	।।।=)।,, ९।।।) ,, ७५)

७ **दैनिक दक्षिण क्यालेंडर** फेंसी तिरंगी फोटो के साथ प्रति रु. १) डजन ११) सैकडा ८५) खुल्ला गट्टा ।।≡) डजन ७।।) सैकडा ६०)

८ **दैनिक प्रकाश क्यालेंडर** फेंसी तिरंगे फोटो सहित ।।।=) डजन ९) सैकडा ६५) खुल्ला ।।) डजन ५।) सैकडा ४०)

नोट:—१. थोक बन्द रोजमेल के व्यापारियों को कमिशन दिया जाएगा।

२. मुद्रित दरों में आवश्यकता पडने पर परिवर्तन हो सकेगा।

३. नाम के दक्षिण क्यालेंडर १०० के ९६) रु. ५० के ४९) रु.

४. नाम के प्रकाश क्यालेंडर कंपलीट १०० के ७६) रु. ५० के ४०) रु.

५. आर्डर के साथ ५० प्रतिशत अगाऊ जमा होना जुरूरी है। जो ग्राहक सेलों का माल सेल भर में रु. ५००) के ऊपर लेंगे उन्हें विशेष कमिशन दर ३= सै. अलग दिया जायगा।

६. सैकडा के भाव में २५ और डजन के भाव में ३ से कम कोई माल न दिया जायगा।

के

शुभ-अवसर पर

हैदराबाद हिन्दी डायरेक्टरी

—✻ हैदराबाद सरकार द्वारा स्वीकृत ✻—

★ **हैदराबाद हिन्दी डायरेक्टरी** ★

प्रकाशित होरही है

व्या पा रि यों से	ग्रा ह कों से	पा ठ कों से
इसमें विज्ञापन देकर अपने व्यापार को बढ़ाइए।	३) भेजकर इसकी प्रति पहलेसे ही अपने लिए सुरक्षित करलें।	इसे पढ़कर हैदराबाद की सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त कीजिए।

प्रकाशक:— दी मारवाडी प्रेस लि., २७०, अफजल गंज, हैदराबाद द.

DAKSHIN BHARATI'S Regd. No. H. 428

हैदराबाद सरकार द्वारा स्कूलों, कालिजों तथा वाचनालयों के लिए स्वीकृत

दक्षिण भारती

सचित्र हिन्दी मासिक पत्रिका

मेरी महत्वाकांक्षा

"मेरी अभी भी एक महत्वाकांक्षा है। अब जो कुछ भी मेरा जीवन शे[ष] उसमें मैं अपनी पूरी बची ताकत और पूरी क्षमता के साथ भारत के पु[नर्नि]र्माण में लगा रहूं। जब तक मैं खत्म नहीं हो जाता और खत्म हो [जाने] वाली चीजों के ढेर में नहीं फेंक दिया जाता तब तक मैं पूरे जो[श से] इस काम को करता रहना चाहता हूं। मुझे इसकी कतई फिक्र [नहीं] है कि आप या दूसरे लोग मेरे बारे में मेरे बाद क्या सोचेंगे? [मेरे] लिए तो बस इतना ही काफी है कि मैंने अपने को, अपनी त[ाकत] और क्षमता को भारत की सेवा में खपा दिया। मुझे इ[सकी] भी परवाह नहीं कि मेरी प्रतिष्ठा का क्या होगा? पर अ[गर] मेरे बाद कुछ लोग मेरे बारे में सोचें तो मैं चाहूंगा कि [वे] कहें—'यह एक ऐसा आदमी दिया जो अपने पूरे ल[दिल और] दिमाग से हिन्दुस्तान से और हिन्दुस्तानियों से मुह[ब्बत] करता था; और हिन्दुस्तानी लोग भी उसकी खामि[यों] को हमेशा भुलाकर उससे बेहद, अजहद मुह[ब्बत] करते थे'।"

— जवाहरलाल नेहरू

विश्व-शांति के प्रहरी

नवम्बर-दिसम्बर १९५३

दि महबूबशाही गुलबर्गा मिल्स कंपनी लिमिटेड

गुलबर्गा-दक्षिण, जी. आइ. पी.

प्रकाशित हो गई

जिसकी प्रतीक्षा कई दिनों से ग्राहक महोदय कर रहे थे और मांग पर मांग प्रकट कर रहे थे।

यदि आपको हैदराबाद सम्बन्धी ताजे मालूमात देखना है तो इसे अवश्य खरीदिए। और संपूर्ण जानकारी प्राप्त करें और बड़े २ देश नेताओं की राय भी पढ़ें।

मूल्य केवल ३) भारती डाक खर्च अलग। ४] मनिआर्डर द्वारा भेजने पर घर बैठे डायरेक्टरी प्राप्त कर सकते हैं।

प्रकाशकः— दी मारवाड़ी प्रेस लि., २७०, अफजलगंज, हैदराबाद द.

दक्षिण भारती के ग्राहक बनिए

दक्षिण भारती पढ़िए

दक्षिण भारती से ज्ञान प्राप्त कीजिए

हैदराबाद सरकार द्वारा स्कूलों, कालिजों तथा वाचनालयों के लिए स्वीकृत

दक्षिण भारती

सचित्र हिन्दी मासिक पत्रिका

नवम्बर–दिसम्बर १९५२ | ८६, अफ़ज़लगंज, हैदराबाद | वार्षिक ६) अंकका ॥) –भारती

विषय-सूची

मुद्रक तथा प्रकाशक

बालकृष्ण लाहोटी मैनेजिंग डायरेक्टर

दी मारवाडी प्रेस लि.

अफ़जलगंज हैदराबाद द.

वर्ष ३] हैदराबाद, नवम्बर-दिसम्बर १९५३ [अंक १०

सम्पादकीय

सम्पदा शुल्क (मृत्यु कर) अधिनियम

१५ अक्तूबर १९५३ से भारत में संपदा शुल्क लागू हो गया है। इस सम्बन्ध में एक विस्तृत लेख अलग दिया गया है। यहां केवल यह देखना है कि इसका जनता के दैनिक जीवन पर क्या प्रभाव पड़ेगा।

सरकार अपने खर्च की पूर्ति के लिए कर लगाकर अर्थ प्राप्त कर लेती है। जब अर्थ की अतिरिक्त आवश्यकता होती है तो नये नये कर लागू किये जाते हैं। इन्हीं करों में से सम्पदा शुल्क भी एक है। सर्व साधारण जनों के लिए जैसे अन्य कर हैं उसी प्रकार यह कर पूंजीपतियों के लिए है। जो लखपत्ति या इस से अधिक धनवान अपने पीछे लाखों का धन छोड़ जाता है तो उसकी सम्पत्ति पर निश्चित दर के अनुसार यह कर लगाया जाता है और करकी रकम वारिसों से वसूल की जाती है। सरकार का यह मत है कि इसका असर केवल पूंजीपतियों पर ही होता है और जो अनावश्यक धन संग्रहित हो जाता है उसका एक अंश जन कार्यों के लिए वसूल कर लिया जाता है।

जहांतक विचारों की बात है या सिद्धान्तिक दृष्टिकोण है यह ठीक है कि अतिरिक्त पूंजी का एक भाग जन कार्यों के लिए वसूल कर लिया जाता है। परन्तु व्यवहारात्मक दृष्टि से देखा जाय तो इसका प्रभाव धनवानों पर ही नहीं बल्कि सर्व साधारण जनों पर भी पड़ता है। कर लागू होने के बाद कुछ दिन तक तो लोग इनके नियम उपनियमों से अनभिज्ञ रहते हैं पर शीघ्र ही इसे जान जाते हैं। और अपने बचाव के रास्ते ढूंढ निकालते हैं। प्रारंभ में कर वसूल करने वाले अधिकारियों को भी अनुभव नहीं होता इस लिए वे भी धोखा खा जाते हैं। भारत में अभी कर वसूल करने वाले अधिकारियों का नैतिक स्तर इतना ऊंचा नहीं कि वे निष्पक्ष होकर कर वसूल करें इस लिए इसमें पक्षपात या रिश्वत व सिफारिश का ताण्डव नृत्य होना स्वाभाविक है और यह कार्य आजके पूंजीपतियों के लिए आसान भी है। काला बाजार करने वाले व्यपारियों द्वारा नित्य प्रति किये जाने वाले कार्य इसके पर्याप्त उदाहरण हैं। यदि ऐसा न होता तो आज भारत के हजारों ही नहीं लाखों व्यापारी दण्डित होते और कारावास इन्हीं से भर जाते। अतः इस कर को लगाकर सरकार जितना अर्थ जमा करने की बात सोचती है वह व्यर्थ है।

जनता की दृष्टि से देखें तो मृत्यु कर के कारण अब हम यह आशा नहीं कर सकते कि पूंजीपतियों की पूंजी खुले आम बाजारों में आयेगी और उसका जनता को लाभ होगा। हजारों की तो बात ही नहीं लाखों और करोड़ों का धन छुप जायगा और बाजार में अर्थ की और अधिक कमी महसूस होगी। सरकारी मुद्रा १७०० करोड़ की चलन में थी उसमें से ७०० करोड की मुद्रा सरकार ने चलन से निकाल ली तो चारों तरफ हा हाकार मच गयां और सरकार को विवश होकर ३०० करोड़ की मुद्रा फिर चलन में लाने की बात तय करनी पड़ी। जब ७०० करोड़ की मुद्रा चलन से निकल जाने से जनता की क्रय शक्ति घट सकती है, व्यपारियों का व्यापार चौपट हो सकता है और औद्योगिक उत्पादन के ढेर कारखानों में लग सकते हैं तो विचारनीय बात है कि देश के लाखों लखपतियों का धन भूमिगत हो जाने से क्या त्राहिमाम मच जायगी।

पूंजीपतियों का धन गुप्त रह जाय तो मुद्रा और स्वर्ण का खिंचाव होगा। लोगों की क्रय शक्ति और भी घट जायगी। उद्योग व्यापार मंद पड जाएंगे। विदेशी माल सस्ता होकर देश में फैल जायगा। देशी उद्योग ठप्प हो जायेंगे। उद्योगों के अस्थिर हो जाने से उसका प्रभाव श्रमिकों पर होगा और लाखों की संख्या में बेकारी बढेगी। बेकारी बढने पर समाज के सभी अंग प्रभावित होंगे यह निश्चित। ऐसी स्थिति में सरकार को न जाने और कितने ही नये नये कानून बनाने पडेंगे और जिसकी पाबन्दी के लिए अतिरिक्त व्यवस्था करनी होगी जो स्वयं भार स्वरूप सिद्ध होगी।

संपदा कर के उचित होने में एक दलील और दी जाती है और वह यह कि अन्य विदेशी देशों में जब यह सफलता पूर्वक चल सकता है तो यहां भी सफल हो सकता है। परन्तु मेरी दृष्टि में विदेशों की स्थिति में और भारत की स्थिति में बहुत अन्तर है। जो बात वहां के लिए अनुकूल होगी वही यहां के लिए प्रतिकूल सिद्ध हो सकती है। कई बातों में ऐसा हुआ भी है। वेशभूषा, व्यापार, उद्योग, राजनीति आदि कई बातों में इस के कई उदाहरण दृष्टिगोचर हुए हैं।

अतः संपदा कर जो भारत में आज लागू हुआ है वह समयानुकूल नहीं है ऐसा हमें लगता है। आज देश प्रगति को ओर बढ रहा है। धीरे धीरे सभी के सहयोग से हमारी योजनाएं सफल होती जा रही हैं ऐसी अवस्था में आर्थिक क्षेत्र में पूंजीपतियों की पूंजी को लुप्त होने पर बाध्य करना असामयीक लगता है फिर भी जो कर लागू कर दिया गया है उसे सफलता पूर्वक चलाना हो तो कर की दर को कुछ ढीला करना होगा। कर लगाने वाले अधिकारियों के कडाई प्रद दृष्टिकोण को बदलना होगा। जो कर योग्य पूंजी निश्चित की गई है उसे थोडा और बढाना होगा और साथ ही लोगों की भावनाओं को अनुकूल बनाने का प्रयत्न करना होगा तभी इस संपदा कर के लगाने में सफलता प्राप्त होगी अन्यथा मृत्यु कर के साथ लोगों की भावना भी मृतप्राय होजाय तो देश की आर्थिक स्थिति निर्जीव-सी बन कर रह जायगी।

स्व. श्री बेनेगिल नरसिंगराव : श्रद्धांजली

अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय के न्यायाधीश श्री बेनीगल नरसिंगराव का पहली दिसम्बर को स्विट्जरलैंण्ड में स्वर्गवास हुआ।

आपका जन्म १८८७ में मद्रास के दक्षिण कनारा जिले में हुआ था। बेनीगल आपके पिता का नाम था। आपका जीवनक्रम—१९१० में आय. सी. एस, १९२५ में आसाम विधान सभा के सेक्रेटरी, १९३८ में सुधार कमिश्नर, इसी वर्ष "सर" का खिताब, १९३९ में कलकत्ता न्यायालय के न्यायाधीश, १९४६ में संविधान सभा के सलाहकार, १९४८ में पेरिस में सं. रा. में भारतीय प्रतिनिधि, १९५० में सुरक्षा परिषद के अध्यक्ष पश्चात अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय के न्यायाधीश। हम आपके प्रति अपनी श्रद्धांजली अर्पण करते हैं।

श्री बी. एन. राव के निधन से भारत का एक महान विधान शास्त्री उठ गया है।

मृदुल-मन

— श्री भीष्मदेवजी शास्त्री

मुसकरा मेरे मृदुल मन !

(१)

जब तरुण घन आ गगन में, चुन रहा था सुमन बिखरे ।
यामिनी अलसा रही थी, दामिनी के अधर निखरे —
झुक रहे थे घन-अधर पर —
और वह मुसका रही थी, फूटते थे गान मृदुतर ।
आंख जग की उठ गई उस ओर, बिजली शर्म खाकर —
गड़ गई पहले मिलन में, उस समय की तरल तड़पन ।
बन गई जग के हृदय की एक धड़कन ॥
मुसकरा·······मेरे······ मृदुल मन !

(२)

जब अचानक मलय मारुत चोर वन वन चल रहा था ।
यामिनी ढलका रही मद प्यालियों में ढल रहा था ।
वह बढ़ा नव मृदुल कलिका के सलोने अधर पीने —
हिल उठे थे अविन अम्बर के प्रणय के छोर भीने ।
हँस रही मुग्धा कली, कुछ वरुनियों में झेंप लाकर ।
रोम जग के उठ गये उस ओर कलिका शर्म खाकर —
कुछ खिली कुछ कुछ हिली —
बस उस समय की एक सिहरन —
बन गई जग के हृदय का पुलक कम्पन ॥
मुसकरा·······मेरे·······मृदुल मन !

(३)

जब उषा सुरसरि-गगनमें, नहा धो उन्मुक्त निकली ।
कान्तिनिर्झरिणी अचानक, चिकुरचय से चारु मचली ।
विहंग कुलने चहक लेकर, मुकुल कुलने महँक दे कर
घर सवाँरा, प्रकृति ने भी चूनरी देकर सुनहली ।
यामिनी तो छिप गई थी, प्रात हँस हँस भर रहा था —
उस लजीली के कपोलों में सुरंग —
कुछ भर रहा था ।
आंख जग की जब गई उस ओर ऊषा शर्म खाकर —
मौन मादक गा गई कुछ विहंग कंठों में समाकर ।
ठग गया सा प्रात पहली बार—खोकर प्रेमकंचन
बन गया जग के हृदय का वह प्रवंचन
मुसकरा·······मेरे······मृदुल मन

(४)

देख सूना गगन, सन सन रात, पल पल हर्ष-भीने ।
आ गया शशि रस भरा ज्यों चषक सरकाया किसी ने ॥
ढीठने द्रुतकर बढ़ाये चांदनी कुछ मुसकरायी ।
प्रकृति की रोमावली, लवलीनता-सी गुद गुदायी ॥
हंस पड़ी नीरस कुमुदिनी —
शठ ! अरे ! इतनी ढिठाई ।
आह ! जो मेरे लिए थी बांट दी किस को मिठाई ?
श्वेत नयनों से निहारा, कितव शशि द्रुत भागता था ।
चोर छिपता पर कहाँ ? निस्सीम पथ भी जागता था
आंख जब जग की गई उस ओर —
कैरविणी खिली थी ।
प्यार जग का देख जैसे सान्त्वना उस को मिली थी ।
सो गया शशि, जग गई पर कुमुदिनी उर एक सिकुड़न -
बन गई जग के हृदय का हाय पीड़न
मुसकरा·······मेरे·······मृदुल मन !

तुम क्या और और क्या

प्राची गगन में उग नित,
दिन भर प्रभा दिखाता
रवि अस्त हो ही जाता।

आकर निशि में उडुगण
शशि को सुभग बनाते
नित शान्ति दे ही जाते।

यह प्रगति चक्र चलता
सर्वत्र सर्वदा ही
नित देखते हैं राही।
तुम क्या ? और, और क्या ?

आओ जरा विचारें,
दृग खोल निज निहारें।

एक दिन यही हमारा
हिन्दुस्तान प्यारा
भव के दृगों का तारा।

विश्व नभ में रवि-सा
चम चम चमक रहा था,
प्रज्ज्वलित जल रहा था।

आई गुलामी रात्रि
उडुगण शशि भी चमके
क्रान्ति भी दे गम की।

ऊषा पुनः अब आई,
सस्मित मुख की लाली
लख भागी रजनी काली।

शीतल समीर सन् सन्,
सुगन्ध मन्द जाता
स्वराष्ट्र गीत गाता।

तरु मस्त हो-हो डोले,
खग राष्ट्र-गान बोलें,
गिरि शैल आंख खोले।

कण ओष तृण-शिखर पर
बिखरी मोती माला,
नभ मस्त पान हाला।

सिंधु सिंहनाद करता,
उत्ताल तरंग व्याकुल
जब तक चूमते कूल।

प्रकृति सजग हो गाती
जड़ जग उसे रिझाते
चेतन क्यों शर्माते ?

कमलिनी देख निखरी
अब खिलखिला रही है
रवि-पन्थ ताकती है

परवाने जल चुके हैं,
अब तक बहुत से देखो,
दृग खोल अपने लेखो।

स्वराज्य-युद्ध दीपक
उनको जला चुका है,
जो बुझ भी अब चुका है।

अब छोड़ सिर्फ जलना
कटिबद्ध नित्य रहना,
परमाणु बम सहना।

अब विश्व बढ चुका है
न ज्ञात कितना आगे,
तुम नींद भी न त्यागे।

उठो 'न' पाना मुश्किल
उनके चरण की धूलि,
तुम फूल हो या कली।

तुम बहुत सो चुके हो
जितना न चाहिये था,
कुछ हाल और तब था।

सब और बढ रहे हैं
विमानों से जहां पर,
उच्चतम शैल-शिखर पर।

तुम बैठ बैल गाड़ी
अभी हांफ चुप रहे हो,
मस्ती में गा रहे हो।

पिछड़े ये जो राही
वे बढ चुके हैं आगे,
देखो तनिक अभागे।

ट्रैक्टर जहां चलाते,
प्रेम से हल चला तुम
'बिरहा' गाते जाते।

बिजली अण्डे जगमग
करने जहां उजेला
मानो प्रभात वेला
टिम-टिम प्रदीप करते,
वहां तेरी कुटी में,
तुम सोच देख मन में।

— कपिल, आरा, शाहबाद

छत्रपति शिवाजी

(गतांक से आगे)

नारायण प्रसाद सिन्हा 'जहानाबादी', झरिया, (बिहार)

छठवां सर्ग

शाही दरबार लगा था,
आदिल था सिंहासन पर,
दरबारी भी बैठे थे,
अपने-अपने आसन पर
बोला वजीर उतने में—
"जासूस एक कल आया
सरकार! शिवा का उसने—
मुझसे यों हाल बताया—
'तोरण के बाद शिवा ने—
कई-एक किलों को जीता
सूपा का सूबा हड़प कर,
वह चला आरहा बढ़ता'
मैं देख रहा हूँ उसकी—
ताकत बढ़ती जाती है,
चाहिए कुचल देना अब,
हिम्मत बढ़ती जाती है"
"हां ठीक कह रहे हो तुम;
जीता है तोरण जब से
लग गया समझ ने काफिर--
पूरा ताकतवर तबसे
अपने को समझ रहा है,
जैसे काबिल हो मुझसे
तोरण गढ़ लेकर उसने
कहला भेजा कासिद से—
'रक्षार्थ राज्य के मैंने—
ले लिया किला तोरण का
कर दूंगा मैं पहले से—
दूना, कहता, सच गढ़ का'
पर कभी नहीं कुछ भेजा,
औ' पीछे से कहलाया
'खर्चा चलना है मुश्किल'
यों छत्ता मुझे बताया
'क्या लेंगे इससे कहिये,
है दीन हीन यह सेवक'
यों बातें बना-बना कर,
देता है मुझको मुसबक
जो कहते हो तुम, बिल्कुल—
जायज है समझा तुमने
बस, करदो तुरन्त चढ़ाई,
ले लो, जो जीता उसने
दुश्मन को कभी न छोटा—
चाहिए समझना, जाना!
छूते गेहुन का पौआ,
पड़ जाता है मर जाना"
यों बातें होती ही थीं
कि प्रहरी बोला आकर--
"सरकार, एक नर आया—
है, कहिये लाऊं जाकर?"
बोला वजीर—"जा पूछो,
है कौन; कहां से आया?"
वह गया तुरन्त ही बाहर,
औ' पुनः लौटकर आया
वह बोला—"उसने मुझको
अहमद निज नाम बताया
कल्याण दुर्ग से उसको,
सरजा ने मार भगाया

वह फूट-फूट रोता है,
सिर नहीं उठाता ऊपर
बोली न एक आती है,
सच, कहता, उसके लब पर"
सुन बातें मन्त्री बोला—
"अच्छा, जा लाओ सत्वर"
वह गया बुलाने उसको
क्षण में आया वह अन्दर,
औ' दागी पुनः सलामी,
चट घुटने टेक फरस पर
फिर, कहने लगा कहानी,—
सरजा की वह रो-रो कर—
"सरकार, बताऊं क्या मैं,
तोरण गढ़ जीत शिवाने
कर दिया उपद्रव जारी"
कह, लगा जोर से रोने
बोला वजीर — "क्यों रोते?
हां, आगे और कहो तो
मजा चखाएंगे हम,
काफिर को जरा रहो तो
वह समझ रहा है बुजदिल,
अपने को बड़ा बहादुर
पर नहीं सोचता, मारा
फिरना होवेगा दर-दर"
सान्त्वना-पूर्ण सुन बातें
वह लगा फफककर रोने
बंध गईं हिचकियां उसकी
वह लगा फरस को धोने
बिगड़ा वजीर इतने में-
"कायर! क्या करने आया?
नखरा यह किसे दिखाता?
क्या औरत बनने आया?
अह! शरम नहीं आती है?
काफिर ने मार भगाया

क्यों . नाम किले दारों में-
रे काहिल ! दर्ज कराया ?
गर रोना ही है तो जा,
रोआ कर अपने घर पर
भर चुल्लू भर पानी में,
जा-जा जल्दी दोजख भर"
सुन डपट हुआ चुप अहमद,
सूखा आंखों का पानी
भयभीत हुआ घबड़ाया,
फिर कहने लगा कहानी-
"ले तोरण वीर शिवाने,
अह ! नहीं, नहीं काफिरने
रायगढ़ किला बनवाया,
औ' लगा लूट फिर करने
सरकार, बात ही बातों में,
जीत लिए कितने गढ़
कंगोरी, तुंग, कुम्बारी,
भूरव, टोकन लोहागढ़
चाकन का किला पुरन्दर,
औ' सिंहगढ़ जीते क्षण में
आता है नजर न कोई,
जो ठहरे उससे रण में"
इस पर वजीर यों कड़का-
"रे बुजदिल ! शरम न आती ?
अपने-सा समझ रहा है-
सब को काहिल का नाती ?
बेहोश हुआ क्यों जाता ?
कर बातें सोच समझकर
बैठा है कहां, पता है ?
फिर तो न गया तेरा सर ?"
"सरकार हो गई गलती,
आइन्दे कभी न होगी
गर हो, तो माफ करेंगे,
मैं बदहवास हूं रोगी

लूट गया हाय ! सब कुछ
अब बाकी ही है क्या कहिये ?
रहने का नहीं ठिकाना,
हो होश कहां से कहिये ?
जीने से मरना बेहतर,
सच, चला गया जब पानी
यों कह कटार ले करमें
सीने पर उसने तानी
कर पकड़ लिया मन्त्रीने,
अति शीघ्र झपट कर उसका
औ' डपट कहा-मेरे बुजदिल !
बतला मतलब क्या इसका ?"
इस पर आदिल यों बोला
"क्यों डपट रहे हो नाहक ?
क्या अक्ल नहीं है कुछ भी,
उसमें बोलो है क्या शक ?
खुद कुशी करो मत अहमद,
सचमुच क्या बुजदिल हो तुम ?
सब्र करो काफिर को तो—
मजा चखाते हैं हम
बच्चू को याद कराया,
यदि दूध नहीं छठी का;
तो आदिल नाम न मेरा;
हाँ, हाल बताओ उसका"
रखकर कटार पृथ्वी पर,
आंसू पोंछे अहमद ने
प्रारम्भ किया सरजा का,
फिर वीर तराना उसने—
"अच्छा, सरकार ! सुनाता,
अब सुनिये उसकी गाथा
सच कहता, उस-सा काफिर
मैंने न कभी देखा था
मैं समझ रहा था अब तक,
काफिर कायर होते हैं;

लेकिन कमाल है जौहर
सरजा का सच कहते हैं
जितना है वीर बहादुर,
उससे शरीफ है ज्यादा
क्या कहूं जहांपनाह ! मैं,
रखकर चलता मर्यादा
है सोमदेव सेनापति,
उस का वरवीर लड़ाका
वह भी है ठीक उसी-सा;
पर हृदय न पाया उसका
लूट खजाना उसने आक्रमण-
कर दिया गढ़ पर
थी आधी रात निडर-से,
सोये थे हम सब खाकर
सुनकर आवाज अचानक,
मैं भौंचक-सा उठ बैठा
देखा मशाल ले कोई—
गढ़ में फाटक से पैठा
इतने में 'हर-हर-बम'-की,
आवाज गुंजी फाटक पर
तब तक मेरे सैनिक भी
तैयार हो गये सजकर
फिर तो संग्राम छिड़ा यों;
पट चली लाश से पृथ्वी
हो गई कीच फाटक पर
बह चली रक्त से पृथ्वी
टुकडी थी छोटी मेरी,
थी उस की फौज भयंकर
भग चले सिपाही मेरे,
काफिर चढ़ आये ऊपर
ऊपर भी हुई लड़ाई,
सरकार ! लड़ा मैं जी भर
आगये काम सब सैनिक,
रह गया एक मैं बचकर

लड़ते-लड़ते हो घायल,
मैं गिरा अचानक भू पर
बेहोश हुआ जब शायद,
बन्दी कर लिया पकड़कर
जब आंख खुली तो देखी—
अह ! हाथों में हथकड़ियां
लग गयीं काटने मुझको
जेहल की काली छड़ियां
सरकार ! रहा कुछ घण्टे—
तक ही में उसके अन्दर
पर क्या बतलाऊं, आती
है जान याद कर लब पर
जब हुई सुबह, दो सैनिक
आये बन्दी-खाने में
ले गये बान्धकर मुझको
चट पट काजीखाने में
मैं बैठा था कि आया—
शिवराज चढ़ा घोडे पर
मैं देख डर गया उसको,
था रोब अजब चेहरे पर
मैं सोच लिया बच सकती—
है जान नहीं अब मेरी
परवाह न थी कुछ अपनी;
पर चिन्ता थी यह भारी
'किस तरह बिजापुर जाये,
यह खबर शिवा की रण की ?
बढती जाती है प्रतिपल.
प्रतिक्षण ताकत काफिर की,
मैं सोच रहा था तब तक,
बोला शरीफ वह काफिर-
'दो छोड सोम अहमद को
अह ! तब क्या था कहना
मैं ज्यों हीं छुटा वहां से,
दौड़े सीधे चल आया
हो गई दूर अब चिन्ता,
सब कुछ बयान कर पाया''
इतने में सहसा आया
जासूस एक औ' बोला !
मानो घी डाल रहा था,
धधकाने को घृत ज्वाला
"सरजाने जीत लिया है-
सूरा का गढ़ मोहित से
कल्याण दुर्ग भी उसने-
है छीन लिया अहमद से
बढ़ती जाती है ताकत
हिन्दु मिलते जाते हैं
मैं देख रहा ये काफिर
सिर पर चढ़ते जाते हैं
सरकार ! जहां तक जल्दी
हो, दमन कीजिये इनका
वरना करना पड जायेगा,
फिर हमें सामना दुख का"
सुनते बातें आदिल का—
हो गया लाल मुख मण्डल
हो गईं सूर्ख आंखें भी
लग गया कांपने थर-थर
जितने दरबारी थे, सब-
बिल्कुल खामोश बने थे
मानों थी जीभ न मुंह में,
ताले मजबूत लगे थे
वह कड़क उठा बिजली-सा—
"सेनापति ! सेना लाओ
मैं दम लूंगा काफिर का-
कर अन्त, तुरन्त सजलाओ
बढती जाती है शोखी
वह है गुलाम का बेटा
अब चाह रहा है बनना-
राजा, राजा का बेटा
आती है शरम न उसको,
करता है बाप गुलामी
होते हैं काफिर पाजी,
करते हैं नमक हरामी"
बोला वजीर इतने में—
"सरकार ! नहीं घबड़ायें
अब किसी तरह काफिर के-
वालिद को यहां बुलाएं
फिर काम बनेगा पलमें,
शिवाजी खुद आवेंगे
गुड से मरने वाले को-
नाहक क्योंकर विष देंगे ?"
हाँ में हां लगे मिलाने
दरबारी भी यह सुन कर
जँच गई बात आदिल को
भी बोल उठा वह सत्वर
"जो बात कह रहे हो तुम,
वह मुझको भी जंचती है
पर कैसे वह आयेगा ?
तदबीर न लख पडती है"
मन्त्री बोला — "इस में क्या
है, जो इतना व्याकुल हैं ?
मैं अभी बता देता हूं,
नुस्खा सीधा बिल्कुल है
एक हिन्दू के ही जरिये,
मिल सकती मुझे सफलता
जो हरफन मौला हो, वह—
आसानी से ला सकता"
बाजी घोरपडे वहीं था,
सुनता था सारी बातें
जलता था सरजा से वह,
था अधम देखता घातें
उत्कर्ष उसे खलता था,
खलती थी उसकी बढ़ती

वह चाह रहा था कैसे—
होवेंगी उसकी घटती
था लगा बराबर रहता—
वह नीच इन्हीं ताकों में
'कब मौका हाथ लगेगा'
रहता था इन घातों में
अब क्या था, उस पर तो अह!
ली जमा खुशी ने सिक्का
बिल्ली की किस्मत से ही,
टूटा था सहसा छींका
चट चाटुकार यों बोला—
सरकार! न कुछ मुश्किल हैं
क्यों परेशान होते हो
यह खाकसार हाजिर है
मैं अभी–अभी कल जाता,
चकमा दे उसे पकड़कर
भेजूंगा खिदमत में मैं,
बन्दी कर उसको सत्वर

पर शर्त एक है उसका—
पद मिलना चाहिए मुझको
अब समझ लीजिये–मैंने
कर कैद ला दिया उसको"
आदिल बोला—'पद उसका—
मैं अभी तुम्हें देता हूं
एक फौज साथ लेलो तुम,
परवाना भी देता हूं
पर करना कैद न उसको,
कहना इतना ही उससे—
"राजा ने याद किया है—
तुमको, आया मैं इससे
अति शीघ्र विजापुर जाओ,
है काम जरूरी तुमसे
मैं देख भाल करता हूं,
तुम लौट न आओ जब से
तुम क्यों न आज ही जाओ,
कल की बातों को छोड़ो

जाओ निज फौज सजाओ,
लो परवाने को मोड़ो"
परवाने को पाते ही,
फूला न समाया बाजी
हा! स्वार्थ साधने चटपट,
ले फौज चल पड़ा बाजी
ऐसे ही कुछ अधमों से—
स्वाधीन राष्ट्र मिटता है
पराधीनता चक्की से
देश आज पिसता है
कब तक पिसता जायेगा,
कुछ पता नहीं है हमको
बाजी–से लाखों बाजी–से—
नाथ! बचाओ इसको

'छत्रपति शिवाजी' पर कुछ सम्मतियाँ

श्री नारायण प्रसाद सिन्हा के काव्य 'छत्रपति शिवाजी' पर मैंने एक दृष्टि डाली है। कवि में प्रतिभा तथा सूझ-बूझ पर्याप्त है। उचित पथ-प्रदर्शन से वे अच्छे कवियों में अपना स्थान बना सकते हैं। मैं उनकी उन्नति की कामना करता हूं।

राधेश्याम शर्मा,
सम्पादक — दैनिक 'प्रदीप', पटना

'छत्रपति शिवाजी' को मैं सम्पूर्ण तो नहीं पढ़ सका हूं, पर जितना भी पढ़ा है उससे कम से कम यह स्पष्ट रूप में सामने आया है कि कविने काव्य को ही नहीं, उसके साथ संस्कृति और उपयोगिता का भी निर्वाह किया है—जन जीवन को काव्य की तथा कथित मधुरता के साथ राष्ट्र-निर्माण और संस्कृति-निर्माण के लिये भी कुछ देने की चेष्टा की है। मेरी इच्छा थी कि कवि कविता में विगत काल के साथ आज के राष्ट्र को भी अपने सामने रख कर ही आगे बढ़ते-भले वह ऐतिहासिक विषय पर ही क्यों न हो। मेरी प्रत्येक शुभकामना श्री 'जहानाबादी जी' के साथ है और इसमें जरा भी सन्देह नहीं कि, 'छत्रपति शिवाजी' एक अत्यन्त ही विशिष्ट काव्य ग्रन्थ के रूप में जीवित रहेगा।

विश्वनाथ बूबना,
सम्पादक— 'अभिनय', कलकत्ता

जीवन सन्देश

— अनवर आगेवान शिवराजगढ़; (सौराष्ट्र)

प्रातःकाल की शीतल पवन लहरी आई और गुलाब की कली को हंसा कर चली गई। यह देख कर पत्ता गुलाब के फूल से कहने लगा—"अरे, इतने अल्प जीवन में क्या मजा! मेरे देखते ही देखते कई फूल खिले और कुम्हला गये और कई तोड़े जाने पर असमय में ही अपनी जीवन-लीला समाप्त कर गये।"

गुलाबने हंस कर कहा—"तो फिर क्या हुआ?"

पत्ता बोला—"अरे अभी माली आएगा और तुझे तोड़ ले जायगा। क्या यह दो घडी का जीवन भी कोई जीवन कहला सकता है?"

गुलाबने उत्तर दिया—"जीवन का अर्थ है सच्ची सुवास। इसी सुवास को फैलाते हुए आमंत्रित मृत्यु ही जीवन और अमरता है......।"

फूल अभी अपनी बात समाप्त भी न कर पाया था कि मालीने आकर उसे तोड़ लिया। जाते-जाते फूल पत्ते से कहने लगा कि—"चलना हो तो मेरे साथ चलो।"

पर पत्ता बोला—"न भाई, मरने के लिए तुम्हारे साथ कौन जाय! मुझे तो अभी बहुत दिन जीना है, तुम ही जाओ।

माली फूल को इत्र बनाने वाले के पास ले गया। गांधीने खौलते पानी में कोमल शरीर वाले फूल को डाल कर उसका इत्र निकाल लिया। फूल तो मर गया, पर उसकी सुवास से पानी महक उठा। मानो मृत्यु जीवन बन गई!

इस बात को हुए बहुत दिन बीत गये। फूल जीवन की अमरता को प्राप्त कर चुका था। अब वह पत्ता वृद्ध हो कर पवन के झोंकों से धरती पर गिर पड़ा था। बुढ़ापे में उसे किसने भी नहीं उठाया। जीवन और मृत्यु के भेद को जानने के लिए वह रास्ते पर इधर से उधर ठोकरें खाता फिरने लगा। इतने में दूर से उसे उस गुलाब के फूल की महक आई। निकट आने पर पत्ते को गुलाब की सौरभ-ध्वनि सुनाई दी। उसे आश्चर्य हुआ कि फूल अब तक जीवित है! पवन-लहरी आई और उसे फूल का जीवन सन्देश सुना गई।

पत्ते को मार्ग में पवन की लातें खाते देख गुलाब की आत्मा बोल उठी—"क्यों भाई, तेरी यह दशा! तू तो कहता था कि मुझे बहुत दिन जीना है।"

यह समय पत्ते की जीवन-लीला का अन्त-काल था। फूलने पत्ते से कहा—"मैंने तुझे कहा न था कि आत्मा अमर है तो फिर नश्वर देह की बात ही क्या है? जीवन का अर्थ अच्छी सुवास है और इसी प्रकार आमंत्रित मृत्यु ही जीवन और अमरता है।"

(पृष्ठ १२ का शेष)

घंटे बज उठे और देवी की आरती होने लगी। पूरा आध-घंटा लगा। देवी की आरती संपूर्ण हुई, प्रसाद बांटा गया, पर साधू को इसका कुछ भी ध्यान न था-वह देख रहा था, उसी बालिका को जिसे उसने आज से बहुत समय पहिले देखा था तथा जिसकी खोज में उसने अपना जीवन ही बिता दिया था। अरे हां, वह अब भी तो कह रही थी, 'इस प्रकार शान्ति नहीं मिलेगी। शान्ति केवल मिल सकती है तो निस्वार्थ जन-सेवा से।'

साधू देवी के चरणों में गिर पड़ा। आज वह प्रसन्न था क्यों कि उसे शान्ति का रहस्य मिल गया था। अपना पूर्व वेश छोड वह समाज में आगया—जन-सेवा करने के लिए और शान्ति की प्राप्ति के लिए।

शान्ति का रहस्य

भगवतशरण चतुर्वेदी 'शरण', वृन्दावन

'प्रयत्न किये और करता आ रहा हूं, न जाने कब से; पर कोई भी तो सफलता न मिली अबतक। सुनते हैं—साधू-महात्मा शांति मग्न रहते हैं, उनके निकट अखंड शान्ति का साम्राज्य रहता है—क्या यह ठीक है? कोई निर्णय न हो पाया। जब मुझे शान्ति नहीं तो किसीको भी कैसे हो सकती है। संसार त्याग दिया, सम्बंधिगणों से सम्बन्ध विच्छेद कर दिया, जाग्रतिक प्रपंचों से मुख मोड़ लिया—यहां तक कि सबको विस्मरण करने की चेष्टा भी की पर सब व्यर्थ, जितना-जितना संसार से दूर रहने की इच्छा की उतनी-उतनी अशान्ति की वृद्धि होती गई।' अपने आप ही कुटिया में पड़ा अवधूत चिल्ला रहा था, मानो स्वयं से ही उत्तर पूछ रहा हो, अपने प्रश्न का।

* * *

देवी का कट्टर पुजारी, बिना पूजा-उपासना किये कैसे बोल सकता था! छोटी बालिका ने कई बार पुकारा, 'बाबा, बाबा!' पर कोई प्रत्युत्तर नहीं। अन्त में 'इस प्रकार शान्ति नहीं मिलेगी!' कहकर न जाने बालिका किसी अज्ञात दिशा की ओर चली गई। इस एक वाक्य ने उसके हृदय में तूफान उठा दिया—तुरन्त पूजा छोड़ वह चल दिया बालिका की खोज में। संध्या हो गई पर कोई पता न चला। अन्त में निराश हो वह कुटिया में वापिस आ गया।

'इस प्रकार शान्ति नहीं मिलेगी!' स्वप्न में भी वही बालिका, उसी के वह स्वर बाबा के कर्णरन्ध्रों में गूंज रहे थे।—'तो कैसे?' सहसा बाबा की आंख खुल गई, तो कैसे शांति मिलेगी? क्या उपासना इत्यादि सब व्यर्थ?—एक नवीन समस्या—अब सुलझने की अपेक्षा दिन प्रतिदिन उलझने लगी। यह पूजा, यह भजन, यह माला यह एकान्त निवास—सब बेकार! भावना का वेग बढ़ने लगा और बाबा उसमें अवलम्ब हीन की भांति डुबकी लगाने लगे।

* * *

कुम्भ का मेला जहां मानवों का पारावार न था। बच्चे से लेकर वृद्ध तक अपने जन्म भर के पाप नष्ट करने के लिए हर की पौढ़ी में गोते लगाने के लिए वेग-पूर्वक बढ़े जा रहे थे। कहीं से 'जय गंगामाई' की कहीं से 'हर हर गंगा' की स्पष्ट ध्वनियां सुनाई दे रही थीं। इन्हीं में एक कमण्डलु लिये, गेरुआ वस्त्र पहिने एक साधू भी वेग से कुछ मलिन मुख सा शांति की खोज में गंगातट पर जा रहा था, अपनी धुन में मस्त। सीढ़ी पर पहुंच, नीचे ठहर कर उस साधू ने अपने वस्त्र उतारे, कमण्डलु रक्खा, और नहाने के लिए कूद पड़ा, तैरना जो जानता था। स्नान के पश्चात वह बाहर निकला तो न वहां कमंडलु था, न वस्त्र। 'सम्भवत: इन्हें भी शान्ति की प्राप्ति में बाधक समझ भगवान ने ले लिये' यही सोच कर साधू भीगी कोपीन पहिने ही चल दिया। मन बेचैन, वस्त्र इत्यादि के जाने पर भी शान्ति देवी ने कृपा नहीं की, साधू को इसी बात का दुःख था।

चलता-चला गया, अज्ञात स्थान की ओर। न जाने वहां पहुंच गया था अब, क्षणिक विश्राम के हेतु वह बैठ गया—पर उसे विश्राम कहां था? क्या यही जीवन है, कब से भटक रहा हूं; पर अब तक शान्ति न मिली! कैसे मिले—बस यही तो प्रश्न था उसके समक्ष। एकाएक 'इस प्रकार शान्ति नहीं मिलेगी' का स्मरण हो उठा और वह उठ कर चल दिया। निशानाथ व्योम में विकसित हुए अपनी पूर्णता के साथ और छिप भी गये—विरोचन भी स्वरश्मियों के साथ गगन में उदित हुए और अस्ताचल को चले गये, पर साधू चलता ही रहा, इसे ध्यान कहां था इस उदय-अस्त का।

* * *

देवी का विशाल मन्दिर—संध्या का समय, आरती की तैयारियां हो रही थीं। पुजारी ने हाथ में घंटी और दीपक उठाया कि इतने में एक साधू भी वहां आ पहुंचा।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

श्री देवीदास लक्ष्मण महाजन मराठवाड़े के एक ख्यातनाम कवि हैं। इन्होंने जो तुलसीदास-विरचित "श्री रामचरित मानस" का अनुवाद मराठी भाषा में किया है उसके "संकीर्ण अवतरण" पढनेका सौभाग्य आज प्राप्त हुआ। श्री रामचरित मानस के एक दो गद्य अनुवाद मराठी भाषामें उपलब्ध हैं किन्तु इस प्रकार का पद्य अनुवाद यह पहिला ही है।

इस 'संकीर्ण अवतरण' में उन्होंने सात प्रसंग चित्रित किए हैं इसका वाहन उन्होंने मराठी 'ओवी' छन्द को बनाया है। इसकी निबन्धनका प्रकार यह कि चौपाई का अनुवाद एक ओवी में किया है और दोहे का आशय दो ओवियों में अभिव्यक्त किया है।

श्रीमान् महाजनजी की इस रचना को ध्यान पूर्वक पढने से यह प्रतीत होता है कि वे हिन्दी भाषा का रहस्य सहज तया समझ सकते हैं तथा मराठी भाषा में सरलतया प्रकट कर सकते हैं।

प्रस्तुत 'अंश' हिन्दी भाषा के महाकवि की अप्रतिभ रचना से किये गये हैं। पहिले तो श्री गोस्वामीजी की भूमिका से सुपरिचित होना आवश्यक है, अन्यथा उनकी रचना का आशय समझना अशक्य होगा। वैसे तो शब्दार्थ सभी जान सकते हैं परन्तु श्री तुलसीदासजी की भक्ति परक भूमिका का आकलन किये विना उनके शब्दों के चारों ओर जो भावना-वलय है, उसका समीचीन अवगाहन नहीं हो सकता। श्रीमान् महाजन स्वयं श्रद्धासमन्वित तथा आचार संपन्न व्यक्ति हैं। इस लिए उन्होंने तुलसीदासजी के मानस में प्रवेश करने की जो चेष्टा की है वह इस अंश कृति की समालोचना से एक विशिष्ट सीमा तक सफल हुई दीख पडती है। इसी कारण जो मराठी रचना जिस धारा में प्रकट हुई है वह तुलसीदासजी का भाव धारण करते हुए भी अपना मराठीपन नहीं छोडती और पाठकों के अन्तः करण में 'रामचरित मानस' के पठन का सा परिणाम निर्माण करती है। अतः यह उच्च श्रेणी की रचना है यह कहने में कोई संदेह नहीं दीख पडता।

डॉ. नारायणराव नान्दापुरकर
अध्यक्ष—मराठी विभाग, उस्मानिया विश्वविद्यालय

श्री रामचरित मानस— मानस विहार—

— श्री भार्गवागमन, लक्ष्मण के साथ संवाद

श्री रामचरित मानस	मानस विहार
तेहि अवसर सुनि शिवधनुभंगा	धनुर्भंग वार्ता ऐकुनी। भृगु कुलाब्ज वासरमणि।
आये भृगु कुल कमल-पतंगा	त्याच समयीं सभास्थानीं। प्राप्त होय॥
देखि समीप सकल सकुचाने	अवलोकुनी तयाप्रति। सकल भूप संकोचती।
बाज झपट जनु लवा लुकाने	लवे जणुं पाहून दडती। श्येन पक्षा॥
गौर शरीर भूति भलि भ्राजा	अति गौर अंगकांति। सर्वांगीं शोभे विभूति।
भाल विशाल त्रिपुंड विराजा	तसेंच भालावरतीं। त्रिपुंड्र तें॥
सीस जटा ससि वदन सुहावा	मस्तकीं तो जटाभार। मुखचन्द्र अति सुन्दर।
रिसि बस कछुक अरुन होइ आवा	लव आरक्त छटा त्यावर। क्रोधवशें॥
भृकुटी कुटिल नयन रिस राते	वक्रभृकुटी, क्रुद्ध नयन। सहजहि करितां विलोकन।
सहजहुँ चितवत मनहुँ रिसाते	वाटे लागती क्रोध पूर्ण। प्रेक्षकांतें॥
वृषभ कंध उर बाहु विसाला	वृषभ तुल्य स्कंध प्रबल। हृदय, बाहू ते विशाल।
चारु जनेउ माल मृगछाला	जानवे मृगाजिन माळ। सुन्दर तीं॥
कटि मुनिबसन तून दुइ बांधे	मुनिवसन, भाते दोन। कटीस बांधिले कसून।
धनुसरकर कुठार कल कांधे	स्कंधीं परशु, धनुर्बाण। करांमध्यें॥
दो-संत वेष करनी कठिन	वेष संताचा दिसे वर। परि करणी अति कठोर।

बरनि न जाइ सरूप	अवर्णनीय खरोखर । स्वरूप तें ॥
धरि मुनि तनु जनु बीररस	धरिला मुनीचा वेष । प्रकटे जणु वीर रस ।
आयहु जहं सब भूप	जेथें होते सर्व महीश । पातले तेथ ॥
देखत भृगुपति-बेष कराला	भृगुपतीचा वेष कठिण । सन्मुख तो अवलोकून ।
उठे सकल भय बिकल नृपाला	उठले भूप ते होऊन । भय व्याकुळ ॥
पितु समेत कहि निज निजनामा	स्वपित्याच्या नांवांसवें । सांगून आपुली नांवें ।
लगे करन सब दंड प्रणामा	साष्टांग दंडवत बरवें । घालूं लागले ॥
जेहि सुभाय चितवहिं हित जानी	परशुराम जयाप्रति । हितार्थहि अवलोकिती ।
सो जानइ जनु आइ खुटानी	वाटे त्या झाली भरती । आयुष्याची ॥
जनक बहोरि आइ सिरुनावा	मग जनकरायें येऊन । वंदिलें शिर नमवून ।
सीय बोलाइ प्रणाम करावा	सीतेस घातले बाहून । पायांवरी ॥
आसिष दीन्हि सखी हरषानी	मुनीनीं देतां आशीर्वाद । तैं चतुर सख्या सानंद ।
निज समाज लेइ गई सयानी	नेती तिजला, स्त्रीवृंद । जयास्थानी ॥
विश्वामित्र मिले पुनि आई	मग विश्वामित्र येती । परशुरामातें भेटती ।
पदसरोज मेले दोउ भाई	दोघां भावातें घालिती । तत्पदावरी ॥
राम लषन दशरथ के ढोटा	म्हणती, 'हे राम लक्ष्मण । राजा दशरथाचे नंदन' ।
देखि असीस दीन्ह भल जोटा	पाहून देती आशीर्वचन । भार्गव तयां ॥
रामहि चितइ रहे भरि लोचन	मदनाचा हरी गर्व । ऐसें राम रूप अपूर्व ।
रूप अपार मार-मद-मोचन	पाहूं लागले भार्गव । डोळे भरी ॥
दो-बहुरि बिलोकि बिदेहसन	मग जनक भूपप्रति । पाहून ते विचारिती ।
कहहु काह अति भीर	'सांग एवढी भीड अति । कशास्तव ?' ॥
पूंछत जानि अजान जिमि	कळूनि अजाणासम । पुसते झाले परशुराम ।
ब्यापेउ कोप शरीर	कोपें व्यापला निस्सीम । देह त्याचा ॥
समाचार कहि जनक सुनाये	ज्या कारणनिमित्त । राजे जमले समस्त ।
जेहि कारन महीप सब आये	जनकें केला निवेदित । समाचार ॥
सुनत बचन तब अनत निहारे	ऐकूनि जनकाचें वचन । अन्यत्र करिती विलोकन ।
देखे चापखंड महि डारे	पाहती चापखंड दोन । पृथ्वीवरी ॥
अति रिस बोले बचन कठोरा	अति क्रोध तया क्षणीं । बोलती कठोर वाणी ।
कहु जड़ जनक धनुष केइ तोरा	धनुर्भंग केला कुणी । सांग मूर्खा ॥
बेगि देखाउ मूढ़ नत आजू	त्यातें मूढा ! त्वरें दावी । न तरि राज्य सीमा ठावी ।
उलटहुं महि जहं लगि तव राजू	पालथी घालीन पृथ्वी । तेथवरी ॥
अति उर उतर देत नृप नाहीं	जनक अत्यन्त भयभीत । उत्तर न दे किंचित ।
कुटिल भूप हरषे मन माहीं	कुटिल भूप ते मनांत । आनन्दले ॥
सुर मुनि नाग नगर-नर नारी	सुर नाग मुनीश्वर । नगरीचे नारीनर ।
सोचहिं सकल त्रास उर भारी	दुःखी झाले अपार । हृदयांतरी ॥

मन पछितातिं सीय महतारी
विधि अब सबरी बात बिगारी
भृगुपति कर सुभाव सुनि सीता
अरध निमेष कलप सम बीता
दो-सभय बिलोकी लोक सब
जानि जानकी भीर
हृदय न हरष विषाद कछु
बोले श्री रघुबीर
नाथ शम्भुधनु भंजनि हारा
होइहि कोउ एक दास तुम्हारा
आयसु काह कहिय किन मोही
सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही
सेवक सो जो करइ सेवकाई
अरि करनी करि करिय लराई
सुनहु राम जेइ शिवधनु तोरा
सहस बाहु सम सो रिपु मोरा
सो बिलगाउ बिहाइ समाजा
नत मारे जइ हैं सब राजा
सुनि मुनि वचन लषन मुसुकाने
बोले परशुधरहि अपमाने
बहु धनुहीं तोरा लरिकाई
कबहु न असि रिस कीन्हि गोसाई
एहि धनु पर ममता केहि हेतू
सुनि रिसाइ कह भृगुकुल-केतू
दोहा-रेनृप बालक काल बस
बोलत तोहि न संभार
धनुहीं सम त्रिपुरारि धनु
विदित सकल संसार
चौपाई-लषन कहा हंसि हमरे जाना
सुनहु देव सब धनुष समाना

जानकीची माता मनीं । सचिंत गेलीसे होउनी ।
घडी बिघडिली सावरुनी । विधात्यानें ॥
भार्गवाच्या स्वभावास । जाणूनि भयें सीतेस ।
जाऊंलागे अर्धनिमिष । कल्पासम ॥
यापरी लोक समस्त । अतिशय भयग्रस्त ।
जानकीहि मनीं त्रस्त । विलोकुनी-- ॥
हर्ष वा विषाद कांहीं । स्वमनीं मानिला नाहीं ।
बोलूं लागे राम पाही । भार्गवातें ॥
'शिव चापाचा भंग करी । कुणीहि असला जरी ।
असेल नाथ ! कुणीउरी । तुमचाच दास ॥
आपुले अनुज्ञा वचन, । तें कां न करिता कथन ? ।
ऐकतां क्रुद्ध होऊन ! बोलती मुनि ॥
"सेवा करी जो निःशंक । तोचि म्हणावा सेवक ।
रिपुसम करी वर्तणूक । रणपात्र तो ॥
ऐक रामा ! शिवचाप हें । जयानें भंगिलें आहे ।
तो सहस्रार्जुनासम पाहे । शत्रु माझा ॥
तेणें समाजा बाहेरी । वेगळें व्हावे सत्वरि ।
मारिले जातील ना तरी । सर्व राजे" ॥
ऐकून मुनीचें वचन । किंचित हांसून लक्ष्मण ।
टाकून बोले वचन, । भार्गवातें ॥
"असंख्य धनुष्यें आम्हीं । बालपणीं तोडिलीं स्वामी.' ।
इतुके कोपलां तुम्ही । कधीं हि ना ॥
याच धनुष्या वरती । कां तरी इतुकी प्रीति ? ।
ऐकतां कोपें वदती । परशुराम ॥
"अरे राजपुत्रा ! तुज । काळें घेरिलें गमे मज ।
शुद्धि नुरलीसे सहज । बोलण्याची ॥
त्रिभुवनीं जे विख्यात । शिवाचें चाप बलवंत ।
सामान्य चापासमवेत । गणितोस कां ? ॥
लक्ष्मण म्हणे हांसून । ऐका मुनिनाथा ! वचन ।
सर्वहि धनुष्यें समान । मानितों आम्ही ॥

काछतिं लाभु जून धनु तोरे
देखा राम नयन के भोरे
छुवत टूट रघुपतिहि न दोषु
मुनि बिनु काज करिय कित रोषू
बोले चितइ धनुषकी ओरा
रे शठ सुनेहि सुभाव न मोरा
बालक बोलि वधउं नहिं तोही
केवल मुनि जड जानसि मोही
बाल ब्रह्मचारी अति कोही
विश्व विदित क्षत्रिय-कुल द्रोही
भुज बल भूपि भूप बिनु कीन्ही
विपुल बार महिदेवन्ह दीन्ही
सहस बाहु भुज-छेदनि-हारा
परसु विलोकु महीप कुमारा

दोहा– मातुपिताहि जनि सोचबस
करसि महीप किसोर
गरभन के अरभक दलन
परसुभोर अति घोर

चौपाई– बिहसि लखन बोले मृदु बानी
अहो मुनीस महा भट मानी
पुनि पुनि मोहि दिखाव कुठारू
चहत उडावन फुंकि पहारू
इहां कुम्हड बतिया कोउ नाहीं
जे तरजनी देखि मरि जाही
देखि कुठार शरासन बाना
मैं कछु कहंउ सहित अभिमाना
भृगुकुल समुझि जनेउ विलोकी
जो कछु कहेउं सहेउं रिस रोकी
सुर महिसुर हरिजन अरु गाई
हमरे कुल इन्ह परन सुराई
बधे पाप अपकीरति हारे
मारत हूं पा परिय तुम्हारे
कोटि कुलिससम वचन तुम्हारा
व्यर्थ धरहु धनु बाण कुठारा

दोहा– जो बिलोकि अनुचित कहेउं
छमहु महामुनि धीर

जीर्ण चापा लागुनी । तोडितां काय लाभ हानि ? ।
बवेंचि ऐसें मानुनी । देखिलें रामें ॥
तुटलें तें करितां स्पर्श । यांत रामाचा काय दोष ? ।
वृथांचि कां करितां रोष । मुनीश्वरा ! ” ॥
परशूकडे दृष्टि पात । करुनि वदती मुनिनाथ ।
“मत्स्वभाव नसे विदित । तुजला शठा ! ॥
बालक असशी म्हणून । मी न वधी तुजलागुन ।
केवल मजसी ब्राह्मण । मानिसी मूर्खा ! ॥
मी तो बाल ब्रह्मचारी । माझा क्रोध असे भारी ।
मी क्षात्र कुलाचा वैरी । विश्व विख्यात ॥
मी स्वभुज बलें करुनी । निःक्षात्रिय केली धरणी ।
अर्पिली ब्राह्मणा लागुनी । अनेकदां ॥
सहस्रार्जुनाच्या करां । परशु माझा छेदणारा ।
एकदां तूं राजकुमारा । पाहून घे ॥
निज माता पित्याप्रत । निष्कारण तूं दुःखांत ।
लोटूं नकोस सांप्रत । राजपुत्रा ! ॥
गर्भांच्या अर्भकाप्रत । कांपून काढी निश्चित ।
ऐसा निर्दय अत्यंत । परशु माझा ॥
स्मित करुनि मृदु गिरा । वदे लक्ष्मण मुनीश्वरा ! ।
‘ महा योद्धा ’, तुम्हास पुरा । अभिमान हा ॥
पुनः पुन्हां मजप्रत । दाखवितां परशु येथ ।
उडवू इच्छितां पर्वत । फुंकरानें ॥
तांबडा भोंपळा म्हणुनी । मानूं नका इथें कुणी ।
जो दावितांचि तर्जनी । गळूनि पडे ॥
परशु आणि धनुर्बाण । तुमचे करून विलोकन ।
कांहीं बोललों वचन । अभिमानें मी ॥
आहां भृगु कुलोत्पन्न । जाणिलें उपवीत पाहून ।
न कोपतां करीन सहन । बोललां जें ॥
देव, विप्र, धेनु, संत । शौर्य दावणें यां प्रत ।
ही तों आमुच्या कुळांत । रीत नाहीं ।
वधितां पाप आर्ति । जिंकितांहि अपकीर्ति ॥
पायींच पडेन निश्चिती । मारितां तुम्ही ॥
नुसतें तुमचे वचन । कोटि वज्रांच्या समान ।
व्यर्थ कुठार धनुर्बाण । धरिलेत हे ॥
अहो धीर मुनीश्वरा । बोलिलों अनुचित गिरा ।
पाहूनि तुमच्या शस्त्रास्त्रां । क्षमा करा ॥ ”

क्रमशः

भाईचारा

मूल लेखकः—ओ'हेनरी अनुवादकः—तिलक

खिड़की के रास्ते घुस कर वह कुछ देर निस्तब्ध खड़ा रहा। सचेत भी था, क्यों कि कुशल चोर कुछ उठा धरी करने से पूर्व थोड़ी बहुत देर ठहरता अवश्य है।

इस इमारत में एक महाशय रहते थे। कोठी के बाहरी दरवाजे और बाहरी परकोटे पर फैली हुई बिना कटी-छटी बेल से चोर को यह पता चल गया कि घर की मालकिन समुद्र किनारे के किसी सार्वजनिक स्थान पर डटी होंगी। किसी हमदर्द नाविकसे कह रही होंगी, 'मेरे भावुक और एकांकी मन को आज तक कोई नहीं समझ सका।'

तीसरी मंजिल की सामने वाली खिड़की से लैम्प का धूमिल प्रकाश झांक रहा था। यों रात भी काफी हो गई थी। वह समझ गया कि गृहस्वामी आ गया है और शीघ्र हो बत्ती बुझा कर सो जायगा। जैसे वर्ष का सितम्बर मास चल रहा था वैसे ही उनके जीवन का भी सितम्बर था। ढलते हुये वर्ष और जीवन के इन्हीं क्षणों में घर का बड़ा-बूढ़ा साज सज्जा और तड़क भड़क को सारहीन समझने लगता है। उसकी यही इच्छा होती है कि उसका जीवन साथी लौट कर घर आ जाय। औचित्य नैतिकता चिरजीवी हो।

चोर ने सिगरेट सुलगायी। माचिस के धूमिल और संकुचित प्रकाश में उसकी समस्त योजना जैसे और भी स्पष्ट होकर उसके मस्तिष्क में घूम गई। वास्तव में वह था भी तीसरी कोटि का चोर।

चोरों की इस तीसरी कोटि को अभी तक न मान्यता ही मिली है और न लोग इस वर्ग के लोगों को चोर ही मानते है। ने पुलिस हमें पहिली और दूसरी कोटि से तो अवगत करा ही दिया है। इनका वर्गीकरण नितान्त सरल है। उनके बीच केवल वेषभूषा का ही अन्तर है।

हाथ आ जाने पर जो वेषभूषा की दृष्टि से भी फटेहाल निकले उस पतित को निकृष्ट श्रेणी में गिना जाता है और यह समझा जाता है कि उसकी कोई नैतिकता नहीं। पाशुविक वृत्तियों का वह जैसे मूर्तिमान प्रतीक हो। उस पर यहां तक सन्देह किया जाता है कि वह कोई हताश अपराधी है जो जान हथेलो पर लिये फिर रहा है।

दूसरी कोटि का चोर वह है जिसे सफेदपोश कहा जा सकता है। व्यावहारिक जीवन में इसे रैफिल या कुड़ा कह कर संकेत भर कर देते हैं। दिन के प्रकाश में वह निश्चित रूप से भला आदमी जान पड़ता है। सूटबूट पहिन कर ठाट से नाश्ता करता है और जाहिर यह करता है कि कमरे की दीवारों पर कागज आदि सजाना उसका पेशा है। किन्तु अंधेरा होते ही उसका चोरी का कुत्सित धन्धा शुरू हो जाता है।

उसकी मां ओसिनग्रोव की एक अत्यंत ही सम्पन्न और सम्मानित महिला है। हवालात में पहुंचते ही वह तुरन्त पुलिस गजट और 'नेल फाइल' की मांग प्रस्तुत करता है। संग के प्रत्येक राज्य में उसकी एक न एक पत्नी अवश्य मिलेगी, प्रेयसियों का तो कहना ही क्या।

हमारी कहानी का नायक चोर नीले रंग का एक स्वेटर पहिने था। वह न तो रैफिल यानी सफेद पोश ही था और न नर्क के किसी हेड रसोइये की तरह फटेहालही। चेहरे पर नक़ाब, पैरों में पमशुज़ या जादुई लालटेन उसके पास नहीं थे। हां अड़तीस बोर का एक रिवाल्वर अवश्य उसकी जेब में पड़ा था। विचारमग्न होकर वह "पिपरमेंट गम" चूस रहा था।

घर के फर्नीचर को ग्रीष्म कालीन धूलधक्कड़ से बचाने के लिये उस पर नये-नये कवर चढ़ा दिये गये थे। असल माल था दूर, तिजोरियों में। किन्तु चोर को स्वयं भी कोई ठोस माल हाथ लगने की आशा न थी। उसका लक्ष्य तो

वह कमरा था जिसके धुन्धले प्रकाश में एकाकीपन का भार हलका करने के भरसक प्रयत्नों के पश्चात ग्रहस्वामी खुरांटे ले रहा था। उसने सोचा खाली हाथ जाने से तो जो कुछ हाथ आ जाय वही अच्छा है। पेशे और लाभ की दृष्टि से यह संगत ही था। छुट्टे पैसे, घडी, कामदार 'स्टिकपिन' तो कोई बडी बात थी नहीं। न होने का कारण भी नहीं था। खिड़की खुली रह गई थी, यह वह देख ही चुका था और इसीलिये उसने खतरा भी उठाया।

बडी सावधानी से दरवाज़ा खोलकर वह कमरे में घुसा। गेस की ज्योति उसने धीमी करदी। ग्रहस्वामी अभी तक पढे सो रहे थे। शृंगारदान पर बहुतेरी चीजें बिखरी पडी थीं। चाबियों का गुच्छा, मुडे मुडाये नोट, गुलाबी रेशम की हेयरब्रो, सिगार के टुर्रे, और "ब्रोमी सिल्टज़र" की बिना खुली बोतल, जो शायद सवेरे के लिए रखी थी।

चोर ने शृंगारदान की ओर गिने चुने तीन पग बढाये। चारपाई पे पडे ग्रहस्वामी के मुंह से सहसा एक धीमी किंतु दर्द भरी आवाज़ निकली और उसकी आंखें खुलगईं। अनजाने ही उसका सीधा हाथ तकिये के नीचे पहुंच गया और वहीं रह गया।

"पड़े रहो।" चोर ने बातचीत के सामान्य लहजे में कहा, "जानते हो तीसरे दर्जे के चोर ज्यादा बात नहीं करते।" नागरिक ने पड़े-पड़े चोर को रिवाल्वर के गोल सिरे पर दृष्टि डाली और वहीं जड़वत हो गया।

"हाथ ऊपर करो—दोनों हाथ।" चोर ने आज्ञा दी।

उन महाशय की छोटी सी किन्तु नुकीली दाढ़ी थी—खिचड़ी जैसा रंग—कुछ भूरे कुछ कत्थाई से बाल—जैसे कोई दन्तचिकित्सक हो। नागरिक के चेहरे पर कठोरता, घबराहट सम्मान और खोज की रेखायें सुस्पष्ट थीं। वह उठकर बैठ गया। दाहिना हाथ उसने सर से ऊंचा उठा लिया।

"दूसरा भी!" चोर ने हुकुमराना स्वर में कहा, धोखे में रखकर तुम बाये हाथ से गोली चला सकते हो। दो तक गिनना तुम्हें आता है। या नहीं आता? जल्दी करो।"

"दूसरा नहीं उठा सकूंगा।" विवशता व्यक्त करते हुये नागरिक के मुंह पर व्यथा की रेखायें अंकित हो गई।

"उस में क्या बात है?"

"कन्धे में गठिया है।"

"सूजन भी है क्या?"

"थी तो सही। जाती रही।"

चोर क्षण भर यथावत ही पिस्तौल ताने खडा रहा। शृंगारदान की लूट पर उसकी दृष्टि गई। और तब कुछ उलझन-सी व्यक्त करते हुए उसने चारपाई पर पडे मनुष्य की ओर घूरना शुरू किया। ग्रहस्वामी ने भी कुछ परेशानी से मुंह बनाया।

"खड़े खडे मुंह न बनाओ, उसने झिड़कते हुए कहा—चोरी करने आये हो तो करते क्यों नहीं? पडा तो है सामान।"

"क्षमा कीजिये, चोर ने खीसे निकालते हुए कहा, किन्तु मैं स्वयं भी इसी रोग से पीड़ित हूं। आपके लिये यह अच्छा ही हुआ कि गठिया मेरी चिरसंगिनी है। मेरी भी बाईं बांह में यही रोग है। मेरे अतिरिक्त यदि और कोई होता तो तुम्हारी बायीं बांह न उठते ही धमाका कर देता।"

"कितने दिन से हैं?" नागरिक ने पूछा।

"चार साल से, मेरा ख्याल है। इतना ही नहीं एक दफा हो जाय, तो फिर जीवन भर पीछा नहीं छोड़ती, मैं तो इसी निष्कर्ष पर पहुंचा हूं।"

"कभी रैटिल सांप का तेल भी आजमाया? नागरिक ने कौतूहल व्यक्त किया मनो, चोर ने कहा, जिन सापों का तेल मैंने इस्तेमाल किया है अगर उनकी पंक्ति बनाई जाय तो शनिग्रह से अठगुनी दूर लम्बी निकले और उनकी खड़बड़ाहट की आवाज बालर रायजी और इंडियाना से टकराकर लौट आवे।

"कुछ लोग चैंसीलम की गोलियां इस्तेमाल करते हैं" नागरीक बोला

" शुद्ध बेवकूफी है। चोर ने कहा पांच महीने खाई: लाभ न हुआ: उस साल कुछ राहत अवश्य मिली थी जब मैंने फिन्वैलहम का सत, गिलिआड दर्द हरन पुल्टस और पाट का पैन पल्वाराजर आजमाया था लेकिन मेरा ख्याल है जेब में हिरन की आंख रखने से ही ये जादू कारगर हो सका।

किस समय आपको अधिक कष्ट रहता है! सुबह या शाम? नागरिक ने प्रश्न किया।

" रात में" चोर ने उत्तर दिया "जब कि मैं अत्याधिक व्यस्त होता हूं सुनो हाथ नीचे गिरा लो। या शायद न गिरा सको। क्या तुमने ब्लकरस्टफ का रक्तशोधक भी आजमाया है?

" मैंने? कभी नहीं। आपको रह रह कर दर्द उठता है या हर समय बना रहता है?" चोर चारपाई के पायते बैठ गया। रिवाल्वर उसके घुटनो पर टिकी थी।

" सहसा ही उठता है", उसने कहा, " और तब जब मैं इससे बचना चाहता हूं। इसी के कारण मुझे दुमंजिलों का धन्धा छोड़ना पड़ा। क्योंकि कभी कभी तो मैं बीच में ही अटक गया। मुझे तो इस पर विश्वास नहीं कि डाक्टर बाक्टर इसकी कुछ सही दवा बता सकेंगे।"

अपना भी यही समझो। हजार डालर फूंक चुका हूं, किन्तु लाभ रत्ती भर नहीं हुआ। आपके कहीं सूजन भी है क्या?

" हां सवेरे तड़के या फिर जब मेह बरसने को होता है। हे भगवान!"

" मैं बता सकता हूं कब", नागरिक ने कहा, " नमी की एक बदली भी फ्लोरिडा से न्यूयार्क की ओर आती है। यदि कभी ऐसे थियेटर ग्रह से भी गुजरने का अवसर आ जाय जहां बरसात या बादल का मैटिनी शो चल रहा हो तो बायीं बांह में दन्त पीड़ा से भी अधिक दर्द हो उठता है।

" यह तो शुद्ध नर्क यन्त्रणा है।" चोर ने कहा।

" बिल्कुल ठीक कहते हो।"

चोर ने रिवाल्वर पर दृष्टि डाली और उसे पुनः जेब में डाल कर आराम से बैठने का भद्दा सा प्रयत्न किया।

" अच्छा यार," उसने कहा, " कभी ओपोल्डक का लेप भी आजमाया?"

" खाक।" नागरिक ने बिगड़ते हुये कहा, " कभी कहोगे कि होटल का मक्खन भी लगाऊं?"

" बिल्कुल ठीक," सहमति सी व्यक्त करते हुये चोरने कहा, " बच्चे की उंगली में खुरसट लगने पर इससे बढ़िया क्या चीज़ है। मरहम का काम करता है। गठिया के लिये मैं और आप दोनों ही ने अपनी ओर से कुछ उठा नहीं रखा। पर हमें तो एक ही चीज़ मिली, जिससे कुछ आराम मिलता है। वह है पीना। ठीक है न? और सुनो भाई चोरी चारी तो होली। क्षमा करना बड़े भाई। कपड़े पहिन लो। चलो चलकर थोड़ी सी पीयें। बेतकल्लुफी के लिये माफी चाहता हूं, किन्तु हाय, दर्द फिर उठा।"

"एक हफ्ते से," नागरिक ने कहा," मैं बिना सहायता के कपड़े भी नहीं पहिन पाता। मुझे भय है टामस अभी सो रहा है और......

" अच्छा बिस्तर छोड़ो," चोर ने कहा, " मैं पहिनाऊं तुम्हें कपड़े।"

संकोच तूफान की भांति नागरिक पर छा गया। उस ने दाढ़ी सहलाते हुये जैसे इसी की सूचना दी। " बात बड़ी अजीब सी है," उसने कहना आरम्भ किया।

" यह रही तुम्हारी कमीज़," चोर ने कहा, " पहिन लो। मैं एक ऐसे आदमी को जानता हूं जिसने कहा था कि, आम्बरी के मरहम से दो सप्ताह के भीतर वह दोनों हाथों से चार घोड़े की बग्गी हांकने लग गया था।

दरवाज़े से निकलते समय नागरिक सहसा घर की ओर लौटने लगा। " पैसे लाना तो भूल ही गया।" उसने सफाई सी दी।

चोर ने उसकी दाहिनी आस्तीन पकड़ली। " चलो भी," उसने खुलकर कहा, " दावत मेरी तरफ से है। पैसे रहने दो। कीमत चुकाने भर को अपने पास है। हां तो कभी विच हैज़िल और विन्टरग्रीन का तेल भी आजमाया है?"

पटाके

— बालकृष्ण लाहोटी, " कृष्ण "

हर घर में दिया जल रहा है। हर घर के हर कमरा बैठक आदि में भी दिए सुलग रहे हैं। घर का कोना कोना जगमगा रहा है। साफ सफाई तो मत पूछो। कहीं भी कचरे का नाम नहीं है बल्कि यत्र तत्र कुछ न कुछ सजाया गया है। कहीं भाड़ के कुण्डे हैं, तो कहीं आम या केले के पत्ते बंधे हुए हैं। भंडियां भी फर्रा रही हैं। लोग जहां तहां विविध प्रकार की राग ध्वनि के साथ गाते बजाते हुए नजर आ रहे हैं। प्रत्येक की पोशाख भी नई या साफ सुथरी धोई हुई मालूम हो रही है। सारी बस्ती स्वर्ग के समान मालूम पड़ रही है। मालूम नहीं क्या बात है प्रत्येक दुकान पर सैकड़ों हजारों गोले जल रहे हैं और इत्र पान सुपारी का प्रयोग चल रहा है। एक दूसरे का आदर कर रहा है। मिठायां बट रही हैं। फूलों के हार तथा गुलदस्ते प्रयोग में आ रहे हैं। कहीं कहीं तो कपडे और नगदी इनाम में बांटे जा रहे हैं सारांश जिधर देखो धूम धाम मच रही है।

समस्त नगर दीपों से देदिप्यमान हो रहा है फिर भी अग्निक्रीड़ा अलग चल रही है। लड़के अपने मां बाप से जिद करके विविध प्रकार की आतिशबाजी के खिलोने ले रहे हैं। कहीं सुर है तो कहीं सट है, फटाफट तो चारों ओर चल रहा है

रामने श्यामू से कहा-भाई आज क्या है?

श्यामू ने कहा—वाह भाई वाह तुमको यह भी मालूम नहीं कि आज क्या है? देखते नहीं कितनी रोशनी हो रही है। आहाहा क्या मजा आ रहा है जिधर देखो फटाफट चल रहे हैं, मालूम है इन्हें क्या कहते हैं?

रामू—इसे पटाके कहते हैं पटाके।

श्यामू—तो पटाके कब उड़ाते हैं, मालूम है?

रामू—अरे हां दीवाली है दीवाली!

श्यामू—अफसोस है रामू इस त्यौहार को तो अन्यान्य धर्मों के लोग भी अच्छी तरह जानते हैं, पर तू है कि बस! रामू—अरे मुझे मालूम क्यों नहीं है। मैं तो तेरी परीक्षा ले रहा था कि तू जानता है या नहीं।

श्यामू—अच्छा यह बात है! खूब रही।

रामू—आज मैंने भी पिताजी को खूब बनाया। बराबर ५ रु.) के पटाके लेकर छोड़ा।

श्यामू—देखो मित्र इस में तो तुम्हारी गलती मालूम होती है।

रामू—मेरी गलती वाह खूब कही, आज के दिन तो सब बालक माता पिता से जिद करके पटाके उड़ाते हैं। और भूतों को भगाते हैं।

श्यामू—भूतों को भगाते हैं या आग से खेलते हैं। जरा-सी असावधानी से बुरे से बुरा परिणाम निकल सकता है।

रामू—तो क्या पटाके उड़ाना ही नहीं चाहिए?

श्यामू—मैं तो कहूंगा कि पटाकों से कोई लाभ नहीं है।

रामू—तो यह सारे उडाने वाले लोग पागल हैं?

श्यामू—हां पागल हैं, भैया!

रामू—बस बस रहने दो, हम तो जरूर पटाके बाजी करेंगे।

रामू—एक फुलझड़ी उडा रहा था कि एक दम तोप से भी बढ कर आवाज आई बडा भारी धमाका हुआ, लोग चौकन्ने हो गए और इधर उधर दौडने लगे।

रामू जो फुलझडी उडा रहा था उस आवाज की घबराहट से फुल झडी हाथ से छूटकर धोती पर गिर पड़ी। धोती मलमल से भी पतली थी, सुलग गई। रामू घबरा गया परन्तु दूसरे २ आदमी खडे थे। रामू को धोती खींचकर उसे नंगा कर दिए। फिर भी कमर के नीचे जहां तहां दाग और चुरके लगे। भगवान की कृपा हुई कि रामू जलने से बच गया। रामू घबरा गया। होश न रहा। अचेत पड़ा रहा। लोग उसे उसके घर ले गए फिर भी रामू को दो घंटे के बाद होश आया।

पटाके की ४ दुकानें १ सेकंड में जलकर भस्म हो गई। जिनसे नजदीक बैठे हुए ५-१० आदमी जख्मी हो गए। उन में २-३ तो पूरे खत्म ही हो गए। देखते २ लोगों के सामने एक तमाशा हो गया। अलग २ छूट ने वाले पटाके एकदम हजारों छूट गए। सारा शहर इस तमाशे को देखने के लिए आया दीपावली उत्सव तो था ही मिंटों में हजारों की भीड़ जमा हो गई और एक दूसरों को ढकेलते हुए उस स्थान को देखने के लिए लालायित होने लगे। इस गड़बड में कई बालक तथा नन्हे मुन्हे कुचले गए। पुलिस आई और भीड को हटाई, और भस्मातीत दुकानों के आस पास घेरा डाल दिया। पानी की दमकलें भी आई और पानी की मोटी धाराओं से अग्नि को बुझाया परन्तु उसमें से राख बह रही थी।

दर्शक एक दूसरे से पूछने लगे, क्या हुआ ? किसी ने कहा पटाके छूट गए, तमाशा हो गया। दूसरे ने कहा शहर के बालक व नवयुकों ने न उड़ाया स्वयं उड गए। तीसरे ने कहा भाई यह तो ठीक न हुआ बेचारे दुकान दारों का बडा नुकसान हो गया। चौथे ने कहा अच्छा हुआजी लोगों की फिजूल खर्ची बची। एक का नुकसान हुआ तो क्या हुआ पर सब का फायदा हो गया। पांचवे ने कहा भाई ऐसी बेदर्दी की बातें न करो। मनुष्यता के नाते से सहानुभूति तो बतलाएं। छटें ने कहा भाई उन दुकानदारों को तो छोडिए लाभ कमाने के लिए किया होगा। परन्तु दूसरे लोगों को जो पीडा पहुंची है और कष्ट हुआ है उनके प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करें।

एक वृद्ध लकडी टेकते २ जा रहे थे इन १०-१५ व्यक्तियों की वार्तालाप में सम्मिलित हो गए और सुन कर कहा भाई यह सब हमारे रीति रिवाजों में दोष है अन्यथा क्या अंगार से खेलना ठीक है ! बारूद तो नाबूद करती ही है। बस बच्चों का तमाशा होता है, लोगों की जानें भी जाती हैं। आज कल तो अपनी सरकार है ऐसी बदचलनियां बंद क्यों नहीं करती। किन्तु वह तो केवल फायदे को सोचती है। यदि बारूद के खिलोने बाजार में न बिकते तो हजारों लाखों का नुकसान हो जाता। बहुत सारी बातें अब भी ऐसी हैं कि जो हानि कारक होने पर भी चलती हैं। जैसे शराब सभी का उदाहरण लेलीजिए नित्य प्रति जूतियां उड़ती हैं, लाठियां चलती हैं, बल्कि कभी कभी तो तलवारें बन्दूकें भी चल जाती हैं परन्तु शराब खोरी नहीं रोकती। आए साल इस अग्निक्रीडा से भारत में सैकड़ों जानें जाती हैं और लाखों की सम्पत्ति नष्ट होती है फिर भी ध्यान नहीं दिया जाता।

सारे शहर में इसी आतिशबाजी की चर्चा हो रही थी। किसी के जबान से यह नहीं निकला कि आतिशबाजी अच्छी है। सबने दिल खोलकर बुराई की।

सारांश सारे शहर में घर घर ५-७ दिन तक यही चर्चा होती रही रामू जिसे पटाके उड़ाने से शरीर के निचले भाग में चुरके लगे थे दुरुस्त हो गए थे। फिर अपने मित्र श्यामू से भेंट की। श्यामू ने बड़ा ताना देकर कहा—"क्यो रामू ? पटाके उड़ाओगे ?"

रामूने कहा—न बाबा ना, पटाके उड़ाने का मजा चख लिया। अब मैं ऐसा मूर्ख नहीं हूं कि फिर पटाकों का नाम लूं।

★ ★

श्यामू—इसके अलावा यह मेरी समझ में नहीं आता कि पटाके क्यों उड़ाए जाते हैं ? दीपावली में हिन्दू लोग और शाबान में मुसलमान लोग पटाके क्यों उड़ाते हैं इससे क्या लाभ है ? आवाज से भी घबराहट फैलती है। बदबू आती है। घास फूस पर पड़ने से आग भड़कने का डर रहता है फिर भी इन्हें क्यों प्रयोग में लाते हैं। मुझे तो बड़ी हंसी आती है जब बड़े पयमाने पर आतिश बाज़ी होती है। केवल तमाशा देखने के लिए यह फिज़ूल खर्ची की जाती हैं। नुमायशों, में, विवाह शादियों में उत्सवों आदि में बड़े पयमाने पर आतिश बाज़ी या अग्निक्रीड़ा होती हैं।

रामू—इस आतिश बाज़ी से क्या कुछ लाभ है या हानियां ही हानियां हैं।

श्यामू—तुम ही बताओ क्या लाभ है। या अपने बडे-बूढों से पूछो।

रामू—भाई मैं तो किसी को पूछता नहीं। मैं अपनी बुद्धी से काम लेना चाता हूं। मुझे तो प्रत्यक्ष हानि पहुँची है। मैं तो पटाकों के नाम से घबराता हूं। इसका तो मैं सदैव के लिए घोर विरोधी बन गया हूं।

श्यामू—यदि इस अग्नि क्रीडा पर केन्द्र से कानून बन जाय, तो यह पटाकेबाजी रुक सकती है।

यह दोनों मित्र आपस में वार्तालाप कर रहे थे कि स्थानीय कांग्रेस दल के नेता आगए और दोनों की वार्तालाप सुन कर कहा—बात बात में केन्द्र यदि दखल देगा तो कैसे कार्य चलेगा। यह पटाकेबाजीयां यां तो उत्सवों आदि में होती है, परन्तु इस में धार्मिकता भी आ घुसी है। दीपावली को हिन्दू लोग पटाके उड़ा कर लक्ष्मी पूजा धूम धाम से करते हैं, तो मुसलमान लोग शाबान में प्रेतों को जगाते हैं। यदि इसे कानून बना दिया जाय तो एक बड़ा विरोध खड़ा हो जायगा।

श्यामू ने मुंह बनाते हुए कहा—साहब यह सब बहाना बाजी क्यों बताते हो, यों कहो न आमदनी में कमी हो जायगी। विरोध तो बात २ में होता है। अछूतोद्धार में विरोध था, मन्दिर प्रवेश में विरोध था, तो क्या आपने इन्हें पहला सा ज्यों का त्यों रखा?

नेता—हां तुम्हारा कहना तो ठीक है। इस विषय में केन्द्र में कुछ चर्चा भी चली थी परन्तु वापिस दब गई।

श्यामू—क्यों दब गई?

नेता—इसका अध्ययन मैंने नहीं किया।

श्यामू—अच्छा तो अब प्रयत्न कीजिए कि परसों की घटना को देखते हुए हमारे शहर में तो पटाके बाजी या आतिश बाजी आगे से न हो।

नेता—ठीक है, प्रयत्न किया जायगा।

रामू—तो क्या पटाके बिलकुल बन्द हो जाएंगे?

श्यामू—यदि हम प्रयत्नशील रहेंगे तो अवश्य होंगे।

संपदा कर (मृत्यु-कर) कानून

सम्पत्ति शुल्क अधिनियम १९५३ गत १५ अक्तूबर १९५३ से लागू हो गया है। किसी व्यक्ति की मृत्यु के बाद उसकी जो पूंजीगत मूल्य की संपदा किसी दूसरे व्यक्ति के हाथ में आयगी उस पर इस अधिनियम के अन्तर्गत शुल्क वसूल किये जाने की व्यवस्था की गई है। अधिनियम में उन सम्पत्तियों की परिभाषाएं दी गई हैं जिन पर कर लगेगा और जो कर से मुक्त रहेंगी।

प्रस्तुत लेख में इन सब का संक्षेप में विवरण किया गया है जो आशा है पाठकों को लाभदायक सिद्ध होगा।

सम्पत्ति शुल्क अधिनियम को संसद के दोनों सदनों से पास होने में प्रायः एक वर्ष लगा है। गत वर्ष अगस्त में वह उपस्थित किया गया था।

जम्मू और काश्मीर के अतिरिक्त यह अधिनियम शेष सम्पूर्ण भारत पर लागू होता है। भारतीय राज्यों में स्थित सब चल और अचल सम्पत्ति पर यह शुल्क लिया जायगा। यह अधिनियम जिन इलाकों पर लागू होता है उन से बाहर की अचल सम्पत्ति पर शुल्क नहीं लिया जायगा, किन्तु भारत में बसे हुए किसी व्यक्ति की मृत्यु होने के समय यदि उसकी कुछ चल सम्पत्ति विदेशों में है, तो उस पर शुल्क लिया जायगा।

१५ अक्तूबर, १९५३ के बाद, किसी व्यक्ति की मृत्यु होने पर उसकी जितने मूल्य की वास्तविक या व्यक्तिगत सम्पत्ति किसी दूसरे के हाथ में आयगी उस पर शुल्क लिया जायगा। सम्पत्ति की परिभाषा मोटे तौर से इस प्रकार की गयी है:—

(क) चल या अचल सम्पत्ति में कोई भाग (ख) 'क' में वर्णित भाग की बिक्री से प्राप्त रकम, (ग) 'ख' में वर्णित रकम या उसमें से फिलहाल लगी हुई रकम, (घ) किसी तरह से एक सम्पत्ति से दूसरी में बदली गयी कोई सम्पत्ति, (ङ) न्यायानुकूल हिस्सा, (च) किसी व्यक्ति का ऋण या उसकी मर्जी से उसके द्वारा ओटा हुआ ऋण (छ) चलते मामलों का हित (ज) कोई और ऐसा अधिकार जिसका मुद्रा में मूल्य लगाया जा सकता हो और (झ) मृतक के व्यय पर कोई ऋण अथवा अधिकार समाप्त करने से प्राप्त हुआ लाभ।

कुछ ऐसी सम्पत्ति भी है जो वास्तव में मृत्यु के उपरांत हस्तांरित नहीं होती, किन्तु जिसको मृत्यु के बाद हस्तांरित होने वाली सम्पत्ति मान कर उसके लिये व्यवस्था कर दी गयी है। यह इस प्रकार हैं:—

(क) ऐसी सम्पत्ति जिसे मृतक कानूनन बेच सकता था, (ख) ऐसी सम्पत्ति जिस में मृतक या किसी व्यक्ति का हिस्सा हो और मृतक की मृत्यु होने पर वह हिस्सा समाप्त हो जाता हो।

इसके अन्तर्गत, मिताक्षर, मरुमक्कतायम या अलियसंतान कानून से प्रबन्धित संयुक्त परिवारों में मृतक का सहगामी हिस्सा भी शामिल कर लिया गया है। यदि मृतक संयुक्त हिन्दू परिवार का सदस्य हो और १८ वर्ष से कम अवस्था का हो तो शुल्क नहीं देना होगा। यदि मृतक मिताक्षर कानून से प्रशासित परिवार का सदस्य हो और १८ वर्ष की अवस्था से कम भी हो और उसका कोई पुरुष पूर्वज उसके परिवार का सहभागी न हो, तो शुल्क लग जायगा।

(ग) मृतक को जो सम्पत्ति किसी व्यक्ति को दान में उसकी मृत्यु के बाद मिले, अर्थात मृत्यु निश्चित मान कर दिया हुआ उपहार।

(घ) मृतक की मृत्यु से छः महीने पहले से २ साल पहले तक की अवधि में जो सम्पत्ति दातव्य या अन्य कार्यों के लिये उपहार स्वरूप जीवित व्यक्तियों को दी गई है उस पर शुल्क लगेगा। विवाह और अन्य ऐसे कार्यों के लिये जो साधारणतः मृतक को करने होते, के लिये ५,००० रु० तक की व्यवस्था पर शुल्क नहीं लगेगा।

(ङ) मृत्यु के छः महीने पहले तक दातव्य कार्यों के लिये तथा दो वर्ष पहले तक अन्य कार्यों के लिये दी या निर्धारित की गयी उस सम्पत्ति पर शुल्क लिया जायगा जिस पर मृतक का मृत्यु तक अधिकार था।

(च) ऐसी सम्पत्ति जिसका मृतक द्वारा निपटारा किया गया हो और उसमें किसी प्रकार का भाग अपने जीवन भर के लिये रख लिया हो।

(छ) ऐसी सम्पत्ति जो मृतक और किसी व्यक्ति के साझे में हो और उस व्यक्ति को यह सम्पत्ति उत्तरजीवी के रूप में प्राप्त हो।

(ज) किसी मनोनीत या प्रतिभाजन भागी के लिये मृतक व्यक्ति द्वारा चालू रखी गयी बीमा पालिसी

(झ) मृतक की मृत्यु के समय तक जमा वार्षिक वृत्ति और अन्य लाभ।

(ञ) ऐसी कम्पनी की लेनदारियां, जिसका नियन्त्रण पांच से अधिक व्यक्तियों के साथ में न हो, जिसमें मृतक की सम्पत्ति लगी हो और वहां से उसे उसकी मृत्यु से पहले के तीन सालों में लाभ मिला हो या प्राप्त करने का उसका अधिकार रहा हो।

शुल्क से छूट

मृत्यु के बाद जो संपत्ति हस्तांतरित नहीं होती उस पर शुल्क नहीं लगेगा। इस में मुख्य मुख्य ये हैं:—

(क) सम्पत्ति, जिस में मृतक का हित किसी पद पर रहने के कारण हो।

(ख) निर्धारित परिस्थितियों में ट्रस्टी के रूप में मृतक के अधीन रहने वाली सम्पत्ति।

(ग) ऐसी सम्पत्ति जो किसी व्यक्ति द्वारा मृतक को केवल अपने जीवन के लिए मिली हो और उसकी मृत्यु के बाद वह फिर देने वाले को मिलती हो।

(घ) सार्वजनिक दातव्य कार्यों के लिए जो उद्धार मृत्यु के छः महीने से पहले और अन्य उद्धार मृत्यु के दो वर्ष पहले दिये गये होंगे, उन पर शुल्क नहीं लगेगा।

मूल्यांकन

सम्पत्ति शुल्क को दर निर्धारित करने के लिए मृतक की हस्तांरित होने वाली सब सम्पत्ति एक संपदा के रूप में जोड़ी जायगी। अनसूचित कृषि भूमि जैसी कुछ ऐसी भी सम्पत्ति है, जिसपर यद्यपि छूट दी जाती है, किन्तु संपदा का पूरा मूल्य निकालने के लिए उसको भी जोड़ना पड़ेगा।

सम्पत्ति शुल्क निर्धारित करने के लिए मुख्य बात ठीक मूल्यांकन की है। अधिनियम में किसी भी सम्पत्ति के पूरे मूल्य की परिभाषा यह है कि मृतक की मृत्यु के समय उसकी सम्पत्ति यदि खुले बाजार में बेची जाय तो उसका जो मूल्य मिलेगा वही पूरा मूल्य होगा। मूल्यांकन करने में मूल्य ह्रास आदि बातों पर पूरा ध्यान दिया जायगा।

अब इस संबन्ध में निश्चित उपबन्ध है (धारा ३९) कि एक अविभक्त परिवार की संपदा में अधिकार की समाप्ति से मिलने वाले लाभों का हिसाब किस तरह से लगाया जाय। इस धारा द्वारा व्यवस्था की गई है कि किसी की मृत्यु से ऐसे अधिकार में मिताक्षर, मरुमक्कत्तायम् अथवा अलियसन्तान को मानने वाले अविभक्त परिवार की संपदा का बन्टवारा हो गया है। शुल्क निश्चित करने के लिए ही ऐसा माना जायगा और इस आपत्तिका कोई असर न होगा कि मृत व्यक्ति को बन्टवारा करा सकने का अधिकार न था।

(शेष पृष्ठ ३२ पर)

हैदराबाद राज्य में ग्राम पंचायतों की प्रगति

श्री अन्नारावजी गरणमुखी, मंत्री, हैदराबाद सरकार

२६ नवम्बर १९४९ को विधान सभा ने भारतीय स्वतंत्रता का ताम्रपट भारतीय संविधान को, भारतीय जन-समुदाय के नाम से अंगिकृत और अधिनियमित किया। इसके चौथे भाग में राज्य की नीति के निर्देशक तत्व बताये गये हैं। केवल आयरलैंड के संविधान को छोडकर किसी भी देश के संविधान में यह नहीं बताये गये हैं। इस लिए इनको नवीन प्रयोग कहा जा सकता है। गो कि इन निर्देशिक तत्वों को किसी न्यायालय द्वारा बाध्यता न दी जा सकेगी, फिर भी इनमें दिये हुए तत्व देश के शासन में मूल भूत हैं और विधि बनाने में इनका प्रयोग करना राज्य का कर्तव्य होगा। डाक्टर अम्बेडकर ने, जो इस विधान के सूत्रधार समझे जा सकते हैं, ४ नवम्बर १९४८ के अपने वक्तव्य में यह स्पष्ट किया है कि ये तत्व केवल पावन प्रस्ताव मात्र नहीं हैं बल्कि इनमें अनुशासकों को निबद्ध करने की समर्थता भी है।

इन निर्देशक तत्वों में एक तत्व ये भी है कि हर एक राज्य ग्राम-पंचायती का संगठन करने के लिए अग्रसर होगा तथा उन्हें ऐसी शक्तियां और प्राधिकार प्रदान करेगा जो उनके लिए स्वायत्त शासन की इकाइयों के रूप में कार्य करने योग्य बनाने में आवश्यक हों। इससे स्पष्ट होगा कि विधान ग्राम पंचायतों को स्वायत्त शासन की इकाइयों के रूप में कार्य करने योग्य बनाने के आदर्श पर जोर देता है और उन्हें इसके योग्य बनाने के लिए साधन स्वरूप ऐसी शक्तियां और प्राधिकार प्रदान करना मानता है जो आवश्यक हों।

यही वह तत्व है जिसने हमारे विधान को राष्ट्रीय स्वरूप दे रखा है, क्योंकि ग्राम पंचायत ही भारत के प्राचीन प्रजातन्त्रीय संस्थाओं के एक मात्र अवशेष रह गये हैं, और हमारे विधान में केवल इन्हीं को जगह मिली है।

इस प्रारंभिक विवेचना का सारांश यह है कि भारत के विधान ने केन्द्र प्रभुत्व और राज्य प्रभुत्वों पर पंचायतों के संगठन का और उन्हें शक्तिशाली बनाने का उत्तर-दायित्व सौंपा है। इन प्राचीन संस्थाओं को पुनर्जीवित करने के लिए यह एक वैधानिक आदेश है, क्योंकि यही हमारे गणराज्य के भद्र अस्तिवार और महत्व पूर्ण अंग होंगे। इसी लिए तो गणराज्य के उद्घाटन के पश्चात हर राज्य प्रभुत्व में ग्राम-पंचायतों के विषय में अपूर्व उत्साह प्रकट किया, और हर तरफ ग्राम-पंचायत शासन-प्रबंध पर अमल करना शुरू किया।

प्राचीन भारत के राज्य शासन में ग्राम-पंचायतों को प्रमुख स्थान प्राप्त था। पंचायत का शाब्दिक अर्थ तो पांच लोगों का अनुशासन है, परन्तु यह नहीं कहा जा सकता कि हर ग्राम-पंचायत में पांच ही लोग हुआ करते थे। जैसा कि श्री जान मैथाई ने अपने पुस्तक Village Govt. in British India में लिखा है कि पंचायत का अर्थ ग्राम के अनुशासक, न्याय प्रदायक या और प्रकार के जन हितार्थ कार्य को पूरा करने के लिए स्थापित की गई ग्राम के लोगों की समिति है। कभी कभी ग्राम के समस्त नागरिक मिलकर ही ऐसे कार्य करते थे, परन्तु इसके कष्ट-साध्य होने से काल क्रम में सब की ओर से चंद चुने हुये पंच यह कार्य करने लगे।

प्रोफेसर अल्तेकर के मतानुसार (Village Communities in Western India) में ग्राम-पंचायतें सर्व सम्मिलित संस्थाएं थीं। इनमें विभिन्न जाति के, विभिन्न वृत्ति के पर एक ही स्थान के सभी निवासी सम्मिलित होते थे। श्री राजवाडे संग्रहित ऐतिहासिक लेख संग्रह में बाबाजी बनाम बाबाजी नामक प्रकरण के निर्णय का उल्लेख मिलता है। यह सन १६९३ ई. का है। इस

निर्णय पर तत्संबन्धित पंचायत के सदस्यों के हस्ताक्षर मिलते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि पहले, न्याय-दान का कार्य इस देश में ग्राम पंचायतों द्वारा ही होता था।

ग्राम-पंचायतों में पाटील, चौगुले, सोनार, लोहार, कुम्हार, चमार, मांग आदि सभी जातियों के सदस्य होते थे। ये सब अपनी अपनी जातियों को भूलकर समान स्कंधों होकर ग्राम का कार्य करते हुए अपने सार्वजनिक जावन को संभालते थे। यही कारण है जो ये संस्थाएं ब्रिटिश सत्ता के प्रारंभ तक हजारों वर्षों से कई आपत्तियों का सामना करते हुए भी जीवित रहीं। इनके अतिरिक्त सेमेटिक और सारसेनिक संस्कृति के पारिवारिक संगठन और यूरोपीय राज्यों के भौगोलिक तथा सांस्कृतिक विच्छिन्नता के कारण नगर राज्य निर्माण हो गये। यह श्री मुखर्जी के मतानुसार भारतीय ग्राम-पंचायतों के सदस्य अन्तःसत्व को सिद्ध करता है।

इन ग्राम-पंचायतों के अधिकार और इनके कार्यों की व्याप्ति अत्यंत विशाल थी। ऐसा मालूम होता है कि मानो इनकी कोई परिमिति ही नहीं थी। यह अधिकार उन्हें परंपरागत प्राप्त हुए थे। निर्देश मात्र के लिए निम्न कार्यों का उल्लेख किया जाता है।

१. राजस्व विभाग—राज्य के समस्त आय को ये वसूल कर इसे राज्य-भंडार को भेजती थी। इन्हें किसी को दण्ड देने या क्षमा करने के प्रचुर अधिकार प्राप्त थे।

२. पौर विभाग—अपने ग्राम के संपूर्ण पौर कार्यों पर इन्हें अनियंत्रित अधिकार थे।

३. न्याय दान—दीवानी और फौजदारी दोनों प्रकार के झगडों को सुनने का इन्हें अधिकार था। बहुत संगीन झगडों को ही राज्य के सर्वोन्नत न्यायालय में भेजा जाता था।

इस वैविध्य पूर्ण कार्य विवरण से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि इन ग्राम-पंचायतों को काफी बडी मात्रा में धन राशि थी। स्मृतियों में कहीं कहीं ऐसे साक्ष्य भी मिलते हैं कि ग्राम-पंचायतों को अनेक रूप से आदाय मिलता था।

७ फरवरी १९५१ को हैदराबाद के ग्राम-पंचायत आयीन सन १९४० को रद्द करके हैदराबाद ग्राम-पंचायत शासन नं. ८ जारी किया गया। पुराने आयीन के अनुसार ४४२ ग्राम-पंचायतें स्थापित हुई थीं। नये शासन के अनुसार इन्हें पुनर्गठित किया गया। साथ ही ५७९ और नई ग्राम-पंचायतें चुनाव के आधार पर स्थापित की गईं। इस प्रकार कुल १०२१ ग्राम-पंचायतें हैदराबाद राज्य में स्थापित हुई हैं। इनमें ८४ ऐसी ग्राम-पंचायतें भी हैं जो पहले ग्राम संगठन केन्द्र के रूप में थीं पर अब इन्हें ग्राम-पंचायतों की तरह काम करने का अधिकार दिया गया है।

नये शासन के अनुसार स्थापित ग्राम-पंचायतों को पहले से अधिक अधिकार सरकारी सहायता और कार्यावकाश प्राप्त हुये है। १००० से ५००० तक की जनसंख्या जिस ग्राम में हो वहां ग्राम-पंचायत स्थापित की जा सकती है। किसी ग्राम में देही सुधार समिति अथवा बहु विध सहकारी समिति काम कर रही हो तो उसे ग्राम-पंचायत के अधिकार दिये जा सकते हैं। हैदराबाद राज्य में २२ हजार से कुछ अधिक ग्राम हैं। इन में एक हजार से पांच हजार की जनसंख्या वाले ग्राम लगभग ५००५ मिलेंगे। इन सब ग्रामों में ग्राम-पंचायतें स्थापित करना हैदराबाद राज्य सरकार का उद्देश्य है, परन्तु मौजूदा आर्थिक संकट के कारण इस उद्देश्य को थोडे दिनों के लिये स्थगित करना पडा है। क्योंकि नये शासन के अनुसार हर ग्राम-पंचायत को वहां की मालगुजारी का १५ प्रतिशत और स्थानीय कर के एक तिहाई भाग को सहायतार्थ देना पडता है, इसलिये नई पंचायतों का स्थापनकार्य स्थगित किया गया है, परन्तु जो जो ग्राम सरकारी सहायता के

बिना ही ग्रामपंचायत का कार्य आरम्भ करने तैयार हैं उन्हें सरकार रोकना नहीं चाहती। अब तक ऐसी ३० नई ग्राम-पन्चायतों को अनुमति दी गई है।

सन १९५१-५२ के बजट में १५ प्रतिशत मालगुजारी के सहाय धन में से केवल पांच लाख रुपये रखे गये थे। सन १९५२-५३ में चार लाख रुपये रखे गये थे और इस साल कल्दार ४, २४, ८७४ रुपये रखे गये हैं। गत दो वर्षों में जो रकम मंजूर हुई थी वह लगभग सब पंचायतों को पहुंच गई है। १०२१ ग्राम-पंचायतों के लिये १५ प्रतिशत मालगुजारी के हिसाब से कुल १३ लाख रुपयों की जरूरत है, परन्तु जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है अभी आर्थिक संकट के कारण इसका एक तिहाई भाग मात्र ग्राम-पंचायतों को पहुंच रहा है।

पंचायतों को स्थानीय कर का जो एक तिहाई भाग मिलना चाहिये वह उन्हें बराबर मिल रहा है। १९५२-५३ में १,६५५३१ रुपये इस मद से ग्राम-पंचयातों को मिले। सन १९५३-५४ में भी तमाम जिला बोर्डों के मद में यह रकम रखी गई है। यह स्पष्ट है कि इतनी आमदनी से कोई बडा काम हमारी ग्राम-पंचायतें नहीं कर सकतीं। हो सकता हैं कि तीन चार साल की रकम इकट्ठी करके एकाधा नुमायां काम पूरा किया जा सकता है, परन्तु ग्राम-पंचायतों के महत्व को केवल कार्य के आधार पर ही मापा नहीं जा सकता। ग्रामपंचायतें तो ग्राम के लोगों तक स्वराज्य के स्वाद को पहुंचाने में एक मात्र साधन हैं और इसी तरह अधिकार के विकेन्द्रीकरण तत्व की जीती जागती दृष्टांत हैं। इनकी आर्थिक स्थिरता को भी उपेक्षित नहीं किया जा सकता, इसी लिये इनको अनेक प्रकार के कर वसूल करने के अधिकार दिये गये हैं, जो ग्राम-पंचायत को ग्राम की स्वायत्त सरकार में बदल देते हैं। अब तक ५५८ ग्राम-पंचायतों ने गृहकर, उद्योग कर आदि को अपने अधिकार क्षेत्र में लागू किया है। और इतर पंचायतों से भी कर लगाने की सूचनायें आ रही हैं।

इन आदायों से और अपने स्वेच्छित सहयोग से भी कई ग्राम पंचायतों के निवासियों ने अनेक जनहित कार्यों का आरम्भ किया है। फिर भी इन की कार्यों की तुलना उत्तर-प्रदेश जैसे राज्यों को ग्राम पंचायतों के कार्य से नहीं की जा सकती क्योंकि वहां की ग्राम पंचायतें कई सालों से काम कर रही हैं और संख्या में भी वे अधिक हैं। परन्तु यह तो मानना ही पडेगा कि इतने कम समय में ही हमारी ग्राम पंचायतों ने आशा जनक काम कर दिखाये हैं। लगभग सभी ग्राम पंचायतों ने अपने ग्रामों की सफाई के लिये कर्मचर नियुक्त किये हैं। इससे ग्राम की सफाई में काफ़ी प्रगति हो रही है। हमारी ग्राम-पंचायतों ने अब तक ५० मील लम्बी सड़कें बना लीं हैं। जिले औरंगाबाद की पिंपरी ग्रामपंचायत ने अकेले ही साढे तीन मील लम्बी सड़क बनाई है। इसी प्रकार जिले गुलबर्गा के ओकली ग्राम वासियों ने पहाड काटकर सरकार की सहायता के बिना ही तीन मील की नई सडक तैयार कर ली है। बीड, गुलबर्गा, परभणी आदि जिलों में विभिन्न ग्राम-पंचायतों द्वारा सडकों के निर्माण का कार्य अत्यन्त उत्साह से चलाया जा रहा है। कई ग्रामों में सडकों की दुरुस्ती, मोरियों का निर्माण और बावलियों की खुदवाई का काम हो रहा है। गत गरमी के मौसम में ग्राम पंचायतों ने १०० बावलियों को और गहरा किया है ताकि पानी की कमी दूर हो सके। फुलमारी, मोरतोड और दीगर पंचायतों ने तो नई बावलियां ही बना ली है। २०० ग्राम पंचायतों ने ग्राम की गलियों में दीपक जलाने का प्रबन्ध किया है। निजामाबाद और आदिलाबाद जिलों की लगभग सभी ग्राम-पंचायतों ने अपने अपने ग्रामों में रेडियो लगाये हैं। जिले नलगोंडा, निजामाबाद और हैदराबाद की कई ग्राम पंचायतों ने रात्रि पाठशालाओं का प्रबन्ध किया है जिससे कि प्रौढ शिक्षा का प्रचार हो सके। जिले निजामाबाद के नवीपेठ, वेलपुर ग्राम पंचायतों ने क्रमशः सात हजार और सोलह हजार रुपये जमा करके प्रसूतिगृहों की स्थापना की है। जिले महबूबनगर के धनपुर आदि पंचायतों ने जिले गुलबर्गा के मरतुर तथा नालवार आदि पंचायतों ने

प्राथमिक शालाओं के भवन निर्माण का कार्य किया है। ग्रामपंचायत घनपुर ने इस काम के लिये ६ हजार रुपये जमा किये हैं। वहां भी कार्य चालू है। अब तक कुल चार हजार सोक पीठ खोदे गये हैं। यह सब लोगों ने श्रमदान के रूप में किया है।

फिर भी मैं यह मानने के लिए तैयार नहीं हूं कि जो कार्य ऊपर बताया गया है वह बहुत बडा है। हां इतना जरूर कहूंगा कि हमारी ग्राम पंचायतों ने अपनी शैशव अवस्था के बावजूद आगे कदम बढाना शुरू किया है। इनके लडखडाते कदमों को मजबूत बनाना सरकार और समाज दोनों का कर्तव्य है। इस लिए मैं उन सब सज्जनों से जिन्हें ग्रामोदय में श्रद्धा है और जो पंचायत राज्य के द्वारा सच्चे रामराज्य को स्थापित करना चाहते हैं, यह अपील करना चाहता हूं कि वे इन ग्राम पंचायतों को राष्ट्र के निर्माण और पुनर्जीवन के मूल केन्द्र समझें और उनकी सफलता के लिये अपना सक्रीय सहयोग प्रदान करें (हमारी राष्ट्रीय महा योजना में भी यह आशा प्रकट की गई है कि वह दिन दूर नहीं जब कि राष्ट्र की नई योजनाओं को बनाने में और कार्य रूप में लाने में ग्राम पंचायतें प्रत्यक्ष भाग लेंगी। गांधीजी तथा विनोबाजी की दृष्टि में तो पंचायत राज्य और स्वराज्य वस्तुतः एक ही है। अगर हम गान्धीजी के स्वप्नों के अनुसार धार्मिक श्रद्धा के साथ ग्राम पंचायत योजना को यशस्वी बनायें तो हम अपनी आंखों से ही देखेंगे कि दिल्ली स्थित हमारी लोक सभा में इन्हीं ग्राम पंचायतों के सदस्य नजर आयेंगे। इसीलिये मैं ग्राम पंचायतों को नये भारत की प्रतीक समझता हूं) इतिहास के अवलोकन से पता चलता है कि युद्ध काल ने संसार को बड़े बड़े दुर्ग और राज्य भवन दिये, धर्म युग ने देवालय विहार और गिरजा आदि दिये प्रजातंत्र युग ने लोक सभा विधान सभा आदि दिये और गांधी युग ने हमें ग्राम पंचायतें दीं। ईश्वर करे कि ये पंचायतें अपने परिपूर्ण विकास को पाकर हमारे गणराज्य के आधार स्तम्भ बने और इनके बनाने में ही हमारी समस्त बुद्धी और शक्ति का विनियोग हो।

——

राजस्थानी प्रगति समाज

भारत की नागरिकता के कर्तव्य को पूरा करते हुए समाज की सर्वांगपूर्ण उन्नति में सहायक होने और पुराने सब संगठनों की अच्छाइयों को लेकर समय की मांग के अनुसार समाज की उन्नति का अपना उद्दिष्ट लक्ष्य पूरा करने के उद्देश्य से १५ अगस्त १९५३ को हैदराबाद में राजस्थानी प्रगति समाज की स्थापना हुई है। इसके मुख्य साधन समाज की सांस्कृतिक शैक्षणिक व सामाजिक संस्थाएं होंगी जिनके द्वारा सामाजिक जीवन की शृंखला दृढ बनाते हुए प्रान्तीय एवं राष्ट्रीय जीवन में सामंजस्य रख कर सम्यक आचार विचार का प्रचार करना होगा जिसमें सामाजिक जीवन में सतुलित पर सर्वांगीण विकास होगा।

आरंभ में राजस्थानी प्रगति समाज ने एक योजना बनाई है जिस पर करीब तीन लाख रुपये का खर्च आंका गया है। इसके अनुसार मारवाड़ी विद्यार्थी गृह हैदराबाद, बेगमबाजार सुलतान बाजार तथा कचारहट्टे में चलने वाले विद्यालय, सुलतान बाजार तथा बेगमबाजार के पुस्तकालय तथा गश्ती वाचनालय का पुनः संगठन एवं सुसंचालन होगा और व्यापाररत राजस्थानी समाज के लिए समयोचित सम्मेलनों एवं भाषणों व प्रवचनों का आयोजन होगा। वाचनालयों व विद्यार्थियों का पुनः संगठन, विद्यार्थीगृह का सुप्रबन्ध तथा गश्ती वाचनालय की स्थापना का कार्य आरम्भ हो चुका है। इसके लिए आवश्यक उपसमितियां बन गई हैं। इसी तरह सम्मेलनों तथा भाषणों का प्रबन्ध किया जा रहा है। अभी हाल ही में दीपावली के अवसर पर व्यापारियों के मार्ग दर्शन के लिए एक दीपावली सम्मेलन का आयोजन किया गया था जिसमें स्थानीय मुख्य मन्त्री व वित्तमन्त्री
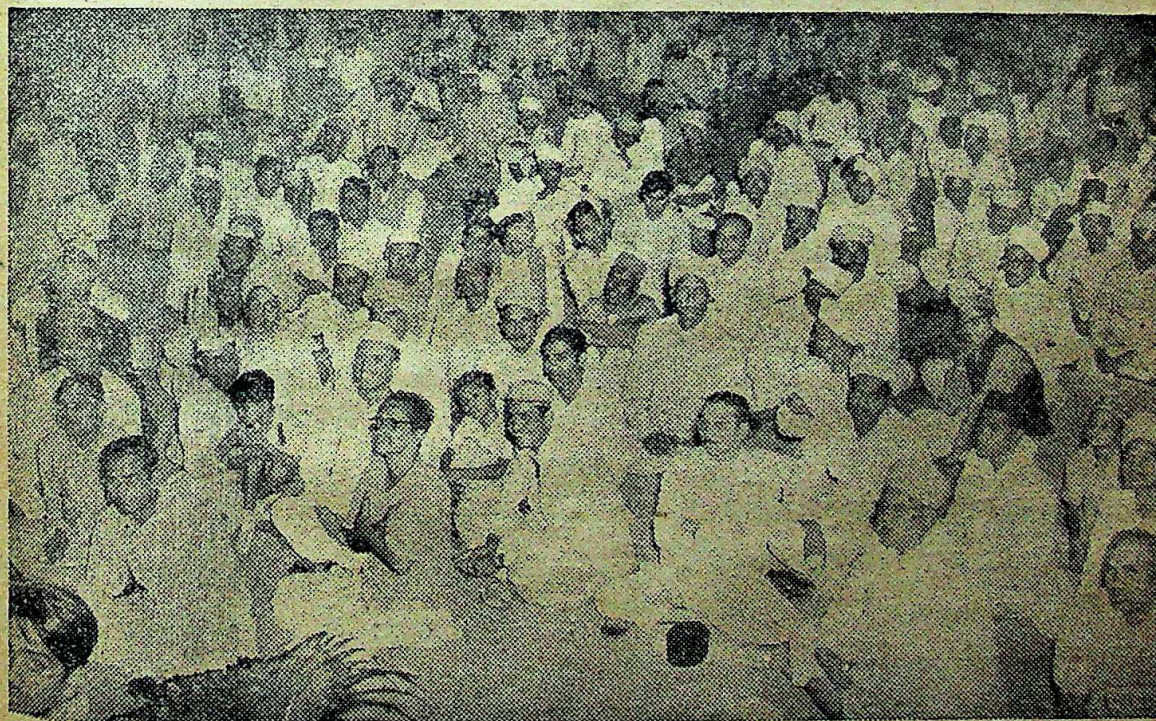
दीपावली सम्मेलन (९ नवम्बर १९५३) के शुभ अवसर पर एकत्रित राजस्थानी समाज।

के साथ साथ मध्य प्रदेश के वित्तमन्त्री बरार केसरी श्री ब्रिजलालजी बियाणीने अपने अमूल्य विचारों से समाज का मार्ग दर्शन करते हुए व्यापारी वर्ग के प्रति अपनी शुभ कामनाएं प्रकट की थीं। इसी अवसर पर स्थानीय मुख्य मंत्री श्री बी. रामकृष्णरावजी ने व्यापारियों को शत प्रतिशत लाभ होने तथा इनका कृषि, व्यापार एवं उद्योग के क्षेत्र में उन्नत होने की बात कही थी और राजस्थानी प्रगति समाज को शुभाशीश देकर प्रोत्साहित किया था।
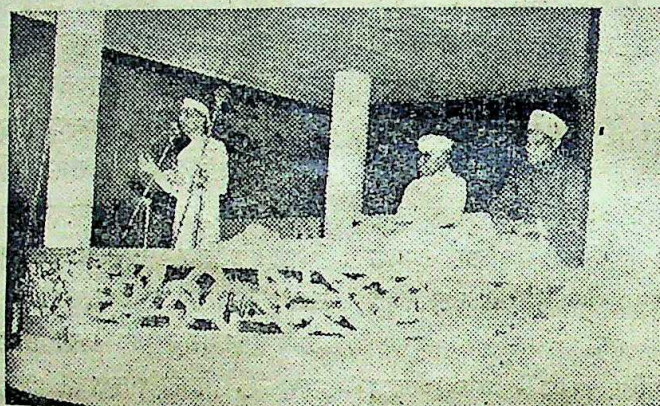
मध्य प्रदेश के वित्तमंत्री माननीय श्री ब्रिजलालजी बियाणी दीपावली सम्मेलन के अवसर पर भाषण देते हुए। मंच पर प्रगति समाज के अध्यक्ष श्री बंकटलालजी बद्रुका तथा हैदराबाद के मुख्य मंत्री माननीय श्री बी. रामकृष्णराव बैठे दिखाई दे रहे हैं।

बरार केसरी श्री ब्रिजलालजी बियाणी समाज के कर्मठ नेता होने के साथ साथ सफल राजनीतिज्ञ हैं। राजनीति एवं समाज इन दोनों को सामने रख कर आपने समाज को उपदेश किया कि उसे अब स्वयं भी जागृत होना है और राष्ट्र के उत्थान में भी योग देना है। इसके साथ साथ आपने व्यापारियों को नव वर्ष से अपने बहियों में जनसेवा का खाता खोलने भी कहा। क्यों कि समाज की प्रगति का तथा देश के उत्थान का मार्ग इसी में निहित है ऐसी उन की धारणा है जो सत्य पर आधारित है। इस उपदेश का व्यापारी समाज में बहुत प्रभाव पड़ा। दीपावली सम्मेलन के बाद कई दिन तक इसी की चर्चा होती रही और कइयों ने इससे प्रेरणा पाई। राजस्थानी प्रगति समाज का यह इस दिशा में पहला प्रयत्न होने पर भी आशा से अधिक सफल रहा, इस लिए प्रगति समाज की ओर समाज का ध्यान अधिकाधिक आकृष्ट हुआ। अब इस आकर्षण का लाभ उठाते हुए समूचे समाज को एक सूत्र में लाकर उसे प्रगति की ओर बढाने में प्रेरित करना और समय समय पर उसका मार्ग दर्शन करना इस संस्था का काम है। कार्यकर्ताओं की लगन और इनके उत्साह को देख कर इस की पूरी पूरी संभावना भी है और भी समाज को इसमें विश्वास हो गया है। समाज के हार्दिक सहयोग के कारण अपनी प्रथम सफलता से प्रोत्साहित होकर प्रगति समाज ने तेजी से आगे बढने की सोची है। १५ दिसम्बर से २२ दिसम्बर तक प्रगति सप्ताह

राजस्थानी प्रगति समाज की
इस वर्ष की योजना

(अनुमानित खर्च रुपयों में)

१. मारवाडी विद्यार्थीगृह का भवन १०० ०००
२. मारवाड़ी विद्यार्थी गृह का फर्नीचर ३०००
३. मारवाड़ी विद्यार्थी गृह पर प्रति वर्ष खर्च ९०००
४. राजस्थानी हिन्दी पुस्तकालय बेगमबाजार का भवन ४०,०००
५. राजस्थानी हिन्दी पुस्तकालय बेगमबाजार के लिए नई पुस्तकें ५०००
६ मारवाड़ी हिन्दी पुस्तकालय सुलतान बाजार के भवन का विस्तार ५०००
७. मारवाड़ी हिन्दी पुस्तकालय सुलतानबाजार के लिए नई पुस्तकें ५०००
८. गश्ती पुस्तकालय के लिए प्रारंभिक खर्च १०,०००
९. गश्ती पुस्तकालय के संचालन में प्रति वर्ष ३०००
१०. मारवाड़ी हिन्दी विद्यालय हशमतगंज का भवन विस्तार १५,०००
११ मारवाड़ी हिन्दी विद्यालय की विशेष व्यवस्था पर प्रति वर्ष ६०००
१२ मारवाड़ी हिन्दी विद्यालय बेगमबाजार का भवन ५००००

मनाकर इसमें संगठन कार्य पूरा करने का निश्चय हुआ है। इस सप्ताह में हैदराबाद और सिकन्दराबाद के विभिन्न मुहल्लों में सभाएं बुलाकर प्रचार कार्य का आयोजन हुआ है। आशा है कि समाज इस में पूरा योग देकर इसे और प्रोत्साहित करेगा। अधिक से अधिक संख्या में इसकी सदस्यता बढाकर इसे सबल बनावेगा।

प्रगति समाज के सामने मौजूदा व्यापार तो शोचनीय स्थिति को सुधारने तथा बढती हुई बेरोजगारी को दूर करने की योजना भी है। इसके लिए सहकारी व्यापार पद्धति पर व्यवसाय संचालन विचाराधीन है। इसे सफलता पूर्वक चलाने के लिए एक प्रश्नावली बनाकर विचार संग्रह एवं सुझाव मंगवाये जा रहे हैं जिससे कि कार्य में सुलभता है। अतः प्रत्येक व्यापारिक भाई से तथा इसमें रुचि रखने वाले महानुभावों से सानुरोध निवेदन है कि वे इसमें सहयोग दें। प्रगति समाज के कार्यालय से प्रश्नावली मंगा लें तथा यथा शीघ्र उसकी पूर्ति कर भेज दें। प्रगति समाज का कार्यलय सदासुख जानकीदास बिल्डिंग्स सुलतान बाजार में है। सदस्यता पत्र भी कार्यालय से प्राप्त किये जा सकते हैं।

(पृष्ठ २४ का शेष)

सम्पत्ति के मूल्य में से कुछ कटौतियां

सम्पत्ति शुल्क के लिए सम्पदा का मुख्य मूल्य आंकत समय कई प्रकार के ऋणों एवं अन्य खर्चों की रकम छोड़ दी जायेगी जैसे (१) क्रिया-कर्म का खर्च, जो १,००० रु. से अधिक न होना चाहिए, (२) वास्तविक ऋण तथा दूसरी रकमें जो देनी हैं; (३) स्त्री धन जो ५,००० रु से अधिक न होगा और (४) विदेशी सम्पत्ति के प्रबन्ध या वसूली में होने वाला खर्च जो सम्पत्ति के मूल्य के ५ प्र. श. से अधिक न होना चाहिये। मृत्यु के समय तक जो ऋण बाकी होंगे, वे ऋण समझे जायेंगे और उनकी राशि संपदा के मूल्य में से काटी जा सकेगी।

शुल्क की दरें खण्डों के हिसाब से निश्चित की गयी हैं। मिताक्षरा, मरुमक्कतायम या अलियसंतान विधि (कानून) द्वारा शासित हिन्दू परिवार की सम्पत्ति में अधिकार मिलने पर, ५०,००० रु. तक के पहले खण्ड पर कोई शुल्क न देना होगा। दूसरी संपत्तियों के लिए छूट की यह सीमा १,००,००० रु. रखी गयी है।

शुल्क से छूट

निम्न लिखित संपत्तियों को शुल्क से छूट मिलेगी, पर शुल्क की दर निश्चित करने के लिए मुख्य मूल्यांकन में उन्हें सम्मिलित रखा जायगा :—

(क) सार्वजनिक धर्मार्थ कार्यों के लिए, मृत्यु से पहले के छः महीनों के भीतर दिये गये दान, जो २,५०० रु. तक हो सकते हैं।

(ख) अन्य कार्यों के लिए मृत्यु से दो वर्ष के भीतर दिये गये दान, जो १,५०० रु. तक हो सकते हैं।

(ग) संपत्ति शुल्क के भुगतान के लिए बीमे की पालिसी मिली रकमें भुगतान किये जाने वाले शुल्क के बराबर की मात्रा में सरकार के नाम की हुई हों पर ५०,००० रु. से अधिक न हों।

(घ) सम्पत्ति शुल्क भुगताने के लिए सरकार के पास जमा किया गया रुपया, भुगतान किये जाने वाले शुल्क की मात्रा तक, जो ५०००० रु. से अधिक न हो।

(ङ) मृत व्यक्ति के बीमा का रुपया ५, ००० रु. तक।

(च) बीमे या ट्रस्ट की घोषणा या निश्चय द्वारा किसी संबन्धी लड़की के विवाह के लिए ५,००० रु. से अधिक की रकम मान्य न होगी।

सम्बन्धी लड़की के विवाह के लिए ५,००० रु० से अधिक की रकम मान्य न होगी।

मुख्य मूल्यांकन की रकम में उपरोक्त मदों की जो रकम में शामिल होगी, उन पर औसत दर के हिसाब से छूट दी जायगी। यदि एक ही संपत्ति का उत्तराधिकार द्वारा हस्तांतरण १,२,३,४ अथवा ५ वर्षों के भीतर हो तो उसके शुल्क में क्रमशः ५०,४०,३०,२० अथवा १० प्रतिशत की कमी हो जायगी।

यदि एक मृत्यु के बाद तीन महीनों के भीतर, उसी संपत्ति के सबन्ध में और मृत्युएं होंगी, तो ऐसी दशा में पहली वाली मृत्यु के लिए संपत्ति शुल्क चुकाना होगा।

यदि मृतलेख प्रमाण पत्र उत्तराधिकार संबंधी प्रमाण पत्र आदि लेने के लिए किसी भी राज्य में कुछ कोर्ट फीस देनी पड़ी होगी, तो उसकी रकम भी छोड़ी जा सकती है।

हमारा प्यारा जवाहर

बालको ! तुम्हें मालूम है जवाहरलाल नेहरू कौन हैं ? संसार का ऐसा कोई व्यक्ति न होगा जो इन्हें न जाने। इनकी आज जन्म गांठ है। आज ता. १४ नवम्बर १९५३ को इन्होंने ६४ वर्ष समाप्त कर ६५ वें वर्ष में प्रवेश किया है।

इनके पूर्वज काश्मीर के रहने वाले काश्मीरी ब्राह्मण थे। इनके पूर्वजों का मकान काशमीर की किसी नहर के पास होने से यह नेहरू कहलाए। इनके पिता का नाम मोतीलालजी नेहरू है।

मोतीलालजी नेहरू ने प्रयाग में आकर निवास किया। वे वकील थे, उनकी वकालत खूब चमकी हजारों रुपया रोजाना कमाते थे। बडे ही अमीराना ठाठ बाट से रहते थे। उस जमाने में भी उनके कपड़े पेरिस से धुल कर आते थे।

जवाहरलाल का जन्म प्रयाग में हुआ। मोतीलाल जी नेहरू को बड़ी खुशी हुई। खूब धूम धाम से जन्मोत्सव मनाया। पश्चात् पढाई आदि का प्रबन्ध श्री राजा महाराजा के राजकुमारों से बढ़कर किया ! यहां की पढाई समाप्त होने पर इन्हें विलायत में शाही स्कूल में शरीक किया गया। कई मास्टरों से पढाई होती थी। जब नेहरूजी लंदन से पढ़कर वापिस आये तो इन पर महात्मा गान्धी का प्रभाव पड़ा। वे राष्ट्रीय आन्दोलन के सेनानी बन गये। यदि उन दिनों नेहरूजी चाहते तो ब्रिटिश सरकार उनको वाइसराय भी बना देती परन्तु स्वराज्य आन्दोलन से चिढ़कर इसने नेहरूजी को कई बार गिरफ्तार किया और जेल को भेजा।

पं. मोतीलाल नेहरू पहले पक्के राज भक्त थे यानी अंग्रेजों का साथ दिया करते परन्तु अपने पुत्र जवाहरलाल से उनको प्रेरणा मिली और वे भी अंग्रेजों से विरुद्ध होकर देश भक्त बन गए। उन्होंने वकालत छोड़ कर स्वराज्य आन्दोलन में भाग लिया। फिर तो मोतीलालजी नेहरू ने खानदान भर में देशभक्ति का मंत्र फूंक दिया, जिससे सारा कुटुम्ब देश भक्त बन गया। यहां तक कि स्त्रियों में भी देश भक्ति की भावना कूट कूट कर भर दी। विलायती कपड़ों का बायकाट कर के शुद्ध खादी धारण की। स्वदेशी वस्तुओं का ही अधिक प्रयोग होने लगा।

नेहरूजी की बहिन विजया लक्ष्मी पंडितने भी स्वराज्य प्राप्ति में जो पार्ट अदा किया वह भारत के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों से लिखने योग्य है। आज भी ये संसार के राष्ट्र संघकी अध्यक्षता कर रही हैं। यह पद स्त्रियों को इसके पहले कभी नहीं मिला यह गौरव भारतको है।

पं. जवाहरलाल नेहरू जैसे लगनशील व्यक्ति हैं कदाचित ही कोई होगा। यही कारण है कि आज जवाहरलाल जी नेहरू भारत के ही नहीं विश्व के नेता हो गए हैं। इन्हें शांति के दूत समानता के हामी अभय स्पष्ट वक्ता कहा जाता है। इनमें अनोखापन यह है कि पश्चिमी ढंग पर पढाई होने पर भी इन पर पश्चिमी सभ्यता का असर न पड़कर भारतीय प्रभाव ही अधिक पड़ा।

स्वराज्य का आन्दोलन ६०-६५ वर्ष तक चलता रहा और हजारों लाखों देश भक्तों की बलि चढ गई तब कहीं अंग्रेज सीधे हुए और इन्होंने सब नेताओं को छोड़ कर नेहरू जी को ही भारत का मन्त्री मंडल बनाने का निमन्त्रण दिया।

पं. जवाहरलाल नेहरू ६४ वर्ष के होने पर भी एक नवयुवक सा उत्साह रखते हैं। और बारा चौदा घंटे काम करते हैं। रात दिन देशोन्नति की चिंता लगी रहती है। पंच- वर्षीय योजना को शीघ्रातिशीघ्र सफल देखना चाहते हैं। रात दिन देश की चिन्ता बनी रहती है।

बालको ! पं. जवाहरलाल विश्व नेता होते हुए हमारे देश के प्रधान मन्त्री हैं। भारत के सब राज्यों का सूत्र उनके हाथ में है। स्वराज्य प्राप्ति के पश्चात संसार में भारत को जितना ऊंचा उठाया है यह अवर्णनीय है। आपके ही प्रयत्न से भारत इतना ऊंचा उठा है। यह बराबर राष्ट्र पिता महात्मा गांधी के पद चिन्हों पर चल रहे हैं। इन से कोई अप्रसन्न नहीं हैं।

हम सब ईश्वर से यही प्रार्थना करें कि हमारे प्रधान नेता की उम्र बड़ी हो।

तुम सलामत रहो हजार बरस।
हर दिन के हो पचास हजार बरस॥

विशाल आन्ध्र

१ मित्र--विशाल आन्ध्र होना ठीक है या नहीं ?

२ मित्र—विशाल आन्ध्र, विशाल महाराष्ट्र और विशाल करनाटक बोलने में तो बड़े अच्छे मालूम होते हैं ?

१ मित्र--परन्तु क्यों आ गया इस में ?

२ मित्र--अरे भाई पहले नवोदित आन्ध्र को तो सफल होने दो। कांग्रेस ने प्रयोग रूप में इस प्रान्त को बनाया है। इस के बाद तो सब भाषावार प्रांत रचना हो जायगी।

३ मित्र—मैं कहता हूं कि हम किधर जा रहे हैं। हम अपनी सारी शक्ति इसी भाषावार प्रान्त रचना में लगा देंगे तो बाकी महत्त्वपूर्ण रचनात्मक कार्य का क्या हाल होगा ?

४ मित्र—समझ में नहीं आता अपना प्रान्त अपनी भाषा करते रहेंगे तो देशोन्नति का कार्य किस तरह चलेगा।

२ मित्र--यदि भाषा का भी हिसाब लगाया जाय तो हिन्दी प्रान्त कितना बड़ा होगा यह मालूम है ?

भारत पाकिस्तान सम्बन्ध

१ मित्र--पाकिस्तान अमेरिका के सहयोग से सैनिक बल बढा रहा है और अपने को आप उन्नति के शिखर पर चढा रहा है।

२ मित्र--क्या यह नेहरू लियाकत समझौते के खिलाफ नहीं है ?

३ मित्र- सच पूछो तो पाकिस्तान की निय्यत साफ नहीं है।

१ मित्र--अब पाकिस्तान में सैनिक अड्डे बनेंगे।

२ मित्र—और कोरिया की सी स्थिति निर्माण करेंगे।

४ मित्र--दूसरे की चाल में आकर पडौसी देश के खिलाफ करना बुद्धिमानी नहीं। अपने आप को इस तरह बेचते हैं कहीं !

१ मित्र--हमारे प्रधान मन्त्री भी तो इस स्थिति से चिन्तित हैं मगर चिन्ता करने से क्या लाभ। हमारे पुराने वाक्य को याद करलेना चाहिए शठम कुर्यात् जैसे को तैसा बनाना चाहिए। हमको सावधान रहना चाहिए। मित्र बनकर जो शत्रु का कार्य करते हैं और दोस्ती का दम भरते हैं सीधे नरक में पडते हैं।

ढाई चावल की खिचडी

मित्र १--अरे मित्र यह ग्लान कौन है ?

मित्र २- एक अफ्रिका का हबशी है। वह खुद तो गोरा है किन्तु उसका दिल काला है। अपने आप को ऊंचा समझता है। जिस प्रकार भारत में कोई जमाने में ब्राह्मण अपने को उच्च समझते थे उसी प्रकार डाक्टर ग्लान अपने आपको ब्राह्मण समझता है।

मित्र ३--तो क्या वह मांस मछली नहीं खाता ? शराब नहीं पीता।

मित्र ४—अरे इस जमाने में मांस मछली शराब प्रयोग करने वाला ही बडा है।

मित्र १ —अच्छा तो वह क्या करता है।

मित्र २—वह मनमाना शासन करता है, वहां हिन्दुस्तानियों के लिए अलग कायदा है तो अफ्रिकी लोगों के लिए अलग और गोरों के लिए अलग।

मित्र १—तो २-३ तरह का कानून चलता है ?

मित्र २—हां इसीलिए तो वहां के अफ्रिकी तथा हिन्दुस्तानी लड़ते हैं और सत्याग्रह करते हैं। दुनिया के सब लोग उस पर थूकते हैं परन्तु वह अपनी २॥ चावल की खिचडी अलग पकाता है।
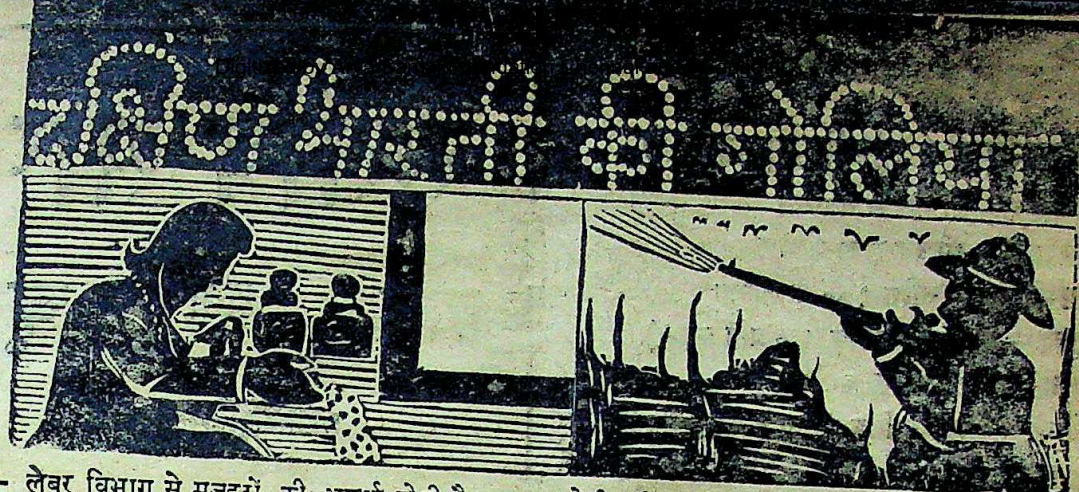
— लेबर विभाग से मजदूरों की भलाई होती है यह गोलीबाज मानने के लिए तैयार नहीं है। क्यों कि मजदूरों का भला तो नेक सलाह से हो सकता है खाली पक्ष लेने से नहीं। कहते हैं निश्चित की हुई मजदूरी से कम नहीं देना, चाहे मजदूर भूखों मरे पर कम दाम में काम न करें। ठीक है जान जाए पर आन न जाय।

— इंकमटेक्स आफिसर से एक व्यापारी ने कहा कि आप हम से सही फायदे पर टेक्स लें, परन्तु आफिसर ने जवाब दिया लाखों का लेनदेन होने पर हजारों का फायदा होता ही है नुकसान कभी नहीं होता। व्यापार नुकसान के लिए होता है या फायदे के लिए। यह नशान गोलीबाज की गोली से भी अधिक जोरदार है।

— पाक अमरीकी फौजी गटबन्धन भारत के लिए ही नहीं एशिया के लिए भी खतरनाक है। क्यों खतरनाक है? इसी लिए न कि गोलियां चलेंगी। गोलियां चलाना तो कोई बुरी बात नहीं है। अजी फिर सेना किसलिए है केवल इसी लिए ही न कि गोलियां खाना और गोलियां मारना। उसका कर्तव्य है।

— भाषावार प्रान्त रचना के विषय में देश के नेताओं में मतभेद है। और कोई कहता है भाषावार प्रान्त शीघ्राति-शीघ्र हो जाय। और कोई कहता है भाषावार प्रान्त रचना विष है। इस लिए धैर्यता से काम लें नव निर्माण आंध्र को सफल होने दें। इस समय तो इस में भी मतभेद की गोलियां चल रही हैं। कोई गोली नशाने पर नहीं बैठती। पदाधिकारियों में पद पद पर मतभेद चलता है।

— ता. १५-११-५३ को कलकत्ता दिल्ली डाकगाडी पर विद्यार्थियोंने हमला कर दिया। ठीक है विद्यार्थी गण यदि ऐसे नशाने न लगाएंगे तो देश की रक्षा किस प्रकार होगी? विद्यार्थियों को ऐसे नशाने बाजी क रिहरसल शुरू करनी चाहिए परन्तु पुलिस आते ही मैदान से भाग जाना ठीक न था। जब हमने नशाना ठीक लगाया तो भय किसका?

— पाकिस्तान के भावी ढांचे पर खेद प्रकट करते हुए हमारे मन्त्रीजी ने उनके संविधान की समालोचना की है तथा मित्रता के नाते नेक सलाह दी है। और कहा है मानवता और पडौसी देश का समयानुसार न चलना दोनों देशों में विघ्न उत्पन्न कर सकता है। इसकी चिन्ता हमको है या उन को भी।

— जनगणना के पदाधिकारों का कहना है कि भारत की जनसंख्या की वृद्धि सीमित करने पर ध्यान न दिया तो सन १९६१ में ४१ करोड १९७१ में ४६ करोड और सन १९८१ में ५२ करोड की संख्या हो जायगी। अतः हर गृहस्थी का कर्तव्य है कि बच्चे कम उत्पन्न करे। विज्ञान का जमाना है क्या नहीं हो सकता?

— परन्तु हमारी राय तो यह है कि यह जनसंख्या कदाचित अन्न की कमी के कारण रोकने की सलाह दी जारही; है परन्तु यदि प्रत्येक विद्यार्थी को गांवों में खेती बाड़ी बढ़ाने के लिए भेज दिया जाय तो कदाचित् यह मसला हल हो जायगा। मेहनत से बावलियां खोदी जा सकती हैं और पंजर जमीन भी खेती योग्य हो सकती है।

— इन दिनों में ऐसी खबरें अखबारों में आई थीं कि कई युवतियां निराहार रहकर सब कुछ कार्य कर सकती हैं। यदि यह सच है तो बहुत बड़ी समस्या हल हो सकती है। किन्तु उन से पूछा जाय कि वह कौनसी दवा की गोलियां हैं जिन के सेवन करने से यह क्षमता प्राप्त हुई। बिना कुछ खाए शरीर को शक्ति उसी प्रकार रहना यह तो नया शोध है।

साहित्य-परिचय

नवनीत (हिन्दी डाइजेस्ट)

संचालक—श्री गोपाल नेवटिया
सम्पादक—श्री रतनलाल जोशी
पृष्ठ—विज्ञापन सहित १५० के लगभग
मूल्य—१०) रुपये वार्षिक, एक प्रति का १)
पता—३४१ तार देव बंबई नं. ७

यों तो मैं सैंकडो मासिक देखता हूँ परन्तु नवनीत हाथ में लेने के बाद इसे छोडने को जी न चाहा। इसमें मैंने कई खूबियां देखीं। एक तो इसका साइज ही निराला है। इस में कागज फारेन चिकना लिया गया है जो कीमती होता है। सम्पादन भी योग्यता पूर्ण किया जाता है। लेख आदि पर जो नोट आदि दी जाती है वह सार गर्भित होती है शीर्षक विशेष ढंग से दिये जाते हैं। जगह जगह टिएट पर छपा हुआ मैटर देखने को मिलता है। इसकी छपाई सफाई को देखकर कहना पड़ता है कि ऐसी छपाई बम्बई और कलकत्ते के कुछ मुद्रणालयों में ही होती है!

हमारे सामने दीपावली विशेषांक है। इस में १६० पृष्ठों की पाठ्य सामग्री है जो अकसर दो रंग में छपी हुई है। लेखों का चुनाव भी अच्छा हुआ है। इस में कुल ४५ लेख हैं। इन में कहानियां, कविताएं, संक्षिप्तसार तथा उपदेशप्रद लेख हैं। देश विदेश का परिचय व ज्ञान विज्ञान की चर्चा पढ़ने योग्य है। भारत के आधुनिक चाणक्य श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य की एक सुन्दर कहानी इस में दी गई है। मस्तिष्क की महिमा, अद्वितीय पिता पुत्र, प्राचीन भारत के समुद्री व्यापार, अमरीका की झांकी, उर्दू के आदि कवि आदि लेखों से कुछ न कुछ मिलता है। अंग्रेजी, फ्रेंच आदि की कहानियों का अनुवाद भी इस में दिया गया है। प्रत्येक लेख की विवेचना तो हो नहीं सकती परंतु इतना जरूर कहा जा सकता है कि संपादन योग्यता पूर्ण होता है। छपाई सफाई में नवीनता और विशेषता पाई जाती है। नवनीत वास्तव में नवनीत है।

हम तो संचालक श्री गोपालजी नेवटिया को धन्यवाद देते हैं कि वे ऐसी सुन्दर पत्रिका निकालकर हिन्दी जगत की कमी को पूरा कर रहे हैं। इस के परिश्रम की हम दाद देते हैं। इस में विज्ञापन भी काफी जुटा लिया गया है। यह बात पत्रिका के मजबूत नीव की द्योतक है। इससे यह निश्चयात्मक रीति से कहा जा सकता है कि यह हिन्दी जगत की विशेष सेवा कर सकेगी।

संचालक, 'दक्षिण भारती'

सभा की कर्नूल विजय

— चतुर्वेदी श्रीराम शर्मा, हैदराबाद

सिकन्दर महान् जब मर रहा था, तब उसे एक महान दुःख सता रहा था। कहा जाता है कि मरने से पूर्व उसने अपने साथियों से कहा था कि खेद है कोई अन्य दुनिया अवशिष्ट नहीं जिस पर वह विजय प्राप्त कर सके। उसके इस कथन में कितना अहंकार था और कितना यथार्थ—यह तो अब तक सब पर प्रकट हो चुका है क्योंकि उसके द्वारा भारत-विजय का कार्य भी पूर्ण न हो सका था। नेपोलियन और हिटलर जैसे विजयाकांक्षी व्यक्तियों को रूस में अच्छा पाठ पढ़ाया गया और उनका अन्त किस प्रकार हुआ यह भी किसी से छिपा नहीं है। फिर भी हैदराबाद राज्य हिंदी प्रचार सभा ने दक्षिण विजय के लिए दस हजार रुपये का बजट स्वीकार किया है, यह जान कर आश्चर्य होता है।

सभा के बजट के आँकड़े अब की बार सार्वजनिक रूप से उनके मुख-पत्र 'अजन्ता' में प्रकाशित तो नहीं किये, मगर इधर-उधर बातचीत के सिलसिले में जो तथ्य प्रकट किये गये उन से स्पष्ट होता है कि सभा का ध्येय अब कुछ बदल चुका है। केवल हैदराबाद राज्य में ही हिन्दी प्रचार का कार्य कर अब वह संतुष्ट नहीं रह सकती और अपनी बढ़ती हुई आमदनी से यदि वह इसी समय अपना विस्तार राज्य के बाहर न कर सकी तो भविष्य में उसके प्रकाशनों की चार लाख की योजना की सफलता में बाधा पड़ना संभव है। कदाचित् इन्हीं कारणों से सभा ने दक्षिण की ओर पैर फैलाना आवश्यक समझा है और इसीलिए कार्य समिति ने इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए १०००० रु. की स्वीकृति भी प्रदान की है।

दक्षिण विजय का श्रीगणेश कर्नूल विजय से किया गया है। जब आन्ध्र राज्य का निर्माण हो रहा था, तब कर्नूल में अच्छा उत्साह था। जनता ने वहां प्रर्याप्त धन एकत्रित कर अच्छे समारोहों की योजनाएं बनाली थीं। राजधानी उपसमिति का सराहनीय कार्य अब तक दर्शकों की प्रशंसा का हेतु बना हुआ है। इसी महायज्ञ में हैदराबाद राज्य हिन्दी प्रचार सभा ने भी अपने २००० रु. की आहुति देकर अपने अस्तित्व का अत्यन्त संक्षिप्त परिचय कर्नूल निवासियों को दिया।

हैदराबाद राज्य हिन्दी प्रचार सभा ने इस अवसर पर एक हिन्दी-उर्दू-तेलुगू कवि-सम्मेलन का विशाल आयोजन कर हैदराबाद से कुछ चुने हुए कवियों को आन्ध्र राज्य की स्थापना देखने का सुअवसर प्रदान कर उन्हें विशेष रूप से उपकृत किया इस में कोई सन्देह नहीं। सभा के कुछ अन्य कार्यकर्ताओं को भी इस अवसर पर कर्नूल भ्रमण का अवसर मिला, यह भी प्रसन्नता की बात कही जा सकती है। परन्तु इसके द्वारा कौनसा हिन्दी प्रचार का कार्यक्रम आगे बढ़ा, यह समझना मेरे लिए कठिन है। कर्नूल में हमारी सभा अपनी विजय पताका फहरा आयी इस से हम प्रसन्न हो सकते हैं; पर वास्तव में हम वहां कौन सा प्रचार कार्य ऐसा कर आये हैं; जो वहां पहले नहीं था, और अब हो रहा है।

कहा जाता है कि सभा की कर्नूल में शाखा स्थापित हो गयी। मैं सभा की शाखा स्थापित होने का अर्थ सदैव ही यह मानता हूं कि उस स्थान में हिन्दी प्रचार के लिए दृढ संकल्प कतिपय महानुभावों का एक संगठन बन गया, जो हिन्दी की पाठशालाएं, वर्ग, पुस्तकालय, वाचनालय तथा अन्य ऐसे आयोजन कर हिन्दी का सन्देश घर-घर पहुंचाने के लिए प्रयत्नशील रहेगा।

परन्तु कर्नूल शाखा के संबन्ध में जो समाचार विश्वस्त रूप से प्राप्त हुए हैं, वह इस से सर्वथा भिन्न हैं। वहां के कतिपय चन्दा-चट-चतुर व्यक्तियों से सम्पर्क स्थापित कर सभा के पैसे को पानी की तरह बहाकर यदि हम

घोषणा करें कि हमने कर्नूल पर विजय प्राप्त करली तो यह हमारी भूल है।

यदि सभा के प्रचार द्वारा कर्नूल निवासियों में हिन्दी के प्रति किंचित भी अनुराग जगा होता, तो सभा के कार्य की अवश्य सराहना होती। मगर कर्नूल निवासियों के मुख से यह सुन कर कि यह तो मारवाड़ियों का पैसा है, जितना हड़प सको, उतना ही उत्तम है—मुझे इस प्रचार कार्य की योजना पर बड़ी घृणा हुई। यदि सभा के कार्यकर्ता कर्नूल निवासियों के निमंत्रण पर वहां पधारते, कुछ वहां के कार्यकर्ताओं में हिन्दी के लिए उत्साह जागा तो कर्नूल विजय का कुछ अर्थ था। लेकिन जब कर्नूल में सभा करने के लिए शतरंजियां हैदराबाद से लेकर जानी पड़ें, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि स्थानीय जनता में किस सीमा तक हिन्दी-प्रचार की प्रेरणा जाग्रत हो चुकी है।

सभा के दक्षिण विजय के कार्यक्रम को हम प्रोत्साहन दे सकते थे, मगर हमें दुःख है कि अभी तक हैदराबाद राज्य में भी प्रचार का कार्य रुपये में पाव आना तक भी पूर्ण नहीं हो सका है। कुछ दिन पूर्व सूर्यपेठ के एक पत्र से पता चला कि वहां कोई हिन्दी का पुस्तकालय नहीं है। जो एक दो अध्ययनशील व्यक्ति वहां भाग्य के फेर से जा पड़े हैं, पुस्तकों के अभाव में दम घुटने जैसा अनुभव कर रहे हैं। अनुमान है कि जो स्थिति सूर्यपेठ में है, वही हैदराबाद राज्य के अन्य स्थानों में भी है। स्वयं हैदराबाद नगर में भी सभा का कोई उत्तम पुस्तकालय नहीं है, जहां से सहायता प्राप्त कर कोई हिन्दी का विद्यार्थी कुछ कुछ ज्ञानार्जन कर सके। हर्ष का विषय है कि शिक्षा संचालक महोदय इस वर्ष पुस्तकालय-योजना पर विशेष ध्यान दिया है। सुना है इस योजना में हैदराबाद राज्य हिन्दी प्रचार सभा भी अच्छा सहयोग दे रही है। यदि सचमुच सभी कुछ उत्तमोत्तम पुस्तकें विभिन्न पुस्तकालयों में पहुंचा रही है, तो हम मुक्त कंठ से उसके इस की कार्य की सराहना करेंगे। और यदि सभा ने इसके द्वारा अपने सड़ियल प्रकाशनों को कचरा कुण्डी में न फेंक कर पुस्तकालयों की शोभा बढाने की व्यवस्था कर ली है, तो उसका कार्य उतना ही निन्दनीय माना जायगा।

मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि हिन्दी प्रचारार्थ सभा के लिए काफी क्षेत्र हैदराबाद में ही अधूरा पड़ा है। सभा के कर्णधार जिन्हें हैदराबाद राज्य से विशेष लगाव होना चाहिए क्यों नहीं, अपने प्रचार कार्य को दृढता के साथ राज्य में फैलाते? क्यों वह इधर-उधर मारे-मारे फिरते हैं? सुना है कि सभा की एक शाखा राज्य की राजस्थान में भी खुल गयी है। सभा की राजस्थानी शाखा उतनी ही उपहासास्पद है, जितना कि उसका दक्षिण विजय का प्रयास। क्यों कि उसका दक्षिण में तो हिन्दी प्रचार का ठोस कार्य अनेकों वर्षों से हो ही रहा है। सभा कहां पहुंच कर हिन्दी कार्यकर्ताओं में फूट फैलाने के सिवा और कौनसा नया काम कर सकेगी। हां, हैदराबाद के कार्यकर्ताओं में दक्षिण भ्रमण की अभिलाषा जाग्रत हुई है और निजी साधनों से यदि इस अभिलाषा की पूर्ति संभव नहीं है–तो सभा के बजट में दस हजार क्या तीस हजार रुपये भी दक्षिण विजय के लिए स्वीकृत किये जा सकते हैं। क्या सभा की राजस्थानी शाखा का भी यही रहस्य है। सुना है कि सभा के वर्तमान प्रधान-मंत्री का मूल निवास स्थान वहीं कहीं संभव है कि अपनी घरेलू यात्राओं का टी. ए. सभा के नाम मढने के लिए सभा की राजस्थानी शाखा की स्थापना आवश्यक मानी गयी है।

अगर सभा का यही रवैया रहा तो संभव है। निकट भविष्य में सभा को लंदन शाखा भी आवश्यक मानी जायगी। हिन्दी प्रचार का कार्य अपने क्षेत्रों में ही क्यों सीमित रखा जाए, विदेशों में भी तो हिन्दी प्रचार उतना ही आवश्यक है। यदि सभा को सरकारी तथा गैर सरकारी सहायता इसी प्रकार मिलती रही, यदि सभा के परीक्षाओं से इसी प्रकार आकाशी दृष्टि होती रही, यदि सभा के प्रकाशनों का इसी प्रकार मनमाना मूल्य वसूल होता रहा, तो सभा के लिए अपने प्रधान-मंत्री को लंदन की यात्रा की व्यवस्था करना कठिन न होगा। कदाचित् इसी भावना से सभा के प्रधान-मंत्री इन दिनों बड़ी लगन के साथ अंग्रेजी सीख रहे हैं और अपनी प्रगति का परिचय यदा

(शेष पृष्ठ ४१ पर)

नक्कारखाने में तूती की आवाज़

— *बालकृष्ण लाहोटी, 'कृष्ण', हैदराबाद*

'दक्षिण भारती' के गतांक में एक लेख 'सरकार को लेबर महकमा उठा देना चाहिए, छपा था, जिसे मैं तो केवल नक्कारखाने में तूती की आवाज समझता हूं। दुनिया आज कल श्रमिकों की है और होनी भी चाहिए। श्रम का महत्व विज्ञ ही समझते हैं, परन्तु श्रमिकों में अधिक पढे-लिखे न होने से उन में पहले ही सभ्यता और दिमाग की कमी होती है और फिर बन्दर को बिच्छू खा जाय तो उसका तमाशा देखने योग्य होता है। वह बांसों उछलने लगता है।

इस हनुमान (बन्दर) की उपमा से श्रमिक भाई नाराज न हों। मैं जो कुछ कह रहा हूँ वह सभी श्रमिकों के लिए नहीं है। यह उपमा केवल उन अधिकांश अज्ञानी श्रमिकों पर लागू होती है, जो मालिक और सरकार के विरुद्ध नारे लगाते हैं-"हमारी मांगें लेकर रहेंगे", "दुनिया के मजदूर एक हैं", "गद्दारी मक्कारी छोड दो" "बोनस भत्ता जोड दो" आदि २। कारखानों की वास्तविक परिस्थिति को देखे बिना ही ये लोग आन्दोलन चलाने लगते हैं। हां, समझ-बूझकर कहें तो वे वास्तव में कारखाने के भागीदार बन सकते हैं। इसका अर्थ यह नहीं है कि मांग न की जाय। इन्कमटैक्स विभाग में आय अधिक और खर्च कम है। वहां के कर्मचारी कहें कि हमें आधा हिस्सा दे दो तब सरकार का कार्य कैसे चलेगा? वैसे ही कारखानों या लिमिटेड कम्पनियों के शेयर होल्डरों को कुछ न मिले तो कारखानों और कंपनियों में पैसा कौन लगाएगा?

मैं समानता का शत्रु नहीं हूं। समानता बहुत अच्छी चीज है परन्तु वास्तव में समानता बहुतेक बातों में नहीं है। शरीर के अंग-प्रत्यंग तथा उन में स्थित हड्डियां भी बराबर नहीं है। दुनिया की प्रत्येक वस्तु छोटी-बडी है। पृथ्वी पर अनेकों देश हैं, वे भी बराबर नहीं हैं। प्रत्येक देश की भौगोलिक स्थिति में भी भिन्नता है। तब भी बहुत-सी बातों में समानता रह सकती है।

मालिक मजदूर का दर्जा संसार में सदियों से चलता आया है। आज भी है, पर मजदूर मालिक का कहा मानने अब तैयार नहीं हैं। इस से व्यवस्था में तथा कार्य संचालन में बाधाएं उपस्थित हो रही हैं। आखिर कारखाना भी तो एक विशाल कुटुम्ब का-सा ही तो है। घर के कर्ता-धर्ता की बात उस के आश्रित न सुनें तो गृहस्थी का चलना मुश्किल ही हो जाता है।

आज मालिकों के खिलाफ मजदूर अदालत में जाते हैं। इस से मालिक और मजदूर का पारस्परिक प्रेम, इनकी एक दूसरे के प्रति श्रद्धा, आदर की भावनाएं आदि सब समाप्त हो जाती हैं। यह बात प्रकृति के विरुद्ध है, और जो बात प्रकृति के विरुद्ध होती है उस में बिगाड हो ही जाता है।

लेबर एक्ट के कारण आज प्रत्येक कारखाने की बुरी दशा है। न मजदूर पूरा काम करता है, न मालिक उसका काम पूछ सकता है। मजदूर को अपने काम का इतना गर्व होता है 'कि न भूतो न भविष्यति'। इस कारण वह जो चाहे आंदोलन मचा सकता है। चाहे जो मांगें रख सकता है। फिर तुर्रा यह कि कारखाने के एक दो कर्मचारी किसी यूनियन के सदस्य बन जाते हैं और यूनियन इसी आधार पर सारे कारखाने के मजदूरों की ओर से मांग करती है। और नाहक फितना मचाती है। इसे अन्धेर न कहें तो और क्या कहें! इस में भलाई निहित है या बुराई यह तो समय बतायेगा परन्तु यह साफ है कि जिस देश के लोग कम काम और ज्यादा आराम करते हैं, वह देश कभी आगे नहीं बढ सकता।

यों तो श्रमको सभीने महत्वपूर्ण माना है, परन्तु जहां इस की कद्र नहीं की जाती वहां बेकारी बढती है। श्रमको महंगा करके हर वस्तु को महंगा बनाना यह कहां तक उचित है समझ में नहीं आता। संसार में प्रत्येक प्राणी श्रम से ही जीता है। यदि कोई श्रम न करे तो प्रकृति उसे जिन्दा नहीं रहने देती। यह जमाना अब चला गया

जब कि अमीर लोग बिस्तर पर पडे-पडे हाथ पांव भी दूसरों से धुलवाते और मुंह में निवाले भी दूसरों से ही लेते। ऐसों की संख्या कुछ थी, पर अब वह भी न रही। ऐसे लोग भी चेत गये हैं। मानसिक और शारीरिक श्रम करना इन्होंने शुरू कर दिया है। गरज श्रम सभी करते हैं, फिर कारखानों के श्रमिकों के लिए ही विशेष नियम उप-नियम क्यों? सरकार द्वारा मालिक मजदूर की स्वतन्त्रता में यह व्यर्थ का हस्तक्षेप क्यों?

श्रम जब धन है तो वह कारखानों में बढता जाना चाहिए। पर सरकारकी श्रम नीति के कारण आज वह बढने की जगह घट रहा है। इस में न मजदूरों का लाभ है, न देश का हित है। कारखानों में तो बहुत परिश्रम के साथ काम होना चाहिए। कहीं-कहीं मजदूर चाहता भी है कि दो चार घंटे रोजाना अधिक काम करके कुछ अधिक कमाले पर ऐसा करने में उसे कानून आडे आता है। अधिक काम कर पैसा कमाने की मनाई कानून में है फिर चाहे श्रमिक अपनी यही शक्ति असभ्य व्यवहार और बदचलनी में ही क्यों न गमाये। ओवरटाईम करना हो तो उसके लिए सरकार की इजाजत चाहिए।

कोई आवार्ड बना देता है, और वेतन के पीछे कई दुमे लगा देता है जैसे अलौंस, भत्ता, ग्रेच्युइटी, छुट्टियां आदि। यह कायदा सरकार अपने लिए ही रखती तो अच्छा था। कारखानों को अपने बराबर का बनाती है, यह ठीक नहीं है। कारखानों को तो अपनी परिस्थिति के अनुसार ही चलने देना चाहिए। अन्यथा कारखाने बढने के बजाय घटते ही चले जाएंगे।

कोई तो सरकारी पेन्शन पाते हुए दूसरे कारखाने में रह कर उतना ही अधिकार जमाता है और किसी मेहनती को बिना मजदूरी भूखों मरना पड़ता है। क्या यह सरकार को अच्छा मालूम होता है?

गत यानी २-३ साल के पहले कारखानों की संख्या देखिए और अब की संख्या देखिए। बराबर घटी हुई संख्या मिलेगी। इसका कारण लेबर महकमा ही तो है। इस के कारण कई कारखाने उठ गए और कई उठ जाएंगे। बेरोजगारी दिन ब दिन बढ जायगी। सरकार आखिर कितनों को काम देगी। पंचवर्षीय योजना में कितने भरती करेगी। जिस व्यापारी को देखो सरकार के नाम पर रोता है और अपना धंधा समेट कर रकम को छिपाता है। आज आर्थिक संकट चल रहा है यह क्यों? व्यापारी देखते हैं कि कारखाने खोलना आफत मोल लेना है। यह भावना यदि पूर्णता फैल गई तो देश के नुकसान का अन्दाजा तक नहीं लगेगा। यदि सरकार मालिक मजदूर को स्वतन्त्रता दे दे जैसे कि पहले थी तो विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि कारखानों में धन्धे बढ सकते हैं। जिस मजदूर को जो मालिक ज्यादा देगा, वहीं वह काम करेगा जिस मालिक को जो नौकर अच्छा दिखेगा वह उसे ही रखेगा और जो उसके काम के योग्य नहीं रहेगा, नहीं रखेगा। इसी तरह से हम श्रम का पूर्ण उपयोग ले सकते हैं। केवल श्रमिक की हिमायत करने से ही यह काम पूरा होने वाला नहीं। सरकार फरियादी को बैठी तनखा दिला सकती है या ग्रेच्युइटी आदि दिला कर अलग करवा सकती है, परन्तु रखने के लिए तो मजबूर नहीं कर सकती।

व्यापारियों को नए-नए काम करने के लिए उत्साहित नहीं कर सकती। मेरे ख्याल में तो कोर्ट जिनपर अपने कायदे-कानून लागू करती है उन में मालिक-मजदूर दोनों का ही नुकसान होता है।

इस लेबर नीति से सरकार को भी कटु अनुभव हो रहा है। आए दिन सरकारी कारखानों में भी मांगें बढ रही हैं। हडताले हो रही हैं। काम रुक रहा है। समय-समय पर पुलिस को लाकर काम लेना पडता है। जिस सफाई करने वाली को ५-१० मासिक मिलते थे, उसे ५०) मासिक मिलते हैं फिर भी उनकी मांगें बन्द नहीं हुई। सरकार का कायदा सरकार को भी सताता है परन्तु हमारे देश के कानून बनानेवालों की आंखें नहीं खुलतीं।

मेरा तात्पर्य यह कि श्रम की कद्र जरूर करें परन्तु मालिक-मजदूर के बीच रोडे न अटकाएं। इस कानून को जरा ढीला कर दिया जाय। ताकि नये कारखाने खुलने में बाधा न हो और मौजूदा कारखानों को कम करने या बंद करने की नौबत न आए।

फैक्टरी बनते ही वेतन के पीछे भत्ता, अलौंस का अडंगा लगाना कोई माने नहीं रखता जब कि आम तौर पर केवल वेतन की बात करके रखा जाता है। दूसरी चीजें तो मालिक मजदूर की मर्जी पर छोड दें, तो ठीक है।

इस लेख के पढ़ने वालों का कर्तव्य है कि वे प्रचार कर के देश को लाभ पहुँचाने की भावना उत्पन्न करें। आज कल जो व्यापार में राजनीति घुस गई है उस से बचें। लीडरशिप की बीमारी भी इन मजदूर आन्दोलनों को बहका कर खाजाना चाहती है। यदि इन पर रोक-थाम न हुई तो हानि ही हानि होगी। लीडर बनाने वालों के लिए मजदूर आन्दोलन एक बहुत बडा मसाला है। सारांश कोई सुने या न सुने हम नक्कारखाने में तूती बजाते रहेंगे।

——

(पृष्ठ ३८ का शेष)

कदा हिन्दी प्रचार की सभा में अंग्रेजी बोल कर देते रहते हैं।

राज्य हिन्दी प्रचार सभा की नियमावली के पहले नियमों में ता. १९-१-५३ को जो हेर-फेर किया गया था उसका आशय अब कुछ-कुछ स्पष्ट होने लगा है। पहले सभा का कार्य-क्षेत्र सीमित था। अब सभा का पहला नियम इस प्रकार है:—

" नाम

इस संस्था का नाम " हैदराबाद राज्य हिन्दी प्रचार सभा " होगा आवश्यकतानुसार व्यवहार में इस नाम का योग हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद के रूप में भी हो सकेगा।

विज्ञ पाठक जरा ध्यान दें, इस नियम के भाग में कितनी विजयाकांक्षा समायी हुयी है। लंदन में हैदराबाद राज्य हिन्दी प्रचार की शाखा नहीं खोली जा सकती। इस लिए आवश्यकतानुसार व्यवहार में इस नाम का प्रयोग हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद के रूप में भी हो सकेगा।

यह है सभा के प्रचार का लेखा जोखा जिस के बल पर सभा हिन्दी हितैषिता का दम भरती है। मेरा दृढ विश्वास है कि सभा की यह प्रदर्शनी योजनाएं कभी भी सभा के सम्मान में वृद्धि न कर सकेंगी। अपने क्षेत्र और कार्य को ठीक ठीक पहचानकर सभा यदि आगे बढे तो हिन्दी का प्रत्येक सेवक उसके साथ रहेगा कोरे आडम्बर फैलाने वाले कार्यक्रम सभा के लिए हितकर नहीं हो सकते।

——

लेबर

(१)

होगया लेबर का आफिस एक खेल।
जिससे देखो ! मिट गया आपस का मेल॥
मालिकों-मजदूर की बदली है गैल।
एक दिन हो जायगी यह हर तरह फैल॥
आपसी झगडों को देखा जायगा।
हर तरह से रंग आखिर आयगा॥

(२)

यही मजदूर आन्दोलन बुरा भी है भला भी है।
किसीको राह राहत है किसी को एक बला भी है॥
बड़ी बेचैनियां भी दो तरफ ऐसी कला भी है।
इन्हीं में नेक निय्यत भी है कोई मन चला भी है॥
भली सरकार है मेरी निकाला कानूने लेबर।
हुआ उद्योग में ऐसा कि जैसे दर्रए खैबर॥

तारीखवार
अक्तूबर, नवंबर
मास के
समाचार

विश्व

ता. १. मिश्र की फौजी अदालत ने मिश्र के माजी प्रधान मन्त्री श्री इब्राहिम को मौत की सजा सुनादी।

ता. २. च्यांग ने बर्मा से अपनी चीनी सेनाएं वापिस बुलाने का आदेश दे दिया।

ता. ३. हिन्दचीन और फ्रान्स की फौजों में भीषण युद्ध।

ता. ५. न्यूजीलैण्ड और ब्राजील की आगामी दो वर्षों के लिए शान्ति कौंसिल की सदस्यता स्वीकृत।

ता. ७. मिश्र के माजी मंत्री श्री इब्राहिम फराग को आजन्म कारावास का दण्ड।

ता. ९. पानमुनजोन में भारतीय सेना पर हमला कर कैदियों को फरार करने का असफल प्रयत्न।

ता. ११. ब्रिटिश गयाना में गवर्नर ने कम्युनिस्टों से मिल जाने के अपराध में गयाना सरकार को अवैध घोषित किया।

ता. १३. लंका की नई सरकार की स्थापना। १४ मन्त्रियों के नाम घोषित।

ता. १५. कोरिया में जंगी कैदियों को समझाने का काम प्रारम्भ।

ता. १८. सऊदी अरब के एक सूबे में मार्शल लॉ लागू।

भारत

ता. १. आन्ध्र राष्ट्र की स्थापना। पण्डित नेहरू द्वारा उद्घाटन। चन्दूलाल त्रिवेदी राजपाल नियुक्त।

ता. २. खेरा सत्याग्रह के संबन्ध में अशोक मेहता को इनके ११ साथियों के साथ जेल में भेज दिया गया। शेष एक हजार सत्याग्रहियों को छोड दिया गया।

ता. ३. फिल्मों द्वारा पंचवर्षीय योजना का प्रचार करने के लिए केन्द्र ने ४६ लाख रुपये मंजूर किये।

ता. ६ कलकत्ते में मजदूरों पर लाठीचार्ज, ९ जखमी २९ गिरफ्तार।

ता. ७ पंजाब की नई राजधानी चन्दी गढ का राष्ट्रपति द्वारा उद्घाटन।

ता. ९. नेपाल के राजा त्रिभुवन से प्रधान मन्त्री नेहरू की बम्बई में भेंट।

ता. ११. श्रीमती पण्डित से कई देशों ने प्रार्थना की है कि वे उन उन देशों का दौरा करें।

ता. १३ भारत सरकार के एक विज्ञप्ति में बताया गया कि नगरों और ग्रामों के नामों को बदलने की भावना को राज्य सरकारें प्रोत्साहन न दें।

ता. १५. आज से सारे देश में सम्पदा कर लागू हो गया।

घर

ता. १. लेफ्टनण्ट वाघ्रे की यूरोप यात्रा से वापिसी।

ता. २. प्रथम अक्तूबर से खम्मम एक स्वतन्त्र जिला घोषित किया गया। इस से अब हैदराबाद के १७ जिले बने।

ता. ४. सिकन्दराबाद में भिक्षा निवारणार्थ कार्य आरम्भ।

ता. ७. भारतीय वायु मार्ग के एक वायुयान को जहीराबाद में दुर्घटना। २ व्यक्तियों की मृत्यु।

ता. ८. हैदराबाद विधान सभा का अधिवेशन कलसे स्थगित।

ता. १०. भारत के उपमन्त्री श्री दातार ने सेण्ट्रल जेल का निरीक्षण करते समय श्री कासिम रजवी से भेंट की।

ता. १२. हैदराबाद हाईकोर्ट में ४४५ वर्ष का पुराना रेकार्ड मौजूद होने की सूचना प्रकाशित।

ता. १३. बालाजी मन्दिर अलवाल में हराजों की चोरी। पुजारियों की असावधानी चोरी का कारण।

ता. १५. विशाल आन्ध्र की स्टैंडिंग कमिटी की तैयारी आरम्भ।

ता. १९. राजप्रमुख निजाम के जाली फरमान के मुकदमें की सुनवाई आरम्भ।

विश्व

ता. २०. पाकिस्तानी मुसलिम-लीग के उपाध्यक्ष और मन्त्री ने त्याग पत्र दिया।

ता, २२. शान्ति कौंसिल में ट्रिस्ट के मसले पर बहस रोक दी गई।

ता. २४. ज्ञात हुआ है कि ब्रिटेन निकट भविष्य में एक और हैड्रोजन बम का तजरुबा करेगा।

ता. २७. स्वीडन के एक जहाज के टकरा जाने से ३५ व्यक्ति जलमग्न।

ता. ३०. आईज़नहोअर ने चर्चिल से मुलाखात करने से इन्कार कर दिया।

नवम्बर

ता. १. कीटाणु युद्ध संबन्धी रूसी प्रस्ताव निःशस्त्रीकरण आयोग के सुपुर्द।

ता. २. श्री. एम. ए. मेनशिकोव रूस के भारतस्थित नए राजदूत नियुक्त।

ता. ४. रूस ने पश्चिमी राष्ट्रों के चार बडे विदेश मन्त्रियों के सम्मेलन वाले निमंत्रण को अस्वीकार कर दिया।

ता. ६. साम्यवादी और मित्रराष्ट्रीय प्रतिनिधियों की पानमुन जोन में प्रथम गुप्त वार्ता आरम्भ।

ता. ८. सऊदी अरब के शाह इब्न सऊद का देहान्त।

ता. १०. स्वतंत्र श्री लंका में यूनियन जैक (ब्रिटिश झंडे) और ब्रिटिश राष्ट्रगीत का उपयोग बन्द।

ता. ११, चीन के साथ ब्रिटिश व्यापारियों का निर्यात-सौदा स्वीकृत।

ता. १३. रायल अस्ट्रोनोमिकल सोसायटीकाने भारत के प्रसिद्ध खगोल शास्त्री श्री. डा. यस. चन्द्रशेखर को अपना स्वर्णपदक प्रदान किया।

भारत

ता. १७. वियटनाम के मन्त्री की भारत के प्रधान मन्त्री से भेंट।

ता. २०. भारत सरकार ने बेघरबार लोगों को सहायता देने की योजना तैयार करली।

ता. २२. भारत के लिए नये नियोजित रूसी राजदूत दिल्ली पहुंचे।

ता. २५. औरंगाबाद में जमीन सत्याग्रह के संबन्ध में अबतक १२०० हरिजनों की गिरफ़्तारी हुई है।

ता. २७. भारत सरकार ने राज प्रमुख हैदराबाद के इन्कमटेक्स और सुपरटेक्स से माफी के संबंध में प्रार्थना पत्र को रद्द कर दिया।

ता. २९. भारत के बाढ पीडितों की मदद के लिए रूस ने ३ लाख का चेक नेहरूजी के नाम प्रेषित किया।

ता. ३०. अहमदाबाद समाजवादी दल के कार्यालय से दो देशी बम पुलिस ने खोज निकाले।

ता. ३१. कल भारत के राष्ट्रपति ने खारला के पास की भारत-पाक सीमा का निरीक्षण किया।

नवम्बर

ता. १. नई दिल्ली में राष्ट्रपति द्वारा भारतीय तार शताब्दी प्रदर्शनी का उद्घाटन।

ता. ५. भारत सरकार द्वारा विस्थापितों को अन्तरिम मुआवजा देने की योजना स्वीकृत।

ता. ६. भारत सरकार द्वारा विश्व विद्यालय अनुदान आयोग की नियुक्ति।

ता. ९. पांच राष्ट्रों की निःशस्त्रीकरण वार्ता के लिए भारत का प्रस्ताव।

ता. ११. प्रयाग में कुम्भ मेले के लिए नई नगरी के निर्माण की तैयारियां।

घर

ता. २०. वित्त मन्त्री ने कहा कि छः मास में २१ करोड हाली सिक्का चलन से निकाल लिया गया है।

ता. २२. ज्ञात हुआ कि हैदराबाद सरकार भारत सरकार की ६५ करोड रुपये की ऋणी है। इस के सूद का अनुमान ३ करोड ५५ लाख के निकट है।

ता. २४ डिवाइन लाइफ सोसायटी हैदराबाद शाखा का तृतीय वार्षिक सम्मेलन न्यायाधीश श्री विट्ठल रंगराव की अध्यक्षता में आरम्भ।

ता. २६. गश्ती औषधालय नरसापुर का उद्घाटन।

ता, २८. ज्ञात हुआ है कि पं. नेहरू जनवरी के प्रथम सप्ताह में हैदराबाद पधारेंगे।

ता. ३०. पुतलीबावली के पास तुलसी रेड्डी नामी पटवारी का खून।

नवम्बर

ता. १ हैदराबाद हाईकोर्ट का शरदकालीन अवकाश २८ सितम्बर से ८ जनवरी ५४ तक होने की घोषणा।

ता. २ वनपर्ति में छात्रों द्वारा श्रमदान। हरिजन बस्ती में कुंए की खुदवाई।

ता. ५. इवीनिंग कालेज में नवम्बर से सितम्बर ५४ के सत्र प्रारम्भ की विश्व विद्यालय द्वारा घोषणा।

ता. ८. मध्य प्रदेश के अर्थ मंत्री श्री ब्रिजलाल बियाणी का हैदराबाद आगमन।

ता. ९. राजस्थानी प्रगति समाज द्वारा दीपावली सम्मेलन का आयोजन।

विश्व

ता. १५. पाक-अमरीकी फौजी गठ बन्धन एशिया के लिए खतरनाक होने की श्री नेहरू की चेतावनी।

ता. १७. पाकिस्तान अमरीका को सैनिक अड्डे देने को तैयार। बदले में हथियारों की मांग।

ता. १९. कोरियाई सम्मेलन के बारे में साम्यवादियों की नई योजना। गोल मेज के बदले द्विपक्षीय सम्मेलन का सुझाव।

ता. २०. ब्रिटिश वायुयानों द्वारा माऊमाऊ के गुप्त स्थानों पर बम वर्षा।

ता. २१. ब्रिटिश गायना के माजी प्रधानमंत्री श्री छेदी और माजी मंत्री श्री बर्नहम की नेहरूजी से भेंट। गायना की वास्तविक स्थिति पर प्रकाश।

ता. २३. मार्शल टीटो भारी बहुमत से युगोस्लाविया के राष्ट्रपति निर्वाचित।

ता. २५. अफ्रीकी संघ में भारतीयों के प्रवेश पर प्रतिबन्ध।

ता. २३. बर्मी रेल पर विद्रोहियों का छापा। ५० व्यक्ति मरे तथा २० घायल।

भारत

ता. १३. चीन की रेडक्रास सोसायटी और चीन के जन सहायता प्रशासन ने भारत के प्रधान मंत्री के राष्ट्रीय सहायता कोष में २,८८,३५६ रुपये का दान दिया।

ता. १५. काश्मीर में दिल्ली के दो उर्दू पत्रों-हिम्मत तथा पयाम-ए-वतन पर प्रतिबन्ध।

ता. १६. दिल्ली में देश के मुख्य नागाधिपतियों का सम्मेलन आरम्भ।

ता. १८. विस्थापितों को सरकारी व निष्क्रांतों के मकानों का अर्धस्थाई स्वामित्व। १ नवम्बर से किराया नहीं लिया जायगा।

ता. १९. नारियल जटा उद्योग पर नियंत्रण के लिए बोर्ड की स्थापना।

ता. २२. भारत और राष्ट्र मंडलीय रजत जयंती क्रिकेट टीम के बीच प्रथम टैस्ट मैच में भारतीय टीम विजयी।

ता. २४. कृषि पण्डित की उपाधि के संबन्ध में नई व्यवस्था। प्रतियोगिता केन्द्रीय सरकार की देखरेख में होगी।

ता. २५. उत्तर प्रदेश के २६० कांग्रेसियों के खिलाफ कार्यवाही। ४ वर्षतक कांग्रेस में कोई पद ग्रहण करने से मनाई।

घर

ता. १०. सोरापुर में जमेयतुल-उलेमा की शाखा स्थापना।

ता, १२. आन्ध्र सारस्वत परिषद तथा मराठी मंडल की परीक्षाएं शिक्षा विभाग द्वारा प्रमाणित।

ता. १५. दिसम्बर ५३ में समाप्त होनेवाले रेडियो लायसन्स का नवीनीकरण १४ जनवरी तक किया जा सकेगा ऐसी सरकारी सूचना प्रकाशित।

ता. १७. विकास कमिश्नर श्री जहीरअहमद ने घोषणा की कि मराठवाडा सिंचाई योजना पर सरकार दो करोड रुपयों का व्यय करेगी।

ता. २०. निशात टाकीज में अखिल हैदराबाद शान्ति सम्मेलन का आयोजन आरम्भ। संसद सदस्य मेजर सोखे द्वारा सम्मेलन का उद्घाटन।

ता. २१. कल एच. एस. सी. की पूरक परीक्षाओं का परीक्षा फल घोषित।

ता. २३. उदगीर में तार आफिस की स्थापना।

ता. २५. निजामाबाद के मजदूरों ने अपनी मांगों तथा शिकायतों विषयक एक स्मरण पत्र मुख्य मंत्री के पास प्रेषित किया।

ता. २८. राजस्थानी प्रगति समाज की बैठक रामकृष्णजी धूत की * अध्यक्षता में हुई। गश्ती वाचनालय चलाने का निर्णय लिया गया।

श्री मध्य भारत हिन्दी साहित्य-समिति इन्दौर की

मासिक मुख पत्रिका

वार्षिक मूल्य ५)] **वीणा** [एक प्रति ।।) आना

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, मध्यभारत, मध्यप्रदेश और बरार, संयुक्त राजस्थान, बिहार, उत्तर प्रदेश और बड़ोदा की शिक्षा संस्थाओं के लिए स्वीकृत।

जो पिछले पच्चीस वर्षों से नियमित रूप से प्रकाशित होकर हिन्दी साहित्य की अपूर्व सेवा कर रही है। भारत के प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में इसका उच्च स्थान है।

साहित्य के विभिन्न अंगों पर तथ्यपूर्ण एवम् गंभीर प्रकाश डालने वाले लेख तथा परीक्षोपयोगी विषयों पर आलोचनात्मक समीक्षाएं प्रकाशित करना इसकी प्रमुख विशेषता है।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन की प्रथमा, मध्यमा एवं उत्तमा (रत्न) तथा बी. ए. और बी. ए. के छात्रों के लिए इसके निबन्ध अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुए हैं।

वीणा का भारत में सर्वत्र प्रचार है!

विश्व-साहित्य

(संसार की समस्त भाषाओं के साहित्य को राष्ट्रभाषा हिन्दी में परिवेशित करने वाली एकमात्र त्रैमासिक पत्रिका।)

'विश्व-साहित्य' का ध्येय अन्य भाषाओं के साहित्य को हिन्दी में प्रस्तुत करना है।

'विश्व-साहित्य' एक पुस्तक माला है जो त्रैमासिक पत्रिका के रूप में प्रति वर्ष जनवरी, अप्रेल जुलाई और अक्तूबर में प्रकाशित होगी।

'विश्वसाहित्य' का एक विशेषांक भी प्रतिवर्ष प्रकाशित होगा, जिस में लब्ध प्रतिष्ठित विदेशी साहित्यकारों की किसी एक ख्यातिपूर्ण रचना का अनुवाद होगा।

'विश्व-साहित्य' की साधारण प्रति का मूल्य १) रु. होगा, विशेषांक का २) रु.। विश्व-साहित्य के ग्राहकों को विशेषांक केवल १) रु. में मिलेगा। इस प्रकार विश्व-साहित्य का वार्षिक मूल्य ५) रु. होगा।

'विश्व-साहित्य के विषय में सब प्रकार के पत्र-व्यवहार निम्न पते से करें।

सम्पादक, 'विश्व-साहित्य', विष्णुपुरी, अलीगढ

दी मारवाडी प्रेस लिमिटेड

के

पंच प्रकाशनोंसे लाभ उठाइए !

१. हिन्दी पाठ्य पुस्तकें तथा मिश्रित पाठ्य पुस्तकें
२. दक्षिण हिन्दी प्रकाशन समिति
३. हैदराबाद हिन्दी डायरेक्टरी
४. दक्षिण भारती
५. दीपावली व जनवरी सेल

दीपावली सेल के विषय में

एक व्यापारी का बयान

मैं आपके १५–२० तिथि दर्पण खरीदता हूं । उसका विवरण भी देखिए —

१ डबल रोजमेल बडी दुकान के लिए ।
३ रोजमेल विभाग धन्धों के लिए ।
१ पावा रोजमेल रोज बम्बई के भाव उतारने के लिए ।
१ अर्धिया रोजमेल में याददास्त लिखता हूं ।
१ डायरी में पेशियां लिखता हूं
२ क्यालेंडर रहते हैं, जिस से जब चाहे कोई भी तारीखें देख सकता हूं ।
१०–१२ डायरियां मेरे आदमियों को दे देता हूं ताकि वह अपनी कारगुजारी रोजाना लिखते जांए ।

ग़रज़ हमारे व्यापार में आपके तिथि दर्पण खूब मदद देते हैं

DAKSHIN BHARATI'S Regd. No. H. 428